श्री गुरु सिमरन

श्री गुरु सिमरन

हमारा सौभाग्यशाली देश विभिन्न महापुरुषों के अवतरण से सुशोभित रहा है जो हजारों साल से इस देश के कर्णधार रहे हैं। धर्म के आह्वान, संरक्षण और परीक्षण करने की इनकी अद्भुत शक्ति ने देश की अस्मिता को बचाए रखा है। हमारी आस्था को बनाए रखने में और सारी आस्थाओं को समाहित करने वाली हमारी विलक्षण संस्कृति के संरक्षण में इन महापुरुषों का ही हाथ रहा है।

ज्ञात इतिहास की सीमा से पुराने काल से देव पुत्र हमारे देश के पथ–प्रदर्शक रहे हैं। इन महापुरुषों को विभिन्न पौराणिक कथाओं में अलग–अलग समझा है और समझकर विश्व के अलग–अलग हिस्सों में, अलग–अलग देशों तक इनके संदेश को पूर्णरूप से पहुँचाया है।

GURU KA ASHRAM

वस्तुतः भारत संतों का देश रहा है। यहाँ की नदियों में, पर्वतों में, मैदानों में, यहाँ की बर्फीली चोटियों में हमेशा से ईश्वरत्व की ललक रही है और यह ईश्वरत्व ही इस देश की जीवन–रेखा है। इस देश की धमनियों में रक्त की तरह ईश्वरत्व बहता है। और इस ईश्वरत्व ने सदा यहाँ के निवासियों की पुकार सुनी है और धरती पर मानवों के बीच विभिन्न रूपों में भवतरण लिया है।

हमारे युग में देवत्व ने आवतार लिया, "गुरुजी" के रूप में। वे हमारे समय के महापुरुष थे। वे सांसारिकता के दलदल से मानवता को बाहर निकालने के लिए आए, वे मानव को उसके कर्तव्यों को बताने के लिए आए।

वे मानव के दुःखों को कम करने के लिए आए, वे मानव को उसकी सही पहचान कराने के लिए आए, वे मानव के द्वारा भुलाये गए प्रेम और सद्भाव को उसे याद दिलाने के लिए आए। वे धर्म के पुनरुद्धार के लिए आए और उसे अनुकूल परिस्थितियों में फिर से स्थापित किया।

उन्होंने कहा कि वे दैवीय ज्योति के विस्तार हैं। वे शरीर या व्यक्तित्व नहीं थे; उनके लिए शरीर या व्यक्तित्व 'अस्तित्व' के ऊपरी या बाहरी आवरण से अधिक कुछ नहीं है। वे एक पूर्ण विकसित पुरुष थे और दैवीय सुधा के लिए आए हुए भक्तगणों से मधुमक्खियों की तरह घिरे रहते थे। भक्तगण स्वतः उनकी ओर खिंचे चले आते थे और उनमें अटूट श्रद्धा रखते थे। गुरुजी उन्हें प्रेम, विवके, त्याग और प्रज्ञा की शिक्षा देते थे, जो गुण भारत की आधारशिला के रूप में सदियों से विद्यमान है।

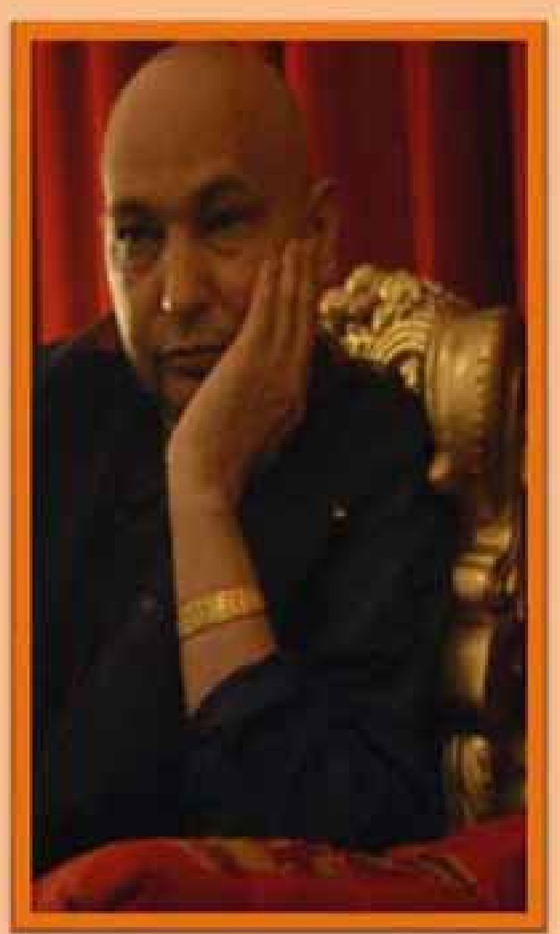

गुरुजी की तरह महापुरुषों को शब्दों के द्वारा निरूपित नहीं किया जा सकता क्योंकि शब्द अनंत की व्याख्या नहीं कर सकते। जैसे मार्ग–पट्ट मार्ग का निर्देशन करते हैं और यात्री को अपने गंतव्य तक पहुँचने में मदद हो जाती है। गुरुजी के आशीर्वाद से वे केवल उत्प्रेरक एवं दिशा–निर्देशक की तरह काम करते हैं और इसलिए उन्हें साधन के रूप में देखना चाहिए और प्रयोग एवं उपयोग के बाद भूल जाना चाहिए।

विश्वास और आस्था के इस पवित्र देश में जो सर्वसामान्य नाम है उसी नाम से वे जाने जाते थे – "गुरुजी" इस सर्वसामान्य संज्ञा में वह अर्थ और अथाह ऊर्जा है। अगर कोई शिष्य कभी हिम्मत जुटाकर उनसे उनका नाम पूछ भी लेता था तो उनका सीधा जवाब होता था कि महापुरुषों का कोई नाम नहीं होता।

ऐसा कहकर वे अनायास ही स्वयं अपने बारे में बता देते थे– ईश्वर के प्रतिनिधि, सारे लोकों के स्वामी बल्कि अपने आप में सम्पूर्ण क्योंकि गुरु ईश्वर है, गुरु ईश्वर के अलावा कुछ नहीं जानता, गुरु की ईश्वर के अतिरिक्त कोई पहचान नहीं है।

ऐसा कहा जाता है कि "गुरुजी" ने 31 मई, 2007 को महासमाधि ली। ऐसा हम इसलिए मानते हैं क्योंकि हमने उन्हें एक शरीर और एक व्यक्तित्व के रूप में जानना शुरू कर दिया था। हम उनसे अत्यधिक घनिष्ठ हो गए थे।

लेकिन उस दिन पलक झपकते ही उनका शरीर जा चुका था। उन्होंने इस संसार में अपने लिए जो भूमिका चुनी थी, उस पर पटाक्षेप कर दिया। वे एक अवतार थे, वे सशरीर साक्षात्–देवत्व का अवतरण थे। वे शिव थे, नानक थे, वे प्रेम का मूर्तिमान रूप थे। उनकी माया अपरंपार थी और उस माया के चमत्कार के कारण ही हमने उन्हें एक शरीर एक व्यक्ति के रूप में देखा। वास्तव में ऐसा नहीं था, वे "एकोङ्.कार" थे, हैं और रहेंगे।

वे हमेशा हमारे परम पिता रहेंगे और हम हमेशा उनके बच्चे, उनके शिष्य रहेंगे। ऐसा अद्भुत लगता है, पर तभी तक जब तक हम उनकी शिक्षा–दीक्षा को सुनना शुरू नहीं करते, पर हमारे देशवासियों ने उनकी वाणी को हमेशा ध्यान से और पूर्णतः सुना है।

ऐसा कहा जाता है और यह सत्य भी है कि केवल गुरुजी की वाणी सुनने से ही व्यक्ति प्रबुद्ध हो जाता है। अग्रलिखित पृष्ठों को पढ़कर एवं सत्संगों में दी गयी शिक्षा को जानकर भली–भाँति समझा जा सकता है। गुरुजी क्या कहना चाहते हैं।

यह अपने प्रिय अनुयायियों के लिए गुरुजी प्रदत्त अनमोल उपहार है। यह हम सबके लिए उनकी अमृतमयी, आनन्दमयी शिक्षा है।

चाँद की ओर निर्दिष्ट करती उंगली

अगर एक बहुत ऊँचे पर्वत और दागरहित दर्पण की कल्पना की जाए और दोनों को एक में समाहित कर दिया जाए को उसे पर्वत के तीव्र प्रकाश की ओर देखने से हमारी साँसें जम जायेंगी– कुछ इसी प्रकार हमारे गुरुजी के प्रथम दर्शन होंगे और जब उनकी इच्छा इस मिलन की होगी तो वे हमारे आत्मा की गहराइयों में उतर जायेंगे। उनके दर्शन मात्र से आपका मिथ्याभिमान अनावृत्त और आपकी आत्मा उनके व्यक्तित्व से चमत्कृत हो जाएगी और जब आप अपने आपको उनके व्यक्तित्व में एक रूप होकर देखेंगे तो आपको देवत्व की ऐसी छवि नज़र आएगी कि आप उनके सच्चे शिष्य हो जायेंगे।

यह नहीं समझिए कि गुरुजी का शरीर हाड़–मांस का शून्य है और यह दर्शन संभव नहीं है।

ऐसे कई दर्शन, ऐसी कई सभाएँ भविष्य में होनी हैं जहाँ गुरुजी और उनके प्रिय शिष्यों के मध्य एक प्रतिज्ञा की जाएगी– स्नेह की प्रतिज्ञा – जिसमें गुरुजी और उनके शिष्य पारलौकिक जीवन में भी एक–दूसरे के साथ आलिंगनबद्ध रहेंगे।

हम आपको जानकर, खोजकर अपनी प्रतिज्ञा को पूरी कर सकते हैं। सद्गुरू हमारे गुरूजी, आँखों के समक्ष उपस्थित एक ऐसा आईना है जिसमें हम स्वयं को पहचान सकते हैं। जैसे नाम से ही स्पष्ट है कि गुरू अज्ञान के अंधकार (गु) को ज्ञान के प्रकाश से (रु) मिटाता है। इस देश की पवित्र परंपराके अनुसार गुरु को भगवान से भी ऊँचे आसन पर बिठाया जाता है।

वह ऐसा पथ–प्रदर्शक है जिसके बिना पहली बार आरोहण करने वाला या दृढ़ निश्चयी आध्यात्मिक भी रास्ता भूल जाते हैं। गुरु केवल रास्ता या द्वार नहीं है, जिसके माध्यम से अन्वेशक (राही) गुजरता है बल्कि वे पर्वत की चोटी, चरम

लक्ष्य हैं। वे अंधेरे से प्रकाश की अज्ञानता से आत्मदीप्ति की यात्रा में ध्रुवतारा के समान हैं। उनके बारे में संसार में जो कुछ लिखा गया वो उनके विशाल व्यक्तित्व के सामने कुछ भी नहीं है। हस्तांगुलियाँ चाँद की तरफ सिर्फ इशारा भर करती हैं।

किन्तु जब आपको गुरुजी के दर्शन होते हैं तो उद्दीप्त चन्द्रमा आपके सामने होता है इसके सत्य का प्रकाश इतना तीव्र होता है कि आप चाहकर भी उसकी ओर टकटकी लगाकर देखने से बच नहीं सकते। गुरुजी की वाणी आपके लिए ईश्वर की पुकार है। उनके शब्द उनकी आज्ञा झील में फेंक उस कंकड़ के समान हैं जिससे झील में उत्पन्न कंपन ऊर्जा उत्पन्न करती है और यह ऊर्जा संक्रामक और अपरिहार्य हाती है।

गुरुजी के दर्शन करना कोई सामाजिक कार्य नहीं है। यह उस युद्ध के समान है जिसमें गुरुजी के सामने आपकी हार निश्चित है। उस आग के समान है जिसमें आपका अहंकार भस्म हो जाता है। यह सर्वोच्च सत्ता से मिलने की तैयारी है। आप सदगुरू को शब्दों से जीत नहीं सकते। आपकी उपस्थिति उनके सामने ठहर नहीं पाती। यह बात स्वीकार करने लेनी चाहिए कि वह आपके अस्तित्व की सच्चाई जानते हैं उनके समक्ष सत्य नहीं छुप सकता।

जब आप उनके सान्निध्य में आते हैं तो आपका स्व अगर कुछ मायने रखता है तो वह है आपकी हाँ – वह हाँ प्रथम और सुदृढ़ कदम है आपकी आध्यात्मिक यात्रा के लिए। वह आपकी स्वीकृति आपके लिए कई भेंट लाती है। वह आपको गुरू के अस्तित्व के साथ एकाकार करती है जो मृत्यु के बाद भी अलग नहीं हो पाती। वह एक स्वीकृति, गुरूजी की मृदुता, उनके लालित्य को आपके अंदर लाती है। उनके भक्त को सिर्फ स्वीकृति देने की ही देर है उसके बाद की यात्रा पहले कदम की पुनर्पुष्टि है। वह एक स्वीकृति चमत्कार है और बाकी उस चमत्कारिक यात्रा का वर्णन।

गुरु के अस्तित्व की कोई सीमा नहीं है, वह असीम है। एक प्रार्थना में गुरू को पवित्र त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु और महेश के समकक्ष रखा गया है। वह सिर्फ सृष्टा (ब्रह्मा), संरक्षक (विष्णु) और पुनरूत्थान (महेश्वर) परब्रह्म नहीं है। उसमें ही सारी सृष्टि समाहित है। वह ईश्वर हजारों हाथ, हजारों अंग, हजारों मुँह वाला है। उस ईश्वर को कोई नहीं जानता। वह जीवनरूपी वृक्ष का बीज है। विद्वान ईश्वर के रूप और प्रकृति के बारे में स्पष्टतः कुछ नहीं कहते। किन्तु गुरु रूपी दर्पण के समक्ष शिष्य स्वयं को देखता और जानता है। वह दर्शन, वह पहचान ही वास्तविक है जो गुरु के जानने से प्रदीप्त होता है, बाकी सब उस ज्ञान तक पहुँचने की सीढ़ी है।

श्रद्धा के पदचिह्नों पर

गुरु तक पहुँचने की शिष्य की यात्रा बहुत ही आश्चर्यजनक है। शिष्य नासमझ, विवेक शून्य और रास्ते को नहीं पहचानने वाला है। वह स्वयं से यात्रा में आगे नहीं बढ़ सकता, गुरु ही उसका मार्गदर्शक बनता है।

इस प्रकार गुरु मात्र शिष्य का लक्ष्य नहीं, वह उसका पथ–प्रदर्शक भी होता है जिससे उसकी विश्वास की डोर बंधी होती है।

वस्तुतः विश्वास ही गुरु को जानने की पहली शर्त है । अगर आप गुरु पर सच्ची आस्था नहीं रखते तो आपका मार्गदर्शन असंभव है। गुरु को आध्यात्मिकता का मूल स्रोत मानने के बाद भी इस बात का समर्थन किया जाता है कि गुरु का होने वाला अनुयायी उसे सच्चे दिल से अपनाने से पहले गुरु के बारे में सभी जानकारी एकत्रित कर लें। भगवान बुद्ध ने यह परामर्श दिया है "जिस प्रकार सोने की परख उसे जलाकर काटकर, रगड़कर की जाती है, उसी प्रकार मेरे द्वारा दी गई शिक्षा को जॉचने, परखने के बाद ही स्वीकार किया जाए।"

स्वामी विवेकानंद ने सबसे पहले ऐसा रुख अपने गुरु श्रीराम कृष्ण परमहंस के लिए रखा था। एक बार युवा शिष्य विवेकानंद अपने गुरु की उस उक्ति की परीक्षा लेना चाहते थे कि उन्हें पैसों से कोई फर्क नहीं पड़ता। इसलिए उन्होंने श्री परमहंस के तकिए के नीचे एक सिक्का डाल दिया। रामकृष्ण परमहंस उस पूरी रात सो नहीं पाए। विवेकानंद की परीक्षा ने उनके गुरु की आध्यात्मिक शक्ति को सत्यापित किया।

सारी शंकाओं को त्यागकर ही शिष्य नम्र होकर गुरु के पास जा सकता है। तब उसके अपने आध्यात्मिक गुरु से सम्बन्ध एक सुदृढ़ स्थायी आधार को प्राप्त कर सकेंगे। वह अपने आपको जीवन से मृत्यु तक गुरु को सौंप सकते हैं। आध्यात्मिक संरचना के निर्माण के लिए विश्वास या आस्था के मजबूत आधार की आवश्यकता है। गुरु अपने शिष्य को ईश्वरत्व में विश्वास करने को प्रेरित करता है। एक छोटी कहानी में इसका वर्णन है –

एक शावक शेरों के समुदाय से अलग हो जाता है। वह भेड़ों के साथ रहने लगता है। समय के साथ–साथ उसकी प्रकृति भेड़ों के जैसी ही हो जाती है। वह अब शेरों की तरह दहाड़ता नहीं बल्कि भेड़ों की तरह मिमियाता है। एक दिन एक शेर उसे देखता है और आश्यचर्यचकित होता है। वह उस शावक को पकड़कर उससे दहाड़ते हुए पूछता है कि "क्या बात है तुम क्यों एक भेड़ की तरह व्यवहार कर रहे हो ?"

शावक उसे डरते हुए बताता है कि शेर से कोई गलती हुई है, वह एक भेड़ ही है। तब शेर उसे लेकर एक झील के पास ले जाता है। झील के साफ पानी में शावक तुरन्त अपनी वास्तविक प्रकृति को पहचान लेता है।

गुरु का कार्य भी बहुत कुछ इसी तरह का है, वह उस यंत्र को ही नष्ट कर देता है जिस पर हमारा भ्रामक अस्तित्व निर्भर करता है। हम उनके बच्चे हैं, केवल हाड़ माँस और उत्तेजित रक्त के प्राणी नहीं।

इस तरह का कार्य तभी सम्पन्न होता है जब शिष्य अपने अहं को तजकर सच्चे अर्थों में गुरु के चरणों में समर्पित होता है। इसके बाद ही वो आध्यात्मिक ऊर्जा उसे जागृत करती है। गुरु आध्यात्मिकता का मूल स्रोत है, वो इस शक्ति को अपने शिष्य में स्थानांतरित करता है। उनके इस स्पर्श से शिष्य जागृत होता है।

गुरु की कृपा तब और महत्वपूर्ण हो जाती है जब शिष्य के जीवन में परीक्षा की घड़ी आती है। शिष्य में आध्यात्मिकता जागृत करने के लिए गुरु उसके कर्मों का भार अपने ऊपर ले लेता है। जब ही वो देखता है कि शिष्य अपने बुरे कर्मों की खाई में गिरने वाला है तो उसे उठाकर अपने कंधों पर ले लेता है। ऐसे गुरु का कैसे

गुणगान होना चाहिए ? उसका सिर्फ अनुकरण करना चाहिए और स्नेह करना चाहिए।

हर प्राणी में स्थित स्वार्थ की भावना के विपरीप गुरु का मात्र स्वार्थ उसका शिष्य होता है। उसकी एक इच्छा अपने शिष्य को ईश्वर की ओर ले जाने की है। इसके लिए चाहे उन्हें अपने शिष्य की राह से शारीरिक या मानसिक विकारों के पहाड़ को हटाना पड़ें ये उनकी इच्छा पर निर्भर करता है। ये सारे उपाय शिष्य को ईश्वर तक पहुँचाने के साधन है।

गुरू निःस्वार्थ भाव से शिष्य को संवारने में अपनी ऊर्जा और समय देते हैं आध्यात्मिक पर्वत तक पहुँचने की यात्रा कोई खेल नहीं है। सद्गुरु के अनुसार, संप्रेशित आध्यात्मिकता आसान दर्शन नहीं है। यह कोई सौन्दर्य प्रसाधक क्रीम या मुखौटा नहीं है जो क्षण भर के लिए आपको खूबसूरत बना देता है। यह कोई निश्चित विधि–विधान नहीं है जो स्वयं को प्रसन्न या ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए किया जाता है। आध्यात्मिक क्षेत्र में पदार्पण जीवन भर का काम है। यह ऐसा रास्ता नहीं है जिस पर आप एक बार चलकर उसे छोड़ सकें। जब एक बार आप गुरु के साथ उनके प्रबंधन को स्वीकार कर लेते हैं तो आपको उन्हीं के बताए रास्ते पर चलना होगा।

गुरु ही हमारे दैवत्व को प्राप्त करने का मात्र साधन है। वह एक सीढ़ी हैं जो ईश्वर तक पहुँचाती है। उनके द्वारा ही हमें स्वानुभूति होती है। किसी भी स्थिति में वे हमारे गुरु ही हैं जो हमें रास्ता दिखाते हैं –

चाहे वो जिस प्रकार से हमारे साथ सम्बंध स्थापित करते हों या भीड़ से बचते हो। ये सारे उनके उपकरण हैं। चाहे वो मजाक कर रहे हों या दिनचर्या के बारे में बात कर रहे हों – वो हर रूप में गुरु ही हैं। उन्हें प्रसन्न कर या प्रसन्न करने की चेष्टा कर ही शिष्य अपने वर्षों के संजोए हुए लक्ष्य को प्राप्त कर

सकता है। यह भी याद रखना चाहिए कि गुरु के कार्य का हु–ब–हू अनुकरण नहीं करना है। आदि शंकराचार्य और उनके शिष्य की एक कहानी है जिसमें उनका शिष्य उनके हर कार्य का अनुकरण करता था। एक बार तीर्थयात्रा के दौरान आदिशंकर किसान के हाथों मदिरा लेने के लिए एक स्थान पर रुकते हैं। शिष्य उनके इस कार्य का अनुकरण पूरे उल्लास के साथ करता है। कुछ दूर जाने के बाद महान वेदांती फिर रुकते हैं। लोहे की ढ़लाईशाला से पिघला लोहा निकल रहा था। श्रीशंकराचार्य से द्रव्य मांगते हैं और हाथों से ही लम्बा घूंट पीते हैं। उनका शिष्य निरस्त्र हो जाता है, यहाँ वह अपने गुरु का अनुकरण नहीं कर पाता।

यह सच है कि गुरु के शब्दों की मन और आत्मा से अनुकरण करना आवश्यक है। किसी भी हाल में शिष्य स्वयं को गुरु के रूप में कल्पना नहीं कर सकता। गुरु को स्मरण करने से ही शिष्य गुरु से आत्मिक रूप में जुड सकता है।

गुरु के द्वारा प्राप्त आध्यात्मिकता अपने अहं को त्यागने का औजार है। गुरु के पास जाने के बाद आपका अहं समाप्त हो जाता है। गुरु की महानता इस बात में है कि वो आपको सभी बुराइयों के साथ स्वीकार करता है। अपनी बात पर चलने के पूर्व कोई शर्त नहीं रखता। वो कोई भेदभाव नहीं करता, न ही किसी

पर अपनी विषेश कृपा दृष्टि रखता है। आकाश की तरह वो बिना स्पर्श किए सबको संरक्षित करता है। गुरु सर्वोपरि अतुलनीय है। उसकी श्रेष्ठता स्वर्ग के देवताओं से भी ज्यादा है। पवित्र त्रिदेव, असंख्य देवी–देवता आदेश की प्रतीक्षा में रहते हैं।

गुरु ईश्वर हैं। वो स्वयं शिव हैं। शिव पुराण में, शिव, ब्रह्माजी के इस आग्रह को ठुकरा देते हैं कि जीव अनश्वर रहे। इसके बदले वो पृथ्वी पर निरंतर चलने वाले जीवों के जन्म–मरण चक्र को कायम करते हैं। वे ही गुरुजी के रूप में आए हैं। उनकी चरणधूलि में स्वर्गिक सुख है। गुरुजी हम पर और आप पर दया करें। उनकी दया की वर्षा हमारे नासमझ मन पर गिरे।और हम उनकी ऊर्जा से जागृत हो जायें और उनके चरणों में रहें।

GURUJI KA ASHRAM

गुरुजी के द्वारा निर्मित मन्दिर

नई दिल्ली के शहरी कोलाहल से दूर एक पवित्र स्थान ऐसा है जहाँ लोगों की आत्मा स्वतः आविष्ट हो जाती है और उनका हृदय वहाँ की पवित्रता और सौम्यता से अभिभूत हो जाता है। यहाँ हवा में ताजगी है, चारों तरफ हरियाली है

और एक विशाल ग्रेनाईट–निर्मित लिंग से घिरा हुआ चमकदार सफेद संगमरमरी ढ़ाँचा अनायास ही सबको आकर्षित करता है। 'लिंग' का यहाँ होना यह दर्शाता है कि यह स्थान भगवान शंकर का अधिष्ठान है। इसकी विशालता शैव धर्म के उत्थान की घोषणा करती है। सदाचार की महत्ता की उद्घोषणा करती है और धार्मिक चैतन्य के एक नये प्रारम्भ को इंगित करती है।

ज्ञान के साकार रूप भगवान श्री गणेश की एक लघु–मूर्ति भाग्यशाली आगंतुक का मंदिर में प्रवेश से पहले मानो स्वागत करती है। इसके आगे मंदिर के सामने वाटिका में भगवान शंकर की सुन्दर मूर्ति है। जो उन्हें एक सुन्दर युवा के रूप में दिखाती है। उनकी बड़ी–बड़ी सुन्दर आँखें खुली हैं। उनके मुख पर हल्की मुसकुराहट के साथ पूर्ण शांति है और उनका हाथ मानो आशीर्वाद देने के लिए ऊपर उठा हुआ है। उनका आसन एक विशाल अनावृत कमल–पुष्प है और पंचमुख शेषनाग उनके वितान के रूप में स्थित है।

GURUJI KA ASHRAM

प्रांगण के अंदर भी पीतल की बनी हुई भगवान शंकर की एक मुखाकृति उसी शांत भाव–भंगिमा के साथ अवस्थापित है। विडम्बना है कि सर्वोपरि योगी शिव को ध्यानस्थ नहीं दिखाया गया है। वे व्याघ्र चर्म की चटाई पर आसीन है और मानों तुरन्त अपने पैरों को अलग–अलग किया है। और भक्तों की समस्याओं को सुनने के लिए तत्पर हैं। मुख्य कक्ष में पवित्र शब्द ''ओऽम् नमः शिवाय'' का उच्चारण होता रहता है। ये सब कुछ एक ईश्वरीय प्रतिश्रुति की याद दिलाते हैं कि भगवान शिव की और गुरु जी की मदद (दोनों में एक हैं) उन सबको सदा उपलब्ध है जो इनमें अटूट विश्वास व श्रद्धा रखते हैं।

असंभव गुम्बद का निर्माण

यह मंदिर परिसर वास्तव में भगवान शिव का घर है, यह तथ्य स्थापित करता है कुछ आश्चर्यजनक घटनाएँ, जिन्हें देखा है इस मंदिर के निर्माण में कार्यरत लोगों ने और जो मंदिर में अक्सर आने वाले भक्तों के द्वारा अनुभूत की जाती हैं।

जब मंदिर का निर्माण किया जा रहा था, गुरुजी के आदेशानुसार इसके गुम्बद को एक शिवलिंग (भगवान शिव का ईश्वरीय प्रतीक) की आकृति के रूप में होना था। यह तभी संभव था जब उसकी नींव ठोस पदार्थ की बनी होती। किन्तु गुरुजी इसका आधार खोखला चाहते थे। हालाँकि, वास्तुकार इसे असंभव मानता था और इसने इसका काफी विरोध भी किया, फिर भी गुरुजी की इच्छानुसार निर्माण–कार्य प्रारंभ हुआ।

लिंगाकृति का निचला आधा हिस्सा बिना किसी समस्या के निर्मित हो गया। परन्तु ऊपरी हिस्से में किसी अवलम्ब के अभाव में दरार आ गयी। गुरुजी का निर्माण–कार्य प्रभारी 'रघुवीर' एक सिक्ख भक्त था जिसकी आँखें कमजोर थीं। उसकी आँखों का कमजोर होना और फिर भी उसका कार्य–प्रभारी होना गुरुजी के चमत्कार की अलग कहानी कहता है कि जो दिल से कुछ चाहेगा तो पायेगा। उसे यह समस्या बतायी गयी। रघुवीर ने

राज मिस्त्री को फिर से ऊपरी हिस्से को उसी तरह बनाने के लिए कहा, पर परिणाम फिर से निराशाजनक था। इस बार गुरुजी को समस्या बतायी गयी। गुरुजी ने कहा, "उन्हें फिर एक बार प्रयत्न करने के लिए कहो, इस बार अवलम्ब के लिए मैं अपना आधार दूँगा।"

इस तरह गोलाकार गुम्बद के निर्माण के लिए कार्य तीसरी बार आरम्भ हुआ और इस बार उसमें कोई दरार नहीं थी। एक संरचना की अंतर्भूत भौतिक दुर्बलता को भी गुरुजी ने अपने सहारे से दूर कर दिया था। उनकी दिव्य आत्मिक शक्ति ही इस असंभव संरचना को ध्वस्त होने से सदा बचाती रहती है यह भी स्पष्ट हो गया। जब पहली बार शिवलिंग बनाया गाया था, तब यह हल्के रंगवाली व हल्की खपड़ियों का बना हुआ था। बाद में, उन हल्की खपड़ियों के बदले काली ग्रेनाइट की खपड़ियाँ लगायी गयीं। इसके बाद, एक बड़े दीपाधार को लिंग के बीच से लटकाया गया। इस तरह न केवल एक असंभव संरचना निर्मित की गयी, उसके साथ वजन भी जोड़ दिया गया। किन्तु सामान्यतः भौतिक विज्ञान के अटल नियमों को गलत साबित करते हुए गुरुजी की असीम अनुकम्पा से यह गुम्बद स्थायी और स्थिर बना हुआ है।

चमत्कारी मिट्टी

जैसे–जैसे मंदिर के चारों ओर विकास हुआ, यह बात साफ हो गई कि यह स्थान भगवान शिव की कृपा दृष्टि प्राप्त है। सामान्य प्रेक्षक के लिए भी पेड़–पौधों की वृद्धि असाधारण रही है। एक महिला ने मंदिर में कुछ फूलों वाले पौधे लगाए जो वह अपने फार्म हाउस के लिए भी लाई थी। उन पौधों में आश्चर्यजनक रूप से बड़े फूल आए जबकि फार्म हाउस के फूल उनसे काफी छोटे थे।

एक बार गुरुजी से बगीचे में घास को फिर से बिछाने की आज्ञा ली गई। मंदिर का एक कार्यक्रम नजदीक था। मंदिर के माली को घास बिछाने का काम दिया गया। घास बिछाने के बाद यह बात साफ हो गई कि काम का निर्णय दो कारणों से सही नहीं लिया गया : एक घास की अच्छी तरह वृद्धि के लिए अधिक समय की आवश्यकता थी और दूसरे, जिस घास की किस्म को लगाया गया वह पहली कटाई के बाद ही मुलायम हो पाती है, जो कि समय के अभाव के कारण होना संभव नहीं था।

फिर भी, आश्चर्यजनक रूप से घास की वृद्धि होती है। घास की अच्छी वृद्धि के कारण उसकी छटाई कार्यक्रम के बिल्कुल पहले हो पाती है। कार्यक्रम के दिन घास के दरीचे की किस्म की सबने तारीफ की।

गुरुजी की उपस्थिति : सदा के लिए

यहाँ और भी ऐसी कई घटनाएँ हुई हैं जो कि असाधारण शक्ति की ओर संकेत करती हैं। मंदिर के नियमित आगंतुकों ने मंदिर के प्रांगण में भगवान शिव के भिन्न–भिन्न रूपों को देखा है। वर्ष 2006 की होली में भगवान शिव के कॉंसे की मूर्ति में रंग पाए गए थे जिसने सभा को स्तभित कर दिया था। यह भी निश्चित है कि मंदिर सर्वांग गुरुजी की संरक्षक दृष्टि के दायरे में है। एक स्कूल शिक्षिका अपने यादगार अनुभव का वर्णन करती हैं।

वह गुरु पूर्णिमा के अवसर पर सवेरे मंदिर जाती हैं जिससे बाद में वह स्कूल जा सके। वह मंदिर सुबह सवा छः बजे पहुँच जाती है। केवल माली ही उन्हें उस शुभ दिन मंदिर में प्रणाम करते हुए देख पाता है। वह उनके आने का किसी को बताता नहीं है। मगर कोई और उन्हें देख लेता है।

शिक्षिका के अगली बार आने पर गुरुजी उन्हें बुलाकर कहते हैं – ''आंटी, आप गुरु पूर्णिमा पर मंदिर सुबह सवा छः बजे आई थीं। मैं आपको अपने ध्यान में देख रहा था।''

आस्था का पुनर्जागरण

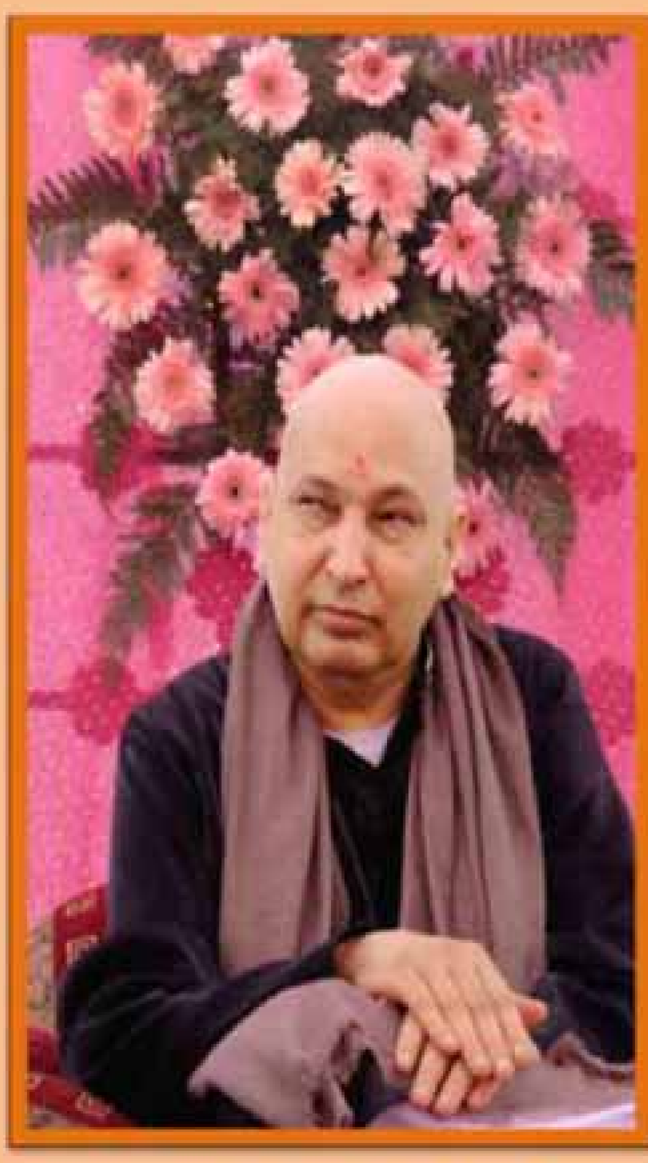

युगों से मनुष्य इस पवित्र स्थान को धर्म की जन्मभूमि के रूप में देख रहा है। हमारे अपने जीवन में बड़े मंदिर इस उद्देश्य को पूरा करने को तत्पर है। यह एक नये आध्यात्मिक जागरूकता की शुरुआत है जो पुरुषों स्त्रियों और बच्चों के द्वारा प्रारम्भ होकर सद्भावना को मानव–जाति में प्रचार करती है। शिवलिंग का उदय मुक्ति का उद्घोषक हैं। जो लोग भाग्य के कठोर हाथों से दबे हुए हैं, उन्हें तिरस्कार और रोग के दुःखी बंधन से मुक्त मिल जाती है। जो निरंकुश, उच्छखंल बुराई के वश में हैं उन्हें विजय के लिए नई शक्ति और ऊर्जा मिलती है। दुःख के महासागर को पार करने के लिए आस्था और शक्ति की छोटी–सी नाव की जरूरत है जिसके चप्पू का कार्य सद्गुरु की वाणी और उनकी कृपादृष्टि से होती है।

"ओऽम नमः शिवाय" के स्थान पर राहगीरों को 'शिवजी सदा सहाय' का जाप करना चाहिए और उन्हें सुरक्षित किनारा मिल जाएगा। दुःख और कष्ट के समय में इन शब्दों से मंदिर संवर जाता है। गुरुजी के कारण ये शब्द लोगों के हृदय और मन में घर कर जाते हैं जो कि उनका मित्र, उनका संरक्षक और उनका एक मात्र राह दिखाने वाला प्रकाश है।

आने वाले समय में मंदिर उन लोगों का उद्धारक होगा जो भौतिक और मानसिक अशांति से परेशान है। गुरुजी के व्यक्तित्व के प्रकाश से उन्हें शांति मिलेगी। यह मंदिर अपने अस्तित्व को प्रमाणित करेगा। यह मंदिर भगवान–शिव के पृथ्वी पर चिह्न के रूप में विद्यमान है।

भगवान शिव सबको इस पवित्र भूमि पर आने की आज्ञा दें। सब आगुंतकों की इच्छाएँ पूरी करें और सद्गुरु हम सबको हमेशा के लिए अपनी शरण में रखें।

GURUJI KA ASHRAM

सत्संग : सत्य के संग

सत्संग में हृदय के सत्य को बोला जाता है। यह ऐसी सच्चाई है जो शब्दों में मिली रहती है। सत्संग के पास ऐसी शक्ति होती है जो पढ़ने वालों और सुनने वालों को स्थिरचित्त करती है। सत्संग एक परंपरा रही है। एक सभा में कुछ लोगें के बोलने के सत्संग का आयोजन होता है वैसे इस स्थान पर अपने अनुभवों को लिखने से सत्संग का आयोजन हुआ है। श्रवण और लेखन के द्वारा सत्संग अपने श्रोता को आस्था के चक्र में ले आता है। जिस प्रकार एक इलेक्ट्रॉन अपने में विद्युत–शक्ति को रखता है उसी प्रकार सत्संग आस्था की शक्ति अपने में समाहित रखता है।

सत्संग उन लोगों के लिए है जो संदेह और विश्वास के दो राहे पर खड़े हैं। गुरुजी के अनुसार, हर सत्संग लेखक और पाठक को प्रभावित करता है। हर सत्संग के निराश जीवन में एक नया मोड़ लेकर आता है। गुरुजी की उपस्थिति का प्रकाश ब्रह्मांड के सारे सूर्यों के क्षणिक प्रकाश से भी अधिक प्रकाशवान है।

सत्संग आपको बताता है कि आस्था के सागर में गोता लगाए जाए या नहीं ? सत्संग को सुनकर परमपिता आपको अपने शरण में ले लेंगे।

देश के अलग–अलग भागों में फैली असंख्य भक्तों के अनुभव चमत्कार हैं लेकिन चमत्कार क्या है ? यह हृदय में विश्वास की क्रिया है। यह सबसे पहले प्रेम का चमत्कार है और फिर पारलौकिक शक्ति का हमारे दैनांदिन क्रिया में किया गया प्रमाण है। गुरुजी के असंख्य भक्त ही इन कहानियों के पात्र हैं। इन्होंने ही अपने उन अनुभवों को लिखा है जिन्होंने उनहें चमत्कृत किया है। जिन्होंने उन्हें निर्भीक, आशावान और स्थायित्व प्रदान किया है, वे ही अपने उन अनुभवों को बता रहे हैं।

ये सत्संग हमारे सच्चे साथी हैं जो गुरु की दिव्य वाणी को प्रकट करते हैं और उन शब्दों से संशक्ति ही सर्वोच्च है। सत्संग ही गुरुजी की ऊर्जा को लेकर चलता है। वह न केवल देवत्व का वर्णन करता है बल्कि उस ऊर्जा को सम्मिलित कर आपको उससे लाभ प्रदान कराता है।

हर सत्संग गुरुजी के और उनके शिष्यों के लिए प्रेम और उन अनेक दैवीय वरदानों को दर्शाता है जो उन्होंने उनके लिए उठाया है। अब उनके भक्तों के लिए आवश्यक है कि वे उनकी वाणी को मन में, शब्दों में, कर्म में ग्रहण करें और सम्मान दें ओर उनकी स्मृति को कलंकित न करें।

संत्संग महान–सत्यरूपी पेड़ के कई पत्तियों के समान है जिसके हर पत्ते में आस्था की सरसराहट है। भक्तों की गुरुजी के प्रति और गुरुजी भक्तों के प्रति प्रेम को सत्संग में श्रद्धा से सुरक्षित रखा गया है। यह आपके हृदय को अवश्य ही स्पर्श करेगा।

जब देव तुल्य पिता के आशीर्वाद से पुत्रों का जन्म हुआ

सन् 1998 में जून के अंतिम सप्ताह में मेरे अच्छे भाग्य ने गुरुजी के दर्शन का सौभाग्य दिया। मेरे मामाजी मुझे बराबर गुरुजी और उनके चमत्कारिक हृदय के उपचार के बारे में बताते थे। मेरे मामा को तुरन्त बाईपास सर्जरी कराने का परामर्श हृदय विशेषज्ञ ने दिया था। अपने आपको मानसिक रूप से तैयार करेन के लिए और गुरुजी के आशीर्वाद के लिए वे उनसे मिलने जाते हैं। गुरुजी उन्हें अपने निकट बैठने और पाँव दबाने की

आज्ञा देते हैं। तब गुरुजी उनके स्वास्थ्य का हाल पूछते हैं। मामाजी उन्हें तुरन्त होने वाले सर्जरी के बारे में बातकर आशीर्वाद लेते हैं तथा जाने की आज्ञा लेते हैं। गुरुजी उन्हें बताते हैं कि उन्हें सर्जरी के लिए जाने की आवश्यकता नहीं है, वे कहते हैं, ''मैंने तुम्हारा बाईपास कर दिया है।'' यह मामाजी जैसे सच्चे

अनुयायी के लिए भी विश्वसनीय नहीं था किन्तु वो इस बात से खुश थे कि गुरुजी ने उन्हें आशीर्वाद दिया है।

अगली सुबह मामाजी अपने सर्जरी से पहले की जाँच करवाने गए। जाँच से पता चला कि उनका हृदय सुचारू रूप से चल रहा है। उनके हृदय–चिकित्सक ने इस अच्छी जाँच रिपोर्ट को अच्छी नींद के बाद किए गए जाँच को बताया। उन्होंने मामाजी को फिर से जाँच करवाने को अलग प्रयोगशाला में कहा। फिर से सारे रिपोर्ट वही आए। डॉक्टर स्तंमित हो गए। मामाजी ने रात की घटनाओं को डॉक्टर से कहा। यह सुनकर डॉक्टर निःशब्द हो गए और गुरुजी के ईश्वरीय हस्तक्षेप पर आश्चर्यचकित होते रहे।

हालाँकि मुझे गुरुजी के तेज के बारे में पता था किन्तु मुझे उनके दर्शन नहीं हुए थे क्योंकि मेरा तबादला श्रीनगर में था और दिल्ली आना कार्यालय के काम से होता था। सौभाग्यवश, अगली बार जब मैं दिल्ली आया तब मामाजी ने यह शुभ समाचार दिया कि गुरुजी दिल्ली में हैं और हम उनसे मिलने जा सकते हैं। हम उसी शाम एम्पायर स्टेट गुरुजी के स्थान पर गए। हमारे पहुँचने तक काफी शाम हो गई थी। लंगर का आखिरी दौर चल रहा था और गुरुजी कुछ समय के लिए अपने कमरे में चले गए थे।

हमें लंगर में बैठने को कहा गया, तभी गुरुजी अपने कमरे से बाहर आए। गुरुजी के प्रथम दर्शन अभी भी मेरे मन में कायम है। जब हाल में प्रवेश करते हुए उन्होंने काला कुर्त्ता पहना था और चाल में तेज विद्यमान था। उन्होंने मेरे मामाजी को पहचाना और हमारी ओर देखते हुए पास आए। उन्होंने मामाजी को हमारा परिचय करवाने को कहा, और फिर हमें जाने की छुट्‌टी दी और 'द रांच' (गुरनाम महरौली रोड पर फार्म हाउस) में अपने जन्मदिन पर आने को कहा।

प्रथम दिन

अगले दिन मैं अपने दिल्ली कार्यालय में गया लेकिन मुझे वापस श्रीनगर जाने को कहा गया क्योंकि वहाँ का नया अधिकारी समय पर नहीं आ पाया और एक ग्राहक ने क्षेत्रीय कार्यालय में शिकायत दर्ज की थी। मैं श्रीनगर वापस चला आया इस बात से दुःखी होते हुए कि में गुरुजी के जन्मदिन पर उनके दर्शन नहीं कर पाया। मुझे इस बात का विश्वास था कि मुझे कार्यालय के कार्य में सफलता मिलेगी क्योंकि मुझे गुरुजी का दर्शन और आशीर्वाद प्राप्त था। मैं श्रीनगर और अवंतीपुर कठिन परिस्थितियों में गया और कार्यालय के कामों का निष्पादन किया और हर विपरीत परिस्थितियों में गुरुजी को याद करता रहा। ग्राहक पहले से बहुत ज्यादा मांग करता रहा और अपनी

शिकायत को सत्य प्रमाणित करने के लिए हमें परेशान करता रहा। पहले की बात होती तो मैं अवश्य ही असफल होता किन्तु इस बार बात अलग थी। इस बार एक पथ–प्रदर्शक पर मैं आश्रित था जिन्हें हर कठिन समय में याद करता था।

आखिरकार, एक महीने के बाद, ग्राहक मुझे अपने ऑफिस बुलाकर मेरे सामने क्षेत्रीय कार्यालय में फोन करता है और उन्हें अच्छे कार्य निष्पादन के बारे में

बताता है। वह उन्हें शिकायत को नजरअंदाज करने को कहता है। एक प्रशस्ति पत्र मुझे सौंपा जाता है। मुझे पता था यह सब कौन कर रहा है।

गुरुजी के दर्शन की इच्छा लिए मैं दिल्ली वापस लौटता। मेरा परिवार गुरुजी के जन्मदिन के समारोह में गया और बराबर एंपायर स्टेट जाता रहा। उन्होंने मुझे जन्मदिन पर आए हजारों श्रद्धालुओं और संगत पर होने वाले अनुभवों के बारे में बताया। मैंने सोचा, ''पर क्या वे हमें बच्चे का आशीर्वाद दे सकते हैं'' हमें सात साल से कोई बच्चा नहीं है। चिकित्सकीय उपचार प्रार्थना और अन्य उपाय सभी व्यर्थ सिद्ध हुए। मेरे अंकल ने सुझाव दिया कि हमें गुरुजी का आशीर्वाद लेना चाहिए। उन्होंने अपने एक कान्ट्रेक्टर मित्र के अनुभव को भी बताया।

तुम्हें संतान की प्राप्त होगी

कान्ट्रेक्टर को सोलह साल से कोई बच्चा नहीं था जब उसे गुरुजी का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। गुरुजी ने उनसे कहा (मैं तुम्हें बेटे और और बेटी दूँगा वो भी इसी साल) ''पुत्तर वी देत्ते, धी वी दीत्ती, होर इसी साल''। यह बात अविश्वसनीय थी, लेकिन गुरुजी की बात सही साबित हुई, कान्ट्रेक्टर की पत्नी ने तीन बच्चों (दो बेटे, एक बेटी) को एक साथ जन्म दिया वो भी उसी साल के 31 दिसम्बर को। ''गुरुजी के आशीर्वाद से सबकुछ संभव है.... लेकिन क्या और कब वो हमें आर्शीवद देंगे ?''

हम लगातार गुरुजी के पास जाते रहे मगर उन्होंने हमसे बात नहीं की। संगत ने हमसे कहा कि उन पर आस्था रखना चाहिए। ''वो सही समय पर आपसे बात करेंगे। आप कभी अपनी समस्या खुद उनके पास न ले जाएँ'' उन्होंने हमें ऐसा परामर्श दिया।

एक दिन, लंगर के पश्चात् हम संगत में बैठे थे गुरुजी ने मुझे अपनी ओर आने का इशारा किया। मैं हजारों प्रश्नों को मन में लिए मैं उनके पास गया किन्तु कुछ भी बोलने की हिम्मत नहीं हुई। उन्होंने मुझसे पूछा, "यहाँ क्यों आए हो ?"

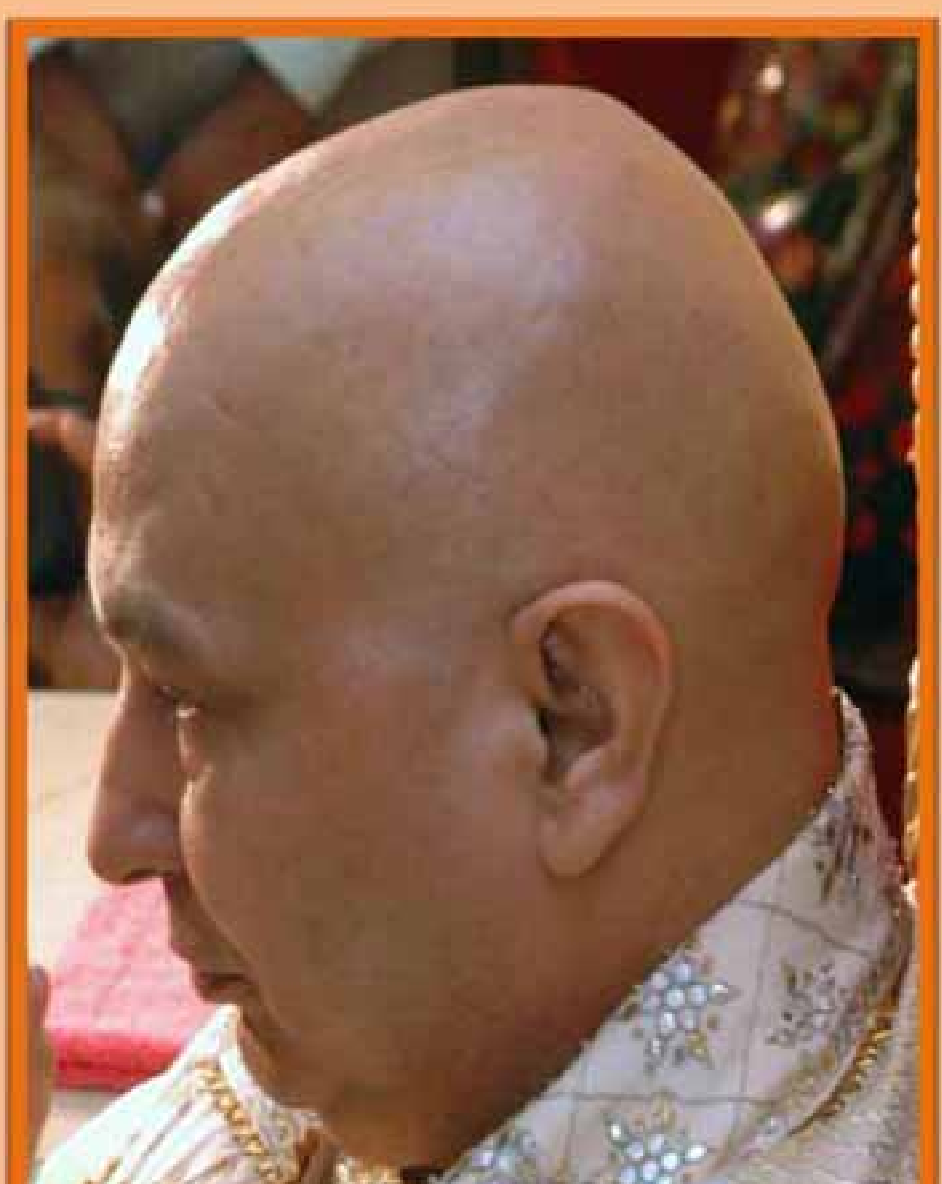

मैं हिम्मत बटोरकर बुदबुदाया, "गुरुजी, मेरा कोई बच्चा नहीं है।" गुरुजी अनासक्त हो बोले, "तुम्हें बच्चे होंगे, यहाँ से चले जाओ।" बिना विचार किए मैंने कहा, "गुरुजी, मैं यहाँ जाने के लिए नहीं आया। गुरुजी ने मेरी ओर देखा और कहा, "ठीक है, तब हर आठवें दिन पर आना।" यह सुनकर मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा मुझे अचरज हुआ कि गुरुजी यह कैसे जान पाए कि मेरी सहूलियत हर आठवें दिन आने में है। उस समय मैं आठ दिन के चक्र पर काम कर रहा था (दो दिन के समय, दो दोपहर के समय रात के समय और दो

छुट्टी का दिन) जिसमें पहले दिन के शाम को ही सत्संग में आसानी से शामिल हो सकता था।

हमने हर आठवें दिन गुरुजी के दर्शन करना प्रारंभ किया। संगत के सदस्य, जो कि गुरुजी से आशीर्वाद प्राप्त थे, अपने अनुभवों को बताते थे। यह सुनकर हमें आशा बंधती थी कि हमारी इच्छाएं भी जरूर पूरी होंगी। धीरे–धीरे स्थितियाँ सुधर रही थी। मेरी पत्नी की नौकरी भी नवम्बर 1998 में पक्की हो गई। उसने नौकरी के साक्षात्कार से पहले गुरुजी का आर्शीर्वाद लिया था और बयालीस उम्मीदवारों में उसका चयन हुआ हमारी वित्तीय स्थिति की सुधर रही थी।

मैं और मेरी पत्नी लगातार बांझपन का इलाज करवा रहे थे। डॉक्टर ने इंट्रा–यूट्रीन इंसामीनेशन के कुछ प्रयास किए। इसके पश्चात् उसने एक मंहगी चिकित्सा इन–विट्रो फर्टीलाइजेशन कराने का परामर्श दिया। इसी समय मुझे कंपनी से एम. बी. ए. कार्यक्रम के लिए चयन होने का संदेश मिला। 1 जून, 2000 से प्रारंभ होने वाले कार्यक्रम का समय 1 वर्ष का था। मैं अनिर्णय की स्थिति में था। मेरी पत्नी तीव्रता से मेरे परीक्षा में बैठने के खिलाफ थी। मैंने उसे निर्णय गुरुजी पर छोड़ने को कहा। पत्नी ने कहा, "क्या होगा, अगर उन्होंने हाँ की ? इलाज का काम एक साल के लिए रुक जाएगा।" फिर भी गुरुजी से मिलने पर मैंने हिम्मत बटोर कर उनसे पूछा कि क्या मुझे परीक्षा में बैठना चाहिए। गुरुजी ने कहा, "ऐसे मौके जीवन में सिर्फ एक बार मिलते हैं आपको जाना चाहिए।" मैंने पत्नी को गुरुजी के निर्णय के बारे में बताया और वह इससे नाखुश थी।

मैं परीक्षा में बैठा। चयनित उम्मीदवारों के नाम से पहले कई अफवाहों के नाम आ रहे थे। मेरा नाम किसी भी लिस्ट में नहीं थां यह सुनकर ही मेरी पत्नी ने चैन की साँस ली।

इस बीच, डॉक्टर ने आखिरी बार आई यू आई की जाँच 2 जून, 2000 में करने का निर्णय लिया। उसने कहा कि वो इस पर सहमत नहीं है और वो इसके बाद हमें आई वी एफ की जाँच करवाना चाहती थी। मैंने अपने कार्यालय को यह सूचित कर दिया कि मैं उस दिन देरी से आऊँगा। नमूने के संग्रह और जाँच के बाद, मुझे दुबारा जाँच के लिए नमूना देना था। मैंने दुबारा ऑफिस फोन कर और भी देरी होने के कारण आने में असमर्थता व्यक्त की। किन्तु मुझे ऑफिस आने का निर्देश दिया गया। मैंने दुबारा जाँच के लिए नमूना दिया और पत्नी के लौटने का इंतजाम कर मैं ऑफिस चला गया। वहाँ मुझे एम बी ए की

चयन का समाचार दिया गया। कोर्स में जाने की स्वीकृति मुझे तीन दिनों में देनी थी। अगले दिन हम गुरुजी के दर्शन के लिए गए। अपने चयन का समाचार मैंने उन्हें दिया। मेरा भ्रम : जैसे कोई सर्वज्ञ को कोई समाचार दे सकता है। वो मुस्कुराए और बोले, "फिर तो तुम्हारा कल्याण हो गया। मैंने सोचा, "मैंने गुरुजी को अपने चयन के बार में बताया और वो कह रहे हैं कि तुम्हें खुशी का

आशीर्वाद मिला है। यह तो स्पष्ट ही था।'' जो गुरुजी ने हमसे कहा, वो हमें दृश्य नहीं था। वो हमें आने वाले समय में पता चलता।

मैंने गुड़गाँव प्रतिष्ठान मैं अपना अध्ययन जारी कर दिया। पहले सत्र के बाद मैं घर वापस आया। हम दर्शन के लिए उसी शाम गए। वहाँ से लौटते हुए मेरी पत्नी ने मुझे गर्भावस्था जाँच करने के सामान खरीदने को कहा और गुरुजी के वक्तव्य का अर्थ अगली सुबह स्पष्ट हो पाया। आई यू आई का कठिन परिस्थितियों में किया गया आखिरी प्रयास सफल सिद्ध हुआ। गुरुजी के अशीर्वाद से हम दोनों खुश और अनुग्रहीत हुए। हमारी आँखों में खुशी के आँसू थे और हम लगातार उनके फोटो को चूमते रहे। हम गुरुजी के दर्शन को पहुँचे। मैंने उनके पाँव छुए और मेरे बोलने से पहले ही उन्होंने मुझे चुप रहने का इशारा किया और बोले, ''मैं जानता हूँ।''

मेरी अनुपस्थिति में भी मेरी पत्नी को गर्भावस्था के दौरान कोई परेशानी नहीं हुई। उसी समय उसे अपने कॉलेज के प्रांगण में ही रहने को घर मिल गया जिससे उसे ज्यादा यात्रा नहीं करनी पड़ी। उसने 31 जनवरी 2001 को एक लड़के को जन्म दिया। बच्चे के 40 दिन के होने पर हम उसे गुरुजी का आशीर्वाद दिलाने ले गए। वहाँ से लौटते हुए गुरुजी ने मेरी पत्नी से पूछा ''पूनम आंटी, और एक और बेटा चाहिए ?'' वह आश्चर्यचकित हो गई और उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

गुरुजी हर बार जाने पर वही प्रश्न दोहराते थे। उसने कभी उत्तर तो नहीं दिया लेकिन सोचती रहती थी कि कैसे वो फिर से सारी चिकित्सकीय प्रक्रिया से गुजरेगी, जब साथ में इतना छोटा बच्चा है। वो कहती थी कि गुरुजी अवश्य ही मजाक कर रहे हैं।

एम बी ए के समाप्त होने पर मेरा तबादला जून, 2001 में दुर्गापुर के निकट का स्थान कर दिया गया। मेरे लिए उस समय जाना संभव नहीं था क्योंकि छोटे बच्चे के साथ–साथ और भी जिम्मेदारियाँ दिल्ली में थीं। मैंने अपनी कंपनी के उच्च अधिकारियों से आग्रह किया किन्तु कोई भी मदद के लिए तैयार नहीं हुआ। अपने अधिकारियों की उदासीनता से दुःखी होकर मैं नई जगह पर बिना परिवार के जाने को तैयार होने लगा। हम गुरुजी के दर्शन के लिए शाम को गए। उस दिन भी अधिकारी ने तबादला रोकने के लिए मना कर दिया। उस दिन भी गुरुजी ने मेरी पत्नी से वही प्रश्न दुबारा पूछा, "और एक बेटा चाहिए ?" उसने तुरन्तु कहा, "अब मुझे दूसरा बेटा कैसे मिलेगा जब मेरे पति का तबादला हो रहा है ?" गुरुजी मुस्कुराए और बोले, "यह तो अवश्य ही एक तकनीकी समस्या है। मुझे इसका तबादला रोकना पड़ेगा।" हमने उनके पैर छुए और घर वापस आ गए। दो दिन के बाद मेरे एक उच्च अधिकारी ने मुझसे फोन पर कहा, "तुम जाने में अपनी असमर्थता बता रहे हो। तुम क्यों नहीं अपना आग्रह लिखकर मुझे फैक्स से भेजते हो ? मैं देखता हूँ कि मैं क्या

कर सकता हूँ ? मैं जानता था कि किसने उनके दिमाग में यह बात डाली है। उसके बाद मैं दिल्ली में लगातार दो साल रहा।

गुरुजी मेरी पत्नी से लगातार वही प्रश्न पूछते रहे अप्रैल, 2002 की एक शाम उसने उत्तर दिया, "जैसी आपकी इच्छा" अगले दिन ही पत्नी की जाँच से उसके गर्भवती होने का पता चला। इस बार ऐसा बिना किसी चिकित्सा के हुआ। अपनी गर्भावस्था के दौरान मेरी पत्नी ने एक बार मुझसे कहा कि वह इस बार एक बेटी चाहती है और वह गुरुजी को अपनी इच्छा बताएगी। अपनी अगली भेंट में वह अपनी प्रार्थना कहना चाहती थी तभी गुरुजी पहले बोले, "पहली बार एक बेटा और दूसरी बार भी बेटा।" उसे अपना उत्तर मिल गया और दूसरे बेटे का जन्म 1 दिसंबर, 2002 को हुआ। गुरुजी ने दूसरे बेटे का नाम इशुक रखा।

दूसरे बेटे के जन्म के बाद गुरुजी ने मेरी पत्नी से पूछा कि क्या वो पी एच डी करने के बारे में सोच रही है। उसने कहा कि दो बच्चों के साथ पढ़ाई जारी रखना मुश्किल है। गुरुजी ने फिर से अपना सुझाव यह कहते हुए दिया, " क्या तुम्हें पी.एच.डी. का मतलब अर्थ पता है–पागल होने का डर।"

फिर से उनके सुझाव का अर्थ हमें बाद में पता चला जब मेरा तबादला मुम्बई कर दिया गया। मेरी पत्नी मेरे साथ केवल पी.एच.डी. करते हुए छुट्टी लेकर ही आ सकती थी। तबादले का पत्र मिलते ही मैं गुरुजी से मिला और उन्हें तबादले के बारे में बताया। उन्होंने अपनी स्वीकृति दी।

मैंने मुम्बई में एक साल बिना अपने परिवार के बिताए। इस बीच हम कई बार गुरुजी के दर्शन के लिए गए। इसी क्रम में एक बार गुरुजी बोले, "तुम अपने परिवार को साथ ले जाओ नही ंतो मैं एक और पुत्र तुम्हें दूँगा।"

हमने उनके इशारे को समझा और मेरी पत्नी पीएचडी में पंजीकरण के लिए आवेदन किया जो कि बहुत कम समय में स्वीकृत हुआ। गुरुजी के आशीर्वाद से मेरा परिवार मुम्बई जा पाया।

यहाँ मेरे पिता के एक ज्योतिषी मित्र ने मुझसे कहा था कि हमें कोई बच्चा 41 वर्ष की उम्र तक नहीं होगा। उन्होंने यह भी भविष्यवाणी की थी कि मुझे दो बेटियों के बाद ही एक बेटा होगा। उनकी भविष्यवाणी कभी भी गलत साबित नहीं हुई। गुरुजी के आशीर्वाद से बच्चे होने के बाद जब मैंने उनसे पूछा कि कैसे उनकी भविष्यवाणी गलत साबित हुई। उन्होंने उत्तर दिया कि ज्योतिष केवल हमारे भाग्य जो कि ईश्वर द्वारा निर्धारित है, को बताता है लेकिन गुरुजी जैसे महापुरुष, जो भगवान के साकार रूप हैं, भाग्य को दुबारा लिखते हैं।

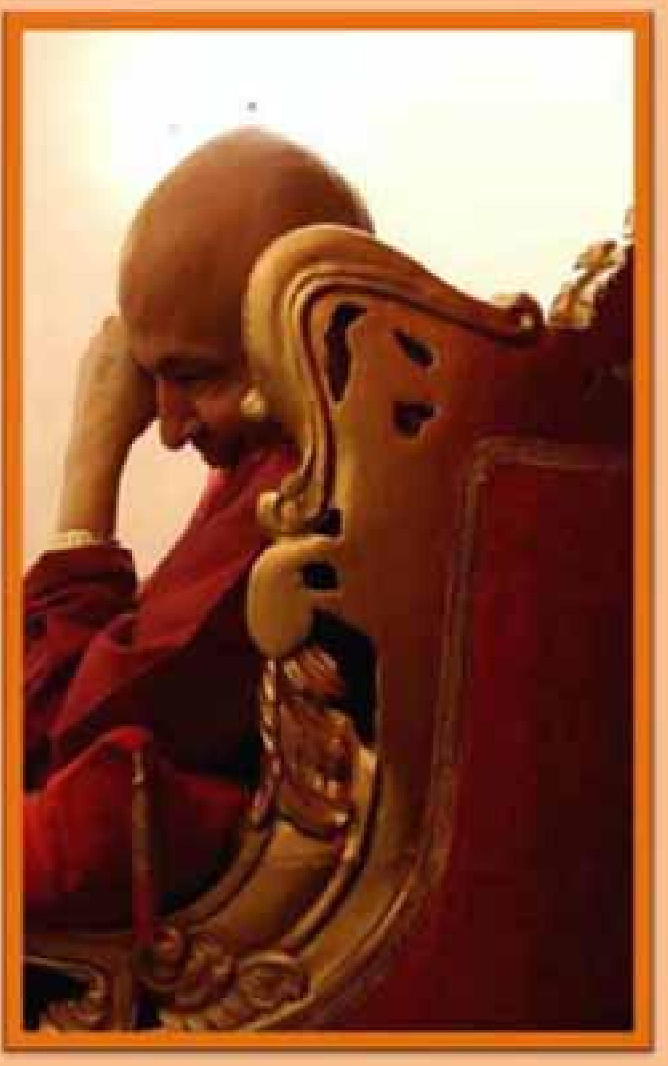

मुम्बई की बाढ़ में बच गया

26 जुलाई,2005 मुम्बई में बाढ़ वाले दिन मैं ऑफिस में था। कुछ कर्मचारी उन दिन जल्दी चले गए यह जानते हुए कि ट्रेन की आवाजाही रुक सकती है। मैंने ऑफिस का काम पूरा किया और अपने सामान्य समय पर ऑफिस से बाहर

आया। उस समय तक वे कर्मचारी जो जल्दी ट्रेन पकड़ने के लिए चले गए थे। वापस लौटने लगे क्योंकि सभी सेवाएँ रोक दी गईं थीं।

उस दिन मैं अपनी कार से ऑफिस आया था और मेरे दिमाग में दो बातें चल रही थीं या तो मैं यही रुक जाऊँ या घर पहुँचने की कोशिश करूँ ? मेरे एक सहकर्मी ने मुझसे कहा कि उसका बेटा स्कूल में फंस गया है जो हमारे घर के रास्ते में है। यह सुनकर मैंने गुरुजी को याद करते हुए घर जाने का निश्चय किया। ऑफिस का एक गेट पानी से भर चुका था और एक कार हमारे सामने खराब हो गई थी। हम दूसरे गेट से बाहर निकले। सड़कें पानी से डूबी हुई थीं और उनसे निकलना कठिन था। पानी और जाम का सामना करते हुए हम स्कूल लगभग दो घंटे में पहुँचे।

चूँकि बसें नहीं चल रही थीं इसलिए स्कूलवालों ने बच्चों के रात में ठहरने का इंतजाम किया था। मेरे सहकर्मी ने कहा कि हमारे घर पहुँचने में संदेह है और

मेरा बेटा सहपाठियों के साथ स्कूल में सुरक्षित है इसलिए उसे स्कूल में ही रातभर छोड़ देना चाहिए। हमने घर पहुँचने की कोशिश जारी रखने का निश्चय किया। हमने देखा कि सड़कें इतनी जलमग्न हो चुकीं थी कि ऑफिस वापस जाने का या घर पहुँचने का सवाल ही नहीं था। मैंने गाड़ी को ऊँची जगह पर लगाया और घर पर फोन कर कहा कि मैं घर नही आ रहा हूँ।

हम गाड़ी में ही सो गए और अगले दिन मैं घर वापस गया। घर लौटने पर पता चला कि सभी गाड़ियाँ जो घर के प्रांगण में थी, डूब गई और जिनके ठीक होने में हजारों रुपए खर्च होंगे, यही हाल ऑफिस में खड़ी गाड़ियों का था।

मीडिया में उन लोगों के बारे में बताया गया जो सड़क पर अपनी गाड़ियों के सोए और मारे गए क्योंकि जल–स्तर काफी बढ़ गया और अंदर सोए लोग गाड़ी के खिड़की, दरवाजें नहीं खोल पाए। लेकिन मुझे या मेरी गाड़ी को कोई भी नुकसान नहीं हुआ। यह सब उनकी वजह से हुआ जिन्हें मैंने ऑफिस से निकलते हुए याद किया था। केवल गुरुजी की कृपा ने मुझे उस दिन बचाया।

उनका तेज महासमाधि के बाद भी जारी है

दिल्ली की यात्रा के दौरान फरवरी, 2007 में मैं गुरुजी के दर्शन के लिए गया। उन्हें प्रणाम कर जैसे ही मैं जाने लगा, गुरुजी ने पूछा, तुम दिल्ली वापस आ गए हो ? मैंने उत्तर दिया, "मैं बम्बई में ही हूँ।" गुरुजी ने दूसरे व्यक्ति की ओर इशारा किया और बोले कि वो उस आदमी के बारे में बात कर रहे हैं लेकिन यह इशारा मेरे लिए काफी था कि मैं अपना तबादला दिल्ली करवा लूँ। मैंने अपना तबादला मार्च 2007 के अंत में दिल्ली में करवा लिया। मैंने दिल्ली के ऑफिस का एक महीने के बाद पदभार ग्रहण किया।

31 मई, 2007 को जब मुझे गुरुजी के शरीर छोड़ने के निर्णय का पता चला तो मैं टूट गया। बाद में मंदिर से लौटते हुए मैं लगातार सोचते रहा कि गुरुजी ने हमें कितनी बार अपने प्राण से ज्यादा दिया और कभी–कभी अपनी योग्यता से भी ज्यादा दिया। अब क्या होगा ? अब कौन हमारी देखभाल करेगा ? ये सारे प्रश्न दिमाग में आने लगे। लेकिन कोई उत्तर नहीं मिला। लेकिन वो जिसने हमारे सारे प्रश्नों, संदेह, प्रार्थना का उत्तर दिया, उसके पास इन प्रश्नों का उत्तर था ये मुझे अगले कुछ दिनों में पता चलने वाला था।

मैंने 2005–06 में इंटर कारपोरेट बीजनेस सिक्यूलेशन कंपीटिशन'' में भाग लिया था। 2007 में प्रादेशिक प्रारंभिक दौर की प्रतियोगिता 1–2 जून को होने वाला था।

लेकिन गुरुजी की महासमाधि के बाद मैं भाग नहीं लेना चाहता था। मैंने अपनी टीम के सदस्यों को बताया कि मैं अब कमजोर हो चुका हूँ और वो मुझ पर भरोसा न करें। एक सदस्य ने मुझे सांत्वना देते हुए कहा कि गुरु कभी भी अपने शिष्य को शरीर छोड़ने के पश्चात् भी त्याग नहीं सकते। हालाँकि मैंने उस पर विश्वास नहीं किया क्योंकि मैं दुःख में डूबा हुआ था।

हमारी टीम कैसे भी प्रारंभिक चार दौरों के पार कर आखिरी दौर में पहुँची। आखिरी दौर में हमने कठिन निर्णय लिए जिससे प्रादेशिक के फाइनल में पहुँच

पाए। परिणाम आने पर पता चला कि हमारी टीम नहीं चुनी गई मैंने अपनी जेब से गुरुजी की तस्वीर निकाली और बोला, ''यही अब होने वाला था। आप के रहते हुए, बात कुछ और थी।'' जब मैं गुरुजी के हँसते हुए तस्वीर की ओर देख रहा था, तभी मेरे टीम के सदस्य ने कहा कि उन्होंने हमारे निर्णय को कम्पयूटर में नहीं दिया। हम आयोजकों के पास गए और उन्हें इस गलती के बारे में बताया। सुधार के पश्चात् हम आखिरी दौर के लिए चुन लिए गए। इसके बाद हमारी टीम ने पीछे मुड़कर नहीं देखा और देशव्यापी फाइनल में दूसरे स्थान पर आए। सितंबर, 2007 में एशिया पैसिफिक रिजन के फाइनल में भी दूसरे स्थान पर आए। इस प्रकार गुरुजी ने हमें बताया कि वो और उनका तेज अभी भी संगत के साथ है।

व्यक्तिगत तौर पर मैं अपने बेटों के अच्छे स्कूल में भर्ती के लिए परेशान था। हम अलग–अलग जरिए के द्वारा प्रयास कर रहे थे लेकिन सफलता नहीं मिल पा रही थी। अंततः मैंने गुरुजी को याद किया और उनसे पूछा, ''जब आपने हमें दो बेटे दिए तो क्या आप उन्हें अच्छे स्कूल में भर्ती नहीं करवा सकते ? इस प्रश्न का उत्तर मुझे बहुत जल्दी मिला। बिना राजनीति पहचान, बिना घूस के मेरे बच्चों को एडमिशन दिल्ली के ऊँचे स्कूल में हो गया।

मैंने अपने भगवान, गुरुजी के साथ हुए अनुभवों का सारांश यहाँ दिया है। मैं इसका समापन उनको हृदय से कृतज्ञता और सादर प्रणाम करते हुए करता हूँ। ओम श्री गुरु देवाय नमः। गुरुजी इसी प्रकार हम पर और उनके सारे शिष्यों पर अच्छे भाग्य और सुन्दर विचारों की वर्षा करते रहे और हम हमेशा उनके शिष्य होने के योग्य बने रहें। जय गुरुजी।

– आकाश सोढी की सत्संग (ट्रेनिंगए 'ड डेवलपमेंट),इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन,मुम्बई

एक लड़की गुरुजी की छाया में बढ़ी

गुरु ही ब्रह्मा, गुरु ही विष्णु हैं, गुरु ही देवों के देव हैं, गुरु ही जीवित भगवान हैं, मैं गुरु दण्डवत् प्रणाम करता हूँ।

मेरी ईश्वर में आस्था, मनुष्य–जाति के लिए उनकी दया और प्यार के प्रति कमजोर ही रही जब तक कि मैंने उसे हाड–माँस के शरीर के रूप में अर्थात् गुरुजी के रूप में नहीं देख लिया। गुरुजी के तेज को शब्दों में वर्णन करना असंभव कार्य है। जिस प्रकार हमारी प्रार्थना का उत्तर भगवान देते हैं उसी प्रकार गुरुजी का सत्संग वाचक और श्रोता दोनों को आशीर्वाद देता है और परमसुख की प्राप्ति करता है।

मैंने सुना था कि ईश्वर हमारे कर्मों के आधार पर हमें पुरस्कार या दंड देते हैं मगर मैंने गुरुजी को हमारे बुरे कर्मों को अपनी ईश्वरीय पवित्र अग्नि में जला देते हैं जिससे हमें एक बेहतर और अच्छा जीवन मिल सके।

गुरुजी का मेरा पहला दर्शन मेरे कक्षा ग्यारहवीं में होने के दौरान हुआ। हालाँकि मेरा जन्म पंजाब में हुआ, हम नोएडा में रहते थे और मेरा पंजाबी से जुड़ाव नहीं के बराबर था। इसलिए मैं न तो सबद या गुरुजी की वाणी कुछ भी नहीं समझती थी। फिर भी मेरे प्रथम अनुभव से संबंधित कोई भी प्रश्नोत्तर मेरे अच्छे अनुभव को ही दर्शाता था। इसके बाद के कई मोहक अनुभवों ने गुरुजी पर मेरे विश्वास को सत्यापित किया।

मेरे गुरु के स्वर मेरे द्वारा निकले

स्कूल के वार्षिक समारोह में मुझे उद्घाटन–भाषण देने का कार्य दिया गया। मैं ऐसे कार्य हमेशा से करती रही थी लेकिन इस बार मुख्य अतिथि एक उच्च अधिकारी थे। मेरे भाषण की आखिरी पंक्ति के साथ ही श्रोताओं ने ताली बजाना शुरु किया। मंच से उतरते ही मुझे तारीफें मिलने लगीं जिससे मैं अभिभूत हो गई। हर छात्र और शिक्षक के चेहरे आश्चर्य से भरे हुए थे। उन्होंने मुझसे कहा कि भाषण देते समय मैं किसी और रूप में परिवर्तित हो गई थी। इससे भी बड़ी प्रशंसा मुझे तब मिली जब मुख्य अतिथि का अभिभाषण भी मेरे ही भाषण के अंत की ही पुनरावृत्ति थी। सबके लिए यह सब विस्मय से भरा था किन्तु मैं जानती थी कि यह सब गुरुजी ने किया है। मेरे बोलने के साथ मैंने गुरुजी की ऊर्जा को अपने अंदर महसूस किया जिससे मैंने अपना वक्तव्य पूरा किया।

इसके अतिरिक्त, गुरुजी मेरे साथ स्कूल में रहे जिसे मैंने उनकी सुगंध से महसूस किया।

बारहवीं कक्षा के दौरान की गई मदद

जब मैं बारहवीं कक्षा में आई तो मुझपर शैक्षिक दवाब बढ़ता गया। एक दिन प्रसाद देते समय गुरुजी ने मुझसे मेरे ऐच्छिक विषयों के बारे में पूछा। मैंने उन्हें

अपने कॉमर्स की विद्यार्थी होने के बारे में बताया। तब मुझसे अर्थशास्त्र के विषय में प्रश्न पूछने लगे। उन्होंने मुझसे क्रेडिट कंट्रोल के बारे में प्रश्न किए। उत्तर जानने के बाद भी में गुरुजी के सामने चुप हो गई। गुरुजी ने इस प्रश्नोत्तर का समापन मुझे पढ़ाई के प्रति गंभीर होने को कहकर किया।

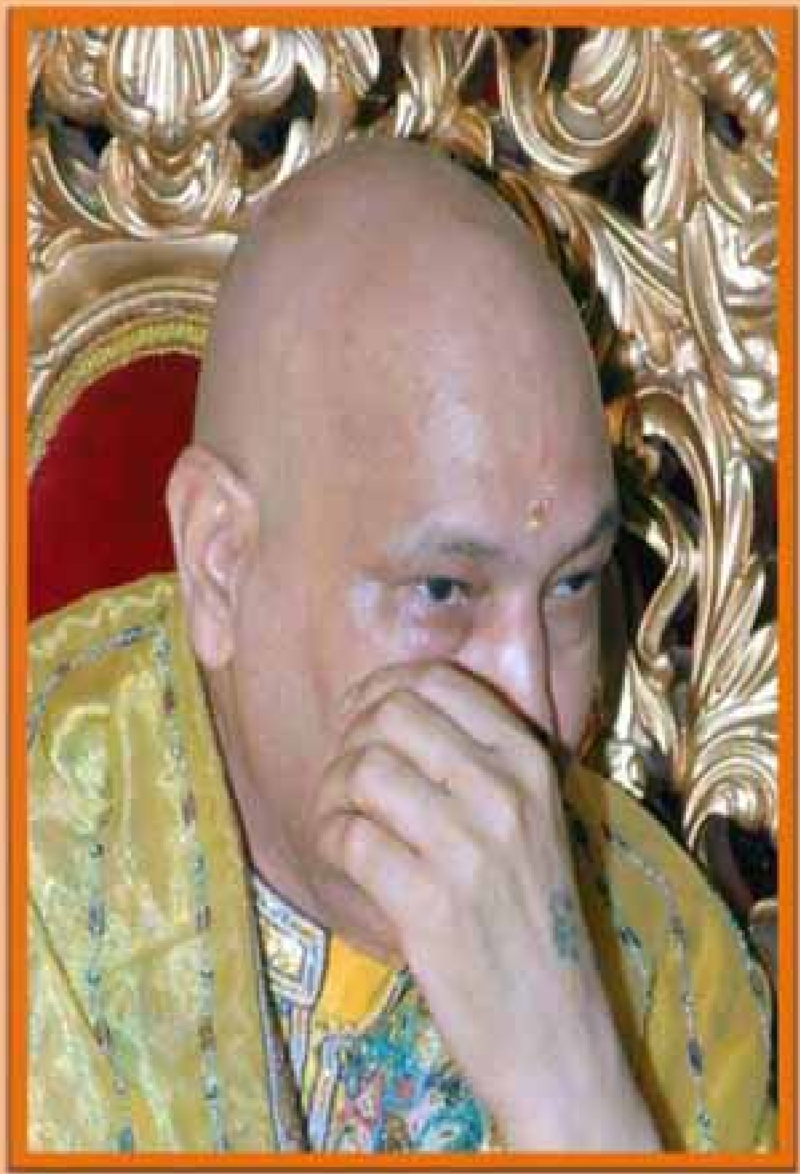

हालांकि उस समय मेरे लिए यह पूर्णरूप से समझना कठिन था कि आखिर क्या हुआ। लेकिन आने वाले महीनों में मैं जान पाई गुरुजी को। गुरुजी के सावधानी से भरे हुए शब्दों के कारण मैं अर्थशास्त्र पर विशेष ध्यान दे पाई। इस वजह से मैं आने वाले घटनाक्रम के लिए अच्छी तरह से तैयार हो पाई। आधे सत्र के लिए हमें अर्थशास्त्र स्वयं से ही पढ़ना था क्योंकि हमारे शिक्षक ने स्कूल छोड़ दिया था। मगर गुरुजी की चेतावनी ने मुझे आखिरी समय की परेशानी से बचा लिया और मुझे अर्थशास्त्र में 97 प्रतिशत अंक मिले।

जैसे–जैसे बोर्ड की परीक्षा नजदीक आ रही थी, गुरुजी के दर्शनों की संख्या भी कम होती जा रही थी (गुरुजी के पढ़ाई पर ध्यान देने के निर्देश के कारण) 13 जनवरी (उत्तर भारत में लोहड़ी) को मैं माता–पिता और भाई के साथ गुरुजी के स्थान पर उनसे बोर्ड की परीक्षा के लिए आशीर्वाद लेने गई। यह दर्शन परीक्षा के पहले होने वाला आखिरी दर्शन था। गुरुजी उस दिन प्रसाद बांट रहे थे और मेरे बारी आते वो टॉफी दे रहे थे। यूँ तो गुरुजी टॉफी अपवाद स्वरूप था। इसलिए मैंने कुछ प्रसाद तो खा लिया और कुछ बाद के लिए रख लिया।

मैं गुरुजी को प्रणाम कर जाने को खड़ी हुई तो उनके पास कोई तस्वीर का पैकेट मुझे नहीं दिखा पर एक तस्वीर मिली तो मैं बहुत खुश हुई क्योंकि गुरुजी की तस्वीर एक पुरस्कार ही था। जब मैं तस्वीर को पकड़े हुई थी तो मैंने महसूस किया कि उससे सुगंध निकल रही है। मैं उस तस्वीर को अपने साथ परीक्षा में ले जाया करती थी। मेरी आखिरी परीक्षा के खत्म होते ही और मेरे घर लौटते ही वह खुश्बू गायब हो गई। ऐसे लगता था जैसे गुरुजी ने विशेषकर मेरी परीक्षा के लिए ही उस तस्वीर को आशीर्वाद दिया था।

जब हम उस रात घर वापस आए तब मैंने बची हुई टॉफियों की गिनती की।

मेरे पास 12 टॉफियाँ थीं जो छः पेपर के लिए दो–दो टॉफियाँ हो जाती थीं। प्रसाद के रूप में टॉफी, गुरुजी की तस्वीर और खुशबू पूरी परीक्षा में मेरे साथ थी जिससे मुझे काफी अच्छे अंक मिले और मेरा एडमिशन दिल्ली विश्वविद्यालय के अच्छे कॉलेज में हो पाया।

प्यार एक आइसक्रीम और सबसे अच्छा जन्मदिन

गुरुजी ने अपने शिष्यों के साथ गुडगाँव के एक होटल में जाने का निश्चय किया और मुझे भी आने को कहा।

बहुत जल्द हम ब्रिस्टल होटल पहुँच गए और मैं सबसे छोटी होने के कारण आकर्षण का केन्द्र थी। गुरुजी ने धीरे–धीरे होटल की छत पर घूमने के बाद संगत के लिए ठंडा मंगाने को बोला। ठंडा के साथ नमकीन और उसके बाद आइसक्रीम के साथ हमारा समय अच्छा बीता। वापस लौटते समय सभी अपनी गाड़ियों में थे। गुरुजी ने मेरे जाने के बारे में पूछा और देखा कि मैं किसी के साथ आराम से उनके स्थान पर वापस लौट रही हूँ। जब हम वापस पहुँचे गुरुजी ने मुझसे अपने अनुभव के बारे में पूछा। यह अनुभव बहुत ही अच्छा थां गुरुजी ने मुझसे पूछा कि मैंने आइसक्रीम खाई कि नहीं। मैंने उनसे कहा कि खराब गले के कारण मैंने आइसक्रीम नहीं खाई। उन्होंने मुझसे कहा कि मुझे आइसक्रीम खानी चाहिए थी इससे मेरा गला ठीक हो जाता। उनके इन सामान्य शब्दों ने मेरे गले को वैसे भी ठीक कर दिया था। उसके बाद मुझे कभी भी गले की परेशानी कभी नहीं हुई जो मुझे साल में एक बार जरूर परेशान करता था।

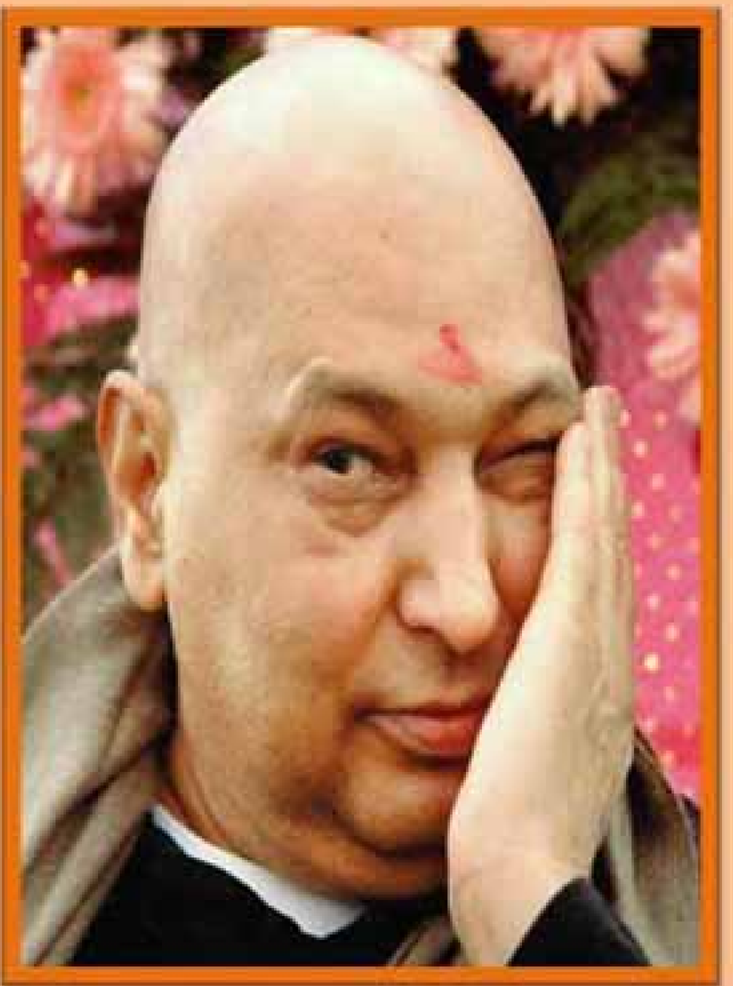

एक खास दिन पर उनके प्यार और परवाह का उदाहरण देखने को मिला, हम लोग सबद का आनंद ले रहे थे और गुरुजी के प्रसाद बाँटने का इंतजार कर

रहे थे। गुरुजी के निर्देश पर प्रसाद उनके बगल में रख दिया गया। गुरुजी ने पहले मेरे स्थान से ही प्रसाद वितरित करना प्रारंभ किया। उस दिन सबसे पहले मैंने ही प्रसाद ग्रहण किया। गुरुजी ने मुझसे पंजाबी में कहा कि मुझे भरपूर आनंद उठाना चाहिए क्योंकि आज मेरा जन्मदिन है। कोई संगत में जन्मदिन के बादे में नहीं जानता था और मेरे परिवार से किसी ने भी उन्हें इस बारे में नहीं बतायां यह मेरा सबसे अच्छा जन्मदिन था।

गुरुजी ने असंभव को संभव कर दिया

दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातक की परीक्षा के बाद थोड़े समय के लिए मैं कोई पढ़ाई नहीं कर रही थी। तब गुरुजी ने मुझे एम.बी.ए. (पत्राचार के जरिए) सिमबायसिस में भर्ती होने को कहा। मैंने फॉर्म भर दिया और सारी औपचारिकताएं समय पर पूरी हो गई। जिससे मैंने उस सत्र में एडमिशन ले लिया। परीक्षा के लिए मैंने दक्षिण दिल्ली के एक केन्द्र को चुना था क्योंकि यह मेरे घर से नजदीक था। लेकिन जब मुझे प्रवेश पत्र मिला तो मेरा परीक्षा केन्द्र दिल्ली के पार था। मेरा पिता ने केन्द्र परिवर्तित करवाने का प्रयत्न किया किन्तु पुणे के मुख्य केन्द्र से यह बताया गया कि एक बार केन्द्र निश्चित हो जाने के बाद वो बदला नहीं जा सकता ।

लगातार परीक्षा होने के कारण, 45 कि.मी. की यात्रा रोज करना असंभव था। इस कारण मैंने अपने दादा–दादी के यहाँ रहने का निर्णय लिया जो कि केन्द्र 10–15 मि.मी. दूर था। लेकिन यहाँ नोएडा में रहते हुए गुरुजी के दर्शन होना बहुत बड़ी समस्या थी। मैंने किसी तरह पहली परीक्षा दी किन्तु दूसरी परीक्षा से पहले मैंने बाकी परीक्षाएं छोड़ने के बारे में सोचना शुरु कर दिया। मैंने गुरुजी से इस विकट परिस्थिति से निकालने की प्रार्थना की। लेकिन इसके बाद जो हुआ वो मेरी कल्पना से परे था।

जब सभी विद्यार्थी शांतिपूर्वक परीक्षा लिख रहे थे तब एक अध्यापक ने आकर पूछा कि क्या कोई विद्यार्थी अपना केन्द्र बदलना चाहता है। वैकल्पिक केन्द्र की सूची में उस केन्द्र का भी नाम था जिसके लिए मैंने भी कोशिश की थी। मैंने मौके का फायदा उठाया। परीक्षा के बाद अध्यापक ने मुझसे कहा कि उनका केन्द्र स्थान की समस्या से जूझ रहा था इसलिए यह निर्णय लिया गया और उन्होंने मेरे केन्द्र के परिवर्तन को निश्चित किया। इस प्रकार परीक्षा के दौरान भी मुझे गुरुजी के दर्शन का सौभाग्य मिला। गुरुजी के अलावा कौन घटनाओं को इतना नाटकीय मोड़ दे सकता है ? गुरुजी की शक्ति को जान पाना हमारी समझ से परे है। वह तर्क को अस्त–व्यस्त करने वाला है।

एक बार जब संगत गुरुजी के यहाँ हुई तभी भूकंप के झटके आए सभी अपनी जगहों पर बैठे रहे लेकिन जब झटके आठ–दस सेकेंड से ज्यादा देर तक रहने से लोगों में हलचल होने लगी। यह महसूस कर गुरुजी जो अभी तक अप्रभावित हो अपने मुड़े हुए पाँव को ज़मीन पर रखते हैं। सारी हलचल शांत हो जाती है।

अपने कुछ शिष्यों और मेरे साथ गुरुजी एक बार बड़े मंदिर गए। मुख्य द्वार पर निर्माण कार्य चलने के कारण भीगे सीमेंट का टुकड़ा था। संगत की गतिविधि को सुसाध्य बनाने के लिए वहाँ एक लकड़ी का एक तख्ता। रखा था। हमने उसका इस्तेमाल पार करने के लिए किया लेकिन गुरुजी ने उस भींगे हुए टुकड़े से ही जाने का निर्णय लिया। इस भीगे सीमेंट पर एक भी चिह्न न पाकर हम सब विस्मय से भर गए। और उसके बाद जब हमने उस जगह का मुआयना किया तो एक अंगुली के छूने से भी वहाँ चिह्न बन जा रहा था।

पंद्रह दिनों में विवाह

एक बार गुरुजी के शरण में आ जाने से वो हमारी चिन्ताओं, तकलीफों का ख्याल रखते हैं। गुरुजी हमारे भविष्य की जरूरतों को जानते हैं और उनकी पूर्ति होने की व्यवस्था भी करते हैं गुरुजी ने यह निर्णय ले लिया था कि मेरी शादी कब होनी है और इसको सूचना मेरी माँ को छः साल पहले ही दे दी थी।

अप्रैल के शुरु में गुरुजी ने अचानक मेरे पिता से मेरी शादी के बादे में पूछा। पिता ने गुरुजी को बताया कि एक रिश्तेदार ने एक विवाह–प्रस्ताव दिया है लेकिन हम अभी इसके विवाह के बारे में नहीं सोच रहे हैं। इस प्रस्ताव पर गंभीरता से विचार करने को गुरुजी ने पिताजी से कहा।

लड़का स्वीडन में नौकरी करता था और 16 अप्रैल से एक महीने के लिए भारत आने वाला था। 17 अप्रैल को दोनों परिवार मिलेंगे–ऐसा निर्णय लिया गया। 17 अप्रैल को हम पहली बार मिले और कुछ ही घंटे में वहाँ त्योहार सा माहौल हो गया।

सारा इंतजाम उसी समय वहीं हो गया और सगाई की रस्म हमारी पहली मुलाकात में ही कर दी गई। कुछ ही दिनों में शादी की तारीख भी निश्चित कर

दी गई उसी महीने की 30 तारीख को। सारी तैयारियाँ युद्ध स्तर पर की गईं और मेरी शादी 30 अप्रैल को हो गई।

यूँ तो गुरुजी शारीरिक रूप से शादी में मौजूद नहीं थे लेकिन उनकी मौजूदगी का अहसास उस रात हर कार्य में नज़र आ रहा था। वहाँ मौजूद सबसे खाने, सजावट, हर चीज की तारीफ किए बिना नहीं रह पा रहे थे।

एफिल टॉवर पर गुरुजी से मुलाकात

मेरे पति को स्वीडन मई के मध्य में जाना था क्योंकि उन्हें ऑफिस जाना था। और मेरे पासपोर्ट और वीजा का इंतजाम 15 दिनों में होना असंभव था। एक प्रार्थना पत्र लिखा गया लेकिन स्वीडिश दूतावास ने कहा कि सारे आवेदन स्वीकृति के लिए स्वीडन भेजे गए हैं और वहीं से बीजा दिया जा सकता है। मेरे पति अपना कार्यक्रम बदल नहीं सकते थे इसलिए उन्हें अकेले ही स्वीडन जाना पड़ा। स्वीडन में वे दूतावास भी गए जिससे बीजा का शीघ्रता से पूरा हो सके। एक महीना बीत गया। जून के प्रथम सप्ताह में ऐसा लगा कि मुझे एक हफ्ते में वीजा मिल जाएगा। हमने 16 तारीख की रात का टिकट करवा लिया। लेकिन दूतावास से कहा गया कि वीजा उपलब्ध नहीं है। मैं निराश हो गई क्योंकि इससे एक और सप्ताह की देरी हो जाती है। मैं यह सूचना अपने पिता को देता हूँ। आश्चर्यजनक रूप से ऑफिसर अगले कुछ

घंटे में वीजा हमें सौंप देते हैं। मैं अपने पिता को यह समाचार देती है लेकिन उन्हें कोई विस्मय नहीं होता।

बाद में मेरे पिता मुझे बताते हैं कि मेरे वीजा के बारे में गुरुजी ने 15–20 मिनट पहले ही बता दिया थां मैंने महसूस किया कि बिना गुरुजी के दखल के बिना उस दिन वीजा मिलना असंभव था। गुरुजी बिना किसी दीवार के आपका भूत भविष्य और वर्तमान देख सकते हैं और अपने शिष्य प्रार्थना पर कोई भी दूरी तय कर सकते हैं।

एक सप्ताहांत में स्वीडन में मैं और मेरे पति ने पेरिस घूमने का निर्णय लिया। जब हम एफिल टावर के प्रथम तल पर थे, मैंने गुरुजी के तीव्र खुशबू का अहसास किया अपने अगले ही फोन पर बातचीत में पिताजी ने मुझे बताया कि गुरुजी उस दिन मेरे बारे में पूछ रहे थे। जिस समय मैं एफिल टावर पर मौजूद थी।

GURUJI KA ASHRAM

गुरुजी के साथ मेरा अनुभव एक गूँगी औरत के समान है जो मिठाई के स्वाद का वर्णन करना चाह रही है। कोई भी शब्द उनका वर्णन नहीं कर सकता। मैं उनसे सिर्फ यह प्रार्थना करना चाहती हूँ कि वो हमेशा हमारे हाथों को थामे रहें, जैसा उन्होंने इन स्वर्णिम वर्षों में किया है। ऐसा कहा जाता है कि पारस लोहे को सोने में परिवर्तित कर देता है। लेकिन गुरुजी एक बेकार पत्थर को हीरे में बदल देता है। सिर्फ आस्था और निष्ठा की जरूरत है।

– आरती का सत्संग

एक व्यक्ति को आवाज वापस मिल गई

1999 में दिसंबर की सर्दी मेरे लिए एक उदासीन खबर लेकर आई। धीरे–धीरे मैं अपनी आवाज खोता जा रहा था और मुझे कुछ शब्द भी बोलने के लिए काफी

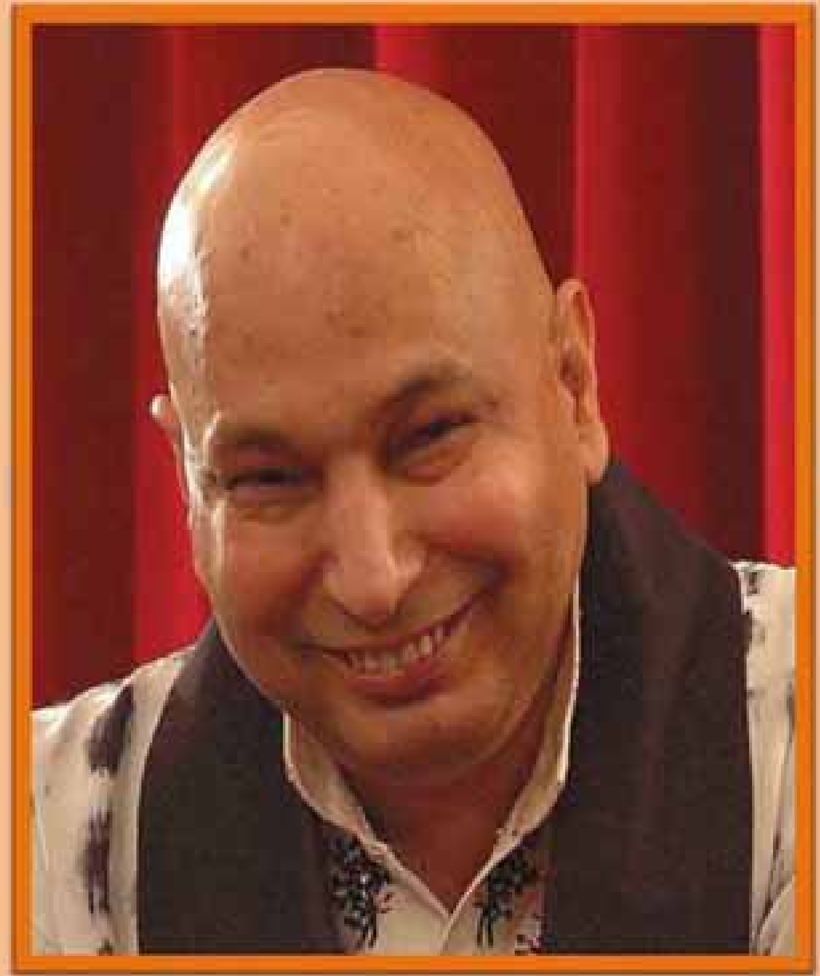

मेहनत करनी पड़ती थी। ई एन टी विशेषज्ञों से मिलने के बाद मुझे ऐसा लगा कि दिल्ली की ये सर्दी बहुत लम्बी और दुख से भरी हुई होने वाली है।

विस्तृत जाँच के बाद विशेषज्ञोंने सर्जरी की सलाह दी। सर गंगाराम अस्पताल में मेरा ऑपरेशन किया गया। सर्जरी के बाद मेरे स्वर–तंत्री (वोकल कॉर्ड) को बॉयोप्सी के के लिए भेजा गया। रिपोर्ट ने यह निश्चित कर दिया कि स्वर–तंत्री की वृद्धि अहितकर और कैंसरग्रस्त है।

दो महीने के बाद ही मुझे संदेह हुआ कि मेरी आवाज खराब होती जा रही है। मैं नर्क भोग रहा था और सोच रहा था कि किस कारण से ऐसा हुआ। आखिरकार

न मैं सिगरेट पीता हूँ न शराब, न मैं तम्बाकू खाता हूँ न पान। मगर भगवान ने मुझे जल्दी ही बचा लिया।

सर्जरी के एक सप्ताह के अंदर, मेरे तीन हफ्ते के विश्राम के दौरान मैं गुरुजी की शरण में था। मैं और मेरी पत्नी दोनों अपनी दुर्दशा के साथ गुरुजी के पास गए। मगर हमें एक परीक्षा पास करनी थी। मेरे ऑपरेशन को पाँच दिन हो गए। मुझे गुरुजी के पास जाने की एक अकाट्य जरूरत महसूस हुई। डॉक्टरों ने मुझे चेतावनी दी कि पानी किसी भी हाल में मेरे गले में नहीं जाना चाहिए। और उस दिन काफी तेज बारिश हो रही थी जब हम घर से चले। मेरे परिवार ने उस दिन मुझे आराम करने को कहा और किसी और दिन जाने को कहा। लेकिन मैं गुरुजी के पास जाने को कृतसंकल्प था। मेरी अंतरात्मा ने मुझसे कहा कि आज ही का दिन है और मुझे आज ही जाना है।

जैसे ही हम एम्पायर स्टेट में गुरुजी के स्थान पर प्रवेश करते हैं एक शीतल–सी अनुभूति होती है। गुरुजी रंग–बिरंगे वस्त्रों में अपने तेजस्वी गद्दी पर एक स्थान, आध्यात्मिक प्रभुत्व का चिह्न पर बैठे हुए थे। हमारा परिचय करवाया गया और हमें लाल रंग के हॉल में फैले कालीन पर बिठाया गया। पवित्र संगीत और गुरबानी से पूरा वातावरण आवेष्ठित था। कुछ समय के बाद चाय प्रसाद बाँटा गया।

इसके बाद गुरुजी ने हमें बुलाया। उन्होंने मेरी परेशान पत्नी से कहा, "तेरे पति को 50 प्रतिशत ठीक कर दिया यह बात विश्वसनीय नहीं थी कि एक कैंसरग्रस्त वृद्धि को ठीक कर दिया गया है। लेकिन हमने गुरुजी की सलाह का पालन किया। हमने दो बायोपसी स्लाइड्स को सर गंगाराम अस्पताल और एक मैक्स, नई दिल्ली और एक टाटा इंस्टीट्यूट मुंबई में फिर से जाँच के लिए भेजा। करीब एक सप्ताह के बाद रिपोर्ट के साथ हम एम्पायर एस्टेट गए। जैसे ही

हमने प्रवेश किया गुरुजी मुस्कुराए और बोले, "क्यों डॉक्टर कन्फ्यूज हो गए ?" वास्तव में डॉक्टर उलझे हुए थे। दोनों रिपोर्ट ने मुझे निरोग घोषित किया। पहला चमत्कार हो चुका था।

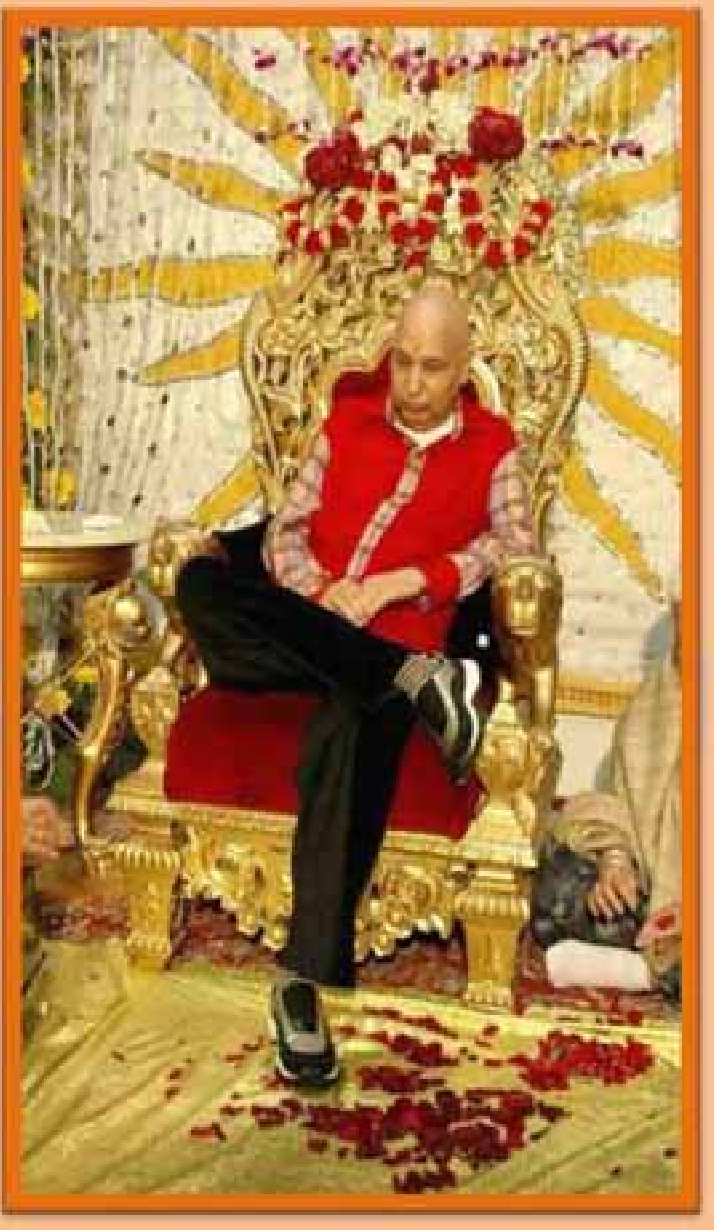

इसके बाद डॉक्टरों ने मुझे हिस्टोपैथोलॉजी के रिपोर्ट को नजरअंदाज नहीं करने को कहा और पूरा इलाज करवाने की सलाह दी। मैं पूरी तरह से कृ तसंकल्प था कि आगे का कोई भी इलाज गुरुजी के निर्देश पर ही किया जाएगा। मेरी इच्छा को पूरा करते हुए यही हुआ–गुरुजी ने मुझे आशीर्वाद दिया और मिर्च से भरे हुए लंगर में खाने को कहा जो कि डॉक्टरों ने मना कर रखा था। उन्होंने मुझे उबला हुआ खाने को कहा था। गुरुजी ने आगे बढ़कर मुझे बात करने को मजबूर किया और यह घोषणा की कि मैं बिल्कुल ठीक हूँ।

मैंने गुरुजी की सलाह पर रेडियोथेरेपी करवाता रहा। लेकिन मुझे कोई भी साइड–इफेक्ट नहीं हुआ। मुझे कभी कोई उबकाई नहीं आई और मेरे हीमोग्लोबिन का स्तर भी सामान्य रहा। केवल एक दवाई मैं ले रहा था और वो

थी एक तांबे के गिलास से पानी, जिसे गुरुजी का आशीर्वाद प्राप्त था। मैं हर रात को गिलास को सोने से पहले भर लिया करता था और अगली सुबह आधे गिलास को पी लिया करता था और आधे को नहाने वाली बाल्टी में डाला करता था। बस इसी सामान्य से विधि से मैं पूरी तरह ठीक हो गया। इस तरह मेरा एक चमत्कारिक परिवर्तन एक नए स्वस्थ जीवन में हो पाया। और मेरी पत्नी और दो बेटियाँ इस जीवन का हिस्सा हैं – इसके लिए गुरुजी को धन्यवाद।

– अचल पॉल का सत्संग, निदेशक, बज कम्यूनिकेशन

GURUJI KA ASHRAM

माँ की तरह वो हमें छाती से चिपकाए रखते हैं

गुरुजी के प्रथम दर्शन के बाद मेरे परिवार के साथ बहुत कुछ हुआ। इसके पहले मेरा जीवन अस्त–व्यस्त था, मेरे पिता कोमा में थे, और डेढ़ महीने से अस्पताल में थे। खुद एक डॉक्टर होने के कारण मैं पिता को होने वाली सारी समस्याओं से अवगत थी इसलिए उनके पास से खुद को हटा नहीं पाती थी।

फिर एक ऐसा दिन आया, जब मेरा नैराश्य अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया, हर चीज गलत हो रही थी, वित्तीय स्थिति चरमरा गई थी और अपने पिता को बचाने का हर प्रयत्न अग्निपरीक्षा के समान होता जा रहा था। मेरे भाई और बहन भी पुरजोर कोशिश कर रहे थे। कुछ कोई भी प्रयत्न सफल नहीं हो रहा था, मैं उदासी में डूबती जा रही थी। मेरे आँसुओं से लड़ते हुए मैं यह सोच रही थी कि भगवान मुझे और मेरे परिवार को क्यों नहीं बचा रहे हैं ? मैंने हमेशा

उनमें विश्वास, उन्हें प्यार और उन पर विश्वास किया है। तो क्यों नहीं वो इन सबका उत्तर दे रहे हैं ?

मुझे किसी ऐसे व्यक्ति से मिलने की जरूरत की जिससे मैं सारे दुख–दर्द बाँट सकूँ बिना कोई शब्द बोले : कोई ऐसा जो मुझे सच्चाई का सामना करने की हिम्मत दे और परेशान होने पर उसमें से निकाल भी ले।

एक रात मैं घर आकर सो नहीं पाई। करीब तीन बजे मेरे शिव ने कमरे में आकर कोई प्रसाद दिया। शिव ने बताया कि यह गुरुजी का प्रसाद है और उनके कुछ चमत्कार का वर्णन किया। मुझे उस रात अच्छी नींद आई।

अगले दिन मैंने और मेरे पति ने गुरुजी के दर्शन को जाने का निश्चय किया। हमें यह नहीं पता था कि दाढ़ियों वाले पेड़ के नीचे बाबाजी से मिलने की कल्पना था। मगर मैं आश्चर्यचकित रह गई। यहाँ तो एक ऐसे व्यक्ति से मिलना हुआ जिनका तेज उद्दीप्त करने वाला था। जिनके मुस्कुराहट चेहरे पर बच्चों की सादगी थी, उनकी आँखें आपके हृदय को छूती हैं।

मैं उनसे मिलकर काफी खुश हुई, उन्होंने हमें अपने निकट बैठने को कहा जिससे हम काफी सुरक्षित महसूस हुए। उन्होंने मुझे सब ठीक हो जाने का भरोसा दिलाया।

अगले ही दिन मैं अपने जुड़वा बेटों (जो उस समय चार साल के थे) को गुरुजी का आशीर्वाद दिलाने ले गई। रास्ते में मैंने उनसे गुरुजी को प्रणाम करने को कहा। मेरे बड़े बेटे दक्ष ने शिष्टता से यह कहते हुए मना कर दिया कि वह सिर्फ भगवान शिव के पैर छूता है। जैसे ही मैं गुरुजी को प्रणाम करने को आगे बढ़ी वही खड़ा रहा जबकि ध्रुव ने प्रणाम किया। मुझे बहुत बुरा लगा क्योंकि तब तक दक्ष ने पैर नहीं छुए थें अचानक मैंने देखा कि दक्ष ने वापस आकर गुरुजी

के पैर छुए। बाद में मैंने उसे चिढ़ाते हुए पूछा कि उसने ऐसा क्यों किया। उसने निष्कपट सा उत्तर दिया कि उसने शिवजी के पैर छुए। बिना किसी को पता चले गुरुजी ने अपने दर्शन दक्ष के दिए।

धीरे–धीरे सब कुछ ठीक होने लगा और गुरुजी के आशीर्वाद से मेरे पिता के इलाज के लिए मदद मिलने लगी। मेरे पति को भी उनके सपनों की नौकरी मिल गई।

तुम्हारे बच्चे को कुछ नहीं होगा

फिर सन् 2000 में दक्ष की भूख मरने लगी उसे बुखार था। वजन कम था लसीक–ग्रंथि (लिम्फ नोड) में वृद्धि होने लगी। डॉक्टर ने एंटीबायोटिक दवाएँ दी किन्तु कोई फायदा नहीं हुआ। सोमवार के दिन हम उसे सर गंगाराम अस्पताल में विशेषज्ञ से दिखाने ले गए। दक्ष के सारे संकेत कैंसर की ओर इशारा कर रहे थे। मैंने डॉक्टर की केबिन में जाते हुए गुरुजी की तस्वीर को हाथ में पकड़कर रखा था। मैं अपने बेटे की अच्छी सेहत के लिए और गुरुजी के आशीर्वाद के लिए लगातार प्रार्थना कर रही थी। मुझे पता था कि उनकी शक्ति में ही मेरे बेटे की बीमारी को एक क्षण में

ठीक कर सकती थी। मैंने ऐसा सुना था कि अगर आप गुरुजी के सच्चे मन से याद करते हैं तो वो हमेशा आपके बचाव के लिए आते हैं। पूरा केबिन उनकी सुगंध से भर गया। गुलाबी सुगंध उनकी मौजूदगी का अहसास कराता है।

डॉक्टर ने दक्ष का परीक्षण किया और दुःखी होकर निराशा में मेरी ओर देखा। उसने पाया कि लीवर और स्पीलीन दोनों में वृद्धि घातक होती जा रही है। मेरी आँखों में आँसू आने लगे और भक्ति के साथ गुरुजी से मेरे पुत्र की समस्या को दूर करने की प्रार्थना कर रही थी। मैंने कई चमत्कारों के बारे में सुन रखा था और मुझे विश्वास था कि वो मेरे पुत्र की बीमारी को दूर कर सकते हैं।

अल्ट्रासाउंड होते समय मैंने और मेरे पुत्र ने गुरुजी की उपस्थिति को महसूस किया। गुरुजी के आशीर्वाद से अल्ट्रासाउंड का परिणाम सामान्य आया। लीवन और स्वीलीन भी सामान्य आकार में पाए गए। गुरुजी ने हमारी प्रार्थना सुन ली थी और मेरे पुत्र को नया जीवन दिया था।

शाम को हम गुरुजी के स्थान उनसे दिनभर की गतिविधि के बारे में बातचीत करने की आशा में पहुँचे। हमारे हॉल में प्रवेश करते ही उन्होंने हमें बुलाकर शरारत भरी मुस्कुराहट के साथ पूछा, "जाँच में क्या हुआ ?" उन्हें दिनभर की सारी गतिविधियों का पता था फिर भी उन्होंने हमारी जिज्ञासा को शांत करने का मौका दिया।

मैंने उन्हें बताया कि डॉक्टर"सर का संदेह कर रहे हैं। वो चुप हो गए। मैं रोने ही वाली थी तभी उन्होंने कहा कि "चिन्ता मत करो, तुम्हारे बच्चे को कुछ नहीं होगा।" मैंने जानना चाहा कि क्या और भी जाँच करवाना जरूरी है। उन्होंने कहा कि खुद डॉक्टर होने के कारण मेरी जो भी इच्छा हो, मैं वो करवाऊँ। मेरी तार्किक बुद्धि सिर्फ उन पर ही विश्वास नहीं करती थी बल्कि कई जाँच मैं अपने पुत्र पर करवाती थी। विश्वास करो या न करो, सभी जाँच सामान्य पाए गए।

अंत में, लसीका–ग्रंथि में बायोव्सी करवाई गई। निकाले गए लसीका ग्रंथि में आए परिवर्तन को खुली नंगी आँखों से भी देखा जा सकता था। मैं शंकालु हो गई कि ऐसा कैसे हो सकता है ? गुरुजी ने कहा था कि सब ठीक हो जाएगा फिर ऐसा क्यों ? सभी तरह की संकाएं मन में आने लगी। मैं निराश थी।

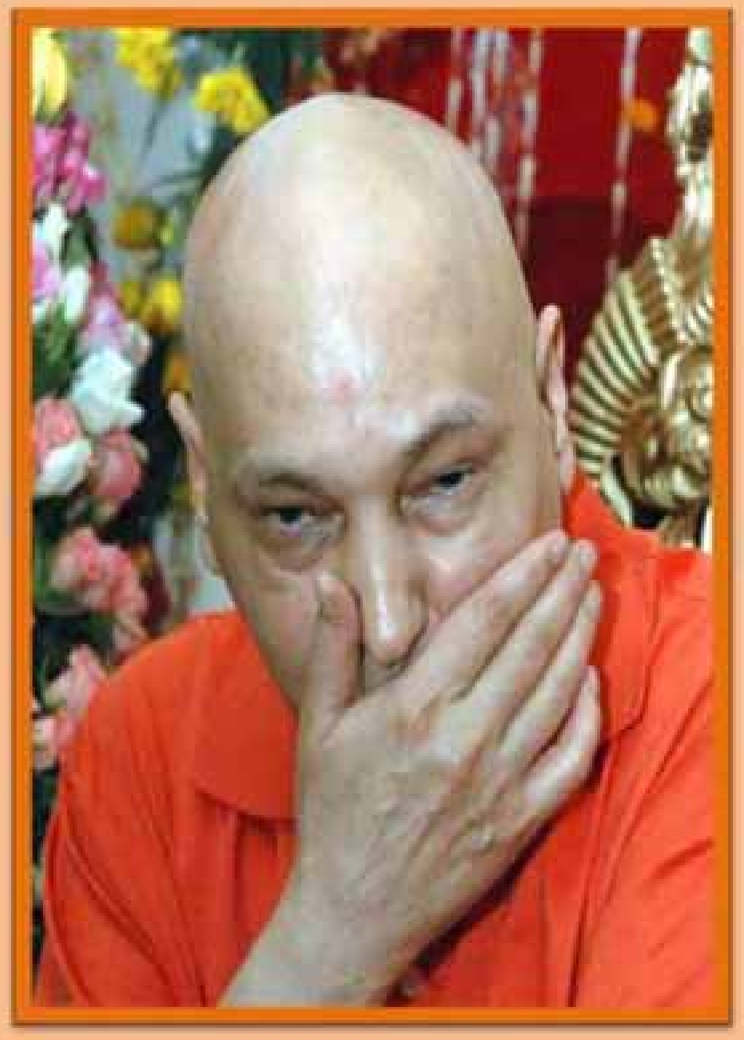

उस शाम, मुझे संगत में सप्ताह में एक बार आने को कहा गया। मैं सोचती रही कि उन्होंने ऐसा क्यों किया। अगले सप्ताह बायोप्सी की रिपोर्ट आई और सब कुछ सामान्यकार सर्जन को विश्वास नहीं हुआ और कहा कि यह चमत्कार है। हमें पता था कि किसने यह चमत्कार किया है।

कुछ सप्ताह बाद गुरुजी ने एक दिन कहा, ''मैंने तुम्हारे बेटे को ठीक कर दिया।'' उस दिन से बुखार गायब हो गया, मेरे बेटे की भूख बढ़ने लगी, लसीका–ग्रंथि की वृद्धि रुक गई, दक्ष बिल्कुल ठीक हो गया। उसे कोई दवाई नहीं दी गई क्योंकि उसकी बीमारी के बारे में निश्चि कभी नहीं हो पाया।

गुरुजी के साथ हर पल चमत्कारिक है। वो आपका हाथ थाम कर आपका पथ प्रदर्शित करते हैं। वो आपके भार वहन बिना आपको पता चले करते हैं। वो

रास्ते के पत्थर को हटाकर उसे कोमल और सुखदायक बनाते हैं। सभी बुराइयें से आपका बचाव करते हैं और माँ की तरह अपनी छाती से चिपकाकर संकट से बचाते हैं और आपके गलत होने पर सही राह पर डाल देते हैं। हजारों लोग उनके दर्शन की इच्छा से आते हैं और बिना आशीर्वाद लिए नहीं जाते। हममें से हर कोई सोचता है कि वो केवल हमारे साथ है। वो इस दुनिया में अपने कर्तव्यों को सही तरीके से करने की राह बताते हैं। वो हमारे पथभ्रष्ट होने पर और हमारी पीड़ाओं को चुपचाप अपने ऊपर ले सहते हैं। मेरा विश्वास कीजिए, उनके जैसा न कोई हुआ है और न आगे होगा।

कुछ साल पहले मेरी माँ को अस्पताल में भर्ती करवाया गया। डॉक्टरों ने कहा कि उनका हीमोग्लोबिन काफी कम हो गया है और उन्हें ट्रांसफ्यूजन की जरूरत है। हमने गुरुजी को अपनी चिन्ता बताई। उन्होंने मुस्कुराकर माँ को आशीर्वाद दिया। अगले ही दिन माँ घर वापस आ गई क्योंकि सारे टेस्ट सामान्य थे।

सफेद वस्त्रों में चिकित्सक

मेरी मौसी जो कभी गुरुजी से नहीं मिली थी, अचानक कोमा में चली गईं और उन्हें आई सी यू में भर्ती करवाया गया। चूँकि उन्हें उच्च रक्त दबाव था इसलिए डॉक्टर ब्रेन हेमरेज का संदेह कर रहे थे। गुरुजी उस समय दिल्ली में नहीं थे। मैंने मौसी के सीटी स्केन के समय गुरुजी के सुगंध से स्केन वाला कमरा भर गया और सारे रिपोर्ट सामान्य आए। मैं मौसी को, जो अभी भी कोमा में थी, को छोड़कर रात में वापस आ गई।

मगर अगली सुबह उन्हें अपने बिस्तर पर बैठा देख मैं खुशी से आश्चर्यचकित रह गई। उन्होंने मुझे बताया कि पिछली रात सफेद वस्त्रों में एक व्यक्ति ने उन्हें जगाकर उठने को कहा। मैं तुरन्त ही समझ गई कि गुरुजी ने उन्हें आशीर्वाद दिया है। मौसी आज बिल्कुल ठीक है और हमें अब भी यह नहीं पता कि सारे टेस्ट सामान्य होने के बावजूद वो कोमा में क्यों चलीं गई।

गुरुजी तीन महीने के बाद जालंधर से वापस आए और जैसे ही मैं उनके पाँव छूने को झुकी उन्होंने कहा, "मौसी को भी ठीक करा लिया।" मैं विस्मित हो गई। वो यहाँ पर मौजूद नहीं थे और मेरी मौसी की बीमारी का किसी को पता नहीं था। लेकिन फिर मुझे यह समझना चाहिए कि उन्हें सब पता रहता है। यह आश्चर्य की बात है कि गुरुजी आप पर अपनी नज़र रखते हैं चाहे आप कहीं भी जाएँ विदेश या देश में। समय और दूरी कोई मायने नहीं रखते। वो समय और स्थान की परिधि से परे हैं।

कुछ साल पहले मैं बुखार, कमर दर्द और साँस लेने में तकलीफ से ग्रसित हो अस्पताल में भर्ती हुई मुझे ऑक्सीजन पर रखा गया मगर मेरी तकलीफ कम नहीं हुई शुक्रवार के दिन मेरे चेस्ट के सीटी स्केन का निर्णय लिया गया।

रेडियोलॉजिस्ट ने स्केन को देखा और कहा कि यह सामान्य स्केन नहीं है और यह जो भी है मेरे लंग में फैल रहा है। मुझे और भी जाँच की जरूरत है। मैं उस दिन अस्पताल में अकेली थी और सिर्फ एक व्यक्ति हो मेरी देखभाल कर सकता था वो थे गुरुजी। मैंने उस पूरे दिन उनकी प्रार्थना की।

शाम को मैं गुरुजी के पास गई और अचानक गुरुजी ने मुझसे पूछा कि मैं कैसी हूँ। मैंने उन्हें बताया कि सांस लेने में तकलीफ के कारण मैं अस्पताल में भर्ती थी। सीटी स्केन मेरे लंग सामान्य नहीं आए हैं और मैंने प्रार्थना की कि आप मुझे ठीक कर दें। उन्होंने मुस्कुराते हुए मुझसे कहा कि उन्होंने मुझे ठीक कर दिया है और मैं अब ठीक हूँ। मैं अपने आंसुओं को रोक नहीं पाई, कुछ ही क्षणों में उन्होंने मेरी सारी परेशानियों को दूर कर दिया था। उस रात मैं इतनी निश्चिन्त हो गई कि बिना किसी दावई के आराम से सो पाई। (मैं पिछले चार–पाँच रातों से सोई नहीं थी) डॉक्टर मुझे जॉचने आए और बिना ऑक्सीजन की सहायता से मुझे सोता देख आश्चर्यचकित हो चले गए। अगली सुबह मैं घर वापस आ गई।

कुछ समय पहले, मेरे डॉक्टर पति को सुबह में बेचैनी का अनुभव एक सप्ताह से हो रहा था। ई सी जी की जाँच के बाद उन्हें अस्पताल में भर्ती के बारे में सोचा गया लेकिन मेरे पति ने इंकार कर दिया और हम वापस आ गए। उन्होंने कहा कि वो गुरुजी के पास जाकर उनकी आज्ञा लेकर ही अस्पताल में भर्ती होंगे।

मैं उन्हें और एक हृदय विशेषज्ञ के पास ले गई। उसने भी आगे की जाँच के लिए कहा क्योंकि ई सी जी में परिवर्तन स्पष्ट नजर आ रहा था। हम घबड़ा गए और उसी समय गुरुजी के दर्शन का निर्णय लिया। उन्होंने हमारी ओर देखा और कहा, ''तुम अरुण को ठीक कराने को आये हो।''

मैंने उन्हें सारी गतिविधियों की जानकारी दी। अपने हाथ के इशारे के साथ उन्होंने कहा कि अरुण ठीक हो जाएगा। उन्होंने अरुण से अस्पताल जाने की

बजाय ऑफिस जाने को कहा। गुरुजी ने दो पेग विहस्की और गेहू की घास लेने को कहा।

कुछ हफ्ते बाद गुरुजी ने अरुण से कहा कि उन्होंने उसका हृदय ठीक कर दिया नही तो डॉक्टरों ने ऑपरेशन कर दिया होता। गुरुजी के आशीर्वाद से अरुण आज बिल्कुल स्वस्थ है। हम गुरुजी के शुक्रगुजार हैं कि उन्होंने हमें अपने आशीर्वाद और एक खुशहाल परिवार दिया।

उनका आशीर्वाद मेरी बहन को भी मिला। वह बीमार हो गई और पैथोलॉजिस्ट ने बताया कि लिम्फोमा का संदेह है। लेकिन गुरुजी ने उसे आशीर्वाद देते हुए कहा कि उसे कुछ नहीं हुआ है और वह बिल्कुल ठीक हो जाएगी अगली सुबह प्रयोगशाला से फोन पर बताया जाता है कि नमूनों को लेकर भ्रांति हो गई थी आपकी बहन को कुछ नहीं हुआ। केवल हमारा परिवार ही उनके आशीर्वाद से धनी नहीं है। हमारे पड़ोसी सेठी जी को आई सी यू में भर्ती करवाया गया। डॉक्टरों को

उनके स्वस्थ होने की बहुत कम आशा थी। गुरुजी डॉक्टरों ने कहा कि सेठीजी किस्मत वाले हैं लेकिन हमें पता था कि उन्हें आशीर्वाद प्राप्त है।

एक बार गुरुजी अस्पताल के आई सी यू में एक नवयुवक मानसिंह को देखने गए जो मस्तिष्क के ज्वर उसके बचने की आशा छोड़ दी थी।

मानसिंह का भाई गुरुजी के पास उसकी तस्वीर लेकर गया। बिना किसी के बताए ही गुरुजी ने उसे पहचान कर आशीर्वाद दिया। अगले दो हफ्तों के अंदर मानसिंह अस्पताल से घर आ गया और आज पूरी तरह से स्वस्थ है। एक खतरनाक बीमारी से अपने घर के सदस्य को पाकर परिवार निरंतर गुरुजी का धन्यवाद कर रहा था।

समय से परे आपके साथ

मेरे जुड़वाँ बेटों में हमेशा कौन बड़ा है, इस बात को लेकर कहा–सुनी होती थी। गुरुजी ने उनके संदेह का निराकरण किया। उन्होंने बताया कि एक दूसरे से छः मिनट से बड़ा है। मैं यह सुनकर आश्चर्यचकित हो गई क्योंकि जनम से दौरान डॉक्टर जन्म का समय लिख नहीं पाए थे। मैं सोचती रही कि उन्हें यह कैसे पता चला। अचानक वो मुझसे कहते हैं कि उन्होंने ही मुझे ये बच्चे दिए इसलिए उन्हें पता है।

गुरुजी के रूप में और वह मेरे उनके पास जाने से पहले की बात है उन्हें जानने से पहले भी मैंने उनकी उपस्थिति अपने जीवन में महसूस की। वो मुझे पहले से जानते हैं। हमारे लिए हमेशा मौजूद रहने के लिए मैं उनका धन्यवाद करती हूँ।

– डॉ. अमीता का सत्संग, एक मात्र

अंधेरे का नाशक

हममें से अधिकतर आध्यात्मिक पथ पर चलना चाहते हैं। हम कैसे भी कल्पना कर आध्यात्मिकता के बारे में धारणा बना लेते हैं। हम सोचते हैं कि आध्यात्मिकता का अर्थ है हिमालय की गुफा में अकेले रहना या भूमि की लम्बाई–चौड़ाई नापते हुए इधर–उधर घूमना। हम यह नहीं समझते कि कोई भी आध्यात्मिक ज्ञान तब तक प्राप्त नहीं किया जा सकता जब तक आप अपने अहं को गुरु के कमल रूपी चरणों में समर्पित नहीं करते जो अकेले ही हमें दलदल रूपी भौतिक वातावरण से आध्यात्मिकता के रास्ते पर डाल सकते हैं।

गुरु शब्द का अर्थ है, अंधेरे का नाश करने वाला। हम सब अंधेरे और अज्ञानता के सुरंग में बंद हैं। जिससे सिर्फ गुरु ही आपको निकाल सकते हैं। गुरु भगवान है। उनके कहे गए शब्द भगवान के ही शब्द है। उनकी उपस्थिति ही उत्थापक, प्रेरणादायक और प्रभावशाली है। गुरु का साथ ही

स्वयं प्रबोधित करने वाला है। उनके साथ रहने से ही आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति होती है।

हमारे पवित्र धर्मग्रंथ गुरु–शिष्य के संबंधों के उदाहरण से भरे पड़े हैं। हमारे भगवान जिन्हें हम आज पूजते हैं ने जब मनुष्य रूप लिया तब उन्हें भी कभी–न–कभी गुरु की सहायता की आवश्यकता पड़ी। भगवान कृष्ण गुरु सांदीपनी के चरणों में बैठे। गुरु वशिष्ठ ने भगवान राम को उपदेश दिया। भगवान जीसस को भी अपने बपतिस्मा के लिए जॉर्डन नदी के किनारे जॉन की जरूरत हुई। देवों के भी गुरु बृहस्पति हैं।

हम बहुत भाग्यशाली हैं कि हमारे गुरु की तलाश में हमें गुरुजी का आशीर्वाद प्रापत है जिनका देवत्व साकार रूप है जो सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक और सर्वव्यापक है।

GURUJI KA ASHRAM

आशीर्वाद की झड़ी

सन् 1991 में मुझे घुटनों में तकलीफ होने लगी। घुटनों का दर्द बर्दाश्त के बाहर होता था। मैंने होम्योपैथिक, एलोपैथिक और दादी माँ के नुस्खे सभी आजमाए लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। पीड़ानाशक दवाई लेने से भी रात में दर्द की यंत्रणा से मुझे नींद नहीं होती थी। मैंने गुरुजी को अपनी परेशानी बताई और उस दयालु व्यक्ति ने मुझे स्वस्थ करने का निर्णय लिया। उन्होंने मुझे रसोईघर से एक चम्मच लाने को कहा और उसे मेरे घुटनों पर रख मंत्र का जाप करने लगे। दर्द गायब हो गया और मेरे सीढ़ियों के चढ़ने और दो घंटे पैदल चलने पर भी कभी टीस का भी अहसास नहीं हुआ।

कलकत्ता में रहने पर मुझे टायफॉयड हो गया जिससे मुझे डेढ़ महीने तक हल्का बुखार रहा। मैंने हर तरह की चिकित्सकीय जांच करवाई और दवाई खाई किन्तु

बुखार खत्म नहीं हुआ। मेरी बीमारी का सुनकर गुरुजी ने पान का पत्ता मंगवाया और मुझ पर रख दिया। अविश्वसनीय रूप से उसी क्षण से बुखार गायब हो गया।

मैंने दिल्ली में ब्यूटी पार्लर खोलने का निश्चय किया था क्योंकि मैं एक प्रशिक्षित सौन्दर्य प्रसाधिका थी और पहले भी एक ब्यूटी पार्लर में काम किया था। लेकिन गुरुजी ने मेरे प्रस्ताव को यह कर ठुकरा दिया इससे मुझे दमे की शिकायत हो सकती है।

समय के साथ मुझे पता चला कि मैं दमे की मरीज हो गई हूँ। एक दिन मेरी हालत अस्थिर हो गई और मुझे अस्पताल ले जाया गया। पूरे समय मैं गुरुजी की तस्वीर अपने पास रख उनसे मुझे बचाने की प्रार्थना कर रही थी। तुरन्त ही मुझे ऑक्सीजन पर रख इंजेक्शन लगाया गया। अस्पताल के डॉक्टर ने बाद में बताया कि दो मिनट की देरी भी मेरे लिए घातक हो सकती थी।

जब मैं गुरुजी से मिलने गई तो मेरे कुछ बोलने से पहले ही वो बोले, "मैंने तुम्हें दलदल से निकाल लिया।" यह वेदवाक्य था। बाद में मैंने गुरुजी से दवाईयों और श्वास–यंत्र के बारे में शिकायत की और उनसे पीछा छुड़ाने की प्रार्थना की। वो बात की याद दिलाने के लिए नाराज हुए। उन्हें पता था कि समस्या क्या है।

एक महीना बीतने के बाद मैंने महसूस किया कि मुझे कोई दमा नहीं है यानि श्वास–यंत्र (इंन्हेलर) का प्रयोग नहीं। यात्रा पर जाते समय मैं आज भी इन्हेलर खरीदती हूँ लेकिन लौटकर बिना प्रयोग किए दुकान में लौटा देती हूँ। दमे का उन्मूलन हो चुका था।

एक बार हम शिष्यों के समूह में गुरुजी के साथ थे। अचानक उन्होंने अपने दोनों हाथ एक व्यक्ति सिर पर रख दिया और हमने गुलाब की पंखुड़ियों की बारिश देखी। गुरुजी ने ऐसा ही एक स्त्री के साथ भी किया और फिर से पंखुड़ियों की झड़ी लग गई। उस स्त्री ने अपने दुपट्टे में उन पंखुड़ियों को एकत्रित किया। यह एक खूबसूरत चमत्कार था।

मेरे जन्मदिन पर गुरुजी ने संगत के आगे बुलाकर हाथ बढ़ाने को कहा। अचानक एक साड़ी मेरे हाथें पर आ गिरी। गुरुजी ने उसे मुझे न पहनकर उसे पवित्र स्थान पर रखने का आदेश दिया। उस साड़ी में गुरुजी की अभिलक्षक गुलाब की सुगंध मौजूद थी जो दस साल बीत जाने पर भी कायम है। इसके सिवाय, गुरुजी ने कुछ साल पहले मेरी बेटी के विवाह के बारे में भविष्यवाणी की थी कि उसका विवाह बहुत अच्छे व्यक्ति से होगा। बिना किसी परेशानी के ऐसा ही हुआ। गुरुजी के आशीर्वाद से आज वह सुखपूर्वक विवाहित है और उसके दो पुत्र हैं।

मेरी सलाह सब को यही है कि शुद्ध जल के लिए यहाँ–वहाँ उथला कुआँ खोदने की जरूरत नहीं है, कुआँ जल्दी ही सूख जाएगा। अपनी सारी शक्ति एक गहरा कुआँ खोदने में लगा देनी चाहिए। इससे आपको शुद्ध जल पूरे जीवन मिलता रहेगा। इसी प्रकार आध्यात्मिक शिक्षा केवल एक गुरु से ही लेना चाहिए। उनके चरणों में कुछ साल बैठना चाहिए। एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के पास जाकर कम समय के आस्था खोने का कोई अर्थ नहीं है। केवल एक गुरु के ही निर्देशों का पालन करना चाहिए। अगर आप कई व्यक्तियों के पास जायेंगे और कई लोगों के निर्देशों का पालन करेंगे तो आप किंकव्यविमूढ़ और द्विविधा की स्थिति में होंगे। एक डॉक्टर से आपको नुस्खा मिलेगा, दूसरे से परामर्श और तीसरे से दहन।

एक गुरु आपको हनुमान का जाप करने को कहेंगे, दूसरे आपको राम का जाप और तीसरे आपको रोज पूजा करने को कहेंगे। आप फंस जायेंगे। एक गुरु और उसके निर्देश का ही पालन करना चाहिए। सबकी सुनते हुए पालन सिर्फ एक का करना चाहिए। इज्जत सबकी करते हुए आराधना एक ही करनी चाहिए। ज्ञान सबसे इकट्ठा करना चाहिए मगर एक ही गुरु की शिक्षा को मानना चाहिए। इसी से आप आध्यात्मिक ज्ञान तेजी से प्राप्त कर पायेंगे।

– अनिता वर्मा की सत्संग, एक भक्त

मेरे सबसे प्रिय और सौम्य गुरुजी

मैं अपने ग्रहों को उस दिन के लिए धन्यवाद देना चाहूँगी जिस दिन गुरुजी का प्रवेश मेरे जीवन में हुआ। मेरी जिन्दगी बदल गई और लगा कि मेरी सारी परेशानियों ने पीछा छोड़ दिया। यह इसलिए क्योंकि गुरुजी देवतुल्य और सर्वशक्तिमान हैं।

एक मित्र के बताने के बाद मैं नवंबर, 2005 में गुरुजी से मिली। उस समय मैं परेशानियों से ग्रसित थी : आर्थिक समस्या परिवारिक समस्या, कुछ भी सही नहीं चल रहा था। मैं मानसिक रूप से अशांत थी।

मैंने गुरुजी के पास जाना शुरु किया। एक दिन उन्होंने मुण्से बात की और मेरी किस्मत खुल गई। गुरुजी के प्रथम दर्शन के दो महीने बाद मेरे पिता को अचानक न्यूमोनिया के कारण अस्पताल में भर्ती कराया गया। डॉक्टरों ने कहा कि उनके बचने की सिर्फ़ दस प्रतिशत ही उम्मीद है। मैं गुरुजी के मंदिर गई और वहाँ चुपचाप उनकी प्रार्थना की। अपनी

कल्पना में मैंने उन्हें अस्पताल जाकर मेरा पिता को वेन्टीलेटर से हटाते हुए देखां उन्होंने मेरा पिता को स्वस्थ कर दिया।

गुरुजी की आज्ञा से मैंने उन्हें अपने पिता की बीमारी के बारे में बताया। अगले दिन जब हम अस्पताल गए तो पिताजी को बिल्कुल ठीक देख विस्मित हो गए। गुरुजी ने मेरे पिता को नई जिन्दगी दी। इस घटना के बाद मैंने गुरुजी के चमत्कार को अक्सर अनुभव करना शुरु किया। मुझे तुरन्त ही पता चला कि वो सर्वव्यापी है और आपकी समस्याओं का ध्यान रखते हैं। मेरे पति के वित्तीय लेन–देन रुका हुआ था और हम आर्थिक परेशानी का सामना कर रहे थे। फिर भी सारी लेन–देन अपने आप ही सुलझ गई और हमारी पैसों की चिन्ता समाप्त हो गई। मेरी बेटी का स्वास्थ्य भी मेरे लिए चिन्ता का विषय रहा है। उसे मूत्र से संबंधित संक्रमण से काफी तकलीफ थी। गुरुजी ने उसे तांबे के गिलास के रूप में अपना आशीर्वाद दिया। उसने उस गिलास का पीन पिया और बिल्कुल ठीक हो गई।

मुझे भी घुटने में बहुत दर्द हुआ जिससे मुझे सीढ़ियाँ चढ़ने में तकलीफ होती थीं। गुरुजी के दैवीय तेज से यह दर्द भी गायब हो गया। मेरी ननद भी उसके तेज की भागीदार बनी। वो अपने पति के साथ यू.के. में रहती थी। लेकिन ससुराल वालों के साथ किसी समस्या के कारण उसके पति के साथ विवाद रहने के कारण वो घर छोड़ भारत वापस आ गई। उसने पति को तलाक देने का मन बना लिया। गुरुजी के आशीर्वाद ने बुरी परिस्थितियों का निराकरण कर वैवाहिक समन्वय पुनः स्थापित कर दिया। गुरुजी के हमारे जीवन में आने से सब कुछ सरल और कारगर हो गया। हमारे अच्छे कर्मों के कारण ही गुरुजी हमारे जीवन में आए। वो हमें अनदेखे विपत्तियों से बचाते हैं। गुरुजी के कारण ही कितने ही मसले अपने आप सुलझ जाते हैं। बाहरी परेशानियों को जन्म देने

GURUJI KA ASHRAM

वाले कारणों का नाश भी स्वयं ही हो जाता है। गुरुजी के मेरे जीवन में आने से मेरे व्यक्तित्व में एक बदलाव और जीवन में शांति आई है। हम अपने हृदय और आत्मा से गुरुजी का हमारी जिन्दगी में रहने के लिए, हमारा शुभचिन्तक होने के लिए और उनकी उपस्थिति के लिए धन्यवाद देते हैं। उनके बिना यह जीवन संभव नहीं था, उन्हें फिर से धन्यवाद। हमारा तुच्छ जीवन उनके बिना बेकार है। वो किसी तुलना से परे हैं।

गुरुजी ईश्वर के मनुष्य रूप हो वो इस दुनिया में हमारे कल्याण के लिए आए हैं।

– अनु मुंजाल की सत्संग : एक भक्त

भगवान हमारे मध्य बैठे थे

एक समय था जब मंदिर तीर्थस्थान, मूर्ति पूजन, विधि–विधान और ज्योतिष, सगुण विचारना – इन सबका अर्थ था। लेकिन गुरुजी के दर्शन के बाद इन सबका कोई अर्थ नहीं रह गया।

गुरुजी का साथ हमारे लिए कितना सौभाग्यशाली है। गुरुजी कोई जादूगर, पुजारी या स्वामी नहीं है। वो हमारे बीच में विराजमान भगवान हैं जिन्होंने हमारे जीवन को सरल और खुशहाल बना दिया है। मेरे अनुभव उनमें मेरी आस्था और विश्वास को मजबूत बनाते हैं।

एक भक्त के तौर पर मैं गुरुजी के साथ पहले दर्शन के साथ ही जुड़ गई। गुरुजी के आशीर्वाद से मेरी शादी नवम्बर, 2000 को हुई। शादी के तुरन्त बाद ही, गुरुजी ने मुझे कहना शुरू किया कि वो मुझे आशीर्वाद स्वरूप एक पुत्र देंगे।

मेरे पति और मैंने कभी भी उनकी बार–बार दुहराई पंक्ति पर ध्यान नहीं दिया – "एक पुत्र ल`ले" और वो यह नवंबर, 2000 से जुलाई 2003 तक दुहराते रहे।

7 जुलाई गुरुजी के जन्मदिवस के पवित्र दिन बड़े मंदिर में भव्य संगत के आयोजन में हम सभी ने गुरुजी के दिव्य संगति को सुबह 3.30 बजे तक अनुभव किया। उसी समय उन्होंने मुझे बुलाया और कहा कि उन्होंने हमें पुत्र का आशीर्वाद दिया। है। हमें हमने फिर गुरुजी के कहे पर ध्यान नहीं दिया और मंदिर से चले आए।

एक सप्ताह के बाद 13 जुलाई गुरु पूर्णिमा के दिन मैं अपनी सास के साथ गुरुजी के दर्शन के लिए गई। गुरुजी किसी के साथ कोई गुप्त बात नहीं करते थे, वो जोर से हर किसी से बात करते थे। लेकिन उस दिन मैंने जैसे ही उनके

चरण हुए, उन्होंने इशारे से नजदीक बुलाकर मेरे कान में कहा कि मैं गर्भवती हूँ और मैं यह बात किसी को न बताऊँ। लेकिन मैंने यह बात अपने पति को बताई। उन्होंने बात को नजर अंदाज किया और कहा कि मैं गुरुजी पर ज्यादा ही विश्वास करती हूँ। मैंने चिकित्सकीय जाँच का इंतजार किया और 1 अगस्त मेरी रिपोर्ट में गर्भधारण की बात सच साबित हुई। गुरुजी का आशीर्वाद फलित हुआ।

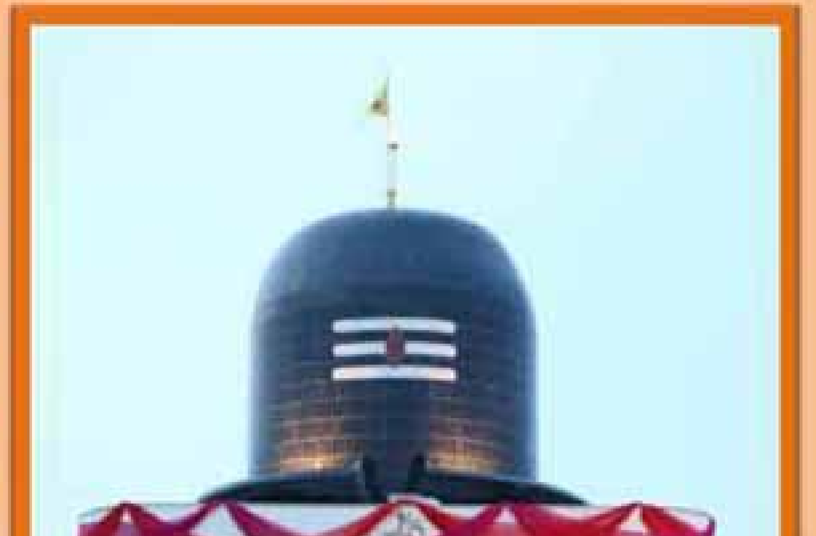

मानव के रूप में हम अपना धैर्य खो देते हैं और अगर हमें गुरुजी से कुछ चाहिए तो वह तुरन्त। लेकिन मेरे साथ देखिए, गुरुजी मुझे तीन सालों तक एक पुत्र के लिए कहते रहे, लेकिन कभी भी मैंने उनसे यह नहीं पूछा कि इतने सालों तक कहने पर भी ऐसा क्यों नहीं हुआ ? हम सिर्फ सामने की दीवार देख सकते हैं लेकिन गुरुजी के पास उसके पार देखने की शक्ति है। वो जानते हैं कि कब समय सही है और उसी समय वह कार्य पूरा होगा।

कोई भी संत, जादूगर के पास जीवन देने की शक्ति नहीं है लेकिन गुरुजी ने मेरे लिए यही किया। बिना कोई शक, मैंने एक पुत्र को जन्म दिया।

हर भक्त को सबद में से एक शब्द या एक पंक्ति को सौ प्रतिशत आस्था के साथ दिनों, महीनों और कभी–कभी सालों तक दुहराना पड़ता है, सिर्फ एक स्थान पर उस शब्द की चोट करनी पड़ती है जिससे वह दरवाजा खुले–और वह खुलता है।

गुरुजी ने मेरी शादी को बचाया

मैं कभी गुरुजी को उचित शुक्रिया नहीं कर पाई। हम उनके पास कारोबार की समस्या से भाराक्रांत हो आए और गुरुजी ने तुरन्त हमें अपनी शरण में ले लिया। सब कुछ ठीक था लेकिन मेरी सबसे बड़ी परीक्षा आगे थी।

मेरी शादी को पैंतीस साल हो चुके। मेरे दो बच्चे एक पुत्र और एक पुत्री की शादी हो चुकी है और मुझे एक पोती भी है। लेकिन ऐसा कहते हैं कि सबको सब कुछ नहीं मिला.... मेरे पति की आदतों को सुधार की जरूरत थी। वो जिन्दगी का मजा लेना पसंद करते थे लेकिन पारिवारिक जिम्मेदारियों नहीं लेना चाहते थे और जब वो शराब पीते थे जिससे मुझे सबसे ज्यादा डर लगता था। वो हिंसक और अनुचित व्यवहार करते थे।

गुरुजी के आशीर्वाद से मेरे बच्चें मेरे साथ थे मैं गुरुजी के पास उनसे अपनी बेटी के लिए संतान मांगने आती थी। लेकिन गुरुजी पहले मेरे घर को पवित्र करना चाहते थे – संतान के लिए आशीर्वाद कोई बड़ी बात नहीं थी।

एक रात में गुरुजी के दर्शन के बाद घर वापस आई। मेरे पति घर पर नहीं थे लेकिन मैं चिंताग्रस्त नहीं थी। वो गोल्फ खेलकर घर हफ्ते में चार दिन देर से ही लौटते थे। उनकी उम्र 62 साल की थी लेकिन वो हमेशा खाना–पीना दोस्तों

के साथ ही पसंद करते थे। मैं कभी उनका विरोध नहीं कर पाई क्योंकि क्रोध और प्रेम के विकल्प में मैं झूलती थी और फिर वो हाथापाई पर आ जाते थे.... मुझे उनसे बहुत डर लगता था।

सधारणतया उनके रात में घर वापस आने पर मैं सोने का नाटक करती थी क्योंकि मैं कोई तमाशा खड़ा नहीं करना चाहती थी। उस रात में मैंने तुरन्त ही पलंग के बगल की रोशनी को बुझाया था जब मैंने गुरुजी की आवाज सुनी। उन्होने कहा, "अपने पति का पता लगाओ– मैंने लाइट जलाकर अपने पति के मोबाइल पर फोन लगाया। गुरुजी के आशीर्वाद से मोबाइल चालू था और मैं उन्हें किसी औरत से बात करते हुए सुन सकती थी। मैं सारी बातें सुन सकती थी। वो अपनी प्रेमिका के साथ थे। मैं भौंचक्क रह गई।

मैं जानती थी कि अपने जवानी के दिनों में वे लड़कियों के पास जाते थे। जब मैंने अपने संदेह को जताया तो उन्होंने बताया कि वो ऐसा खतरा नहीं उठायेंगे क्योंकि एड्स फैल रहा है। चूँकि मेरे पति स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहे हैं मैंने उनका विश्वास किया।

इसलिए यह मामला मेरे लिए अविश्वसनीय था। मैंने अपने पुत्रवधू को बुलाकर उसे उन दोनों का वार्तालाप सुनाया क्योंकि अपने पति का विरोध करने के लिए मुझे सबूत की जरूरत थी। अन्यथा वो हिंसा पर ही उतारू हो जाते। मेरा बेटा दिल्ली के बाहर था।

उस दिन जब वो घर आए तो मैंने उन्हें धक्के मारकर घर से निकाल दिया – इसके लिए गुरुजी मैं आपसे माफी मांगती हूँ। उन्होंने इतनी शराब पी रखी थी कि उन्हें पता नहीं था कि क्या हो रहा है। वो दस दिन घर से बाहर रहे और वापस आकर कई बार माफी मांगी। वो अहं से ग्रसित व्यक्ति रहे हैं–उन्होंने कभी भी क्षमा नहीं मांगी थी।

उस घटना के दो महीने बाद, उनमें बहुत बदलाव आया। मुझे पैंतीस साल कष्ट देने के बाद वह सभ्य व्यक्ति बन गए। आज वही आदमी मुझे बहुत प्यार करता है, बच्चे और पोती को बहुत प्यार करता है। अगर कभी वो शराब पीते हैं तो रोने लगते हैं और मानते हैं कि वो अच्छे आदमी नहीं हैं और उन्होंने मुझे बहुत तकलीफ दी।

गुरुजी के तेज से मैं सब कुछ भुला चुकी हूँ और मेरे और मेरे पति के बीच नवविवाहितों के समान प्यार है।

काश ! गुरुजी सभी स्त्रियों जो जीवन में कष्ट सहती हैं को आशीर्वाद दें। मैं सबको गुरुजी के चरणों में जाने को कहूँगी। वो भगवान हैं। मैं उन्हें बहुत प्यार करती हूँ।

– एक भक्त का सत्संग

GURUJI KA ASHRAM

गुरुजी के कर कमल हमारे उद्धार के साधन

गुरुजी सर्वशक्तिशाली ईश्वर के अवतार हैं। श्रीराम व कृष्ण की तरह उन्होंने भी सामान्य मानव के रूप में जन्म लिया है ताकि लोगों के दुख–दर्द दूर कर सकें। वे सबकी इच्छाओं की पूर्ति करते हैं। हजारों लाखों लोगों ने उनसे आशीर्वाद पाया है और थोड़ा भी धन व्यय किये बिना अपना उद्धार किया है। चिकित्सकों और चिकित्सा में लोग लाखों खर्च करते हैं, पंडितों और तांत्रिकों के पास लोग हजारों रुपये बिना कुछ समझे लुटा देते हैं और कोई सफलता भी नहीं मिलती, पर गुरुजी की कृपा केवल आस्था, भक्ति व आत्म–समर्पण से मिल जाती है। उनके आशीर्वाद के बिनाकोई ईश्वर के पास नहीं पहुँच सकता।

गुरुजी ने हमारा जीवन–परिवर्तन किया है। मेरा सारा परिवार अब सारे मामलों में गुरुजी के आशीर्वाद लेता है। उनकी महिमा से हमारी सदा हमारे साथ, हमारी मदद के लिए विद्यमान रहते हैं।

हम सबसे पहली बार गुरुजी के आशीर्वादों के लिए सन् 1995 ई में नई दिल्ली में ग्रेटर कैलाश–1 में एक मित्र की मदद से आये। उस साल उनकी कृपा से अनुग्रहित होने के बाद हमलोग नौकरी की व्यवस्था व अनिवार्यता के कारण उनके दर्शन फिर नहीं कर पाये। यह हमारी सबसे बड़ी भूल थी, जो हम उस समय महसूस नहीं कर पाये। कुछ सालों के बाद, हमारे जीवन में समस्याओं का दौर आया।

सन् 2003 ई. में हमारी एक बेटी कुछ असामाजिक तत्वों के साथ घर छोड़कर चली गयी। कुछ महीनों तक हम उसका कुछ पता नहीं कर पाये। जब हमने उसको तलाश लिया, वह उन लोगों का साथ छोड़ने के लिए तैयार नहीं थी। हम कई पंडितों व तंत्रिकों के पास गये, कई पूजा–यज्ञ करवाये, अलग–अलग मंदिर गये, पर हम अपनी बेटी की घर वापस नहीं ला पाये।

फिर, 2005 की शुरुआत में एक पड़ोसी के मुँह से हमने पुनः गुरुजी का नाम सुना। हमें उनके द्वारा पहले हमारे लिए की गयी मदद याद आयी और हम शीघ्राति शीघ्र उनकी शरण में पहुँच गये। अब ऐसा प्रतीत होता है जैसे स्वयं गुरुजी ने हमें बुलाया था। उन्होंने हमें आश्वस्त किया कि हमारी बेटी उन बुरे लोगों का साथ त्यागकर सदा के लिए हमारे पास आ जायेगी। हमें उनका आशीर्वाद मिला और वैसा ही हुआ जैसा उन्होंने कहा था। हमारी बेटी लौट आयी, आज हमारे साथ है और वह भी गुरुजी की परम भक्त है हमें उसे वापस लाने के लिए कुछ नहीं करना पड़ा। बस, विश्वास के साथ गुरुजी की शरण में आना पड़ा। हमने पहले कितने प्रयास किये, कितना समय गंवाया, कितना धन गंवाया और गुरुजी के पास बिना कुछ दिये, सब कुछ मिल गया।

वे दयानिधि हैं और अपने सारे भक्तों की समस्याएँ जानते हैं। मेरी पत्नी को नितम्ब के पास की हड्डी में ज़ोरों का दर्द पिछले बाहर सालों से था, साथ ही उसे गंभीर बवासीर भी था। वह दर्द के कारण कड़ी सतह पर दस मिनटों तक

सीधी बैठ नहीं सकती थी। वह लगातर बहुत सारी दवाइयाँ ले रही थी और अब चिकित्सक ने ऑपरेशन आवश्यक बताया था। हम सब ऑपरेशन के लिए मानसिक तौर पर लगभग तैयार थे।

तभी हम गुरुजी के दरबार में गये, मेरी पत्नी चिन्तित थी कि वह वहाँ दस मिनटों से अधिक बैठ नहीं पायेगी। किन्तु, गुरुजी ने सब कुछ जान लिया और कुछ ही दिनों में उसका शारीरिक रोग और दर्द, शरीर से दूर हो गये। अब तक उसे फिर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ है। गुरुजी का प्रसाद व लंगर और आशीर्वाद ही उसे रोगमुक्त कर गये।

लकवाग्रस्त मित्र गोल्फ खेलने लगा

मेरा एक मित्र भी जो अब हमारे घर से कुछ ही दूरी पर रहता है, गुरुजी की कृपा का पात्र बना। अजीत सिंह, उत्तर प्रदेश से एक सेवा–निवृत्त पुलिस अधिकारी, आगरे में हमारा निकटतम पड़ोसी था, जहाँ मैं तीन वर्षों से अधिक के लिए नियुक्त था। फिर हम मेरठ एवं मुरादाबाद में भी साथ थे। तब तक हमारे परिवार परस्पर घुल–मिल गये थे। आगरा में हमें पता चला कि अजीत सिंह की पत्नी 1972–73 से हृदय रोगी थी। उनकी धमनियाँ उत्तरोत्तर अवरुद्ध होती जा रही थीं। सन् 2004 के अन्त तक, तीन धमनियाँ, दो पूर्णतः व तीसरी 60–70 प्रतिशत अवरुद्ध हो चुकी थीं। उसके लिए थोड़ी दूर चल पाना भी मुष्किल होता था। उसके चिकित्सक ने उसे बाईपास सर्जरी की सलाह दी और कहा कि अगर सर्जरी शीघ्र नहीं करायी गयी, तो मामला प्राणघातक हो सकता है। दो महीनों के बाद की एक तिथि ऑपरेशन के लिए निश्चित की गयी।

कुछ महीने पहले ही अजीत सिंह को एक भयंकर पक्षघात हुआ था और कठिनाइयों के बाद वह बच पाया। पहले स्वयं और अब पत्नी रोगी थे। भयंकर रोगों से ग्रस्त। वे लोग बहुत चिन्तित थे। हमने उन्हें गुरुजी के पास जाकर आशीर्वाद लेने के लिए कहा। शुरु में वे तैयार नहीं थे। पर हमारे द्वारा आग्रह करने पर वे गुरुजी के पास चलने के लिए तैयार हो गये। गुरुजी ने उन्हें ताम्र–पात्र लाने के लिए कहा, जिसे उन्होंने अभिमंत्रित कर दिया। अजीत सिंह की पत्नी उनके निर्देशानुसार उस ताम्र–पात्र से पानी पीने लगी। चिकित्सक ने उसे सर्जरी के ठीक दो दिन पहले अंतिम निरीक्षणों के लिए बुलाया था। चिकित्सक ने उसे सर्जरी के दौरान के खतरों के बारे में भी बता दिया था। जब मेरी पत्नी को ज्ञात हुआ कि अजीत सिंह की पत्नी की सर्जरी होनी है, उसने उसे पहले गुरुजी से आशीर्वाद ले लेने के लिए कहा। अजीत सिंह की पत्नी ने

कहा कि वह सर्जरी के ठीक से हो जाने के बाद गुरुजी से मिलने जायेगी। उसका पति उसकी बात से इतना व्यथित हुआ कि वह स्वयं उसके साथ अस्पताल नहीं गया, बल्कि उसने अपने बड़े बेटे को साथ भेज दिया। उनके अस्पताल चले जाने के बाद वह गुरुजी की तस्वीर के समक्ष प्रार्थना करता रहा।

अस्पताल में जाते ही अजीत की पत्नी की बहुत सारी जाँच हुई। पर जाँचों के बाद जो चिकित्सक उसका सालों से उपचार कर रहे थे, चकित रह गये। बताया गया कि उसकी दो धमनियाँ अवरुद्ध नहीं रह गयी थीं और तीसरी का केवल 40 प्रतिशत अवरुद्ध रह गया था। चिकित्सक उस चमत्कार से हतप्रभ थे। अब वह सामान्य जीवन जी रही है। उसका पति गुरुजी के आशीर्वाद से अभिभूत है। वस्तुतः अजीत, जिसने पक्षाघात के कारण गोल्फ खेलना छोड़ दिया था, आजकल फिर से खेलने लगा है।

क्षण में गुरुजी का आशीर्वाद मिल जाता है

किसी को भी गुरुजी के आशीर्वादों के लिए प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती है और आशीर्वाद मिलने पर फल की प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती है। एक बार, सन् 2006 की शुरुआत में, मुझे सर्वाइकल स्पॉण्डिलाइटिस के कारण गर्दन में दर्द शुरु हुआ। दर्द बायीं बाँह में भी होने लगा और बाँह सुन्न हो गयी। इस दर्द के कारण मुझे कोई भी कार्य करने में दिक्कत होती थी। जब चौथे दिन भी लगातार दर्द होता ही रहा, मेरी बेटी की सास ने मेरी पत्नी को गुरुजी से प्रार्थना करने के लिए कहा। मैं अपने आप को कोसने लगा। मैंने गुरुजी को दर्द होने पर याद नहीं किया था। मैं गुरुजी की तस्वीर के समक्ष खड़े होकर उन्हें याद करने लगा। फिर मैं अपने कार्यों में किसी तरह व्यस्त हो गया। एक दिन के बाद, जब मेरी पत्नी ने दर्द के बादे में पूछा, तब मुझे अहसास हुआ कि जब से मैंने गुरुजी को याद किया था, मैं तो दर्द भूल ही गया था। मैंने किसी भी तरह का दर्द पिछले 30 घंटों मं अनुभूत नहीं किया था। उस दिन के बाद मुझे कभी यह दर्द हुआ भी नहीं। गुरुजी का चमत्कार निराला है।

क्षण में गुरुजी का आशीर्वाद फलित होने की एक और घटना मार्च, 2006 की है। मैं अपने मित्रों के साथ घर में कुछ चाच–नाश्ता कर रहा था। एकाएक कुछ खाद्य पदार्थ मेरी श्वासनली में अटक गया और मुझे साँस लेने में दिक्कत होने लगी। मेरी आँखों से पानी आने लगा, गला खराब–सा हो गया और बेचैनी बढ़ने लगी। मैंनं पानी पिया, रोटी खायी, एक को भी खाया, जिससे गला से अवरोध हट जाये, पर कोई फायदा नहं। पन्द्रह मिनटों तक मैं बिल्कुल बेचैन बना रहा। फिर मैं गुरुजी की तस्वीर के सामने हाथ जोड़कर बिना कुछ बोले झुक गया। अभी मैं नमन कर ही रहा थ कि मेरी श्वासनली में से अवरोध हट गया और जो पदार्थ गले में अटका हुआ था, उसे मैं निगल गया। गुरुजी सर्वोपरि हैं, महानतम हैं।

मेरा परिवार कार–दुर्घटना में आहत होने से बचा

मई, 2006 की बात है। एकाएक मुझे पता चला कि मेरे परिवार के साथ कार–दुर्घटना हुई है। मैं दुर्घटना स्थल की ओर भागा। मेरी पत्नी का फोन आया

कि एक गाड़ी हमारी कार को पीछे से धक्का मारा था। कार के सारे दरवाजे बंद हो चुके थे, सीटें गिर गयी थीं और सब लोग अनदर फंसे हुए थे। उस समय रात के सवा नौ बज रहे थे। दरअसल, मेरी पत्नी व तीनों बेटियाँ दिल्ली के साऊथ एक्सटेंशन के बाजार से नोएडा वापस आ रही थीं। सरिता विहार के पास की यातायात–बत्ती लाल दर्शा रही थी और ये लोग भीड़ में फंसे थे। सामानों से लदी एक ट्रक ने इनकी कार के पीछे वाली कार को टक्कर मारी और उस कार ने इनकी कार को पीछे से दो बार टक्कर मारी। मेरी विवाहित बेटी व मेरी सबसे छोटी बेटी को जो पीछे बैठी थीं, सारे पीठ में चोटें आयी। कार कुछ दूर आगे घसीटती चली गयी थी। मेरी पत्नी के पास गुरुजी की तस्वीर थी और उसने तुरन्त गुरुजी को मन ही मन याद किया था। मेरी पत्नी फिर मदद के लिए चिल्लायी। कुछ लड़कों ने

दरवाज़ों को तोड़ दिया और मेरा परिवार कार से बाहर निकल पाया। मैं वहाँ पहुँचा और उन्हें तुरन्त अस्पताल ले गया, जहाँ उनका प्राथमिक उपचार हुआ। मेरी बड़ी बेटी का 'सी.टी. स्कैन' कराया गया। मेरी पत्नी अपनी बेटी के लिए बहुत चिन्तित थी और गुरुजी की तस्वीर निकालकर प्रार्थना करने लगी। जल्दी ही, चिकित्सक ने बताया कि कुछ ठीक है और चिन्ता करने की कोई बात नहीं है। सूजन को ठीक करने के लिए बेटी को दवा दी गयी। मेरी पत्नी ने गुरुजी का धन्यवाद किया। हमारी कार के पीछे वाली कार ने चोट का सारा असर ले लिया था, वह क्षतिग्रस्त थी और कुछ यात्रियों को गंभीर चोट लगी थी। दुर्घटना में ट्रक का सामनेवाल हिस्सा भी क्षतिग्रस्त हुआ थां पर मेरा परिवार गुरुजी की कृपा से सुरक्षित था। हम सबने उनका धन्यवाद किया। गुरुजी उनकी प्रार्थना अवश्य सुनते हैं, जिनकी प्रार्थना में सच्चाई और गंभीरता होती है।

मेरे भतीजे को दाखिला मिला

GURUJI KA ASHRAM

मेरा एक भतीजा, जो लुधियाना में रहता है, एक बार एक एम.बी.ए. प्रवेश परीखा और साक्षात्कार के लिए दिल्ली आया था। वह हमारे साथ गुरुजी के पास आशीर्वाद लेने भी गया था। गुरुजी ने उसे आशीर्वाद देकर कहा, "जा, हो जायेगा दाख़िला।" मेरा भतीजा भी परीक्षा के बाद आश्वासन थां जब संस्थान ने परिणाम घोषित किये, उसका नाम पहली, दूसरी, तीसरी, यहाँ तक कि अंतिम प्रतीक्षा सूची में भी नहीं था। इसलिए, किसी भी सूची में नाम नहं होने पर भी उसे तीन दिनों के बाद दाखिलें के लिए पत्र मिला। वह तो हैरान रह गया। गुरुजी का आशीर्वाद चमत्कार कर चुका था।

गुरु, वास्तविक गुरु

गुरुजी भक्तों का मस्तिष्क शुद्ध कर देते हैं। इस मृत्युलोक पर उनकी आवश्यकता थी, अतः वे एक अलौकिक संत के रूप में अवतार लेकर आये। वे अपने आपको परमानंद में अनन्त शक्ति में, सर्वव्यापिता में, सर्वज्ञता में प्रकट करते हैं। गुरुजी एक सत्गुरु हैं, वास्तविक गुरु हैं जो हर मानव को आध्यात्मिकता की और अग्रसर करते हैं, वास्तविक गुरु हैं जो हर मानव को आध्यात्मिकता की और अग्रसर करते हैं उनके लिए जाति, जन्म, धर्म, राष्ट्रीयता, ये सब मायने नहीं रखते। दूर–दूर से लोग उनकी शरण में आते हैं, मानों किसी अदृश्य शक्ति के द्वारा आकृष्ट किये गये हैं। गुरुजी वे दिव्य गुरु हैं, जो अपने भक्तों को सही समय पर आत्मिक आनन्द की और ले जाते हैं। उनका आकर्षक इतना शक्तिशाली है कि कोई भी आकृष्ट हुए बिना रह नहीं सकता। गुरुजी अलौकिक गुरु हैं वे अपने भक्त की चेतनता के स्तर पर उससे व्यवहार करते हैं। वे अपने भक्त के मिथ्या दंभ का नाश कर उसे संपूर्ण व्यक्ति बनाते हैं। वे भक्तों के मस्तिष्क एवं शरीर की सीमाओं को मिटाकर उन्हें आध्यात्मिकता की और उन्मुख करते हैं। इस प्रयास में उनके द्वारा

अपनायी गयी पद्धति को कोई पहले नहीं जान सकता। उनके चक्षु अनुराग से भरे हैं और उनके हाथ ईश्वर के हाथ हैं। ईश्वर उनके रूप में हमसे बातें करता है। गुरुजी शांति, सच्चाई एवं भाईचारे के वाहक हैं। वे जन्म–जाति, वर्ण, सम्प्रदाय, सब का भेद भुलाकर सब पर अपनी करुणा की वर्षा एक समान रूप से करते हैं। वे सच्चाई, शांति एवं समानता के जल से अपने हाथों से सब भक्तों के मन पर जमी सांससारिकता एवं भौतिकवादिता की धूल को साफ़ करते हैं। गुरुजी स्वयं ईश्वर के रूप हैं एवं ईश्वर की महानता के प्रतीक हैं। पलक झपकते ही वे स्वर्ग की यात्रा कर वापस आ सकते हैं। सूरज एवं चन्द्रमा, स्वर्ग एवं नरक, धरती एवं आकाश सब उनकी पहुँ में हैं ? सही कहा गया है, "संक्षेप में, आप बवतार के रूप में स्वयं ईश्वर हैं।"

– श्रीमती एवं श्री सतीश कुमार लाम्बा

GURUJI KA ASHRAM

विवाह के छः सालों के बाद मैं गर्भवती हुई

मेरे विवाह को काफी समय बीत गया था फिर भी हमें कोई बच्चा नहीं हुआ थां मेरे पति कुछ उपचार जरूर कर रहे थे, पर उनकी शारीरिक अवस्था में पहला स्पष्ट सुधार तब आया, जब हम गुरुजी से जनवरी, 1994 में मिले। मेरे पति की हालत में बीस प्रतिशत सुधार हो गया।

गुरुजी ने बच्चे का अमूल्य आशीर्वाद दिया पर सचेत भी किया कि मुझे शिशुवाहिनी नलिका में समस्या होगी। मेरी नलिका, गर्भाशय और हार्मोन वगैरह की जाँच हुई और वे सामान्य पाये गए।

अगले साल मैं गर्भवती हुई। गुरुजी की बात को याद रखते हुए मैंने अपनी शंका अपनी चिकित्सा से जाहिर की और उसने 'अल्ट्रासाउंड विशेषज्ञ' को मुझे जाँच करने के लिए कहा कि कहीं मुझे डिम्बवाहिनी सगर्भता तो नहीं है ? उसने गर्भाशय में ऐसा कुछ नहीं पाया। किन्तु बाद की कुछ जाँचों के बाद उसने पाया कि बच्चा सही तरीके से नहीं बढ़ रहा है और उसने 'डी.एन.सी' की सलाह दी। इस जाँच के दस दिनों के बाद, मुझे पेट में बहुत जोर का दर्द डिम्बवाहिनी सगर्भता है और मेरी नलिका फट चुकी है। मेरी एक नलिका फट गयी और दूसरी आंशिक रूप से अवरुद्ध हो चुकी थी।

किन्तु गुरुजी के प्रताप से अपनी शादी के छः सालों के बाद, सन् 2000 ई. में मैं फिर से गर्भवती हुई और एक सुन्दर सी बच्ची की माँ बनी। मेरी प्रसव पीड़ा पाँच बजे सुबह शुरु हुई और दोपहर तक यह पीड़ा अपने चरम पर पहुँच चुकी थी, बच्चा पलटा नही था और प्रसूति नहीं हुई थी। यह शल्य प्रसव की स्थिति थी। यह भी पाया गया कि नाभि–नाड़ी बच्चे की गर्दन से लिपटी हुई थी। हमने

गुरुजी से पूछा क्या किया जाए और उन्होंने प्रतीक्षा करने के लिए कहा। रात के लगभग नौ बजे बच्चा गर्भ में स्वयं पलटा और मेरी सामान्य प्रसूति हुई। गुरुजी की असीम अनुकम्पा से सब कुछ ठीक हो गया। यह एक ऐसा चमत्कार था जो केवल वे ही कर सकते थे और मैं अपने हृदय के अंतरंग से उनका इससे लिए धन्यवाद करती हूँ।

– एक भक्त का सत्संग

GURUJI KA ASHRAM

जैसे गीली जमीन पर अनयास उगता सूर्य

मेरे गुरु की महत्ता को शब्दों में व्यक्त करने की न तो मेरी हैसियत है, न योग्यता क्योंकि कैसे कोई निष्प्राण शब्दों में उनके विराट दैवत्व को बांध सकता है फिर भी, उनकी अनुमति से उनके आशीर्वादों के अनुभव को मैं उनके प्रति अपनी असीम आशक्ति व आदर के साथ श्रृद्धांजलि के रूप में व्यक्त करती हूँ।

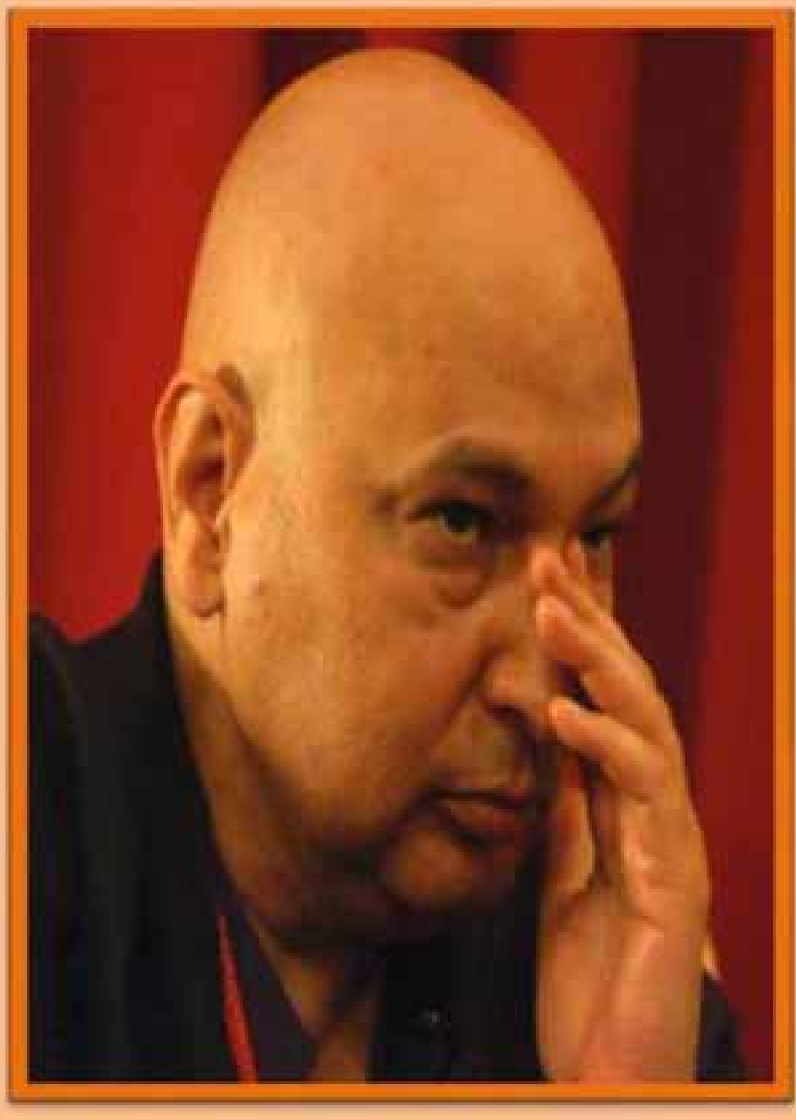

जीवन में जो मार्ग हम ढूंढते हैं, वह मुक्ति की पराकाष्ठा तक ले जाने वाले या हमारे अस्तित्व के उद्देश्य को बताने वाले मार्ग से अलग नहीं है। जो लाग अपने आप को पूर्णतया गुरु के चरणों में समर्पित कर देते हैं, उनके लिए अन्वेषण से लेकर इस पराकाष्ठा तक पहुँचना एक सुनिश्चित बात हो जाती है। हम स्वयं अन्वेषक या अग्रगामी नहीं हैं, हम अनुयायी हैं।

मैं एक जाट–सिख्ख परिवार में पैदा हुई। हमारे परिवार में सब कुछ था। खुशी, आनंदपूर्वक जीवन, शिक्षा, अनुशासन सब कुछ। बचपन में मैं अपने दादाजी से बहुत प्रभावित रही, जो अपनी आस्था और गुरु के पक्के अनुयायी थे। धीरे–धीरे मुझे जीवन में एक गुरु की आवश्यकता का अहसास हुआ।

मेरी शादी भी एक जाट–सिख्ख परिवार में हुई। मेरे पति अपने परिवार में तीन पुत्रियों के बाद इकलौते पुत्र थे, इसलिए उनका पालन बड़े लाड़–प्यार से हुआ, पर इसका उन्होंने गलत फायदा उठाया। उन्होंने अपने तरीके से जीना सीख लिया। उनकी अपने प्रति बढ़ती लापरवाही और परिवार के प्रति और जिम्मेदारी की जड़ शायद एक ही समस्या थी शराब से उनका अतिशय लगाव।

आनंदपूर्वक वैवाहिक जीवन बिताना हर लड़की का सपना होता है और मैं कोई अपवाद नहीं थी। पर जब कोई परिवार शराब जैसी बीमारी से त्रस्त हो जाता है, किसी के नियंत्र में कुछ नहीं रहता और जीवन की समस्याएं लगभग निदानरहित हो जाती हैं। दायित्व या अनावश्यक दायित्व के बोझ और निरंतर अप्रसन्नता ने मेरे आनंददायक जीवन के भ्रम को तोड़ दिया था।

उन्हीं दिनों मेरे दादाजी हमारे घर पर आए। मेरी अंतरंग बेदना को उन्होंने बिना शब्दों के सुन लिया और वे समझ गए कि मुझे मदद की आवश्यकता है। मेरी आँखें भर आयीं और मैंने उनसे कहा कि वे मेरे लिए प्रार्थना करें कि मुझे जीवन में एक 'पूर्ण गुरु' मिल जाए। कोई आम व्यक्ति जितना भी प्रयत्न कर ले, वह एक ज्ञानवान गुरु नहीं ढूँढ़ सकता, जबकि गुरु स्वयं उसे ढूँढ लेता है ज बवह आम इंसान गुरु के बताये मार्ग पर चलने के लिए तैयार हो जाता है।

कुछ ही दिनों बाद मेरी माँ मुझे गुरुजी से मिलवाने चंडीगढ़ ले गयी। जिस क्षण से मैंने उनके आश्रम में प्रवेश किया, मेरी मानसिक अवस्था में परिवर्तन आया। उनके दर्शनों से ही मेरी आँखों में आँसू उमड़ पड़े। अगले कुछ घंटों तक, जब

तक मैं वहाँ बैठी रही, आँसू निरंतर मेरी आँखों से निकलते रहे। इसके बाद भी, जब भी मैं गुरुजी से मिली, अपनी भावनाओं पर मैं नियंत्रण न रख सकी और इसका कारण भी न समझ पायी। जब भी मैं उने मिली, मैंने एक मानसिक शांति का अनुभव किया जो समझ से परे थी। उनके सामने जाते ही मानों मेरे आँसू मुझे की मियागर परिमार्जन से परिशुद्ध व परिवर्तित कर देते थे।

इस बीच मेरे पति का शराब पीना और बढ़ गया। दायित्वों के प्रति उनकी सारी समझ खत्म हो चुकी थी और वे बेतहाशा पैसे बर्बाद कर रहे थे। मैंने उनसे गुरुजी के बारे में बात करने की कोशिश की और उन्हें उनके पास चलने के लिए भी कहा। उन्होंने मेरा उपहास किया और कहा कि ऐसे गुरु बहुतेरे मिलते हैं। उन्होंने मुझे भी गुरुजी से मिलने से रोका।

नवंबर, 1999 में मेरे पति की नियुक्ति संयुक्त राष्ट्र के एक मिशन पर लेबनान में हो गयी। वहाँ शराब की आदत और बढ़ गयी और कुछ ही दिनों में हमें पता चला कि उन्हें जिगर में सूत्रण रोग (सिरोसिस) हो गया है। मेरा तो संसार बिखर गया। मैं पहली उड़ान से उनके पास लेबनान पहुँची। चिकित्सक ने साफ कह दिया कि इनका जिगर जवाब दे चुका है और उन्हें दो सालों के अंदर प्रतिरोपण करवा लेना चाहिए।

इतने कम समय में जिगर दान करने वाले व्यक्ति का मिल जाना असंभव था। अगर वह मिल भी जाता, तो प्रतिरोपण में अत्यधिक खर्च चाहिए था और फिर प्रतिरोपण के असफल होने की भी आशंका थी। चिकित्सकों ने मेरे पति को साफ कह दिया था कि शराब की एक बूँद भी उनके लिए प्राणघातक हो सकती है। इस दौरान, मेरे माता–पिता गुरुजी के पास जाते रहे और मेरे पति के जीवन के लिए प्रार्थना करते रहे।

कुछ सप्ताह अस्पताल में बिताने के बाद हम दिल्ली में आय। मैंने आते ही उनसे गुरुजी से मिलने को कहा। वे मिलने गये पर जब तक वे वहाँ रहे वे एक कौने में बैठे रहे और मुझसे शिकायत करते रहे कि वे इतने थके हुए थे और मैंने उनसे यहाँ आने की जिद की। उसी रात मैंने फिर गुरुजी से संपर्क किया और अपनी समस्याओं को सोचकर और भावनाओं की प्रबलता के कारण मेरा कंठ अवरूद्ध हो गया और मैं कुछ बोल नहीं पायी। मेरी माँ और मैंने गुरुजी से मेरे पति के जीवन को बचाने के लिए फिर से गुहार लगायी, पर गुरुजी ने कहा, "मैं कैसे उसकी मदद कर सकता हूँ। वह तो आस्था ही नहीं रखता।"

अगले कुछ दिनों तक मैं गुरुजी की सेवा में अकेली जाती रही, मेरे पति मेरे साथ कभी नहीं गए।

एक रात जब मैं गुरुजी के पास से लौट चुकी थी और सोयी हुई थी, मुझे अनुभव हुआ कि एकाएक एक तीव्र शक्ति, हवा क एक तेज झोंके के जैसी, मेरे कमरे में आयी है। मैं इतनी डर गयी कि मैं उठकर बिछावन पर ही बैठ गयी और आँखों को बंद कर प्रार्थनाएं करने लगी। मैंने अनुभव किया कि कोई सफेद प्रकाश पुंज अंधकार को भेद रहा है और मेरे ललाट के मध्य में धनीभूत हो रहा है। उस सफेद प्रकाश पुंज में गुरुजी स्वयं विराजमान थे। उन्होंने कहा कि वे अभी मेरे पति को ठीक कर देंगे। अगले पंद्रह–बीस मिनटों तक मैंने वमनकारी दुर्गन्ध को महसूस किया, ठीक वैसा ही जैसा अस्पताल में शल्य क्रिया वाले कमरों से आता है। कुछ ही देर में सब कुछ सामान्य हो गया और फिर मैं सो गयी। गुरुजी ने मुझसे कहा कि उन्होंने मेरे पति को आशीर्वाद दे दिया है।

इस घटना के छः साल बीत गये हैं और मेरे पति अभी भी शराब पीते हैं। चिकित्सकों की चेतावनी को द करें तो मैं और मेरा परिवार अभी भी आश्चर्यचकित हैं कि कैसे गुरुजी मेरे पति की रक्षा करते आ रहे हैं। मेरे पति भी गुरुजी के द्वारा दिये गये जीवन के इस अमूल्य उपहार को अपनी सोच के अनुसार मानते हैं, समझते हैं और विश्वास करते हैं।

विश्व के सारे धर्मग्रंथों और शास्त्रों ने यह माना है कि इंसान के पैदा होने से पहले ही उसकी मृत्यु की घड़ी निश्चित हो जाती है और कोई भी उसे एक क्षण, एक साँस अधिक नहीं दे सकता। इंसान के कर्मों के परीक्षण की शक्ति उस सर्वोत्तम निर्माता के पास ही है। गुरुजी ऐसे ब्रह्मांडीय निर्देशक हैं, उस सर्वोच्च शक्ति के जीवंतरूप हैं, जिन्होंने मेरे जीवन की कहानी को फिर से लिखा।

मैं और मेरे परिवार ने ऐसी कई स्थितियों का अनुभव किया है, जब हमने गुरुजी को याद किया है और हमारी समस्याएं अपने आप ठीक हो गयी हैं, जैसे कोई जादू की छड़ी हो उनके पास।

एक बार मुझे अपने कई–कई साथियों को गुरुजी के पास ले जाने का मौका मिला, जिनके समक्ष मैं अपने गुरुजी के दर्शनों का गुणगान किया करती थी। मेरे सीमित ज्ञान के कारण मैंने सबको गुरुजी से कुछ भी नहीं मांगने का निर्देश दिया, वैसे यह मेरे स्वभाव और जो उन्होंने मुझे देखा और मुझे चकित करते हुए कहा कि ये सब उनसे कुछ मांगने आये हैं। एक दिव्य दर्पण की तरह गुरुजी के हृदय पर मेरे मन का प्रतिबिम्ब बन गया था। इसके बाद उन्होंने मेरे सारे मित्रों को आशीर्वाद दिया और उनकी इच्छाएं पूरी की।

कोई भी, जो उनके पास आता है, खाली हाथ नहीं जाता। उनके चरण–स्पर्श के बाद, हो सकता है व्यापारी उन्नति का कृपादान पा ले, रोगी स्वास्थ्य का और विद्यार्थी ज्ञान। कुछ लोगों को उनकी कृपा का आभास हो पाता है, कुछ उनके

गूढ़ आशीर्वाद से अनभिज्ञ ही रह जाते हैं। उनके अनुराग की कोई सीमा नहीं है, कोई आस्था रखता हो या नहीं उनका देवत्व सबको छूता है। वे भक्तों से कुछ मांग नहीं रखते। कोई प्रतिज्ञा या वचन नहीं लेते किन्तु शनैः शनैः उनका दिव्यत्व जादू करता है और भक्त को अंतरंगों से परिवर्तित और परिमार्जित कर देता है।

हर दिन अलग–अलग स्थानों से लोग उनके पास अपने दुःखों की गठरी लेकर आते हैं गुरुजी की कृपा–दृष्टि उन सबके मुखों पर चमक लाती है, मुस्कान लाती है, जैसे नम धरती पर अनायास उगता सूरज।

– एक भक्त का संत्संग

GURUJI KA ASHRAM

गुरुजी ने मेरी शादी को बचाया

मैं कभी गुरुजी को उचित शुक्रिया नहीं कर पाई। हम उनके पास कारोबार की समस्या से भाराक्रांत हो आए और गुरुजी ने तुरन्त हमें अपनी शरण में ले लिया। सब कुछ ठीक था लेकिन मेरी सबसे बड़ी परीक्षा आगे थी।

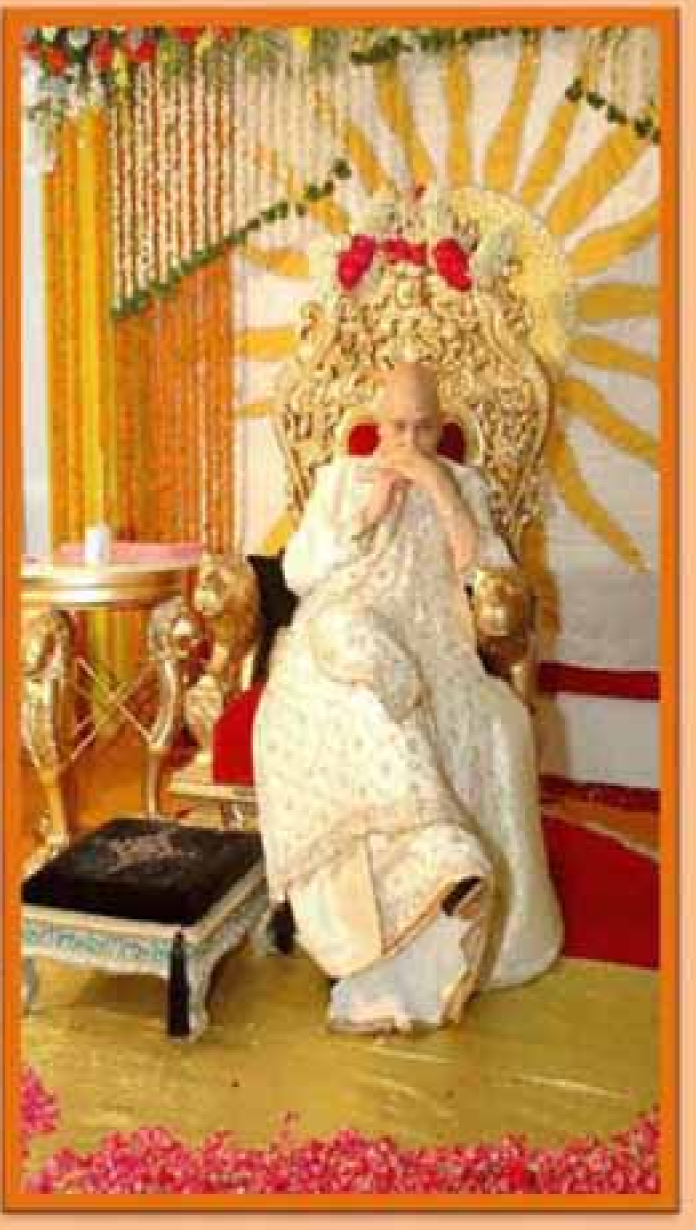

मेरी शादी को पैंतीस साल हो चुके। मेरे दो बच्चे एक पुत्र और एक पुत्री की शादी हो चुकी है और मुझे एक पोती भी है। लेकिन ऐसा कहते हैं कि सबको सब कुछ नहीं मिला.... मेरे पति की आदतों को सुधार की जरूरत थी। वो जिन्दगी का मजा लेना पसंद करते थे लेकिन पारिवारिक जिम्मेदारियों नहीं लेना चाहते थे और जब वो शराब पीते थे जिससे मुझे सबसे ज्यादा डर लगता था। वो हिंसक और अनुचित व्यवहार करते थे।

गुरुजी के आशीर्वाद से मेरे बच्चें मेरे साथ थे मैं गुरुजी के पास उनसे अपनी बेटी के लिए संतान मांगने आती थी। लेकिन गुरुजी पहले मेरे घर को पवित्र करना चाहते थे – संतान के लिए आशीर्वाद कोई बड़ी बात नहीं थी।

एक रात में गुरुजी के दर्शन के बाद घर वापस आई। मेरे पति घर पर नहीं थे लेकिन मैं चिंताग्रस्त नहीं थी। वो गोल्फ खेलकर घर हफ्ते में चार दिन देर से ही लौटते थे। उनकी उम्र 62 साल की थी लेकिन वो हमेशा खाना–पीना दोस्तों के साथ ही पसंद करते थे। मैं कभी उनका विरोध नहीं कर पाई क्योंकि क्रोध और प्रेम के विकल्प में मैं झूलती थी और फिर वो हाथापाई पर आ जाते थे.... मुझे उनसे बहुत डर लगता था।

सधारणतया उनके रात में घर वापस आने पर मैं सोने का नाटक करती थी क्योंकि मैं कोई तमाशा खड़ा नहीं करना चाहती थी। उस रात में मैंने तुरन्त ही पलंग के बगल की रोशनी को बुझाया था जब मैंने गुरुजी की आवाज सुनी। उन्होने कहा, "अपने पति का पता लगाओ– मैंने लाइट जलाकर अपने पति के मोबाइल पर फोन लगाया। गुरुजी के आशीर्वाद से मोबाइल चालू था और मैं उन्हें किसी औरत से बात करते हुए सुन सकती थी। मैं सारी बातें सुन सकती थी। वो अपनी प्रेमिका के साथ थे। मैं भौंचक्क रह गई।

मैं जानती थी कि अपने जवानी के दिनों में वे लड़कियों के पास जाते थे। जब मैंने अपने संदेह को जताया तो उन्होंने बताया कि वो ऐसा खतरा नहीं उठायेंगे क्योंकि एड्स फैल रहा है। चूँकि मेरे पति स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहे हैं मैंने उनका विश्वास किया।

इसलिए यह मामला मेरे लिए अविश्वसनीय था। मैंने अपने पुत्रवधू को बुलाकर उसे उन दोनों का वार्तालाप सुनाया क्योंकि अपने पति का विरोध करने के लिए मुझे सबूत की जरूरत थी। अन्यथा वो हिंसा पर ही उतारू हो जाते। मेरा बेटा दिल्ली के बाहर था।

उस दिन जब वो घर आए तो मैंने उन्हें धक्के मारकर घर से निकाल दिया – इसके लिए गुरुजी मैं आपसे माफी मांगती हूँ। उन्होंने इतनी शराब पी रखी थी

कि उन्हें पता नहीं था कि क्या हो रहा है। वो दस दिन घर से बाहर रहे और वापस आकर कई बार माफी मांगी। वो अहं से ग्रसित व्यक्ति रहे हैं–उन्होंने कभी भी क्षमा नहीं मांगी थी।

उस घटना के दो महीने बाद, उनमें बहुत बदलाव आया। मुझे पैंतीस साल कष्ट देने के बाद वह सभ्य व्यक्ति बन गए। आज वही आदमी मुझे बहुत प्यार करता है, बच्चे और पोती को बहुत प्यार करता है। अगर कभी वो शराब पीते हैं तो रोने लगते हैं और मानते हैं कि वो अच्छे आदमी नहीं हैं और उन्होंने मुझे बहुत तकलीफ दी।

गुरुजी के तेज से मैं सब कुछ भुला चुकी हूँ और मेरे और मेरे पति के बीच नवविवाहितों के समान प्यार है।

काश ! गुरुजी सभी स्त्रियों जो जीवन में कष्ट सहती हैं को आशीर्वाद दें। मैं सबको गुरुजी के चरणों में जाने को कहूँगी। वो भगवान हैं। मैं उन्हें बहुत प्यार करती हूँ।

– एक भक्त का सत्संग

मेरे अंधकार भरे जीवन में वे प्रकाश लेकर आये

जीवन में कुछ घटनाएं इंसान की समझ से परे होती हैं, हमें उन घटनाओं का स्थितियों का अनुभव देवी कृपा समझकर करना चाहिए।

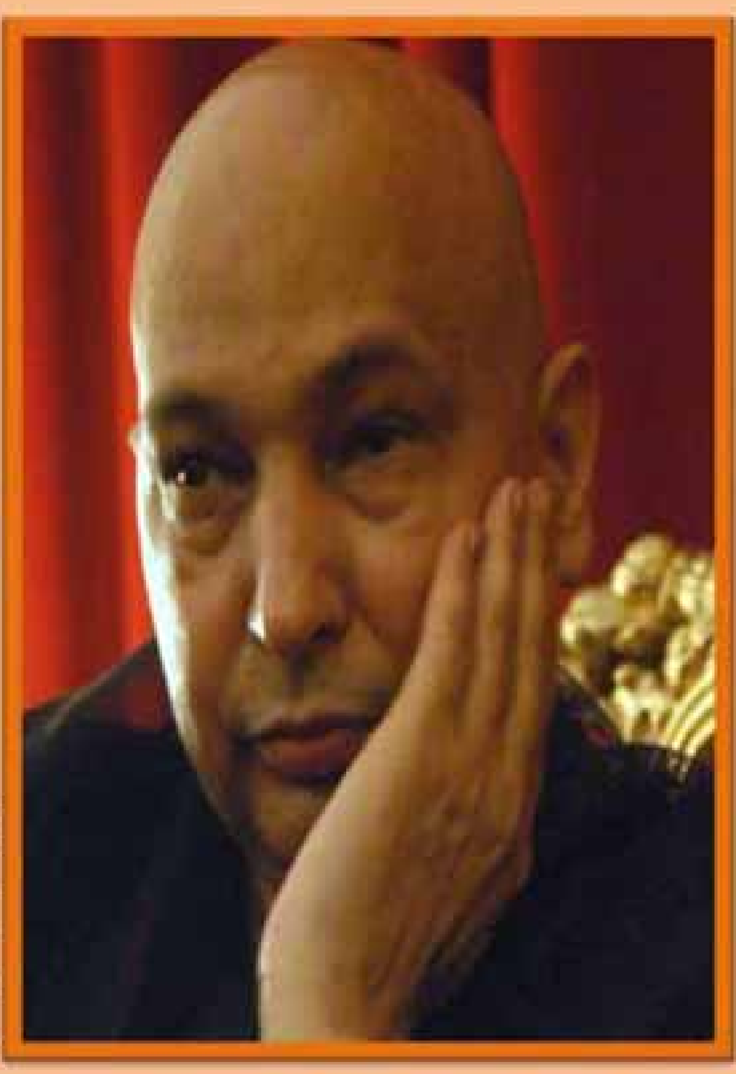

मैं सदा के लिए गुरुजी के प्रति कृतज्ञ रहूँगी जिन्होंने मुझे एक नया जीवन–दान दियां मेरे जीवन में दुःखों का पहाड़ था, तौर पर और शारीरिक तौर पर कष्टों से जूझ रहा था। मैं आपने कष्ट और जीवन में अंधकार के आगे कुछ देख नहीं सकती थी, पर गुरुजी मेरे जीवन में एक प्रकाश–स्तम्भ बनकर आये थे।

मैं मैनचेस्टर (ब्रिटेन) में पैदा हुई और पली–बढ़ी। जन्म से ही मुझे दमे की बीमारी थी, एकज़िमा था और हृदय में एक छेद था। मेरा बचपन मेरे माता–पिता के लिए तो बहुत दुःखदायी था ही, मेरे लिए भी काफ़ी दिक्कतों से भरा था। अपनी उम्र के बाक़ी बच्चों से अलग जीवन में मैंने काफ़ी कुछ देख लिया था, सह लिया था, इसलिए और स्वास्थ्य के प्रति अपनी मज़बूत इच्छा–शक्ति के कारण मेरी अन्तरात्मा कठोर हो गयी थी, उदंड हो गयी थी।

इतने दुःखों के कारण कम उम्र में ही मैंने जीवन की छोटी–मोटी समस्याओं के नज़रअंदाज करना सीख लिया था मैं सोचती थी कि मैं दस सालों से अधिक नहीं जी पाऊँगी। पर बाद में सौभाग्य भी आया।

दूसरी तरफ, मेरे मात–पिता अनिश्चितता के दौर से गुज़र रहे थे क्योंकि हृदय रोग–विशेषज्ञ ने मेरे बारे में निराशाजनक बातें ही कही थीं। फिर भी, मैं अपने आप को स्वस्थ व प्रसन्न मानकर, जीवन ने जो कुछ दिया था, उसका आनन्द मनाने का प्रयास करती रहती थी।

ख़ैर, जब मैं बाईस साल की थी, मेरी शादी हो गयी और मैं दिल्ली आ गयी। पर दुर्भाग्य ने पीछा नहीं छोड़ा, हर बदलते मौसम के साथ दमे की बीमारी मुझे अक्रान्त कर देती थी, मुझे अस्पताल में भर्ती कराया जाता था और 'एस्टेरोईड' दिया जाता था।

मैं बहुत निराश और दुःखित महसूस करती थी क्योंकि मैं अपने आप को दमे के आक्रमण से बचाने का हर संभव प्रयास करती थी, पर फिर भी इसका भयानक प्रकोप मुझे अक्रांत कर लेता था। इस रोग का सबसे भयानक आक्रमण सन् 1997 ई. में हुआ, जब मैंने बिल्कुल हार मान ली। मैं अभी भी याद करती हूँ वो प्रार्थनाएं, जो मैं दिल–ही–दिल में उन दिनों करती थी। मुझे लगा यह मेरे जीवन का अन्त है क्योंकि अब और कष्ट नहीं सहा जाता था। कष्ट के उन्हीं दिनों में मुझे ऐसा चर्म–रोग हुआ जिसने पूरे शरीर को आच्छादित कर लिया। जीवोति परीक्षा (बायोपसी) से पता चला कि मुझे त्वाचा का कैंसर हो गया था। मैंने अपना कष्ट अपने तक ही रखा क्योंकि मैं अपने परिवार को सदमा नहीं देना चाहती थी। यह जीवन छिन्न–भिन्न करने वाली स्थिति थी, मैंने जान लिया कि मेरा अन्त आ गया था क्योंकि मुझमें दुखों से लड़ने की शक्ति समाप्त हो गयी थी।

पर, मेरी रात के घनघोर अंधेरे में, गुरुजी एक दिव्य प्रकाश लेकर आये। हर बार जब मैं वह दिन याद करती हूँ जब मैंने उनकी झलक देखी थी, मुझे सारी बातें याद हो जाती हैं। भाग्य से, उस दिन गुरु जी अपने कमरे में अकेले बैठे थे और मैं अपनी मित्र के साथ, जिसने मुझे उनके पास चलने के लिए कहा था, उनके पास गयी थी। उनके व्यक्तित्व ने मुझे अभिभूत कर दिया था। मैं जीवन में एक खोये हुए बच्चे की तरह थी, जिसने अन्ततः मानों अपनी माँ का आच्छादन और सुकून पा लिया था। मैंने अपने प्रति उनके प्रेम को निर्मल और पूर्ण पाया, ऐसा

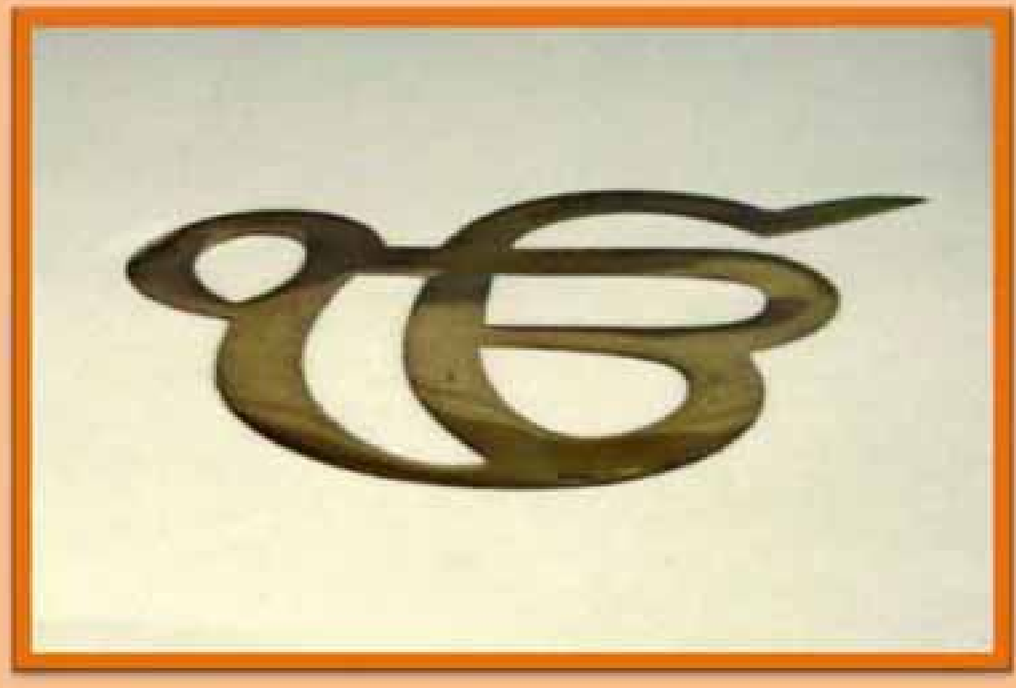

सच्चा प्रेम मुझे जीवन में कभी नहीं मिला था। उनके इस असीम प्रेम से मुझे अद्भुत आनन्द मिला। उन्होंने मुझे हर शाम अपनी सभा में आने के लिए कहा। चाहे कड़कती धूप रही हो या बारिश, मैं प्रत्येक शाम गुरुजी की सभा में जाती और सैंकड़ों और भक्तों के साथ बैठती।

उन दिनों मुझे अत्यधिक शारीरिक पीड़ा थी, मेरी त्वचा से खून मवाद हमेशा निकलते रहते थे। इसके कारण मैं मानसिक रूप से भी क्लान्त व अस्थिर थी और लोगों के बीच जाना मुझे अटपटा लगता था।

जैसे–जैसे समय बीता, गुरुजी के आशीर्वाद से मैं आंतरिक रूप से ठीक होने लगी। मैंने अपनी स्थिति से समझौता करना शुरु किया और कड़वाहट और विद्वेष से इसका प्रतिरोध करने या लड़ने के बदले इसे स्वीकार लिया। मैंने अपनी बीमारी के परिणाम को मन–ही–मन स्वीकार लिया और जब मैंने सब कुछमान लिया, मुझे बीमारी और अपनी परिस्थितियों की चिन्ता नहीं रही, मैं बीमारी के ठीक होने की आशा के बिना जीने लगी, मैंने मान लिया कि ऐसा ही नहीं सकता है।

केवल गुरुजी के सानिध्य और उनकी ऊर्जास्विता को आत्मसात जैसे–जैसे उनके प्रतापी व्यक्तित्व में डूबती गयी, मैंने स्वयं में एक आत्मिक अवबोधन पाया। मैं केवल उनके पास होना चाहती थी क्योंकि उनके सानिध्य से जो प्रेम मेरे पर उमड़ता था, उससे मैं पहले बिल्कुल अनजान थी। उनका अनुराग शुद्ध था, निर्मल था, अप्रतिबंध था, उसकी पूर्ति किसी और वस्तु से नहीं की जा सकती थी, मैं प्रतिदिन शाम को उनके पास एक स्वाभाविक नित्य दिनचर्या के अनुसार जा रही थी।

एक भाग्यशाली दिन, उन्होंने मुझे अपने सामने बुलाया और पंजाबी भाषा में घाषणा की, जो मैं बिल्कुल समझ नहीं पायी, कि उन्होंने पूरी तरह मुझे परख लिया है, नींबू की तरह निंचोड़ा है और अब वे मुझे ठीक कर देंगे। मैं यहाँ बता दूँ कि उनकी बात बिल्कुल सही थी, उन्होंने मेरी सहन–शक्ति की बहुत कड़ी परीखा ली थी ताकि वे देख सके कि मैं उनके प्रेम की पाव थी या नहीं।

मैं उस शाम ह्रदय में आनन्द व आशा लिये घर लौटी। त्वचा की बीमारी के इन दिनों में अपने प्रतिविम्ब से भागती थी, डरती थी दर्पण मेरे लिए एक दुःस्वप्न था। जीवन बदलने वाला पल तब आया, जब गुरुजी ने मुझे अपना अमूल्य आशीर्वाद दिया और दर्पण में स्वयं को देखने का साहस जुटाने के लिए कहा।

उनकी देवी शक्ति से मैंने साहस किया और देखा कि प्रतिबिम्ब में, या यों कहें कि शरीर में थाड़ा परिवर्तन आया था। पर, कुछ ही सप्ताहों में, मैंने दर्पण में एक नये शरीर को देखना शुरु किया, जो मेरे लिए अजनबी था। मैं गुरुजी के प्रताप से अभिभूत हो गयी थी। बिना किसी शंकांश के, मेरा उनकी उत्कृष्ट जीवनदायिनी शक्तियों में विश्वास जम गया था। मेरी श्रद्धा उनके लिए और बढ़ गयी, मेरी उनमें आस्था और बलवती हो गयी।

इसके बाद मौसम आये और गये, मुझे दमे की बीमारी ने अक्रान्त नहीं किया। वस्तुतः मैं दिल्ली की प्रदूषित हवा में ऐसे जीने लग गयी, जैसे कोई आम रोग रहित इंसान बिना किसी समस्या के जीता है। गुरुजी ने मुझे नया जीवनदान दिया और कहा कि वे अगर मुझे ठीक नहीं करते, तो मैं जी नहीं पाती। मुझे एक ज्योतिषी ने भी यही बात कही थी, जिससे मैं उस साल बहुत पहले मिली थी।

मैं अपने जीवन में परिवर्तन को शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकती। बस इतना कह सकती हूँ कि गुरुजी ने केवल मुझे शारीरिक रूप से ही नहीं बल्कि आत्मिक रूप से भी सवंर्धित किया। काफी समय के बाद मैंने स्वयं को अपनी त्वचा में निश्चित पाया।

गुरुजी सदा अपने भक्तों की परीक्षाएं लेते रहते हैं। किन्तु हम स्वभावतः अपनी इच्छाओं से पूर्ण होने के बाद स्वार्थपरक होकर उनसे दूर हो जाते हैं। एक ख़ास घटना साफ़ बताती है कि गुरुजी किस तरह अपने शिष्यों भक्तों से सदा प्रेम करते रहते हैं।

उन्होंने मुझे अपनी फ़ोटो के सामने प्रतिदिन एक मोमबत्ती जलाने के लिए कहा था। एक दिन, माचिस की काफ़ी सारी तीलियों के जलाने के बावजूद मुझसे मोमबत्ती नहीं जली। परेशान होकर और क्रुद्ध होकर मैं बिना मोमबत्ती जलाये नहाने चली गयी और जब बाहर आयी, मोमबत्ती गुरुजी के फ़ोटो के सामने जल रही थी। मैं अवाक् रह गयी। उसी शाम, अपनी श्रद्धा प्रकट करने में गुरुजी से मिलने गयी, यूँ यह मेरा मिलन–दिवस नहीं था। जैसे ही मैं उनके चरण–स्पर्श के लिए झुकी, उन्होंने फुसफुसाकर अपनी दयामय आवाज़ में मुझसे कहा, "तो, मोमबत्ती जल ही गयी ?" मैं समझ गयी कि मैं अपने आपको पलभर के लिए गुरुजी से दूर कर लिया था और जबकि वे हमेशा मेरे साथ थे।

अन्त में, मैं अपने हृदय की गयारहों से उनका आभार प्रकट करना चाहूँगी और सारा जीवन उनकी दया के प्रति ऋणी रहूँगी।

– एक भक्त का सत्संग

एक देवदूत

मैं अत्यन्त दुःखित और व्यथित थी, जब मेरा कॉलेज जाने वाला पुत्र बिना किसी स्पष्ट कारण के, मनोवैज्ञानिक रूप से बीमार हो गया। वैसे हमने हर तरफ़ से

मदद लेने की कोशिश की, मनोचिकित्सक के पास भी गये, पर मेरा ध्यान गुरुजी की ओर गया जिनके बारे में मैंने अपनी बेटी से सुना था। बेटी की दोस्त का परिवार उनके पास अक्सर जाया करता था। बेटी की दोस्त की माँ हमें गुरुजी के शरण में ले जाने के लिए तैयार हो गयी। उसने अपनी तरफ़ से ही हमें आश्वस्त किया कि गुरुजी सब कुछ ठीक कर देंगे, मेरे बेटे का कॉलेज में साल भी ख़राब नहीं होगा। मैं केवल अपने बेटे को रोगमुक्त और स्वस्थ देखना चाहती थी, कॉलिज में उसका साल ख़राब होता या नहीं, इस बात पर मेरा ध्यान नहीं था।

पहली मुलाक़ात में ही गुरुजी हमारे लिए अत्यधिक कृपालु थे। जब उन्होंने आश्वस्त किया कि सब कुछ ठीक हो जायेगा तब मुझे काफ़ी चैन आया। गुरुजी के आशीर्वादों से मेरे बेटे की हालत में धीरे–धीरे, पर पक्के तौर पर सुधार होना शुरु हुआ। चिकित्सकों की मनाही के बावजूद, मेरा बेटा आधी परीक्षाओं में बैठा, बाक़ी आधी के लिए कॉलेज ने उसे एक महीने के बाद बैठने की अनुमति दे दी थी। हैरत की बात है, मेरे बेटे को अच्छे अंक मिले। ईश्वर और गुरुजी की कृपा से वह एक महीने के अंतराल में ही काफ़ी ठीक हो गया। फिर वह छात्रावास में रहने लगा और पढ़ाई भी काफ़ी अच्छी तरह करने लगा। अब उसका वह मनोरोग एक दुःस्वप्न के जैसा प्रतीत होता है।

गुरुजी से मिलने के बाद मुझे अहसास होता है कि हमारा परिवार उनके आशीर्वाद से धन्य हो गया और हम उनकी दया की छत्र–छाया में सुरक्षित हैं। मैं सदा गुरुजी के प्रति उनकी कृपा–दृष्टि के लिए आभारी रहूँगी। वे सच में, इस मत्युलोक में ईश्वर के ही दूत हैं।

– एक भक्त का सत्संग

संतसंग की त्राण शक्ति

सत्संग का अर्थ है सच्ची या अच्छी संगति। सत्य वाणी सुनना हमेशा लाभदायक होता है। गुरुजी के दरबार में आया हर व्यक्ति गुरुजी की कृपा से सत्संग के

संदेशों का वाहक होता है, जो दुखत्रस्त लोगों तक इन संदेशों के पहुँचा है। जो लोग इन संत्संगों को सुनते हैं, उन्हें यह अनुभव होता है कि जिन समस्याओं से वे जूझ रहे हैं, उन्हीं के बारे में उन्हें बताया जा रहा है।

श्री अरुण सहगल, जिसने गुरुजी के दर्शन कभी नहीं किये थे, एक बार अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती किया गया, वहाँ उसे पता चला कि उसके

मस्तिष्क में रक्त के थक्के का जमाव है। गुरुजी का एक भक्त, जो सहगल की जान–पहचान वाला था, सहगल की ख़ैरियत पूछने अस्पताल गया और गुरुजी की महिमा की कुछ बातें उसे बतायीं।

फिर सहगल ने सत्संग आयोजित करवाया, सत्संग के बाद चिकित्सकों ने पाया कि रक्त का थक्का उसके मस्तिष्क के निष्क्रिय हिस्से में चला गया है। इस अद्भुत चमत्कार को जानने के बाद सहगल के मित्र ने उसे कहा कि उसे गुरुजी का आशीर्वाद मिल गया है और अब चिन्ता की कोई बात नहीं है। पर सहगल यह मानने को तैयार नहीं था। उसे लगा कि रक्त के थक्के का मस्तिष्क के सुनन हिस्से में चले जाना केवल एक संयोग था, गुरुजी के दिव्यत्व का चमत्कार नहीं।

अगले ही दिन, सहगल को एक परेशन चिकित्सक ने बताया कि एक भयानक स्थिति पैदा हो गयी है, जो बस उसके मस्तिष्क तक जा रही है, उसके सारे हिस्सों पर रक्त के थक्कों का जमाव हो गया है, सहगल को अविलम्ब 'एमजियोग्राफी' की आवश्यकता है। चिकित्सक ने कहा कि उपचार–प्रक्रिया कठिन है और बाद में उपचार कठिनतर होता जायेगा।

अब सहगल और उसका परिवार बिल्कुल हताश हो गये और संकट की इस स्थिति में गुरुजी को अनायास याद किया और उनसे दया की, कृपा की प्रार्थना की। सहगल अस्पताल से अपने सारे परिवार के साथ गुरुजी की शरण में गया। वहाँ तीन–चार बार जाने के बाद गुरुजी ने सहगल को बुलाया और उसे एक लंगर आयोजित करने के लिए कहा। उसके बाद गुरुजी ने उसे पूर्णतः स्वस्थ घोषित कर दिया गुरुजी के शब्द सही साबित हुए क्योंकि जब सहगल का अस्पताल में निरीक्षण किया गया तो सारे निरीक्षणों में वह रोगमुक्त पाया गया।

– अरुण सहगल, एक भक्त का सत्संग

गुरुजी की एक परिवार पर कृपा

इस धरती पर सबसे मुश्किल काम गुरुजी के साथ हुए अपने अनुभवों को शब्दों ने बयान करना है। उनके दर्शनों या मुलाकात की तुलना किसी से नहीं की जा सकती। जब आप उनके प्रथम दर्शन या उनकी हल्की झलक पा सकेंगे तभी आप उन्हें और उनकी आश्चर्यजनक शक्ति को पहचान सकेंगे लेकिन दर्शन प्राप्त करना आसान नहीं हैं क्योंकि इसके लिए गुरुजी की इच्छा आवश्यक है। उनके दर्शनों के लिए ऐसे कई योजनाबद्ध और नेकनीयत वाले प्रयास सफल नहीं होते हैं। दूसरी तरफ, वे अचानक आपको कहीं से भी बुला सकते हैं। मुझे ये दोनों तरह के अनुभव हुए।

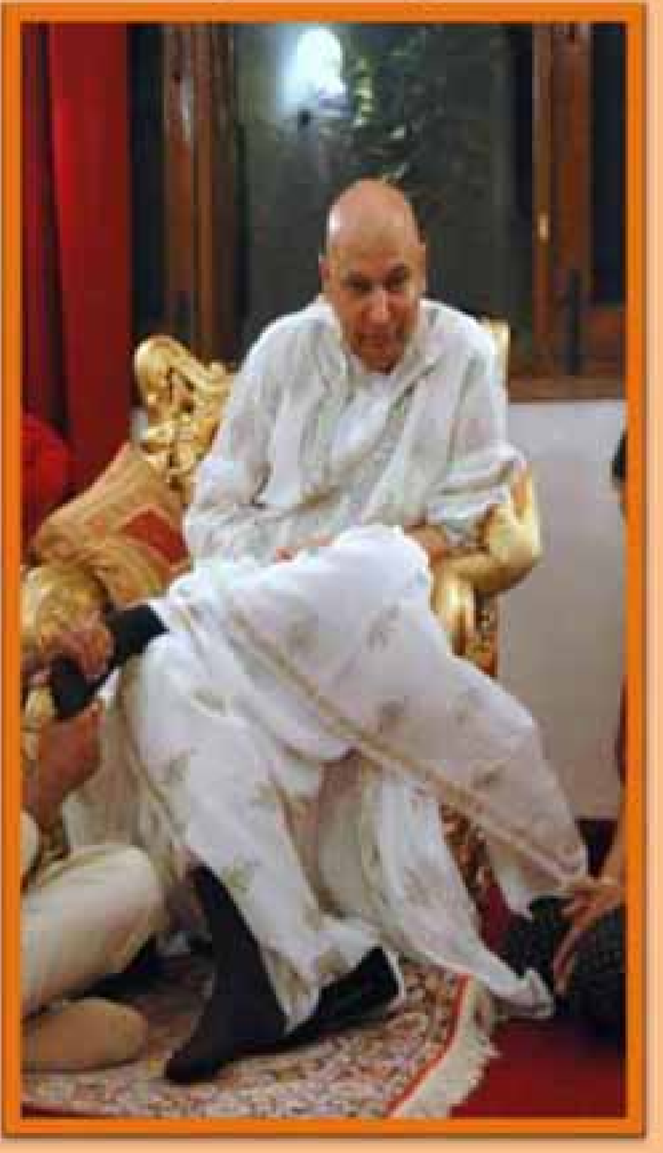

जैसे ही मैं गुरुजी का भक्त बना मैंने अपना अनुभव अपने क़रीबी मित्रों को बताना शुरु किया और अब वे भी गुरुजी से मिलने के लिए बेताब थे लेकिन ऐसा उनकी अच्छा और मेरी इच्छा होने के बाद भी किसी–न–किसी कारणवश छः महीने तक हो पाया। आखिरकार जब वे

गुरुजी से मिले तो वे प्रसन्नचित हुए गुरुजी के तेज ने उनके जीवन के हर पहलू को छुआ।

फिर भी, गुरुजी ही आपको बुलाते हैं। मैं गुरुजी के आश्रम के बाहर पार्किंग में अपने मित्र के आने की प्रतीक्षा कर रहा था जैसे ही एक गाड़ी नज़दीक आई, मैंने देखा वह गाड़ी चला रहा व्यक्ति मेरा मित्र नहीं था। वे कोई नवविवाहित को जो वहाँ से कुछ दूरी पर स्थित होटल जा रहे थे। मैंने उन्हें बताया कि यह स्थान संगत के लिए आने वाली गाड़ियों के लिए है। वो दोनों अपने गंतव्य के लिए चले गए।

कुछ मिनटों अंदर ही वे वापस आए और पूछा कि क्या वे भी गुरुजी के दर्शन कर सकते हैं ? मैं चकित रह गया; वे अपने रात्रि–कार्यक्रम को मंदिर में जाने के लिए छोड़ना चाहते हैं, वो भी एक गुरुजी के दर्शन के लिए जिनके बारे में उन्होंने कुछ मिनट पहले ही सुना है। उन्होंने गुरुजी के दर्शन किए और प्रसन्न तथा संतुष्ट हो वापस गए। कैसे गुरुजी आपको अपनी ओर खींचते हैं। यह भी एक लीला है।

गुरुजी के संरक्षण में

जब से मैंने गुरुजी के पास जाना शुरु किया तो हर बार एक विशिष्ट सुखद अनुभूति होती थी। गुरुजी आपको आशीर्वाद के रूप में कई चीज़ें देते हैं। उनमें से एक है, उनका संरक्षण। गुरुजी की शरण में सुरक्षा का जो अनुभव आप करते हैं वह अद्वितीय है। मेरे कई अनुभवों ने इसे साबित किया है।

हमें गुरुजी का भक्त हुए कुछ ही महीने हुए थे जब मुझे तेज बुख़ार हुआ। न ही भारी दवाइयों, न ही सिर पर रखे गीले कपड़े से बुखार में कमी आई। तभी अचानक मेरी माँ ने गुरुजी की तस्वीर को जो उन्होंने हमें दी थी, मुझे अपनी

कमीज़ की जेब में रखने को कहा। कुछ ही मिनटों में मेरे शरीर के तापमान में कमी आई और वो क़रीब सामान्य स्तर पर पहुँच गया।

एकबार कॉलेज में मुझे भयंकर पेट–दर्द और उल्टी हुई। मेरे दोस्त मुझे जब घर ले गए तब तक मेरे माता–पिता गुरुजी की संगत के लिए घर से निकल चुके थे। उनके लौट आने तक दो दोस्त घर पर ही रुके रहे। लेकिन मेरी हालत ख़राब होती जा रही थी, तब उन्होंने मेरे पिता को फोन किया और मुझे नज़दीक अस्पताल ले गए। डॉक्टर ने मुझे दो सुइयाँ दी और दवाइयाँ देकर आराम करने को कहा। लेकिन तबीयत ठीक नहीं हो रही थी। इस बीच मेरे पिता ने जाने की आज्ञा लेते समय गुरुजी को मेरी बीमारी के बारे में बताया। गुरुजी ने उन्हें मुझे नीबू–पानी पिलाने का निर्देश दिया। मैंने नीबू–पानी पिया और माता–पिता के घर लौटने तक मैं सामान्य हो गया। जो काम दवाइयाँ और सुई नहीं कर सकी वो काम गुरुजी के नींबू–पानी ने कर दिया।

कुछ साल बाद मुझे फिर तेज़ बुख़ार हुआ। डॉक्टरों की दवाइयाँ कारगर नहीं हो पा रही थीं और जाँच में कुछ निश्चित नहीं हो पा रहा था। हमने दवाइयाँ बदली। डॉक्टर भी बदले लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ। आख़िरकार सात कष्ट भरे दिनों के बाद पिताजी ने गुरुजी को स्थिति के बारे में बताया। गुरुजी ने कुछ अभिमन्त्रित हरी मिर्चों का उपाय बताया, हमने ठीक वैसे ही किया और कुछ ही घंटों में चमत्कार की तरह बुख़ार गायब हो गया। गुरुजी की कृपा के अतिरिक्त कुछ भी या कोई भी ऐसा नहीं कर सकता था।

कार दुर्घटना से बचाव

गुरुजी हमारा भूत और वर्तमान जानते हैं और हमारे भविष्य का पूरा ध्यान रखते हैं। हममें दूर–दृष्टि नहीं होती और हम सामान्य लोग यह नहीं जानते कि अगले पल हमारे साथ क्या होने वाला है। किन्तु, एकबार गुरुजी की शरण में जाने के बाद हमें कुछ भी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं क्योंकि अपना जीवन उनके हाथों में सौंपने के बाद स्वयं गुरुजी हमारे दुःखों को भी अपना लेते हैं।

एक बार गुरुजी ने पिताजी को बुलाया और कहा कि मेरे और माँ के ग्रह अनुकूल नहीं हैं। शायद उन्होंने निकट भविष्य में हमारी तरफ आते कष्टों को देख लिया था और वे हमें उनसे बचाना चाहते थे। अगले दिन, दोपहर में मैं अपनी कार में घर से दो किलोमीटर दूर बाज़ार ज रहा था। एक ट्रैफिक जंक्शन को पार करते समय मेरी कार के बायें हिस्से में तेजी से आती एक मोटरसाइकिल टकरायी। टकराहट इतनी तेज़ थी कि कार सड़क पर घिसटने लगी और सड़क विभाजक से जा टकरायी। मेरी सुध–बुध चली गयी और मेरा शरीर काँच के टुकड़ों ढक गया। मैंने विंडस्क्रीन की ओर देखा, वह ठीक था। काँच के ये टुकड़े कार के दरवाज़ों में लगी खिड़कियों से आये

थे। मैं बाहर निकला और मोटरसाइकिल की तरफ़ गया। चारों ओर इक्ट्ठी भीड़ मेरी ओर से ही बोल रही थी क्योंकि मैं बड़ी गाड़ी में था। मैंने मोटरसाइकिल चला रहे व्यक्ति का ब्योरा वगैरह लिया। उसके कुछ मित्र आये और उसे ये गये। मैंने भी सोचा, चलो जो हो गया, सो हो गया। मैं सोच रहा था कार अब चलेगी नहीं। किन्तु हैरानी की बात है कि कार एक बार में ही चल पड़ी। मैं बाज़ार गया और ख़रीददारी कर घर लौटा। जब मैं नहा रहा था। तब मैंने महसूस किया कि मेरे शरीर पर एक खरोंच भी नहीं थी। शीशे के टुकड़ों की चोट सहने के बावजूद गुरुजी की दिव्य कृपा से मुझे कुछ नहीं हुआ था। जब हम उसी शाम एक रिश्तेदार की गाड़ी में गुरुजी के पास गये, तो उन्होंने पिताजी से कहा, "सिंगला! कोई बात नहीं, सिर्फ़ कार को नुकसान हुआ है, तुम्हारे बेटे को थोड़ी भी चोट नहीं आयी है और अधिक ध्यान देने वाली बात है।" कोई भी जो हमारी कार की हालत देखता, अवश्य अनुमान लगाता कि चालक को भयंकर चोटें आयी होंगी। कार में अत्यधिक क्षति हुई थी। ऐसी विपरीत स्थिति में गुरुजी के अलावे कोई भी मुझे पूरी तरह बचा नहीं सकता था।

फिर सर्दियों की एक शाम मैं कार से गुरुजी के दर्शनों के लिए जा रहा था, तभी कार के ब्रेक ने काम करना बन्द कर दिया। गुरुजी के आशीर्वाद से यह तब हुआ, जब गाड़ी लाल बत्ती पर रुकी हुई थी, नही ंतो यह दुर्घटना प्राणघातक हो सकती थी। खैर, हम बीच में फँस गये। साढ़े सात बजे शाम में पूरा अंधेरा हो चुका था। किसी तरह हमने एक कार–मिस्त्री को ढूँढ़ निकाला, जो अपनी दुकान बन्द कर रहा था, पर वह हमारी मदद के लिए तैयार हो गया। आधे घंटे की निरंतर मेहनत के बाद भी वह ब्रेक ठीक कर पाने में सफल नहीं हो पाया। मेरी बहन आरती ने मन–ही–मन गुरुजी से प्रार्थना की जिससे हमें उनके दर्शनों में और देर न हो। तभी मिस्त्री की खुशी भरी आवाज़ हमें सुनायी

दी, उसने रिसाव की जगह देख ली थी, उसने उसे ठीक किया और हम तुरन्त गुरुजी के आश्रम की ओर सकुशल प्रस्थान कर गये।

जब हमने गुरुजी के पास आना शुरु किया था, मैं तब गाड़ी चलाना सीख ही रहा था और नोएडा की सीमा से आगे कभी स्वयं गाड़ी चलाकर नहीं गया। अक़्सर पिता जी ही हमें गुरुजी के पास ले जाया करते थे। एकबार पिताजी चंडीगढ़ गये और हमें गुरुजी के पास जाना था, पर हम पिताजी की प्रतीक्षा के अतिरिक्त कुछ नहीं कर सकते थे। गुरुजी का आश्रम क़रीब बीस किलोमीटर दूर था और ऊपर से दिल्ली का भीड भरा यातायात। शुरु में मैं हिचक रहा था, पर माँ और बहन के प्रोत्साहन पर मैंने पिताजी से पूछा कि मैं अगले दिन गाड़ी चलाकर सबको गुरुजी के पास के जाऊँ ? अप्रत्याशित रूप में उन्होंने सहमति दे दी। अगले दिन मैंने तैयार होकर डरते–डरते गाड़ी बाहर निकाली। एकाएक हम तीनों ने, मैंने मेरी माँ ने और बहन ने गुरुजी की सुगन्ध को गाड़ी में महसूस किया। वह सुगन्ध फैल रही थी। पूरा रास्ता यह खुशबू आती रही और हम अपने गंतव्य सुरक्षित पहुँचे। लौटते समय भी गुरुजी की यह दिव्य सुगन्ध हमारे साथ था। जैसे ही मैंने गाड़ी गैरिज में लगायी, यह सुगन्ध एकाएक समाप्त हो गयी। वस्तुतः गुरुजी अपने भक्तों की सुरक्षा का ध्यान हमेशा रखते हैं। मैं जब इतनी दूरी के लिए पहली बार गाड़ी चला रहा था, तब उनकी उपस्थिति ने मुझमें विश्वास दिया, प्रोत्साहन दिया, उनकी कृपा से हम यात्रा के लिए आश्वस्त हो गये और हम सुरक्षित वापस अपने घर पहुँच गये।

इंजीनियरिंग महाविद्यालय में मेरा दाख़िला

गुरुजी से हमारे संपर्क को जब दो साल हुए, मैं अपनी बाहवीं की परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ और फ़ैसला हुआ कि मैं एक साल इंजीनियरिंग प्रवेश–परीक्षाकी तैयारी करूँगा।

पर साल व्यर्थ न हो जाये, इसलिए दिल्ली विश्वविद्यालय में 'बी.एस.सी. आनर्स' में मैंने दाख़िला ले लिया। जोश में आकर, केवल अनुभव के लिए मैं इंजीनियरिंग परीक्षाओं में बैठा। परिणाम उत्साहबर्द्धक नहीं थे, मेरा दाख़िला नोएडा या आप–पास के अच्छे इंजीनियरिंग महाविद्यालय में नहीं हो सकता था। अच्छे महाविद्यालयों में कुछ 'एन.आर.आई.' जगहें थीं, पर उनका दाख़िले का शुल्क और वार्षिक शुल्क बहुत अधिक था। अन्ततः मैंने यह साल छोड़ने निर्णय लिया और अपनी

आरंभिक योजना के अनुसार अगले साल के लिए तैयारी करने लगा।

कुछ महीने बीत गये। उत्तर प्रदेश के लिए एक विशेष प्रवेश–परीक्षा आयोजित की गयी। मैं भी इस परीक्षा में बैठा क्योंकि अलग–अलग महाविद्यालयों में कुछ–कुछ जगहें उपलब्ध थीं। किन्तु 'एन.आर.आई.' के लिए सुरक्षित जगहें और भारी–भरकम शुल्क की वही कहानी थी।

उन्हीं दिनों एक रात गुरुजी ने पिता को बुलवाया और कहा, "सिंगला ! तुम्हारे बेटे को दाख़िला मिल गया है। आनन्द करो।" पिता जी कुछ समझ तो नहीं पाये, पर गुरूजी का धन्यवाद किया और चले आये। अगले दिन दोपहर जब मैं अपने कॉलेज (दिल्ली विश्वविद्यालय) से लौटा, तो पिताजी ने पूछा कि क्या मैंने ग्रेटर नोएडा के किसी इंजीनियरिंग महाविद्यालय में दाख़िला लेना चाहता था। मैं चकित रह गया क्योंकि उस दिन 14 नवंबर था और और सारे महाविद्यालयों में दाखिले 10 नवंबर को समाप्त हो गये थे। किन्तु, फिर भी मैंने उन्हें हाँ कहा। वह महाविद्यालय घर से पास में ही था, हम उसके कार्यालय में गये, आवश्यक कागज़ात जमा किये और मुझे उस महाविद्यालय में दाख़िला मिल गया। मैं तो हैरान था। वापस लौटते समय पिताजी ने बताया कि उनके किसी मित्र ने सुबह फोन कर महाविद्यालय में तुरन्त आने के लिए कहा था। पिताजी वहाँ तुरन्त गये थे और उन्होंने एक फॉर्म भरा और उन्हें उस फॉर्म के साथ चौबीस हज़ार रुपयों का एक पूर्ण विनांकित चेक जमा करने के लिए कहा गया। सारा शुल्क एक बार में नहीं देना था और जो भी शुल्क था, वह न्यूनतम वार्षिक शुल्क था।

पिताजी और मैं गुरुजी की उस बात का अब मतलब समझे। मुझे तो मानों घर बैठे–बिठाये एक इच्छित महाविद्यालय में प्रवेश मिल गया था।

गुरुजी का आशीर्वाद मेरे मित्रों के लिए भी था

कॉलिज में आशीष, जो विद्यालय के दिनों का मेरा साथी था, योगेश और मुकेश मेरे अच्छे दोस्त बन गये। कुछ शुरुआती कठिनाइयों के बाद, उन्हें भी गुरुजी के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ, उनके चरणों में जगह मिली और गुरुजी के साथ उन सब के अपने–अपने अनुभव हुए।

हमारे विश्वविद्यालय में 'सिमेस्टर व्यवस्था' है जिसके तहत छः विषयों में उत्तीर्ण होना पड़ता है। यदि किसी को आवश्यक न्यूनतम अंक नहीं आये, तो उसे उस परीक्षा में अगले साल उत्तीर्ण होना पड़ेगा। अगर किसी विद्यार्थी को उत्तीर्ण होने के लिए दस अंक कम पड़ जाते हैं, तो उसे वे दस अंक दिये जा सकते हैं। महाविद्यालय में दूसरे साल के अन्त में योगेश को 'सिमेस्टर' में उत्तीर्ण होने के लिए ग्यारह अंक कम पड़ गये। उसे एक साल का नुकसान हो गया। वह अत्यंत निराश हो गया। उसे एक महीने के लिए घर बैठना पड़ा क्योंकि उसे अगले साल की कक्षा में पढ़ाई करने की अनुमति नहीं थी। दुःखित योगेश गुरुजी का ध्यान लगाया और उनकी मदद मांगी। बाद में वह सो गया। जब वह उठा, वह प्रसन्न था, पर जो उसने सपने में देखा था, उससे वह अधेड़बुन में भी था। पर उसने हमें कुछ नहीं बताया।

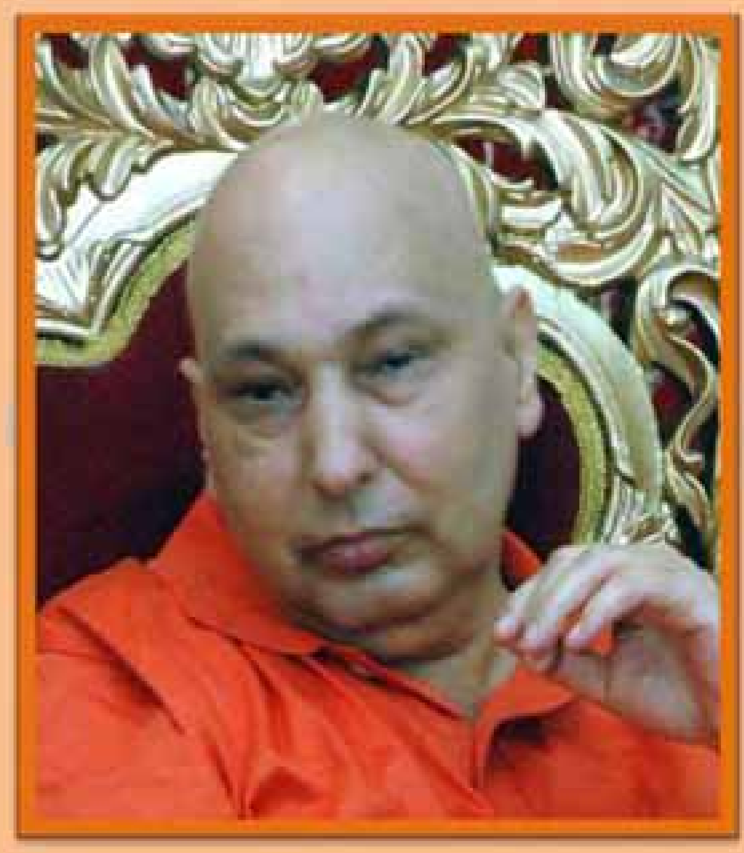

अगले दिन, समाचारपत्रों के मुख्य समाचारों में विश्वविद्यालय बोर्ड का एक निर्णय छपा था जिसके अनुसार हमारे इंजीनियरिंग पाठ्यक्रम के चार सालों में एक बार पन्द्रह अनुग्रहंक विद्यार्थी को दिये जा सकते थे। योगेश को केवल ग्यारह अंकों की ज़रूरत थी, उसकी पढ़ाई का एक साल बच गया था और उसके बाद आनन्दित योगेश ने अपना चमत्कारिक अनुभव हमें बताया। उसने बताया कि

उसने सपने में देखा था कि उसकी माँ उसे गुरुजी के पास ले गयी हैं और गुरुजी को बताया है कि वह कितना परेशान है। गुरुजी ने कहा कि चिन्ता की कोई बात नहीं, सब कुछ ठीक हो जायेगा। ये सपना विश्वविद्यालय बोर्ड की बैठक से कुछ घंटे पहले का था।

हर छः महीने पर, परीक्षाओं के पहले हम कम–से–कम एक बार गुरुजी के दर्शन करना चाहते थे। मुझे तो आसानी थी क्योंकि मेरे माता–पिता उनकी शरण में प्रायः जाते रहते थे, पर मेरे मित्रों को थोड़ा अतिरिक्त प्रयास करना पड़ता था। आशीष का तो उनके दर्शनों से सीधा रिश्ता प्रतीत होता था। जब वह परीक्षाओं के पहले गुरुजी के दर्शन कर लेता था वह अपने सिमेस्टर की सारी परीक्षाओं में उत्तीर्ण हो जाता था, पर जिस बार भी वह उनके दर्शन नहीं कर पाया, एक या अधिक विषयों में वह अवश्य अनुत्तीर्ण हुअ और उसे उन विषयों की परीक्षाओं में फिर से बैठना पड़ा।

GURUJI KA ASHRAM

गुरुजी कृपा से मुकेश इंजीनियरिंग करने के बाद एक मशहूर बहुराष्ट्रीय कंपनी"हनी वेल" में नियुक्त हुआ। उसे एक साल के लिए प्रशिक्षण के रूप में नियुक्त किया गया। बाद मे, मुकेश कंपनी से स्थायीकरण आदेश की बेसब्री से प्रतीक्षा करने लगा कि उसे कार्यकारी श्रेणी का कर्मचारी बना दिया जाये। पर ऐसा हुआ नहीं, दो महीनों तक मामला लटका रहा। वह गुरुजी के शरण में 14 अप्रैल, 2005 को आया, दर्शन किये, आशीर्वाद लिया और लौट गया। 16 अप्रैल को कंपनी ने उसे स्थायी कर्मचारी बना दिया था। गुरुजी अपने आशीर्वादों से सब कुछ संभव बना देते हैं।

मेरे प्राप्तांकें में वृद्धि

तीसरे 'सिमेस्टर' की अंतिम परीक्षा के परिणाम में मुझे केवल उन्नीस अंक आये जबकि उत्तीर्ण होने के लिए तीस अंकों की आवश्यकता थी। मैं तो बिल्कुल टूट गया क्योंकि परीक्षा के बाद मैंने अपना मूल्यांकन किया था और मैं आश्वस्त था कि मैं उत्तीर्ण हो जाऊँगा। मैं अपने माता–पिता को यह समाचार सुनाया और साथ में यह भी कहा कि अगर इतना सब कुछ करने पर भी अगर मुझे इस परीक्षा में उन्नीस अंक ही आये हैं, तो मेरे लिए इसमें कभी भी उत्तीर्ण होना बहुत कठिन हो जायेगा।

पिता जी ने गुरुजी को सारी स्थिति बतायी और उन्होंने मुझे पुनर्मुल्यांकन के लिए आवेदन देने के लिए कहा और मैंने अगले दिन ऐसा ही किया। अगले दिन कॉलेज–परिसर में कुछ विद्यार्थियों के प्राप्तांकों में परिवर्तन होने का कोलाहल था। मैं संबंधित शिक्षक के पास गया और जैसे ही मैंने उनको अपना नाम बताया, उन्होंने स्पष्टतः कहा कि उस विषय में मेरे प्राप्तांकों में परिवर्तन है,

उन्नीस के बदले मुझे तिरेपन अंक दिये गये हैं। मैं अत्यंत आहल्दित हो गया और तत्काल ही परीक्षा के पुनर्मूल्यांकन के आवेदन को मैंने वापस ले लिया। मन–ही–मन मैंने गुरुजी का ध्यान कर उनका धन्यवाद किया। बाद में हमें पता चला कि सारे राज्य के करीब 120 महाविद्यालयों में, जिनमें से हर महाविद्यालय में सैकड़ों विद्यार्थी थे, केवल पाँच विद्यार्थियों के प्राप्तांकों में परिवर्तन हुआ था और उनमें भी सबके अंकों में वृद्धि नहीं हुई थी। किन्तु मेरे प्राप्तांकों में तो वृद्धि थी और वह भी गुरुजी की महिमामयी कृपा से।

जीवन के ये मेरे कुछ अनुभव हैं, जो बताते हैं कि गुरुजी को भक्ति असीम है, किस तरह से अपने भक्तों को स्वार्थरहित होकर संरक्षण देते हैं, उनको हर विपदा से बचाते हैं और जीवन में हर तरह से आगे बढ़ने में सहयोग देते हैं। अगर कोई भक्त सब कुछ गुरुजी पर छोड़ देता है, तो वह निश्चित ही गुरुजी की शरण में होता है। गुरुजी प्रेम व अनुराग के असीमित और अपरिमित स्रोत हैं, उनकी तरफ सम्पूर्ण समर्पण ही उनकी छत्र–छाया में आने की विधि है। मैं आशा करता हूँ कि उनकी दैवी कृपा सदैव हमारे साथ रहेगी और वे हमेशा अपने दैव आवास में विराजमान रहेंगे। गुरुजी के चरण–स्पर्श।

– अरविन्द सिंगला का सत्संग

मृत्यु–शय्या पर एक व्यक्ति को जीवन–दान

एक परिवार पिछले 45 सालों से राधा स्वामी परंपरा का अनुयायी था। उसका एक सदस्य, अशोक ग्रोवर गुरुजी का भक्त था। उसे अपने चाचा का फ़ोन आया कि उसके पिता मरणासन्न हालत में हैं, वह तुरन्त घर चला गया।

उसके पिता निरंतर हिचकियाँ ले रहे थे, चिकित्सकों ने साफ़ कह दिया था कि कुछ भी नहीं किया जा सकता। अशोक लगातार गुरुजी को याद करते हुए अपने पिता को लेकर दिल्ली के अपोलो अस्पताल गया और वहाँ उन्हें तुरन्त 'आई.सी.यू. में भर्ती किया गया। उनके रक्त में शक्कर का स्तर 700 तक पहुँच गया था, उनकी आँतों ने काम करना बंद कर दिया था,उनकी हिचकियाँ कम होती जा रही जा रही थीं। चिकित्सकों ने घोषित कर दिया कि उनके ठीक होने की बिल्कुल आशा नहीं है, अंतिम समय आ गया है, इन्हें वापस ले जाना चाहिए। तभी अशोक को लगा कि उसे अस्पताल में नहीं होना चाहिए, उसे लगा कि उसके पिता बिल्कुल ठीक हैं, चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। अशोक को किसी ज़रूरी कार्य से जाना भी था, वह अपने पिताजी को बिना किसी परिचारी के अस्पताल में ही छोड़कर चला गया। वह दो दिनों तक काम में ही व्यस्त रहा और अस्पताल फ़ोन भी नहीं कर पाया। जब वह अस्पताल लौटा, उसने अपने पिताजी को रोते हुए पाया। उसने सोचा कि उसके पिता दुःखग्रस्त हैं और भयभीत भी कि उनके पास कोई भी नहीं था। किन्तु अशोक हैरान रह गया जब उसके पिताजी ने उससे पूछा कि कहीं वह गुरुजी के पास गया था।

फिर उसके पिताजी ने उसे बताया कि उसके जाने के बाद उन्होंने अपने आप गुरुजी की उपस्थिति उनके सुगन्ध से महसूस की थी। गुरुजी ने उसके पिताजी से पूछा, "कैसे हो राधा–स्वामी अनुयायी ?" फिर अशोक के पिताजी ने कहा कि "वैसे तो उन्होंने राधा–स्वामी परंपरा के बाबा जी से प्रार्थना की थी, पर गुरुजी

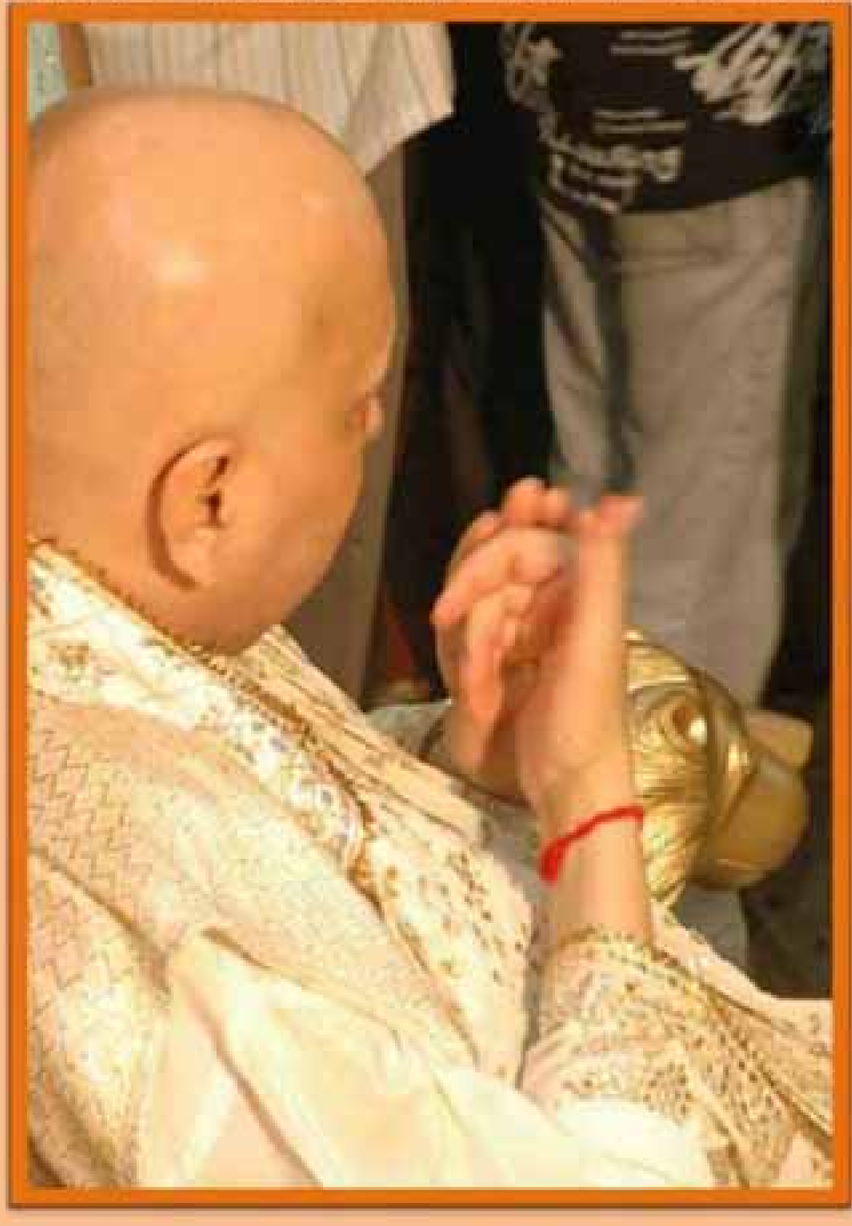

ने उसके जीवन की राक्षा की। गुरुजी ने दोबारा सारी जाँच करवाने के लिए भी कहा", ऐसा अशोक के पिता को लगा। सारी जांचों में दो दिनों का समय लगा। अशोक के पिता लगातार अपने साथ गुरुजी की उपस्थिति महसूस कर रहे थे। अन्ततः जब रिपोर्ट आयी, चिकित्सकों को किसी बीमारी का पता नहीं चल पा रहा था, उन्हें अपनी जांच पर विश्वास नहीं हो रहा था। उन्होंने उसके पिता को इन्सूलिन लेने के लिए कहा, पर उन्होंने इंकार कर दिया। अशोक के पिता ने उन चिकित्सकों से कहा कि वे उनके उपचारों में अब विश्वास नहीं रखते और अब से उन्होंने स्वयं को सबसे

बड़े चिकित्सक, गुरुजी के हवाले कर दिया है। एक सप्ताह के बाद अशोक के पिता गुरुजी के पास गये। गुरुजी ने फिर वही पूछा, "कैसे हो राधा–स्वामी अनुयायी ?" उन्होंने उनसे कहा कि उन्हें नया जीवन मिला है।

परिवार के मुखिया की जीवन–रक्षा को अपना व्यवसाय बंद करने के लिए कहा, फैक्ट्री और मशीनों को बेच देने के लिए कहा। अशोक गुरुजी की आज्ञा का उल्लंघन तो कर ही नहीं सकता था। उसे सब कुछ बेचने में 15 दिन लगे। पुरानी मशीनें अपने क्रय मूल्यों पर बिक गयीं और सारा क्रय–विक्रय बराबर हो गया। कोई समझ नहीं पाया कि गुरुजी ने अशोक को ऐसा करने के लिए क्यों कहा। तीन सप्ताहों के बाद उस व्यवसाय में भयंकर उतार आया और बहुत सारे व्यापारियों को भारी घाटा सहना पड़ा। पर अशोक गुरुजी की कृपा से बच गया था। गुरुजी की आज्ञा मानने का हमेशा अच्छा परिणाम होता है क्योंकि वे हमें सदा वैसे ही करने कहते हैं जिनसे हमें अधिकतम लाभ मिलता है।

GURUJI KA ASHRAM

एक दस वर्षीया बालिका की इच्छा–पूर्ति

अशोक की दस वर्षीय बेटी 2005 ई. में गुरुजी के जन्मदिवस के अवसर पर 'बड़े मंदिर' में आयोजित होने वाले समारोह की तैयारियाँ काफ़ी हिस्सा ले रही थी। वह बड़ी बेसब्री से गुरुजी से मिलना चाहती थी।

अशोक ने एक पुराने भक्त से अपनी बेटी को मंदिर लाने के लिए कहा। वह 'बड़े मन्दिर' आयी, पर वह गुरुजी से मिलने 'एम्पायर एस्टेट' भी जाना चाहती थी। पर उसे वहाँ नहीं ले जाया गया। वह रातभर रोती रही और मन–ही–मन गुरुजी से दर्शन देने की प्रार्थना करती रही। अगले दिन भी गुरुजी से दर्शन देने की प्रार्थना करती रही। अगले दिन, गुरुजी स्वयं 'बड़े मन्दिर' आ गये और सबको चकित कर दिया। जब अशोक ने उनसे कहा कि उसकी बेटी उन्हें कल रात से याद कर रही थी, तो गुरुजी की असीम अनुकम्पा से अशोक की बेटी ने

उस साल अपनी परीक्षाओं में प्रथम स्थान प्राप्त किया और निरंतर प्रतिभाशाली छात्रा बनी हुई है। परीक्षाओं में प्रथम स्थान प्राप्त किया और निरंतर प्रतिभाशाली छात्रा बनी हुई है।

– अशोक ग्रोवर का सत्संग

GURUJI KA ASHRAM

मुझे तो मृत घोषित कर दिया गया था

गुरुजी से मिलने के बाद मानों मैंने मृत्युलोक में ही नरक से स्वर्ग तक की दिव्य यात्रा कर ली थी। मेरी समस्याएं मेरी शादी के तुरन्त बाद ही शुरु हो गई थीं, मेरी पत्नी गीता को भयंकर दमे की शिकायत थी। वो कभी भी रात में अच्छी तरह सो नहीं पाती थी, इसलिए हमेशा परेशान और उद्विग्न रहती थी। उसने अपनी माँ को भी इस बीमारी से त्रस्त देखा था इसलिए वह जानती थी कि यह बीमारी क्या कर सकती है ?

गीता का ही कष्ट काफी नहीं था कि इन समस्या ने मेरी बेटी तान्या को भी अपनी गिरफ्त में ले लिया। मेरा पूरा परिवार परेशान था। मैं बाजार का चक्कर सिर्फ अपनी पत्नी और बेटी की दवाईयाँ खरीदने के लिए ही लगाता था। दोनों सीमित भोजन लेते थे। वो काफी कमजोर और उनके चेहरे और शरीर का रंग काला पड़ गया था।

तब गुरुजी अपने दास से मिले अक्षरश : गुलाम, भक्त के गुरु के साथ चार प्रकार के संबंध बताए गए हैं जो कि भक्ति के लिए आवश्यक हैं, अतुलनीय प्रिय के रूप में, सर्वश्रेष्ठ स्वामी के रूप में, एकमात्र मित्र के रूप में और शाश्वत पिता के रूप में, केवल गुरुजी ही हमारे नारकीय जीवन के बारे में जानते थे। वे ही असंभव को संभव कर सकते थे। इसलिए गुरुजी ने गीता और तान्या से कहा ''कल्याण कर दित्ता'' और वे ठीक हो गई। किसी ने मुझसे पूछा कि ये कैसे संभव है कि एक व्यक्ति ने एक बीमार व्यक्ति को सिर्फ कहा ''कल्याण कर्ता'' और वह व्यक्ति, जो एक भयंकर बीमारी से ग्रस्त था, शरीरिक रूप से स्वस्थ हो गया। सच में, यह किसी व्यक्ति के लिए संभव नहीं है। लेकिन गुरुजी ईश्वर रूप हैं। केवल ईश्वर ही वो सब कर सकता है। जो बिल्कुल संभव नहीं है। मेरी बेटी और पत्नी के ठीक होने के बाद मैंने स्वर्गिक सुख पाया।

कुछ दिनों के बाद, अब मुझे गुरुजी की सहायता की जरूरत थी। चार अगस्त, 2004 को मुझे रात में सीने में दर्द हुआ। मैं डॉक्टर के पास गया, जिन्होंने प्राथमिक उपचार के बाद मुझे घर भेज दिया और आराम करने की सलाह दी। अगली सुबह उठने के आधे घंटे बाद दर्द फिर से शुरु हो गया। दर्द बहुत तीक्ष्ण था और मैं इसे अपनी बायीं बाँह में भी महसूस कर सकता था, जो ह्रदयाघात का एक निश्चित लक्षण था। चिकित्सक ने मुझे प्राथमिक उपचारों के बाद 'इलेक्ट्रोकॉर्डियोग्राम' के लिए 'हीरो हार्ट सेंटर', लुधियाना भेज दिया।

मैंने अपने एक मित्र से मुझे गुरुजी के पास ले चलने के लिए कहा। अगले दिन यानि 6 अगस्त को उसने मुझे गुरुजी की एक तस्वीर दी। मेरा दर्द एकाएक रुक गया।

7 अगस्त को चिकित्सकों ने निश्चित किया कि मेरी दो हृदय–धमनियां अवरुद्ध हो गयी हैं और आपरेशन कर उन्हें ठीक करने का प्रयास भी किया। किन्तु शाम में, मेरी हृदय–गति एकाएक रुक गयी और मुझे मृत घोषित कर दिया गया।

मुझे यह तो याद नहीं कि कितना समय लगा, पर इस घोषणा के बाद भी मुझे

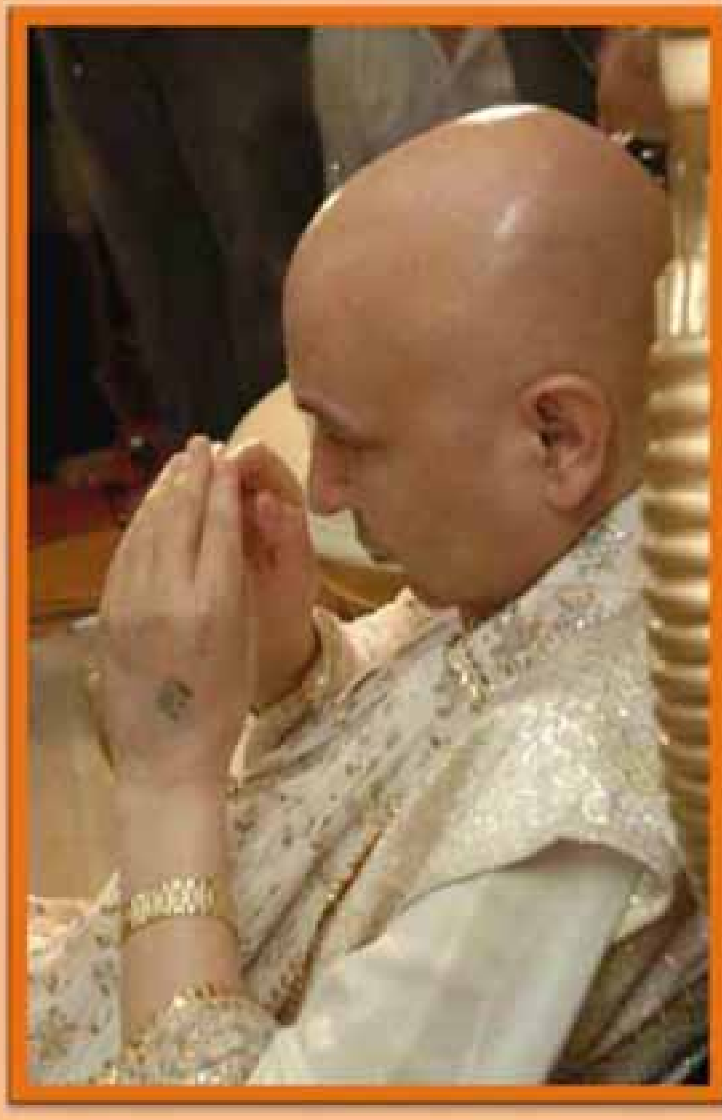

होश आ गये थे। चिकित्सकों को इसका तब विश्वास हुआ, जब मैंने उनको अपना नाम और पता सही–सही बता दिया। मुझे सचेतन देखने के साथ ही वे मुझे ऑपरेशन के लिए ले गए। उन्होंने माना कि वे मेरे जीवन का अन्त मान चुके थे। पर मैं जानता हूँ कि मैं गुरुजी के आशीर्वाद से जीवित रहा। अगर कोई मर जाये, तो ईश्वर ही उसे नया जीवन दे सकता है, गुरुजी ईश्वर हैं।

मेरे ठीक होने के बाद चिकित्सकों ने मुझे घर जाने के लिए कहा। नरेन्द्र और उसकी पत्नी, संगत–सदस्य, मुझे दिल्ली से मिलने आये, तब तक मैं अस्पताल से निकल चुका था और बेहतर था। क़रीब दो सप्ताहों के बाद, मैं गुरुजी के दर्शनों के लिए दिल्ली गया। वहाँ लंगर में टिक्की और गोलगप्पों को प्रसाद के रूप में

जमकर खाया और चिकित्सकों की सलाह भूल–सा गया। अब मैं बिल्कुल स्वस्थ और संतुष्ट हूँ। अगर आज मैं लिख रहा हूँ, तो वह भी गुरुजी के प्रताप से। मैं गुरुजी से फिर मिल पाया, मैंने इस संसार में सबकुछ पा लिया। मैं प्रसन्न हूँ और तनावमुक्त हूँ।

गुरुजी ने मुझे बहुत कुछ ऐसा दिखाया, जो मैं उनकी मदद के बिना देख ही नहीं सकता था। एक दिन मैं उनके पास बैठा हुआ था, मैंने देखा कि गुरुजी मेरे सिर के द्वारा मेरे शरीर में प्रवेश कर गये हैं। मैंने सोचा कि वे थोड़ी देर में बाहर आ जायें, पर वे नहीं आये। पर ऐसा सोचते ही मैंने गुरुजी के बाहर आते देखा और भगवान के रूप में शिव में परिवर्तित होते देखा। उनके सिर से पवित्र नदी गंगा निकली और मेरे खोपड़ी के द्वारा मेरे शरीर में प्रवेश कर गया। शेषनाग ने मेरे पूरे शरीर पर ''ऊँ'' और ''ऊँ नमः शिवाय'' लिख दिया। शेषनाग ने मेरे हृदय में चिकित्सकों के द्वारा लगाये गये 'स्टेण्टों को निकालकर बाहर फेंक दिया। अब शेषनाग ही मेरे शरीर व मेरे हृदय की रक्षा करता है। गुरुजी ने मुझसे कहा कि मेरे शरीर में शेषनाग हमेशा रहेगा। गुरुजी ने एक चाकू से काटकर मेरे तीसरी आँख निकाली और उसके द्वारा मेरे शरीर में प्रवेश कर वहीं बैठ गये। गुरुजी ने मेरे पैर काटे और ''ऊँ नमः शिवाय'' लिखे हुए नये पैर लगा दिये और कहा कि ये पैर मुझे वहीं ले जायेंगे जहाँ सब कुछ अच्छा होगा। इसके बाद उन्होंने मेरी आँखों को निकालकर उन पर ''ऊँ'' लिखकर उन्हें फिर से लगा दिया और कहा कि अब मैं केवल अच्छी चीजें देख पाऊँगा।

गुरुजी सदैव मेरे साथ रहते हैं। मैं अपने परिवार के सदस्यों से मित्रों से दूर हो जाता हूँ, पर गुरुजी से नहीं। वे निरंतर हमारे दुःखों को दूर करते हैं और प्रसन्नता लाते हैं।

वे मेरे पिता हैं, माता हैं, मित्र हैं, वस्तुतः वे मेरे लिए सब कुछ हैं। जब भी मैं चाहता हूँ गुरुजी मुझे भगवान शिव के रूप में दर्शन देते हैं और माँ गंगा उनके शरीर से मेरे शरीर में चली आती है।

एक बार गुरुजी ने शिव के रूप में मेरी ओर त्रिशूल फेंका, त्रिशूल मेरे शरीर को को पार कर गया और एक त्रिभुजाकार आकृति वहाँ बन गयी। गुरुजी ने कहा कि यह त्रिशूल हमेशा मेरे साथ रहेगा। कुछ दिनों के बाद, गुरुजी ने मेरा हृदय निकालकर मुझे नया हृदय दिया और कहा कि अब भविष्य में मुझे कोई समस्या नहीं होगी।

फिर, एकबार 17 मई, 2006 की रात में मैंने सपना देखा कि दो सफ़ेद वस्त्रधारी यमदूत मुझे कह रहे थे कि मैं उनके साथ नहीं जाऊँगा। यमदूतों ने आग्रह किया, पर गुरुजी ने उनसे कहा कि मेरा समय समाप्त हो है, पर मैं धरती पर ही रहूँ और उनसे चले जाने के लिए कहा और वे यमदूत मेरे बिना ही चले गय। मैं एकाएक जग गया, रात के एक बजकर पैंतालीस मिनट हो रहे थे। मुझे लगा मेरा हृदय बिल्कुल कड़ा हो गया है।

गुरुजी ने फिर मेरी जान बचायी, मैंने उनका धन्यवाद किया। वास्तव में, उन्होंने मेरी जान बहुत बार बचायी है। मैं प्रार्थना करता हूँ सौ जीवनों तक गुरुजी मुझे अपने चरणों में जगह दें और मैं उनकी आज्ञा के अनुसार काम करता रहूँ। मैं पूर्ण आत्मसमर्पण गुरुजी के प्रति करता हूँ। गुरुजी के साथ हुए मेरे बहुत सारे अनुभवों को तो मैं जान भी नहीं पाया, न अब जानता हूँ। जब भी मैं उनकी तरफ़ देखता हूँ, मैं बहुत सारी गुलाब–पंखुड़ियों को आकाश से गुरुजी के दिव्य स्वरूप पर गिरते देखता हूँ। मैंने नरक से स्वर्ग तक की यात्रा इस धरती पर भगवान शिव या यों कहें कि गुरुजी की कृपा से ही की है।

चंडीगढ़ में वकील अश्विनी के. शर्मा का सत्संग

GURUJI KA ASHRAM

गुरुजी के शब्दों ने किया बच्चे के बारह वर्षों के कष्टों का अंत

सन् 1996 ई. में डुगरी के श्री बक्षी, जो पंजाब में गुरुजी का भी मूल गाँव था, गुरुजी की शरण में आये। वक्षी की बेटी के एक कान का पर्दा एक वर्ष की उम्र से फटा हुआ था। उसके कानों से मवाद निकलता रहता, उसे बुख़ार होता रहता और हमेशा गल–शोथ रहता था। वह पिछले बारह वर्षों से यह दुःख झेल रही थी। बक्षी ज्योतिषियों के पास गया, चिकित्सकों के पास पंडितों के पास, साधु–संतो के पास, हर जगह गया, पर उस बच्ची के कष्टों में कमी नहीं हुई।

फिर बक्षी ने गुरुजी के पास जाने का निर्णय लिया। गुरुजी पंचकूला में थे, जब बक्षी व उसकी बेटी वहाँ पहुँचे, वे ध्यान में मग्न थे। एक भक्त ने इनका संदेश गुरुजी तक पहुँचाया और गुरुजी ने निर्देश दिया कि बाप–बेटी अगले सप्ताह

गुरुजी के दर्शनों के लिए आयें बाप–बेटी निराश हो गये, वे चार घंटों की यात्रा कर डुगरी से पंचकूला आये थे, पर उन्होंने धैर्य नहीं खोया और अगले सप्ताह छः बजे शाम में आने का निर्णय लिया।

अगले सप्ताह आने पर गुरुजी ने बक्षी से पूछा वे क्यों आये थे ? बक्षी ने अपनी बेटी की हालत बतायी और उनकी कृपा–दृष्टि माँगी। गुरुजी ने मुस्कराकर कहा, "मैंने तुम्हें आशीर्वाद दे दिया है, आनन्द करो।" बक्षी इन सामान्य पर शक्तिशाली शब्दों का अर्थ नहीं समझ पाया, वह गुरुजी के पास पहली बार आया था। गुरुजी ने उससे फिर पूछा कि वह और क्या चाहता है। बक्षी ने हाथ जोड़कर कहा कि अपनी बेटी की कष्टों से मुक्ति के अतिरिक्त वह और कुछ नहीं चाहता है। वह अपनी बेटी के साथ वहाँ संगत में बैठा, प्रसाद लिया और लंगर में खाया। फिर उन्हें डुगरी के लिए आख़िरी बस में बैठा दिया गया, जैसा गुरुजी ने कहा था।

GURUJI KA ASHRAM

अगले ही दिन, बक्षी को अपनी बेटी की हालत में काफ़ी सुधार दिखा। कुछ ही दिनों में वह रोगमुक्त हो गयी। इसके बाद बक्षी और उसकी बेटी गुरुजी के दर्शनों के लिए हर सप्ताहांत में आने लगे। बस का किराया ही एममात्र उनका ख़र्चा था, जो किसी भी चिकित्सक के शुल्क से कम था।

घर से बुलाकर आशीर्वाद दिया

समय बीतता गया। गुरुजी दिल्ली आ गये और बक्षी और उसकी बेटी उनसे मिलने दिल्ली भी आने लगे। एकबार गुरुजी ने बक्षी से उसकी पत्नी व बेटे को भी लाने के लिए कहा, जिन्होंने अभी तक गुरु जी के दर्शन नहीं किये थे।

यात्रा की परेशानियों और घरेलू कामों के कारण बक्षी अगली बार भी केवल बेटी के साथ आया, पत्नी व बेटे को ला नहीं सका। गुरुजी ने फिर उसे उन्हें लाने के लिए कहा, बक्षी फिर भी पत्नी और पुत्र को लेकर गुरुजी की शरण में नहीं पहुँचा। अन्ततः गुरुजी ने उन्हें लाने की उसे चेतावनी दे दी। अन्ततः बक्षी की पत्नी व बेटे ने गुरुजी के दर्शन किये। गुरुजी ने उसकी पत्नी से उसका कष्ट पूछा और उसने बताया कि दस वर्षों से अधिक से उसे पीठ का दर्द परेशान कर रहा है। चिकित्सकीय निरीक्षणों से पता चला था कि पीठ की हड्डी में ही कुछ दोष है जो असाध्य है। गुरुजी ने बक्षी की पत्नी को बेटी की शादी की सलाह दी और कहा कि इसके बाद दर्द बिल्कुल ग़ायब हो जायेगा। गुरुजी ने उन्हें हर दो सप्ताहों पर संगत में आने के लिए भी कहा। गुरुजी के कुछ ही दर्शनों के बाद बक्षी की पत्नी का भयंकर दर्द भी गायब हो गया।

भक्त को मृत्यु के द्वारा से उसे अंतिम पड़ाव तक पहुँचाया

बक्षी महीने में कम से कम एक बार अवश्य दिल्ली में संगत में उपस्थित होता रहा। बक्षी के पिता 85 साल के थे, स्वस्थ व प्रसन्न, उनकी दृष्टि से भी कोई परेशानी नहीं थी और न ही कोई शारीरिक कष्ट था। पर बक्षी ने गुरुजी को बताया कि हाल में उसके पिता की दाहिनी टाँग में एड़ी से घुटने तक कुछ संक्रमण हो गया था जिससे उन्हें बहुत दर्द रहता था। चिकित्सक संक्रमण को नियत्रित करने में या दर्द दूर करने में असफल रहे थे। गुरुजी ने बक्षी को ढ़ाढ़स दिया और कहा कि सब ठीक हो जायेगा और साथ ही ये भी कहा कि चिकित्सकों का काम जाँच करना और अपना जीवन यापन करना है, चाहे वे ज़्यादा मददगार साबित न भी हों।

जैसे ही बक्षी जाने लगा, गुरुजी ने उसे किसी भक्त के द्वारा उनके चरणों में रखी माला को उठाकर दिया। बक्षी को यह माला पानी में डुबाना था और उसे अभिमत्रित पानी से उसके पिता को नहाना था। बाद में माला को किसी पास के जल जमाव में प्रवाहित कर देना था। गुरुजी के निर्देशों का पालन किया गया अैर बक्षी के पिता के पैर का दर्द जाता रहा है।

इस घटना के बाद और महत्वपूर्ण बात हुई। बक्षी के पिता गुरुजी की महिमा से अभिभूत हो गये थे। जब खाने का समय होता, वे परिवार के बाकी सदस्यों से कहते कि उन्होंने गुरुजी के पास लंगर में खा लिया है। परिवार ने समझ लिया कि परिवार का सर्ववृद्ध सदस्य मन–ही–मन गुरुजी की शरण में सदा रहने लगा है चाहे शारीरिक रूप से वह कहीं भी हो। कुछ ही दिनों में, बक्षी के पिता का देहान्त हुआ। वे अपने पोतों से बात करते–करते बिल्कुल शांति से इस दुनिया से गये। यह बात अब समझ में आती है कि गुरुजी ने उनके जीवन के उत्तरार्द्ध को अपने वश में ले लिया था और उन्हें मृत्यु के द्वार से उनके अंतिम आश्रय सरलता से पहुँचाने में उन्होंने उनकी अद्भुत मदद की।

गुरुजी की कृपा से एक ट्रैक्टर आया

किसान के लिए ट्रैक्टर परिवार का एक हिस्सा होता है। इसलिए जब बक्षी ने ट्रैक्टर खरीदने का निश्चय किया तो उसने गुरुजी से पूछा कि उसे कौन–सा ट्रैक्टर खरीदना चाहिए। गुरुजी ने उसे कोई भी ट्रैक्टर ले लेने के लिए कहा – बस नया हो, किसी के द्वारा पूर्व प्रयुक्त न हो। बक्षी ने नये उपकरणों वाला 'स्वराज' ट्रैक्टर खरीद लिया। बक्षी के ट्रैक्टर में ट्राली भारी धातु की थी और सारे गाँव में पहली बार ऐसी ट्रॉली लगायी थी।

बक्षी के अनुसार, ट्रैक्टर भी गुरुजी की कृपा में है। बक्षी के पुत्र ने सपना देखा कि वह ट्रैक्टर पर सवार एक व्यक्ति ने उसे रुकने के लिए कहा क्योंकि वे लोग शायद ट्रैक्टर छीन सकते हैं। बक्षी के पुत्र ने ट्रैक्टर रोक दिया, पर एकाएक गुरुजी अवतरित हो गये और उसे चलते रहने के लिए कहा। उनके कहने पर वह चल पड़ा और भीड़ ने ट्रैक्टर निकलने की जगह दे दी। बक्षी के पुत्र ने यह सपना अपने परिवार के सदस्यों को सुनाया। वे समझ गये कि गुरु जी ने ट्रैक्टर को किसी दुर्घना से बचाया है।

बक्षी बड़ा किसान बना

2004–2005 में गुरुजी ने अपने कुछ भक्तों को उनके गाँव, डुगरी, जाने के लिए कहा। लगभग 30–35 लोग डुगरी पहुँचे और बक्षी ने उन्हें लस्सी पिलायी। उस रात बक्षी की पत्नी के सपने में गुरुजी आये और उन्होंने पूछा कि घर में घी की कमी तो नहीं है। जब उसने नहीं कहा, तो उन्होंने पूछा कि फिर उसने संगत को केवल लस्सी क्यों पिलायी। मक्खन क्यों नहीं ? वह व्याकुल हो गयी और जग गयी।

अगली सुबह, उसने अपने परिवार को यह सपना सुनाया और उन लोगों ने ग़लती न दोहराने का निर्णय लिया, वैसे यह ग़लती अनजाने में हुई थी। अब किसी भी अवसर पर वे संगत को लस्सी व मक्खन, दोनों प्रसन्नता से बांटते हैं। लोग वही पाते हैं, जो वे और इसलिए ध्यातव्य है कि बक्षी अब एक बड़े स्तर का कृषक बन चुका है।

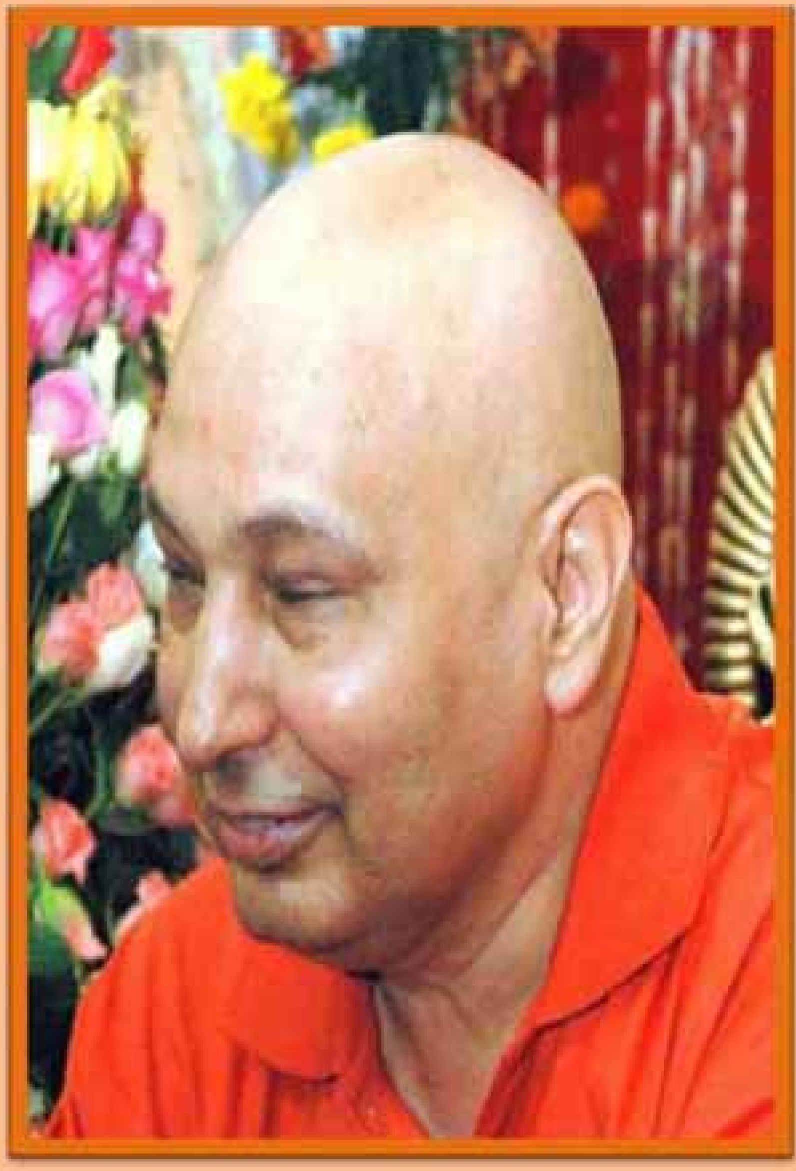

गुरुजी ने एक बार उसे अपने सभी खेतों की चकबंदी करने के लिए कहा। बक्षी ने उन्हें कहा कि वह ऐसा करने की कई वर्षों से कोशिश कर रहा है, पर कर नहीं पा रहा। गुरुजी ने उससे कहा कि अब समय आ गया है, उसे फिर प्रयास करना चाहिए और वह सफल भी होगा। गुरुजी के आशीर्वाद से चकबंदी का प्रयास रंग लाया और आज वह डुगरी में 200 एकड़ के फॉर्म का मालिक है।

एक बार बक्षी को अम्लता की समस्या हुई और गुरुजी ने उसे एक तांबे के गिलास के रूप में आशीर्वाद दिया। जैसे ही उसने इस गिलास में पानी पीना

शुरु किया, उसकी अम्लता धीरे–धीरे गायब हो गयी। जब बक्षी तांबे के उसे गिलास के साथ घर लौटा था, तो उसके बेटे ने हँसी में ही कहा था कि गुरुजी ने परिवार के सभी सदस्यों को कुछ–न–कुछ दिया था, उसे कुछ नहीं दिया, उसकी बहन व पिता को तांबे का गिलास मिला था, उसकी माँ को गुरुजी की तस्वीर तथा गिलास मिला था। अगली ही संगत में गुरुजी ने बक्षी के बेटे को बुलाकर तस्वीर दी। वह प्रसन्नता से फूला नहीं समा रहा था, उसकी कही बात अपने आप गुरुजी ने सुन ली थी।

बक्षी–परिवार के अनुभव गुरुजी का अपने भक्तों के प्रति सहज प्रेम और अनुराग दिखाते हैं, जो उनकी मदद और सुरक्षा जीवन में हर पल करता है

– गुरुजी के गाँव, डुगरी के कृषक, श्री बक्षी का सत्संग

GURUJI KA ASHRAM

एक चार्टर्ड अकाउंटैंट के द्वारा गुरुजी के आशीर्वादों कीगिनती

मैं गुरुजी के सानिन्ध्य में जनवरी 2000 से आया जब मेरी बाईस वर्षीय पुत्र चार्टड अकाउंटेंट की पढ़ाई कर रहा था अैर एक बड़ी कंपनी के साथ था। वो दो साल से भयंकर पीठ दर्द से ग्रसित था। वो दस महीनों से शय्याग्रस्त था और उसे चलने और बैठने में तकलीफ होती थी। मैंने दिल्ली, जालंधर, इंदौर पलवल, सोहना के लगभग सभी हड्डियों के डाक्टर और हकीमों से भी परामर्श लिया। मैंने ज्योतिषयों से भी पूछा जो मुझे मेरे बेटे के उज्जवल भविष्य के बारे में बताते थे। तब दिसंबर, 1999 के दौरान मेरे बड़े भाई. ए. के चौधरी, जो एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी हैं, ने गुरुजी के दर्शन, डॉ. के. के. पॉल के घर पर किए।

जल्दी ही हम गुरुजी के दर्शन को एम्पायर एस्टेट के मंदिर जनवरी 2000 के प्रथम सप्ताह में गए। दस महीनों में पहली बार मेरा बेटा फर्श पर गुरुजी के चरणों के पास ढ़ाई घंटे तक बिना किसी दर्द और सहायता के बैठा। जैसे ही

हम जाने लगे, गुरुजी ने हमें अगले दिन फिर आने को कहा। हमने ऐसा ही किया। उन्होंने मेरे बेटे की समस्या के बारे में पूछा और हमने उन्हें पीठ दर्द के बारे में बताया। उन्होंने मेरे बेटे को आशीर्वाद दिया और हमें एक तांबे का गिलास लाने को कहा। गुरुजी ने उसे अभिमंत्रित किया। एक महीने के अंदर ही उसका पानी पीते हुए मेरे बेटे की तबीयत ठीक हो गई। वह चार्टर्ड एकाउंटेंट बन गया और एक बहुराष्ट्रीय कंपनी के साथ काम करने लगा। गुरुजी के आशीर्वाद से उसे डेढ़ साल के लिए अमेरिका भेजा गया।

गुरुजी ने मेरी बेटी को भी स्वस्थ कर दिया

गुरुजी के वरदान से मेरी बेटी को एम बी ए के कोर्स में दाखिला मिला। उसका कोर्स 1 सितंबर, 2002 से शुरु होना था लेकिन एक अगस्त को वो बीमार पड़ गई और उसे टायफाइड हो गया। मेरे बहन का बेटा डॉ. गिरीश बजाज उसकी बीमारी का इजाल कर रहे थे। हर रोज आठ बजे डॉ. बजाज हमारे घर आकर उसकी जाँच करते। लेकिन बुखार ने कम होने का नाम नहीं लिया।

फिर 27 अगस्त को गुरुजी ने मुझसे पूछा कि मेरी पत्नी संगत में क्यों नहीं आ रही है ? मैंने उन्हें बताया कि वो अपनी बीमार बेटी की देखभाल कर रही है। गुरुजी ने मुझसे पूछा कि मैंने उन्हें यह पहले क्यों नहीं बताया ? और चरणों के पास पड़ी गुलाब की माला को उठाकर मुझे दे दिया और निर्देश देकर कहा कि इस माला को पानी भरी बाल्टी में डाल देना। मेरी बेटी को उसी पानी से स्नान करना था।

अगली सुबह मेरी बेटी ने गुरुजी की माला से अभिमंत्रित जल से स्थान किया। स्नान के बाद उसके शरीर का तापमान 101 अंश से 97.5 अंश पर पहुँच गया। सुबह आठ बजे जब मेरा भतीजा आया तो तापमान में भारी गिरावट देखकर विस्मित हो गया। चार–पाँच दिनों के भीतर ही मेरी बेटी ठीक हो गई और उसने

एम बी ए कोर्स के लिए जाना शुरु कर दिया। डॉ. बजाज सब कुछ जानकर इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने भी गुरुजी के दर्शनों की इच्छा जताई और वो भी गुरुजी के भक्त बन गए।

वीजा : कोई समस्या नहीं

मेरा भतीजा एम डी करने के लिए अमेरिका जाने का इच्छुक था। अमेरिकी दूतावास भारतीय डॉक्टर और विद्यार्थियों को वीजा देने का विरोधी था। मैंने गुरुजी से मेरे भतीजे को आशीर्वाद देने की प्रार्थना की जिससे वो अमेरिका जाकर अपने सपनों को पूरा कर सके। गुरुजी ने मुझे यह कहते हुए झिड़क दिया कि मैं हमेशा अनुग्रह मांगते रहता हूँ।

मैंने गुरुजी से कहा कि केवल तीन व्यक्ति ही आपकी इच्छाएं पूरी कर सकते हैं पहले ईध्वर जिसे किसी ने नहीं देखा, दूसरे आपके माता–पिता, मेरे माता–पिता गुजर चुके हैं और तीसरे, आपके गुरु जो अपने आशीर्वाद से आपकी इच्छा पूरी कर सकते हैं।

मैंने कहा कि मेरे पास आपके सिवाय कोई विकल्प उपलब्ध नहीं है। गुरुजी ने उत्तर दिया "कल्याण हो गया" और मुझसे अपने भतीजे को अमेरिकी दूतावास में भेजने को कहा। जब मेरा भतीजा दूतावास गया तो आश्चर्यजनक रूप से उससे बीजा सलाहकार ने प्रश्न नहीं पूछे। जबकि अन्य डॉक्टरों को साक्षात्कार के 45–50 मिनट चलने के बाद भी वीजा नहीं दिया जाता था, मेरे भतीजे को बिना किसी परेशानी के वीजा मिल गया। आज, मेरा भतीजा सुखपूर्वक विवाहित और अमेरिका में गुरुजी के आशीर्वाद से व्यवस्थित है।

हमारी पार्टी होकर रही

मेरा एक मित्र, वरिष्ठ आयकर अधिकारी, मेरे साथ कई बार गुरुजी के दर्शनों के लिए जाता था। शुक्रवार की एक शाम को गुरुजी ने हम दोनों को फिर से शनिवार को आने को कहा। शनिवार की शाम को हमने एक प्रीतिभोज में जाने की योजना बनायी थी। वहाँ नहीं जा पाऊँ, यह सोचकर मेरा मन थोड़ा टूट–सा

गया। ख़ैर, शनिवार को हम गुरुजी ने हमें कुछ और लोगों के साथ रुकने के लिए कहा। आधे घंटे के बाद, गुरुजी ने हमें एक भक्त, जो कस्टम अधिकारी था, के घर चलने के लिए कहा, जहाँ वह अपनी पदोन्नति की खुशियाँ मना रहा था। हमें वहाँ जाने पर मदिरा दी गयी। गुरुजी की उपस्थिति में हम मदिरा पीने में हिचक रहे थे। गुरुजी ने मुझे देखा और कहा कि मैं तो प्रीतिभोज में न जा पाने के कारण उनको कोस रहा था। उन्होंने कहा यहाँ जी भरकर खाओं–पियों और आनन्द करो। मैं गुरुजी के चरणों में गिर गया और बोल पड़ा – "गुरु जी, आप अन्तर्यामी हो।"

मेरे वाहन–चालक को भी गुरुजी के दर्शन हुए

मेरा वाहन–चालक धार्मिक प्रवृत्ति का इंसान है। एक बार मैंने उसको संगत में आकर गुरुजी के दर्शनों के लिए कहा, पर वह इतने सारे समृद्ध लोगों के बीच में आने से हिचकिचा रहा थां सत्संग के बाद, मैं किसी को हवाई अड्डे छोड़ने चला गया। रात को दो बजे, जब हम हवाई अड्डे से बाहर निकले, मैंने गुरुजी को कुछ भक्तों के साथ देखा। मैंने आपने वाहन–चालक सुरेश को गाड़ी रोकने के लिए कहा और हम दोनों ने बाहर निकलकर उनके चरण–स्पर्श किये। गुरुजी मुस्कुराकर बोले कि चूंकि मैं उनके दर्शन अपने वाहन–चालक को करवाना चाहता था, इसलिए वे हवाई अड्डे तक आये थे। मेरे पास उनको धन्यवाद कहने के लिए कोई शब्द नहीं थे।

भगवान शिव का अवतरण

मेरे छोटे भाई की गर्दन पर कुछ अनियमित सा उभार हो गया था और हम डरे हुए थे कि यह कैंसर हो सकता है। हमने गुरुजी से प्रार्थना की कि वे उसे ठीक कर दें। उन्होंने हमें चिन्ता न करने के कहा और एम्स.' दिल्ली में इसका आपरेशन करवाने का निर्देश दिया। मेरे चचेरे भाई ने जो एक सर्जन हैं, 'एम्स' में डॉक्टर आपरेशन करेंगे और वह बिल्कुल ठीक हो जायेगी। वैसा ही हुआ, डॉ. शर्मा ने आपरेशन किया और अब वह बिल्कुल ठीक हो जायेगी।

मेरा दृढ़ विश्वास है कि गुरुजी भगवान शिव के अवतरण हैं। वे हमारे बारे में सब कुछ जानते हैं और सही अवसर पर हमारे आग्रह किये बिना ही वे हमें आशीर्वाद दे देते हैं। जो भी उनके चरणों में आता है, जाति, जन्म या धर्म के भेद–भाव के बिना, उसका कल्याण होता है। भगवान शिव ने गुरुजी को विशेषतः धरती पर मानव जाति का कल्याण करने और हमें दुःखों यातनाओं से बचाने भेजा है। गुरुजी एक मंत्र का जाप करने कहते हैं : 'ऊँ नमः शिवाय, शिव जी

सदा सहाय। मैं उसमें कुछ जोड़ना चाहूँगा 'ऊँ नमः शिवाय, गुरुजी सदा सहायं।' 'ऊँ शांति और जय गुरुदेव।'

– चार्टर्ड अकाउंटेंट, बी. बी. चौधरी का सत्संग

GURUJI KA ASHRAM

गुरुजी ने धन की चिन्ता से हमें मुक्ति दिलायी

हम गुरुजी के पास पहली बार चार जनवरी, 2003 को आये। मेरी पत्नी, उषा 1998 ई. से क्रेनिक साइन स्साइटिस से जम्मू रही थी। उसको और भी बहुत सारे शारीरिक कष्ट थे। साँस लेने में भी उसे परेशानी होती थी। उसकी

भोजन–नली में अल्सर था, पर जैसे ही उसने गुरुजी से यहाँ लंगर में मिर्च की चटनी खायी, उसकी यह बीमारी तुरंत ठीक हो गयी।

मुझे तो पता नहीं था, पर उसे गर्भाशय में ट्यूमर भी था। गुरुजी तो जान गये, उसे उन्होंने बुलाकर आशीर्वाद दिया और आपरेशन करवाने के लिए कहा। यह

एक बड़ा आपरेशन था, पर गुरुजी के आशीर्वाद से सफल रहा। आज मेरी पत्नी स्वस्थ है। उसका साइनस्साइटिस भी ठीक हो चुका है।

इसी बीच हमारे ऊपर वित्तीय विपदा आ पड़ी ।हम एक ऐसा निर्णय लेने जा रहे थे, जिससे हमें और वित्तीय नुकसान होता। गुरुजी ने मेरी पत्नी को बुलाया, बैंक में हमारी जमा–राशि बतायी और हमें निवेश करने से रोका। हम भारी आर्थिक नुकसान से बच गये।

गुरुजी सब कुछ जानते हैं। हम चाहे घर में बात करें या बाहर, वे सब कुछ जान लेते हैं। कई अवसरों पर उन्होंने अपनी सर्वज्ञता दिखाई है। हम चकित रह जाते हैं, पर जानते हैं कि वे भगवान शिव के अवतार हैं। उन्होंने हमारी दैनिक समस्याओं छोटी या बड़ी में भी हमारी सहायता करते हैं। एक बार, मेरी बेटी बहुत बीमार थी। उसे टॉयफ़ाड था और चिकित्सक उसे ठीक नहीं कर पा रहे थे। उसे एक सप्ताह से बहुत तेज़ बुख़ार था। गुरुजी ने उसे पपीता खाने और गन्ने का रस पीने के लिए कहा और वह एकदम ठीक हो गयी। बाद में, उसका दाखिला कई परेशानियों के बाद गुरुजी की कृपा से 'एम. डी. एस. कोर्स' में भी हो गया। हम बहुत भाग्यशाली हैं कि हमारे जीवन में गुरुजी जैसा दिव्य व्यक्तित्व है।

– श्री भाटिया, एक भक्त, का सत्संग

उन्होंने मुझे एक नया जीवन दिया

मैंने भारत सरकार द्वारा आयोजित कैलाश–मानसरोवर यात्रा पर जाने का निश्चिय किया था। जब मैं गुरुजी से आज्ञा लेने गया, उन्होंने कहा कि मैं यात्रा पर क्यों जाना चाहता हूँ जबकि भगवान शिव स्वयं मेरे सामने हैं। मैं यात्राा पर नहीं गया। मुझे बाद में पता चला कि थाना–मार्ग पर उस बार कई भयंकर भू–स्खलन हुए और बीस–बीस तीर्थयात्रियों के दो दल मारे गये, कोई नहीं बचा। गुरुजी ने इन दुर्घटनाओं को पहले ही देख लिया था और मुझे जाने की आज्ञा न देकर उन्होंने मेरी जान बचायी। बाद में उन्होंने मुझे कहा भी, "देखा ! मैंने तुम्हें बचा लिया।"

उन्होंने एक बार फिर मेरा जीवन बचाया

मुझे हृदय की बीमारी थी और मुझे 'एंज्योग्राफी' कराने के लिए कहा गया। गुरुजी की इच्छा के अनुसार 'एम्स' में 'एंजीयोग्राफी हुई। इसके बाद मुझे सीधे 'आई.सी.यू.' में ले जाया गया क्योंकि पहले मुझे एक लक्षणहीन हृदयघात हो चुका था। मेरी दो धमनियाँ बिल्कुल अवरुद्ध थीं और तीसरी 90 प्रतिशत। उसी

दोपहर, मुझे एक भयंकर ह्रदयाघात फिर हुआ, पर मैं बच गया क्योंकि मैं 'आई. सी. यू.' में पहले से था। अगर कहीं और होता, तो समय की कमी के कारण मैं बच नहीं पाता। रात के दस बजे पता चला कि मेरा 'बाईपास ऑपरेशन' तुरन्त होना चाहिए, पर यह मेरे लिए बहुत ख़तरनाक था क्योंकि मेरी धमनियों में अवरोध अधिक था और रक्त को पतलाकरने वाली दवाइयाँ, जो ऐसे ऑपरेशन के एक सप्ताह पहले बंद हो जानी चाहिए, मैं निरंतर लेता रहा था। मेरा परिवार गुरुजी के पास गया और उन्होंने दिलासा दिलाया, "चिकित्सकों को अपना काम करने दो, अन्दर जो भी करना है, मैं करूँगा।"

और ऐसा ही उन्होंने किया। मेरी 'बाईपास सर्जरी' हुई, अत्यधिक आन्तकरक रक्तस्राव हुआ और भी कई बाधाएँ आयीं, पर गुरु जी के आशीर्वाद से कुछ ठीक हो गया। अब मैं बिल्कुल स्वस्थ हूँ। कोई शंका नहीं कि गुरुजी ने मुझे नया जीवन–दान दिया था।

GURUJI KA ASHRAM

तीसरी घटना 31 दिसंबर, 2006 की है। बड़े मंदिर में हर बार की तरह खुशियाँ मनायी जा रही थीं। सुबह जब संगत गुरुजी की आज्ञा से जाने लगी, उन्होंन मेरे परिवार को जाने दिया और मुझे रुकने को कहा। एक घंटे के बाद, उन्होंने मुझे कहा कि उन्होंने मुझे नया जीवन दे दिया है और अब मैं घर जा सकता हूँ। तब मैं उनकी यह बात समझ नहीं पाया, पर जब में घर पहुँच, मुझे नया जीवन दिया है। घर लौटते समय रास्ते में हमारी गाड़ी के आगेवाली गाड़ी ने एकाएक ब्रेक लगाया, मेरे बेटे के प्रयासों के बावजूद उसकी गाड़ी आगेवाली गाड़ी से टकरा गयी, बम्पर टूट गया, ग्रिल टूट गयी और मेरी पत्नी का सर विण्डस्क्रीन से टकराया, पर सब सुरक्षित बच गये। अगली बार गुरुजी ने कहा कि उन्होंने सारे परिवार को बचाया था। हम सब आ जीवित हैं, तो उनकी महिमा के कारण।

स्पष्टतः गुरुजी सबका भविष्य जानते हैं और वही करते हैं, जो हमारे लिए आवश्यक होता है। हम कहें या न कहें, वे हमारी समस्या जान ही लेते हैं। वस्तुतः अक्सर हम समझ ही नहीं पाते, वे हमारे लिए क्या कर रहे हैं ? हम इतना ही जानते हैं कि वे हैं कि वे हैं और वे हमारे सारे दुःखों, कष्टों, चिंताओं को दूर कर देंगे। हम उनके चरणों में स्वयं को समर्पित कर शांति से जी सकते हैं।

गुरुजी से मिले बिना ही मनोभ्रंश दूर हो गया

मेरे ससुर अपने जीवन के दसवें दशक की पहचान पाते, चिड़चिड़े हो जाते या उन्हें मतिभ्रम हो जाता। वे गुरुजी में विश्वास नहीं करते हैं और कभी उनसे मिले भी नहीं। मेरी पत्नी ने गुरुजी से अपने पिता के लिए कृपा दृष्टि माँगी और गुरुजी ने उन्हें आशीर्वाद दिया, फलतः जिस बीमारी का कोई चिकित्सकीय उपचार नहीं है, आज वह लगभग 90 प्रतिशत ठीक हो चुकी है।

मेरे छोटे बेटे व मुझे नौकरी मिली

मेरा छोटा बेटा है तो इंजीनियर, पर शेयर बाजार में कार्यरत है। एक दिन, गुरुजी ने उससे काम के बारे में पूछा और जानने पर काम बदलने के लिए कहा। उसके बाद, वह अगले दो महीनों तक अपने लिए ठीक काम ढूँढ़ता रहा,

पर नौकरी मिली नहीं। फिर एक दिन गुरुजी ने उससे नौकरी के बारे में बात की और कहा कि उसे पन्द्रह दिनों में नौकरी मिल जायेगी। लगभग एक सप्ताह के बाद उसे एक साक्षात्कार की सूचना आयी और तेरहवें दिन उसे नौकरी मिल गयी।

मैं योजना आयोग से छः साल पहले सेवा–निवृत्त हो चुका था। मैं इसके बाद भी काम करना चाहता था, पर कोई मनचाही नौकरी मिल नहीं रही थी। गुरुजी ने एक दो बार मुझसे कहा कि किसी फ़र्म में सलाहकार का काम करना चाहिए। मैं ढूँढ़ता रहा और एकाएक मेरे कुछ पुराने दोस्त मुझे मिले जिन्होंने मुझे मनचाही नौकरी का प्रस्ताव दिया। भाग्यवश यह तब हुआ, जब गुरुजी कुछ महीने पहले महासमाधि ले चुके थे। यह बात का प्रमाण है कि गुरुजी अब भी हमारे साथ हैं और हमारा भला–बुरा देख रहे हैं।

आवश्यक साधनों के अभाव में भी मकान बना

जब मैं सरकारी सेवा में था, मैं दिल्ली के चाणक्यपुरी में सरकारी आवास में रह रहा था। मैंने सेवा–निवृत्ति के बाद दिल्ली में ही द्वारका में छोटे फ्लैट में रहने की योजना बनायी थी। लेकिन, गुरुजी ने मुझे गुड़गाँव में 500 वर्ग गज़ की जगह खरीदकर मकान बनाने के लिए कहा। मेरे अनुनय–विनय करने पर उन्होंने मुझे 360 वर्ग गज़ की जगह खरीदने के लिए कहा। इतनी बड़ी जगह खरीदने की न तो मेरी वित्तीय शक्ति थी और न ही मानसिक। जब निर्माण कार्य शुरू हुआ और तब भी मुझे अहसास हुआ कि मेरे से भारी ग़लती हुई हे।

किन्तु, गुरुजी की कृपा से मकान बनकर तैयार हो गया। पैसों की कमी कोई दिक्कत नहीं हुई, यह गुरुजी का ही प्रताप था।

उन दिनों की दो घटनाएँ मुझे गुरुजी की महिमा की याद अब भी दिलाती हैं। बैंक सेवा–निवृत्त लोगों को ऋण नहीं देना चाहते, पर मुझे बैंक मैनेजर ने स्वयं इसका प्रस्ताव दिया और मुझे ऋण आराम से मिल गया। दूसरी, वैसे तो हमारे पास पुरखों की जायदाद थी, पर मेरे भाई–बहनों के साथ उस पर हमारा एकमत नहीं था। उस जायदाद को बेचने की कोई आशा नहीं थी। एक दिन जब मैं बड़े मंदिर में था, मेरी बहन ने मुझे फोन पर बताया कि जायदाद का मामला सुलझ गया है, एक खरीदार भी मिल गया है और अगले दिन मुझे मेरी पहली किश्त मिल जायेगी। इस तरह, मकान बनाने के लिए जो भी आर्थिक आवश्यकता होती थी, गुरुजी के आशीर्वाद से कहीं–न–कहीं से वह पूरी हो जाती थी।

बीमारी होने से पहले ही ठीक कर दिया।

गुरुजी ने एक बार मेरी पत्नी को ताँबे का एक गिलास लाने के लिए कहा जिसे वे अभिमंत्रित कर उसकी बीमारी को ठीक करना चाहते थे। हम हैरान रह गये क्योंकि मेरी पत्नी स्वास्थ्य से ठीक–ठाक थी, हाँ, कुछ आयु–संबद्ध बीमारियाँ अवश्य थीं, जैसे, कॉलेस्ट्रोल का अधिक होना और यूरिक अम्ल का अधिक होना। ख़ैर हमने वही किया जो हमें कहा गया। अगली बार हम ताम्र

गिलास ले गये, गुरुजी ने उसे अभिमंत्रित किया और मेरी पत्नी ने प्रतिदिन सुबह उसमें पानी लेकर अमृत की तरह उसे पीना शुरू किया। कुछ ही दिनों में वह बीमारी से ठीक हो गयी। चिकित्सकीय जांचों से पता चला कि उसके रक्त में होमोग्लोबिन का स्तर बढ़ गया है और कॉलेस्ट्रोल व यूरिक अम्ल का स्तर घट गया है। वस्तुतः पिछले चालीस सालों में उसके रक्त की ऐसी अच्छी रिपोर्ट कभी नहीं आयी थी। बहुत जल्दी वह स्वस्थ हो गयी। वास्तव में, गुरुजी ने उसके शरीर में होने वाली बीमारियों को पहले ही देख लिया था और उनके बढ़ने से पहले ही उन्हें निरस्त कर दिया।

डाईबीटिज़ का मीठा उपचार

मेरी माँ 77–78 साल की थी। उसे डाईबीटिज़ थी और इंसूलिन सूई हर दिन लेती थी। उसे हृदय और यकृत में रोग था, आर्थराइटिस था और पाचन भी सशक्त नहीं था। वह गुरुजी के पास आने से हिचकिचाती थी क्योंकि आर्थराइटिस के कारण उसे फ़र्श पर बैठने में दिक्कत होती थी। पर पारिवारिक सदस्यों के बार–बार कहने पर उसने शक्ति जुटाई और गुरुजी की शरण में आने लगी। पहले ही दिन, गुरुजी ने उसे प्रसाद के रूप में बर्फी दी। उसे मधुमेह है, यह सोचकर उसने थोड़ी बर्फ़ी खायी और बाकी बच्चों के लिए रख लिया। इतने सारे लोग वहाँ थे, गुरुजी यह सब कुछ नहीं देख सकते थे। किन्तु, सर्वज्ञ हर जगह सब कुछ सुन सकता है, सब कुछ देख सकता है। उन्होंने उसे फिर अपने पास बुलाया और इस बार पहले से भी अधिक बर्फी दी और संगत में ही सारी खा लेने के लिए कहा। मेरी माँ ने ऐसा ही किया।

इसके बाद कुछ ही दिनों में उसकी देखरेख कर रहे चिकित्सक ने उसे इंसूलिन सूई देना बंद कर दिया, आवश्यक नहीं था, यह घटना चमत्कार से कम नहीं थी। किन्तु गुरुजी के भक्त कहते हैं कि जहाँ विज्ञान समाप्त हो जाता है, गुरुजी

शुरू होते हैं। उसकी आर्थराइटिस भी ठीक होने लगी, वह अब झुक सकती थी, पैरों को आड़ा–तिरछा कर सकती थी और घंटों बैठ सकती थी। उसके हृदय–रोग में भी सुधार आने लगा और दवाइयाँ कम होने लगीं।

गुरुजी को हमने उसकी समस्याओं के बारे में कुछ भी नहीं बताया था, फिर भी यह सब हुआ। इसमें कोई शंका नहीं कि गुरुजी सर्वव्यापी हैं, सर्वज्ञ हैं, हमें खुद बताने की आवश्यकता नहीं, वे स्वयं भक्तों के मन की बात जान लेते हैं। वे सदा भक्तों के भले की सोचते हैं और उनके लिए जो भी आवश्यक होता है, करते हैं।

– योजना आयोग के भूतपूर्व सलाहकार, बी.डी. जेथरा का सत्संग

GURUJI KA ASHRAM

हम हैं क्योंकि वे हैं

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागूँ पाय।

बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दियो बताय।

कबीर की इन पंक्तियों में कौतूहल है कि किसके पैर पहले स्पर्श किये जायें, गुरु के या भगवान के, पर बाद में स्वयं वे कहते हैं कि पहले गुरु के पैर स्पर्श किये जायें क्योंकि उन्होंने ही भगवान के बारे में बताया है।

किन्तु, हमारे लिए कोई समस्या नहीं, हमारे गुरुजी ही भगवान हैं।

मैंने पहली बार गुरुजी के बारे में तब सुना था, जब मैं अपने मामा रिटायर्ड कर्नल एस. के. जोशी के घर जाया करता था। सन् 1996 ई. की यह बात है और तब जवानी की हठ और निन्दक स्वभाव के कारण मुझे गुरुजी पर पूरा विश्वास नहीं होता था। 1997 ई. के अप्रैल के प्रथम सप्ताह में चंडीगढ़ में मैंने पहली बार गुरुजी के दर्शन किये। उन्होंने मुझसे पूछा कि मैं कहाँ से आया था ? और मैंने उन्हें बताया कि मैं जयपुर से आया था और कर्नल जोशी का भांजा हूँ। उन्होंने अपनी हथेली मेरे

सर पर रखकर कहा, ''कल्याण हो'' दो दिनों के बाद जब मैं दिल्ली वापस आया, मैं जो नौकरी ढूँढ़ रहा था, उसी का प्रस्ताव आया। मुझे गुरुजी का आशीर्वाद मिल गया और वह भी तब जबकि मैंने चंडीगढ़ में चाय, प्रसाद और लंगर में भोजन, कुछ भी नहीं लिया।

खैर, गुरुजी के इस प्रथम कल्याण से मुझमें अधिक बदलाव नहीं आया। कुछ और समय के बाद मुझे उनकी सर्वशक्तिमान का ज्ञान होना था, जो गुरुजी के द्वारा ही पूर्व निर्धारित था। इस बीच गुरुजी दिल्ली चले आये। मैं दिल्ली आता रहा, पर लगभग ढ़ाई सालों तक गुरुजी के दर्शनों के लिए नहीं गया। इस दौरान मेरी बहन और माँ संपूर्णतः उनकी भक्त बन चुकी थीं। मेरा रवैया पुराना ही था।

मैं व मेरी माँ दो सालों से मेरी बहन के लिए अच्छा रिश्ता देख रहे थे। तब एकाएक अप्रैल, 2000 में मेरी बहन के होने वाले ससुर ने खबर दी कि वे रिश्ता पक्का करना चाहते हैं। मेरी बहन तब दिल्ली में थी और उसने होने वाले वर की तस्वीर गुरुजी को दिखायी। गुरुजी ने तस्वीर देखते ही कहा, ''अच्छा लड़का है'' और हमारा संशय दूर हो गया। गुरुजी की कृपा से शादी जनवरी, 2001 में ठीक हुई। जैसे–जैसे समय बीता, मेरा गुरुजी के प्रति दृष्टिकोण बदलता गया।

शादी उसी विद्यालय के मैदान में होनी थी, जहाँ मेरी माँ पढ़ाती है। प्रबंधक के साथ विचार–विमर्श के बाद हमने खाना बनाने की जगह को निश्चित किया। शादी के तीन दिन पहले, विद्यालय की निदेशिका, जो गुरुजी की भक्त थी और जिसने गुरुजी के बारे में मेरी माँ से ही सुना था, ने हमसे कहा कि गुरुजी उसके सपने में आये थे और उन्होंने खाना बनाने की जगह को परिवर्तित करने के लिए कहा, तथा एक निश्चित जगह भी बतायी।

मैंने तो अधिक ध्यान नहीं दिया, पर मेरी माँ ने तुरन्त खाना बनाने की जगह बदलवा दी। शादी बहुत अच्छी तरह हुई और लोग आज भी उस सुस्वादु भोजन को याद करते हैं। ये सारी घटनाएँ केवल गुरुजी की सर्वव्यापकता को इंगित करती हैं। फिर भी मैं अभी तक निन्दक, दोषदर्शी और कम विश्वास करने वाला ही बना रहा।

पर मेरी बहन की शादी के 15 दिनों के बाद मैं बदल गया। मैं देर रात मुख्य सड़क से अपनी मोटर साइकिल पर कार्यालय से लौट रहा था। एकाएक, एक कुत्ता मोटरसाइकिल के अगले चक्के से टकरा गया। गाड़ी को वेग इतना था कि एक कंकड के भी चक्के से टकराने से मैं दूर गिर सकता था। एक बस ठीक मेरे पीछे आ रही थी और मैं अगर असंतुलित होकर मोटरसाइकिल से गिर जाता तो मेरे जीवन का अन्त निश्चित था। पर रहगीरों और मेरे लिए हैरानी की बात थी, की गुरुजी के आशीर्वाद से मेरा संतुलन नहीं बिगड़ा और मैं बच गया। मैं ईश्वर का धन्यवाद करना चाहता था और घर के रास्ते में एक मंदिर के सामने अपना सर भी झुकाया। तभी गुरुजी की शारीरिक सुगंध हवा में फैली और तत्क्षण मेरे मस्तिष्क से सारा तर्क, सारी

दोषदर्शिता निकल गयी और मैंने म नही मन गुरुजी को प्रणाम किया। निन्दक से अनुयायी बनने का यह रूपांतरण पल भर में हो गया।

शादी निश्चित होने में केवल दस मिनट लगे

कुछ ही दिनों में मेरा स्थानांतरण रेवाड़ी कर दिया गया और मैं गुरुजी के दर्शन प्रायः करने लग गया। अब मेरी माँ को मेरी शादी की चिन्ता थी। एक दिन मैं और मेरी माँ मेरे मामा के घर पर थे, मेरी मामी की चचेरी बहन भी वहाँ थी। शाम में हम सब गुरुजी के दर्शनों के लिए गये। लंगर के बाद जब गुरुजी के आस–पास बैठे थे, उन्होंने मुझे बुलाया और पाँव दबाने के लिए कहा। कुछ ही मिनटों के बाद, उन्होंने दस मिनटों के बाद वे बोल पड़े, "शादी कर लो।" शादियाँ स्वर्ग में तय होती हैं, मैं यह मानता हूँ। मामी की चचेरी बहन से शादी करने के बाद मेरा और मामा का एक और रिश्ता हो गया।

मैंने अक्सर सत्संगों में सुना है कि गुरुजी भक्तों के मन की बात जानते हैं। पर मेरा यह मानना है कि हमारे अंदर मन की बात भी तो वे ही पैदा करते हैं। हम विचारों के मूल स्रोत से अलग कैसे विचार कर सकते हैं ? हम ब्रह्मांड की आत्मा से अलग रहकर जीवित कैसे रह सकते हैं ? हम हैं क्योंकि वे हैं। हमें ज्ञात हो या नहीं, पर हम सब गुरुजी के साथ एकात्म होकर जीते हैं। जिन्हें उनके दर्शन मिल जाते हैं या जिन्हें उनकी सुगन्ध मिल जाती है या जिन्हें वे प्रत्यक्ष रूप से अनुग्रहीत करते हैं, वे अतिभाग्यशाली हैं। मैं जीवन के हर क्षण को जीता हूँ क्योंकि जब मैं उनके सुगन्ध के स्रोत को तलाशता हूँ तो पाता हूँ कि ये स्रोत तो दिव्य है।

गुरुजी के द्वारा किये गये 'चमत्कार', चमत्कार इसलिए हें क्योंकि ये ज्ञान की कसौटी पर असंभव प्रतीत होते हैं। मैं तो अब यह सोचकर गुरुजी में विश्वास करता हूँ कि 'जो मैं हूँ' और जो मेरे पास हैं, वह सब गुरुजी की इच्छा है।

गुरुजी की कृपाओं को याद करना एक कभी नहीं अन्त होने वाला कार्य है। स्मृति जन्म के पहले की घटनाओं की नहीं होती है। मैं तो यह कहूँगा कि मैंने गुरुजी के आशीर्वाद से ही इस संसार में जन्म लिया है, मेरे माता–पिता, मेरे मित्र, मेरा लालन–पालन मुझे बीमारी होना और मेरा ठीक होना, मेरा दुर्घटनाग्रस्त होना और फिर ठीक हो जाना, मेरी बहन और मेरे बहनोई, मेरी पत्नी और बेटी सब गुरुजी के आशीर्वाद से ही तो है। वस्तुतः गुरुजी का आशीर्वाद पाना भी उनके आशीर्वाद से ही तो हुआ है। मैं गुरुजी के सामने, अपने जीवन में उनके दर्शनों का सौभाग्य पाने के लिए सर झुकाता हूँ और आशा करता हूँ कि उनकी कृपा–इष्टि हम पर सदा बनी रहेगी। मैं प्रार्थना करता हूँ कि गुरुजी अपने चरणों में हमारे परिवार को सदा बनाये रखें।

– इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन, जयपुर में वरिष्ठ कार्यकारी, भवेश पांडे

GURUJI KA ASHRAM

दैवी रोगहर ने चिकित्सकों को रोगमुक्त किया

किसी को दुःखग्रस्त देखकर अच्छे से अच्छा व्यक्ति भी केवल सहानुभूति जताता है, या यों कहें कि सहानुभूति जताने से अधिक कुछ कर नहीं पाता। गुरुजी जैसे

महापुरुष दूसरों की पीड़ा को स्वयं पर ले लेते हैं और दूसरों की पीड़ा कम कर देते हैं तथा अपने में विश्वास को प्रबल बना देते हैं। डॉ. ब्रिग्रेडियर सैनी के अनुभव ऐसा ही कुछ उद्घाटित करते हैं। सैनी, जो स्वयं चिकित्सक हैं, न सिर्फ दैवी रोगहरणी शक्ति के प्रत्यक्ष साक्षी हैं, बल्कि स्वयं लाभार्थी भी हैं।

चम्मच से स्पॉण्डिलाइटिस भगाया

डॉ. सैनी का जालंधर में घर गुरुजी के मंदिर के नजदीक है किन्तु शुरू में वे गुरूजी के दर्शन नहीं किया करते थे। लेकिन जब उन्होंने किया तो ऐसा लगा कि उनके जीवन में आशीर्वाद की न खत्म होने वाली झड़ी लग गई।

डॉक्टर की पत्नी, जो गुरुजी की भक्त थी, को सर्वाइकल स्पांडिलाइटिस था। जिससे उसकी गर्दन में दर्द रहता था। उसका इलाज फिजियोथेरेपी और पीड़ानाशक दवाइयों के साथ हो रहा था। यह समय 1996 के अंत की बात है और तब गुरुजी पंचकूला (चंडीगढ़ के पास एक शहर) में थे। एक दिन डॉक्टर गुरुजी और संगत के साथ था। डॉ. सैनी की आई.सी.यू. में शाम को चक्कर लगाने की जिम्मेदारी थी। उन्होंने गुरुजी से जाने की आज्ञा लेनी चाहिए। गुरुजी ने उन्हें निश्चित किया कि उनके सारे रोगी ठीक हैं और जाने की आज्ञा दे दी।

जब डॉक्टर वापस आए तो गुरुजी ने कहा कि उन्होंने उसकी पत्नी को स्वस्थ कर दिया। गुरुजी ने एक चम्मच का इस्तेमाल किया – डॉक्टर ने उसे गुरुजी की सर्वरोग निवारक यंत्र नाम दिया उनकी एक्सरे–मशीन, अल्ट्रासाउंड, सीटी स्केनर – गुरुजी ने उस चम्मच को अपने भक्त की गर्दन पर रखा। आराम तत्काल मिल गया और उसके बाद किसी और इलाज की जरूरत नहीं पड़ी।

गुरुजी सहृदय बन गए

एक साल बाद स्वयं डॉक्टर को चिकित्सा की जरूरत हुई। उस समय तक गुरुजी चंडीगढ़ चले गए थे और डॉक्टर उनसे मिलने वहीं गया। एक दिन गुरुजी ने कहा कि उनके पाँव के तलवे में दर्द हो रहा है। डॉक्टर ने जाँच के बाद पाया कि एक खास जगह कोमल है और एक दिन बाद पीड़ानाशक क्रीम लाने का निश्चय किया। गुरुजी ने प्रस्ताव ठुकरा दिया। डॉक्टर सैनी जो तब तक चिकित्सा विभाग में उच्च सलाहकार के पद पर पहुँच चुके थे, ने गुरुजी और गुरुजी से उससे इलाज करवाने की प्रार्थना की। कुछ समय बाद गुरुजी ने डॉक्अर के पास आकर कहा कि लेजर चिकित्सा उन्हें तीन दिनों के लिए दी जाए। डॉक्टर ने दस दिनों के इलाज को ज्यादा कारगर बताया। इस दावे पर

गुरुजी ने डॉक्टर को अपनी मंशा बताई कि वो अस्पताल डॉक्टर की भलाई के लिए ही जा रहे हैं।

गुरुजी के कथन का तात्पर्य दो सप्ताह के बाद पता चला। डॉक्टर को सीने में दर्द की शिकायत हुई और ई सी जी में कुछ परिपक्व नजर आया। डॉक्टर सैनी ने अस्पताल के हृदय विशेषज्ञ बुलाया। उसने डॉक्टर को आराम करने की सलाह दी क्योंकि ई सी जी ने हृदयाघात के संकेत दिए थे। चिंताग्रस्त डॉक्टर ने गुरुजी से फोन पर बात की और गुरुजी ने उन्हें एक उपचार बताया।

जब डॉ. सैनी आई सी यू से बाहर आए तो गुरुजी के पास गए। कमरे के अंदर गुरुजी ने उन्हें कालीन पर लिटा दिया और एक साफ चम्मच को उनके पूरे शरीर पर घुमाया। उसके बाद डॉक्टर के हृदय की जाँच नई दिल्ली के आर्मी रिसर्च एंड रेफरेल अस्पताल में हुई। सभी जाँचों–ट्रेडमिल, थीलियम जाँच में हृदय को सामान्य पाया गया। सालाना चिकित्सकीय जाँच, जो सैनी में करवाना अनिवार्य है, में उन्हें रोगमुक्त पाया गया और कहा गया कि उन्हें कभी भी इलाज की जरूरत नहीं थी।

इस प्रकार दैवी रोगहर ने डॉक्टर का इलाज डॉक्टर रोगी के संबंध को उल्टा कर किया। गुरुजी उसके रोगी बनकर तीन दिनों तक रहे जिससे अपने भक्त के साथ हो रहे दुःख को जान सकें।

अवरुद्ध धमनी खुल गई

सद्गुरु की कृपा जो उनके भक्त नहीं हैं, उन पर भी रहती है। ऐसा लगता है मानो जो भी कष्ट में हैं वो उनका अपना है। डॉ. सैनी के सहकर्मी कर्नल मदन जो चिकित्सा विशेषज्ञ हैं, का उदाहरण हमारे सामने है। कर्नल मदन को काफी समय से दिल की बीमारी थी। उनकी हृदय–धमनी के बंद हो जाने से बाईपास

सर्जरी हो चुकी थी। लेकिन कर्नल मदन को तब भी सीने में दर्द और साँस लेने में तकलीफ की शिकायत रहती थी। उन्हें अपनी डॉक्टरी फर्ज को निभाने में अक्षम साबित कर रहा थां यह भी पता चला कि बाई पास चैनल भी बंद हो गया है। यह एंक गंभीर समाचार था।

ब्रिगेडियन सैनी और जेनरल आहूजा तथा एक और गुरुजी के भक्त ने कर्नल मदन को गुरुजी की शरण में जाने की सलाह दी और कर्नल मदन गुरुजी के पास गए। गुरुजी ने उन्हें अपना आशीर्वाद तांबे के गिलास के द्वारा दिया और उन्हें ओऽम की आकृति का गले के हार में पहनने को कहा जिसे गुरुजी का आशीर्वाद प्राप्त था।

कर्नल मदन के स्वास्थ्य में तुरन्त ही सुधार होने लगा। कुछ महीनों बाद जब एंजियोग्राफी करवाई गई तो परिणाम चकित करने वाला था। प्राकृतिक धमनी, जिसका बाईपास हुआ था, खुल गई थी। डॉ. सैनी सन् 2003 में कर्नल मदन से मिले, जब वे गुरुजी से मिलने एम्पायर एक्टेट आए थे। गुरुजी के आध्यात्मिक संगत में डॉक्टर ने अपने चमत्कारिक उपचार की कहानी को सबको सुनाया और दैवी रोगहर को हृदय से धन्यवाद दिया।

और हृदय–कपाट में छिद्र ठीक हो गया

डॉ. सैनी की पत्नी को बचपन में 'रियुमैटिक बुखार' हुआ था। कोई जान तो नहीं पाया, पर उनके बायें हृदय–कपाट में इसका असर हुआ और उसमें छिद्र हो गया थां उसके चिकित्सक पति ने ही उसकी इस समस्या को पहचाना। इसके बाद हर दो साल पर उसकी 'इकोकार्डियोग्राफी' करायी जाती थी।

स्न् 2003 ई. में जब डॉ. सैनी दिल्ली में आर्मी रिसर्च एंड रेफरल अस्पताल में सलाहकार थे, उनकी पत्नी ने चलने में सांसों की कमी महसूस की। 'इकोकार्डियोग्राफ' में हृदय में बड़ी छेद का पता चला जिसे चिकित्सकीय भाषा में 'मितल रिगरजिटेशन' कहते हैं। हृदय–कपाट बदलने की सलाह दी गयी। इस बीच उसे दवाइयाँ दी गयीं। और यह भी बताया गया कि रैमीप्रिल दवा से कभी–कभी खांसी शुरू हो जाती है।

एक दिन पति–पत्नी गुरुजी के पास बैठे थे और पत्नी ने कहा कि अब वह दवा नहीं लेगी क्योंकि उसे बहुत खाँसी होती है। गुरुजी ने सुना और कहा, "ठीक है" और जब वे दोनों जाने लगे, गुरुजी ने कहा, "मैं तुम्हारे हृदय को आशीर्वाद देता हूँ।" इसके बाद उन्होंने डॉ. सैनी को 'एम्स' में कार्डियोलॉजी के प्रमुख डॉ. तलवार से पत्नी की जाँच कराने की सलाह दी।

डॉ. सैनी पत्नी को लेकर डॉ. तलवार के पास गये और उन्होंने उसकी हालत उन्हें बतायी। डॉ. तलवार उसे परीक्षण–कक्ष में ले गये और काफी अच्छी तरह निरीक्षण किया। पर वे काफी चकित होकर बाहर आये और कहा कि डॉ. सैनी ने उन्हें अपनी पत्नी के बारे में बताया था, इसलिए उन्होंने समय लगाकर उसके बायें हृदय कपाट को अच्छी तरह जाँचा, पर उन्हें कुछ भी नहीं मिला, डॉ. सैनी की पत्नी का हृदय बिल्कुल ठीक था।

गुरुजी के दिव्य आशीर्वाद ने भक्त के हृदय को ठीक कर दिया था। डॉ. सैनी के अनुसार, चिकित्सा–शास्त्र के अनुसार असंभव को गुरुजी के अल्प शब्दों ने संभव कर दिया था।

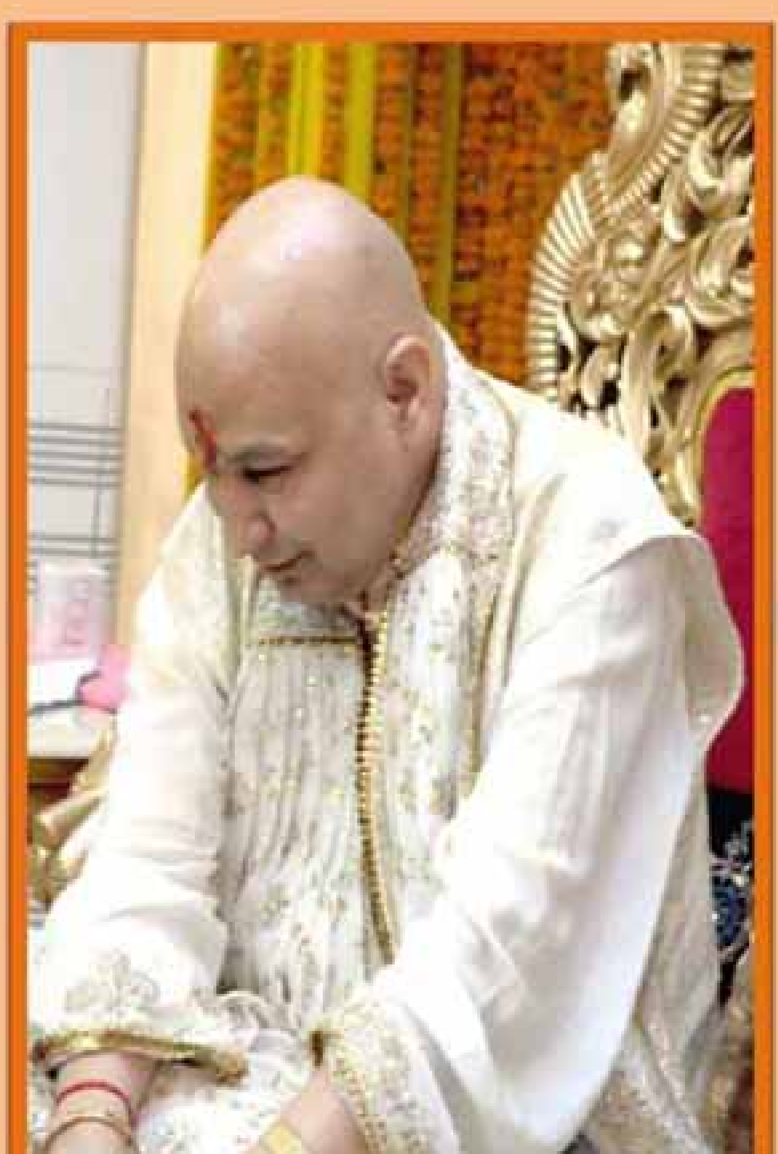

कैंसर भी निस्तेज हो गया

मई, 2002 में डॉ. सैनी को पता चला कि उन्हें एक खतरनाक कैंसर है, नॉन–हॉडगकिन्स लिम्फोमा या एन.एच. एल. जो उपचार के प्रति अपने प्रतिरोध के लिए जाना जाता है। यह कैंसर मनुष्य के अन्तःस्रावी तंत्र को आक्रांन्त करता है। सैनी ने नौ महीनों तक दवाइयाँ लीं, इसका उपचार करवाया। उसने कीमोथैरेपी के कुप्रभावों को महसूस नहीं किया और एन.एच.एल का रोगी होते हुए भी उपचारों के प्रति उसके शरीर की शीघ्र अनुक्रिया ने चिकित्सकों को भी चकित कर दिया। एक साल होते–होते बीमारी की तीव्रता कम होती चली गयी।

किन्तु सन् 2004 ई. में उसके दाहिने अरु–मूल में तीन लसिका–ग्रन्थियाँ फिर फूल गयीं। पी.ई.पी. स्कैन ने कैंसर कोशिकाओं की पुष्टि की। आपरेशन किया गया, ग्रन्थियाँ निकाली गयीं और सैनी को बोन मैरो परीक्षण करवाने के लिए कहा गया। सैनी ने गुरुजी से प्रार्थना की और उन्होंने उसे परीक्षण करवाने की तिथि बतायी। चिकित्सकों को यह डर था कि अगर नतीजे सकारात्मक आये, तो सैनी को पाँच महीनों के लिए फिर कीमोथैरेपी करवानी पड़ेगी। किन्तु, गुरुजी के आशीर्वाद से नतीजे नकारात्मक ही आये।

सत्गुरु ने चिकित्सक की माँ की आयु बढ़ायी

डॉ. सैनी की माँ को स्तन में कार्सिनोमा हृदय रोग व रियुमेटोइड आर्थराइटिस था। सन् 2000 ई. में वर्ष के अन्त तक उनकी हालत बिल्कुल बिगड़ चुकी थी। वे एक दिन एकाएक बहुत बीमार हो गयीं और उन्हें एक निजी अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा। उनकी हृदय गति रुक गयी थी और उनका रक्तचाप और उनकी नाड़ी का स्पन्द अंकित नहीं हो पा रहा था। इन सब के दौरान डॉ. सैनी की भतीजी जालंधर में मंदिर में थी। वह मन ही मन रो रही थी क्योंकि वह जान गयी थी कि उसकी दादी की मृत्यु को पहले ही रोक दिया और उससे कहा कि उसकी दादी की आयु पाँच वर्ष बढ़ा दी गयी है। यह बात जैसे ही गुरुजी बोल रहे थे, अस्पताल में डॉ. सैनी की माँ ठीक होने लगी। वे पाँच वर्ष और जी गयीं।

गुरुजी की कृपा अप्रतिम है। यह कृपा मानों भगवान है जो माँ के रूप में है। इस माँ का हृदय बच्चों के कष्टों के साथ रोता है। फिर बच्चे बुरे हो या भले उसके भक्त हों या नास्तिक और सांसरिक भोग–विलास में लिप्त, इस माँ की शक्ति उनकी मदद के लिए हर क्षण उपलब्ध रहती है।

चिकित्सकीय प्रविधिज्ञों को आशीर्वाद मिला

एक दिन 1926 में गुरुजी ने डॉ. सैनी को सूचित किया कि वो शाम को चंडीमंदिर के सैनिक अस्पताल में अपने खून की जाँच और अल्ट्रासोनोग्राफी करवाने आयेंगे। खून की जाँच करने के बाद अनुभवी चिकित्सकीय टैक्नीशियन चकित रह गया क्योंकि ब्लड सुगर की जाँच का परिणाम 8 मिली.–15 मिली. के बीच था दुबारा जांच में भी निष्कर्ष वही आ रहा था। अनुभवी टैक्नीशियन यह जानता था कि यह परिणाम सामान्य सीमा से बहुत नीचे था और ऐसे में व्यक्ति का जीवित रहना असंभव था। उसने डॉक्टर सैनी को काह कि यह मरीज इस पृथ्वी का नहीं हो सकता। गुरुजी ने उस प्रविधिज्ञ को आशीर्वाद दिया और कहा कि उसकी पदोन्नति हो जाएगी, जो कि हुई भी।

मेजर सिन्हा, भटिंडा के रेडियोलॉजिस्ट भी इसी प्रकार गुरुजी से अनुगृहीत हुए। रोडियोलॉजिस्ट उस समय चंडी मंदिर में अस्थायी रूप से कार्यरत थे, जब गुरुजी अपना अल्ट्रा साउंड करवाने गए थे। मेजर सिन्हा ने गुरुजी के उदर का अल्ट्रा साउंड किया और कहा कि वो सामान्य है। गुरुजी ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए कहा कि उन्हें दो पुत्र होंगे और उनकी पदोन्नति मेजर जनरल के पद पर हो जाएगी। मेजर ने चकित होकर कहा कि उन्हें एक पुत्र है और वो काफी है।

सन् 2004 में, डॉ. सैनी मेजर सिन्हा से नई दिल्ली के रिसर्च एंड रेफरेल अस्पताल में मिले। मेजर सिन्हा अब लेफ्निेट कर्नल सिन्हा थे और परमाणु चिकित्सा में सैनिक अस्पताल में प्रशिक्षण ले रहे थे। डॉ. सैनी ने उन्हें गुरुजी के आशीर्वाद के बारे में याद दिलाया जो कि उन्हें याद था। उन्होंने डॉ. सैनी को बताया कि जब गुरुजी ने उन्हें अपना आशीर्वाद दिया था तब उनकी पत्नी को डॉक्टर ने बताया कि कि अब उन्हें दूसरा बच्चा कभी नहीं होगा। लेकिन गुरुजी के आशीर्वाद से वह पुनः माँ बनी।

गुरुजी ने बार–बार जान बचाई

सैनी परिवार गुरुजी के दर्शन के बाद नई दिल्ली से चंडीगढ़ लौट रहा था। तब दिल्ली चंडीगढ़ हाईवे पर यातायात एकतरफा था। उन्हें संगत छोड़ते हुए काफी रात हो गई थी और पूरा परिवार गाड़ी में झपकी ले रहा था। डॉ. सैनी भी अचानक गाड़ी चलाते हुए सो गए। उनकी गाड़ी रास्ता बदल दाई तरफ ट्रक के रास्ते में आ गई।

उनकी पत्नी के हाथ ने उनके कंधे को हिलाया और डॉक्टर झटके के साथ जाग गये। उन्होंने गाड़ी को तुरन्त बाई ओर मोड़ा और कुछ इंच से वे ट्रक की चपेट में आने से बच गए। जब वे सब सोए हुए थे तब ये कौन जाग रहा था ? किसकी न पलक झपकने वाली आँखों ने ट्रक को देखा और किसने उनकी पत्नी के हाथों से डॉक्टर को जगाया ?

इन प्रश्नों के उत्तर हमें 2004 में मिले।

गुरुजी ने डॉ. सैनी के दंत चिकित्सक बेटे सजल को, जो उस समय सोहना में नियुक्त था, अपनी चिकित्सकीय जिम्मेदारियों से छुट्टी लेने को कहा। उस समय सजल बस स्टॉप तक स्कूटर से और उसके बाद सोहना की बस लिया करता था।

अगस्त के दिनों में सड़कें भींगी हुई थी। सजल अपने स्कूटर से घर जा रहा था तभी पीछे आती गाड़ी से बचने के लिए वह मुड़ा लेकिन दूसरी गाड़ी से उसकी टक्कर हो गई। सैनी परिवार उस समय गुरुजी के साथ था और गुरुजी ने अचानक पूछा कि उनका बेटा कहाँ है ? उन्होंने कहा कि वो आफिस से घर लौट रहा होगा। उसी समय सैनी के फोन पर सजल की पत्नी उन्हें हादसे के बारे में बताती है। वो तुरन्त घर चले गए। सजल को बचा लिया गया है। उसे हादसे के स्थान से राहगीरों ने अस्पताल पहुँचाया और उसकी नाक पर ही कुछ टॉके पड़े। अस्पताल से सीधे वो गुरुजी को उसे बचाने के लिए धन्यवाद देने गया।

GURUJI KA ASHRAM

सजल अब अपना जन्मदिन इसी दिन मनाता है जब गुरुजी ने उसकी जान बचाई, उसी नई जिन्दगी दी।

– सत्संग, डॉ. (बिग्रेडियर) सैनी, पूर्व सलाहकार, मेडिसीन, आर्मी रिसर्च एंड रेफरेल हॉस्पीटल, नई दिल्ली

जहाजी को जीवन में पाठ पढ़ाया

सन् 1995 में, मि. राय, अब व्यापरी बेड़े में कप्तान, अपने घर में जालंधर में थे, जब उनकी बाई आँख की रोशनी धुंधली हो गई। डॉक्टरों ने पाया कि उनकी बाई रेटिना में नस से संबंधित परेशानी थी। इसी दौरान उनकी माँ और पत्नी डिफेंस कॉलोनी में गुरुजी के मंदिर किसी काम से गए थे। राय की माँ चाहती थी कि वो भी गुरुजी के पास जाए और आशीर्वाद लें उन्होंने पहले तो मना कर दिया लेकिन बाद में वो उन्हें गुरुजी के पास ले जाने को तैयार हो गये। वहाँ पहुँचने पर जिज्ञासावश वो अंदर भी चला गये।

हर माँ की भांति, राय की माँ भी चाहती थी कि उनका बेटा स्वस्थ हो जाए। उन्होंने गुरुजी को अपनी समस्या बताई। गुरुजी ने राय को अलग कमरे में भेजकर इंतजार करने को कहा। अधीर होते राय ने मन ही मन गुरुजी से कहा कि वो यहाँ क्या कर रहा है ? जैसे ही उसने प्रश्न पुछा गुरुजी आए और उन्होंने पूछा कि मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ।

गुरुजी ने राय से पान के पत्रों का गुच्छा लाने को कहा। उन्होंने आशीर्वाद देते हुए उन पत्तों को राय को अपनी आँखों पर हल्की पट्टी के सहारे एक घंटे बांधने को कहा और तब उन पत्रों को बहते पानी में बहाने को कहा। एक घंटे के बाद राय की दृष्टि बिल्कुल ठीक हो गई थी।

राय ने गुरुजी के दर्शन के लिए जाना शुरू कर दिया। अपने तीसरे या चौथे दर्शन में उन्हें दिव्य–दर्शन प्राप्त हुआ। सोते हुए अचानक जागने से उन्हें अपने कमरे की दीवार पर नीली रोशनी दिखाई दी। वो साफ तौर पर भगवान शिव और पीले लिबास में गुरुजी को देख सकते थे। गुरुजी के सिर के स्थान पर एक शिवलिंग था। उन्होंने अपनी पत्नी अनु को जगाया और दीवार का चित्र गायब हो गया।

गुरुजी का अपने भक्त के साथ और उनका आशीर्वाद राय परिवार को मिलने लगा। अनु को कमरे के नीचे में स्लिप डिस्क की समस्या थी। उसे भारी बेल्ट पहनाना पड़ता था और डॉक्टरों के अनुसार, ऑपरेशन ही इस समस्या का समाधान था। यह काफी खतरनाक था क्योंकि थोड़ी भी गलती पक्षाघात का कारण बन सकती थी। जब गुरुजी को यह समस्या पता चली, उन्होंने एक चम्मच निकालकर अनु की कमर का स्केन किया तब से उसे दर्द की कोई परेशानी नहीं हुई। उसके तुरन्त बाद दोनों हेमकुंठ साहिब के दर्शन के लिए बाईस कि.मी. पैदल चलकर गए और अनु की चाल और लोगों से बहुत तेज थी।

राय एक महीने के अंदर जहाज पर वापस जाने वाले थे। वो अपनी छोटी मौसी, जिसके हार्ट वाल्व को बदला गया था, को जालंधर ले जाकर उन्हें गुरुजी से आशीर्वाद दिलाना चाहते थे। गुरुजी राय से हमेशा पूछते थे कि वो किस दिन जहाज पर वापस जा रहे है। और राय का उत्तर एक महीने के अंदर ही होता था। गुरुजी राय को सबद भी सुनने के लिए कहते थे। एक पंक्ति का अर्थ था

कि भक्त अपने पहले ही चरण में दूसरों को आस्था की राह पर बुलाने लगते हैं। फिर भी राय योजना के अनुसार पुणे जाकर अपनी मौसी को ले आए। बताया किन्तु गुरुजी का दर्शन संभव नहीं हो पाया। भक्तों ने बताया कि गुरुजी पाठ कर रहे हैं या दरवाजे बंद हैं। प्रत्यक्षः कुछ न कुछ चल रहा था।

राय और उसकी मौसी एक दिन अंदर जाने में सफल हुए। गुरुजी ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए वापस जाने को कहा उनके सेहत पर ध्यान नहीं दिया और मौसी पुनः उनके पास गई। लेकिन फिर से उन्हें लौटने को कहा। राय ने उनके यहाँ रुकने के बारे में पूछा तो गुरुजी चुप रहे। साफ तौर पर ऐसा लग रहा था कि वो चाहते हैं कि मौसी पूणे वापस चली जाए।

राय को तुरन्त ही लांधर से जहाज पर वापस जाना था जब मौसी ने दिल की बीमारी के बारे में बताया और उन्हें जालंधर के सैनिक अस्पताल में दाखिल करवाया गया। जब तक राय जहाज पर पहुँचे मौसी की हालत खराब हो चुकी थी।

गुरुजी के आशीर्वाद से मौसी के आखिरी दिन खुशी और शांति में बीते। उन्होंने कहा कि गुरुजी के कारण ही वे अपने परिवारवालों से मिलकर बात कर पाई और उन्हें देख पाई। उन्होंन अपनी आखिरी सांस शांतिपूर्वक ली। अगर राय ने गुरुजी के संदेश को सुना होता तो यह अंत इस समय और ऐसा नहीं होता जैसा आखिरकार हुआ।

गुरुजी के पद–चिह्नों पर चलकर पदोन्नति प्राप्त की

पिछले चार सालों से तरक्की न मिलने के कारण राय एक जहाजी बेडे से दूसरे में जाने की योजना बना रहे थे। लेकिन ऐसा उनके अच्छे काम और अनुभव के बाद भी संभव नहीं हो पा रहा था।

अपनी पत्नी के जन्मदिन पर वो चंडीगढ़ में थे जब उन्हें मुम्बई की कंपनी से फोन आया। उन्होंने राय को कप्तान के तौर पर लेने का वादा कर मुम्बई आने को कहा। राय ने दिल्ली जाकर गुरुजी से जाने की आज्ञा मांगी तो गुरुजी ने सिर्फ इतना कहा, "घूम आ।"

मुम्बई में राय ने अपनी डॉक्टरी जाँच करवाने के बाद कंपनी के अधिकारियों से मिला। अपनी मीटिंग के दौरान उन्हें पता चला कि कंपनी अब दो महीने के लिए कप्तान बिना बनाए उन्हें नौकरी देना चाहती थी। राय ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया।

वापस आकर पता चला कि पुरानी कंपनी उन्हें पुनः नौकरी पर लेना चाहती थी। गुरुजी ने इस प्रस्ताव को स्वीकारने का सुझाव दिया। राय जहाज पर जाने के लिए स्कॉटलैंड खाना हो गए।

जहाज के आने से दो–तीन बाकी रहने के कारण वे आस–पास घूमे। जहाज के आने वाले दिन राय ने एक स्वप्न देखा जिसमें गुरुजी ने उन्हें 14 जुलाई की तारीख बताई। वो यह सोचते हुए जाग गए कि इस दिन का क्या अर्थ है ?

जहाज के आने पर उसे मुख्य अधिकारी को कार्यमुक्त नहीं करने को कहा गया। कैरीबियन पहुँचने तक कप्तान को राय को समानांतर दूर पर रखने का निर्देश दिया गया, जहाँ कप्तान को कार्यमुक्त कर राय को जहाज का कार्यभार देना था। राय को इस बारे में जानकारी नहीं थी और 14 जुलाई के ही दिन राय को कप्तान नियुक्त किया गया।

गुरुजी की बात का पालन कर राय का सपना सच हो गया। गुरुजी का आशीर्वाद

उसके साथ नौ महीने रहा, जब तक वो जहाज पर था। उस बीच वो जैसा सोचता वैसा ही होता। बुरा सोचने पर उसे डर लगता था।

गुरुजी सब कुछ कर सकते हैं सन् 1997 में राय तुरंत नया पासपोर्ट बनाने के लिए मुंबई गए। उन्हें यह जानकर ताज्जुब हुआ कि अमेरिका के मान्य वीजा वाला पुराना पासपोर्ट खो गया है। पासपोर्ट चोरी करने वाले समूह के सदस्य ने उनसे चिन्तामुक्त होने को कहा जिससे वे आश्चर्यचकित रह गए। उन लोगों ने पुराने पासपोर्ट का पूरा ब्यौरा लेकर ढूँढ़कर उन्हें वापस लौटाया।

पुणे में चमत्कार

राय के बेटे को भी गुरुजी का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। यूँ तो उसने गणित और विज्ञान विषय लिए थे, गुरुजी ने उसे पुणे से कानून की पढ़ाई करने को कहा, जहाँ राय के मामा रहते थे।

GURUJI KA ASHRAM

पिता और पुत्र के पुणे पहुँचने पर पता चला कि सारी सीटें भर चुकी हैं। चूंकि राय के बेटे ने परीक्षा नहीं दी थी तो उसके दाखिले का सवाल ही नहीं उठता था। तभी पुणे विश्वविद्यालय ने नये विभाग की शुरुआत की। उसने परीक्षा दी और उसे दाखिला मिल गया। गुरुजी ने उसके दाखिले पर कहा कि सिर्फ उसे दाखिला दिलाने के लिए उन्हें साठ और विद्यार्थियों को भी प्रवेश दिला दिया।

गुरुजी ने परीक्षा पास करवाने के लिए और सफलता दिलाने के लिए उसे आशीर्वाद दिया। जब उसके सारे मित्र परीक्षा में असफल हो रहे थे, वो हर साल परीक्षा में सफल होता जा रहा था।

पुणे में राय के मामा की गुरुजी की कृपा से अनुग्रहीत हुए। एक बार गुरुजी ने राय को उसके मामा के लिए तस्वीर दी। राय ने कभी भी अपने मामा के बारे में उनसे बात नहीं की थी। इसलिए वो चकित हुए।

जब मामा को तस्वीर दी गई तो वो विस्मित होकर बोले कि गुरुजी को कैसे सब पता है ? राय ने अपने मामा से पूछा कि वो किस बात की ओर इशारा कर रहे हैं।

शादी के तीस साल बाद भी ये दम्पति निस्संतान थे। वे सरोगेट के द्वारा संतान चाहते थे लेकिन सफलता नहीं मिली थी। गुरुजी की तस्वीर के आते ही राय के मामा को पुत्र–रत्न की प्राप्ति हुई। उस समय तक उन्होंने गुरुजी के दर्शन नहीं किए थे। पुत्र के जन्म के बाद उन्होंने गुरुजी के दर्शन शुरू कर दिया।

टोकियो : साढ़े तीन बजे राय को नींद से जगाया गया

राय के परिवार में उसके पिता के अतिरिक्त सभी गुरुजी के भक्त थे। उनके अनुसार व्यक्ति के अच्छा होने से ही ईश्वर से संबंध संभव है।

अपने पिता को शहर जाने का कहकर राय परिवार गुरुजी के दर्शन के लिए गया। गुरुजी से मिलने पर उन्होंने सच्चाई जानते हुए परिवार को वापस शहर जाने को कहा। राय सिर्फ घर वापस ही नहीं लौटे बल्कि इस घटना के बाद उन्होंने अपने पिता से गुरुजी के व्यक्तित्व के बारे में बात करने का निश्चय किया।

गुरुजी ने राय के पिताजी को भी अपने संरक्षण में ले लिया। गुरुजी की आज्ञा पर राय परिवार जालंधर से चंडीगढ़ जा रहा था। पूरा परिवार पिताजी के साथ सारे सामान को लेकर चंडीगढ़ आ गया जिसमें गुरुजी की बड़ी तस्वीर भी शामिल था। जिस दिन राय के पिता चंडीगढ़ के नए घर में आए उसी दिन उन्हें हृदयाघात हुआ। उन्हें सैनिक अस्पताल ले जाया गया। गुरुजी उस समय दिल्ली में थे और राय जहाज पर टोकियो में था।

राय अपने केबिन को अंदर से बंद कर सो रहा था। तभी उसे लगा कि किसी से उन्हें पैर से हिलाकर जगाया। घड़ी में साढ़े तीन बज रहे थे, जब उसे घर से फोन आया। उसकी पत्नी ने उसे पिता की बीमारी के बारे में बताया। राय ने कहा कि गुरुजी ने उन्हें अभी जगाया है और वे ही उसके पिता का ध्यान रखेंगे।

इस बीच पता चला कि राय के पिता की धमनियाँ बंद हो चुकी हैं, लेकिन वे घर लौट आए। दस दिनों बाद वे फिर से बेहोश हो गए। इस बार यह समस्या गुरुजी के सामने रखी गई। उन्होंने दम्पति को बुलाकर एक उपचार बताया। राय के पिता ठीक हो रहे थे फिर भी उन्हें जॉच करवानी थी। एक दिन पहले गुरुजी ने राय को अपने पिता को विहस्की का गिलास देने को कहा था। जब जाँच का परिणाम आया तो डॉक्टरों ने कहा कि कोई बीमारी नहीं है। वे रिपोर्ट लेकर दूसरे डॉक्टरों के पास गए लेकिन सबसे कहा कि उनका हृदय बिल्कुल ठीक है।

राय के पिता के ठीक होते ही उसकी माँ भी गुरुजी के आशीर्वाद से कृतार्थ हुई। एक बार जब वे स्नान कर रही थी तो उन्हें दिव्य दर्शन हुए। उन्होंने

गुरू ग्रंथ साहिब के पन्नों को खुलते हुए देखा जिस पर गुरुजी का चेहरा भी दिखाई दे रहा था। उसकी माँ ने महसूस किया कि इस समय गुरूजी उन्हें पाठ के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

– सत्संग कैप्टन राय, स्टेना मैरीन मैनजमेंट, ह्यूसटन, यू.एस.ए.

GURUJI KA ASHRAM

गुरू कृपा

''कोई भी व्यक्ति विश्व में भ्रांति में न जिए

गुरू के बिना कोई भी दूसरे किनारे तक नहीं पहुँच सकता''

– गुरु नानक

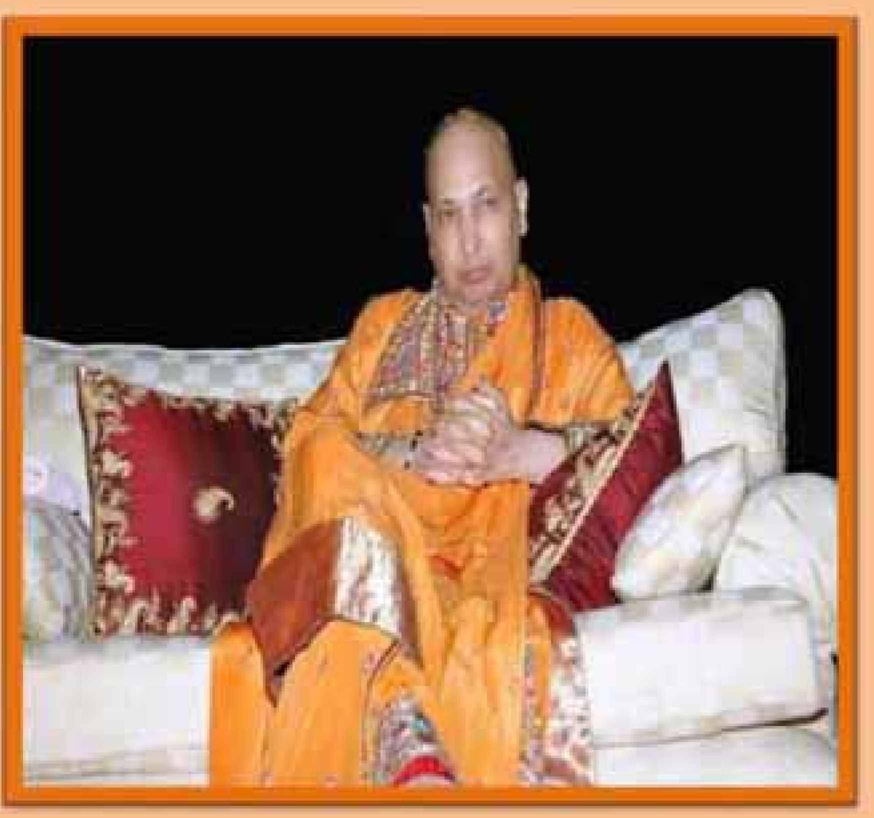

12 अक्तूबर, सन् 2005 में बुधवार की सुबह को मुझे अपने सहकर्मी डॉ. जी. सी. खिलनानी, एक्स के चिकित्सा विभाग के प्रोफेसर ने ये कहते हुए मुझे फोन किया ''डॉ. पांडव, हमारे घर पर आज शाम को सत्संग का आयोजन है। गुरुजी आ रहे हैं। आप अपनी पत्नी के साथ जरूर आयें।

मैंने उन पर प्रश्नों की बौछार कर दी। ''क्या आप अपनी तरक्की का समारोह कर रहे हैं ? गुरुजी कौन हैं ?'' आप शाम को उन्हें देखकर उनके व्यक्तित्व को जान लीजिएगा। तब तक धैर्य रखें।

मैंने यह बात अपनी पत्नी को बताई जो गुरूओं और साधुओं से प्रभावित होती थी। लेकिन इस बार उसकी प्रतिक्रिया कुछ अलग थी। शायद ये कुछ अलग हों ये सोचकर वो मेरे साथ चलने को तैयार हो गई।

बाद में मैंने अपने मित्र रश्मि और पंकज को फोन किया। मैं रश्मि को पैंतीस सालों से जानता था और उसके विवाह के बाद पंकज को। मैंने पंकज के पिता स्वर्गीय प्रधानमंत्री चंद्रशेखर, जिन्हें मैं पिताजी कहता था, के स्वास्थ्य का हाल जानने के लिए फोन किया था।

उन्होंने कहा कि वे एम्स के वार्ड में हैं जहाँ पिताजी को जांच के लिए भर्ती किया गया था। मैं तुरन्त ही उनके साथ रहने के लिए घर से निकल गया। रश्मि और पंकज ने गुरुजी के साथ हुए अपने अनुभवों को बताया। वे दोनों, छोटा मंदिर एम्पायर स्टेट, जो महरौली गुड़गाँव पर है, पर हमेशा जाते थे और गुरुजी के आशीर्वाद ने उनके जीवन को बदल कर रख दिया। उन्होंने बताया कि पिताजी के सुधरते स्वास्थ्य में गुरुजी की कृपा की मुख्य भूमिका रही है।

रश्मि ने मुझसे पूछा कि क्या मैं डॉ. खिलनानी को जानता हूँ। हमारी बातचीत में कभी भी उनका नाम नहीं आया इसलिए आज उनका नाम सुन मैं चकित रह गया। रश्मि ने कहा कि वे दोनों आज डॉ. खिलनानी के घर गुरुजी को लेकर शाम को सत्संग के लिए जा रहे है। मैंने तुरन्त पूछा कि ये गुरुजी कौन हैं और उनका नाम क्या है ? उत्तर में उसने मुझसे धैर्य रखने को कहा।

गुरुजी की इच्छा के बिना आप उनके दर्शन नहीं कर सकते। शायद इसलिए एक ही दिन हमें गुरुजी का संदेश दो मित्रों से मिला, शायद यही समय गुरुजी के दर्शन और उनसे आशीर्वाद लेने का था और मैं संगत को सम्मिलित और वैयक्तिक रूप से यह बताना चाहूँगा कि हम गुरुजी के दर्शन उनकी कृपा और आशीर्वाद पाकर कृतार्थ है। इसे पाकर हमारा जीवन सफल हुआ।

मैंने स्मिता को अपने अस्पताल जाने के बारे में बताया जिससे शाम को सत्संग में जाने की उसकी इच्छा और भी बढ़ गई। हम अपने आपको घर में ज्यादा देर तक रोक नहीं सके और शाम को 5 बजे तक खिलनानी के घर पहुँच गए। हम वहाँ सबसे पहले पहुँचने वालों में प्रथम थे। कुछ समय बाद हमने रश्मि और पंकज को रंग–बिरंगे वस्त्रों में एक नवयुवक के साथ सीढ़ियों से खिलनानी के घर में आते देखा। प्रवेश करते ही भव्य शोभाकारी कुर्सी पर सभागार में बिठाया गया।

हमने अनुमान लगाया कि यही गुरुजी है। रश्मि ने मेरा और स्मिता का उनसे परिचय करवाया। जैसे ही हम उनका आशीर्वाद लेने आगे बढ़े, गुरुजी ने मेरी ओर देखते हुए कहा, ''डॉक्टर, तुम बाहर जाओ।'' मैंने उनके शब्दों को अक्षरशः लेते हुए स्मिता के कान में धीरे से कहा कि हमें सभा से बाहर जाना चाहिए क्योंकि गुरुजी हमें यहाँ नहीं रहने देना चाहते। रश्मि ने तुरन्त हमें

वापस बुलाकर गुरुजी के शब्दों का अर्थ समझाया। रश्मि ने कहा कि वे चाहते हैं कि हम भारत में न रहकर विदेश में रहे क्योंकि हमारा भविष्य विदेश में सुनहरा है। हम चिंतामुक्त हो वापस आए और गुरुजी की चरणों में बैठ गए।

वहाँ पर लगभग ढ़ाई सौ से तीन सौ सत्संगी थी जिससे अधिकतर मेरे एम्स के सहकर्मी और पहली बार आए हुए थे। गुरुजी के आदेश पर उनके अनुयायी अपने अनुभवों को बता रहे थे। ये अनुभव बच्चे के शैक्षिक कार्य से लेकर विवाह, संतान की इच्छा दमा, हृदय–रोग तंत्रिका–तंत्र की बीमारी और अन्य लाइलाज बीमारियों जैसे कैंसर की चमत्कारिक इलाज की श्रृंखला तक फैले हुए थे। सामान्यतः लोग इन बातों से प्रभावित रहते हैं लेकिन ये मरीजों और उनके परिवार का व्यक्तिगत अनुभव था। उन्हें स्वास्थ्य में सुधार का प्रमाणिक अनुभव था। बीच–बीच गुरुजी कहते कि इसके व्यवहारिक पहलू को देखा कि वेदना हमें कैसे पाठ पढ़ाती है।

GURUJI KA ASHRAM

उस दिन से ही हम गुरुजी के अनुयायी हो गए। उसके बाद हमारा हर दिन आत्म–बोध, आत्म–प्रेरणा का दिन रहा। दिल्ली में रहने पर हम हर गुरुवार और रविवार को छोटा मंदिर जाते हैं। मेरे काम की वजह से मुझे यात्रा करनी पड़ती है। लेकिन जब भी हम दिल्ली में रहते हैं कुछ चमत्कार हमें गुरुजी के आश्रम की ओर खींचता है। हमारे अंदर की इच्छा हमें गुरुजी के दर्शन के लिए प्रेरित करती है।

डॉक्टर स्वस्थ हो गया

अप्रैल 2006 की सर्दियों में मैंने एक विचित्र अनुभव किया। मैंने स्मिता को बताया कि मैंने न तो कोई दवा ली है और न खास–यंत्र का उपयोग किया है जिसे मुझे दिन में दो बाद प्रयोग करना पड़ता था।

मेरे परिवार में दमे की बीमारी चली आ रही थी। और पन्द्रह साल से हर सर्दी की शुरुआत में मुझे खास–यंत्र का उपयोग की जरूरत पड़ती थी। एक–दो बार सीने में संक्रमण की शिकायत होने से दस दिनों तक 'एंटीबायोटिक' भी लेना पड़ता था। लेकिन 2005 की सर्दियों में न तो मुझे संक्रमण हुआ और न ही मुझे खास–यंत्र की जरूरत पड़ी।

मैंने अपना अनुभव गुरुजी को बताया जिन्होंने मुझसे कहा कि अब तुम्हें अपनी बीमारी के लिए किसी दवाई की जरूरत नहीं है। उन्होंने अपना आशीर्वाद मुझे दे दिया था जबकि मैंने उनसे अपनी बीमारी के बारे में बात नहीं की थी। मैं आश्चर्यचकित रह गया। हर गुरुवार और इतवार को एम्पायर स्टेट जाने का हमारा कार्यक्रम बदलने लगा।

बेटी स्नातक की पढ़ाई राइस विश्वविद्यालय ल्यूसन से कर रही थी। उसे राइस विश्वविद्यालय में पी. एच. डी. के लिए दाखिला मिल गया था लेकिन वो वहाँ पर अपनी पढ़ाई जारी रखने के पक्ष में नहीं थी। वो अनुसंधान कार्य के लिए अमेरिका के दूसरे विश्वविद्यालयों एम आई टी और स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय में जाना चाहती थी। माता–पिता के तौर पर उसकी

इच्छा को अव्यवहारिक मानने का कारण सिर्फ बीजा नहीं बल्कि शोधार्थी के रूप में स्थान मिलने का था और फिर कम समय भी था। उसकी माँ, स्मिता, चिंतित थी।

जब गुरुजी ने ऋतुजा के बारे में पूछा तो मैंने स्मिता की चिन्ता उन्हें बताई। गुरुजी ने तुरन्त कहा कि तुम क्यों चिन्ता करते हो, सब कुछ ठीक हो जाएगा। मुझसे यह पूछा कि मैं अमेरिका कब जा रहा हूँ। मैं मई, 2006 ऋतुजा के स्नातक समारोह में भाग लेने अमेरिका जाने की योजना बना रहा था। हम अमेरिका गए और कई घटनाक्रमों को गुरुजी के आशीर्वाद से होते हुए देखा। ऋतुजा आज एम.आई.टी बोस्टन के ब्रेज एंड कांग्नीटिव साइंस के विभाग में शोधरत है।

गुरुजी के संसर्ग में रहते हुए हमें अनेक अनुभवों के साथ हमें ऐसा क्या दिव्य अनुभव होता है ? इसे व्यक्त करना कठिन है संगत, रोगहरणी प्रार्थना, एक–दूसरे से बांधने की शक्ति रोजना लंगर के रूप में मिलने वाला प्रसाद, गुरुजी का व्यक्तिगत सबको आशीर्वाद ये सभी अनुभव आपको तरोताजा कर देते हैं, चाहे आप सत्संग के पहले कितने ही थके क्यों न हों। सत्संग के बाद आप पुनर्युवनित हो नये दिन की शुरुआत करने का मादा रखते हैं यहाँ पर किसी तरह का कोई भेदभाव नहीं है। गुरुजी के दरबार में सभी बराबर स्त्री हो या पुरुष शहरी हो या ग्रामीण भारतीय हो या विदेशी। यहाँ पर कोई विधि–विधान या बंधन नहीं है। किसी भी सत्संगी को कुछ देना नहीं है बल्कि अपने–आपको संपूर्ण समर्पित करना है और गुरुजी में बिना किसी कारण और लालच के विश्वास कायम करना है।

गुरुजी हमें बेहतर व्यक्ति बनने के लिए मार्ग प्रदर्शित कर रहे हैं। गुरुजी के सान्निध्य में आने से हमारा अहं समाप्त होता जा रहा है। घटनाओं को देखने की हमारी दृष्टि बदल गई है। इस क्रम में हम जरूरत और लालच में भेद कर मानसिक शांति प्राप्त कर रहे हैं। गुरुजी ने हमें सद्‌कार्यों के लिए फिर से प्रेरित कर दिया है। गुरुजी का अनुयायी बनना हमारे लिए सौभाग्य की बात है। हमने यह भी जाना कि जीवन के लिए आवश्यक मूल्यों को बांटने से उसकी महत्ता बढ़ जाती है। अपने शांत तरीके से हम अपने अनुभव मित्रों और सहकर्मियों को बताते जा रहे हैं। हमारी यह यात्रा गुरु कृपा ये चलती जा रही है।

– डॉ. चंद्रकांत पांडव का सत्संग प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, सेंटर फॉर कम्यूनिटी मेडिसीन, एम्स, नई दिल्ली

उन्होंने जीवन की डोर थाम ली

मैं जलवायु टावर, सेक्टर–56 गुड़गाँव में रहता हूँ आगे दिया सत्संग में मेरे और मेरे परिवार का गुरुजी के शरण में हुए अनुभवों का ब्यौरा है इस दौरान गुरुजी की सामन्य स्वीकृति से हमारी जिन्दगी में अच्छे के लिए बदलाव आया। हमारे गुरुजी साक्षात् भगवान शिव के स्वरूप है और उनकी शक्ति आगे सभी बेकार है। वो दयालु हैं। अपनी शरण में आए हुए हर व्यक्ति को आशीर्वाद देते हैं। हम अपना जीवन प्रभु और सृष्टि कर्ता के संरक्षण छत्र के नीचे बिता रहे हैं।

कैसे हुआ इस सबका प्रारंभ

मेरी बेटी शुभा को दमा और 'एक्जिमा' की बीमारी दो साल की उम्र से थी।

तब मेरे एक मित्र ने सन् 2000 की शुरूआत में मुझे गुरुजी की शरण में जाने को कहा। वो हमें गुरुजी के पास जाने को तैयार नहीं हुई। उस समय हम कालकाजी में रहते थे। अगस्त 2000 में एक दिन एम्पायर स्टेट, सुल्तानपुर से गुजरते हुए मुझे अपनी मित्र की

बात याद आई और मैंने अपनी पत्नी को गुरुजी के बारे में बताया। उसी समय मैंने गुड़गाँव आने के बाद एक बार गुरुजी के दर्शन का निश्चय किया।

गुड़गाँव फ्लैट की किस्त देने में नाकाम रहने के कारण हम उसे बेचना चाहते थे। मेरे पिता पैसे देने में असमर्थ थे और वे गाजियाबाद के घर में रहते थे।

गुरुजी के दर्शन के 15 दिनों के अंदर ही मेरे पिता ने मेरे बड़े भाई को मुझसे गाजियाबाद वाला घर खरीदने को कहा, इससे मेरे पिता भी उसी घर में रहे और मुझे सितम्बर, 2000 में गुड़गाँव के फ्लैट के लिए आवश्यक किस्त की रकम भी मिल गई। गुड़गाँव में जाने के रास्ते की सारी मुश्किलें समाप्त हो गईं।

16 सितंबर, 2000 को अचानक मेरी बेटी की त्वचा की हालत खराब होती गई। ऐसा चार महीनों तक चला जिससे वो ग्यारहवीं की अर्द्धवार्षिक परीक्षाएं नहीं दे पाईं। पहले की तरह 'होम्योपैथी' का उपचार चल रहा था। धीरे–धीरे उसकी त्वचा में कुछ चिह्नों को छोड़कर जनवरी, 2001 में सुधार आता गया। 26 जनवरी 2001 को हमने गुड़गाँव में रहना शुरू किया। मुझे उस समय भी ऐसा लगता था कि हमारे गुड़गाँव आने और शुभा की त्वचा में सुधार के लिए गुरुजी की कृपा ही कारण है। इसलिए मैंने एम्पायर एस्टेट में गुरुजी के दर्शन का निश्चय किया।

मैंने 17 फरवरी, 2001 का दिन चुना जो कि महाशिवरात्रि का दिन था। 1 एम्पायर स्टेट में लोगों के सुझाव पर मैं भट्टी माईन्स के बड़े मंदिर पहुँच गया। उनके दर्शन करते ही मुझे ऐसा लगा कि इसी गुरु की खोज में पूरी जिन्दगी करता रहा।

अपनी बीमारी के कारण शुभा ग्यारहवीं कक्षा की परीक्षा नहीं दे पाई। और कुशल विद्यार्थी होने के बाद भी उसे पेपर दुहराने को कहे गए। मैंने उसे शर्मिंदगी से बचाने के लिए दूसरे स्कूल में भेज दिया। मैंने गुरुजी से सहायता की प्रार्थना की। उसने विज्ञान से वाणिज्य विषय बदलकर गुड़गाँव के एक स्कूल में दाखिला

लिया। स्कूल की प्रधानाचार्या उसके पुनः परीक्षा के लिए इस शर्त पर तैयार हुए कि उसे अस्सी प्रतिशत से अधिक अंक लाने होंगे। तभी उसे बारहवीं कक्षा में प्रवेश मिलेगा। उसे (गर्मी की छुट्टियों के दौरान) दो महीने का समय दिया गया। हमने गुरुजी से प्रार्थना की और शुभा ने परीक्षा की तैयारी की। गुरुजी के आशीर्वाद से उसे आवश्यक अंक मिले और उसे बारहवीं कक्षा में दाखिला मिल गया।

प्रधानाचार्य ने इसके लिए कोई भी माँग नहीं रखी जबकि हम उन्हें जानते नहीं थे। यह गुरुजी का तरीका था यह बताने के लिए कि चाहे आप उन्हें अपनी समस्याओं के बारे में न बतायें, वो हमेशा आपके साथ रहते हैं।

नवम्बर, 2001 में गुरुजी पंजाब गए। मैं एम्पायर स्टेट सप्ताह में एक बार जाता रहा। मार्च 2002 में गुरुजी ने मुझे सपने में 14 अप्रैल 2002 को एम्पायर स्टेट आने को कहा। मैंने यह बात अपनी पत्नी को बताई और इस दौरान मैं एम्पायर स्टेट नहीं गया। 14 अप्रैल, 2002 को वहाँ जाकर मुझे गुरुजी को देखकर खुशी हुई। गुरुजी 13 अप्रैल की रात पंजाब से यहा आए थे और उनके लौटने के बाद यह पहली संगत आयोजित थी। अन्य भक्तों ने मुझे बताया कि गुरुजी के सपने सच्चे होते हैं। उनमें मेरी आस्था और भी बलवती हो गई और हम उन्हें अपने सपनों में देखने के इच्छुक हो गए।

मैं अगस्त 2003 से अपनी नौकरी छोड़ना चाहता था। लेकिन मुझे सफलता नहीं मिल पा रही थी। साक्षात्कार में चयन के बावजूद भी किसी न किसी कारण से नौकरी नहीं मिल पा रही थी। न ही मेरी कंपनी किसी वैकल्पिक व्यवस्था के लिए तैयार थी। आखिरकार मैंने सितंबर, 2005 में हिम्मत जुटाकर गुरुजी से इस साक्षात्कार के लिए आशीर्वाद मांगा। उनकी पहली प्रतिक्रिया थी, ''तुम पैसे का क्या करोगे ? तुम मेरे पास आ जाओ।'' मि. सिंगला नामक भक्त ने उनसे कहा कि मुझे दो बेटियों का विवाह करना है। उन्होंने मुसकुराते हुए कहा, ''जाओ तब पैसे कमालो।'' इसके एक सप्ताह के बाद ही मुझे एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में नये पद के साथ नौकरी मिल गई। बिना मेरे बोले ही गुरुजी को नई नौकरी और मिलने वाली तनख्वा हके बारे में पता था।

पिता की विभिन्न बीमारियों से स्वस्थ कर दिया

मेरे पिताजी उनासी साल के थे। जुलाई 2005 में उन्हें 'प्रोस्टेट कैंसर' हो गया। उनकी सर्जरी कर चिकित्सा शुरू की गई। इसी के बीच उन्हें हृदयाघात भी हो गया। तुरंत उनकी 'एंजियो प्लास्टी' की गई। इन दो समस्याओं में घिरे होने के कारण स्थिति हाथ से निकलती जा रही थी। इलाज के बावजूद तीन महीने बाद

प्रोस्टेट की परेशानी फिर से हो गई। इस समय मैंने उनसे गुरुजी की शरण में चलने को कहा। तब तक वो गुरुजी में विश्वास नहीं करते थे और कभी उनके दर्शन के लिए नहीं आए थे। 2005 के अंत में वे गुरुजी के दर्शन के लिए एम्पायर स्टेट गए।

हमने व्यक्तिगत तौर पर गुरुजी से उनकी परेशानी नहीं बताई थी। उसके बाद लगातार घर में ओऽम नमः शिवाय का जाप गुरुजी के तस्वीर के सामने करते रहे। धीरे–धीरे उनके प्रोस्टेट और हृदय रोग संबंधी जाँच के परिणाम सामान्य आए। अनुमान से अधिक उनके स्वास्थ्य में सुधार आया। उन्होंने बड़े मंदिर के हर समारोह में शामिल होने का निश्चय किया।

– कमांडर रिटायर्ड आर. के. शर्मा की सत्संग

GURUJI KA ASHRAM

जीवन में गुरुजी की कृपा

मेरे इक्कीसवें जन्मदिन पर मैं गुरुजी के संगत पहली बार गई। मेरे पिता कमांडर आर. के. शर्मा गुरुजी के दर्शनों के लिए जाते थे। लेकिन तब तक मेरी माँ मैं और मेरी दो छोटी बहनें उनके साथ नहीं गईं थीं पता नहीं क्यों मेरे इक्कीसवें जन्मदिन पर मुझे उनके दर्शनों की इच्छा हुई।

मैं हमेशा से ही साधारण विद्यार्थी रही हूँ। बारहवीं की परीक्षा में चौंसठ प्रतिशत अंक आने के कारण मेरा विज्ञान में डी. यू. के किसी अच्छे महाविद्यालय में दाखिला नहीं हो पाया। मेरे पिता ने मेरा इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय में बी.सी.ए. प्रोग्राम में दाखिला करवा दिया। इग्नू में प्रथम प्रयास में बी. सी.ए. एम.सी.ए. प्रोग्राम में सफल होने का प्रतिशत काफी कम था। सौ में से केवल तीन ही सफल होते थे। साधारण विद्यार्थी होते हुए भी गुरुजी के आशीर्वाद से मैंने न केवल बी.सी.ए. की परीक्षा बल्कि एम.सी.ए. की परीक्षा भी प्रथम प्रयास में ही पास कर ली। इतना ही नहीं, मैंने नीट (NIIT)

के दो साल का कोर्स भी स्नातक के साथ–साथ अच्छे नंबरों से पास किया और डेढ़ साल का कार्य अनुभव भी स्नातकोत्तर के समय अर्जित कर लिया।

किसने सोचा था कि मेरी जैसी लड़की इतनी मेहनत और काम के दबाव को सह पाएगी। लेकिन ऐसा सिर्फ गुरुजी की कृपा से ही संभव हुआ।

पूरा परिवार गुरुजी के संगत में जाने लगा। एम.सी.ए. के बाद मुझे नई नौकरी की अत्यावश्यकता थी। परीक्षा के बाद हम सब गुरुजी के दर्शन के लिए गए। मेरी माँ ने गुरुजी से मेरी अच्छी नौकरी और दस हजार रुपये के तनख्वाह की प्रार्थना की। मुझे नहीं पता कि उसने दस हजार रुपए की ही प्रार्थना क्यों की ? नौकरी मिलने पर मेरी पहली तनख्वाह इतनी ही थी। मैंने जब उससे पूछा तो उसने कहा कि उस समय दिमाग में यही आया था। दिसंबर, 2002 को मेरी परीक्षाएँ समाप्त हुई और जनवरी 5 को मैंने नई नौकरी शुरु की।

जब म्रुझे उसी कंपनी से साक्षात्कार का बुलावा आया तो मैनेजर को लगा कि मैं इस नौकरी के लिए उपयुक्त नहीं हूँ। उन्हें इस बात पर ताज्जुब हो रहा था कि मुझे साक्षात्कार के लिए कैसे बुलाया गया जबकि मेरी पढ़ाई कुछ और की है। लेकिन उन्होंने मुझे किसी और रिक्त स्थान के लिए चयनित कर नौकरी दे दी। जब मैं तेईस साल की हुई तो मेरे माता–पिता ने मेरे विवाह की सोची। उन्होंने वैवाहिक विज्ञापन देखने शुरु किए। वे फरीदाबाद में बसे एक परिवार से मिलने सप्ताहांत को जाने वाले थे। उन्हें फरीदाबाद के ही एक और लड़के का 'बायो–डाटा' मिला था, जो उतना विस्तृत न होने के कारण मेरे माता–पिता उसे छोड़ना चाहते थे। जैसे ही वो पहले वाले लड़के से मिलने के लिए निकलने वाले थे, दूसरे वाले लड़के के पिता ने फोन किया। मेरे माता–पिता कुछ निश्चित नहीं कर पा रहे थे लेकिन वे फरीदाबाद जा ही रहे थे और लड़के के पिता ने

फोन किया था, वे उस दूसरे लड़के के यहाँ भी चले गए। अंततः गुरुजी के आशीर्वाद से सब कुछ ठीक रहा।

सन् 2004 में गुरुजी ने मुझे सुबह–सुबह सपने में दर्शन देकर कहा कि दो सालों के बाद हम विदेश जायेंगे। उस समय मैं विदेश नहीं जाना चाहती थी और कभी सोचा नहीं था कि यह सुनकर कभी मैं खुश हो पाऊँगी। समय आने पर दो साल बाद स्थिति कुछ और थी मैं विदेश जाने के बारे में सुनकर काफी खुश थी। हमारे जर्मनी जाने का कार्यक्रम सितंबर, 2006 का था बिल्कुल गुरुजी के सपने में दर्शन देने के दो साल बाद।

ऊपर बताए गए अनुभवों के अलावे ऐसे कई अनुभव हैं। जब जर्मनी में नौकरी के लिए फोन पर मेरा इंटरव्यू, जो कि अच्छा नहीं गया था, चल रहा था। तब मैंने गुरुजी के शरीर की सुगंध को महसूस किया था। मैं समझ गई थी कि चिन्ता की कोई बात नहीं है। गुरुजी हमेशा मुझे और मेरे परिवार पर अपनी कृपा–दृष्टि रखते हैं।

–सत्संग : जया शर्मा : एक भक्त

शांति के दूत का अनुगामी

जया से मेरी शादी के बाद सनृ 2003 में गुरुजी के जन्म दिन पर मुझे उनके

दर्शन का सौभाग्य मिला। मेरी पत्नी का परिवार गुरुजी का भक्त था। मैं उनके जन्मदिन पर उनका आशीर्वाद लेने गया था। उनसे प्रभावित हो मैं कुछ समय बाद उनकी संगत में गया।

संगत ने शांति के स्रोत के रूप में मुझे प्रभावित किया। गुरुजी के आने और हमारे सामने बैठने से पूर्व ही मुझे शांति की अनुभूति हुई। कोई वहाँ चुपचाप बैठे थे कुछ हाथों को जोड़े हुए, आँखें बंद किए हुए और कुछ पृष्ठभूमि में चलते भजनों को सुनते हुए बैठे थे। लगभग सौ लोगों के रहते हुए भी सभी संयत अवस्था में थे।

गुरुजी के आने पर हम सभी खड़े हो गए और फिर उनके सामने बैठ गए। मैं उनकी तरफ देखने का प्रयत्न कर रहा था लेकिन लगातार उनके चेहरे से तेज

निकलने के कारण मैं ऐसा नहीं कर पा रहा था। ऐसा करना छोड़कर अपनी आँखें मूंद बैठ गया। ऐसा करने से बहुत शांति मिली। कभी वो संगत के बात करते और कभी मजाक। तब से उस शांति के स्रोत अनुयायी बन गया।

सालभर बीतने पर भी मेरे दिमाग में दो बातें चल रही थी एक अच्छी नौकरी और दूसरी अपनी बहन के लिए अचछा रिश्ता ढूँढ़ना। उन दिनों मुझे एक स्वप्न दिखाई दिया। जिसमें मैं (अपने सास–ससुर के साथ) एक आश्रम में गुरुजी के साथ बैठा हूँ और उन्होंने मुझे एक शिवलिंग दिया है। मैंने यह बात जया को बताई तो उसने कहा कि गुरुजी ने हमें आशीर्वाद दिया है। गुरुजी की कृपा से कुछ दिनों के बाद मुझे एक बहुत अच्छी नौकरी मिल गई। नौकरी की चिट्ठी को लेकर मैं उनसे मिलने गया और उन्हें अपनी बहन के लिए रिश्ते ढूँढ़ने की बात भी बताई। मुझे सुनकर वे बोले, ''चिंतामुक्त हो मौज कर।'' ये शब्द सुनते ही मैं समझ गया कि सब कुछ ठीक होगा और गुरुजी सबका ध्यान रखेंगे। इसी बीच मुझे पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। कुछ समय बाद मुझे अपनी बहन के लिए अच्छा रिश्ता मिल गया, वो आज सुखपूर्वक है।

गुरुजी की कृपा से मैं आज अपने परिवार के साथ बहुत खुश हूँ। मुझे जर्मनी से नौकरी का संदेश आया था। यह भी गुरुजी की इच्छा थी जो उन्होंने मेरी पत्नी जया को तब सपने में बता दिया था जब हम देश के बाहर जाने की सोच भी नहीं रहे थे।

– सत्संग : राजेश : एक भक्त

गुरुजी के साथ चमत्कार के कई वर्ष

नवंबर 1984 से गुरुजी के साथ जुड़ना मेरे लिए सौभाग्यशाली रहा है। इसके बाद चमत्कारों की श्रृंखला शुरू सबका विवरण देना यहाँ देना मुमकिन नहीं है। गुरुजी ने मेरे और मेरे मित्रों के जीवन को प्रभावित किया। मैं ऐसे कुछ सत्संगों को यहाँ दे रहा हूँ। गुरुजी को मेरी पहली भेंट तब हुई जब मेरी पत्नी का

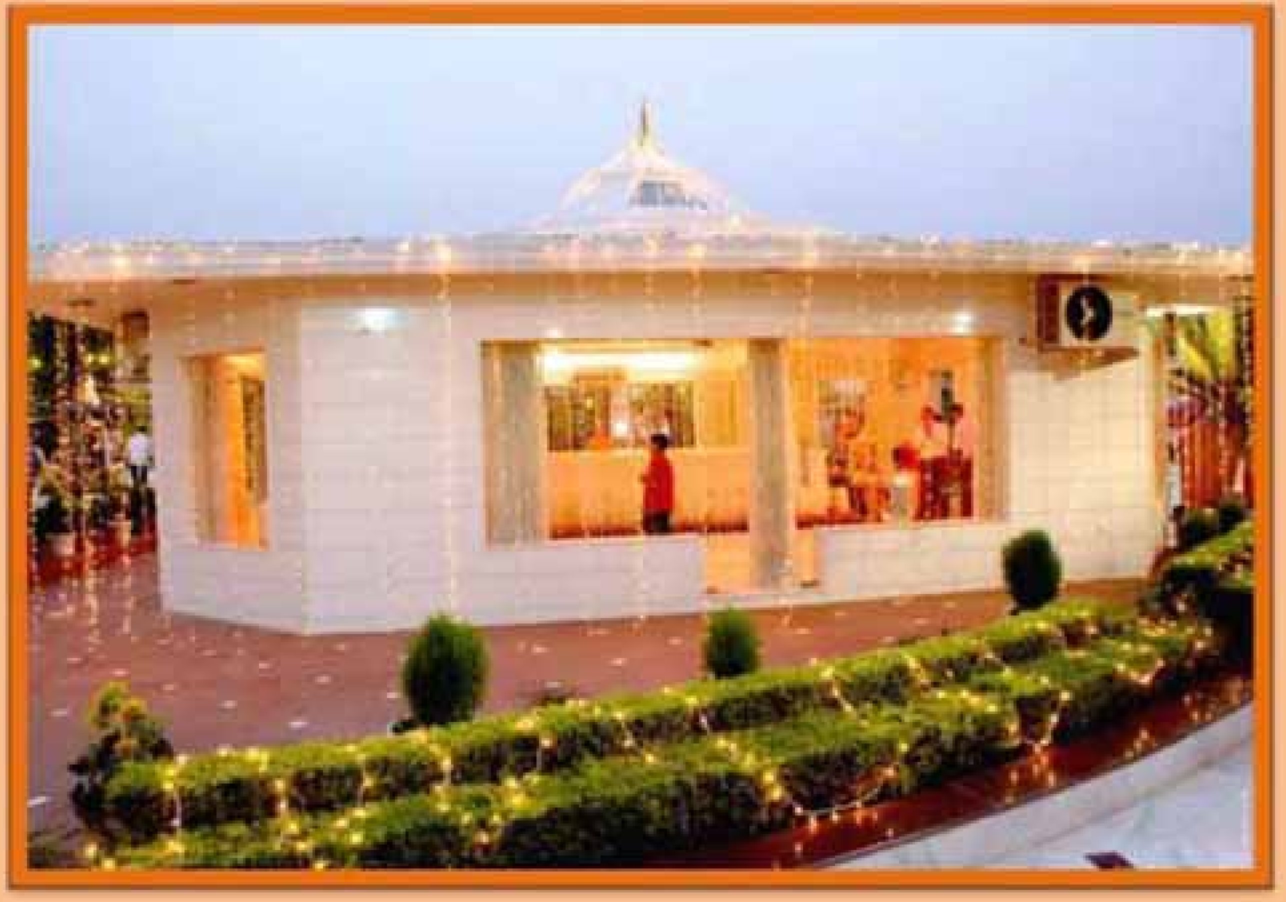

स्कूटर एक्सीडेंट में बाये कंधे का लिग्मेंट टूट गया था। हमें पता चला कि एक महान संत चंडीगढ़ में निवास करता है। और पी.जी.आई के डॉक्टर भी टर्मिनल कैंसर के रोगी को उनके पास भेज देते हैं। हम उनके पास गए। उसके बाद हमारा उस महापुरुष के चरणों में रहते बाईस साल हो गए।

हम गुरुजी के पास चार बजे सुबह गए और उन्होंने मेरा हाथ काफी देर तक पकड़े रखा। ऐसा लगा कि अमृत मेरे शरीर में प्रवाहित हो रहा हो। गुरुजी ने मुझसे कहा कि मैंने एक मुखी रुद्राक्ष पहन रखा है जिस पर शिवलिंग भी है मैंने शिवलिंग जैसे चिन्ह से इंकार कर दिया। उन्होंने मुझे रुद्राक्ष दिखाने को कहा। उन्होंने रुद्राक्ष को हाथ में लेकर उसे देखने का नाटक किया कि वो उसी तरफ देख रहे हैं। फिर उन्होंने कहा, "ये रहा।" और मेरे हाथ में आते ही तब से वहाँ पर एक शिवलिंग चित्रित है।

मेरे लिए रुद्राक्ष का उपचार

मुझे दो साल से अमोबेसीस की बीमारी थी। गुरुजी ने मुझे अमृत देकर घर जाने को कहा। उस दिन चौबीस बार टॉयलेट जाने के कारण मैं ऑफिस नहीं जा पाया। शाम को गुरुजी ने मुझे फोन कर मेरी तबीयत पूछी। मैंने उन्हें बताया कि मेरी हालत खराब है। जबकि गुरुजी ने कहा कि तबीयत ठीक है, सारी बीमारियाँ बाहर निकल रही है। अगली सुबह मैं पूरी तरह से स्वस्थ हो गया और मैंने गुरुजी को यह सूचना दी। उन्होंने कहा कि बीमारी अभी ठीक नहीं हुई है अगले दिन ठीक होगी। उन्होंने मुझे अपने पास बुलाया। जब मैं उनके आश्रम पहुँचा तो अपने रुद्राक्ष को छूते हुए उन्होंने एक चम्मच को मेरे पेट पर रखा। मुझे जैसे बिजली का धक्का लगा और मैं बगर गया। तब वे मुसकुराते हुए बोले, "अब बीमारी चली गई।" उसके बाद वह बीमारी फिर कभी नहीं हुई।

और मेरी पत्नी भी स्वस्थ हो गई

मेरी पत्नी बबली को ठीक करने के लिए वे हमारे घर शनिवार की शाम को आए। उनके निर्देश पर काली उड़द की दाल से तीन चपातियाँ बनाई गई। आधी रोटी को तोड़कर उसे कमोड में फ्लश करने को बोला। बाकी रोटियों को बबली के कंधे पर रखते हुए उन्होंने कुछ जाप किया और फिर मुझे यह कहते

हुए दे दिया कि इन्हें काले कुत्ते को खिलाना है। रात के नौ बजे गली के कुत्तों में काले कुत्ते को ढूँढ़ना मुश्किल था। मैंने अपना संदेह उन्हें बताया गुरुजी ने मुझे नीचे के तल्ले में जाने को कहा। वहाँ सी दिया के पास काले कुत्ते को देखकर मैं चकित रह गया। उसी समय से बबली ठीक हो गई।

एक दिन गुरुजी मेरे घर पर आए जब घर में काफी मेहमान थे। मेरी पत्नी ने बादाम से भरा कटोरा रखा था। तभी उन्होंने मुठ्ठी भर बादाम उठाकर सबको पिस्ता, इलायची आदि कहते हुए बादाम को बाँटाना शुरु कर दिया। बादाम चमत्कारिक रूप से उन सूखे मेवे में बदल गए थे।

विकलांगता को खत्म कर दिया

मेरे साथ रहने वाला एक जवान नाईक आनन्द बाधा पार करने के दौरान बुरी तरह घायल हो गया था, उसकी रीढ़ की हड्डी बुरी तरह टूट गई थी। सैनिक का इलाज करवाया गया लेकिन विकलांग हो जाने के कारण उसे सेना से हटा दिया गया। मैं उसे गुरुजी के पास सुबह के चार बजे ले गया और उनसे इसे ठीक कर देने की प्रार्थना की। उन्होंने कहा क्या मैं उसे ठीक कर दूँ ? उसके पापों का प्रायश्चित कौन करेगा ? वो अगले जन्म में फिर

विकलांग ही पैदा होगा।'' मैं उलझ कर रह गया लेकिन फिर भी मैंने उनसे प्रार्थना की कि उस सैनिक के पाप को उसके तप में जला दीजिए। गुरुजी हंसे और आनन्द को लेटने का निर्देश दिया। उन्होंने उसे छूते हुए उग्र मुद्रा बनाई मानो वो किसी को फटकार लगा रहे हो। जमीन पर सैनिक पिनपिनास्ट रहा था और मैं यह सब देखकर घबड़ा रहा था। कुछ समय बाद उन्होंने आनन्द को उठ जाने को कहा और अपनी सारी पट्टियों को हटाने को कहा। उन्होंने मुझसे कहा यह विकलांगता एक दिन में नहीं समाप्त होगा।इसे तीसरे दिन फिर लाना।''

अगले दिन मैं सुबह पी.टी. के लिए जा रहा था। आनन्द बैरक के बरामदे में झुकने वाली करसरत कर रहा था। जैसे मुझे अपनी ताकत दिखा रहा हो। मैंने उसे तुरन्त रुक जाने को कहा लेकिन उसने कहा कि उसे दर्द नहीं हो रहा है। उसे अपना शरीर पूर्ण स्वस्थ महसूस हो रहा था। मैंने उसे इस गंभीर मसले को किसी के सामने प्रकट न करने की हिदायत दी जब तक तय दिन को गुरुजी उसे देख न लें।

तीसरे दिन हम फिर गुरुजी के पास गए। उन्होंने मुझे अपने पास बुलाकर आनन्द की ओर इशारा कर बताया कि शनि के ग्रह के चंगुल से यह व्यक्ति बचकर आया है। आनन्द अब गोरा और यौवन पूर्ण हो चुका था और उसने करीब तेरह–चौदह किलो वजन कम किया था। गुरुजी ने आनन्द से पूछा कि उनके छूने से उसे क्या हुआ। उसने कहा कि वो उसके बाद से सो नहीं पाया है। गुरुजी ने तुरन्त ही एक चाय का चम्मच उठाया और उसके थाइमस ग्लैंड को छुआ। उन्होंने तब उसे बैरक में जाकर बिना किसी बाधा के देने को कहा। मैं उनके आश्रम से जैसे ही निकला मेरे सहारे चल रहे आनन्द का सिर मेरे कंधे पर झुक गया। ड्राइवर की सहायता से हमने उसे गाड़ी के अंदर डाला। आनन्द

लगातार तीन दिन सोने के बाद पूरी तरह ठीक हो गया। मेडिकर जाँच में डाक्टरों ने उसे सैन्य–कार्य के लिए पूर्णतः स्वस्थ घोषित कर दिया।

मृत की संवेदना

कर्नल डी. आर. पी. चौधरी विधुर थे। वे हमारे घर चंडी मंदिर में सामने रहते थे। एक दिन गुरुजी उनके घर गए और एक स्त्री के तस्वीर की ओर इंगित कर पूछा कि ये किसकी तस्वीर है। कर्नल चौधरी ने कहा कि वो उनकी पत्नी हैं जिसे भाग्य ने उनसे हमेशा के लिए छीन लिये। गुरुजी ने कहा "वो यहाँ मौजूद है। क्या तुम देखना चाहते हो ?" हम चकरा गए। तब उन्होंने अपना हाथ उठाया। अचानक तस्वीर टेबल, जिस पर तस्वीर थी, सब हिलने लगा। फर्श के अलावे आलमारी, कॉट सब हिल रहा था। तब धीरे–धीरे सब शांत हो गया। गुरुजी ने कहा, "उसका बेटा यहाँ है। तुम यहाँ हो वो कहाँ जा सकती है ? वो यहीं है।"

उसे थप्पड़ मारने की जरूरत नहीं है

एक बार गुरुजी मेरे घर पर शाम की संगत के लिए आए। और भी कोई लोग आए हुए थे। कर्नल चौधरी मुझसे अकेले में बात करना चाहते थे। हम एक कमरे में गए जहाँ उन्होंने मुझसे कहा कि उन्होंने अपने किशोर पुत्र टिल्टू को इस महान संत से मिलने के लिए यहाँ बुलाया था। लेकिन टिल्टू ने कहा कि उसकी उम्र संगीत सुनने की है संतो के पास जाने की उम्र उसकी माता की है। कर्नल चौधरी अपने गुस्से पर काबू नहीं रख पाए और उसे थप्पड़ मार दिया। उन्होंने मुझे अपने बेटे को शांत करने को कहा। मैंने उनसे कहा कि मैं उसे जरूर समझाऊँगा। हम दोंनों ड्राइंग रूप में वापस आकर गुरुजी के पास बैठ गए मानों कुछ हुआ ही न हो।

गुरुजी ने कर्नल चौधरी की ओर देखकर कहा, " तुम्हारा बेटा अब बड़ा हो गया है, उसे थप्पड़ मारने की क्या जरूरत थी।" उसी समय टिल्टू ने कमेरे में प्रवेश कर गुरुजी को प्रणाम किया।

GURUJI KA ASHRAM

मन को पढ़ने वाले

पहले गुरुजी सबको एक अमृत का गिलास दिया करते थे। केवल एक गिलास ही देना नियम था। एक बार मैं गुरुजी के निकट बैठा था और अचानक मेरे मन में विचार आया कि क्या गुरुजी मुझे एक और गिलास देंगे। मैं यह जान रहा था कि वो मेरे मन को पढ़ रहे हैं। गुरुजी अमृत का गिलास किसी और को दे रहे थे लेकिन रुक कर उन्होंने गिलास मुझे दे दिया। करीब पन्द्रह मिनट के बाद, मैंने इसे संयोग मानकर यह सोचा कि अगर वो मुझे तीसरा गिलास भी देते हैं तो मैं यह मान जाऊँगा कि वो मेरे मन को पढ़ रहे हैं उन्होंने मुझे अमृत देते हुए कहा कि अपने आप यह अमृत ग्रहण करो।

पहले कोई भी गुरुजी को को छू नहीं सकता था इन्हें दूर से प्रणाम करना होता था। एक बार मैं उनके निकट बैठ जीवन में उनके दर्शन को अपना सौभाग्य मान रहा था लेकिन मैं उन्हें छूकर अपने को और भी भाग्यशाली बनाने की सोच रहा था। अगली दोपहर को गुरुजी ने मेरे घर आकर आराम करने की इच्छा जताई। मैं प्रसन्न होकर उन्हें अपने कमरे में ले गया। उन्होंने मुझसे पूछा कि घर में ही है। मेरे हाँ कहने पर उन्होंने मुझे अपने पाँव में लगाने को कहा। उस समय तक मैं भूल चुका था कि मैंने क्या प्रार्थना की थी। आधे घंटे के बाद उन्होंने मुझे कहा कि अब वो जाना चाहते हैं। मैं समझ गया कि वो मेरी इच्छा की पूर्ति के लिए आए थे।

बयालीस वर्ष की उम्र में दृष्टि–दोष

जब मैं बयालीस वर्ष का हुआ तक मेरी निकट की दृष्टि कमजोर हो गई। गुरुजी के पास जाकर मैंने उनसे मेरी आँखों को ठीक करने की प्रार्थना की। उन्होंने कहा कि मेरी आँखें उम्र के कारण कमजोर हो रही है। मैंने उनसे फिर भी आँखें ठीक करने की प्रार्थना की।

उन्होंने हंसते हुए मुझे लेटने को कहा। उन्होंने आँखों के सामने माचिस जलाकर कुछ जाप करते हुए एक चम्मच से थोड़ा पानी आँखों में डाल दिया। मैंने तुरन्त सब कुछ साफ–साफ देखना शुरू कर दिया। उन्होंने बताया कि यह उपचार दो वर्षों के लिए काम करेगा, उसके बाद प्राकृतिक रूप से आँखें कमजोर होंगी। बाद में मेरा तबादला गुवाहाटी हो गया और मेरी नजदीकी नजर कमजोर हो गई। मैंने अपनी डायरी में तारीख को देखा। ठीक दो साल पहले गुरुजी ने मेरी आँखें ठीक की थी।

भाषण : जो भी नहीं दिया गया

जब मैं चंडी मंदिर में था मेरे साले, जिन्हें जनता में बोलने में डर लगता था, ने मुझे राँची से फोन कर प्रार्थना की हम गुरुजी से उसके आने वाले भाषण को रुकवा दें। हम उसकी तस्वीर लेकर गुरुजी के पास चार बजे सुबह गए। जैसे ही हम उनके कमरे में पहुँचे, उन्होंने हंसते हुए कहा, "क्या तुम्हें कोई चिट्ठी या फोन तुम्हारे साले ने किया था, वो डरपोक क्या चाहता है ?" हमने उन्हें समस्या बताई। उन्होंने हमें बिठाया और दूसरों की समस्या को सुनते रहे।

समय बीतता जा रहा था, हमने उनसे कुछ करने की प्रार्थना की। उन्होंने हमें इंतजार करने का संकेत दिया। अचानक सुबह 8.05 बजे उन्होंने तस्वीर मांगकर उस पर अपनी उंगलियों को चलाया और कहा, "मैंने समस्या समाप्त कर दी है, अब भाषण कोई मुश्किल देगा।" हम वापस आ गए। शाम को मेरे साले ने फोन कर बताया कि भाषण अब कोई सेना मुस्लिम अधिकारी देगा। हमने उससे निर्णय बदलने का समय पूछा तो उसने कहा सुबह ठीक 8.05 मिनट में।

असामान्य व्याधियों का उपचार

एक अर्दली के छुट्टी पर चले जाने से मुझे एक दूसरा अर्दली दिया गया। नये अर्दली को 'सेक्स चेंज' की समस्या थी। हमारा सूबेदार और मैं इस बात को लेकर चिन्ताग्रस्त था। अब वो कैसे जवानों की बैरक में रह सकता है। इसी दौरान गुरुजी हमारे घर आए और मैंने उनसे सैनिक को ठीक करने का अनुरोध किया। गुरुजी ने पूछा, ''तुम कहाँ से इन मरीजों को ले आते हो ?'' मैंने उत्तर दिया, ''गुरुजी स्वस्थ होना इनका भाग्य है और इसलिए ये मेरे पास आते हैं।'' गुरुजी ने एक चम्मच उसकी पीठ पर रखा और जवान पूरी तरह ठीक हो गया।

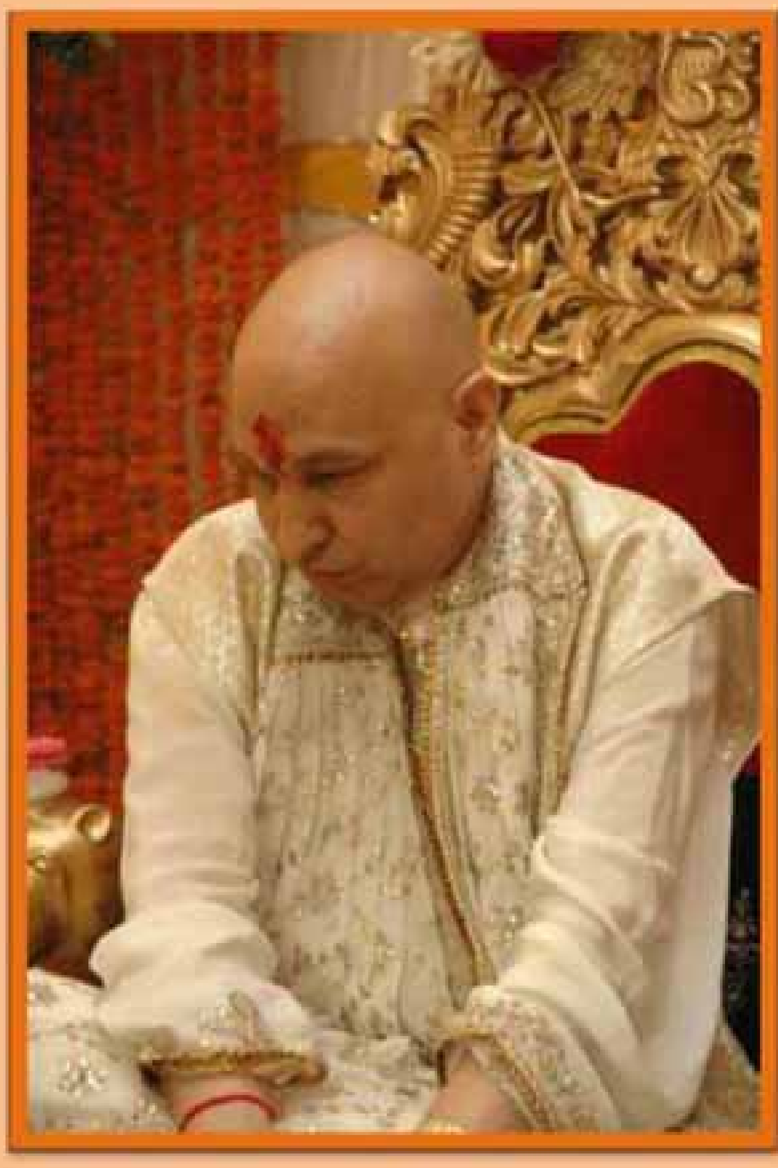

एक बार मुझे बुखार था। गुरुजी हमारे घर दोपहर के तीन बजे मेरी तबीयत पूछने आए। जुकाम, सिरसर्द, बुखार के साथ–साथ मेरे मुँह का स्वाद भी खराब था। उन्होंने मेरी पत्नी को डॉक्टर बुलाने को कहा। कर्नल चौधरी तुरन्त एक थर्मामीटर लेकर आए। उन्होंने बताया कि मेरे शरीर का तापमान 103 अंश का है।। गुरुजी ने चिंतित हो पूछा कि मैं कैसे स्वस्थ हो सकता हूँ। कर्नल चौधरी

ने कहा कि दवाइयों के साथ ठीक होन में अड़तालीस घंटे नही ंतो तीन दिन लग सकते हैं।

गुरुजी ने तब मेरी पत्नी को एक चम्मच, साधारण नमक और थोड़ा पानी लाने को कहा। चीजें लेते हुए उन्होंने मुझे अपना सिर उठाने को कहा और उस काढ़े को मेरी नाक में डाल दिया।

मुझे लगा कि अंदर का सब कुछ बाहर निकल जाएगा। मैं तुरंत टॉयलेट गया और काफी द्रव्य मेरी नाक से निकला। तीस सेकंड के भीतर अपना चेहरा धोकर मैं बाहर निकल आया। गुरुजी ने डाक्टर को तब फिर से मेरे शरीर का तापमान लेने को कहा। उस समय तापमान 97.5 अंश का आया। उन्होंने मुझसे पूछा कि अब भी मुझे जुकाम, सिर दर्द और मुँह में खराब स्वाद है। मैंने कृतज्ञ होकर सभी का उत्तर ना में दिया।

GURUJI KA ASHRAM

गुलाब का स्पर्श

एक बार 1985 के जनवरी के मध्य में गुरुजी ने घोषणा की कि वो मेरी पत्नी के जन्मदिन पर शाम को हमारे घर आयेंगे कुछ महिलाएं अपनी शॉल को सुगंधित करने के लिए गुरुजी को दे रही थीं। गुरुजी शॉल को एक बार ही पहनकर वापस कर कह रहे थे, "ये सुगंध एक हफ्ता 15 दिन या एक दिन के लिए भी रह सकता है– ये विभिन्न महिलाओं पर निर्भर करता है। मैंने उन्हें सेना वाला कम्बल देते हुए पूछा कि इसमें कब संगुध मौजूद रहेगी। हंसते हुए उन्होंने कहा कि एक साल के लिए। उतने ही समय के लिए ऐसा हुआ भी।

देहरादून में गुरुजी के दर्शन का सुख

देहरादून में रहते हुए तीन सालों तक मैं गुरुजी के संपर्क में नहीं रहा। अचानक एक दिन मेरे कानों में तीव्र दर्द हुआ। मेरे दोनों कानों के परदे फट गए थे। अगली सुबह मैं ई.एन.टी विशेषज्ञ के पास गया। उसने मुझे यह सूचना लिख के दी क्योंकि मैं कुछ भी सुन नहीं पा रहा था। डॉक्टर ने कहा कि सैनिक अस्पताल के डॉक्टर कान के परदे का प्रत्यारोपण कर देंगे लेकिन 95 प्रतिशत प्रत्यारोपण असफल रहे है। इसलिए उसने मुझे मानसिक रूप से तैयार रहने को कहा कि मुझे सेना से बाहर निकाला जा सकता है।

उसी रात एक सिक्ख व्यक्ति हमारे घर पर आए। उसने कहा कि गुरुजी ने उसे अमृत की एक बोतल के साथ भेजा है, जैसे गुरुजी को यह बात पता थी कि मेरे कान खराब हो गए हैं। चार–पाँच दिनों तक अमृत पीने से मेरे कान के परदे ठीक हो गए और मैं फिर से सुनने लगा। डॉक्टर विस्मित रह गए।

जब मैं देहरादून में ही थी, सरकार ने सन् 1988 में गाड़ी खरीदने के लिए लोन पास किया। मैं कार कहाँ से दिल्ली देहरादून या कोलकाता से खरीदूँ इस बात को लेकर उलझन में थे। कर्नल चौधरी (अब ब्रिगेडियर) चौधरी का फोन आया। उन्होंने कहा, "चैटर्जी अभी देहरादून में है और गाड़ी खरीदने को लेकर चिंतित है। उससे कहो कि कार चंडीगढ़ में इंतजार कर रही है।" वो तुरन्त बाहर चले गए। बिग्रेडियर चौधरी उनके पीछे गए। किन्तु उस लम्बे गलियारे में कहीं भी दिखाई नहीं दिए। यह सोचकर कि गुरुजी दिल्ली आए हैं उन्होंने जालंधर के घर में फोन कर पूछा कि गुरुजी दिल्ली में कहाँ ठहरे हुए हैं जिससे वो उनके दर्शन कर सकें। फोन उठाने वाले व्यक्ति ने कहा कि गुरुजी कहीं भी नहीं गए हैं और मेरे सामने ढंठकर मुस्कुरा रहे हैं। मैंने कार चंडीगढ़ से खरीदी। 2006 में बेचे जाने तक वो बहुत अच्छी चली।

GURU KA ASHRAM

तेरह साल बाद गुरुजी के दर्शन

नौकरी से अवकाश के बाद मैं सन् 1998 में अहमदाबाद में था। तेरह सालों से गुरुजी से मेरा कोई संपर्क नहीं था। जून, 1998 में मुझे सोने की तकलीफ महसूस हुई। मेरी पत्नी ने मुझे गुरुजी को तलाश कर उनके पास जाने की सलाह दी। बहुत पूछताछ करने पर यह पता चला कि गुरुजी चंडीगढ़ से जालंध्र से पंचकूला और पंचकूला से दिल्ली चले गए है। मुझे उनका पता चल गया।

मेरे पड़ोसी कीर्ति भाई भी गुरुजी के दर्शन के इच्छुक थे इसलिए हम दोनों ने राजधानी में 10 जुलाई के लिए स्थान आरक्षित करवा लिया। जिससे हम 11 जुलाई को दिल्ली पहुँचते। मैंने 9 जुलाई को गुरुजी के आश्रम में फोन कर

बताया कि मैं दिल्ली आ रहा हूँ। किसी ने फोन पर पूछा कि क्या आप अहमदाबाद से कर्नल चटर्जी बोल रहे हैं। उसने यह भी कहा कि गुरु पूर्णिमा के कारण गुरुजी आज पाठ कर रहे हैं लेकिन उन्होंने यह सूचना दे दी थी कि कर्नल चटर्जी आज शाम सात बजे अहमदाबाद से फोन करेंगे। उस व्यक्ति के द्वारा गुरुजी ने मुझे यह बता दिया था कि मैं आ रहा हूँ। वो चाहते थे कि 11 जुलाई को शाम छः बजे आऊँ। यह सब सुनकर कीर्ति भाई चकरा गए थे।

हम दिल्ली पहुँच गए और मैंने रात में नींद के लिए की एक मोटी किताब खरीदी। गुरुजी मेरे अपने हैं यह सोचते हुए मैंने उनसे तीन बजे ही मिलने का निर्णय लिया। हम चार बजे सुल्तानपुर पहुँच गए। लेकिन एम्पायर स्टेट को तलाश करने में नाकाम रहे। कुछ समय बाद मैं समझ गया कि गुरुजी ने हमें छः बजे आने को कहा था। लेकिन हम वहाँ चार बजे ही पहुँच गए थे। मैंने कीर्तिभाई से कहा कि परेशानी मेरी समझ में आ गई है और मुझे इसका उपाय करना है। गाड़ी से नीचे उतरकर मैंने गुरुजी से प्रार्थना की और कहा “अब बहुत हुआ। अब हमें बुला लो।” तुरन्त ही एक लड़के ने दौड़ते हुए आकर

हमसे कहा, "काफी समय से आपकी कार यहाँ से वहाँ जा रही है। आप कहाँ जाना चाहते हैं ?" तब उसने हमें एम्पायर स्टेट का प्रवेश द्वार दिखाया। जो मुख्य सड़क के समीप था, जिसे न देख पाना मुश्किल था।

जैसे ही हम वहाँ पहुँचे गुरुजी ने मेरा आलिंगन कर कहा, "काफी सालों बाद तुम मेरे पास आये हो। तुम इक्कीस दिनों से सोए नहीं हो, आज रात तुम सोओगे। यहाँ लंगर में खाओ।"
लंगर के बाद हम होटल वापस आ गए और मैंने इतिहास का वृहद् ग्रंथ पढ़ना शुरू किया। जल्दी ही मुझे बगल के कमरे से किसी ने तीव्र सुगंध का आभास हुआ। एक सुगंध हमारे कमरे में फैल गई और मैं तुरन्त ही सो गया। अगले दिन मैं फिर से गुरुजी के दर्शन को गया और उनके पैरों की मालिश करते हुए उनसे कहा, "गुरुजी पहले आपके आस–पास एक तीव्र सुगंध रहा करती थी, जो अब हल्की हो गई है।" उन्होंने तुरन्त उत्तर दिया, "क्यों, क्या तुमने कल होटल में उसे महसूस नहीं किया, जब मैं तुम्हें सुलाने के लिए आया था ?" मेरे अनिद्रा रोग का इलाज हो गया था।

नवंबर, 1999 में जब मैं अहमदाबाद से दिल्ली गुरुजी से मिलने आया था, उन्होंने मुझसे कहा, "तुम मेरे पास आओगे।" मेरा सिमेन्स में साक्षात्कार था और मैं एक दिन पहले दिल्ली आया था। जब मैंने उनसे साक्षात्कार के बारे में कहा तो उन्होंने मुझसे कहा कि मेरा चयन हो चुका है और उन्होंने मुझे मिलने वाले तनख्वाह की जानकारी भी दी। मुझे उतनी ही तनख्वाह मिली थी।

लंगर और प्रसाद के द्वारा इलाज

2006 में कुछ महीनों से मेरे दाहिने हाथ की अनामिका ऊंगली मुड़ नहीं पा रही थी और उसमें तीक्ष्ण दर्द था। डाक्टरों ने बताया कि अस्थिबंध सूख चुका है और यह लाइलाज है। उन्होंने मुझे पीड़ानाशक दवाइयाँ लेने का सुझाव दिया। मैंने अपनी समस्या गुरुजी को बताई और उन्होंने मुझे अपनी सारी महंगे पत्थरो वाली अंगुठियों को हटाने की आज्ञा दी। अगले ही दिन मेरी अंगुली ठीक हो गई लेकिन फिर मेरी दायीं अंगुली में दर्द शुरू हो गया। कुछ दिनों मैंने गुरुजी को यह परेशानी बताई तो उनहोंने मुझे अंगुली को गर्म पानी में डुबोने को कहा। वो मुझे उस समय ठीक नहीं करना चाहते, यह सोचकर मैंने उनसे मुझे स्वस्थ करने का अनुरोध किया। तब उन्होंने मुझे लंगर में जाने को कहा। तीन लंगर के बाद ही मैं स्वस्थ हो गया।

सन् 2000 में कभी मुझे सुबह में महसूस हुआ कि मेरे बाये हाथ में कोई अनुभूति नहीं हो रही है, मैं उसे हिला नहीं पा रहा हूँ। उसमें पक्षाधात हो गया था। उसी शाम मैं संगत में गया जहाँ गुरुजी प्रसाद बांट रहे थे। मैंने उन्हें अपनी बीमारी के बारे में बताया थोड़ा जिद कर उन्होंने मुझे प्रसाद को बाहर जाकर ग्रहण करने को बोला। जेसे ही मैंने प्रसाद खाया मेरे आशक्त बायें हाथ में सनसनाहट हुई। उन्होंने मुझे मुझे फिर से प्रसाद दिया जिसके खाते ही मेरा हाथ और अंगलियाँ चलने लगीं। उन्होंने मुझे तीसरी बार प्रसाद दिया और पन्द्रह मिनट के अंदर मेरे हाथ की गतिशीलता वापस आ गई।

गंजेपन का इलाज

मेरी पत्नी के सामने से बाल कम होते जा रहे थे। तीस सालों से गंजेपन को दूर करने के उसके सारे प्रयास–एलोवेरा शैम्पू, अर्निका प्लस, शहनाज हुसैन विफल होते जा रहे थे। दिल्ली आने पर मैंने गुरुजी को उसकी परेशानी बताई। उन्होंने तुरन्त हाथ उठाया और कहा, "बबली आंटी हट गया, ठीक होने में कुछ समय लगेगा।" एक सप्ताह के अंदर ही नये बाल आ गए और मेरी पत्नी ठीक हो गई।

सन् 2003 में मुझे मूत्र संबंधी बीमारी हो गई। डॉक्टरों ने मुझे 'प्रोस्टेट ग्लैंड' का ऑपरेशन कराने का सुझाव दिया। मैं गुरुजी के संगत में था और मन–ही–मन उनसे कहा, "कृपया मुझे स्वस्थ कर दे।" उन्होंने तुरन्त अपना हाथ सर के ऊपर उठाकर कोई मुद्रा, अंगूठे का तर्जनी ऊंगली को रगड़ना, बनाई। मुझे लगा कि उन्होंने मेरे लिए कुछ किया है लेकिन मैं विश्वस्त नहीं था। फिर मैंने प्रार्थना की, अगर यह मेरे लिए किया गया है तो गुरुजी कृपया मेरी ओर देखिए।" उन्होंने मेरी ओर देखा और मैं निश्चिन्त हो गया। अगले ही दिन से मैं स्वस्थ हो गया।

कोलकाता में मेरे बारशि हुई

अप्रैल, 2007 के अंत में मुझे कोलकाता जाना पड़ा। लंगर के पश्चात मैं गुरुजी से आज्ञा लेने को गया और उनसे कोलकाता को शीतल रखने की प्रार्थना की लेकिन उन्होंने मुझसे क्रोधित हो कहा, "अपनी नौकरी को छोड़ मेरे पास आ जाओ।" मैंनें कुछ नहीं कहा। बाद में उन्होंने गायत्री से कहा कि उन्होंने मेरे

लिए कोलकाता में बारिश भेज दी है। मैं शुक्रवार शाम को राजधानी में बैठा और कोलकाता में अपने संबंधी को फोन किया। उसने मुझसे कहा कि वहाँ लगातार बारिश हो रही है। मेरे वहाँ नौ दिन रहने तक या तो वहाँ लगातार बारिश हो रही है। मेरे वहाँ नौ दिन रहने तक या तो वहाँ लगातार बारिश हो रही है। मेरे वहाँ नौ दिन रहने तक या तो वहाँ बादल छाए रहे या हल्की बारिश होती रही। जब मैं दिल्ली वापस आया तो गुरुजी मुझे देखकर मुसकराते हुए पूछा, "क्या कोलकाता में बारिश हो रही थी ?" मैंने उनसे कहा, "आपने मेरे को इतना जोर से डॉट दिया कि मैं आपको बोल नहीं पाया था, लेकिन आपने दया कर मेरे मन की बात सुन ली। "उन्होंने कहा जा ऐश कर।"

दैवीय उपहार

एक बार चंडीगढ़ में गुरुजी ने मुख्यमंत्री की निकट संबंधी एक स्त्री को अपना हाथ उठाकर सोने के कर्णफूल दिए। लेकिन स्त्री ने शिकायत के लहजे में कहा, "मैं एक कर्णफूल के साथ क्या करूँगी ?" गुरुजी ने फिर से अपना हाथ उठाकर दूसरा कर्णफूल प्रकट कर दिया। उस स्त्री ने फिर शिकायत की, "गुरुजी दोनों की नक्काशी समान नहीं है।" गुरुजी ने फिर कहा, "मैं कुछ नहीं कर सकता। शिवजी ने जो देना था, उन्होंने दिया।"

एक बार लंगर के बाद एम्पायर स्टेट में संगत कम हो गई, हम गुरुजी को घेरकर बैठ गए। उन्होंने सिमेन्स के निदेशक हरमिन्दर सिंह से पूछा "क्या आपने चटर्जी के अनुभव को सुना है।" उन्होंने न में उत्तर दिया। तब मुझे अपने अनुभव वर्णित करने को कहा। कुछ समय बाद गुरुजी सख्त हो गए और उनका चेहरा लाल हो गया। अचानक उन्होंने अपना हाथ उठाया और कहीं से डमरू जैसी चीज उनके हाथ में आ गई। वे उसे तुरन्त मेनका गांधी को देकर पुनः नमस्कार

की मुद्रा में मूर्तिवत् हो गए। कुछ समय बाद वे बोले, ''शिवजी ने क्या दिया है, देखा जाए। ''उन्होंने डमरू जैसी चीज को तोड़ा जिसमें खोया जैसा प्रसाद मिला। उन्होंने सबको वह बांटा और फिर भी कुछ लोग बच गए। मेनका को वो प्रसाद देकर बोले, ''इसे फ्रिज में मत रखना। यह कभी खराब नहीं होगा।''

– लेफ्टिनेंट कर्नल (रिटायर्ड) डी एस चटर्जी सिमेन्स एक्जक्यूटिव

GURUJI KA ASHRAM

गुरुजी : मेरे माता–पिता ईश्वर

मई 2002 शनिवार की शाम वातावरण उल्लासमय था। हम गुरुजी के साथ रामगढ़ घूमने जाने वाले थे। रामगढ़ नैनीताल से इक्कीस किलामीटर दूर एक स्थान है, जहाँ एक भक्त का रिसोर्ट हे। सब कुछ तैयार था, दो बस और कुछ गाड़ियाँ एम्पायर स्टेट के द्वार के बाहर खड़ी थीं। गुरुजी के इशारे पर संगत बस के अंदर जाने लगी और गुरुजी भी एक बस में चले गए। भक्त भी उसी

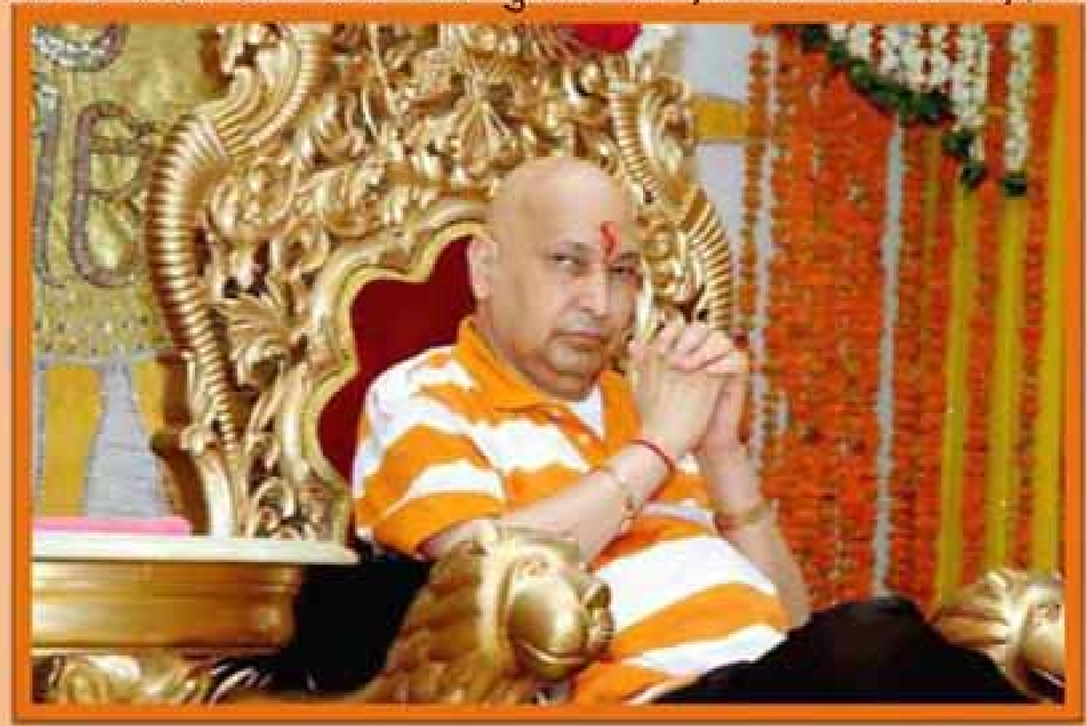

बस में जाना चाहते थे जिसमें गुरुजी सवार थे इस तरह हमारे यात्रा शुरू हो गई।

नैनीताल : दम्पति को संतान की प्राप्ति हुई

नैनीताल से आए भक्त जैसे ही प्रणाम करने को झुका, गुरुजी ने कहा, ''तुम्हारी तीन पत्नियाँ हैं और तुम संतान चाहते हो।'' नासर यह सुनकर चकित रह गया

कि गुरुजी उसके व्यक्तिगत जीवन के बारे में जानते हैं कि उसकी तीन पत्नियाँ हैं। और उसे कोई बच्चा नहीं है। नासर अपनी पत्नी के साथ रोज गुरुजी के दर्शन के लिए आता रहा । कुछ दिनों बाद वह अकेला आया तो गुरुजी ने उससे पूछा कि तुम्हारी पत्नी कहाँ है ? उसने कहा कि पत्नी को पेट में दर्द, सर दर्द है उसकी तबीयत ठीक नहीं है। गुरुजी ने उसकी बात को काटते हुए नासर को कहा कि उसे कोई बीमारी नहीं है, उसने गर्भ धारण किया है।

उनकी भविष्यवाणी दो महीने बाद सच साबित हुई, जब नासर ने गुरु के जन्मदिन 7 जुलाई को संदेश भेजा कि डॉक्टर ने उसकी पत्नी के गर्भ धारण की बात को सच बताया है। पन्द्रह सालों की परेशानी महापुरुष के प्रथम दर्शन से ही समाप्त हो गई। फरवरी 2003 में नासीर को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई और वो शिवरात्रि के दिन गुरुजी को धन्यवाद करने और उनसे पुत्र का नाम रखवाने के लिए आया। गुरुजी ने बच्चे का नाम रखा, मुराद, जिसका अर्थ होता है इच्छा की पूर्ति।

रेलगाड़ी की यात्रा ने स्वस्थ कर दिया

मैं मनेसर दिल्ली से चालीस किलोमीटर दूर में एन एस जी के एक कमांडों यूनिट का कमान अधिकारी था। दिसंबर, 1996 में गुरुजी चंडीगढ़ में थे और मुझे चंडीगढ़ दो–तीन के लिए आने का उनका संदेश मिला। मैं तुरन्त छुट्टी लेकर चला गया। उस समय मुझे स्पांडिलाशर्टस के कारण पूरे दाहिने बांह में तेज दर्द रहता था जिससे मेरा दाहिना अंगूठा सुनन हो जाता था।

मैं चंडीगढ़ पहुँच गया आँख गुरुजी के साथ दो दिन रहने के बाद दस से रविवार को उनकी आज्ञा लेकर लौटने का निर्णय लिया। उन्होंने मुझे अनुमति तो दी लेकिन मुझे ट्रेन से लौटने को कहा। मैं ट्रेन से लौटने को कहा। मैं ट्रेन से बिना आरक्षण और इतनी ठंड में जाने को लेकर आशंकित था। बिना आरक्षण के सर्दी और भी परेशान कर सकती थी।

एक अधिकारी ने मुझे चंडीगढ़ रेलवे स्टेशन पर पहुँचाया और मुझे स्लीपर कंपार्टमैंट में बीच की सीट मिल गई। मैंने ढ़ाई बजे रात में ट्रेन पकड़ी और तुरन्त ही सो गया। मैं ट्रेन के सुबह साढ़े सात बजे नई दिल्ली पहुँचने पर ही उठा। मैं पीड़ादायक दर्द की उम्मीद कर रहा था। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। उस दिन से आज तक दस साल हो गए हैं लेकिन मेरा 'स्पांडिलाइटिस' का दर्द मुझे फिर कभी नहीं हुआ।

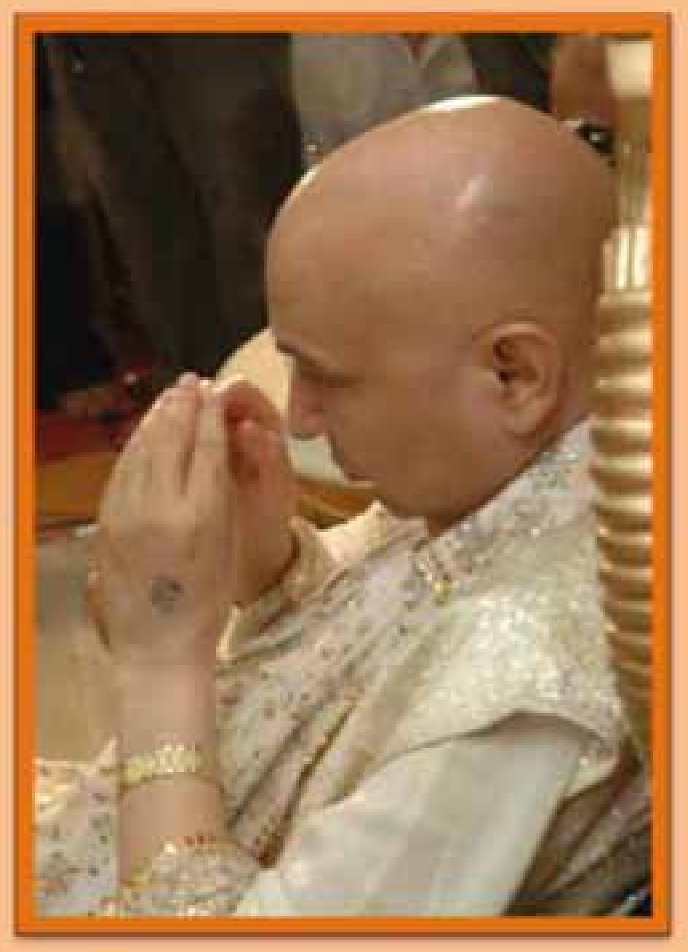

मैंने कभी भी यह समस्या गुरुजी को नहीं बताई थी और न उन्होंने ही इस बारे में मुझसे बात की थी। मैंने सिर्फ सद्गुरू के हुक्म का पालन किया जो दैवीय अभिप्राय को व्यक्त करता है और समस्या समाप्त हो जाती है।

सदगुरु की दैवीय इच्छा हितकारी होती है। वो आधुनिक वैज्ञानिक स्वस्थ करने तरीकों का उपहास उड़ा सकती है। मुझे 1995 में मधुमेह हो गया और मेरा सुगर लेवल और रक्तचाप बहुत ऊँचे स्तर पर था। यह मेरे व्यवसयिक दृष्टिकोण से चिन्ता का विषय था क्योंकि सेना में स्वस्थ होना अति आवश्यक है।

मैं अपनी समस्या लेकर गुरुजी के पास गया। गुरुजी ने अभिमंत्रित तांबे के गिलास से मुझे रोज पानी पीने को कहा। उसके एक हफ्ते के बाद मुझे दुबारा जांच करवाने को कहा। इस बीच मैं गुरुजी के प्रसाद जो सामान्यतया मिठाइयाँ होती हैं, को ग्रहण करता रहा। मिठाइयां जो मधुमेह रोगियों के लिए जहर है। एक सप्ताह के बाद जाँच के परिणाम विस्मयकारी आए। खून जाँच के हर पैरामीटर में सामान्य स्तर पर था और मेरा रक्तचाप नवयुवक के समान था। ऐसा इतना मीठा प्रसाद खाने पर भी शुगर लेवल बिल्कुल सामान्य सतर पर रहा।

GURUJI KA ASHRAM

ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि गुरुजी के लंगर और प्रसाद में अमृत होता है जो सभी बीमारियों से छुटकारा दिलाता है। केवल आपको आस्था और श्रद्धा से स्वीकार कर ग्रहण कर लेना है तभी, और सिर्फ तभी, वो दैवीय चमत्कार को अपने जीवन में महसूस कर सकता है। गुरुजी के पास कई साधन हैं। अपना आशीर्वाद भक्त को देने के लिए। कभी–कभी गुरुजी की आज्ञा अजीब हो सकती है किन्तु उसे मानने से ही और उनके निर्देश का पालन करने से ही आपका कल्याण होगा, यही समर्पण है।

जब आर्मी यूनिट पर दया की वर्षा हुई

सन् 1995–1998 के दौरान मैं एन एस जी का कमान अधिकारी था जब मुख्य निदेशक कमान का निरीक्षण करने वाले थे। सैनिकों ने यूनिट को संवारने में काफी मेहनत की थी। यूनिट की सड़क को धूल से साफ कर दिया गया था, यहाँ तक कि आस–पास के पड़ों की पत्तियों को छांटा गया था। पेड़ों के तने और यूनिट आती सड़कों के किनारों को गेरू से रंगा गया था। संपूर्ण यूनिट निरीक्षण के लिए तैयार था और सभी महानिदेशक से प्रशंसा सुनने की उम्मीद कर रहे थे।

निरीक्षण वाले दिन मैं सुबह सात बजे दिल्ली से मनेसर गाड़ी चलाकर जा रहा था। जब मूसलाधार बारिश शुरू हो गई । मनेसर के निकट पहुँचकर निरूत्साहित हो गया। सैनिकों की सारी मेहनत धुल गई थी। मैंने गुरुजी से ऐसा न होने देने की प्रार्थना की। यूनिट के गेट में प्रवेश करते ही मैं विस्मित रह गया क्योंकि वहा के आस–पास बारिश होने का नामो–निशान नहीं था। अधिकारियों ने बताया कि यूनिट के अलावे हर जगह

बारिश हो रही है। निरीक्षण करने पर महानिदेशक ने इसे दूसरे यूनिटों के लिए एक उदाहरण बताया। लेकिन उनके जाते ही यहाँ बारिश शुरु हो गई। दैवीय चमत्कार स्पष्ट नजर आ रहा था।

एक भक्त की प्रार्थना गुरुजी के आशीर्वाद को सुनिश्चित कर देती है। मुझे लगा कि ईश्वर के संरक्षण में हमारा यूनिट था क्योंकि हर जगह तेज बारिश हो रही थी। शाम को जब मैं एम्पायर एस्टेट गया तो गुरुजी ने मुझे इस घटना के बारे में पूछा जिससे यह स्पष्ट हो गया कि उन्होंने ही बारिश को हमारे काम से दूर रखा। ऐसी घटनाएँ बताती हैं कि गुरुजी मेरा और मेरे परिवार का ध्यान रखते हैं। मेरे पास उस सर्वश्रेष्ठ को धन्यवाद करने के लिए शब्द नहीं है।

आस्था के द्वारा वजन बढ़ना

GURUJI KA ASHRAM

मेरी पत्नी पतली रही है कोशिशों के बाद भी उनका वजन नहीं बढ़ पाया। गुरुजी उसे बार–बार कहते थे कि उन्होंने उसका वजन 5–10 किलो बढ़ा दिया है। शुरू में परिवार ने वजन में परिवर्तन को अनुभव नहीं किया। लेकिन कुछ समय बाद उसके शरीर में भारी परिवर्तन आया। वजन इतना बढ़ गया कि सबसे छोटे बेटे, ने उसे मोटू कहना शुरू कर दिया।

गुरुजी के पास अपने साधन और समय है किसी के जीवनचक्र को चलाने के लिए। सामान्य प्राणी के तौर पर हमारी दृष्टि सिर्फ निकट भविष्य और छोटी–छोटी चीजों पर रहती है। सर्वज्ञ गुरु भूत अकल्पनीय भविष्य और वर्तमान से भी परे देखते हैं। जब वो किसी की इच्छा की पूर्ति करते हैं तो वो सिर्फ व्यक्तिगत नहीं होता। इसलिए व्यक्ति को बिना प्रश्न पूछे समर्पण की भावना

रखनी चाहिए। उसे गुरुजी को पिता माता परमप्रिय मित्र के स्थान पर रख उसके निश्छल प्रेम में उसके चरणों में समर्पित हो जाना चाहिए।

भक्त के लिए यह अत्यावश्यक है कि वह सद्गुरू पर ही छोड़ देना चाहिए। सद्गुरू ही यह जानता है कि उसके भक्त के लिए क्या उचित है उसकी संवेदना भक्त के करीबी के लिए भी समान ही होती है। मैं गुरुजी को भगवान शिव स्वरूप मानता हूँ, जिन्होंने देवताओं और राक्षसों द्वारा किए गए समुद्र मंथन में जहर पी लिया। गुरुजी भी भक्त के जीवन से जहर को निकाल देते हैं। आपके कितने भी करीबी आपको दर्द से चाहते हुए भी मुक्त कर सकते हैं। आपके माता–पिता मि, संबंधी बच्चे कोई भी ये नहीं कर सकता। केवल सद्गुरू ही आपको जीवन प्रदान कर सकते हैं। रामचरितमानस की ये पंक्तियां यहाँ उपयुक्त हैं :

GURUJI KA ASHRAM

"मोरे प्रभु तुम गुरु, पितु, माता,
जाऊँ कहाँ तजी पड़ जल जाता।

मेरी भतीजी को विषाद से बाहर निकाला

मेरी भतीजी भावना, जो जयपुर में रहती है, को स्थानीय अस्पताल में भर्ती करवाया गया। जब मैं गुरुजी के दर्शन के लिए एम्पायर स्टेट जा रहा था तभी मेरी बहन का फोन आया। वो रो रही थी लेकिन मुझे गुरुजी को समस्या बताने का मौका नहीं मिल पा रहा था।
जब ज्यादातर भक्त चले गए तो गुरुजी सभागार में बैठकर बोले कि उनकी तबीयत ठीक नहीं लग रही है। मैंने सोचा जब उनकी तबीयत ठीक नहीं है तो मुझे उन्हें कुछ नहीं बताना चाहिए। लेकिन जब उन्होंने भावना के रोगलक्षण मुझे

बताए तो मैं हैरान रह गया। उन्होंने एम्स से मुझे एक दवा लाने को कहा। उस सम रात के एक बजे मैं दवा लेकर आ गया। गुरुजी ने उसे कूड़े में फैंकने को कह मुझे पत्नी के साथ जयपुर जाने को कहा।

सुबह बहन को फोन करने पर पता चला कि भावना अब ठीक है और शाम तक उसे अस्पताल से छुट्टी मिल जाएगी। उसकी बीमारी ठीक होने पर भी वो दुःख में थी। अगले दिन मेरी पत्नी जयपुर चली गई। जैसे ही वो भावना से मिली, भावना खुश हो गई और उसका दुःख गायब हो गया। यह परिवर्तन सबको नजर आ रहा था। गुरुजी को आशीर्वाद मेरे पूरे परिवार के साथ था।

गुरुजी एक महापुरुष दैवीय सत्ता है। जब मैं उनके साथ चलता हूँ तो उस महापुरुष के शरीर से गुलाब की सुगंध निकलती है। जब आप संगत में बैठते हैं और अपने आपको उन्हें समर्पित कर देते हैं तो आपका शरीर उस खुशबू को महसूस करता है। यह उनके तेज का प्रताप है। यह नश्वर और अनश्वर गुरू का अंतर है। सद्गुरू सर्वज्ञ हैं। उनकी उपस्थिति किसी भी समय

कितने ही स्थानों पर पाई जा सकती है। उनकी शारीरिक उपस्थिति से दूर पति–पत्नी के वार्तालाप को वो दुहरा सके हैं हमार देश का महान साहित्य उनके विशाल व्यक्तित्व का छोटा वर्णन है। जैसे रामचरित मानस में कहा गया है – ''बिनु पग चलहिन सुनहिन बिनु काना कर बिनु कर करे विधि नाना''

– कर्नल रिटायर्ट एस. के. जोशी, सीनियर एक्क्यूटिव रिलायंस इंफोकॉम

GURUJI KA ASHRAM

उनके चरणों का स्पर्श

मुख्य सलाहकार मि. गिल के गुरुजी के बारे में बताने के बाद हमने गुरुजी प्रथम

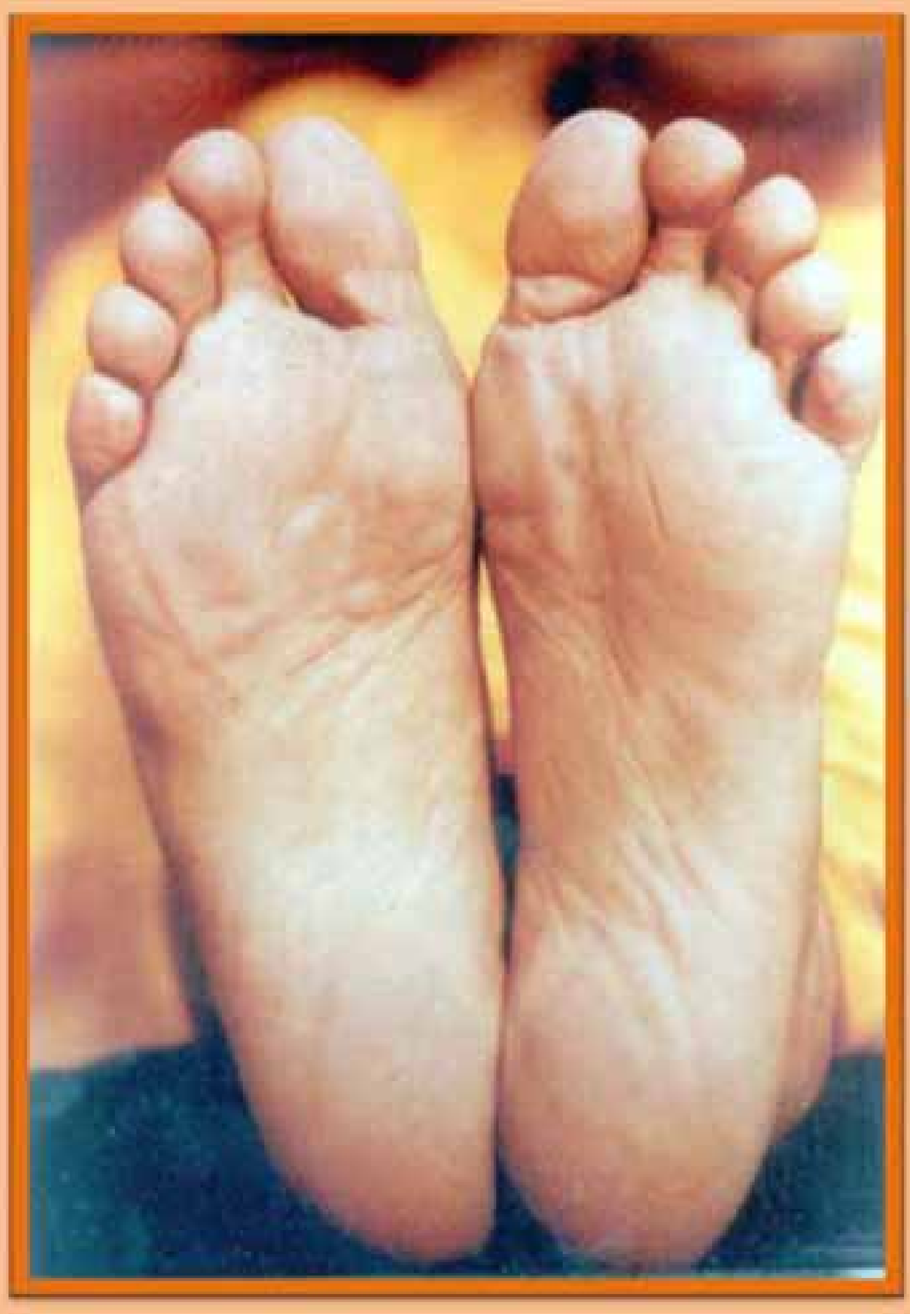

दर्शन फरवरी 1999 में किए। मुझे उनका आशीर्वाद तुरन्त मिला। मेरे पेट के नीचे और पाँव में बहुत तेज दर्द था। दवाइयाँ काम नहीं कर रही थी, मैं बहुत बेचैन था। गुरुजी के चरण छूते ही मेरे शरीर में एक तरंग प्रवाहित होती है जिससे मुझे ठीक होने का अनुभव होता है। उनके हाथों से प्रसाद ग्रहण करने के बाद मुझे दर्द गायब होने का आभास होता है। उनके सुझाव के अनुसार मैं ठीक होने के बाद हर पखवारे उनके दर्शन को जाने लगा।

मैं अपने पुत्र को भी लाया जो गुरुजी के प्रति आक्रामक और अवज्ञाकारी था। गुरुज की कृपा से वो एक स्नेही व्यक्ति में बदल गया जो हमेशा गुरुजी के आशीर्वाद का आकांक्षी था। उसकी गाड़ी से गंभीर दुर्घटना हो गई थी। गाड़ी बुरी तरह टूट गई थी लेकिन उसे गुरुजी ने बचा लिया था।

गुरुजी के निर्देशानुसार हम चंडीगढ़ एक विवाह में शामिल होने गए। वहाँ गुरुजी ने मि. गिल के घर जाने को कहा, जहाँ सद्‌गुरू उसी दिन कुछ घंटे के लिए रुके थे। जिस कमरे में वे ठहरे थे, वो गुलाब की सुगंध से भरा हुआ था और हमें उनके दर्शन का सौभाग्य तस्वीर के द्वारा प्राप्त हुआ। श्री गुरूनानक देव का चेहरा साफ तौर से तस्वीर में प्रकट हो हमें आशीर्वाद देता है। एक दूसरे अवसर पर मुझे भगवान शिव के नाग–देवता का स्वरूप गुरुजी के पानी के गिलास में देखने का सौभाग्य प्राप्त होता है।

GURUJI KA ASHRAM

अवकाश प्राप्ति की परेशानियाँ

सन् 2001 में मेरे पति को उनके कार्यालय में बड़े–छोटे अधिकारियों द्वारा परेशान किया जाता था। गुरुजी की कृपा से उन अधिकारियों का तबादला हो गया। जब वे सन् 2003 में अवकाश प्राप्त करने वाले थे तब समस्या फिर से खड़ी हो गई। उनके कुछ सहकर्मी उन्हें शांतिपूर्वक अवकाश प्राप्त नहीं करने देना चाहते थे। उन पर झूठे आरोप लगाए गए। इससे वो काफी परेशान हो गए क्योंकि इससे उनके अवकाश प्राप्ति के लाभ जुड़े हुए थे। उन्होंने गुरुजी से प्रार्थना की। सभी आरोपों को हटा लिया गया और उन्हें सभी लाभ, पेंशन की प्राप्ति हुई।

मेरे बच्चों को आशीर्वाद मिला

मेरी बेटी पढ़ाई में कमजोर होने के कारण आगे नहीं पढ़ना चाहती थी। लेकिन गुरुजी का आशीर्वाद मिलने के बाद उसने एल एल बी में दाखिला लिया। अपने पहले ही साल में उसे प्रथम श्रेणी मिली। मेरा बेटा 'इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियर था जो पटनी कम्प्यूर्टस के लिए काम करता था। नौकरी मिलने के बाद ही उसे गुरुजी के आशीर्वाद से अमेरिका में प्रशिक्षण के लिए दस साल का वीजा मिल गया। गुरुजी हमेशा हम पर कृपा कर हमारे साथ रहते हैं। अगर हम गुरुजी के दर्शन नहीं कर पाते तो वो हमें स्वप्न में दर्शन देकर आशीर्वाद देते हैं।

– दीपा और जी. पी. सिंह भक्त

GURUJI KA ASHRAM

दुर्घटना से पहले गुरुजी का स्मरण

सन् 2005 में गुरुजी के जन्मदिन के समारोह की तैयारी में दीपक गुप्ता को बड़े मंदिर में काम था। उन्हें एक भक्त का बैग देने, जिसे वो भूल गया था के लिए फोन आया। उसे बैग बड़े मंदिर से दस किलोमीटर दूर छतरपुर मंदिर के मोड़ पर था देना था।

बैग की तुरन्त जरूरत थी। दीपक 100 किमी. से भी अधिक तेजी से गाड़ी चला रहा था। बारिश बहुत ज्यादा होने से सड़क भींगी हुई थी। छतरपुर मंदिर से तीन–चार किमी. पहले एक मोड़ पर दीपक को टेम्पो दिखाई दिया जिसने रास्ता रोक रखा था। वो न तो रुक सकता था और न ही टेम्पों को पार कर सकता था। उसने टक्कर से पहले ब्रेक लगाते हुए आँखें मूंदकर गुरुजी को याद किया और कुछ धक्कों के बाद अपनी आँखें खोली। उसकी कार ने टेम्पो को पार कर लिया था और गाड़ी का में इग्नीशन बंद और गाड़ी न्यूट्रल गियर में थी, टेम्पों

का ड्राइवर उसे घूर रहा था। टेम्पो के दोनों ओर कोई जगह नहीं थी जिससे कार पार हो सके।

दीपक घबड़ा गया था। बैग देने के बाद वो बड़े मंदिर वापस आ गया। उसने किसी को कार की पड़ताल करने को कहा क्योंकि उसने धमाके की आवाज सुनी थी। आश्चर्यजनक रूप से, कार को कोई भी नुकसान नहीं हुआ था और न ही टक्कर के कोई निशान उस पर मौजूद थे वह एक दुर्घटना से रहस्यात्मक तरीके से बच गए।

– दीपक गुप्ता

GURUJI KA ASHRAM

पुराण गुरु की मेरी तलाश

जब से मैंने होश संभाला है मेरी आंतरिक इच्छा अपने एकदम मेरे गुरु के दर्शन करने की रही है। मैंने हमेशा गुरु की उपस्थिति का अनुभव किया है लेकिन उन्हें देख नहीं पाई हूँ। विरुद्ध परिस्थितियों में मैंने उन्हें याद किया है। बचपन से ही एक दैवीय शक्ति मुझे संरक्षित करती रही है।

गुरुजी के प्रथम दर्शन

मैं और मेरे पति चंडी मंदिर में थे। एक सैन्य अधिकारी की बेटी की तबीयत खराब थी, मैंने उसे जांच करने के लिए घर भेजने को कहा। जांच में 'वायरल हेपेटाटिंस' निकलने मैंने उसे कुछ दवा देकर घर भेज दिया। बाद में मैंने उस लड़की के पिता से लड़की के तबीयत के बारे में पूछा। उनके यह कहने पर कि गुरुजी के घर आने के कारण अब वो बिल्कुल ठीक है तो मैं चकित रह गई। मैंने उनसे शिकायत की कि

उन्होंने मुझसे कभी गुरुजी का जिक्र नहीं किया और कहा कि अब वो जब आए तो मुझे भी बुला लें।
उन्होंने ऐसा ही किया। मैंने गुरुजी को उनके पास बैठा पाया। मुझे तुरन्त पहचान कर कहा, "आइये डॉ. साहिब डॉ. भगवान दास और लीलावती की पुत्री। उन्होंने मेरे माता–पिता का नाम लिया, मैं समझ गई कि यही मेरे गुरु है। अगले ही दिन उनके मंदिर में मुझे दीक्षा दी गई। उसके बाद अनुग्रहों का सिलसिला शुरू हो गया।

हमारी आत्मा के उद्धारक

हमें गुरुजी द्वारा कई विपत्तियों से बचाया गया। जैसा कि मैंने कहा कि गुरुजी के दर्शन से पहले भी मैंने उनके संरक्षण कवच का अनुभव किया है। एक बार में श्रीनगर में गाड़ी चला रही थी जब एक कार, जो सैन्य अधिकारी की थी, जिसे मैंने पहचान लिया, मेरी गाड़ी के बिल्कुल सामने ही आ गई। मैंने टक्कर से बचने के लिए गाड़ी मोड़ ली बचाने के चक्कर में मेरी कार एक पुलिया की तरफ चली गई। गाड़ी का तीन चौथाई हिस्सा एक सड़क के बाहर लटक रहा था और गाड़ी रुक चुकी थी। अधिकारी अपनी कार से उतरकर बोला कि 'मेरी गाड़ी के ब्रेक खराब हो गए थे।' और मैं बचने के लिए भगवान का शुक्रिया अदा कर रही थी।

दिसंबर 2005 को मैं अपने बेटे की कार लेकर नजदीक के बाग में सैर करने गई। एक ट्रक एक क्रासिंग के पास आया जो मुझे टक्कर मार सकता था लेकिन ट्रक चालक ने दिशा बदल दी। सामान्यतः छोटी गाड़ियों को ऐसा ही रवैया अपनाना पड़ता है। ट्रक चालक ने गुजरते हुए मेरी ओर देखा और मैं यह

कहने पर विवश हो गई कि मुझे मेरे भगवान ने बचाया है। ये सुनकर वो मुस्कुराते हुए चला गया।

सेना में पदोन्नति का पहला उदहरण

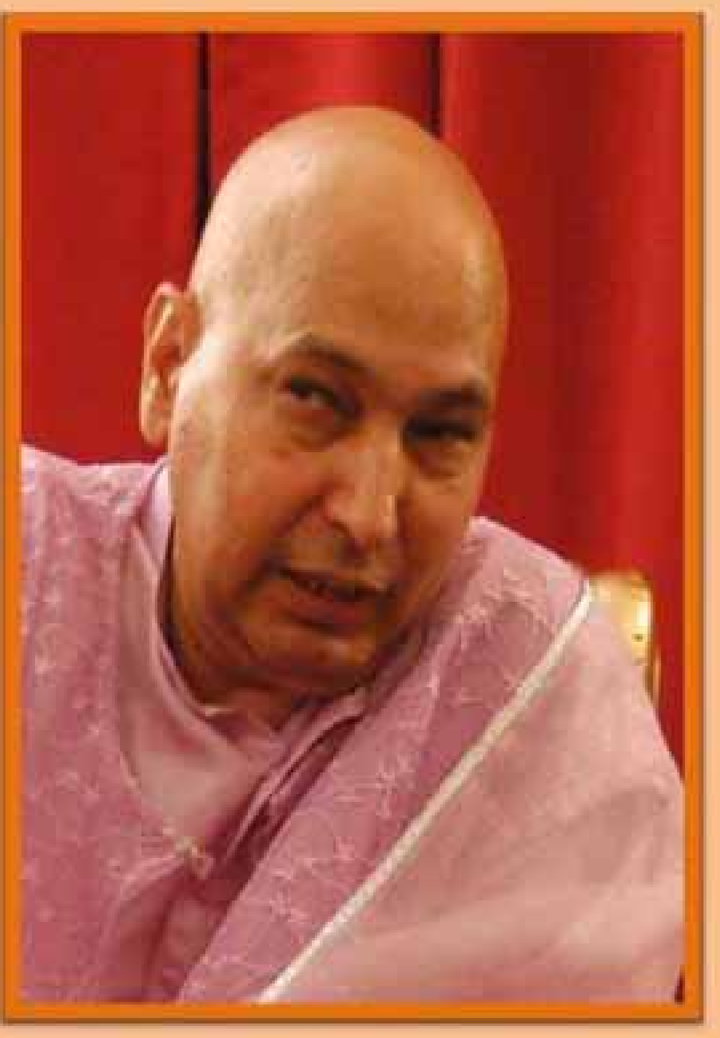

इसी समय गुरुजी ने चंडीमंदिर में नियुक्त मेरे पति, मेजर जनेरल की पदोन्नति भी करवाई। बोर्ड के पास करने के बाद भी केवल पाँच रिक्तियाँ होने के कारण उनकी तरक्की का सवाल ही नहीं उठता था। सूची में उनका स्थान आठवाँ था। मेरे पति ने गुरुजी के दर्शन जालंधर में किए। लंगर के बाद गुरुजी ने कहा, "लेफ्निट जेनरल साहिब, चलिए आपको बाहर भोजन कराते हैं।" कुछ मीठा प्रसाद बांटने के बाद गुरुजी ने उन्हें पहनने के लिए वस्त्र और दूध के लिए चांदी का गिलास दिया। मैंने वस्त्र और गिलास को आशीर्वाद स्वरूप मानकर आलमारी में रख दिया लेकिन गुरुजी ने मुझसे कहा कि वस्त्रों को मेरे पति को पहनना चाहिए। उन्होंने ऐसा ही किया और गुरुजी के आशीर्वाद से सेना में पहली बार पदोन्नति तक उन्हें तीन बार एक्सटेंशन दी गई। फाइल के

रुक जाने से देरी जरूर हुई। गुरुजी ने मुझे फाइल के बारे में पता करने दिल्ली भेजा। एक जनेरल, जो गुरुजी के भक्त थे, मुझे वहाँ मिले जो इस केस अवगत थे। उनके दखल के बाद फाइल को आगे बढ़ाया गया। कुछ ही दिनों में मेरे पति लेफ्टिनेंट जनेरल के तौर पर ए.एम.सी सेन्टर लखनऊ में नियुक्त हो गए।

म्यूजिक सिस्टम बिना बिजली के चला

लखनऊ में गुरुजी कुछ समय के लिए हमारे साथ रहे। एक बार सुबह तीन बजे बिजली का फ्यूज उड़ गया और और जनरेटर काम नहीं कर रहा था। यह समय सत्संग का था और हमारे जीवन के दिव्य प्रकाश गुरुजी हमारे बीच बैठे हुए थे। उन्होने मेरे बेटी से ऑडियो टेप को चलाने को कहा। बिजली न होने के कारण उसने ऐसा नहीं किया। गुरुजी ने फिर से अपनी बात दुहराई। मेरी बेटी ने ऑडियो चला दिया और बिना बिजली के वह साढ़े चार घंटे चलता रहा।

भक्त के घर का निर्माण

गुरुजी ने पंचकूला में मेरे घर का निर्माण करवाया। जब उन्होंने मुझसे घर बनवाने को कहा तो मेरे पास पैसे कम थे। मेरे पति ने इस बात पर मेरा मजाक उड़ाया। उन्होंने कहा कि इसके लिए पैसे कहाँ से आयेंगे और क्या गुरुजी पैसों की बारिश करेंगे ? और ऐसा ही हुआ। मेरे पति ने मुझे सिर्फ चालीस हजार रुपये दिए। गुरुजी के अप्रत्यक्ष इशारे से मुझे अपने फिक्स्ड डिपॉजिट की भी याद आई जिसे मैं इस्तेमाल कर सकती थी। आखिर में गुरुजी ने तीसरी बार मेरे शेयर के बारे में पूछा जिसे मैंने अच्छे दामों पर बेच दिया। गुरुजी ने दुकानदार से उपकरणों पर छूट भी दिलवा दी। जल्दी ही पंचकूला में घर

बनकर तैयार हो गया। मेरे पति के प्रश्नों का उत्तर उन्हें मिल गया। गुरुजी ने हमारे रहने के लिए घर बनवाया। वो उनका मंदिर है जिसके हम प्रभारी मात्र हैं।

सिल्क शर्ट का तोहफा

मेरे बेटों की शादी पर भी गुरुजी की कृपादृष्टि रही। गुरुजी सन् 1991 में चंडी मंदिर में मेरे बेटे मनोज की शादी में शामिल हुए। उन्होंने दम्पत्ति के दो पुत्र होने की भविष्यवाणी की और ऐसा ही हुआ। इसी प्रकार मेरे दूसरे बेटे को भी उनके आशीर्वाद से एक पुत्र और एक पुत्री की प्राप्ति हुई। उसकी शादी सन् 1995 में हुई जिसमें गुरुजी उन्हें आशीर्वाद देने आए थे। मेरी बहू को बच्चा नहीं हो रहा था किन्तु गुरुजी की कृपा से उसे दो संतानों की प्राप्ति हुई।

उन्होंने मेरे छोटे बेटे राहुल के विवाह में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। राहुल छात्रवृति लेकर अमेरिका गया था, जहाँ से उसने फोन कर एक दिन कहा कि उसे एक अमेरिकी लड़की पसंद है। मैं चकित रह गई। लेकिन हम दोनों ने आपसी सहमति से यह निर्ण्धय गुरुजी पर छोड़ दिया। अगर गुरुजी हाँ करते हैं तो ये शादी होगी और नगर ना करते तो इस विचार को यहीं छोड़ना होगा। मैंने गुरुजी से इस बारे में बात की तो उन्होंने अपनी स्वीकृति दे दी। उन्होंने विवाह की तिथि भी निर्धारित कर दी।

शादी दिसंबर के महीने में दिन में होने वाली थी। गुरुजी ने मेरे पति को सूती पैंट और सिल्कशर्ट पहनने का आदेश दिया, इसलिए उन्होंने कहा कि अब इस कारण ड्रेस को नहीं सिलवायेंगे। चाह तो वे वो सूट पहनना रहे थे। शादी का दिन धूपवाला होने की वजह से मेहमानों की गर्मी के कारण अपने कोट हटाने पड़े। मेरे पति ने जरूर गुरुजी के आशीर्वाद से प्राप्त वस्त्र ही पहने थे।

सब कुछ उनके अनुसार होता है

हमें जालंधर से लखनऊ शताब्दी ट्रेन में जाना था। हम गुरुजी के दर्शन के लिए गए तो उन्होंने हमें ट्रेन छूटने के समय के आधे घंटे बाद तक बिठाए रखा। स्टेशन पहुँचने पर हमने पाया कि गाड़ी आधे घंटे देरी से चल रही थी।

इसी प्रकार, एक बार हमें नोएडा से पंचकूला जाना था। हमें काफी देर हो गई थी और हम शताब्दी के छूटने के समय घर से निकले। हम स्टेशन की ओर जाते ही रहे, यह सोचकर की ट्रेन चली गई होगी। स्टेशन पहुँचने पर हमने आसानी से ट्रेन पकड़ी मानो वो हमारा ही इंतजार कर रही थी। मैंने गुरुजी से

प्रार्थना भी नहीं की थी क्योंकि मामला बहुत तुच्छ था। लेकिन वो स्वयं ही चिन्ता करते हैं और हमारा ख्याल रखते हैं। चंडी मंदिर में सनक में एक बार मैं गुरुजी के दर्शन के लिए सुबह चली गई कि मैं दर्शन के बाद ही नौकरी पर जाऊँगी। गुरुजी ने मुझे ग्यारह बजे तक बिठा कर रखा जबकि मुझे सैनिक अस्पताल साढ़े दस बजे पहुँचना था। जब मैं अस्पताल पहुँची तो एक भी मरीज नहीं आया था। सभी स्त्रियाँ चंडी मंदिर गई हुई थी जहाँ एक जनरल निरीक्षण के लिए आया हुआ था।

ईश्वरीय हस्तक्षेप

मेरे पति गोल्फर थे उनके दाहिने घुटने में दर्द रहने लगा। उन्हें हेयरलाइन फ्रैक्चर हो गया था। उनके एक सहकर्मी ने उन्हें बताया कि मैंने रोग का निवारण पहले से ही कर लिया और गुरुजी पर अपना विश्वास व्यक्त किया। गुरुजी ने फैक्चर वाले स्थान पर अपना हाथ रगड़ा और दर्द गायब हो गया। उनकी उपस्थिति हमें सौभाग्यशाली बनाती है। पुराण गुरु की एक दृष्टि हमारे दुःखों का निदान करती है।

जालंधर में मेरी दिनचर्या ओ.पी.डी. में चिकित्सकीय जिम्मेदारी निभाने के बाद गुरुजी के आश्रम में सत्संग के लिए जाना था। एक बार गुरुजी ने मुझे अपनी बाड़ी देखने को कहा। उनकी नब्ज 40 बीट 1 मिनट के हिसाब से चल रही थी। मैंने उनसे कहा कि अगर उनकी नब्ज नहीं भी चलती तो मुझे चिन्ता नहीं होती क्योंकि मुझे पता है कि वो ईश्वर है जो शरीर के नियमों से परे हैं।

– डॉ. मिसेज अहूजा, रिटायर्ड मेडिकल प्रैक्टीसनर पंचकूला

डॉक्टर ने हालाता को समझा

मेरे प्रयास के बावजूद भी मेरे बेटे का बी. डी. एस में दाखिला नहीं पाया हो इसी समय मैं गुरुजी के संसर्ग में आया। मनीपाल से बी. डी. एस में करवाने में मेरी अधिक रुचि थी। गुरुजी के आशीर्वाद से मेरे बेटे ने अपना एम बी बी एस प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया। मेरा बड़ा बेटा भी चंडीगढ़ में एक सफल डॉक्टर है, उसकी शादी हो चुकी है।

मैं फरीदाबाद में दंत चिकित्सक हूँ। गुरुजी के शरण में आने के बाद मैंने कई कठिन जबड़ो के ऑपरेशन किए गुरुजी के आशीर्वाद से सभी ऑपरेशन सफल हुए और रोगी संतुष्ट हो खुशी–खुशी गए।

मेरी बेटी पर्ल एकेडमी ऑफ फैशन डिजाइनिंग से फैशन डिजाइन के कोर्स में दाखिले के लिए प्रयत्न कर रही थी। उसने लिखित परीक्षा उत्तीर्ण कर साक्षात्कार भी अच्छा दिया लेकिन उसका चयन नहीं हो पाया। अपनी बेटी के भविष्य के बारे में सोचते हुए मैंने गुरुजी के दर्शन

का निश्चय किया। बुधवार के दिन संगत का दिन न होते हुए भी मैं बदरपुर के रास्ते महरौली रोड पर गया जहाँ मेरी कार की डी टी सी बस के साथ टक्कर हो गई। मुझे तो चोट नहीं आई लेकिन मेरी कार क्षतिग्रस्त हो गई। बोनट खुल गया, रेडिएटर, ए सी और फ्रंट लाईट सभी टूट गए थे।

फिर भी गाड़ी चलती रही और 15–20 कि.मी. के बाद मैं गुरुजी के आश्रम पहुँचा। गुरुजी वहाँ नहीं थे। मुझे बताया गया कि वो रात में देर से आयेंगे। जैसे ही मैं लौटने लगा कि गुरुजी की कार मेरे सामने आ गई। उन्होंने मुझे देखा। मैं हाथ जोड़ खड़ा होकर रो रहा था। गुरुजी वहाँ पाँच मिनट खड़े रहकर अंदर चले गए। मुझे लंगर और प्रसाद दिया गया। गुरुजी ने अपना संदेश मुझे दिया कि कोई बात नहीं है। मुझे अपने घर लौट जाना चाहिए और सब कुछ ठीक हो जाएगा।

GURUJI KA ASHRAM

मैं अपनी कार लेकर वापस आ गया। सुबह जब हुण्डाई के लोग गाड़ी ठीक करने के लिए कार को ले जाने घर आए तो उन्हें उसे खींच कर ले जाना पड़ा। उन्हें यह विश्वास नहीं हो पा रहा थां कि एक्सीडेंट के बाद भी कार ए सी के चालू रहते पचास कि.मी. तक चली। जबकि कार के रेडिएटर में पानी नहीं था। फिर भी गुरुजी के आशीर्वाद से कार पचास कि.मी. तक चली। इसके बाद मैंने एक नई कार ले ली।

इसके अलावे, एक विशेष साक्षात्कार के लिए मेरी बेटी को संदेश आया। उसे गुरुजी के जन्मदिन, सात जुलाई, को दाखिला मिल गया। उस दिन मैं ग्यारह बजे गुरुजी के मंदिर में था। गुरुजी के आशीर्वाद से मेरी बेटी ने अपने कोर्स में अच्छा करते हुए दो छात्रवृतियाँ प्राप्त कीं।

पिछले दो–तीन सालों से मेरी मेडिकल प्रेक्टिस अच्छी नहीं चल रही थी जिससे मुझ पर आश्रित परिवार की जरूरतें पूरी करना मुश्किल हो रहा था। मैं अपना घर बेचना और व्यवसाय छोड़ना चाहता था। वित्तीय परेशानी के कारण मैं हताश होता रहा था। मेरे बेटे और एक भक्त ने मेरी स्थिति गुरुजी को बता दी और समस्या का समाधान हो गया। गुरुजी की कृपा से उसी क्लिनीक से मैं अपने घर खुशी–खुशी चला पाया और सारे ऋण भी उतार दिए। इस दौरान मैंने सिर्फ गुरुजी की प्रार्थना की। गुरुजी में मेरी आस्था ने मुझे हमेशा कुछ न कुछ दिया है मेरे घर और क्लिनीक में गुरुजी का मंदिर है। संगत में बजने वाली गुरबानी हमेशा मेरे क्लिनीक में बजती है। मेरे अधिकतर मरीज मुझसे गुरुजी के बारे में पूछते हैं और क्लिनिक में बजते गुरबानी का आनंद उठाते हैं।

गुरुजी ने मरीज का ऑपरेशन किया

चार–पाँच साल पहले अमेरिका में अपने बेटे के साथ रहने वाली 73 साल की एक औरत जबड़े की बोन ग्राफ्टिंग करवाने मेंरे पास आई। अमेरिका के डॉक्टरों

ने उच्च रक्तचाप के कारण ऑपरेशन करने से मना कर दिया था। दिल्ली के डॉक्टर भी ऑपरेशन नहीं करना चाहते थे। मैंने भी मना कर दिया। उनके बार–बार कहने पर भी मैंने उनसे मॉफी मांग मना कर दिया। मरीज की बेटी ने गुरुजी की तस्वीर मेरी क्लीनिक में देखी और उसने मुझसे कहा कि अगर गुरुजी आपके साथ हैं तो कुछ भी अमंगल नहीं होगा। मैंने ऑपरेशन का इंतजाम कर दिया।

ऑपरेशन सामान्य एनेस्थेसीया से ही दो–तीन घंटों में हो गया। ऑपरेशन के दौरान एनेस्थेटीस्ट मुझसे दो बार बोला कि मरीज की हालत खराब हो रही है लेकिन ऑपरेशन सफल रहा। मरीज ने अपनी बेटी से कहा कि उसने सफेद वस्त्रों में गुरुजी को दो बार देखा। उन्होंने उससे बात कर कहा कि वो बिल्कुल स्वस्थ हो जाएगी। ऑपरेशन के बाद कोई समस्या नहीं हुई, उस औरत को कोई दर्द नहीं हुआ। उसने मुझे कहा कि वो साई बाबा की भक्त है लेकिन गुरुजी ने उसे नया जीवन दिया है। उसने मुझसे गुरुजी की एक तस्वीर ली। वह 73 वर्षीय औरत दो सालों से पीड़ानाशक दवाइयाँ ले रही थी लेकिन ऑपरेशन के बाद उसने एक भी ऐसी दवाई नहीं लीं ऐसा सिर्फ गुरुजी के आशीर्वाद से हुआ। मैं अब भी सोचता हूँ कि ऑपरेशन तीन डॉक्टरों के द्वारा नहीं बल्कि मेरे गुरुजी के द्वारा किया।

मेरे मित्र की मदद की

मेरे मित्र की छोटी सी आठ साल की बेठी को गंभीर हार्ट वाल्व समस्या के कारण एस्कॉर्ट मेडिकल सेंटर दिल्ली में ऑपरेशन करवाना था।

ऑपरेशन के तय हो जाने के बाद मैं गुरुजी से उसके स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना की और गुरुजी के द्वारा दिए गए फूल और प्रसाद को उसके माँ–बाप को दे दिया।

उसका ऑपरेशन एस्कार्ट मेडिकल सेंटर में किया गया लेकिन उसकी हालत नाजुक बनी हुई थी। मैं गुरुजी के पास गया और उन्होंने कहा, ''सब ठीक हो जाएगा।'' मैं फिर एस्कॉर्टस रात के एक बनजे गया और चिन्तित माता–पिता को प्रसाद दिया। गुरुजी ने मुझे तस्वीर लड़की के कमरे में रखने के लिए दिया। गुरुजी की भविष्यवाणी के अनुसार लड़की ठीक हो गई।

लेकिन एक साल बाद वो पुनः गंभीर रूप से बीमार पड़ कई और उसे दूसरा ऑपरेशन की सलाह दी गई। उस समय गुरुजी जालंधर में थे उन्होंने मुझे चिंता नहीं करने को कहा। वे बोले, ''तू लंगर कर चिन्ता न कर, कुड़ी ठीक हो जाएगी।'' वो फिर से अच्छी हो गई और अब स्वस्थ जीवन जी रही है।

एक बार गुरुजी पंजाब चले गए, मुझे उनके ठिकाने का पता नहीं चला और दस दिनों तक उनके दर्शन न होने पर मैं दुखी और सो नहीं पा रहा थां पी.वी.आर. साकेत में रात्रि शो देखने के बाद पत्नी के साथ मैं गुरुजी के आश्रम जाने लगा। अंधेरिया मोड़ के पास मेरी कार का आगे का चक्का फट गया और मेरी कार एक तरफ झुक गई। मैंने कार रोक दी और पत्नी की सहायता से उसे खींचकर वहाँ तक लाया जहाँ दो ट्रक लगे हुए थे। मैंने एक ट्रक चालक को चक्का बदलने को कहा।

वे सहायता को आए लेकिन चक्कर पंक्चर का कोई चिह्न नहीं दिखाई दे रहा था। उन्होंने मुझे शराबी समझा लिया। मैंने और मेरी पत्नी ने चक्के को देखा और कुछ दूरी तरह धकेलते हुए आए थे। हम चकित रह गए और गुरुजी के आश्रम नहीं जा पाए। पत्नी के कहने पर पेट्रोल पंप पर मैंने चक्के की जाँच करवाई वो बिल्कुल ठीक था। मेरी पत्नी ने उसे फरीदाबाद में फिर से जांचने को कहा। मैंने सुबह में चक्के को खोला तो ट्यूब और टायर दोनों ठीक थे। गुरुजी के आशीर्वाद ने एक अैर चमत्कार दिखा दियझं ये मेरे कुछ अनुभव हैं जैसे सागर अथाह होता है वैसे ही गुरुजी की शक्ति भ असीमित है और मैं गुरुजी का अनुयायी बनकर ही हमेशा रहना चाहता हूँ।

उनके मुख्य आधार : अपमान, दोषारोपण और अपशब्द का प्रयोग न करें। मेरे गुरुजी मानव जाति को दिया हुआ ईश्वर का तोहफा है। इनका जन्म ही लोगों को अपनी कृपा से सही रास्ता दिखाने के लिए हुआ। जिन्हें उनका आशीर्वाद मिलता है वो इस पृथ्वी पर भाग्यशाली हैं और मैं उनमें से एक हूँ। वैसे में कहता हूँ मेरे गुरुजी लेकिन वो सिर्फ मेरे नहीं सबक लिए हैं।

मैं अपने क्लीनिक में रोज सैकड़ों लोगों से मिलता हूँ जो गुरुजी का नाम जानना चाहते हैं मैं उन्हें कहता हूँ कि वे गुरुजी के द्वारा ही जाने जाते है। जैसे भगवन का कोई नाम नहीं है वैसे ही उनका भी कोई नाम नहीं है। आप उन्हें कृष्णा, राम, शिव, श्री गुरुनानक जी अल्लाह कुछ भी पुकार सकते हैं। आप जिस भी रूप में उन्हें याद करेंगे वो आपकी भक्ति को अवश्य ग्रहण करेंगे।

मेरे गुरुजी में भगवान शिव की शक्ति और श्री गुरु नानक जी का आध्यात्मिक शक्ति समाहित है। गुरु से मिलने के उपरांत आपके स्वभाव में परिवर्तन आ जाता है। आप कुछ कमजोरियों के साथ एक बेहतर इंसान बन जाते हैं और जीवन का अधिक आनंद उठा पाते हैं।

गुरुजी के स्नेह की सिर्फ मातृ स्नेह से तुलना की जा सकती है। जब वे आप को कहीं से भी देखते हैं तो उनकी आँखों में दिव्य ज्योति नजर आती है। जब आप अपने आपको उन्हें पूरी तरह बिना किसी प्रश्न, कैसे, क्यों के और पूर्ण आस्था से समर्पित करते हैं तभी आप उन्हें अपने अंदर महसूस कर सकते हैं।

उनके आशीर्वाद को प्राप्त करने का तरीका है उनकी सच्ची प्रार्थना। आपके प्रार्थना करने पर गुरुजी के साथ होने का दिव्य अनुभव आपके अंदर प्रवेश कर आपके साथ रहता है। भगवद्गीताके अनुसार आपको प्रतिफल की आशा नहीं करनी चाहिए। मैं मेरा ह्रदय कहता है कि केवल उनके सुझाव का आस्थापूर्वक पालन ही हमारे वश में है। वह बिरले ही किसी को कुछ करने को कहते हैं और अगर आप भाग्यशाली हैं तो उनके कहने से आपको लाभ ही मिलेगा। उनके समने हम तुच्छ जीव हैं लेकिन वो हमारा वैसे ही ध्यान रखते हैं जैसे माँ अपने बच्चों का। मैं संगत से यह प्रार्थना करूँगा कि वो हमेशा गुरुजी को अपने ध्यान में रखें और उनके दिखाए मार्ग का अनुकरण करें। हमें स्वयं को सम्पूर्णता में उन्हें समर्पित कर देना चाहिए और उनके मूलभूत आदर्शों का पालन करना चाहिए जो है किसी अपमान नहीं करना चाहिए। किसी को दोष नहीं देना चाहिए, किसी को अपशब्द नहीं करना चाहिए। और हमेशा रोजमर्रा के जीवन में आए लोगों के लिए अच्छा ही सोचना चाहिए।

– डॉ. एम. एम. बजाज, प्राइइवेज मेडिकल प्रैक्टीसनर, फरीदाबाद

दम्पति की खामोश प्रार्थना का उत्तर

गौरव मारवाहा सदर बाजार, दिल्ली में व्यापारी हैं जिनका व्यापार अच्छा नहीं चल रहा था। उनके रिश्तेदार ने उन्हें गुरुजी के पास जाने का सुझाव दिया। वो और उसकी पत्नी मोटर साइकिल पर गुरुजी के दर्शन के लिए गए। पीछे सीट पर बैठी पत्नी ने गुरुजी से प्रार्थना की कि उनके पास और भी आरामदाय यात्रा का साधन होता।

जल्दी ही, व्यापार अच्छा चलने लगा और एक महीने के अंदर ही दोनों ने कार खरीद ली। उन्होंने सोचा कि भाग्य ने उनका साथ दिया है। लेकिन एक भक्त ने गुरुजी के अप्रत्यक्ष हाथ होने की ओर इशारा किया लेकिन उन्होंने विश्वास नहीं किया। गौरव की पत्नी ने कहा कि अगर गुरुजी उसे पहचान लेंगे तभी वह विश्वास करेगी। अगली बार जब वे गए तो गुरुजी ने ऐसे ही पूछा कि कितने मुसलमान जनकपुरी से संगत में आते हैं। फिर यह कहते हुए अपने कथन को बदला कि वो ट्रांस यमुना के इलाके से आने वाले मुसलमानों की बात कर रहे थे। गौरव की पत्नी जनकपुरी में रहने

वाली मुसलमान थी लेकिन कुछ हफ्तों के अंदर ही वे दोनों यमुना पार में स्थानांतरित हो गए। और वो गर्भवती हो गई।

उसके जाँच करवाने पर डॉक्टर ने गर्भावस्था में होने वाली परेशानियों के कारण गर्भपात कराने का सुझाव दिया। लेकिन भक्तों ने कहा कि वो गुरुजी के दर्शन के लिए आते हैं इसलिए कुछ भी बुरा नहीं होगा। उन्हें अपनी आस्था बरकरार रखनी चाहिए। वे गुरुजी के दर्शनों के लिए आते रहे और बाद में गौरव की पत्नी ने सुंदर लड़की को जन्म दिया।
अपने जन्मदिन पर 2005 में गुरुजी ने गौरव की पत्नी को बुलाकर कहा कि वो बहुत मोटी हो गई है। वो मुस्कुराकर चली गई। गुरुजी के कहने के एक महीने के भीतर ही बिना कसरत किए बिना पतला होने के कोर्स किए और न डायटिंग किए उसने पन्द्रह किलो वजन कम कर लिया। दोनों का पहले यह सोचना कि कार उन्होंने संयोगवश खरीदी है, गलत था। जौ गुरुजी स्वयं कहते हैं और सिर्फ ही चुनाव कर सकते हैं क्योंकि वे भगवान हैं।

– सत्संग : गौरव मारवाह

गुरुजी में विश्वास : हर रोग दूर

अगर मुझे गुरुजी के तेज का वर्णन करने के लिए हजारों जिह्वाएँ दे दी जाएं तो वो भी गुरुजी की असीम कृपा को वर्णित करने के लिए कम पड़ जायेंगी। भक्त के लिए उनके प्रेम परवाह की घटनाएं भी इसी तरह असीमित हैं। जब से मैंने उनके दर्शन किए हैं मैं उनसे सीख रही हूँ। आज भी जब आप किसी को गुरुजी के आशीर्वाद को लेते सुनते हैं तो मुझे लगता है कि सब उनके सामने कुछ न कुछ सीख ही रहे हैं।

एक नई शुरुआत

अगस्त 1998 में मेरे पति ऑफिस से जल्दी आकर बोले कि वो विंग कमांडर चोपड़ा के साथ गुरुजी के आश्रम जा रहे हैं। उस समय वे महापुरुषों, संतों में विश्वास नहीं करते थे इसलिए उनका यह निर्णय मेरे लिए आश्चर्य का विषय था। वे शाम को छः बजे गए और आधीरात के बाद लौटे। घर आने के बाद मैं सब कुछ जानने को उत्सुक थी। मैंने उन पर प्रश्नों की बौछार कर दी। क्या गुरुजी ने उपदेश दिया, भविष्य बताया या जीवन की परेशानी को

दूर करने के लिए मंत्र या पत्थरों का उपाय बताया ? मेरे पति के उत्तर उम्मीद से परे थे। उन्होंने कहा कि गुरुजी ने प्रवचन या उपदेश नहीं दिया और वहाँ गुरुजी के मंदिर में गुरु ग्रंथ साहिब पर आधारित शबद बजाए जा रहे थे।

अपने पति के स्वभाव को जानते हुए मैंने यह सोचा कि यह एक अस्थायी बात है। उन्हें याद भी नहीं रहेगा कि शाम को क्या हुआ था ? लेकिन अगले दिन शाम को मेरे पति ने ऑफिस से फोन कर कहा कि वो गुरुजी के आश्रम जा रहे हैं। उन्हें आने में देरी होगी। जब वो पिछली रात की तरह देरी से आए तो मैंने उसने पूछा कि कौन सी चीज आपको वापस वहाँ ले गई थी ? उन्होंने आसानी से उत्तर दिया कि मुझे वहाँ क्या मिला, यह वर्णन की नहीं बल्कि अनुभव करने की चीज है। हमारे परिवार ने अगली शाम गुरुजी के दर्शन करने का निश्चय किया।

GURUJI KA ASHRAM

गुरुजी के द्वार खुले

मेरे पति के तीसरी बार दर्शन में मैं और मेरे बच्चे भी उनके साथ गए। गुरुजी के आश्रम से बीस तीस मी. दूर ही हमें तेज सुगंध की अनुभूति होती है। जब हम सभागार में प्रवेश करते हैं जहाँ गुरुजी विराजमान थे, सुगंध हमारे चारों ओर फैली हुई थी। पहली बात जो मेरे मन में आई वो थी कि इस व्यक्ति ने इतना इत्र लगा रखा है कि पूरा सभागार खुश्बू से भरा है और ये शायद स्टाइलिश आधुनिक गुरुजी हैं। मेरे पति के वर्णन करने के बाद भी गुरुजी के मेरे पहले दर्शन मोहक और मेरे पहले पूर्वाग्रहों से अलग था।

अकल्पनीय घटनाओं का प्रारंभ अब होने वाला था। जैसे ही मैं उन्हें प्रणाम कर उठने लगी तो उन्होंने पंजाबी में कहा, ''आखिरकार तुम आए, गुड़गाँव के संत अनुयायी'' यह सिर्फ एक इशारा भर था कि वो मुझे पहली भेंट से ही अच्छी तरह जानते हैं। क्योंकि हमारे परिवार के अतिरिक्त उस संत के बारे में कोई नहीं जानता था।

चाय प्रसाद : आस्था की चुस्की

गुरुजी के आश्रम में चाय पहला और कभी–कभी आखिरी जलपान के रूप में दिया जाता था। मुझे बचपन से ही चाय से एलर्जी रही है। चाय किसी भी रूप में लेने पर मेरे मुंह में फोड़े हो जाते थे। जैसे ही हम संगत में बैठे एक व्यक्ति सबको चाय दे रहा था मैं उलझन में थी क्योंकि मैं प्रसाद को मना नहीं करना चाहती थी। अचानक मैंने देखा कि चाय देने वाले व्यक्ति ने मुझे चाय नहीं दी। मैं निश्चिन्त हो गई कि मुझे न तो प्रसाद को मना करना पड़ा और न ही मुझे जर्बदस्ती चाय पीनी पड़ी। लेकिन ये निश्चिन्तता ने मेरे मन में दूसरे विचार को उत्पन्न किया कि मैं इस पवित्र स्थान के आशीर्वाद और प्रसाद से वंचित रह गई। ये सारी बातें मेरे अंतर्मन में हो रही थीं लेकिन बाहरी दुनिया में ऐसा हुआ जैसे मैं जोर से बोल रही थी। क्योंकि

अचानक चाय देने वाला व्यक्ति मुड़ा हमारी ओर चाय बढ़ा दी। इससे मैं चकित रह गई क्योंकि ऐसा लगा कि वो व्यक्ति मेरे आतंरिक वार्तालाप को सुन रहा था। मैं जैसे ही एक अचंभे से बाहर आई, मैंने देखा कि वो व्यक्ति मेरे एक गिलास उठाने का इंतजार कर रहा है। मैंने तुरंत एक गिलास उठा लिया और परिवारवालों के विरोध के बावजूद मैंने चाय पी ली। यह उसके लिए साहसिक कार्य है जिसने बचपन से कभी चाय नहीं पी। इसके बाद उसी दिन अगले कुछ घंटों के अंतराल में मैंने दो या तीन गिलास चाय पी।

हम एक बजे रात को गुरुजी के आश्रम से आए। अगली सुबह मुझे मुंह में फोड़े और दर्द की उम्मीद थी लेकिन मेरा मुंह तरोताजा लग रहा था और मुंह में फोड़े भी नहीं थे। सभी आश्चर्यचकित थे।

आज तक मैं चाय बिना किसी परेशानी के सिर्फ एक स्थान पर पी सकती हूँ और वो है, गुरुजी का मंदिर। गुरुजी की शारीरिक उपस्थिति में मैं चाय कहीं भी पी सकती हूँ। अगर मैं चाय घर पर या कहीं और पीती हूँ तो मेरा गला खराब हो जाता है। यह गुरुजी के असमी संरक्षण शक्ति का चमत्कार है जिससे एक उपभोज्य वस्तु रोगहरणी प्रसाद के रूप में परिवर्तित हो जाता है जो बीमारियों और परेशानियों को दूर भगाता है। उनकी दिव्य उपस्थिति में जो भी चीज जाती है वो आशीर्वादस्वरूप है जिसका कभी नकारात्मक प्रभाव नहीं होता।

चाय पीने वालों की दुनिया में प्रवेश करने के बाद हमारे परिवार को और भी चमत्कार देखने थे। खुश्बू। जो मैंने सोचा कि गुरुजी ने इत्र का प्रयोग किया है, हमारे कमरों और घर में फैलने लगी। कुछ भी नहीं समझते हुए उस सुगंध को खत्म होने तक हमने आनंद उठाया। बार–बार जाने पर यह बात पता चली कि

वो खुश्बू गुरुजी ने प्राकृतिक रूप से अवस्थित है जो उनकी मौजूदगी का अहसास कराती है। आगे घटित घटनाओं ने हम पर गुरुजी की शरण को उद्‍घोषित करता है। हर दिन चमत्कारिक हो रहा था।

गुरुजी : सर्वोपरि सत्ता

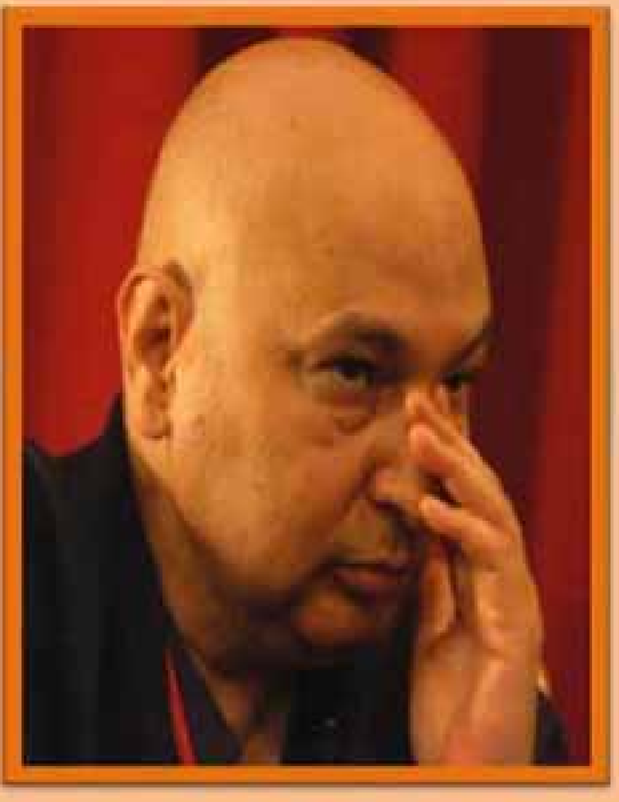

जीवन में अच्छा और बुरा वक्त आता रहता है अच्छे समय में आप लोगों से घिरे रहते हैं लेकिन दुःख के समय में गुरुजी ही आपके साथ रहकर आपको दुख से निकालते हैं। बहुत से लोग आपकी सहायता करना चाहेंगे लेकिन वे असहाय हो जाते हैं जब चीजें उनके नियंत्रण के बाहर चली जाती हैं। लेकिन गुरुजी की बिना शर्त सहायता आपको विपरीत परिस्थितियों से बाहर निकालती हैं। आपको अपने कर्म का फल भुगतना पड़ता है लेकिन गुरुजी के दिव्य संरक्षण में मैंने प्रकृति को विवश देखा है क्योंकि प्रकृति प्रदत्त कोई भी सजा भक्त तक पहुँचने से पहले गुरुजी द्वारा या तो समाप्त कर दी जाती है या उसकी शक्ति कम हो जाती है। ऐसा वो आपके दुःखो को हर कर करते हैं और आपको चिर प्रसन्न रखते हैं।

आपको दुःख और समस्या से दूर रखने के उनके साधन भिन्न–भिन्न हैं जो मैंने अपने अनुभवों के द्वारा समझा है।

एक बार मुझे संगत में बैठे हुए तेज सिरदर्द हुआ। दर्द इतना तीक्ष्ण था कि मैं कुछ भी खा या पी नहीं रही थी। तभी अचानक गुरुजी ने मुझे बुलाकर कहा कि उन्हें सिरदर्द हो रहा है और मैं उनके माथे को कुछ देर दबा दूँ। इसके बाद मैं यथा स्थान लौट आई और अचानक मेरा सरदर्द गायब हो गया। अपनी सेवा करवाकर उन्होंने मुझे दर्द से मुक्ति दिलाई।

एक बार मुझे भयंकर बुखार हुआ जो जाँच और दवाइयों के बाद भी समाप्त नहीं हुआ। भारी दवाइयों से बुखार को कम होने में दो हफ्ते लगे लेकिन ज्यादा दिनों तक बुखार कम नहीं रहा। मेरे बुखार में एक विशिष्ट पैटर्न था जो दिन में तो साधारण रहता लेकिन शाम होते ही तापमान बढ़ जाता। ऐसा चार हफ्तों तक चलता रहा। किसी निर्णय पर न पहुँचने के कारण डॉक्टर असहाय थे किसी जाँच में कोई निष्कर्ष नहीं निकला।

फिर एक दिन गुरुजी ने मेरे पति से मेरी संगत में लंबी अनुपस्थिति का करण पूछा। जब उन्हें कारण पता चला तो उन्होंने मेरे पति से पाँच हरी मिर्च उनके दिए तरीके से प्रयोग करने को कहा। अगले ही दिन एक महीने से चला आ रहा बुखार गायब हो गया और धीरे–धीरे में स्वस्थ होती गई।

गुरुजी के आशीर्वाद से मैं बुखार के एक और दौर को झेल गई। अपने परिवार के साथ मैंने हल्के बुखार में गुरुजी के बड़े मंदिर में जाने की योजना बनाई। लेकिन मंदिर पहुँचने से पहले ही मेरी हालत खराब हो गई और बुखार ने बुरा

रूप ले लिया। मुझमें खड़े होने की भी शक्ति नहीं थी। अचानक गुरुजी उस दिन मंदिर (गुरुजी निर्माण कार्य के कारण उस समय मंदिर नहीं आते थे) आ गए। गुरुजी ने मेरे पति और संगत के एक सदस्य को ताजा नींबू पानी बनाने को कहा और मुझे देने को कहा। उसे लेते ही बुखार ऐसे गया कभी हुआ ही नहीं। गुरुजी ने बिना किसी के बताए ही मेरी स्थिति जानकर मुझे ठीक कर दिया।। कोई और हमेशा ऐसी स्वार्थरहित सहायता नहीं कर सकता।

उनकी बातों का अनुगमन

गुरुजी के आशीर्वाद की प्राप्ति कभी–कभी सिर्फ सांत्वना के रूप में होती है क्योंकि गुरुजी की शक्ति ही सब कुछ घटित करवाती है। गुरुजी भौतिक साधनों का इस्तेमाल सिर्फ इसलिए करते हैं कि भक्त ये जान पाएँ कि गुरुजी उनका ध्यान रख रहे हैं।

कीड़े के काटने से मेरे पाँव की ऊंगली बुरी तरह सूज गई और उसमें भयंकर दर्द था। डॉक्टर द्वारा सुझाई गई दवा का कोई असर नहीं हो रहा था। घाव को बढ़ने से रोकने के लिए डॉक्टर ने छोटा ऑपरेशन करवाने का सुझाव दिया। लेकिन उसी दिन मेरे पति के बिना बताए ही गुरुजी ने स्वयं ही कीड़े काटने के

बारे में पूछताछ की। बस, उसके बाद ही घाव में कम दर्द रहने लगा और वहाँ सुधार होने लगा अगले कुछ दिनों में वो घाव गायब ही हो गया। ऐसी गुरुजी की शक्ति थी।

उन्होंने मुझे मधुमेह की बीमारी से भी आश्चर्यजनक रूप से स्वस्थ कर दिया। मुझे 1998–2000 में यह बीमारी हुई। मधुमेह ऐसी बीमारी है जिसे ठीक नहीं किया जा सकता, सिर्फ दबाया जा सकता है लेकिन गुरुजी ने इसे समाप्त ही कर दिया कुछ ही महीनों में बिना किसी इलाज और दवाई के सिर्फ गुरुजी की कृपा से मैं स्वस्थ हो गई। हमने इस समस्या के बारे में गुरुजी से कभी कुछ नहीं कहा। गुरुजी द्वारा कहे गए सामान्य बातों का भी गहरा प्रभाव होता है। ये संपूर्ण सृष्टि के लिए आज्ञा समान होता है और उनकी बातों को मामूली समझने का ये परिणाम होता है।

GURUJI KA ASHRAM

जब हम गुरुजी के दर्शन के लिए लगातार जाने लगे तो उन्होंने मेरे पति को सप्ताह में तीन बार सोमवार, बुधवार और शुक्रवार को आने को कहा। हम उनकी आज्ञा का पालन तो किया लेकिन छूटे हुए दिनों की कमी को पूरा करने के लिए हम घर से जल्दी निकलने लगे। एक दिन हम आठ बजे की सत्संग में शाम छः बजे ही पहुँच गए। गुरुजी ने हमें आठ बजे आने का निर्देश दिया। और उसके बाद चाहे किसी भी समय हम घर से निकले, हम गुरुजी के आश्रम आठ बजे की पहुँचते थे। एक बार हम साढ़े पाँच बजे घर से निकले और ट्रैफिक जाम की वजह से पच्चीस किमी. की दूरी तय करते आठ बजे गए। लेकिन कभी देरी हो जाने पर वही दूरी आधे घंटे में तय हो जाती थी।

लंगर में आशीर्वाद प्राप्त होता है

हमारा स्वभाव कभी–कभी हमें ऐसी परिस्थिति में डाल देता है जिससे हम बुद्धिहीन नजर आन लगते हैं। एक बार मैंने व्रत किया था जिसमें मुझे अन्न नहीं ग्रहण करना था। मुझे सिर्फ फल ही खाना था। जब हम संगत के लिए गए तो मैंने लंगर में नहीं जाने का निर्णय लिया और सोचा कि किसी को पता नहीं चलेगा। उस दिन दो सौ लोग आए थे और लंगर छः बार लगाया गया। मैं एम्पायर एस्टेट मंदिर के प्रथम तल (संगत मंदिर के निचले तल और लंगर प्रथम तल पर होता था) पर चली गई और कोने में बैठ गई क्योंकि मैं व्रत नहीं तोड़ना चाहती थी। गुरुजी ने मुझे लंगर नहीं लेते देख लिया था और आखिरी दौर में लंगर लेने का निर्देश दिया। लेकिन मैंने लंगर नहीं लिया। इस तरह मैंने दो गलतियाँ की पहली, मैं उनकी बात का अर्थ और महत्व नहीं समझ पाई जिसके कारण मैं उनके निर्देशों का पालन नहीं कर पाई। और दूसरी मैंने गुरुजी से झूठ बोला। मैं यह भूल गई कि उस सर्वज्ञ की आँखों से कुछ भी छुप नहीं सकता। भौतिक बाधाएँ उन्हें देखने से रोक नहीं सकती।

लेकिन जैसे ही मैं संगत सभागार में वापस आई, गुरुजी ने मुझे तीखी नजरों से देखा और तुरंत किसी को संगत में मिठाई बांटने को कहा। उसने मिठाई बांटनी

शुरु कर दी और जब मेरी बारी आई तो उसने मुझ दूसरों से दुगुना दिया मानो लंगर न खाने की भी पूर्ति कर रहा हो। घर पहुँचकर जब मैंने सारी घटनाओं को याद किया तो मैंने अपनी भूल को महसूस किया। गुरुजी का संदेश साफ था कि लंगर नहीं छोड़ना है। मैंने यह बाद में अनुभव किया कि प्रसाद गुरुजी के आशीर्वाद का साधन है, अपने भौतिक रूप में वह तुच्छ है लेकिन मौका मिलने पर उसे दोनों हाथों से ग्रहण करना चाहिए, छोड़ना नहीं चाहिए क्योंकि ये आशीर्वाद अति मूल्यवान हैं।

गुरुजी हमारी गाड़ी और ट्रक के बीच में आ गए

मैं और मेरे पति नोएडा से संगत के लिए जा रहे थे लेकिन हम एक ट्रैफिक लाइट में जो तीन बार लाल हो चुका था, पर फंस गए। जैसे ही बत्ती हरी हुई मेरे पति कार की गति तेज कर दी। पहले से तेज चल रहा ट्रक अचानक हमारी कार के सामने साइकिल सवार के सामने गिर जाने के कारण रुक जाता है। इससे मेरे पति कुछ भी नहीं कर पाते और टक्कर होने ही वाला होता है कि अचानक मैंने गुरुजी को कार के सामने देखा ओर मेरी चीख निकल गई।

हमें होश में आने में कुछ मिनट लगे। कुछ समय बाद गाड़ी से निकलकर हमने देखा कि कार ट्रके के नीचे होने पर भी क्षतिग्रस्त नहीं हुई है कार का बम्पर ट्रक के चक्के से कुछ ही इंच दूरी पर था। अगर गुरुजी कार के सामने प्रकट नहीं हुए होते तो हम दुर्घटना से बच नहीं सकते थे।

मेरे पति ने इस घटना का जिक्र संगत के सदस्य से किया। उन्होंने बताया कि कैसे मैंने गुरुजी को कार के सामने देखा। तभी उस स्त्री ने जिसे मेरे पति घटना बता रहे थे, अचानक पूछा कि क्या हमारी कार नीले रंग की मारुती 800 है। मेरे पति के हाँ कहने पर उस स्त्री ने कहा कि ये घटना उसने अपने सपने में देखी थी। उसने साफ तौर पर गुरुजी को बिल्कुल ट्रक और कार के बीच में आते हुए देखा था। यह सुनकर हम विस्मित रह गए।

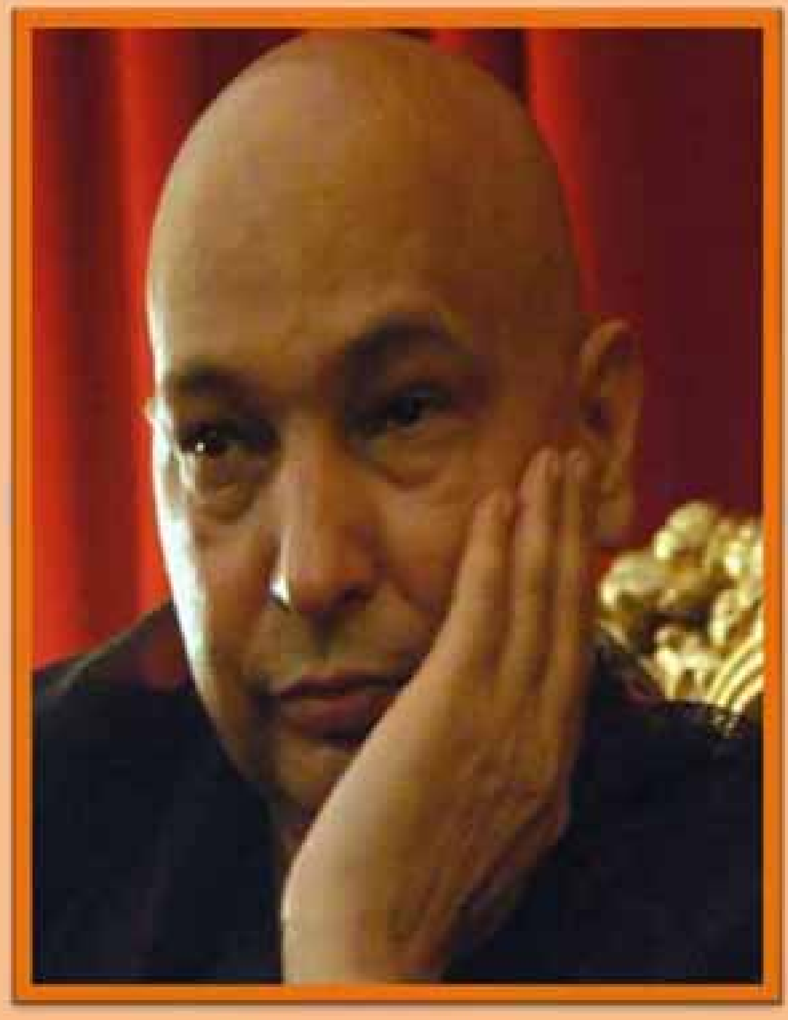

उनकी दृष्टि से कोई नहीं बच सकता

एक बार गुरुजी ने मुझे बुलाकर एक व्यक्ति को लाने को कहा। मैं उस आदमी को नहीं जानती थी। गुरुजी ने मुझे बताया कि वो आदमी मोटा है और खंभे (गुरुजी के स्थान से वो खंभा दिखाई नहीं देता था) के ठीक पीछे बैठा है। मैं सोचती रही कि सिर्फ दो सूत्र में मैं एक व्यक्ति को कैसे पहचान सकती हूँ लेकिन मैंने उस पूरे क्षेत्र में सिर्फ एक ही मोटे व्यक्ति को बैठा पाया और उसे बताया कि गुरुजी उसे बुला रहे हैं इससे साफ पता चलता है कि गुरुजी दीवार के उस पार भी आसानी से देख सकते थे।

गुरुजी अपनी इच्छा पर भूतकाल में हुई घटनाओं, पृथ्वी पर वर्तमान में होने वाले कार्य और भविष्य की घटनाओं को बता सकते हैं। जब मेरे बच्चे, एक बेटा और एक बेटी, स्कूल में ही थे गुरुजी ने बता दिया था कि वे सिमेन्स में नौकरी करेंगे। उस समय उनकी बात पर विश्वास करना कठिन था। लेकिन छः साल बाद उनकी बात सच साबित हुई, जब मेरे दोनों बच्चों ने अपना कैरियर सिमेन्स के साथ शुरु किया। इसी तरह कहा कि उसकी शादी सन् 2005 में होगी। और उसी तरह उसकी शादी 30 अप्रैल, 2005 को हुई।

शिव के स्वर्ग का अनुभव

गुरुजी का बड़े मंदिर एक महत्वपूर्ण स्थान है उस स्थान की पवित्रता में आप अपनी परेशानियों को भूल जाते हैं यही वह जगह है जहाँ गुरुजी की शारीरिक उपस्थिति के बिना मैं किसी समय कितनी ही बार चाय पी सकती हूँ। लेकिन ये सिर्फ मंदिर को छोटी शक्ति की ओर इंगित करता है। अगर कोई अपने अनुभव पर ही विश्वास करता है तो मेरा इस मंदिर की सर्वोच्च शक्ति पर दृढ़ विश्वास है।

एक बार मुझे अपने परिवार के साथ मंदिर जाने का मौका मिला। जब भी हम मंदिर जाते हैं, परिवार का हर सदस्य अपनी इच्छा से घूमता है चाहे कोई और सदस्य कुछ भी कर रहा हो। पूर्वाह्न में मंदिर पहुँचने के तुरंत बाद ही, मैं गुरुजी के एक कमरे में यह देखने के लिए गई कि वहाँ कहीं सफाई की जरूरत तो नहीं है। उस कमरे में भगवान शिव की बहुत सुन्दर मूर्ति थी जिसमें वो पैरों को

मोड़कर भक्तों को आशीर्वाद दे रहे हैं। मंदिर आना शुरु करने वाले दिन से ही हम उस मूर्ति को देख रहे थे।

लेकिन उस दिन मूर्ति के दर्शन ने मुझे कंपित कर दिया। मूर्ति का चेहरा दाहिना तरफ घूम गया, यह देखकर मैं चकित रह गई मैंने सबको मंदिर में बुलाकर यह दृश्य दिखाया और धीरे–धीरे मूर्ति अपने पूर्व रूप में वापस आने लगी शाम तक अपने वास्तविक सामने वाले रूप में परिवर्तित भी हो गई। सच में, यह घटना भूलने लायक नहीं है।

2006 में (रंगों के त्योहार) होली के दिन सुबह में जब मंदिर पहुँचे तो हम सब ने कोई न कोई काम अपने हाथ में ले लिया। मैंने अपनी पड़ोसी संगीता के साथ मुख्य सभागार में रखी भगवान शिव की पीतल की मूर्ति को साफ करना शुरु किया। ब्रासो नामक पॉलिश मूर्ति पर लागाई गई और कपड़े से दो बार उसे रगड़ कर साफ किया। मैंने ब्रासो लगाया जबकि संगीता उसे साफ करती।

मैंने ऊपर की आधी मूर्मि को साफ कर दिया था और कुछ ही काम रह गया था। संगीता ने अपना काम शुरु भी नहीं किया था, जब उसे भगवान शिव के गले में लिपटे साँप के बीच कुछ रंगों की ओर इशारा किया। चूँकि मैंने उसे साफ किया मैं देखने के लिए आई। मेरी आँखों के सामने रंगों की धारियाँ दिखाई दीं। मैंने सबको मंदिर में उस चमत्कार को दिखाने के लिए बुलाया। उन रंगों ने दिन भर में अलग–अलग रूप लिए जिसे उस दिन मंदिर में आने वाले सबने देखा।

ये सभी घटनाएं गुरुजी की शक्ति की ओर इंगित करती है लेकिन वे इन रहस्यमयी चमत्कारों से परे हैं उनकी शक्ति हमारी समझ और सीमा से परे है। अपने हाथों को जोड़कर मैं गुरुजी से प्रार्थना करती हूँ और सारे संगत पर उनकी कृपा का अनुरोध करती हूँ।

– सत्संग : गौरी सिंगला

असली चमत्कार : उनके पथ का अनुगमन

कौन भगवान को देखने का दावा कर सकता है मैंने किया है। गुरुजी मेरे भगवान हैं। मैंने तो यह महसूस करना शुरु कर दिया है कि कोई और मेरे भगवान की तुलना कर ही नहीं सकता वो महान हैं और पृथ्वी पर उनके जैसा न कोई है न कोई और कभी आएगा। किसी को उनसे किसी के दुख के बारे में बताना नहीं पड़ता। वो सब जानते हैं एक बार आप उनके बताए रास्ते पर चल पड़ते हैं तो आप उन पर विश्वास आस्था प्रकट करने लगते हैं।

मेरे बेटे एदृत को डेढ़ साल की उम्र से ही दमे की बीमारी हो गई। मैं यह समस्या गुरुजी को बताना चाहती थी लेकिन उन्होंने यह कहते हुए रोक दिया

कि मैं स्वयं ही स्थिति खराब कर दूँगी अगर मैंने गुरुजी से पूछा। उनकी आज्ञा मानकर मैं चुप हो गई।

ढ़ाई साल के बाद गुरुजी शादी में शामिल होने के लिए हमारे घर पर आए और मेरे बेटे को एक गिलास पानी पीने को दिया। मेरे बेटे को आशीर्वाद मिल गया। जब से उसने पवित्र पानी पिया उसे कभी दमे का दौरा नहीं पड़ा। उदृव ने हर क्षेत्र में विकास किया। उसकी लम्बाई बढ़ी, वजन बढ़ा और वह क्रियाशील हो गया।

मेरे पति का भी दमा था। उन्हें पहली बार देखते ही गुरुजी ने कहा था कि वो अंधविश्वासी है। मेरे पति की आधी समस्या तभी गायब हो गई गुरुजी ने उन्हें ताँबे का गिलास दिया और धीरे–धीरे दमा भी गायब हो गया।
मेरी आँखों में रसौली होने पर डॉक्टरों ने उसे चीरने की सलाह दी थी। मैं डर गई थी। गुरुवार के दिन गुरुजी ने संगत छोड़ने के समय मेरी ओर तीव्रता से देखा। मैं समझ गई कि उनकी इस दृष्टि के पीछे कोई वजह होगी। अगली ही सुबह मेरी आँखों की रसौली गायब हो गई । उनकी एक दृष्टि ने ही चमत्कार कर दिया जैसे उनके शब्द भी देखते हैं।

मेरे ससुर को पाँच साल पहले दिल का दौरा पड़ा था। उन्हें मलेरकोटला हार्ट इंस्टीट्यूट में एजियोप्लास्टी के लिए ले जाया गया। गुरुजी ने कहा, "कल्याण हो गया और सब कुछ ठीक हो गया। लेकिन मेरे ससुर के घर आते समय डॉक्टर ने कहा कि उनके सीने की हड्टी टूट गई है जो कभी ठीक नहीं होगी।

घर लौटते समय हम गुरुजी का आशीर्वाद लेने गए तो गुरुजी ने उन्हें शुद्ध घी में बना हलवा दिया। मेरे ससुर अपनी दिनचर्या में वापस आ गए। गुरुजी ने उन्हें रोज दो पेज व्हिस्की भी दवा के तौर पर लेने की इजाजत दे दी।

तीन महीने बाद वे टी मी टी टेस्ट करवाने गए तो डॉक्टर ने जिस सीने के हड्डी को मृत घोषित कर दिया था वो खून पम्प कर रहा था। ये अनुभव गुरुजी की मदद करने की व्यावहारिक प्रवृत्ति की ओर इशारा करते हैं। उनके शब्द कोश में कुछ भी असंभव नहीं है, बस श्रद्धा, निष्ठा और सबूरी की जरूरत है।

– सत्संग : गायत्री सबरवाल

GURUJI KA ASHRAM

गुरुजी के साथ गीतन की यात्रा

मैं आप लोगों के साथ अपने चमत्कारपूर्ण और भगवद्प्रदत्त अनुभवों को बाँटना चाहती है। मैं उन लोगों में से एक हूँ जो भाग्यशाली हैं अपने आपको स्वयं अर्थात गुरुजी भगवान की उपस्थिति और उनकी प्रेरणा के लिए धन्यवाद देते हैं। गुरुजी मै उनके लिए क्या कहूँ ? वो सर्वोपरि है, सर्वोच्च सत्ता है और वे ही रोज स्मरण के योग्य हैं।

मेरे जन्म के साथ ही गुरुजी की आध्यात्मिक प्रेरणा मेरे जीवन में रही है। वो मेरे और मेरे परिवार के अच्छे और बुरे समय में हमेशा साथ रहे हैं। उन्होंने हमें हमारी बीमारियों, पापों से हमारी जानकारी या उसके बिना, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से बचाया है। आज मुझे अपने परमप्रिय के दर्शन का अनुभव बताते हुए अपार खुशी हो रही है।

रसौली पर पान के पत्ते का ऑपरेशन

मुझे आज ली वो दिन याद है जब मुझे अपने जीवन का सबसे भयंकर दर्द हुआ। मैं उस समय पंद्रह साल की जालंधर में रहती थी। मेरे नहाते समय मुझे पेट के नीचे तेज दर्द हुआ। दर्द इतना तेज था कि मैं चल भी नहीं पा रही थी। मैं झुककर लेट गई औ अपनी माँ का बुलाने लगी। गुरुजी तब पंचकूला में संगत करते थे। उसी दिन हम वहाँ चले गए। लेकिन वहाँ जाने से पहले हमने स्केन और जाँच करवाए।

लेकिन जाँच के परिणाम ने हमें चौंका दिया। मुझे ओवेरियन सीस्ट था जो फट चुका था। इससे निकले जहरीला द्रव्य मेरे शरीर में फैल गया जो घातक था। डॉक्टर ने तुरन्त सर्जरी करवाने के कहा लेकिन हमने नहीं करवाया हम उसी शाम गुरुजी के पास गए और उन्हें अपनी समस्या बताई। उन्होंने हमें निश्छल मुस्कुराहट के चिन्ता नहीं करने को कहा। पान के पत्ते पर पाठ करने के बाद उन्होंने उसे बीमारी वाली जहर पर रख दिया। ये उनका सर्जरी करने का तीका था। उन्होंने मुझे दस–पन्द्रह मिनट के लिए लेटने को बोला फिर उन्होंने अगले दिन दुबारा टेस्ट करवाने को कहा।

उनके कहे के अनुसार पूर्ण विश्वास रखते हुए मैंने ऐसा ही किया और डॉक्टर के चकित चेहरों ने मुझे यह भी बता दिया कि मुझे अपने भगवान अपने गुरुजी का आशीर्वाद मिल गया। बीस घंटे पहले दिखा सीस्ट और जहरीला द्रव्य गायब हो गया था।

हम आश्चर्य के साथ आनंद में डूब गए। चिकित्सा–विज्ञान ने भी दैवीय रोगहरणी शक्ति के सामने सिर झुका दिया। डॉक्टर हमारे गुरुजी के दर्शनाभिलाषी हो गए और अध्यात्मिकता के पथ पर आगे बढ़ने लगे।

हम अगली शाम गुरुजी के पास गए। उन्हें पहले से ही सब कुछ जानते थे। हमोर पास उनकी कृपा को व्यक्त करने के लिए शब्द नहीं थे लेकिन ऐसा उनकी इच्छा भी नहीं थी। वो हमसे निःस्वार्थ आस्था चाहते हैं जो हमें कठिन रास्ते पर चलने में सहायता देते हैं।

मेरी दादी को दिल का दौरा

मुझे आज सन् 1989 की याद है जब मेरे बचपन में मेरी दादी को दिल का दौरा पड़ा थ। उन्हें सी एम सी लुधियाना में दाखिल करवाया गयां सभी डॉक्टरों ने कहा कि उनकी हालत दिन–ब–दिन खराब होती जा रही है और अब कुछ भी नहीं किया जा सकता। उनकी नाड़ी का संपादन 160–190 प्रति मिनट पर पहुँच चुका था और लंग में पानी भर गया था। वे अर्द्धचेतना की अवस्था में थी।

GURUJI KA ASHRAM

उन दिनों गुरुजी जालंधन में संगत करते थे। डॉक्टर के नकारात्मक स्वर को सुनकर मेरे पिता ने हमारे उद्धारक को फोन किया। जैसे ही मेरे पिता अस्पताल से निकल रहे थे उसी समय गुरुजी ने प्रवेश किया। जैसे वो अचानक ही कहीं किसी से प्रकट हो गए हों। उन्हें देखकर हम समझ गए कि अब सब ठीक हो जाएगा। उन्होंने मेरी दादी का हाथ कुछ देर तक अपने हाथ में लिया। उन्होंने क्या किया ये तो वो ही जानते है लेकिन दादी की नाड़ी 90 बीट्स पर आ गई। कुछ देर पाठ करने के बाद गुरुजी ले चले गए। धीरे–धीरे मेरी दादी की चेतनता हमारी आँखें के सामने लौट आई और आज अठारह सालों उनकी नाड़ी का स्पंदन 90 पर ही है।

मैं इन अनुभवों को बांटते हुए खुद को भाग्यशाली मानती हूँ। हमारा जीवन बहु होटा और फिर किए गए पाप बहुत बड़े हैं और हमें अपने कर्मों का फल एक दिन चुकाना पड़ता है।

आध्यात्मिक यात्रा के लिए कभी भी देर नहीं होती। हम ये यात्रा अभी यहीं शुरु कर फर्क महसूस कर सकते हैं। गुरुजी हमेशा आस्थाशील अनुयायी के लिए तैयार रहते हैं। हम आध्यात्मिकता के मीठे प्रसाद का स्वाद गुरुजी, के कारण चख पते हैं वो हमेशा हमारे साथ रहते हैं। उन्होंने मुझे सत्य के दर्शन करवाकर ईश्वर के समीप ला दिया है।

– गीतन अग्रवाल

GURUJI KA ASHRAM

अठारह सालों की यंत्रणा अठारह दिनों में समाप्त हो गई

मेरी पत्नी लगभग अठारह सालों से पीड़ा सह रही थी। सन् 1982 में उसके शरीर में लसीका ग्रंथि लिम्फनोड्स का विकास हो गया जो क्षयरोग के संक्रमण में बदल गया था। कमजोर और भारी दवाईयों के कारण शरीर में और भी बीमारियाँ हो गई–पेप्ट्रिका गैसट्रिक अल्सर, गॉल ब्लाडर में पत्थर, हर्निया, कान के पदरे के ट्यूमर आदि।

हमने हर तरह का इलाज ऐलौपैथी, होमियो पैथी, आयुर्वेदिक यूनानी यहाँ तक कि रेकी करवाया। लेकिन कोई भी कारगर साबित नहीं हुआ और बीमारियों से उसका पीछा नहीं छूटा। सन् 1987 से 1999 के बीच मेरी वह समुचित भोजन

नहीं कर पाती थी। उसकी भूख मर गई और वह समुचित भोजन नहीं कर पाती थी। उसने अपनी आधी श्रवण–शक्ति खो दी थी। ज्योतिष की भविष्यवाणी के अनुसार उसका जीवन समाप्त प्राय था। पूरा परिवार दुख से टूट चुका था और उम्मीद की कोई किरण दिखाई नहीं दे रही थी।

इसी समय दैवीय हितैषी गुरुजी के रूप में हमारे सामने आए जिन्होंने हमें अपनी शरण में ले लिया। गुरुजी के विषय में हमें एक मित्र द्वारा पता चला और 20 जनवरी, 2000 को हमें उनके प्रथम दर्शन हुए संगत का पहले ही दिन से शांति और निश्चिन्तता का अभास हुआ।

डॉक्टरों के अनुसार मेरी पत्नी खाले के तेल का कोई रूप और कुछ भी मसालेदरा से ज्यादा नहीं ले सकती थी और रात आठ बजे के बाद कुछ खाने की भी मनाही थी। संगत में गुरुजी ने नौ बजे हमें तेल से भरा हुआ कड़ा प्रसाद दिया और एक घंटे बाद हमें मसालेदार लंगर भी खाया। घर पहुँचकर हमने सोचा कि मेरी पत्नी ने इन सबको कैसे बर्दाश्त किया मेरी पत्नी के सात बजे खाने के बाद भी उसे लेटने में तकलीफ होती है और वो आधी रात के बाद तक जागती रहती है। बीस फरवरी को वो तुरन्त सोने चली गई और पूरी रात शांतिपूर्वक सोई।तब से वो अच्छे से बिना तकलीफ के खाना खाकर पचा भी रही है।

मार्च के महीने में शिवरात्रि के दिन हम पहली बार बड़े मंदिर गए। गुरु के आशीर्वाद, उनके प्रसाद और लंगर ने पत्नी की सारी बीमारियों को हर लिया। वो स्वयं ऊर्जा से भरपूर अनुभव कर रही थी। कुछ दिनों बाद हम पुनः विस्मित रह गए। हमने जब टी.वी. चलायातो उसने कहा कि हम बहुत ऊँचा टी.वी. सुन रहे

हैं यह वही इंसान है जिसकी श्रवण शक्ति कम हो जाने के कारण सुनने में तकलीफ होती थी।

अठारह साल की व्यथा अठारह दिनों में गायब हो गई। यह इसलिए नहीं कहा है कि गुरुजी को आशीर्वाद देने में समय की जरूरत है। वे हमेशा कृपा करते हैं लेकिन शायद हम ही उचित प्राप्त करने वाले नहीं है। उनकी आँखों के झपकने मात्र से निर्माण और संहार होता है। हजारों आत्माएँ आत्मा अपना शरीर छोड़ती हैं और उतनी ही नये शरीर में प्रवेश भी करती हैं। हम सिर्फ इतना ही कह सकते हैं "तुम सम सर नहीं दयाल, मोहे सम सर पापी।"

जबान पर जिपर

मेरी पत्नी की दूसरी सर्जरी के समय मैंने उससे मजाक में कहा कि चूंकि डॉक्टरों ने सर्जरी का सुझाव दिया है उसे अपने शरीर में जिपर भी लगवा लेना चाहिए। एक दिन संगत में में जिपर भी लगवा लेना चाहिए। एक दिन संगत में अपने अनुभवों को बताते हुए गुरुजी ने मुझे जिपर लगाने की बात को बताने को कहा। एक ही व्यक्ति के आपसी वार्तालाप की बात जो एक दशक पहले हुइ थी, उन्हें पता थी।

गुरुजी की सर्वज्ञता समय–समय पर हमारे सामने आती है मेरी बहन ने गुरुजी के दूसरे दर्शन ही किए थे, जब उन्होंने कहा कि वो उनकी पुरानी भक्त है मैंने सोचा कि यह कैसे संभव है फिर मैंने जाना कि वो भगवान शिव की बचपन से ही पूजा कर रही है और कई सालों से सोमवार का व्रत रखकर रही है। यह

एक दुर्लभ घटना थी जब गुरुजी ने अपनी असल पहचान की ओर इंगित किया था।

गुरुजी के शरण में आने से जीवन पूरी तरह बदल गया। गुरुजी ने सभी ज्योतिष की भविष्यवाणी को झूठा साबित कर मेरी पत्नी को नई और बढ़ी हुई जिन्दगी दी। ऐसा लगता है कि हम संत कबीर से भी अधिक भाग्यशाली हैं जो एक बार उलझन में पड़ गए थे कि किसे पहले प्रणाम करें–गुरु या गोविन्द को। हमारे लिए अवश्य ही शुरू ही गोविन्द हैं।

संगत भाग्यशाली है कि उन्हें सजीव ईश्वर के चरणों में बैठने का मौका मिला है। वो हमें अपने दर्शन, आशीर्वाद, स्नेह और लंगर में आने की अनुमति देकर हमें सौभाग्यशाली बनाते हैं। सभी को अपने दुख और तकलीफ से मुक्ति मिले। हमस ब मिलकर प्रार्थना करें –

GURU KA ASHRAM

मेहरान वाले सैंया रखिन चरना दे कोल,
रखिन चरना दे कोल सानु, चरने दे कोल।

– सत्संग : गोपाल सेठी : डाइंग कंपनी के ए.बी.पी.

गुरुजी के चरण कमलों में एक परिवार

हम गुरुजी के दर्शन को फरवरी, 1999 से आ रहे हैं हमने उनकी शक्ति और कृपा के बारे में बहुत कुछ सुना था और जब हमें उनके दर्शन हुए तो वे हमारे उम्मीदों से कहीं ज्यादा थे।

गुरुजी के आशीर्वाद से मेरी पत्नी पहले कृतार्थ हुई। उसे पेट और पीठ में तेज दर्द रहता था जिसका निदान नहीं होने के कारण वो बढ़ाता जा रहा था। उसने गुरुजी से जल्दी ठीक होने की प्रार्थना की जिससे वो रोज उनके दर्शन को आ सके। एक दिन गुरुजी के सामने बैठे हुए उसे शरीर के अंदर एक लहर की अनुभूति हुई जिससे वो स्वस्थ हो गई। उसके बाद उसे फिर दर्द भी नहीं हुआ।

मेरे बच्चों को भी उनका आशीर्वाद मिला। हमारे बेटी पढ़ने में अच्छी नहीं थी और उसने दसवीं कक्षा द्वितीय श्रेणी में पास की। लेकिन बारहवीं कक्ष ामें गुरुजी की कृपा से उसे विशेष दर्जा मिला। उसे आई.पी. कॉलेज, दिल्ली के एल.एल.वी (आनर्स) की प्रतियोगिता परीक्षा में उच्च स्थान मिला। आखिर साल में उसने बड़ी कंपनी में प्रशिक्षण लिया और कैंपस से ही उसका चयन नौकरी के लिए हो गया।

मेरे बेटे के साथ दूसरी समस्या थी। वो आक्रामक और अवज्ञाकारी था। वो अपनी पढ़ाई को लेकर गंभीर नहीं था और हम उसे लेकर चिंतित थे। गुरुजी ने उसे आशीर्वाद स्वरूप चांदी के कड़ा पहनने को दिया। उसके बाद ही उसके स्वभाव और पढ़ाई में भारी परिवर्तन आयां गुरुजी के आशीर्वाद से वो आज इलेक्ट्रानिक्स इंजीरियर है और एक बड़ी कंपरी में काम करता है। वो अपने माता–पिता को सम्मान और बहन को प्यार करता है और हमेशा अपने साथ गुरुजी की तस्वीर को रखता है।

अपने साथियों के साथ उसकी गाड़ी की गंभीर दुर्घटना हो गई। कार बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई थी लेकिन वो अपने मित्रों के साथ गुरुजी के आशीर्वाद के कारण बच गया।

उन्होंने मेरी भी मदद की । मेरे पी.डब्ल्यू.डी विभाग से अवकाश प्राप्ति के समय रिटायरमेंट के लाभ को लेकर समस्याएँ खड़ी हो गई थीं। एक चार्जशीट भी झूठे आधार पर तैयार की गई लेकिन गुरुजी के आशीर्वाद से सारी बाधाएं समाप्त हो गई और चार्जशीट हटा ली गई। अब मैं एक प्रमुख कन्सलटेन्सी कंपनी में

दिल्ली मे काम करता हूँ। गुरुजी के आशीर्वादों की गिनती असंख्य है। सिर्फ संपूर्ण आस्था की आवश्यकता है।

गुरुजी नानक के दर्शन

एक बार गुरुजी शादी में शामिल होने चंडीगढ़ गए और हम भी उनके साथ थे। गुरुजी ने हमें स्वर्गीय गिल अंकल के घर जाने की आज्ञा दी थी।वो घर गुरुजी के मंदिर के समान सजा हुआ था। गुरुजी और उनके मंदिर की बड़ी तस्वीरें घर को पवित्रकर रही थीं। हमने जब गुरुजी की तस्वीर को देखा तो उनके मस्तक पर गुरु नानक देव जी की आकृति दिखाई दी। हमें पता चला कि गुरुजी वहाँ कुछ घंटों के लिए रुके थे। पूरे घर से पवित्र खुश्बू का प्रसरण हो रहा था।
और एक बार जब मेरी पत्नी उनके सामने प्रार्थना कर रही थी तो उसने गुरुजी के हाथ के गिलास में भगवान शिव के सांप को देख था आज हम हमेशा उनकी उपस्थिति को चारों ओर अनुभव करते हैं जो हमारी रक्षा और हमें आशीर्वाद दे रहा है। उनके शरण में आने वालों की संख्या को देख हमें अपार खुशी होती है।

– सत्संग : श्री पी.सिंह : एक भक्त

गुरुजी ने बिना पेट्रोल के सौ कि.मी. तक गाड़ी चलाई

मि. ग्रेवाल, एक व्यापारी, पंजाब कृषि विश्वविद्यालय में अपने ससुर के यहाँ थे, जब गुरुजी वहाँ अपने कुछ भक्तों के साथ पहुँचे। काफी रात में सबने लंगर लिया।

मि. ग्रेवाल को गुरुजी को वापस जालंधर में मंदिर में ले जाना था। गुरुजी और वे मारुति 800 में कुद दूर ही गए थे कि मि. ग्रेवाल को पिता चला कि कार में बहुत कम पेट्रोल है। वे चिंतित हो गए। उन्हें पता था कि इस समय कोई भी पेट्रोल पंप खुला नहीं होगा। नब्बे के दशक के प्रारंभ में आतंकवाद के कारण

लोग अपनी दुकानें जल्दी बंद कर देते थे। उन्हें यह भी पता था कि देर रात में पुलिस और आतंकी दोनों निकलते हैं।

उनके बगल में बैठे गुरुजी ने उनके मन को पढ़ लिया और नहीं डरने को कहा, "आप क्यों इतने चिंतित हैं ? हमारे पास बहुत पेट्रोल है, आप कार चलाते रहिए।" मि. ग्रेवाल गाड़ी चलाते रहिए। हमारे पास बहुत पेट्रोल है।" मि. ग्रेवाल ने तभी देखा कि उन्होंने कार लुधियाना से 40 कि.मी. तक चला ली है जबकि कार के पेट्रोल से चार कि.मी. तक ही आ सकते थे। उन्होंने महसूस किया कि दैवीय इच्छा से कार में पेट्रोल आ रहा है। बिना किसी परेशानी के वे जल्दी ही जालंधर पहुँच गए। यात्रा के बाद गुरुजी ने कहा, "देखा, मैंने कार बिना पेट्रोलय के चला ली। लेकिन सुबह में पेट्रोल जरूर डलवा लेना, उस समय कार बिना पेट्रोल के नहीं चलेगी।"

GURUJI KA ASHRAM

मि. ग्रवल ने कहा कि उनके व्यक्तिगत अनुभव के बाद उन्होंने स्वयं को गुरुजी को समर्पित कर दिया। उन्होंने पाया कि गुरुजी कोई साधारण संत या पंडित नहीं हैं वे उन सबसे बहुत ऊपर हैं वे सद्‌गुरु हैं।

अस्सी साल के बाद कुँए में पानी भर गया

गुरुजी की कृपा असीमित हैं। उनकी शक्ति सर्वोपरि है। जयपुर में लाखों लोगों ने उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। गुरुजी महाराज वहाँ सन् 1994 में गए और ब्रिगेडियर (अब अवकाश प्राप्त जनरल) मोहन सिंह के साथ एक महीने रहे। सैंकड़ों लोग उनके दर्शन को आते थे। के राजस्थान के मरूस्थलों से बैलगाडित्रयों और तांगों में अपनी समस्याएँ चिन्ताएँ लेकर आते थे। सिर्फ एक

दृष्टि या तांबे के गिलास के रूप में अपना आशीर्वाद देकर गुरुजी उनकी सहायता करते थे। उनके भक्तों में से एक मि. ग्रेवाल लोगों के लिए दुभाषिये का काम करते थे।

उन्हें याद है कि कैसे एक बार पंचायत के सदस्य एक अनूठी समस्या लेकर गुरुजी के पास आए थे। बिरादी का कुआँ अस्सी साल से सूखा था। क्या गुरुजी उसे पानी से भर सकते थे ?

तीन दिन बाद इसका उत्तर पुरजोर शब्दों में 'हाँ' था। जयपुर की गलियों से ग्रामीण नाचते गाते उत्सव मनाते, ढोल बजाते गुरुजी के नाम का जयकारा करते आया, "गुरु बाबा, पानी आ गया।" गुरुजी ने उल्लासमय ग्रामीणों को कभी भी पानी नहीं बेचने की सलाह दी। दूसरे लोग भी उसी प्रकार निश्चिन्त हुए चाहे वे बीमारी से ग्रस्त थे या मानसिक या पारिवारिक परेशानी से त्रस्त। केवल साधारण व्यकितयों को ही उनका आशीर्वाद नहीं मिला। जब महाराजा भवानी सिंह गुरुजी के दर्शन के लिए आए तो चार लोगों ने उन्हें उठाया हुआ था। कुछ दिनों बाद वे स्वस्थ हो आसानी से चल रहे थे।

हीरे और पंखुलिड़याँ हवा से प्रकट हुए

कभी भक्तों की हृदय इच्छा ही गुरुजी, भगवान शिव के मूर्त रूप, को आसानी से आशीर्वाद देने को विवश करती है। ऐसा मि. ग्रेवाल की पत्नी रिम्पल के साथ हुआ था। गुरुजी संगत के साथ संग्रुरूर (पंजाब) में थे। उन्होंने रिम्पल को अपने सामने आने को कहा ओर दो हीरे के सृद्र प्रकट कर उसके हाथों में रख दिए। गुरुजी के तोहफे इंग्लिश पाउंड में लपेटे हुए थे। तोहफों के देने के बारह साल

बाद भी उनमें गुलाब की खुश्बू मौजूद है जो गुरुजी की उपस्थिति को दर्शाती है।

संगत द्वारा नये साल का समारोह मि. ग्रेवाल के ससुर के घर मनाया जा रहा था। तभी पंखुड़ियों की बारिश ऊपर से मि. ग्रेवाल के ससुर पर कुछ मिनटों तक होने लगी। दस मिनट बाद मिसेज बर्दान को भी ऐसे ही आशीर्वाद की प्राप्ति हुई। ये चमत्कार भक्त के प्रति गुरुजी के स्नेह को प्रकट करता है। जैसा मि.

ग्रेवाल कहते हैं कि गुरुजी आपसे कुछ नहीं चाहते हैं वे तो आपके दुःख के कारण कर्म को अपने ऊपर लेकर आपको पीड़ा से मुक्त करते हैं वे सिर्फ आपका प्रेम और विश्वास चाहते हैं।

– सत्संग : मि. ग्रेवाल : गुड़गाँव के व्यापारी

मेरा मुझ में कुछ नहीं,जो कुछ है सो तेरा

मेरा मुझ में कुछ नहीं,
जो कुछ है सो तेरा

मैं श्री गुरुग्रंथ साहिब का ये टुकड़ा गुरुजी को समर्पित करता हूँ जिन्होंने अपने

शरण में लेकर हमारे जीवन को सदा के लिए परिवर्तित कर दिया है। मैं और मेरा परिवार गुरुजी से मिलने के पहले अपना जीवन बिना किसी उद्देश्य और ईश्वर की इच्छा और समझ के बिना जी रहे थे। हमारे बेटे की श्रवण शक्ति पच्चीस साल पहले समाप्त हो चुकी थी। किसी दवाई से उसे फायदा नहीं हुआ और संतों और तांत्रिकों से भी कोई सहायता नहीं मिली और तब जैसा कहते हैं कि जब विद्यार्थी तैयार होता है तभी गुरु आता हे और यही हुआ। अचानक एक रिश्तेदार के द्वारा गुरुजी ने हमारी जिन्दगी में प्रवेश किया।

मेरे बेटे को उसकी श्रवण शक्ति वापस मिल गई

गुरुजी के प्रथम दर्शन के दि नही उन्होंने मेरी पत्नी को बता दिया कि मेरे कितने फिक्स्ट डिपॉजिट हैं उसके पास कुल कितनी साड़ियाँ उसे दक्षिण की साडियाँ पसंद हैं, कितने तोला सोना है और मेरे घर की कीमत कितनी है। मैंने घर के बारे में अपनी पत्नी को भी नहीं बताया था क्योंकि मैं स्त्रियों के स्वभाव और हीरों में उनकी रुचि को अचछी तरह जानता था। लेकिन इस छोटी सी घटना से मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया था।

मेरे बेटे को उसकी श्रवण शक्ति वापस मिल गई

जब मैंने सत्संग सुना तो गुरुजी से मिलने की इच्छा बलवती होती गई। मैंने उन्हें अपने बेटे की समस्या के बारे में बताया। उन्होंने मेरे बेटे को तुरन्त आशीर्वाद दिया और मुझे रोज उसके कान में बादाम रोगन (आयुर्वेदिक दवा) की बूँद डालने को कहा।

दस दिनों के बाद मेरे बेटे के कान में जोर का दर्द हुआ। जब मैंने गुरुजी से इस बारे में कहा तो वे बोले, ''कल्याण, बीस प्रतिशत ठीक हो गया और फिर धीरे–धीरे वो स्वस्थ हो जाएगा।'' उन्होंने मुझे बेटे का आडीमेट्री टेस्ट भी करवाने को कहा। आप मेरी खुशी की कल्पना कर सकते हैं जब मेरे बेटे ने शोर बहुत हैं कहते हुए हेड फोन हटा दिया था। गुरुजी की कृपा से पच्चीस सालों बाद मेरा बेटा दुबारा सुन पाया। यहाँ गुरुजी के चरणों में उनके आशीर्वाद उनकी कृपा से मुझे सब कुछ मिल गया और आखिरकार मुझे मेरा वास्तविक गुरु, मेरे रब, मेरे भगवान मिल गए।

चाय की पत्तियों को पढ़ना

जब से हम गुरुजी के संसर्ग में आए, हमने कई सत्संग सुने। भक्तों ने गुरुजी के साथ हुए अनुभवों का वर्णन किया और केसे उन्होंने गुरुजी को भिन्न रूपों और आकार में देखा है। मेरी पत्नी हमेशा से इसी तरह गुरुजी का आशीर्वाद लेना चाहती थी, उसे नहीं पता था कि उसकी यह इच्छा जल्दी ही पूरी होगी। नये साले के स्वागत के लिए हम गुरुजी के मंदिर जा रहे थे। लेकिन अंतिम

समय में मित्रों के आग्रह पर हम उनके साथ ही रुक गए। लेकिन गुरुजी की इच्छा और थी।

उस दिन मेरी पत्नी रोज की तरह सुबह की चाय बना रही थी। जब उसने चाय की पत्ती को पानी में डाला तो देखा कि अवशेष ने छत्र वाले साँप का रूप ले लिया। उसे महज एक संयोग मानकर उसने पत्तों को बार–बार छुपाया लेकिन

हर बार वो फन वाले साँप का ही रूप ले लेता था। यह देख वो डर गई और मुझे बुलाया मैंने उससे कहा कि ये पत्ते हमें संकेत दे रहे हैं कि गुरुजी की इच्छा है कि नये साल की शाम हम गुरुजी के साथ रहें। लेकिन सिर्फ इतना ही नहीं, यह अप्रत्यक्ष रूप से आशीर्वाद था। गुरुजी ने मेरी पत्नी के पच्चीस सालों के कमर दर्द को उसे संगत में नाच करवा कर ठीक कर दिया।

एक नास्तिक को सड़क पर धक्का

कुछ साल पहले एक मित्र के साथ मैं मेरी गाड़ी से फार्म पर जा रहा था। मेरा मित्र नास्तिक था और उसे सबद कीर्तन गाड़ी पर सुनना और गुरु तथा आध्यात्मिक की बातें बेकार लगतीथीं। वो कहता था कि वो गुरुओं में तभी विश्वास करेगा। जब वह अपनी आँखों के सामने चमत्कार होता देखने लगा।
उसने यह कहते ही एक ट्रक ने हमें सामने से धक्का दिया। हम उर्द्धबेहोशी की हालत में सड़क पर गिर गए और हमारी गाड़ी बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। आप हमारे आश्चर्य की कल्पना कर सकते हैं कि जब हमें होश आया तो हमने पाया कि हम में से किसी को भी चोट नहीं लगी है। मेरा मित्र उठने के बाद भी स्तमित लग रहा था। मैंने उससे कहा, कि इसी चमत्कार को तुम ढूँढ़ रहे थे। अगर हम गुरुजी के बारे में बात नहीं कर रहे होते कि किसी सूरत में हाईवे पर दुर्घटना के बाद भी हम बिना चोटिल हुए बच पाते। मेरे मित्र में आकस्मिक परिवर्तन आया। भरी हुई आँखों से उसने अपने हाथ उठाकर कहा, ''शुक्रिया, गुरुजी।'' जब मैंने गुरुजी को इस घटना के बारे में कहा, वे इतना ही बोले ''तुम्हें कोई पीड़ा नहीं पहुँच सकती थी, मेरी दृष्टि तुम पर थी।

ऐसी ही एक और घटना दिमाग में आती है। डॉक्टरों के प्रयासों के बावजूद मेरी भतीजी सात सालों से निस्संतान थी और अब कोई बच्चा होने की कोई उम्मीद भी नहीं थी। उसके भारत आने पर उसने गुरुजी के प्रथम दर्शन किए। अपनी इच्छा को वह गुरुजी के सामने रखे इससे पहे ही गुरुजी ने कहा, "बेटी तुम्हारा काम अक्तूबर में हो जाएगा।" हममें से कोई भी इस बात का अर्थ नहीं समझ पाया। मई के महीने में मेरी भतीजी अमेरिका वापस चली गई। गुरुजी के

आशीर्वाद से वो अक्तूबर में गर्भवती हुई और डॉक्टर चकित रह गए। उसे पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। गुरुजी के आशीर्वाद से प्रापत बच्चे श्रेष्ठ आत्मा हैं। मेधावी होने के साथ–साथ वे माता–पिता के लिए संपत्ति है।

समोसा से हृदय का इजाल

एक बार मेरी हृदय गति 180 बीट्स पर मिनट पर पहुँच गई। डॉक्टरों ने तुरन्त सर्जरी का सुझाव दिया। मैंने सर्जरी से पहले गुरुजी को सूचित करना जरूरी समझा। मैंने विशेषज्ञ डॉक्टर से मिलकर मिलने का समय ले लिया। तब शाम को मैं अपने गुरु के मंदिर गया। उन्हें मेरी परेशानी का पहले से पता था और एक भक्त के द्वारा मुझे संदेशा भिजवाया कि सब कुछ ठीक होगा, चिन्ता की कोई बात नहीं है। गुरुजी ने फिर उस शाम प्रसाद वितरित किए। एक भक्त कुछ समोसे लाया था। गुरुजी ने पाँच समोसे को अपने हाथों में तोड़कर मुझे खाने को दिए। मैं इस पर चकित रह गया क्योंकि तली हुई चीजें खाना मेरे लिए जहर के समान था। गुरुजी पर विश्वास करते हुए मैंने उसे खाया और अपनी जगह पर वापस आकर बैठ गया। उन्होंने मुझे फिर से बुलाकर दो समोसे और भी खाने को दिए। मेरा पेट भरा हुआ था लेकिन मैंने फिर भी खा लिया। देखिए, मेरी हृदय की गति उनके आशीर्वाद से अस्सी बीट्स पर वापस आ गई। अगले दिन डॉक्टरों ने मुझे क्लीन चिट दे दी, किसी सर्जरी की जरूरत नहीं थी। ऐसा मेरे गुरुजी की महानता और मेरे प्रति उनका प्रेम है।

ल्यूकेमिया ग्रंथीय बीमारी में प्ररणित हो गई

गुरुजी ने एक सद्भुत चमत्कार मेरे भतीजे के रोग को परिवर्तित कर दिखाया। मेरी बहन का बेटा छुट्टी पर दिल्ली आया हुआ था। और उसे कुछ दिनों से सर्दी जुकाम और बुखार ने परेशान किया हुआ था। ज्यादा दिनों तक रहने के कारण मेरी डॉक्टर बहन रूबी ने उसे दवाइयाँ दी लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। आखिरकार, उसने कुछ टेस्ट करवाए जिसमें यह कहा गया कि मेरी भतीजे को और जाँच के परिणाम के इंतजार करने के लिए कहा। मेरी बहन

चिंता में उन्मत्त हो गई। उसने गुरुजी से अपने बच्चे को ठीक करने की प्रार्थना की।

इस बीच मैं दिल्ली आकर गुरुजी से मिला, उन्होंने मुझसे पूछा, "क्या रूबी प्रसन्न है ?" बाद में मैंने अपनी बहन को फोन कर बताया कि गुरुजी ने क्या कहा है। उसने कहा कि अगले दिन वो भी गुरुजी के दर्शन के लिए चलेगी। रास्ते में उसने बताया कि इस बीच क्या हुआ, कैसे उसने प्रार्थना की और कैसे आखिरी जाँच में ये निश्चित हुआ कि मेरे भतीजे को ग्रंथीय समस्या है, ल्यूकेमिा नहीं। जब हम गुरुजी को प्रणाम करने गए तो उन्होंने कहा, "रूबी, मैंने तुम्हारे बेटे की बीमारी को बदल दिया।" यह सुनकर हमारे आश्चर्य का ठिकाना नही रहा क्योंकि इस बारे में मैं कोई भी नहीं जानता था। ऐसे मेरे गुरुजी हैं जो हमारी समस्याओं चिंताओं का ध्यान रखते हैं। आप केवल उनके बारे में सोचते हैं और वो आपके लिए मौजूद रहते हैं।

एक सब्जी विक्रेता को दृष्टि दी

मेरे प्रिय मित्र ने कुछ जमीन खरीदी थी लेकिन वहाँ जमीन में पानी न होने के कारण वो निराश हो गया। उसने अपनी समस्या गुरुजी को बताई तो उन्होंने एक विशिष्ट कोने को 120 फीट गहराई तक खोदने को कहा। उन्होंने उसे कभी भी पानी न बेचने को कहा नहीं तो कुआँ सूख जाएगा। उसने वैसा ही किया और साफ पानी आना शुरू हो गया। सौ सालों बाद यहाँ के अदर के पानी का रूप बदल गया। और किसी प्रमाण की आवश्यकता है कि गुरुजी ही भगवान हैं ?

गुरुजी उन लोगों के लिए हमेशा मौजूद रहते हैं जो जरूरत के समय उन्हें पूरी आस्था, विश्वास और समर्पण के साथ याद करता है। चंडीगढ़ के सेक्टर बाईस में कए गरीब सब्जी–विक्रेता था जिसे ब्रेन ट्यूमर के कारण देखने में असुविधा होती थी। ऑपरेशन के छः महीने बाद ही ट्यूमर फिर से आने पर उसने दुबारा सर्जरी करवाई। 'ट्यूमर जहरीला था और सब्जी विक्रेता तीन महीने तक कोमा में रहा। जब वो होश में आया तो डॉक्टरों ने कहा कि अब और कुछ नहीं किया जा सकता। इसलिए उसकी माँ उसे घर ले गई। उसने गुरुजी की कृपा के बारे

में सुन रखा था। उसने गुरुजी से सहायता के लिए याचना की। गुरुजी ने उस दस मूंगफली को सूर्यास्त के पानी में डुबोने को कहा। सूर्योदय के पहले दाने को खाने को और छिलके को कुछ मिनटों तक आँखों पर रखने को कहा यह इलाज दस दिनों तक करना था। उस व्यक्ति की आँखों की रोशनी लौट आई और आज वह पूर्णतया स्वस्थ है। ऐसा गुरुजी की कृपा से संभव हुआ है।

मैं घंटों इस सत्संग को लिखने में गुरुजी के चमत्कार के वर्णन में बीता सकता हूँ। मैं उनका गुणागान सारा दिन कर सकता हूँ क्योंकि वो मेरे लिए भगवान हैं जो मेरे लिए मेरे परिवार के लिए और संगत के लिए सदा मुस्कुराते हुए हमें अपना संरक्षण देते हैं अगर इस पृथ्वी पर कहीं स्वर्ग है तो वो केवल यही है, यहीं है यही है।

– सत्संग : हरशरण सिंह तूर : एक भक्त

GURUJI KA ASHRAM

दवाइयों पर विश्वास करने वाले डॉक्टर ने आस्था के समक्ष सिर झुकाया

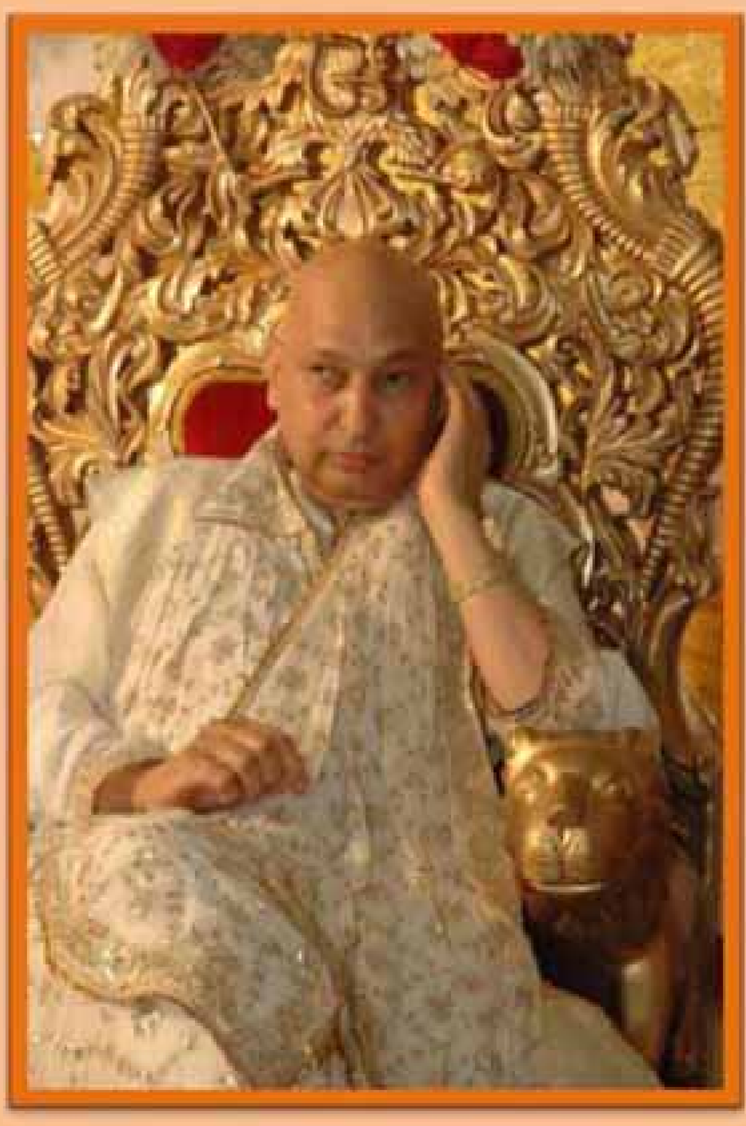

डॉ. इन्दर मोहन भाटिया ने पंजाब की सम्भ्रान्त व्यवसायिक परिवार में जन्म लिया। उनके पिता अमृतसर नगरपालिका के मेयर कई बार चुने गए। उन्हें गरीबों, के प्रति अनुराग था जो भाव उनके पुत्र में भी आए। इसी कारण उन्होंने चिकित्सा विज्ञान पढ़ने का निर्णय लियाऔर वे सन् 1962 में सरकारी मेडिकल कॉलेज से 'ग्रेजुएट' हुए। चार साल बाद, तीस साल की उम्र में उन्होंने एम्स से 'मास्टर ऑफ सर्जरी' भी की। उनकी विशिष्टता नेत्र–संबंधी रोगों में थी और वे उस विभाग के एम्स में प्रधान भी बन गए।

जाहिर तौर पर डॉक्र की पृष्ठभूमि विज्ञान की रही जिसमें उनका दृढ़ विश्वास था। तब साल 2002 में कुछ ऐसा हुआ जिससे बहुत बड़ा बदलाव आया। वे गुरुजी के दर्शन को अपनी पुत्रवधू के साथ गए। उनके अनुभव उनके ही शब्दों में, "हम वहाँ पर अजनबी थे। सबको चाय दी गई। मैंने चाय ली लेकिन उसने (पुत्रवधू) चाय को मनाकर दिया। गुरुजी ने यह देखा और तुरन्त कहा यह चाय नहीं है बल्कि तुम्हारी दवाई है। तुम्हें आशीर्वाद स्वरूप पुत्र की प्राप्ति होगी और इसलिए तुम मेरे पास आई हो। मेरी पुत्रवधू के विवाह को चार साल हो चुके थे और विशेषज्ञों ने यह कह दिया था कि अगर असीव नही ंतो उसे गर्भधारण में मुश्किल जरूर होगी। इससे वो दुखी हो गई थी। यहाँ हम यह सुनकर चकित रह गए क्योंकि कोई भी उसकी समस्या को नहीं जानता था। एक महीने के बाद उसने गर्भधारण किया और उसे पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई। मेरे सारे डॉक्टर मित्रों जो उसकी समस्या को जानते थे, ने मुझे कहा कि ये चमत्कार ही है।"

GURUJI KA ASHRAM

डॉक्टर की अब तक की विज्ञान पर आधारित मान्यताएँ हिल गईं। उन्होंने कहा कि गुरुजी की उपस्थिति में हुए चमत्कार की बुद्धि संगत व्याख्याकरना उनके लिए कितना कठिन है।

वे वैानिकता के अतिरिक्त से उबरे भी नहीं थे कि गुरुजी के दैवीय चमत्कार की एक और घटना हुई। उनके पुत्रवधू की सतर साल की दादी, जिन्हें मुधुमेह था, को भयंकर कमर दर्द और नीचे पाँव में आंशिक पक्षाघात हो गया था। वो आसानी से चल नहीं पाती थीं। उनकी जाँच एम्स के बड़े–बड़े न्यूरोलॉजिस्ट ने की। एम आर आई कराने के बाद उन्होंने सर्जरी कराने का सुझाव दिया जिससे पूर्ण पक्षाघात से बचाया जा सके।

सर्जरी की तारीख निश्यित कर डॉक्टर उन्हें गुरुजी के पास आशीर्वाद के लिए ले गए जिससे सर्जरी अच्छे से हो पाए। गुरुजी ने कहा, "किस प्रकार की सर्जरी ? उन्होंने कहा कि दादी ने प्रसाद ले लिया है और अब वो ठीक हो जायेंगी। इसलिए हमने सर्जरी स्थगित कर दी और वे ठीक होने लगी। कुछ हफ्तों के भीतर से पूर्णतया स्वस्थ हो गईं।

डॉ. भाटिया ने कहा कि इन सालों में उन्होंने और भी चमत्कारिक घटनाएं देखीं। ह्रदय की बीमार के साथ–साथ अन्य खतरनाक बीमारियाँ भी गुरुजी के आशीर्वाद से ठीक हो गईं। उन्हें बिना बताए भी चमत्कार होते हैं।
लेकिन गुरुजी मानते हैं कि गुरुजी सबकी सहायता करते हैं, बस आपको उनमे पूर्ण विश्वास, धैर्य और समर्पण की भावना रखनी होगी। उनके लिए गुरुजी की सबसे बड़ीदेन उनके संपूर्ण व्यक्तित्व का परिवर्तन है। डॉ. भाटिया ने कहा, "मेरे जीवन में पूरी शांति छा गई है। उन्होंने मुझे विश्वास की पतवार दी है जिससे मुझे ईश्वरीय सत्ता पर विश्वास हो गया।

– सत्संग : डॉ0 इन्दर मोहन भाटिया, एम्स

हमारे युग के महापुरुष

माँ सरस्वती इच्छापूर्ति पेड़ रूपी कलम से, समुरू पर्वत के समुद्र में धोए गए पानी रूपी स्याही से और सम्पूर्ण पृथ्वी को कागज बनाकर जीवनभर लिखते रहने से भी हे भगवान शिव वे आपकी महानता का वर्णन नहीं कर सकती।

गुरु के सद्‌गुणों, उनकी कृपा का वर्णन नहीं किया जा सकता और गुरुजी तो स्वयं शिव के अवतार हैं। फिर भी जिसने कुछ समय के लिए भी गुरुजी का दर्शन किया है वे उनके पर्दे के पीछे छिपे अच्छे और शांत स्वभाव को देख सकता है। मैं गुरुजी को मेरे रिश्तेदार कर्नल (रिटायर्ड) जोशी के द्वारा जान पाया और तुरन्त ही उनके आशीर्वाद को प्रापत करना चाह रहा था। लेकिन मैं उस समय पारिवारिक जिम्मेदारियों में उलझा था, मैं दिल्ली नहीं जा पा रहा था। मैंने गुरुजी को देने के लिए कर्नल जोशी को लिखा

"इबन आदिम की कोई दुआ करे
मेरे दर्द की कोई दवा करे"

मेरे शब्द गुरुजी तक पहुँचे भी नहीं थे कि मुझे उनके प्रथम दर्शन में ही आशीर्वाद मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मुझे ऐसा लगा कि गुरुजी कह रहे हैं –

"मम दर्शन फल परम अनूा
जीव पावें निज सहज सरूपा"

ये महापुरुषों के स्पर्श मात्र का, उनकी उपस्थिति का चमत्कार है कि साधारण आदमी भी अपने आपको सवर्गिक आनंद की वर्षा में डुबो सकते हैं। जिसे धारे तपस्या करने वाले भी जीवन भर की साधना के बाद प्रापत नहीं कर पाते।

गुरुजी हमारे मन में झाँक लेते हैं और ऐसा मेरा विश्वास है कि वो हमारे बिना बताए ही हमें सब कुछ दे देते हैं। यहाँ पर यह भी ध्यान देने योग्य है कि हमारी इच्छाएँ हमारे लिए लाभदायक होने पर ही पूरी की जाती हैं। संतों ने ऐसा कहा कि ईश्वर का नाम लेना ही इच्छा पूर्ति करने वाला वृक्ष है लेकिन गुरुजी और इच्छा पूर्ति करने वाले वृक्ष कल्पवृक्ष में अंतर है। कल्पवृक्ष याचक को मनोवांछित फल देता है जबकि गुरुजी को यथोचित देते हैं।

गुरुजी के पंजाब में जन्म लेने का भी महत्व है। प्राचीन काल में पंजाब को सारस्वत प्रदेश के नाम से जाना जाता था। पुराणों बेदों के रचयिता महर्षि व्यास जिन्होंने महाभारत और ब्रह्म सूत्र लिखा और भी महान संतों ने अपनी पवित्र उपस्थिति से क्षेत्र को

कृतार्थ किया। इस महान और प्राचीन परंपरा को कलयुग में श्री गुरुनानक देव जी और श्री चाँच ने पंजाब में जन्म लेकर आगे बढ़ाया जिन्होंने दबाए गए लोगों को ऊपर उठाया गुरुजी भी ऐसा ही कर रहे हैं – ऐसा मेरा विश्वास है।

विश्व में कई महान पूज्य धर्मोपदेश हुए हैं लेकिन मानव जगत का उत्थान सिर्फ ज्ञान को अलंकृत शब्दों के द्वारा कहने से नहीं होगा। केवल प्रकाश का नाम लेने से कोई अंधकार को दूर नहीं भगा सकता। जरूरत ऐसे व्यक्ति की है जिसके अंतर्गन में स्वयं एक प्रकाश प्रज्जवलित हो जो अपने आध्यात्मिकता की अग्नि से हमारे अंतर्मन में प्रकाश उत्पन्न कर सके। अपने ज्ञान के प्रकाश से वो केवल अपने अनुयायियों को आने वाले खतरों से सावधान ही नहीं करते बल्कि मार्ग को बाधा मुक्त भी बनाते हैं। महात्मा तुलसीदास ने गुरुजी के समान महापुरुषों को भगवान से भी ज्यादा ऊँचा स्थान दिया है। उन्होंने लिखा है : ''राम सिन्धु धन, सजजन धीरा, चंदन तरू, हरि संत समीरा।' जैसे बादल हमारी प्यास बुझाने के लिए बारिश करवाते हैं और ठंडी हवा चंदन के वृक्षों की शीतलता लाती है उसी प्रकार महापुरुषों के द्वारा हम ईश्वर से जुड़ते हैं भगवान राम ने भी संत नारद से कहा कि श्रुतियाँ प्रकाशित धर्मग्रंथ भी महापुरुषों की महानता वर्णित करने में असमर्थ है।

परम आदरणीय गुरुजी की मातृभूमि सचखंड में है। ये सचखंड क्या है और कहाँ है ? ये सिर्फ वो जान सकता है जो गुरुजी की कृपा से अनुग्रहीत हुआ है, अतिशय कृपा जाही पर होई, वाऊँ दे अहि मान सोई, संत विशुद्ध मिले प्रभु

ताही, चरित्र राम कृपा कर जोई। और ऐसा कहा गया है कि संचखंड में भगवान वास करते हैं।

दयालु ईश्वर अपने महापुरुषों को एक लक्ष्य पर भेजता है। महापुरुष हमारे बीच आकर एक व्यक्ति को पाँच चरणों की यात्रा पर ले जाते हैं (1.) धरम खंड (2.) ज्ञान खंड (3.) सरम खंड (4.) करम खंड और (5.) भगवान के अपने घर सचखंड यही यात्रा की समाप्ति होती है व्यक्ति को अपने दुःखों से छुटकारा मिल जाता है और वो ईश्वर के स्वर्गिक सुख के साम्राज्य का अंग बन जाता है।

पर आदरणीय गुरुजी सबसे पहले अपने भक्तों के जीवन से समस्याओं को दूर कर उसे कर्मयोग के पथ पर ले जाते हैं। यह यात्रा का पहला चरण – धर्मखंड है। भक्त शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ होकर साधारण और असाधारण विषयों पर चिन्तन करने लगता है। वो अपने जीवन की क्षणिकता और ब्रह्ममांड के सत्य से परिचित होने लगता है इस स्थिति में वो ज्ञान खंड में पहुँच जाता है।

लगातार चिनतन करते रहने से वो ईश्वर की महानता और अपनी वास्तविकता को समझने लगता है। वो अपने अहं को देख शर्मसार होता है उसे लगता है कि वो अपना ईश्वर द्वारा प्रदान किया गया जीवन व्यर्थ कर रहा है कि वह ईश्वर तक नहीं पहुँच पा रहा है। जब ईश्वर से मिलने की उत्कंठा तीव्र हो जाती है तो व्यक्ति सरम खंड में पहुँच जाता है। उसकी यात्रा चरम पर तब पहुँचती है जब वो ईश्वर का कृपापात्र बनता है जो उसकी शंकाओं को दूर कर आनंद की प्राप्ति करवाता है। यह करम खंड है।

ईश्वर की कृपा से आनंद प्राप्ति के बाद उसके लिए –सचखंड के द्वार खुल जाते हैं कोई भी ये यात्रा अपने आपसे नहीं कर सकता। यहाँ तक कि भगवान शिव भी इस जीवनरूपी सागर को पार नहीं कर सकता ब्रह्मा, जो ज्ञान के भंडार हैं, उन्हें भी ईश्वर। आत्मसिद्ध के लिए गुरुजी या महापुरुष के पास जाना पड़ता है और गुरु की कृपादृष्टि उन्हें इच्दित लक्ष्य की ओर ले जाती है। गुरुजी इस युग के महापुरुष हैं और मैं उनके चरण कमल को श्रद्धापूर्वक नमन करता हूँ।

तुम्हारे चरण–कमल

हे ईश्वर ! हे शिव ! मैं तुम्हारे चरण–कमलों का गुणगान करता हूँ,
तुम्हीं हमारे आश्रय हो, मैं इनका मान करता हूँ,
ये चरण कमल ही हमें तुमसे अटूट बाँधते हैं,
संसारिक माया–जाल को हमारे लिए काटते हैं,
तुम्हारे भक्तों की इच्छित लक्ष्य प्रदान करते हैं,
इच्छापूरक वृक्ष की तरह फलों का दान करते हैं।

हे ईश्वर! हे शिव ! मैं तुम्हारे चरण–कमलों का गुणगान करता हूँ
शिव, व्रह्मा, स्वर्ग के सारे देवता
तुम्हारे चरणों में शीश झुकाते हैं,
परमप्रिय गुरु, उनकी सुरक्षा चाहने वाले
तुम्हारे चरणों में ही शरण पाते हैं।
स्वामी, तुम्हारे आराध्य चरणों का ही केवल गायन है,
ळमारे जीवन में विघ्नों का नाश करने वाला एक साधन है,
जीवन के महासागर में ये ही हमारा पार लगाते हैं,
हे ईश्वर ! हे शिव ! मैं तुम्हारे चरण–कमलों का गुण–गान करता हूँ।

– नैनीताल के भक्त, जगदीश. सी. पांडे का सत्संग

GURUDEV ASHRAM

गुरुजी ने मेरे पिता को जीवनदान दिया

सन् 2006 मार्च में होली के दो दिन पहले मेरे पिता को हल्द्वानी कुमायू की पहाड़ियों में बसा शहर के अस्पताल के आई सी यू में दाखिल करवाया गया। उन्हें उच्च रक्तचाप की बीमारी थी। मेरी बहन ने मुझे देर रात फोन किया था।

जैसे ही मेरी बहन ने मुझे यह बुरी खबर दी, मैंने और मेरी पत्नी ने गुरुजीकी पहले दी हुई चेतावनी को याद किया। शिवरात्रि के पहले (फरवरी 2006 में) उन्होंने मेरे पिता के बारे में पूदा था जो भीमताल से गुड़गाँव सर्दियाँ बिताने आए थे गुरुजी जानना चाहते थे कि क्या मेरे पिता शिवरात्रि के पहले चले गए जो कि वो वापस चले गए थे। गुरुजी ने फिर मेरे मामा कर्नल रिटायर्ड एस के जोशी के हाथों संदेश भिजवायाा कि मेरे माता–पिता को हमारे साथ रहना चाहिए। गुरुजी के कथन हमेशा भविष्यसूचक होते हैं जिनका सदैव ध्यान रखना चाहिए।

मेरे पिता उच्च रक्तदाब के आघात से बच नहीं पाए। उन्हें हल्द्वानी से भीमताल आते हुए ये दौरा पड़ा जहाँ वे भारतीय जीवन बीमा निगम के समारोह में शरीक होने गए थे। मेरे पिता जीवन बीमा में ही काम करते थे।
दौरा बहुत तीव्र था और खतरनाक भी हो सकता था अगर गुरुजी की कृपा का साथ न होता। जैसे ही रक्तचाप ऊपर बढत्रने लगा, पिताजी की नाक से बहते खून ने धमनियों से दबाव को निकला दियां जिससे दिल का दौरा पड़ सकता था या पक्षाघात से शरीर निष्क्रिय हो सकता था।

आई.सी.यू. में पिताजी इस बात पर पछता रहे थे कि उन्हें गुरुजी के संदेश का ध्यान रखना चाहिए था लेकिन गुरुजी के आशीर्वाद से वे सिर्फ एक रात के बाद ही घर वापस आ गए। पिताजी ने एक सप्ताह हल्द्वानी में स्वास्थ्य लाभ किया और फिर हमस ब गुड़गाँव आ गए। इस दौरान पिताजी ने बड़े मंदिर में कुछ समय बिताने की इच्छा जाहिर की।

मैं अब भी पिताजी के रक्तचाप को लेकर चिंतित था। यह चिन्ता खत्म होने का नाम नहीं ले रही थी। लेकिन मुझे चिन्ता करने की जरूरत नहीं थी क्यों हम गुरुजी के भयमुक्त शरण में हैं। एक संरक्षी, दयालु पिता की तरह गुरुजी हमारी समस्याओं को भगा देते हैं। पलि तो उन्होंने पिताजी को मंदिर में जाने की अनकही इच्छा को पूरा किया। फिर पिताजी को अभिमंत्रित ताँबे के गिलास में पानी पीने को दिया। पिताजी ने गुरुजी के कहे अनुसार किया वे मंदिर गए, उनके आशीर्वाद रूपी जल को ग्रहण किया और लंगर भी लिया।

यह डॉक्टर के सुझाव के विपरीत था। पिताजी को कम नमक वाला भोजन करना था लेकिन लंगर में मसालेदार भोजन मिलता था। मेरे पिताजी को पूर्ण

रूप से आराम करने के लिए कहा गया था लेकिन वे मंदिर में बैसाखी के समारोह की तैयारियों में संलग्न हो गए थे।

गुड़गाँव आने के तीन हफ्तों के भीतर ही हम एक चमत्कार के साक्षी होने वाले थी। उस करामाती ताँबे के गिरास से पानी पीने के कुछ दिनों बाद ही पिताजी के स्वास्थ्य में आकस्मिक सुधार आने लगा। उनका रक्तचाप सामान्य होने लगा। गुरुजी के आशीर्वाद ने न केवल पिताजी के रक्तचाप को सामान्य किया बल्कि डॉक्टरों के प्रिय दवाओं की सूची पर भी पानी फेर दिया और फिर से विज्ञान को आस्था की चुनौती दी। मेरे पिता के लिए गुरुजी का आशीर्वाद प्राणरक्षक के समान था और मेरे और मेरी पत्नी के लिए उनके प्रेम और दयालु का प्रमाण। उनके बारे में हृदयगत भावों को लिखने के लिए शब्द कम पड़ जाते हैं हम सिर्फ उनके चरण कमलों में बैठने के प्रार्थी हैं हम अनंत काल तक नमन करते रहें।

GURUJI KA ASHRAM

– सत्संग : जीतू : एक भक्त

आत्मजागृति

'जे सौ चॉद उगे, सूरज चारे हजार,
इत्थे चन्नन छुदे गुरु बिन घोर अंधकार'

मेरे भाई ने सन् 1995 में मेरा परिचय गुरुजी से करवाया। जैसे मैं उन्हें पहली

बार प्रणाम करने को झुकी तो उन्होंने कहा, ''तुम आ गई जतिन्दर जतिन्दर से संबोधित नहीं करता। सामान्यतः मुझे लोग मेरे संक्षिप्त नाम 'जोगा' कहकर बुलाते हैं और सिर्फ परिवार वालों को ही मेरे औपचारिक नाम के बोर में पता है।

मैंने सिर्फ इसे एक संयोग माना। जब मैं गुरुजी के दर्शन को दूसरी बार गया तो मैं तर्क के प्रभाव में गयी थी। मुझे अच्छी तरह याद है कि मैं योगमुद्रा में अपनी

आँखों को बंद कर बैठी थी। तभी अचानक मुझे लगा कि मैं जमीन से ऊपर तैर रही हूँ। मैंने तुरन्त अपने हाथ नीचे किए और एक धक्के से मेरी आँख खुल गई। मैंने गुरुजी की ओर देखा जो मेरी ओर देखकर मुस्कुरा रहे थे। मैं समझ गयी कि उन्होंने ही इसे संभव किया है। मैं आज भी उस तैरने वाले अनुभव को महसूस करती हूँ।

मैं दो साल की उम्र से दमे का मरीज थी और पिछले तीस सालों से स्टिरॉयड की कारण और समस्याएँ उत्पन्न हो गई। मुझे गैस्ट्रीक और उससे संबंधी और भी एलर्जी जो गई जिससे मैं दमे या स्पांडिलाइटिस के कारण अस्पताल में रहती थी।

गुरुजी के संगत में आने के बाद धीरे–धीरे मेरी शारीरिक समस्याएँ और तनाव समाप्त होते गए। हर बार संगत के बाद मैं बेहतर महसूस करती थी। मैं गुरुजी के आशीर्वाद से खुद को सामान्य समझने लगी थी। और यह स्वस्थ बदलाव बिना किसी दवाईया तपस के आया था। सिर्फ विश्वास और लंगर और मैं स्वस्थ हो गयी। कुछ सालों पहले, मेरे पति को अपने रिकार्डिंग स्टूडियों के लिए अत्यधिक महंगे स्विस मशीनें खरीदनी पड़ीं। व्यापार की अच्छी स्थिति नहीं थी इसलिए ये मशीनें बहुत जरूरी थीं। मगर कुछ समस्याएं थीं। व्यवसायिक ध्वनि सामग्री आयात करावने के नियम बहुत लम्बे थे। तब कोई विदेशी कंपनी से मेरे पति को मिलने आया और कुछ सामान्य समझने के बाद उसने आयात को सरल बना दिया। हम उस आदमी को बिल्कुल नहीं जानते थे, ऐसा लगता था मानों उसे हमारी मदद के लिए ही भेजा गया है। उस कंपनी के प्रतिनिधि ने हमें कहीं से आकर बचा लिया। हम अपने व्यापार के कठिन समय में चलते रहने का कारण गुरुजी का आशीर्वाद है।

संगीत की ध्वनि

एक बार पंजाब की बड़ी प्रसिद्ध गायिका संगीत में गाने के लिए आई थी। गुरुजी ने मेरे पति को उसके गाने रिकार्ड करने को कहा। गायिका के रिकार्डिंग के सारे साजो समान तैयार थे, यह बात गुरुजी को मेरे पति ने बताई। वे मुस्कुराकर उन्हें संगीत का मजा लेने को कहा।

तीन घंटे के गायन के बाद गुरुजी ने गायिका को फिर से गाना चलाने को कहा लेकिन कोई आवाज नहीं आई। आधे घंटे की मेहनत के बाद गायिका के साउंड इंजीनियर ने कहा कि गाने रिकार्ड ही नहीं हुए हैं। गुरुजी मुस्कुराते हुए मेरे पति की ओर देखकर बोले कि अगली बार गायिका गाने वही रिकार्ड करेंगे। गुरुजी के आशीर्वाद से मेरे पति के रिकार्ड किए गाने संगत में लगभग रोज बजते हैं।

उनका रोगहर स्पर्श

गुरुजी के कृपा करने का तरीका अलग–अलग है मगर उनके निर्देशों का अक्षरशः पालन अत्यावश्यक है। मेरी ननद 'माइग्रेन' से आठ साल की उम्र से परेशान थी। गुरुजी की संगत में ही उसे एक बार दौरा पड़ा। लंगर के दौरान गुरुजी ने उसे दो चपातियाँ दीं। उसने वे जैसे–तैसे खा ली। गुरुजी ने फिर दो और दी। उसने तीसरी चपाती खाकर चौथी को अपने पर्स में रख लिया उसे तुरन्त ही अच्छा महसूस हुआ। जब वो अगली संगत में आई तो उसने कहा कि उसका माइग्रेन नब्बे प्रतिशत ठीक हो गया है। गुरुजी हंसते हुए बोले कि अगर उसने चौथी चपाती खा ली होती तो वो पूरी तरह ठीक हो जाती। वो यह

सुनकर चकित रह गई क्योंकि चपाती छुपाने वाली बात किसी को नहीं बताई थी।

मेरे पिता अवकाश प्राप्त सरकारी नौकर और गुरुजी के चरम भक्त थे। उन्हें गुरुजी के साथ बहुत रोचक अनुभव हुआ। एक बार वे मेरे भाई के साथ संगत में गए। गुरुजी ने मेरे भाई को इक्यावन रुपये के पान के पत्ते बाजार से लाने को

कहा। फिर गुरुजी ने उन पान के पत्तों को मेरे पिता के पेट पर रखकर बोला कि उन्होंने उनका ऑपरेशन कर दिया है। मेरे पिता स्वयं को स्वस्थ मानते थे, इसलिए यह सुनकर भौचक्के रह गए। कुछ दिनों बाद मेरे पिता के मूत्र से रक्त आने के कारण अस्पताल में भर्ती करवाया गया। डॉक्टर ने गॉल ब्लाडर के कैंसर होने की बात बताई और पिताजी का ऑपरेशन हो गया। उस समय यह बात स्पष्ट हो गई कि गुरुजी ने उन्हें आशीर्वाद दिया था। अगर उन्होंने उस

दिन पान के पत्तों से ऑपरेशन नहीं किया होता तो मेरे पिताजी को कभी पता नहीं चलता कि उनके ब्लाडर में कोई समस्या है इस प्रकार गुरुजी ने उन्हें रोग के बढ़ने की बात तो दूर उसके पता चलने से भी पहले ठीक कर दिया।

यह घटना ऐसे व्यक्ति से संबंधित है जो कभी गुरुजी से नहीं मिलाने हमें स्तंमित कर दिया।

हमारे परिवार में कुत्ते बहुत अधिक दो जिससे पशु–चिकित्सक का आना लगा रहता था। एक दिन पशु–चिकित्सक आने ससुर के एडवांसड तीसरे चरण के कैंसर होने कारण चिंतत था। वो और उसकी पत्नी उन्हें देखने अस्पताल देखने जाने वाले थे। मैं उसकी पत्नी से बाहर गाड़ी में मिली मैंने उसे गुरुजी की एक छोटी सी तस्वीर दी जबकि वह उनके बारे में कुछ नहीं जानती थी लेकिन कुछ भी करने को तैयार उसने तस्वीर ले ली। मेरे कहे अनुसार उसने वो तस्वीर पिता की कमीज की जेब या उनके तकिए के नीचे रख दी। उस रात उसके पिता की हालत बहुत ज्यादा खराब हो गई। लेकिन चमत्कार की तरह अगले दिन से उनकी हालत ठीक होने लगी और अगले चार दिनों में उन्हें अस्पताल से छुट्‌टी मिल गई। ऐसे लगा मानो किसी से वाकई कैंसर को उनके शरीर से निकाल दिया है क्योंकि उनकी पीठ पर एक गढ्‌ढा बन गया था। उनके पूरे परिवार को संगत में आया देख मुझे खुशी हुई। पशु–चिकित्सक के ससुर ने मुझे बहुत धन्यवाद दिया। मैंने उनसे गुरुजी को धन्यवाद करने को कहा।

मेरे अमेरिकी बच्चे

जब से मेरे बच्चे स्कूल में ही थी, गुरुजी उन्हें अमेरिकन कहा करते थे। हम इसका कारण समझ नहीं पाते थे। उनका न विदेश जाने की ओर झुकाव और न कोई योजना थी। लेकिन गुरुजी भविष्य दर्शी हैं आज मेरा बड़ा बेटा कनाडा में है और छोटे बेटे को कैलीफोर्निया के एक संस्थान में दाखिला मिल गया है। गुरुजी ने मेरे बच्चों को शैक्षिक स्तर पर अच्छा करने में सहायता की। उनके आशीर्वाद से ही मेरे छोटे बेटे ने राज्य स्तरीय कम्प्यूटर साइंस की प्रवेश परीक्षा में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

आज के युग में जब इतनी नकारात्मकता, अविश्वास और धोखा है, बीमारियाँ फैली हुई हैं, मैं गुरुजी से मिलना अपना सौभाग्य मानती हूँ, जिससे मेरे दुख, समस्याएँ कम हो गई हैं और उनका स्थन विश्वास आस्था, अच्छे स्वास्थ्य और आध्यात्मिकता के अनुभव ने ले लिया है। इसने हमें जीवन को समझने और ईश्वर को समझने के आश्चर्यजनक तरीके बजाए हैं गुरुजी का हमें विशेष समझने और हमारे जीवन को अनुग्रहीत करने के अपने तरीके हैं।

– सत्संग, जोगा चीमा, एक भक्त

उनके आशीर्वाद की छाया में

हम गुरुजी की शरण में अगस्त 1998 में आए। मैं 1975 से 1984 तक जालंधर में गुरुजी के मंदिर के निकट रहा लेकिन सन् 1998 में उन्होंने अपने आशीर्वाद का सहारा मुझे दिया। और तब से उनके दर्शन क्रम जारी है।

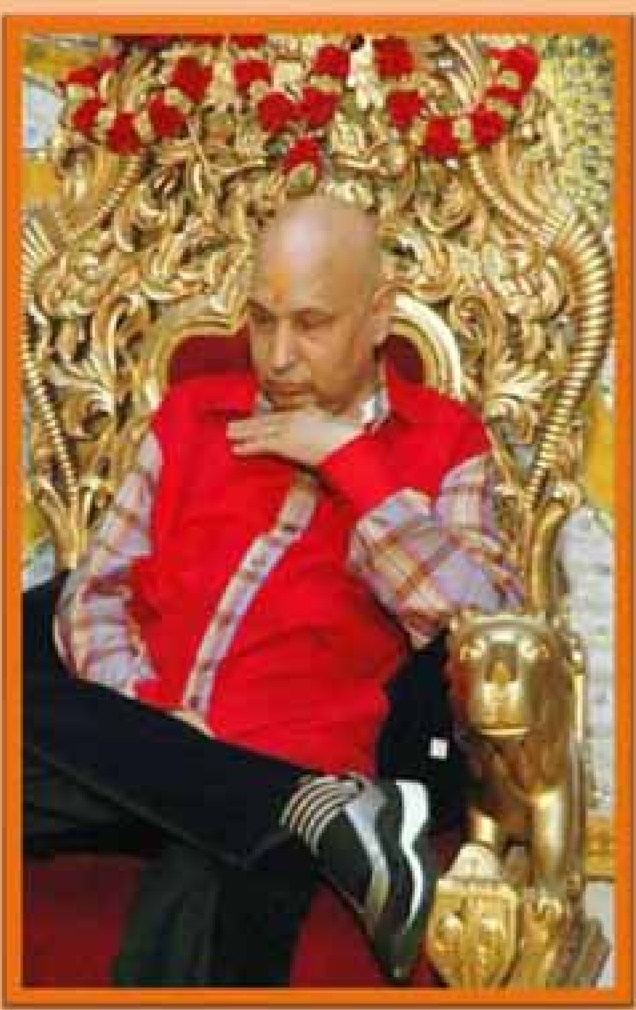

सनु 1998 में हम अपने इकलौते पुत्र, जो दुबई में रहता था, की शादी के बारे में सोच रहे थे। गुरुजी ने मेरे बेटे और होने वाली पुत्रवधू की तस्वीर मंगाकर उन्हें आशीर्वाद दिया।

इस प्रकार मार्च 1999 में मेरे बेटे की शादी हुई। और ऐसा लगा कि शादी के हर समारोह को गुरुजी ने अपना संरक्षण प्रदान किया था। मैंने उसी समय नोएडा में अपना घर बनाया था इसलिए पैसों की तंगी चल रही थी। लेकिन गुरुजी के आशीर्वाद से शादी के समारोह अच्छी तरह सम्पन्न हुई। रिसेप्शन ताज होटल दिल्ली में दिया गया। समारोह के फोटोग्राफर समारोह देखकर बहुत प्रभावित हुआ। उसने कहा कि उसने दिल्ली में पाँच सौ ज्यादा शादियों में तस्वीरें ली हैं और पंजाबियों की शादी में शराब के कारण झगड़ा हुए बिना नहीं रहता। लेकिन मेरे बेटे की शादी में ऐसा कुछ भी नहीं हुआ।

वसंत कांटीनेन्टल होटल में हुए एक समारोह के बाद कुछ रिश्तेदार नोएडा लौट रहे थे कि उनकी मिनी बस खराब हो गई। महिलाओं ने भारी और महंगे जेवर पहने थे और अर्द्धरात्रि का समय था। लेकिन सभी सुरक्षित घर पहुँच गए। सिर्फ कृपालु सर्वोपरि सत्ता गुरुजी ने उनकी सुरक्षा पर अपनी दृष्टि रखी होगी।

दस सालों के लिए परिवार को अमेरिकी वीजा मिल गया

मेरा बेटा टेलीकॉम इंजीनियर था और दुबई में रहता था लेकिन वो वहाँ पर खुश नहीं था। मैं गुरुजी से इस बारे में बात करता तो वो मुझे चिन्ता नहीं करने को कहते। मेरा बेटा और बहू जनवरी 2000 में भारत आए हुए थे। मैं गुरुजीके आश्रम सत्संग में दस जनवरी को गया और चार वीजा फॉर्म मेरा पत्नी बेटा और बहू का लेकर गयाथा। मैंने गुरुजी से कहा कि बच्चे उसी दिन आधी रात को दुबई से आ रहे हैं। और हम अमेरिकी दूतावास अगली सुबह वीजा इंटरव्यू के लिए जायेंगे। गुरुजी ने सिर्फ इतना कहा, "तेरा कल्याण कर दिया।" सारी औपचारिकताओं को पूरी करने के बाद आपको दूतावास के अंदर पंक्ति में खड़ा होना होता है। फिर एक परामर्शदाा शुरुआती जाँच के बाद हर प्रार्थी को एक साक्षात्कारकर्ता के पास भेजता है। पंक्ति में सबसे आगे मैं उसके बाद मेरी पत्नी, फिर बेटा और बहू क्रमश खडत्रे थे। जब मैंने कॉउंसल को चारों पासपोर्ट दिए तो उसने पूछा कि क्या आप मि. जी. एस अलग हैं। मैंने उसे बताया कि मैं ब्रिगेडियर अलग हूँ। उसने मुझसे पूछा कि जो मेरी पीछे खड़ी है क्या वो मेरी गर्लफ्रेंड है ? मैंने कहा कि वो मेरी पत्नी है। ऐसा लगा मानों वहाँ गुरुजी बैठे हों क्योंकि काउंसलर के बोलने का ढंग उनके जैसा ही था। उसने जानना चाहा कि क्या मुझे दस सालों के लिए तीजा चाहिए ? मैंने उत्तर दिया कि अगर हम चारों

को वीजा दिया जाता है तो दस सालों के लिए चाहिए। उसने मुझे दूसरी खिड़की पर जाने को कहा, जहाँ व्यक्तियों को दस सालों के लिए वीजा दिया जाता है। एक नवयुवक इंजीनियर, मेरा बेटा, के लिए वीजा मिलना तब असंभव था। मगर हमें दसा सालों को वीजा मिल गया। रात को हम गुरुजी के पास गए, उन्होंने कहा, "हो गया काम।" हमने उनके पैर छुए। ये एक चमत्कार था।

अमेरिका में कार दुर्घटना से बचाया

मेरा बेटा, पत्नी और हमारे पोते के साथ एच–1 वीजा पर जुलाई, 2004 में अमेरिका गया। वो तब लॉस एंजिल्स में रहता था। मेरी पत्नी भी सितंबर, 2004 में वहाँ गई। उसने गुरुजी की एक तस्वीर हमारे बेटे की कार में रख दी थी। गुरुजी ने हमें ऐसा करने को कहा था।

उस महीने मैं छतरपुर मे आश्रम में सत्संग के लिए गया और जब मैं लौटा तो मेरे वस्त्र शुश्बू से भरे थे। मैंने कपड़े बदले लेकिन खुश्बू बरकरार रही। मैं सोने चला गया। सुबह उठने पर मैंने रोज की तरह अपनी पत्नी को फोन किया। मेरे बेटे ने फोन उठाकर बताया कि उनका भयंकर कार एक्सीडेंट हुआ। एक ट्रैफिक क्रासिंग पर उनकी कार दूसर कार से टकरा गई लेकिन वे सभी सुरक्षित थे। कार क्षतिग्रस्त हो चुकी थी। मेरी पत्नी ने बताया कि टक्कर इतनी भयंकर थी कि हमारा पोता, जो अपनी बेबी सीट पर आगे बंध हुआ था, सीट से उठलकर उसके बगल में बैठी मेरी पत्नी के हाथों में आ गया। उसने बताया कि उसने आँखें खोली तो बच्चा उसकी ओर देखकर मुस्कुराया और उसने जीवनदान देने के लिए गुरुजी को धन्यवाद दिया। अगली बार एम्पायर एस्टेट में सत्संग के लिए जाने पर मैंने गुरुजी को यह घटना सुनाई। वे मुस्कुराए और मुझे बैठने को कहा। उन्हें पता था कि क्या हुआ है।

GURUJI KA ASHRAM

मई 2006 में मेरी दुर्घटना

एक मित्र के यहाँ हम भोजन पर आमंत्रि थे। घर लौटते समय मेरे यू–टर्न लेते समय एक तेज आती कार हमारी तरफ आई उसकी रफ्तार 150 कि.मी./घंटे थी। मैंने तुरन्त ब्रेक लगाया। आखिरी मिनट में वो कार हमसे दूर चली गई। ऐसा लगा कोई हमें हमारी रक्षा कर रहा है। अगर मैंने कार पूरी तरह घूमा ली होती तो कार ने हमें आगे से टक्कर मार दी होती। सामान्य परिस्थितियों में भी कार ने हमें धक्का दिया ही होता। मैं तुरन्त गुरुजी को धन्यवाद दिया। गुरुजी के चमत्कार होते रहते हैं उनका संरक्षण सदा हमारे साथ रहता है।

– सत्संग : ब्रिगेडियर जे. एस. अलग

भगवान शिव की ज्योति उनमें समाहित है

मैं संत गुरुजी के संपर्क में सन् 1986 में आया। गुरुजी कोई साधारण संत नहीं हैं। उनमें भगवान शिव की ज्योंति समाहित है। भगवान शिव की तरह वे प्रेम के सार और मानव जाति के लिए स्नेह के प्रतीक है। कोई भी व्यक्ति जो गुरुजी के दरबार में आता है स्वस्थ होकर जाता है।

गुरुजी अपने भक्तों को सर्वशक्तिशाली ईश्वर का संदेश सुनाते हैं वे बताते हैं कि ईश्वर एक है और सारी मानव जाति, चाहे वो किसी भी जाति, धर्म, रंग के हों समान और ईश्वर के परिवार से है। वे अपने भक्तों को जरूरतमंद की सहायता के लिए प्रेरित करते हैं। उनके पास दैवीय शक्ति है और वे सर्वज्ञ हैं वे भूत, भविष्य और वर्तमान सभी जानते हैं वे आगे की घटनाओं की भविष्यवाणी कर सकते हैं और उनके पास आध्यात्मिक रोगहरणी शक्ति है। उन्होंने भगवान के समान चमत्कार से मरीजों को स्वस्थ किया है जिसे बड़े डॉक्टरों ने भी लाइलाज बता दिया था।

सब ओर आशीर्वाद

मुझे गुरुजी का आशीर्वाद कई बार प्राप्त हुआ। सन् 1987 मेरी पत्नी को शरीर में आंतरिक वृद्धि हुई। डॉक्टर ने उसे तुरन्त ऑपरेशन करवाने को कहा जिससे जहर और न फैल सके। हम गुरुजी के पास ऑपरेशन की सफलता के लिए आशीर्वाद लेने पहुँचे और डॉक्टरों की बात उन्हें बता दी। गुरुजी ने उसे अमृत देकर कहा कि ऑपरेशन की कोई जरूरत नहीं है। गुरुजी पर पूर्ण श्रद्धा रखकर

हमने ऑपरेशन नहीं करवाय। दो साल के बाद, मेरी पत्नी के पेट में दर्द हुआ। चंडीगढ़ पी. जी. आई में जाँच के बाद पता चला कि ये अंत्रशूल है।

गुरुजी : दो स्थानों पर एक ही साथ

फरवरी 1992 में मेरी माँ बहुत बीमारी के बाद कोमा में चली गई। उनकी उम्र 95 साल की थी और उनके बचने की कोई उम्मीद नहीं थी। अट्ठाईस फरवरी के दिन अपनी माँ तरकलीफ से परेशान मैंने म नही मन गुरुजी से जो उस समय जालंधर में थे सेआकर उनकी तकलीफ कम करने की प्रार्थना की। शाम के साढ़े छः बजे हुए थे। मेरी प्रार्थना के तुरन्त बाद ही सामने के दरवाजे जो अंदर से बंद था से हमारे कमरे में आए। हम उन्हें देखकर चकित रह गए। गुरुजी ने मेरी पत्नी से एक गिलास पानी लाने को कहा जिसे उसने अभिमंत्रित किया। उन्होंने हमें दो चम्मच अभिमंत्रित जल को माँ को देने को कहा और निश्चिन्त

किया और मेरी माँ दो बजे सुबह तक जीवित रहेगी। गुरुजी चले गए और हमें दस मिनट तक कमरे से बाहर नहीं निकलने को कहा।

हम अंतराल के बाद बाहर निकल कर मुख्य द्वार पर खड़े पुलिस से गुरुजी के आगमन के बारे में पूछा। गार्ड को कोई जानकारी नहीं था उसने बताया कि किसी ने भी कमरे में नहीं प्रवेश किया है। मैंने तुरन्त गुरुजी को जालंधर फोन किया और यह जानकार चकित रह गया कि हमारे पास आने के समय में वे संगत में भी उपस्थित थे। अभिमंत्रित जल को माँ को देने के बाद गुरुजी के कहे समय दो बजे माँ ने प्राण त्याग दिए। इस प्रकार गुरुजी एक साथ दो स्थानों पर उपस्थित थे – संगत में और हमारे घर में,

शिव दर्शन

GURUJI KA ASHRAM

मेरी बेटी भी गुरुजी की भक्त है गुरुजी सेक्टर 33, चंडीगढ़ में रहते थे। जब भी मेरी बेटी ने गुरुजी से प्रार्थना की तो हमेशा भगवान शिव के दर्शन की इच्छा को जताया। एक सुबह मेरी बेटी ने जागने पर पाया कि उसके कमरे में रखी गुरुजी की हर तस्वीर शिवजी महाराज के तस्वीर में परिवर्तित हो गई है। यह देखकर वह विस्मित रह गई। उसने ड्राइंग रूम में प्रवेश किया जहाँ उसने भगवान शिव को कालीन पर गुरुजी के तस्वीर के पास विराजमान देखा।

लेकिन उसने किसी को शिव दर्शन वाली बात नहीं बताई। शाम को हम गुरुजी के दर्शन को गए। गुरुजी के निकट आने पर मेरी बेटी ने उनके चेहरे के चारों ओर तेज प्रकाश दिखाई दिया और उसकी आँखें उस पवित्र रोशनी को लगातार नहीं देख पाईं। वो बुरी तरह से रो रही थी। उसने शिवजी महाराज के अंदर

गुरुजी के दर्शन किए। वो उस स्वर्गिक आनंद की स्थिति में एक सप्ताह तक रहती है। हमने गुरुजी से उसकी स्थिति के बारे में पता किया। गुरुजी ने कहा कि चूंकि मेरी बेटी ने अपनी प्रार्थना में शिवजी महाराज के दर्शन की प्रार्थना की थी, उन्होंने तो बस उसकी इच्छा पूरी की।

रोगहरणी जल

29 फरवरी 1998 में मैं बाथरूम में गिर गया और मेरी तीन पसलियाँ टूट गई। मुझे अस्पताल में भर्ती करवाया गया। 15 मई को लखनऊ, पी जी आर्अ में डॉक्टरों ने ई सी जी टेस्ट के बाद कहा कि मेरे ह्रदय में आंशिक आघात पहुँचा है। मई 29 को मैंने डॉ. महेश चन्द्रा से पुनः जांच करवाई जो किंग जार्ज मेडिकल कॉलेज के कार्डियोलॉजी विभाग के अध्यक्ष थे। उन्होंने भी ई सी 40 और ई सी जी टेस्ट के बाद बीमारी को कन्फर्म कर दिया। 12 जून को दिल्ली आकर मैंने गुरुजी से आशीर्वाद लिया। मैंने उन्हें डॉक्टर के जाँच के बारे में बताया। उन्होंने एक गिलास पानी को अभिमंत्रित कर मेरे कमीज को हटा उस पानी को शरी पर छिड़क दिया। उन्होंने मुझे दुबारा जांच करवाने को कहा।

एकदिन बाद मैंने ह्रदय विभाग के अध्यक्ष डॉ. कल्पोरिया से जाँच करवाया। उन्होंने भी ई. सी 40 और ई. सी. जी टेस्ट किए और मुझे कहा कि मेरा ह्रदय सामान्य है और उसमें कोई खराबी नहीं है। उन्होंने जब दोनों बार के जाँच के परिणाम की तुलना की तो वे चकित रह गए। उन्होंने कहा कि 29 मई और तीन जून के बीच कोई चमत्कार ही हुआ है। जो मेरे ह्रदय की दशा इतनी बदल गई है। लखनऊ लौटने के बाद मैंने वहाँ के डॉक्टरों को भी अपनी ई सी जी और ईकोग्राफ रिपोर्ट दिखाई। वे भी उतने ही चमत्कृत हुए और कहा कि ये परिवर्तन

चिकित्सा विज्ञान के द्वारा संभवन नहीं है। तब से मैं स्वस्थ हूँ। ऐसी गुउजी की दैवीय शक्ति है।

मुश्किल बंधन

मेरे साले और मैंने संयुक्त रूप से एक व्यावसायिक जमीन चंडीगढ़ के सेक्टर–35 में खरीदी थी। सन् 1998 में मैंने गुरुजी को उस शॉप कम प्लैट की नींव रखने को आमंत्रित किया। जब गुरुजी जमीन देखने आए, तो वे आधारशिला रखने को तैयार नहीं थे लेकिन मेरे आग्रह पर उन्होंने ऐसा किया। फिर उन्होंने मुझे हवा में से निकालकर एक स्वर्णमुद्रा दी। उन्होंने कहा कि इस व्यापार से लाभ तो होगा लेकिन मेरे साले के साथ संबंध तनावपूर्ण रहेगा।

भवन का निर्माण कार्य शुरु होते ही उसे बीच में रोक दिया गया। फिर एक साल बाद ही काम शुरू हो पाया। भवन बनने के बाद मैं और मेरे साले के बीच विवाद होने के कारण हमारी बातचीत बंद हो गई। भवन के किराये से मुझे मेरे

हिस्से के पचास हजार रु. मिल सकते थे लेकिन तनावपूर्ण संबंध के कारण हम उसे भाड़े पर नहीं लगा पाए। चार साल बाद गुरुजी की हुई भविष्यवाणी सच साबित हुई। मैं काफी कठिनाइयों के बाद ही भवन के अपने हिस्से को बेच पाया लेकिन मुझे लाभ जरूर हुआ।

बिना पेट्रोल के यात्रा

सन् 1998 में मैं पटियाला जिला न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में नियुक्त था। गुरुजी जालंधर से हमारे यहाँ रहने को आए। उनके लौटते समय मैंने अपनी व्यक्तिगत कार और ड्राइवर साथ भेजा। पेट्रोल टंकी भरी होने के बावजूद मैंने ड्राइवर को तीन सौ रु. जरूरत पड़ने पर पेट्रोल के लिए दिए।

GURUJI KA ASHRAM

ड्राइवर वापस आकर चमत्कार का वर्णन करने को आतुर था। उसने हमें बताया कि कार में पेट्रोल नहीं होने पर भी गुरुजी ने उसे कार चलाने को कहा। उसने गुरुजी को बताया कि कार में पेट्रोल नहीं है और उसके पास पैसे भी नहीं है। गुरुजी ने फिर भी उसे कार चलाने को कहा। उसने आज्ञा का पालन किया और कार स्टार्ट हो गई और पेट्रोल टंकी भरी हुई नजर आने लगी। उसे विश्वास नहीं हुआ कि कार बिना पेट्रोल क`चल रही है। इसके बाद पाँच दिनों तक वो गुरुजी के साथ रहा और उस दौरान जब भी गुरुजी कार में बैठते तो कार बिना पेट्रोल के ही चलती, आखिरी दिन गुरुजी ने तीन सौ रुपए उसे दिये और कहा कि ये पेट्रोल खरीदने के लिए है। यह सत्संग लिखते समय ड्राइवर करम सिंह पटियाला जिला न्यायाधीश के कार्यालय में नियुक्त था।

इच्छाओं की पूर्ति

सन् 1987 में मैं रोपड़ में नियुक्त था। एक दिन मैंने अखबार में भूतपूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी की तस्वीर देखी। उन्होंने अपने गले में रूद्राक्ष की माला पहन रखी थी। मैं सोचा कि गुरुजी मुझे एक रूद्राक्ष प्रसाद स्वरूप देते।

करीब दो महीने बाद, मैं गुरुजी के दर्शनों के लिए जालंधर गया। वे संगत के साथ विराजमान थे। उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या मुझे उनसे कुछ चाहिए। मैंने कहा नहीं क्योंकि मैं उनके आशीर्वाद को प्राप्त कर ही खुश हूँ। उन्होंने मुझे अपना हाथ बढ़ाने को कहा। मैंने ऐसा ही किया और उन्होंने मेरी हथेली पर एक रूद्राक्ष रख दिया। उन्होंने मुझसे पूछा कि मैंने उनसे इसी तरह इच्छा थी। गुरुजी ने मुझे वही प्रसाद दिया जिसकी इच्छा मैंने दो महीने पहले की थी। तब से वो रूद्राक्ष मेरे पास है। गुरुजी भक्तों की इच्छा उनके बिना बताए भी पूरी करते हैं।

मेरे बेटे को बचाया

सन् 1999 में मेरा बेटा एक मोटर साइकिल हादसे में बुरी तरह जख्मी हो गया। वो अकेला था और उसे चंडीगढ़ हाउस के बाहर खड़े सुरक्षाकर्मियों ने घर

पहुँचाया। उस सम मैं लखनऊ में था। वो अस्पताल नहीं गया। उसने बस गुरुजी की तस्वीर अपने सिरहाने रखी और हल्दी, घी वाला दूध पीया।

हादसे के अगली सुबह जागने पर उसने देखा कि उसकी चोट गंभीर है। उसके कानों से खून निकल रहा था और गले और सिर इतने सूज गए थे कि चेहरा पहचान में नहीं आ रहा था। दुर्घटना ग्यारह बजे हुई थी और वो अस्पताल अगले दिन दोपहर में गया। बिना किसी इलाज के बावजूद जीवित रहने पर डॉक्टर चकित हो रहे थे। उसे तुरन्त इमरजेंसी वार्ड ले जाया गया क्योंकि उसे हेमरेज और सिर के अंदर में हेयरलाइन फैक्टचर हुआ था। भाग्यवश अंदरूनी चोट के कारण निकला खून कान से निकल गया था।

डॉक्टर बार–बार ऑपरेशन के लिए कह रहे थे लेकिन उसने हमारे लखनऊ से अगले दिन लौटने का इंतजार किया। रास्ते में हमने गुरुजी को दुर्घटना की बात बताई। गुरुजी ने अपनी कृपा का हमें भरोसा दिलाया। इस बीचमेरे बेटे को निरीक्षण में रखा गया। गुरुजी के आशीर्वाद से डॉक्टरों को ऑपरेशन की जरूरत नहीं दिखाई दी लेकिन सिर में चोट के कारण मेरे बेटे के चेहरे को लकवा मार गया थ। गुरुजी के अभिमंत्रित तांबे के गिलास का पानी पीने से मेरे बेटे की तबीयत सुधरने लगी। लकवा दो दिनों में गायब हो गया। यह देखकर डॉक्टर चकित रह गए। मेरे बेटे को अस्पताल से छुट्टी मिल गई और कुछ दिनों में वह पूरी तरह से स्वस्थ हो गया। मस्तिष्क के एक्स–रे और एम आर आई में किसी फैक्चर या हेमरेज की पुष्टि नहीं हुई। तग से मेरा बेटा स्वस्थ है। ऐसी ही भगवान के समान गुरुजी की रोगहरणी शक्ति है। गुरुजी महारज ने मेरे बेटे को सर्वशक्तिमान भगवान शिव के दैवीय दर्शन भी करवाए।

ऐसे कई गुरुजी द्वारा रोज किए गए चमत्कारों से जरूरतमंदों की पीड़ा से मुक्ति होती हे उनका स्नेह असीमित हे। उनमें विश्वास रखने जीवन सफलत हो जाता है। अगर हमारी उनके श्रद्धा है तो वो हमारी सारी चिंताओं का ध्यान रखते हैं गुरुजी की कोई भौतिक इच्छा नहीं है। उन्हें कुछ नहीं चाहिए। उन्होंने पृथ्वी पर जन्म हमारी कठिनाइयों को कम करने के लिए लिया है। गुरुजी में आस्था रख उनका आशीर्वाद प्राप्त करो।

—सत्संग : ए.एस. गिल, भूतपूर्व उच्च न्यायाधीश

GURUJI KA ASHRAM

गुरुजी के शब्दों का अनुसरण

मैं एक अनजाने रोग से जूझ रही थी जिसका इलाज भी असंभव था। सभी मुख्य अस्पतालों इंद्रप्रस्थ, अपोलो मैक्स नोएडा, एक्स दिल्ली के लम्बे और महंगे जाँच–पड़ताल का भी कोई निष्कर्ष नहीं निकला।

मैं गुरुजी के दर्शनों को रोज आने लगी। एक दिन गुरुजी ने मुझे बड़े मंदिर में सेवा करने की आज्ञा दी। मैंने ऐसा ही किया। चार–पाँच दिनों बाद जब मैं डॉक्टर के पास गई तो रोग का पता चल गया। मुझे गंभीर रक्त–संक्रमण हो गया था और डॉक्टरों ने कहा इलाज बहुत लम्बा चलने वाला और पीड़ादायक है। गुरुजी को भक्तों की इतनी पीड़ा अस्वीकार्य थी मैं अस्पताल में भर्ती हो गई और मेरा इलाज शुरू हो गया। लेकिन चार दिनों बाद ही डॉक्टरों ने मुझे दवाइयाँ देकर अस्पताल से छुट्टी दे दी। अब मैं पूर्णतया स्वस्थ हूँ।

ऐसी कृपा साधारणतया नहीं है। जब गुरुजी हमें कुछ करने की आज्ञा देते हैं तो हमें उसका पालन बिना कारण पूछे करना चाहिए। जब भी वो कुछ कहते हैं तो वो उनकी आज्ञा, आशीर्वाद और सिर्फ भक्त के लाभ के लिए होता है। मूल्यवान तोहफे या चापलूसी से गुरुजी प्रसन्न नहीं होते। वे सिर्फ सच्चे प्रेम से प्रसन्न होते हैं ऐसा प्रेम जो कोई शर्तें, मात्र नहीं प्रस्तुत करता बल्कि गुरु के शब्दों का पालन करता है और वे ऐसे ही प्रेम का प्रतिदान करते हैं जब भी आपको उनकी जरूरत होगी, वो आपके साथ कहीं भी कभी भी मौजूद रहेंगे। सिर्फ उन्हें प्रेम, श्रद्धा सहित याद कीजिए।

– सत्संग : ज्योति गुप्ता, एक भक्त

कर्मचक्र से मुक्ति

ज्योति वर्मा और उनके पति अपने सास–ससुर को ब्लड कैंसर हो जाने के बाद फैक्ट्री और पैट्रल पंप को बेचकर देहरादून से दिल्ली आ गए।

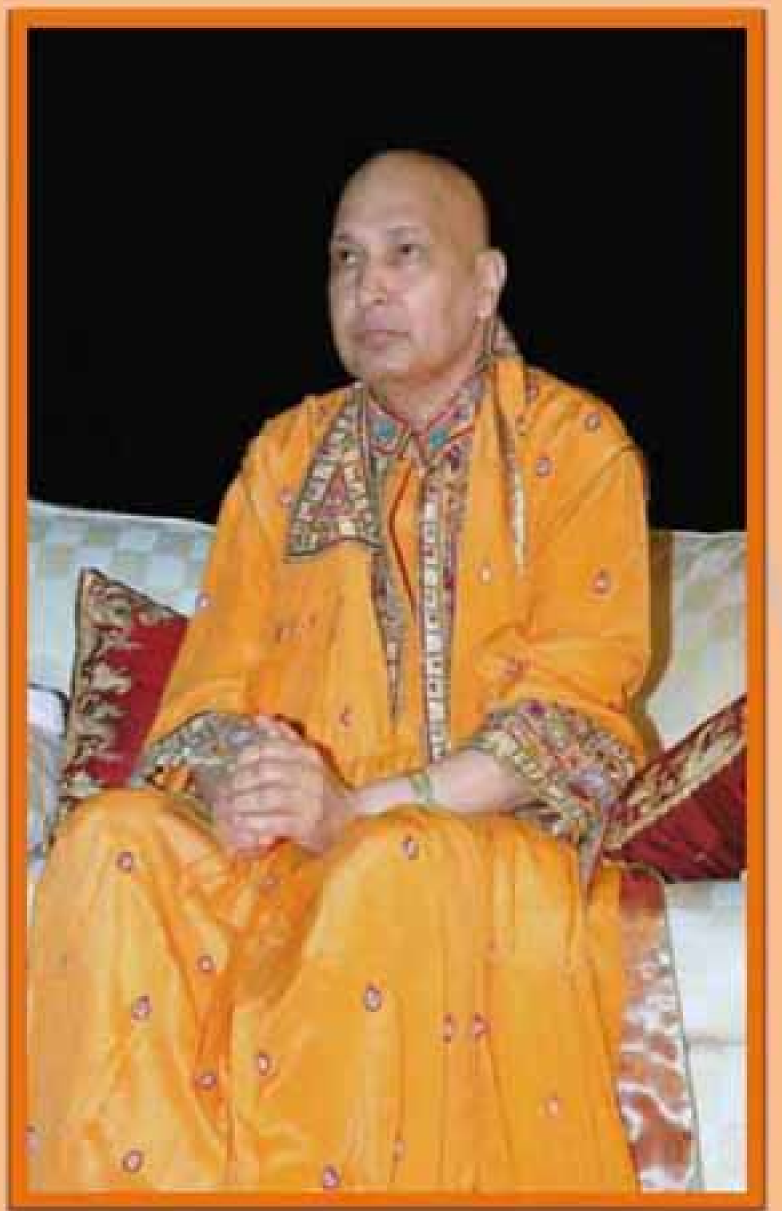

देहरादून की तुलना में दिल्ली में रहना काफी महंगा है। बर्मा परिवार में दो बच्चे और उनके माता–पिता देखभाल के लिए थे। उन्हें लगा कि अब वो आरामदायक, खुशहाल जीवन यहाँ पर नहीं बिता पायेंगे। ऐसा लगा मानो अपने कर्म की डोरी में बंधे वे अंधी अंतहीन गुफा में बिना लक्ष्य के चले जा रहे हैं। दोनों ने एक छोटे शहर में बसने की बात सोची जिससे वे अपना जीवन नये सिरे से शुरू कर सकें। उन्होंने देहरादून से आने के बाद अपने सामान भी नहीं खोले थे।

तभी एक मित्र के बेटी की शादी में उन्हें गुरुजी के दर्शन हुए। अगले दिन वे एम्पायर एस्टेट के मंदिर में घंटों बैठकर गुरुजी का आशीर्वाद लिया।

उनकी आर्थिक स्थिति इतनी खराब थी कि ज्योति ने अपने पति से कहा कि गुरुजी के दर्शन में रोज पाँच सौ रु. पेट्रोल में खर्च करना ठीक नहीं है। बर्मा परिवार गाजियाबाद से एक्पायर स्टेट आते थे जो काफी दूर था। संगत सातों दिन होता था और वे उस तरफ खींचे चले जाते थे। अचानक सब कुछ अपने आप ठीक होने लगा। उनके जीवन की उलझी गाँठें गुरुजी की आशीर्वाद से सुझलने लगीं थीं।

जल्दी ही, बर्मा परिवार ने ह्यूमन प्लाजमा से तैयार इंट्रावीनस इन्यूनोलोवि वैक्सटर हेल्थकेयर कंपनी की आयात करनी शुरू कर दी। और उनकी कंपनी, जिन्होंने कभी 6000–10,000 शीशी से ज्यादा नहीं बेची थी, आज उनकी मात्र भी पूरी नहीं हो पाती। बर्मा परिवार की आर्थिक चिन्ताएं दूर हो गईं। बिना गुरुजी के बताए ही समस्या के समाधान ने उन्हें गुरुजी के प्रभाव से अवगत कराया। उन्होंने ज्यादा समय इसी में लगा दिया कि वो गुरुजी को अपनी समस्या बताएं या नही। लेकिन गुरुजी ने उनकी समस्या का समाधान बिना एक शब्द बोले कर दिया।

इस बीच उनके ससुर की तबीयत भी सुधने लगी। एक समय एक कीमोथेरेपी के दौरान उन्हें मृत भी घोषित कर दिया गया था लेकिन उनकी जेब में गुरुजी की तस्वीर हमेशा रहती थी जिससे उन्हें एक नया जीवन ही नहीं बल्कि रोग से मुक्ति भी मिल गई। उन्हें दुबारा कभी कैंसर के इलाज की जरूरत नहीं पड़ी। अपने अनूठे तरीके से गुरुजी ने ज्योति के पति की भी जान बचाई। एक बार

संगत के जाते समय गुरुजी ने ज्योति के पति को बुलाया लेकिन कुछ नहीं कहा और पाँच मिनट बाद जाने की आज्ञा दी। किसी को इसका कारण समक्ष नहीं पाया। लेकिन बर्मा परिवार को बाद में पता चला कि अगर वो जल्दी चले जाते तो उन पर क्या बीतती। घर लौटते समय उन्होंने कुछ मिनट पहले हुए दुर्घटना के मलबे को देखा। अगर गुरुजी ने उन्हें नहीं रोका होता तो उनकी हालत वैसी ही होती।

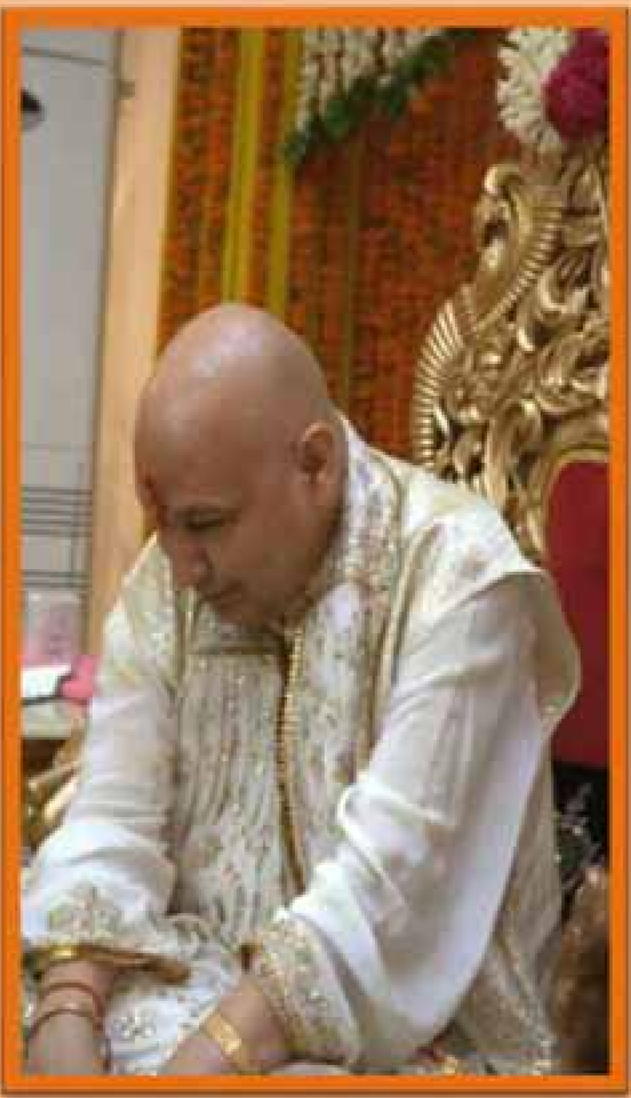

गुरुजी की कृपा दृष्टि ज्योति के रिश्तेदारें पर भी रही। उनके पति को स्लिप डिस्क के कारण भयंकर कमर दर्द था कि वो शय्याग्रस्त हो गए। गुरुजी ने उनके बारे में डेढ़ महीने तक नहीं पूछा। फिर एक दिन गुरुजी ने उन्हें हल्दी के साथ गर्म दूध पीने को कहां और वे स्वस्थ हो गए।

ज्योति के बहनोई हिन्दुस्तान ऐरोनोटिक्स लिमिटेड में उच्च अधिकारी थे। उन्हें एक दूसरी समस्या थी। उनके अपने बॉस से अच्छे संबंध नहीं थे क्योंकि वे उनकी पदोन्नति में बाधक थे। उसने नौकरी से इस्तीफा देने का फैसला कर लिया। लेकिन गुरुजी के आशीर्वाद से उसकी पदोन्नति हो गई ओर उसका तबादला हैदराबाद कर दिया गया। आज वो शुख और विभागों का प्रभारी है।

गुरुजी के संरक्षण में

गुरुजी अपने भक्तों को विपरीत परिस्थितियों से बचाते हैं। बर्मा के कारखाने वाली जगह पर करीब अठारह से बीस फीट गहरे पानी टंकी का निर्माण बीस से पच्चीस मजदूरों द्वारा किया जा रहा था। एक शिलाखंड टंकी में गिर गया और खतरे का अनुमान कर मजदूर बाहर आ गए। आखिरी मजदूर के निकलते ही अठारह फीट ऊँची और पैंसठ फीट चौड़ी दीवार गिर गई। किसी को भी चोट नहीं पहुँची, यहाँ तक कि छोटे बच्चे भी सकुशल निकल गए। गुरुजी की कृपा के अतिरिकत यह और क्या हो सकता है ? एक और घटना, ज्योति की बहन सात सालों से विवाहित थी और उसके पेटे में तीव्र दर्द रहता था। उसने इलाज करवाया और ऑपरेशन के बाद भी कोई राहत नहीं मिली। उसक माता–पिता ने पंडितों और तांत्रिकों के तंत्र–मंत्र के चक्कर लगाए लेकिन कोई सफलता नहीं मिली। ज्योति ने गुरुजी से अपनी बहन की बीमारी के बारे में बताया और उन्होंने उसे अभिमंत्रित तांबे का गिलास दिया और जल्द ही वो बिल्कुल स्वस्थ हो गई।

गुम बेटा मिल गया

ज्योंति की नौकरानी जो दिल्ली से अपरिचित थी, का ग्यारह साल उम्र का बेटा गुम हो गया। वो अपने गाँव से एक महीने पहले ही आई थी बेटे को ढूँढ़ने के उसके सारे प्रयास व्यर्थ साबित हो रहे थे। उसके पास अपने बेटे की कोई तस्वीर भी नहीं थी। पीड़ित माँ ने उसकी मदद करने की प्रार्थना की जिस उनकी सबसे ज्यादा जरूरत थी। उसी शाम उसे अपना बेटा वापस मिल गया।

उसने कहा कि ऐसा लगा मानो किसी ने आकर बेटे को उसे दरवाजे पर छोड़ दिया।

किशोर बेटे पर उनकी दृष्टि

गुरुजी ने ज्योति के बेटे को छात्रावास में रहने का निर्देश दिया। यह पहली बार घर से इतने दिनों तक बाहर निकला था इसलिए काफी दुखी रहता था। एक दिन उसके सभी दोस्त उसे छात्रावास में अकेला छोड़कर अपनी गर्लफ्रेंड्स के साथ शाम को चले गए। वो खुद को कोसते हुए सोचने लगा कि उसकी भी एक गर्लफ्रेंड होनी चाहिए क्योंकि ये समय बिताने का एक तरीका है। इसमें कोई हानि नहीं है। यह सब सोचते हुए वो सो गया लेकिन गुरुजी उसके सपने में आकर उसे डॉटने लगे। कांपते, पसीने से तखरार उसकी आँख दो बजे खुल गई। उसने गुरुजी से प्रार्थना की और तभी वो सो पाया। ज्योति को इस घटना के बारे में पता चलने पर निश्चिन्तता महसूस हुई। वो जानती थी कि गुरुजी हर चीज का ध्यान रख रहे हैं।

ज्योति के अनुसार, एक बार गुरुजी के शरण में आ जाने से आपको कुछ भी सोचने की जरूरत नहीं है। उन्हें बस बिना किसी किन्तु–परन्तु के संपूर्ण समर्पित होना है। हम उनके पास भयंकर बीमारियाँ कई समस्याएं और नकारात्मकता

लेकर आते हैं जिन्हें गुरुजी अपने आशीर्वाद से दूर भगाते हैं। गुरुजी का ट्रीटमेंट हमारी समझ के परे है। उनकी कृपा अप्रत्यक्ष रूप में होती है। लेकिन हमारा मानव–स्वभाव तब तक संतुष्ट नहीं होता जब तक हम अपनी समस्याओं के बारे में बात न कर लें। जब हम उनके पास आखिरी उम्मीद लेकर आते हैं तो हमें तुरंत परिणाम की आशा नहीं करनी चाहिए। आस्था और समर्पण गुरुजी से भक्त को जोड़ देता है और एक सुनहरे भविष्य की ओर ले जाता है जैसा कहा भी गया है, "जितना गुड़ डालोगे, उतना ही मीठा फल पाओगे" गुरुजी की कृपा भक्तों पर इतनी जागृत रहती है कि कोई भी उन्हें नुकसान नहीं पहुँचा सकता।

–सत्संग : मिसेज ज्योति वर्मा : एक भक्त

मेरे पति के प्राणों को बचाया

मैं सन् 2000 के दौरान गुरुजी के दर्शन होने पर स्वयं को भाग्यशाली और सम्मानित महसूस करती हूँ। तब से उन्होंने हर प्रकार से मेरे पूरे परिवार को अपनी प्रेरणादायक संरक्षण और आशीर्वाद में रखा है। मेरे पति दीपक गुरुजी से प्रथम बार अपने भाई अरूण के साथ मिले थे। वो दिन संगत के लिए निश्चित नहीं था।

अरुण को परेशानी थी। उसके घरेलू नौकर की बेटी की भयंकर दुर्घटना हो गई थी और डॉक्टर अंगविच्छेदन के लिए कहा था। गुरुजी घर पर थे और उन्हें उनके दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनकी कृपा से लड़की के पाँव कटने से बच गए। जब वे वहाँ पर थे, तब गुरुजी ने मेरे पति से मुझे वहाँ लाने को कहा। पहले तो मैं जाने को अनिच्छुक थी क्योंकि मैं धार्मिक मानसिकता वाली स्त्री हूँ। मैं जीवित भगवान में विश्वास नहीं करती। उन्होंने मेरी भाभी अनीता की पार्किन्सन रोग से छुटकारे में मदद की थी। यह सोचकर वहाँ न जाना उनकी अवज्ञा होगी, मैं जाने का निर्णय लिया।

गुरुजी मुझे देखते ही बोले, "कैलाश खन्ना की कुड़ी" और मैं अचंभित रह गई कि कैसे उन्हें मेरे स्वर्गीय पिता का नाम पता है। उन्होंने मुझे अपनी तस्वीर दी और मुझे संगत में आते रहने को कहा। मैंने तस्वीर अपने पूजा के कमरे में रात को रख दी। लेकिन अगली सुबह तस्वीर को गिरा देख मैं चकित हो गई। वहाँ सिंदूर की छोटी डिब्बी से सिंदूर भी मेज पर गिरा हुआ देखा जबकि डिब्बी ऊपर ही रखी हुई थी। रात में किसी ने भी पूजा वाले कमरे में प्रवेश नहीं किया था।

अंदर ही अंदर मुझे पता था कि ये गुरुजी का तरीका था यह बताने के लिए कि वेउस रात में मेरे घर आए थे।

मुझे विशेषकर एक ऐसी घटना याद है जिसमें गुरुजी ने मुझे एक तीव्र मनोव्यथा से बचा लिया। हमारे छोटे बेटे विनायक की शादी होने वाली थी। संगीत के समारोह वाली सुबह रिश्तेदार देश के भिन्न–भिन्न भागों और विदेश से आ रहे थे। अचानक मैंने अपने पति की डरी हुई आवाज सुनी। वे मुझे तुरंत बुला रहे थे, क्योंकि उनकी बीमार माँ बेहोश हो गई थी। पहले मैंने गुरुजी की तस्वीर के सामने उन्हें स्वस्थ रखने की प्रार्थना की। तब मैंने अपनी सास के कमरे में प्रवेश किया। आश्चर्यजनक रूप से वे उठकर बैठ गई, उनका स्वास्थ्य लाभ इतना अच्छा था कि वे शादी के समारोह शरीक हो पाई।

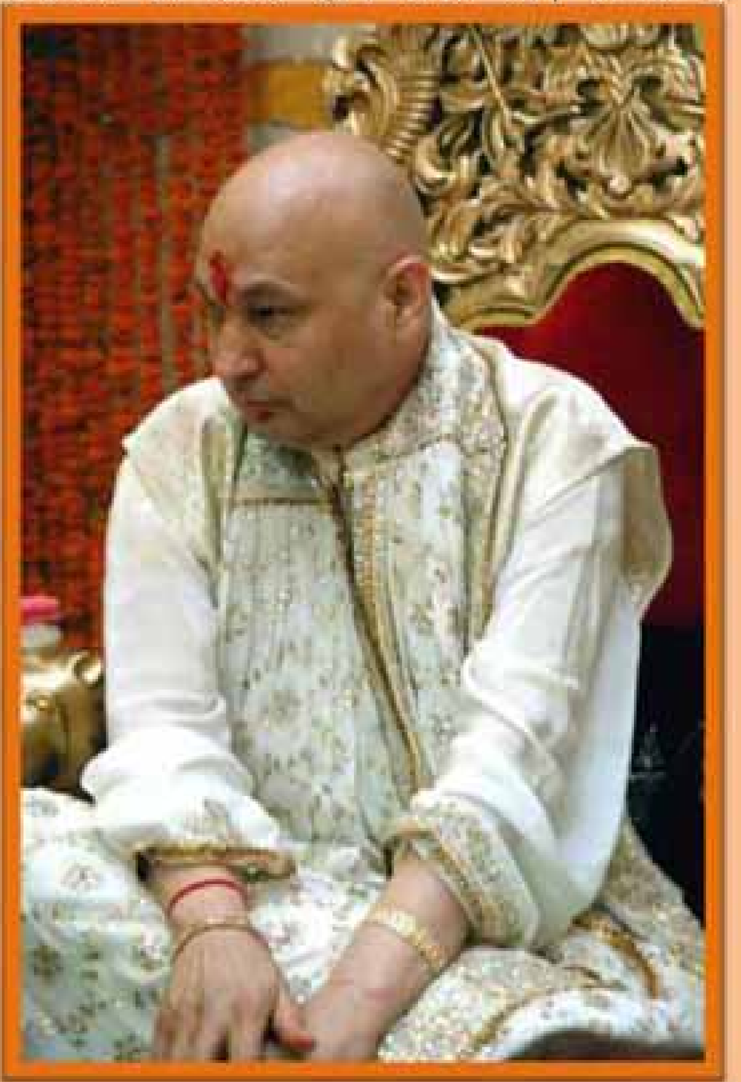

एक और बार गुरुजी ने हमारे परिवार को आशीर्वाद दिया, जब हमारे जुड़वा पोतों का जन्म हुआ इसके लिए हम उनके कृतज्ञ हैं। मेरे बड़े बेटे राजनाथ और उसकी पत्नी मोइरा की शादी को पाँच साल हो चुके थे। लेकिन वे माता–पिता बनने के लिए और समय चाहते थे। चूंकि दोनों अमेरिका में काम करते थे और

उनके पास समय की कमी थी। एक दिन मैंने गुरुजी से पूछा कि उन्हें बच्चे कब होंगे ? वे उनकी तस्वीरों को काफी देर तक देखते रहे और मुझे उन्हें यहाँ आशीर्वाद के लिए लाने को कहा। संयोग से ऐसा जल्दी ही हुआ, वे विनायक की शादी में शरीक होने आने वाले थे। शादी के बाद वे अमेरिका वापस चले गए और कुछ दिनों के बाद ही मोइरा ने फोन कर मुझसे अपनी बुनाई वाली सिलाई निकालने को कहा। मैं दादी बनने वाली थी।

मैं खुश थी जो चीज दस दिन पहले असंभव लग रही थी, वह अब संभव होने वाली थी मैं गुरुजी को धन्यवाद देने गई और उन्होंने मुझे बताया कि मोइरा को जुड़वा बच्चे होंगे। अल्ट्रासाउंड के बाद मोइराने भी इस समाचार पर अपनी मोहर लगा दी।

GURU KA ASHRAM

मेरे पति को आशीर्वाद दिया

मेरे पति दीपक के पैर में चोट गैंग्रीन के रूप में बदलने के कारण उन्हें अस्पताल में भर्ती करवाया गया। इलाज के बाद स्थिति बेहतर होने के बाद वे घर आ गए लेकिन उनके घुटनों में पट्टी लगी हुई थी। अगली सुबह, चादर और कम्बल पर खून के दाग थे। लेकिन पट्टी बिल्कुल सूखी हुई थी। डॉक्टर ने जॉच कर देखा कि खून कहीं किसी अंदरूनी चोट के कारण तो नहीं है। कोई भी इसका कारण बता नहीं पा रहा था। लेकिन हमें पता था कि वो खून गुरुजी द्वारा मेरे पति के पैर से निकाला गया संक्रमित खून था।

गुरुजी ने मेरे पति को नया जीवन एक नये दिल के साथ दिया। दीपक की दो धमनियाँ नब्बे प्रतिशत से ज्यादा बंद हो चुकी थीं। गुरुजी ने पहले ही ऐसा देख

लिया था और मुझे एक निश्चित दिन दर्शन के लिए बुलाया। उस शाम व्यस्त होने के कारण मैंने अगले दिन जाने का निश्चय किया। लेकिन गुरुजी के मिलने से पहले ही दीपक को तेज दर्द के कारण एस्कॉर्ट अस्पताल ले जाया गया और उनकी तुरन्त सर्जरी की गई। उनकी एंजियोप्लास्टी करवाई गई। मैं, मेरे बेटा और पुत्रवधू अस्पताल में इंतजार कर रहे थे कि हमें गुरुजी की सुगंध महसूस हुई। दीपक को भी सर्जरी के बाद सुगंध महसूस हुई। लेकिन मुझे नहीं हो रही थी। शायद गुरुजी मुझे उस दिन नहीं आने की सजा दे रहे थे। अगर मैं चली जाती तो दीपक इस व्यथा से बच जाता। मैंने गुरुजी को धन्यवाद दिया और वादा किया कि ऐसी गलती दुबारा नहीं होगी।

ये ऐसी कुछ घटनाएँ हैं जिसमें गुरुजी ने हमारे जीवन को नई दिशा दी। मैं रोज उनसे मेरे परिवार को प्रेरणा देने की प्रार्थना करती हूँ। मैं पूरी तरह से उन पर निर्भर करती हूँ और मुझे विश्वास है कि वो मेरी प्रार्थना सुनते हैं। एक बार मैंने उनसे पूछा कि वो इतने लोगों के लिए इतना कुछ करते हैं तो बदले में आप क्या चाहते हैं ? वे मुस्कुराते हुए बोले, ''उनका संपूर्ण समर्पण।''

– सत्संग : ज्योत्सना शौरी : एक भक्त

माँ के आँसुओं को पोंछा, एक व्यक्ति की नौकरी बचाई

सन् 1998 ने लाल परिवार की जिन्दगी को पूरी तरह बदल दिया। उनके बड़े पुत्र की दिल्ली कैंटोनमेंट में एक हादसे में मौत हो गई। कंवर लाल की पत्नी इस दुख को सह नहीं पाई और तनाव की शिकार हो गई।

तब कंवर लाल के मित्र प्रेम सिंह, जो सिंगापुर में भारतीय उच्चायुक्त थे, उन्हें मिले। प्रेम ने उनसे परिवार के बारे में पूछा तो उन्हें हुए हादसे के बारे में पता चला। प्रेम सिंह गुरुजी के भक्त थे। उन्होंने कंवर लाल को गुरुजी के पास जाने को कहा।

एक सुबह कंवर एम्पायर एस्टेट में गुरुजी के आश्रम में गए। उन्होंने राजदूत का पहचान पत्र दिखाकर अंदर जाने देने की प्रार्थना की। उन्हें एक भक्त सुदामा के द्वारा बताया गया कि ये गुरुजी से मिलने का समय नहीं है। कंवर ने बार–बार राजदूत का पहचान–पत्र गुरुजी को दिखाना चाहा। लेकिन सुदामा के द्वारा बताया गया कि ये गुरुजी से मिलने का समय नहीं है। लेकिन

सुदामा ने कहा कि गुरुजी के दरबार में बहुत राजदूत आते हैं जो केवल शाम की संगत में आते हैं और कंवर को भी उसी समय आना चाहिए। कंवर ने लौटकर अपने मित्र से बात की, शाम को कंवर ने एम्पायर एस्टेट के सामने अपने मित्र को इंतजार करते पाया और दोनों साथ ही अंदर गए। कंवर ने अपनी परेशानी सद्गुरू को बताया। गुरुजी ने अभिमंत्रित तांबे का गिलास कंवर की पत्नी के लिए दिया। उसके गिलास के पानी से उनका लम्बे समय से चल रहा तनाव समाप्त हो जाएगा।

ये सामान्य उपचार बहुत प्रभावी है। पन्द्रह दिनों के अंदर ही व्यथित माँ ने रोना बंद कर दिया, उनका रक्त चाप सामान्य हो गया और वे ठीक होने लगीं।
ये समय मई 2000 का था और लाल परिवार गुरुजी के दर्शन के लिए आना शुरू हो गया।

GURUJI KA ASHRAM

परिवार कुछ दिनों के लिए मनाली गया। कंवर के दिल्ली लौटने पर पता चला कि उन्हें दुबारा नौकरी मिल गई। उन्हें आई जी आई हवाई अड्डे के सीमा शुल्क विभाग से मुक्त कर कस्टम हाउस नई दिली में नियुक्त किया गया। लेकिन जब वे गुरुजी से आशीर्वाद लेने गये तो सद्गुरु ने उन्हें एक और छुट्टी लेने को कहा। जून 24 को गुरुजी ने उन्हें एक हफ्ते की छुट्टी पर जाने का सुझाव दिया था लेकिन कंवर की अस्थायी आस्था ने उन्हें गुरुजी के सुझाव को न मानने पर मजबूर किया। कंवर ऑफिस जाने लगे। उसी हफ्ते जून चार को एक विभागीय जाँच 48 ऑफिसरों के लिए बिठाई गई जिसमें कंवर का भी नाम था। अगर उन्होंने गुरुजी की बात मान ली होती तो सूची में उनका नाम नहीं होता।

कंवर ने फिर अपनी समस्या गुरुजी के समक्ष रखी। गुरुजी ने उसका निराकरण किया और उसके स्थान पर एक दूसरी दिशा की ओर इशारा किया–उसकी बेटी की शादी। अड़तालीस अधिकारियों में तैतीस के खिलाफ कार्यवाई शुरू हुई। कंवर और उसके नाम के नीचे अन्य अधिकारियों के खिलाफ कोई कार्यवाई नहीं हुई।

गुरुजी ने विवाह के लिए मध्यस्तता की

गुरुजी के सुझावा पर कंवर ने प्राचीन भारतीय विवाह पद्धति के प्रथम चरण योग्य वर की तलाश से प्रारंभ की। एक इंडियन ऑयल का इंजीनियर परंपरानुसार अपने माता–पिता के साथ लड़की को देखने आया। उनके आने से पहले गुरुजी ने कंवर को बुलाकर कहा कि विशेषकर युवक के पिता को सफेद रसगुल्ले दिए जाएं।

GURUJI KA ASHRAM

लड़के के माता–पिता का शानदार स्वागत किया गया। तब एक–एक करके, पहले कंवर ने, फिर उसकी पत्नी और उसके बेटे ने लड़के के पिता को रसगुल्ले दिए। हर बार लड़के के पिता ने मना कर दिया। सद्गुरू को ही पता होगा रहस्य कंवर को गुरुजी के तरीके से पता चल गया कि कहीं कुछ संदेह है।

जब वे शाम को दर्शन के लिए एम्पायर एस्टेट गए तो गुरुजी ने कहा, "खूबसूरत गुलाबों में भी काँटे होते हैं" परिवार की समझ में आ गया कि लड़का लड़की के लिए उपयुक्त नहीं है।

कुछ समय बाद एक और लड़का जो दिल्ली में मैजिस्ट्रेट था, कंवर की लड़की को देखने आया और उसे पसंद भी किया। उसने लड़की के पिता से अपने माता–पिता की सहमति भी लेने को कहा। लाल परिवार लड़के के माता–पिता ने मिलने उनके घर गया। लेकिन कुछ भी तय नहीं हुआ। फिर एक दिन गुरुजी ने कंवर को फोन कर पूछा कि कहाँ पर अच्छी चाट मिलती है ? पता चला मसालेदार तो यू.पी.एस.सी. भवन के निकट एक दुकान में अच्छी चाट मिलती है।

गुरुजी ने उन्हें वहाँ शाम साढ़े छः बजे पहुँचने को कहा।

साढ़े छः बजे गुरुजी वहाँ अपने कुछ भक्तों के साथ पहुँचे। चाट बनवाई गई और गुरुजी ने एक प्लेट कंवर को देते हुए उसकी बेटी के विवाह ठीक होने पर उसे बधाई दी। अन्य भक्तों ने भी उसे बधाई दी। कंवर आश्चर्य में था कि ये सब क्या हो रहा है। उसे पता था कि दो महीने से मैजिस्ट्रेट की तरफ से कुछ

नहीं कहा गया है। जल्दी ही शुभ समाचार मिल गया और गुरुजी की भविष्यवाणी सच साबित हुई।

गुरुजी ने दामाद को आशीर्वाद दिया

कंवर लाल के दामाद ने अपनी विभागीय परीक्षाओं में एक पेपर को छोड़कर सब

में सफलता प्राप्त की। उसके ससुर ने गुरुजी से इस बारे में बात की। सद्गुरु ने कहा कि उसने परीक्षा पास कर ली है। कंवर को लगा कि गुरुजी किसी की ओर इशारा कर रहे हैं किसी ने उसकी पदोन्नति में बाधा डालने की कोशिश की। जल्द ही उच्च न्यायालय की न्यायपीठ परीक्षा के दौरान उम्मीदवारों की समीक्षा के लिए बनाई जाती है। दामाद की परीक्षा और वार्षिक गुप्त रिपोर्ट में इसके प्रदर्शन को देखते हुए न्यायपीठ उसके पक्ष में फैसला देते हुए उसे परीक्षा में उत्तीर्ण घोषित करती है।

पुत्र की क्षतिरहित दुर्घटना

कंवर के बेटे, रोहित, को एपीजे इंजीनियरिंग कॉलेज के छात्रावास में स्थान नहीं मिल रहा था। अपने एक बेटे की हादसे में मौत को देखते हुए कंवर उसे पैसठ

किलोमीटर भेजने को तैयार नहीं हो रहे थे। लेकिन गुरुजी ने उन्हें भरोसा दिलया। एक दिन कॉलेज जाते समय क्वालिस जिससे रोहित कॉलेज जाता था, की टक्कर एक ट्रक से हो गई। हादसे में ड्राइवर की एक आँख चली जाती है और दूसरे विद्यार्थियों को भी चोट लगती है गुरुजी के आशीर्वाद से रोहित को खरोंच भी नहीं लगी।

जब कंवर गुरुजी के दर्शन को शाम को गए तो सद्‌गुरू ने कहा, "मैंने तुम्हारे बेटे को बचा लिया। "गुरुजी की कृपा रोहित पर जारी रही। वह इंजीनियरिंग के तीसरे साल में नहीं जा पा रहा था, क्योंकि पहले सेमेस्टर के पेपर में उत्तीर्ण नहीं हुआ था। जब गुरुजी को इस बारे में पता चला तो उन्होंने कहा कि रोहित तीसरे साल में जाएगा।

तब जैसे ईश्वरीय विधान हो एपीजे कॉलेज ने अपने नियम बदल दिए। अब विद्यार्थी तीसरे साल में जा सकते हैं अगर उन्हें 20 में से 18 विषयों में सफलता पाई हो। इस तरह रोहित इंजीनियरिंग के तीसरे वर्ष में प्रवेश पा गया। गुरुजी की शक्ति का अंदाजा इस बात से होता है कि एक साल बाद कॉलेज ने नियम फिर से बदल दिए। कॉलेज के नियमों को भी सद्‌गुरू की इच्छा के सामने झुकना पड़ा।

ऑपरेशन के बिना इलाज

कंवर की सास के दाहिने घुटने का ऑपरेशन सर गंगा राम अस्पताल में होने वाला था। घुटने में बहुत दर्द रहता था। गुरुजी ने न केवल ऑपरेशन के लिए मना किया बल्कि कंवर से अपनी सास को अस्पताल के निकट भी ले जाने को

मना कर दिया। सद्गुरू के निर्देशानुसार तांबे के गिलास का पानी फिर से इलाज था एक महीने से घुटने में दर्द गायब हो गया और पहले से ज्यादा गतिशील हो गया।

– सत्संगः कंवर ला, सुप्रीटेन्डेंट, कस्टम एंड सेन्ट्रल एक्ससाइज, दिल्ली

GURUJI KA ASHRAM

दुर्घटना के पीड़ितों को उनके तस्वीरों द्वारा जीवनदान

दिसंबर, 2005 को आठ बजे सुबह शनिवार के दिन मैं दिल्ली में अपने घर में बैठा अखबार पढ़ रहा था जब मेरे फोन की घंटी बजी। फोन मेरे भाई पी एन राजू का चेन्नई से था। उसके साले पी एन नरसिम्हन और उनके तीन सहकर्मियों की ऑफिस से घर लौटते समय सुबह चार बजे पांडिचेरी में भयंकर दुर्घटना हो गई थी।

राजू फोन पर ही रो पड़े। मैंने तुरन्त राजू को गुरुजी की तस्वीर लेकर पांडिचेरी जाने को कहा। और गुरुजी की तस्वीर को तीनों चोटिल हुए लोगों की शय्या के पास रखने को कहा। मैंने राजू को तस्वीर कुछ महीने पहले ही दी थी।

तीनों जिस मारूति कार से जा रहे थे वो एक रुकी हुई बैलगाड़ी से टकरा गई। आगे की सीट में बैठे दो लोगों को सिर में गंभीर चोटें आई थी और हाथ टूट

गए थे। लेकिन पीछे बैठे व्यक्ति अरूण को सबसे ज्यादा चाटें आईं थी। अरूण का सिर कार की छत से टकराया था और उसे गंभीर अंदरूनी चोटें आईं थीं।

राजू के अस्पताल जाने पर डॉक्टरों ने उसे बताया कि तीनों बुरी तरह से चोटिल हैं। उन्हें अरूण के बचने की कोई आशा भी नहीं थी। उन्होंने कहा कि अरूण सात घंटों से ज्यादा जीवित नहीं रह पाएगा। अरूण के एक्स–रे में अंदर की चोट बहुत गहरी दिखाई दे रही थी। डॉक्टरों के अनुसार, सिर के अंदर टोटल जाम था और कुछ भी नहीं किया जा सकता था। उन्होंने अरूण का इलाज भी बंद कर दिया था ओर रिश्तेदारों को बुरी खबर के लिए तैयार भी रहने को कहा।

लेकिन राजू ने श्रद्धा नहीं छोड़ी थी। उसने गुरुजी की तस्वीर पीड़ितों के सिर पर रखा। उसने यह बात उनके रिश्तेदारों को नहीं बताई थी क्योंकि कोई भी गुरुजी को नहीं जानता था।

GURU JI KA ASHRAM

मैं राजू से हर तीन घंटे में बराबर संपर्क में रहता था। उसे जब भी मरीजों के निकट जाने का मौका मिलता था। तब राजू तस्वीर को पीड़ितों पर रख देता था और गुरुजी से उनके स्वस्थ होने की कामना करता था।

इसका प्रभाव तुरन्त देखने को मिला। जब डॉक्टरों ने तीनों पीड़ितों की जाँच की तो दो की हालत अच्छी हो रही थी लेकिन उन्हें अब भी आई सी यू में रखने की जरूरत थी। अरूण ने तो उनके सात घंटे की सीमा को पीछे छोड़ दिया था बल्कि सुधार के चिह्न भी दिखाई दे रहे थे। जब डॉक्टरों से पूछा गया तो उनके पास कोई उत्तर नहीं था।

दूसरे दिन अरूण में आए सुधार को देखकर डॉक्टर चमत्कृत रह गए। डॉक्टरों के पुर्वानुमान के विपरीत अरूण बच गया। लेकिन डॉक्टरों ने कहा कि वो साधारण जीवन नहीं जी सकेगा। हादसे के दो सप्ताह तक राजू ने गुरुजी की तस्वीर मरीजों के सिर पर रखी। एक महीने बाद अरूण बातों को याद कर बिस्तर से उठकर खड़ा होना चाहता था।

गुरुजी के आशीर्वाद से उसकी हालत सुधरती गई और तीन महीने बाद वह ऑफिस गया। अरूण का इलाज करने वाले सभी डॉक्टर सिर्फ आश्चर्य ही करते रहे। गुरुजी ने उनकी जानकारी के बिना उन भक्तों की सहायता की जो गुरुजी के बारे में कुछ नहीं जानते थे।

सत्संग की रोगहरणी क्षमता

GURUJI KA ASHRAM

इसी प्रकार के आशीर्वाद प्रकटीकरण नौ महने पहले भी हुआ था। मार्च की शाम मैं अपने तीन मेहमानों 52 वर्षीया श्रीमती विजया 50 वर्षीय श्रीमती राजलक्ष्मी जो मेरे अंकल की पत्नी है और मेरी भाभी से बातचीत कर रहा था।

विजया को स्पांडिलइटिंस की परेशानी थी जबकि राजलक्ष्मी को पंद्रह सालों से माईग्रेन था। बातचीत के दौरान विजया ने बताया कि बीमारी के कारण वह बिस्तर पर सो नहीं सकती और न ही रिक्शा, ऑटो कार या बस में यात्रा कर सकती है। बीमारी के कारण उसकी मानसिक शांति समाप्त हो चुकी थी। तमिलनाडु के डॉ. मायिल वहानन ने उसे कहा था कि अब उसे इस रोग के साथ ही जीवित रहना होगा।

राजलक्ष्मी के माईग्रेन के दौरे इतने भयंकर होते थे कि उसने आत्महत्या की कोशिश भी की थी। उसने बहुत सारी नींद की गोलियाँ ली थीं। मुझे पता नहीं कि मेरे दिमाग में क्या आया, मैंने उनसे कहा कि अगर आप अपनी समस्याएँ गुरुजी के सामने रखकर उनसे प्रार्थना करेंगी तो सारी समस्याओं का अंत हो जाएगा। उस समय मेरे पास गुरुजी की एक ही तस्वीर थी लेकिन मैंने गुरुजी के बारे में तीनों को बताया। मैंने उन्हें ऐसे लोगों पर गुरुजी के आशीर्वाद के बारे में बताया जिनका जीवन और भी बुरे दौर से गुजर रहा थां मैंने उन कहानियों का वर्णन पूरी श्रद्धा के साथ दस मिनट तक किया।

इन दस मिनटों के खत्म होते ही आश्चर्यजनक रूप से विजया और राजलक्ष्मी ने बदलाव महसूस किया। विजया ने कहा कि उसका स्पांडिलाइटिस का दर्द तेजी से घट रहा हें राजलक्ष्मी के सिर का दर्द भी कम हो रहा था। उसे लगा कि उसके सिर से किसी ने भारी वस्तु हटा ली हो।

उस रात विजया दस सालों में पहली बार अपने बिस्तर पर सोई। और राजलक्ष्मी ने अपनी दवाइयाँ नहीं लीं। अपनी आँखों से ये चमत्कार देखने के बाद मैंने तुरन्त लेफ्टिनेंट कर्नल चैटर्जी को फोन कर प्रार्थना की कि वे हमें गुरुजी के आश्रम ले चलें। एक सप्ताह के बाद हमने वहाँ जाकर गुरुजी से आशीर्वाद लिया।

तीन साल के बाद भी चेन्नई में रहने वाली वे स्त्रियाँ रोज गुरुजी से प्रार्थना करती हैं उनकी बीमारी अब नहीं है।

–सत्संग : आर कृष्णास्वामी, सनियर इंजीनियर, सिमन्स इंफोर्मेटिक्स, लि., गुड़गाँव

आस्था की दृष्टि

गुरु के चरण कमलों में मेरा प्रणाम। मैं गुरुजी के हमारे जीवन में चमत्कार करने के लिए कृतज्ञ हूँ। गुरुजी के संरक्षण में आने के लिए मैं स्वयं को सौभाग्यशाली मानती हूँ। वे ईश्वर के प्रतिरूप और भगवान शिव के अवतार हैं और साथ ही साथ वे मानवीय स्वभाव युक्त मिलनसार हैं। जो अपनी शक्ति से आपको सही पथ पर ले जाते हैं और कर्मकाण्ड और परम्परावादी से ऊपर उठाते हैं उन्होंने हमारे जीवन को एक नया अर्थ दिया है, हमारा धर्म विश्वास को देखने का नजरिया बदल गया है।

गुरुजी के शरण में आने से हमारा जीवन कृतार्थ हो गया। मेरे पिताजी ने जब उनके प्रथम दर्शन किए तो उन्होंने हमारे बारे में पूछा। उन्हें पता था कि मेरे पति कहाँ नियुक्त हैं और मेरी बेटी को खसरा रोग के लक्षण है।

मुझे पहले तीन महीने ही जर्मन मीसेल्स हो गए थे जिस कारण अदिति को जन्म के साथ ही कई परेशानियाँ हुइ, जिससे उसकी आँखों को क्षति पहुँची। पहले दो साल में ही उसकी पाँच सर्जरियाँ हुईं–तीन मोतियाबिन्द को हटाने के लिए, और

दो ग्लूकोमा के कारण। इन सबके बावजूद उसकी दृष्टि में बहुत कम सुधार ही हुआ। चूँकि उसक रेटिना क्षतिग्रस्त था इसलिए एक्स–रे डॉक्टरों को उसके आँखों की रोशनी ठीक होन के लिए कम ही उम्मीद थी।

आँखों की समस्या के अलावें, उसक पी डी ए (हृदय के बाहर की नलिका) बंद नहीं हो रहा था। तीसरी वर्ष में उसी सर्जरी के द्वारा ये बीमारी ठीक हो गई। काफी फिजियोथेरेपी के बाद उसने तीन वर्ष की उम्र में चलना शुरू किया और हमने उसे स्कूल भेजा। मनोवैज्ञानिक जांच में उसका आई क्यू सत्तर से उनासी के बीच आया। मनोवैज्ञानिक ने कहा कि धीरे सीखने के कारण उसे विशेष शिक्षा की जरूरत है।

गुरुजी की शरण में आते ही सब कुछ तेजी से बदलने लगा। अदिति बारह वर्ष की थी और भी साधु वासवानी स्कूल के विशिष्ट कक्षा में थी। पिताजी के द्वारा गुरु के आदेश पर हम तुरन्त ग्रेटर कैलाश के मंदिर गए। वो एक विलक्षण अनुभव था। हमने कभी भी ऐसा अद्भुत गुरु नहीं देखा था। गुरुजी ने हमें विशेष दिनों में आने को कहा। पाँचवी बार में उन्होंने अदिति को सुबह सूर्य नमस्कार शुरू करने को कहा और एक गिलास दूध के साथ अभिमंत्रित मूंगफली और मिसरी लेने को कहा। उसे इन निर्देशों का पालन इक्यावन दिनों के लिए करना था। इक्कीसवें दिन अदिति ने कहा कि वो अब बेहतर देख सकती है। हम आलाहद्वित हो गए। आप कल्पना भी नहीं कर सकते कि उन्होंने हमारी चिन्तामग्न आत्माओं को कितनी खुशी प्रदान की। जल्दी ही गुरुजी तीन दिनों के लिए चंडीगढ़ चले गए। हमने दो बार उनसे हमारी बेटी के लिए कुछ और भी करने की प्रार्थना की। उन्होंने कहा कि वे दिल्ली लौटकर ही वे कुछ करेंगे।

सन् 1998 को बैसाखी के दिन गुरुजी ने हमें सुल्तानपुर के मंदिर (एम्पायर एस्टेट यहीं है) शाम में आने को कहा। उसके बाद मैंने उनसे अदिति के लिए और भी कुछ करने की प्रार्थना की।

उन्होंने अपने तरीके से ऐसा ही किया। पहले वो जून 1998 में हमारे घर आए। अगली सुबह हमारी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। अदिति ने अखबार के छोटे अक्षर आसानी से पढ़ लिए। एक हफ्ते पहले तक वह अपनी दसवीं कक्षा के किताबों के छोटे अक्षर भी नहीं पढ़ पाती थी। अगर ये दैवीय हस्तक्षेप नहीं था तो फिर क्या था ? ये चमत्कार सिर्फ भगवान ही कर सकते हैं। उसके बाद अदिति ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। अदिति के सारे स्तर बढ़ने लगे। उसने दसवीं और बारहवीं की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। वो आज अपनी स्नातक की पढ़ाई कर रही हैं।

तेरह साल पहले हमने ये कल्पना भी नहीं की थी कि अदिति इतना कुछ प्राप्त कर पाएगी। उसकी न केवल देखने की दृष्टि बेहतर हुई बल्कि उसकी सीखने

की शक्ति भी बढ़ती गई। 2007 में आँखों की जांच में हमने पाया कि वो आँखों की जाँच वाले चार्ट में एक और पंक्ति पढ़ पा रही थी।

आज अदिति आत्मविश्वास से भरी हुई लड़की है जिसकी गुरुजी में संपूर्ण आस्था है। उसकी भविष्य की चिन्ता अब दूर हो गई है और यह विश्वास है कि वो गुरुजी की संरक्षण में है। अब मेरा मन शांत है अब मेंरे मन में यह प्रश्न नहीं उठता कि "क्यों मेरे साथ ऐसा हुआ ? क्यों मेरे बच्चे के साथ ऐसा हुआ ? गुरुजी ने न केवल हमारी जिन्दगी बदली बल्कि समस्याओं से सामना करने के लिए हिम्मत भी दी है। उनमें आस्था ने हमें विश्वास दिया है कि हमारे साथ कुछ भी बुरा नहीं हो सकता।

मौत को तीन बार मात

GURUJI KA ASHRAM

गुरुजी का आशीर्वाद मेरे परिवार के अन्य सदस्यों को भी प्राप्त हुआ। उन्होंने तीन बार मेरे पति को भयंकर हादसों से बचाया। एक बार उनकी टैक्सी और अशोक लीलैंड के ट्रक की टक्कर इतनी भयंकर थी कि जिसने उसे देखा उसे लगा कि टैक्सी के अंदर के यात्री की अवश्य की मृ त्यु हो गई होगी। लेकिन टक्कर के कुछ मिनट बाद ही वे क्षतिग्रस्त टैक्सी से निकले उनका एक दाँत टूट गया था और ऊपरी गाल पर हल्की खरोंचे आई थी। इस यात्रा से पहले वारंगल में शिव की पूजा की थी और उन्हें जल चढ़ाया था जबकि सामान्यतः तो अधिकारिक यात्राओं पर ऐसा नहीं करते हैं। लेकिन क्या हम गुरुजी को ही शिवजी नहीं कहते।

फिर 13 दिसंबर 2001 को जब आतंकियों ने संसद पर हमला किया था तब मेरे पति ने कुछ क्षण पहले ही आखिर में ससंद में प्रवेश किया। उनके भवन में प्रवेश करते ही गोलीबारी शुरू हो गई और जो सुरक्षाकर्मी उन्हें भवन तक लाया था, वो गोलीबारी में मारा गया। निश्चय ही गुरुजी मेरे पति के साथ थे।
तीसरी बार श्रीनगर में गोल्फ कोर्स में तेन्दुआ के मिलने के दौरान घटना घटी मेरे पति ने अंधेरा होने का टहलने का निश्चय किया। वे नियम से घूमते थे एक मोड़ पर उन्होंने एक कुत्ते को देखा। इतनी सुरक्षा घेरे के बाद गोल्फ कोर्स में कुत्ते को देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ। अचानक वो जानवर मेरे पति की ओर बढ़ने लगा। तभी उन्होंने देखा कि पूँछ हिलाता हुआ कुत्ता नहीं बल्कि एक बड़ा तेन्दुआ है। वे डर गए और अपने स्थान पर ही खड़े रहे। आश्चर्यजनक रूप से उन्होंने तेन्दुए को भगाना चाहा और उनकी आज्ञा मान जैसे वो चला भी गया। तेन्दुए ने मेरे पति की आज्ञा नहीं मानी बल्कि ये गुरुजी के दैवीय हस्तक्षेप का ही परिणाम था।

GURUJI KA ASHRAM

गुरुजी ने सिर्फ उनकी जान ही नहीं बचाई बल्कि उनकी प्रगति में भी सहायता की है। गुरुजी के आशीर्वाद से ही उन्हें पदोन्नतियाँ मिलीं। उनके त्रुटिहीन रिकार्ड के बाद भी परिस्थितियाँ उनके विपरीत थीं। लेकिन गुरुजी की कृपा से उन्हें अच्छी नियुक्तियाँ मिलती रही।

सन् 1997 में मेरा बेटा बाइक की पिछली सीट पर बिना हेलमेट के बैठा था,जब एक तेज कार ने उसे धक्का दिया। कुछ भी हो सकता था, भयंकर चोट से लकवाग्रस्त शरीर या उससे भी कुछ बुरा। उसे कोई भयंकर चोट नहीं लगी। ठीक होने के बाद मेरा बेटा गुरुजी के दर्शन को गया तब गुरुजी ने कहा कि उन्होंने ही उसे नया जीवनदान दिया है।

ब्रॉनकिअल स्पाज़्म को पान के पत्तों से ठीक कर दिया

बीस सालों से मुझे दमे के दौरे पड़ने पर स्टिरॉयड पर रखा जाता था। मैं हमेशा गुरुजी को अपने बच्चों को आशीर्वाद देने कहा करती थी। लेकिन कभी भी उन्हें अपनी समस्या नहीं बताई। तीन साल पहले मुझे अचानक महसूस हुआ कि 'बॉनकिएल स्पास्म' गायब हो गया। गुरुजी ने मुझसे कहा कि उन्होंने मुझे स्टियरॉयड पर से हटा लिया है। सच ही था क्योंकि उसके बाद से मुझे कभी भी उनकी जरूरत नहीं हुई।

मुझे लगातार तीन बार से गर्मियों में बुखार रहने लगा था जिससे मेरी हालत खराब हो जाती थी। खून की जाँच से कैंसर या टी.वी. होने का शक जताया गया। मेरे पति ने मेरी बीमारी के बारे में गुरुजी से कहा तो उन्होंने मुझे अभिमंत्रित पान के पत्तों को रोज रात को सिर पर रखकर सोने को कहा। कुछ ही दिनों में बुखार हमेशा के लिए चला गया।

स्वप्न दर्शन

मैं अपने परिवार पर गुरुजी के आशीर्वाद का वर्णन करती ही रह सकती हूँ। उन्होंने मेरे माता–पिता को कैंसर से स्वस्थ कर दिया। मेरे पिता सन् 1995 में कैंसर सर्जरी करवाने के बाद उनके पास गए थे। उन्हें दुबारा कैंसर ने परेशान नहीं किया। मेरी माँ को कीमोथेरेपी की जरूरत नहीं हुई। उसे लगा सर्जरी के दौरान गुरुजी उसके हाथ पकड़े रहे। दर्शन के दौरान गुरुजी ने माँ को गुलाबी और सुनहली साड़ी भी पहनने को दी।

गुरुजी ने अक्सर अपने दर्शन सपनों के माध्यम से दिए है। एक बार मेरे बेटे आशुतोष ने सपना देखा कि गुरुजी हमारे साथ बड़े मंदिर जाना चाहते हैं। लेकिन जब गुरुजी नहीं आए तो हम घर आ गए। गुरुजी ने मोबाइल पर फोन कर आशुतोष से कहा कि हम मंदिर क्यों नहीं गए। फिर उन्होंने कहा कि वो उसे कुछ दिखाना चाहते हैं। इसके बाद दैवीय दर्शन हुए। उसने हमाने लॉन में एक बड़ी आकृति को उससे दूर जाते हुए देखा। वो यह सोचने लगा कि ये कौन थे। उसे शिवजी की जटा

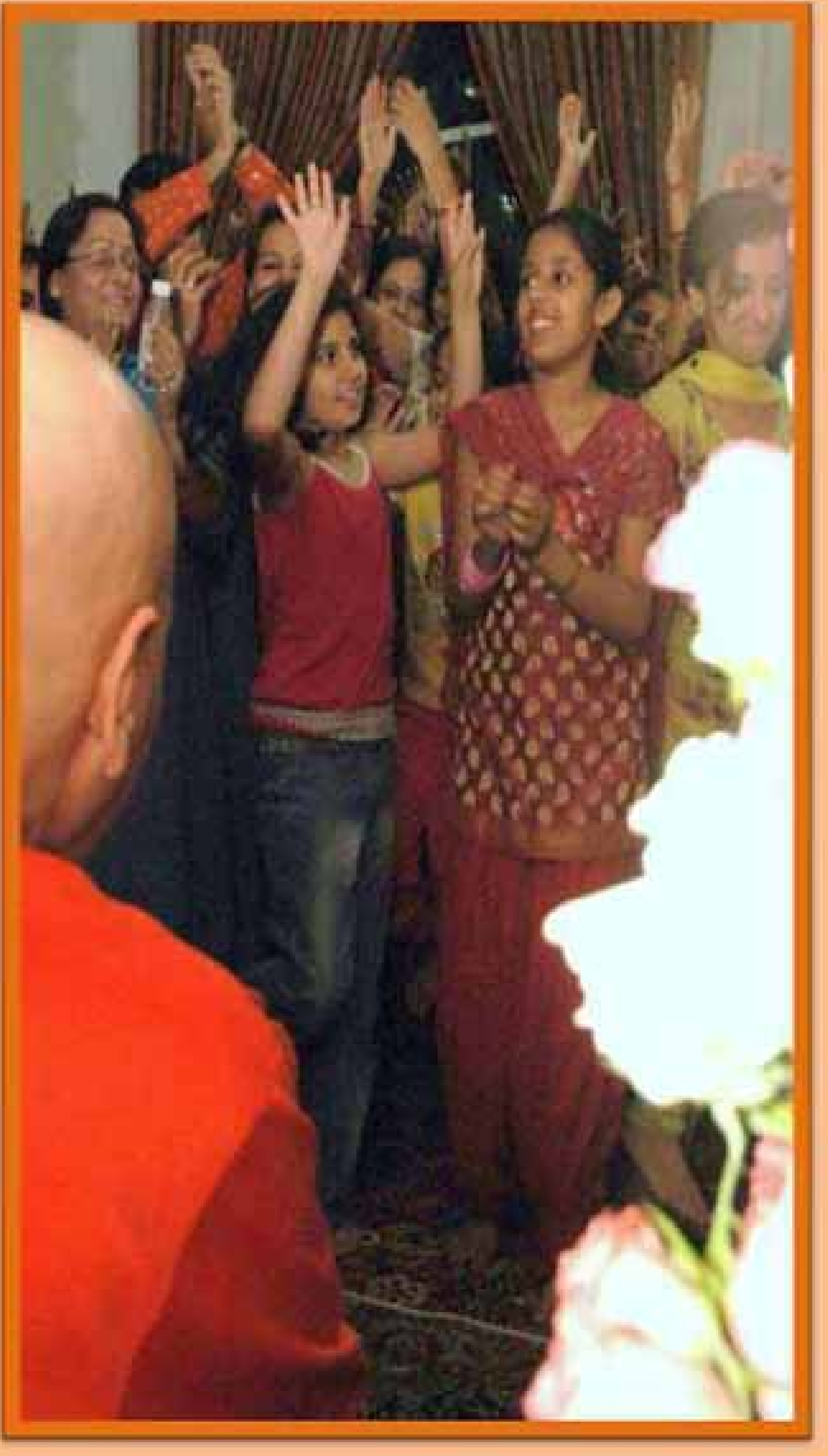

और त्रिशूल दिखाई दिए। वह आकृति उसकी ओर मुड़ गई। शिवजी हनुमान जी और फिर गणेशजी में परिवर्तित हो गए। हमारे पुत्र को सच्चा आशीर्वाद मिला। मैं गुरुजी के प्रति अपनी कृतज्ञता को शब्दों में व्यस्त नहीं कर सकती। उन्होंने अदिति को वहाँ से स्वस्थ किया जहाँ से चिकित्सा जगत ने उसे लेकर अपने हाथ खड़े कर दिए थे। उसकी दृष्टि में सुधार हुआ और इसे दैवीय हस्तक्षेप के अतिरिक्त और कुछ कहा नहीं जा सकता।

शब्दों में गुरुजी की महानता व्यक्त नहीं हो सकती। उन्होंने हमारे जीवन को बदलकर नया कर दिया है। अपनी आस्था और विश्वास से हमें लोगों के प्रति उदार सहिष्णु बनाया है जिससे हम विपरीत परिस्थितियों में जीवन का सामना

करने की शक्ति प्राप्त करते हैं। वो हमें बहुत कुछ देते हैं लेकिन प्रतिदिन में सिर्फ सम्पूर्ण संदेहरहित आस्था चाहते हैं। हमारे जीवन ने एक नया अर्थ ले लिया है। उन्होंने हमें आशा धैर्य, शक्ति प्रदान की है उनकी सहायता से हम बेहतर मनुष्य बन पाए हैं।

मेरा ये पूर्ण विश्वास है कि गुरुजी सर्वोच्च शक्ति हैं जिसे आप चाहे जिस नाम से पुकारें – शिवजी, कृष्ण जी या गुरुजी नानक जी के जीवित प्रतिरूप है। हमारे जीवन के चमत्कार केवल दैवीय सत्ता का परिणाम ही हो सकता है। मैं उनकी शरण में हमेशा रहने के लिए प्रार्थी हूँ। वे भक्त धन्य है जिन्होंने स्वार्थरहित होकर उनकी सेवा की है। गुरुजी का परिवार सबके लिए समान है वे आपके अनुभवों सुख–दुख को बांटकर आपको सहिष्णु बनाते हैं जैसे कि एक परिवार में होता है– बिल्कुल समष्टि में व्यष्टि की तरह।

GURUJI KA ASHRAM

गुरुजी के बारे में बहुत कुछ अनकहा ही रह गया है। उनकी निश्छल दैवी मुस्कुराहट यो उनकी सुगंध से घर में उपस्थिति का आभास या उनके माथे पर अचानक आने वाला तेज–इतना कुछ है कि हमें नहीं पता कि हम कहाँ से प्रारंभ करें। जब मैंने उनसे इस बारे में बात की तो वे बोले – "देखती चल" एक बार पहले दिए अभिमंत्रित तांबे के गिलास का पानी अमृत के समान था।

गुरुजी तक पहुँचना बहुत आसान है और यही उनकी सबसे अच्छी बात है ऐसा कभी नहीं हुआ है कि हम चिन्ता से ग्रस्त हों और उन्होंने हमारी ओर ध्यान देकर हमें चिन्ता से मुक्ति न दिलाई हो। यहाँ तक कि उन्हें अपनी समस्या बतानी भी नहीं पड़ती। हम सभी उनके संरक्षण में सदा रहें।

– सत्संग, ललित माथुर, एक भक्त

एक सैनिक का गुरुजी को नमन

सैनिक के रूप में मैंने भारतीय सेना में साढ़े तीन दशकों से काम किया है और हमेशा से इस सिद्धांत का अनुगमन किया है कि ''एक सच्चा सिपाही भाग्य जीता है, इच्छा से प्रेम करता है और व्यवसाय से मारा जाता है''

मुझे दैवीय सत्ता के बारे में जानने का मौका मिला और जीवन लाइन ऑफ कंट्रोल मानवीय ज्ञान के आगे भी है। मार्च 1999 के बाद के भाग ने मेरी नियति को बदल दिया। श्री गुरुजी महाराज के चरण कमलों ने मेरे लिए पवित्र साम्राज्य के द्वार खोल दिए। इसके लिए मुझे हिमालय की पहाड़ियों में तपस्या करने की जरूरत नहीं हुई।

मैंने गुरुजी के बारे में पहले मेरे करीबी मित्र लेफ्टिनेंट जरेरल (रिटायर्ड) आर. आई एम के कहलाने से सुना था जिनकी पत्नी को गुरुजी ने भयंकर घुटने के दर्द से स्वस्थ किया था। मुझे भी श्री गुरुजी ने भयंकर घुटने के दर्द से स्वस्थ किया था। मुझे श्री गुरुजी महाराज से आशीर्वाद लेने का सौभाग्य चार पाँच सालों बाद मिला। एक सैनिक अधिकारी मुझे गुरुजी के मंदिर मार्च 1999 में लेकर गए। उसके बाद से मेरा जीवन पूरी तरह बदल गया। मेरा परिवार भी उनके आशीर्वाद की छाया में आ गया।

मेरा दृढ़ विश्वास है कि गुरुजी भगवान शिव के प्रतिरूप है जिनके पास रोगहरणी शक्ति है। जिसे इस कलयुग में विधाता ही किसी जीवित आत्मा को प्रदान कर सकता है। गुरुजी के पास सिर्फ भयंकर बीमारियों को ठीक करने के लिए अतुलनीय रोग हरणी शक्ति ही नहीं बल्कि भगवान शिव की तरह लोकेश्वर है आप एक रोग का नाम लीलिए और वो आपको उस बीमारी से अपने तरीके से स्वस्थ कर देंगे। उनकी कृपा आपके समर्पण के साथ ही फलवती होने लगती है। पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली और भारत के अन्य भागों और विदेशों से उनके असंख्य भक्त उनकी कृपा पात्र बनने आते हैं।

मेरी पत्नी सुशीला, जो मधुमेह की रोगी थी, को गुरुजी का आशीर्वाद मिलां गुरुजी के दर्शन के पहले ही दिन उसे प्रसाद के रूप में लड्डू और मिठाई दी गई। जिसे खाने के बाद आश्चर्यजनक रूप से 107 तक आ गया। उसका शुगर लेवल हमेशा दो सौ से ऊपर रहता था लेकिन यह बदलाव देख मेरी आँखों को विश्वास नहीं हो रहा था। यह गुरुजी के ईश्वरीय आशीर्वाद का उदाहरण था।
सितंबर 2002 में मुझे सीने में दर्द की शिकायत हुई और मुझे कोरोनरी बाईपास का सुझाव दिया गया। मैं रिसर्च एवं रेफरेल अस्पताल, नई दिल्ली से सीधे

गुरुजी के पास उनका आशीर्वाद लेने पहुँचा। उन्होंने मुझसे कहा कि यूँ तो मुझे सर्जरी की आवश्यकता नहीं लेकिन अगर सर्जरी करवानी ही है तो एस्कार्ट अस्पताल में करवाने का सुझाव दिया। उन्होंने मुझे तॉबे का गिलास लाने को कहा और उसे अपने हाथों से अभिमंत्रित किया। मुझे और मेरी पत्नी को रोज सुबह खाली पेट उससे पानी पीने की हिदायत दी। तब से हम ऐसा ही कर रहे हैं मेरे दिल की गंभीर लगने वाली बीमारी ने मुझे परेशान करना छोड़ दिया।

अपने भक्तों को सुनामी से बचाया

मुझे एक और अविस्मरणीय घटना ही याद आ रही है। 2004 की सर्दियों में जालंधर जाने से पहले गुरुजी ने अवकाश प्राप्त रक्षा अधिकारियों को अपना आशीर्वाद देने की इच्छा जताई। मैंने उनसे कहा कि राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र बहुत कम ऐसे अधिकारी हैं, क्या वे कार्यरत रक्षा अधिकारियों जो राष्ट्र की बहुमूल्य संपत्ति है – को शामिल करना चाहेंगे। विशाल हृदय उदार गुरुजी ने अपनी सहमति दे दी और कहा कि वे कार्यक्रम की तिथि और स्थान मुझे बाद में बतायेंगे। कुछ समय बाद मैंने ये विषय दुबारा चलाया और उन्होंने मुझे प्रेम सिंह भूतपूर्व राजदूत के साथ छतरपुर मंदिर के पास एक स्थान पर जाने को कहा। मैं उस के फार्महाउस पर गया। वह गुरुजी के भक्त का फार्महाउस था। हमने गुरुजी से कहा कि वो स्थान कार्यक्रम के लिए सर्वथा उपयुक्त है।

गुरुजी ने मुझसे कहा कि कार्यक्रम में सेवानिवृत्त और कार्यरत रक्षा अधिकारियों को बुलाने में ही ध्यान केन्द्रित किया जाए और तिथि निश्चित की गई। 26 दिसंबर 2004 कई भक्तों ने छुट्टियों में बाहर थाईलैंड बैंकाक कुआलाम्पुर और

अंडमान निकोबार द्वीप गोआ के तटों पर जाने का कार्यक्रम बना लिया था। इसलिए बहुत से भक्तों ने गुरुजी ने कार्यक्रम में न आने की आज्ञा मांगी।

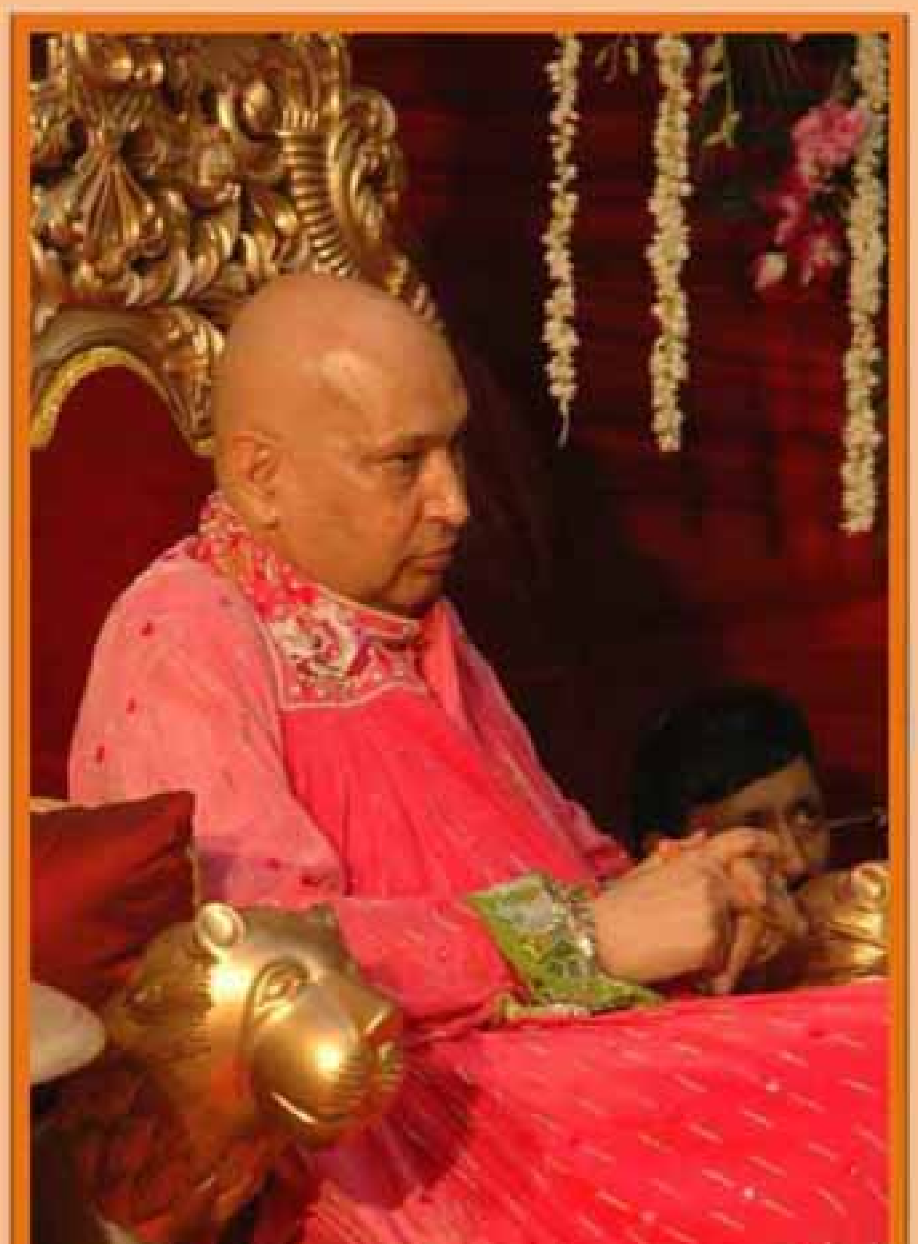

लेकिन गुरुजी ने उनसे बिना किसी बहाने में सहमति नहीं दी और आदेश देकर में आने को बार–बार कहा। चूंकि गुरुजी के शब्द हर भक्त के लिए आज्ञा समान है उन्होंने अपने घूमने का कार्यक्रम रद्द कर दिया। इस तरह सेवानिवृत्त और कार्यरत अधिकारियों की बड़ी संख्या ने कार्यक्रम में भाग लिया।

इस प्रकार गुरुजी के हुक्म और उसका पालन के द्वारा ने सबकी जान बचा ली। क्योंकि 26 दिसंबर

2004 को ही सुनामी ने तटीय इलाकों, जहाँ भक्तों ने नये साल मनाने का कार्यक्रम में शरीक होने की योजना बनाई थी उन्हें गुरुजी ने जीवनदान दिया।

प्राकृतिक आपदाओं से बचाने का गुरुजी का अपना तरीका है। गुरुजी स्वयं ही अपने भक्तों के लिए अभेद्य कवच हैं जो उन्हें महाविपत्ति से बचाता है। उनके पास प्राणकर्ता बनने की शक्ति है। वे परोपकारी ईश्वर के समान ही स्वर्गिक सुख और आनंद के मसीहा है।

तीन गुरुमंत्र : आस्था का सार

एक सत्संग के दौरान रात के दो बजे जब मैं गुरुजी की आज्ञा लेकर घर जाने ही वाला था कि गुरुजी ने मुझसे ईश्वर और धर्म के बारे में पूछा। जब मैं गुरुजी को इच्छित विवेकसम्मत् उत्तर नहीं दे पाया तो वे हंसते हुए बोले, "जनरल साहब, चिंता मत कीजिए, आप धर्म के बारे में कुछ नहीं जानते।" यूँ तो गुरुजी कभी प्रवचन नहीं देते, लेकिन तब उन्होंने पवित्र कुरान, बाईबिल, भगवद् गीता और गुरुग्रंथ साहिब के आध्यात्मिक उपदेशों का पवित्रतम और प्रामाणिकता के साथ वर्णन किया। ये उपदेश मानों भगवान शिव के माथे से निकलने वाली स्वच्छ गंगा के पवित्र जल के समान पारदर्शी थे। हम शांत, स्तम्भित हो सुन रहे थे। कुछ समय बाद गुरुजी ने पूछा कि उनके इस आध्यात्मिक ज्ञान से हमें क्या समझ में आया। जब हमने अपने कंधे असमर्थता में हिलाए तो वो हँसे और फिर उन्होंने हमें तीन दैवीय स्वर्णिम गुरु मंत्र दिए जो आस्था का सार और आनंदपूर्ण आध्यात्मिक जीवन के लिए पथप्रदर्शक है उन्होंने कहा :

1. सभी धर्म एक हैं सभी ईश्वर एक हैं सभी धर्म मानव जाति की सहायता, उनसे प्रेम करने की एक ही भाषा सीखता है।

2. जाति, धर्म, सिद्धांत, रंग को देखे बिना किसी की भी, कभी भी, किसी भी समय सहायता करनी चाहिए।

3. अपने आपको भौतिक सुख–सुविधा सपनों, भौतिकतावादी संसार से अलग कर लेना चाहिए। अपने व्यस्त जीवन में से कुछ समय निकालकर रोज समाधि में बैठकर चिन्तन और ध्यान करना चाहिए जो आपके आध्यात्मिक उन्नयन में सहायक है।

सबके निष्कर्ष में उन्होंने कहा, "अपना कुछ समय ऊर्जा आध्यात्मिकता और ईश्वर के साथ अपने आंतरिक संबंधों को पुनर्निदिष्ट करने में लगाओ।"
उस रात मैंने अपने जीवन की सीख ली और इसने मेरे विश्वास को और भी पुष्ट कर दिया कि मानव जाति की सेवा ईश्वर की सेवा है।

जनरल कपूर .... नई जिन्दगी

सन् 2005 में सुबह की सैर लेते समय डी एल एफ सिटी गुड़गाँव में मेरे घर के पास एक पागल बेहोश हो गया था। जब मेरी आँखें खुली तो मैं रिसर्च एंड रेफरेल अस्पताल के आई सी यू में था मेरी पत्नी और कुछ संबंधी मेरे सिरहाने खड़े थे। मुझे लगा कि मेरी मृत्यु नजदीक है। मेरी पत्नी और बेटी शाम को गुरुजी के पास गए।

सब कुछ सुनने के बाद गुरुजी ने थोड़ी देर शांत रहने के बाद मेरी पत्नी को प्रसाद दिया जिसे मैंने अगले दिन आई सी यू में खाया। मेरी पत्नी ने गुरुजी की तस्वीर को मेरे तकिए के नीचे रख दिया। यूँ तो मैं बेहोशी में प्रलाप कर रहा था लेकिन जब भी होश में आता था तो गुरुजी का स्मरण करता था। अवश्य ही गुरुजी की कृपा से मैं घर वापस आ गया। मुझे पन्द्रह दिनों के बिल्कुल आराम की सलाह दी गई। लेकिन अस्पताल से छुट्टी मिलते ही शाम को गुरुजी के दर्शन को गया। उन्होंने मुझे आशीर्वाद देते हुए कहा, "जनरलकपूर नया जीवन.... जाईये।" घर लौटते समय मै ने अपनी पत्नी से कहा कि गुरुजी की कृपा से मुझे कुछ नहीं होगा।

यह घटना को बताते हुए मुझे गुरुजी के प्रथम दर्शन वाले दिन हुई बातचीत याद आ रही है। कुछ ही मिनटों में उन्होंने मुझे बगल में बिठाकर पूछा कि मैं उनके बारे में कब से जानता हूँ ? मैंने कहा कि सन् 1995 की शुरुआत से उन्होंने हंसते मुझसे पूछा कि मैंने तब उनके दर्शन क्यों नहीं किए। मैं चुप हो गया। मैं उत्तर देने की हिम्मत नहीं जुटा पाया। उन्होंने मेरी

ओर चमकती हुई आँखों से देख फिर मैंने कहा कि शायद मेरे भाग्य में यही था। तब गुरुजी ने कहा कि अगर मैं पहले आ जाता तो मुझे ज्यादा फल मिलता। लेकिन उस समय मेरा जीवन सुखद था, समय अच्छा चल रहा था।

इससे मुझे यह शिक्षा मिली कि गुरुजी महाराज का आशीर्वाद उचित समय पर ही मिलता है यह आशीर्वाद हमारे पूर्व और वर्तमान जन्म के आधार पर मिलता है लेकिन उनका दर्शन हमारे लिए दैवीय साम्राज्य के द्वार खोल देता है।

दिसंबर 2005 के एक दिन संगत के बाद मुझे अचानक हुए भयानक न्यूमोनिया के इलाज के लिए आर आर अस्पताल ले जाया गया। मेरे शरीर में तेज दर्द हो रहा था। दवाइयों के बाद भी मेरा बुखार 104 डिग्री फा. से कम नहीं हो रहा था। वैसे तो अस्पताल में मुझे वी आई पी ट्रीटमेंट मिल रहा था लेकिन न्यूमोनिया का सामना करना मुश्किल हो रहा था।

फिर से मैंने गुरुजी से आशीर्वाद की प्रार्थना की जो दुख और तकलीफ से बचने का रास्ता है। जब मैं न्यूमोनिया से ठीक होकर अस्पताल में स्वास्थ्य लाभ कर रहा था। तब रक्षा विभाग के सेवानिवृत्त और सेवारत अधिकारियों और कुछ गुरुजी के भक्तों ने एक कार्यक्रम में रविवार की सुबह 2005 को गुड़गाँव में उनका सम्मान करने का आयोजन किया।

किसी न्यूमोनिया से पीड़ित रोगी के लिए अस्पताल से निकलना असंभव था। लेकिन मैं गुरुजी के दर्शन करना चाहता था। इसलिए मैंने एक बच्चे की तरह डॉक्टरों से जिद की वो मुझे अस्पताल से एक घंटे के लिए बाहर जाने की इजाजत दें। मैंने उनसे गुरुजी के दर्शन बाद लौटने का वादा किया।

उस दिन मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब मैंने पूरे संगत की ओर से गुरुजी को माला पहनाई। उसके बाद गुरुजी ने अपने गिलास का नारियल पानी मुझे पीने को दिया। मैं अपने आपको रोक नहीं पाया और आँसू मेरी आँखों से बहने लगे। मैंने गिलास को माथे पर लगाकर सारा नारियल पानी जो गुरुजी पी रहे थे, प्रसाद के रूप में पी डाला। इस तरह मैंने अपनी प्यासी आत्मा को शांत किया। मैंने उस नारियल पानी से ज्यादा मीठा पानी नहीं पिया था। मेरे लिए वो अमृत के रूप में दैवीय आशीर्वाद था। यह कहने की जरूरत नहीं है कि मैंने अधिक तेजी से स्वास्थ्य लाभ किया और काम पर लौट पाया। इन चमत्कारों ने प्रमाणित किया कि गुरुजी ही सत्य हैं। वे अपने भक्तों से संपूर्ण समर्पण के अलावा कुछ नहीं चाहते।

गुरुजी ने मेरी बेटियों पूजा और आरती को भी आशीर्वाद दिया। उन्होंने मेरी बड़ी बेटी पूजा जो अब विवाहित है, के लिए एक अच्छा रिश्ता भी बताया था। उन्होंने मेरी पत्नी को अमेरिका जाने को कहा, जो हमारे लिए उस समय एक सपना जैसा था। हमने गुरुजी से कहा कि आरती अभी थाना में है लेकिन फिर भी उन्होंने हमें जाने को कहा।

कुछ दिनों बाद ही आरती ने हमें यह शुभ समाचार दिया कि वो माँ बनने वाली है और उसके पति को नई नौकरी न्यूयार्क में मिलने के कारण वे वहाँ जा रहे हैं। बिना किसी झिझक के मैंने उससे कहा कि वे न्यूयार्क जाने की तैयारी करें और मेरी पत्नी वहाँ आरती के बच्चे के जन्म के समय पहुँच जाएगी। गुरुजी के शब्दों के अनुसार हमें न केवल अमेरिका तीन बार गए बल्कि अच्छा समय भी बिताया।

अमेरिका के पहले दौरे में मेरी पत्नी को मधुमेह के कारण न्यूयार्क के अस्पताल में भर्ती करवाया गया। मैं पत्नी के लिए गुरुजी का आशीर्वाद लेने गया तो मुस्कुराते हुए उन्होंने कहा कि चिन्ता की कोई बात नहीं है और वो कुछ दिनों में घर वापस आ जाएगी। दो दिनों बाद ही मेरी पत्नी गुरुजी की कृपा से घर वापस आ गई।

उनके चरण कमलों में आशीर्वाद

गुरुजी के पवित्र आशीर्वाद से अंधा देखने लगता है और अपंग नाचने लगता है बाँझ को बच्चे हो जाते और मानसिक और शारीरिक रूप से विकलांग मुस्कुराने लगता है। उन्होंने अपने भक्तों को एड्स, हृदय की बीमारी और कैंसर से स्वस्थ किया है। भगवान शिव के प्रतिरूप के अतिरिक्त कोई और शक्ति कलयुग में अपने भक्तों को अभिमंत्रित प्रसाद चाय और लंगर के रूप में देती है ? उनके भक्त उस प्रसाद को अत्यंत श्रद्धा से पवित्र दवा के रूप में लेकर अपनी रोगों से छुटकारा पाते हैं।

मेरे जैसे सैनिक के लिए मेरा ब्रह्मास्त्र बीमार, निस्सहाय, जरूरतमंद, विकलांग की सहायता। करना है जो हमेशा गुरुजी के चरण कमलों से आध्यात्मिकता,

शांति, विशुद्ध आनंद और ज्ञानोदयकी अविरल धार निःसृत होती है। श्री गुरुजी महाराज स्वयं सकारात्मकता और दैवीय रोगहरणी शक्ति के प्रतिरूप हैं। यह हमारे अच्छे कर्मों का प्रभाव है जो हमें इस कृपा स्रोत गुरुजी से आशीर्वाद मिलता है।

आप चाहें तो स्वर्गिक सुख और प्रेम के सागर में डूब जायें या इसे पार कर अंतिम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करें। लेकिन ऐसा सिर्फ आपके पूर्व और वर्तमान जन्मों के कर्मों के आधार पर मिले गुरुजी के आशीर्वाद से ही हो सकता है। बस आपको गुरुजी के श्री चरणों में सम्पूर्ण समर्पण करना है और आनंद के सागर में डुबकी लगाकर हर जन्म में गुरुजी के आशीर्वाद का चमत्कार देखना है। आज मेरी पूरी दुनिया गुरुजी के आशीर्वाद के चमत्कार से भरी हुई है। आज हमारी सारी खुशियां गुरुजी के चारों ओर घूमती है, जो मेरे लिए सिर्फ ईश्वर नहीं है बल्कि मोक्ष तक की आध्यात्मिक यात्रा के अनजाने राहों से परिचय करवाने वाले अंतिम सत्य हैं। मेरे जैसे मृत्यु मनुष्य के लिए उनकी अप्राणित सुगंध और उनकी शुभ उपस्थिति ही अपने आप में आशीर्वाद है। श्री गुरुजी महाराज सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक और सर्वज्ञ हैं। वो अपने सभी भक्तों के भूत, भविष्य और वर्तमान जन्मों के बारे में जानते हैं। ईश्वर के समान वो अपने सभी भक्तों को आध्यात्मिक उन्नयन और स्वर्गिक आनंद की प्राप्ति में सहायता देते हैं। चमत्कार सिर्फ उनके लिए होता है जो उनमें विश्वास करते हैं।

आपको अपने अच्छे कर्मों की गति लगातार बनाए रखनी होगी और गुरुजी में अपनी आस्था बनाए रखनी होगी। मैं श्री गुरुजी महाराज के श्री चरणों में हृदय से नमन करता हूँ।

– लेफ्टिनेंट जनरल रिटायर्ड सी के. कपूर

गुरु और शिष्य का दिव्य आलिंगन

मुझे आश्चर्य होता है कि कैसे एक भक्त जो गुरुजी के व्यक्तित्व के अथाह सागर में बूँद के समान है, उनके बारे में अपने अनुभव कैसे बता सकता है ? फिर भी मैं गुरुजी के तेज का वर्णन स्पष्ट करने की कोशिश करूँगी।

जब हम गुरु के दर्शन करते हैं तो वो हमें ईश्वर की ओर उनमुख करते हैं। आत्मा की ईश्वर की ओर इस यात्रा में गुरुजी हमें अपने प्रेम में निमज्जित कर आनंद प्रदान करते हैं। गुरुजी के सांसरिक रूप में भक्त को माँ जैसा प्यार पिता की प्रेरणा और भाई जैसा संरक्षण प्राप्त होता है। आपको प्रेम के ये सभी रूप सद्‌गुरू में एक साथ प्राप्त होते है।

गुरुजी पृथ्वी पर भगवान है। जो ज्ञान के प्रकाश से हमें उन तक पहुँचने का रास्ता बताते हैं। अपने भक्तों को सही राह पर चलने के लिए गुरु उनके साथ कभी कठोर भी हो जाते हैं। वे कुम्हार के समान है जिसका एक हाथ घट को आकर में देने के लिए पीटता है, जबकि दूसरा हाथ भक्त के लिए बाहर से सहारा देता है। सिर्फ गुरुजी ही ये कर सकते हैं क्योंकि वो अपने भक्तों के लिए अच्छा सोच रखते है उनके ह्रदय में स्नेह, दया और कृपा अपने भक्तों के लिए भरी हुई है।

अगर कोई ईश्वर के दर्शन अपने अंतर्मन में करना चाहता है, कोइ प्रबुद्ध होना

चाहता है तो उसे उन महापुरुषों की ईश्वर की पराभक्ति की आवश्यकता है। केवल भक्त ही सद्‌गुरु के साथ रसाकर्षण की प्रक्रिया में शामिल होता है। उनकी शिक्षा का पालन कर। भक्त भवसागर को पार का जीवन मरण के चक्र से मुक्त हो जाता है। यही सद्‌गुरु और उनके अनुयायी के बीच सच्चा संबंध है। गुरुजी हमारे सप्राण भगवान है। उनका प्रेम असीमित है। जितना हम उन्हें प्रेम करेंगे, उतना ही हमारा जीवन आनंदपूर्ण होगा। गुरुजी हमें समय–समय पर अपने लक्ष्य और नीरस भरे जीवन के प्रति सावधान करते रहते हैं। वे हमें अपने अंदर के दैवीय संभाव्य से परिचय करवाना चाहते हैं। वे नहीं चाहते कि हम अज्ञानता के अंधेर में सोते रहे।

एक सपने जैसा परिवर्तन हुआ

मैं गुरुजी से करीब एक दशक पहले मिली और प्रथम दर्शन के साथ ही मैं उनकी हमेशा के लिए भक्त हो गई। गुरुजी के पास आने से पहले मैं साईं बाबा की भक्त थी। मेरे उनमें अटूट श्रद्धा थी तभी एक सपने जैसा परिवर्तन हुआ। सपने में मैं ने साई बाबा की संगमरमर की मूर्ति अपने ड्राइंग–रूम देखी। वो गायब हो जाती है और उसके स्थान पर गुरुजी विराजमान दिखाई देते हैं। मैं उनका आलिंगन कर बहुत प्रसन्न हुई।

अगले दिन मैं गुरुजी के दर्शन के लिए गई । उन्होंने मुझसे कहा कि मैंने उनका जोर आलिंगन किया था। मैं चौंक गई कि उन्हें कैसे ये पता चला कि मैंने सपने में क्या देखा था ? तुरंत में समझ गई कि गुरुजी भगवान की प्रतिमूर्ति हैं। उनसे कुछ भी छिपा नहीं। वे हमारे बारे में सब भूत, भविष्य जानते हैं लेकिन

वे हमें यह रहस्य नहीं बताते हैं। एक बार उनके चरण छूते हुए मुझे उन्होंने मुझे अनके पास क्यों बुलाया है। मैं सोचती रही कि क्या कारण हो सकता है ?

गुरुजी का कथन मैं भूल गई

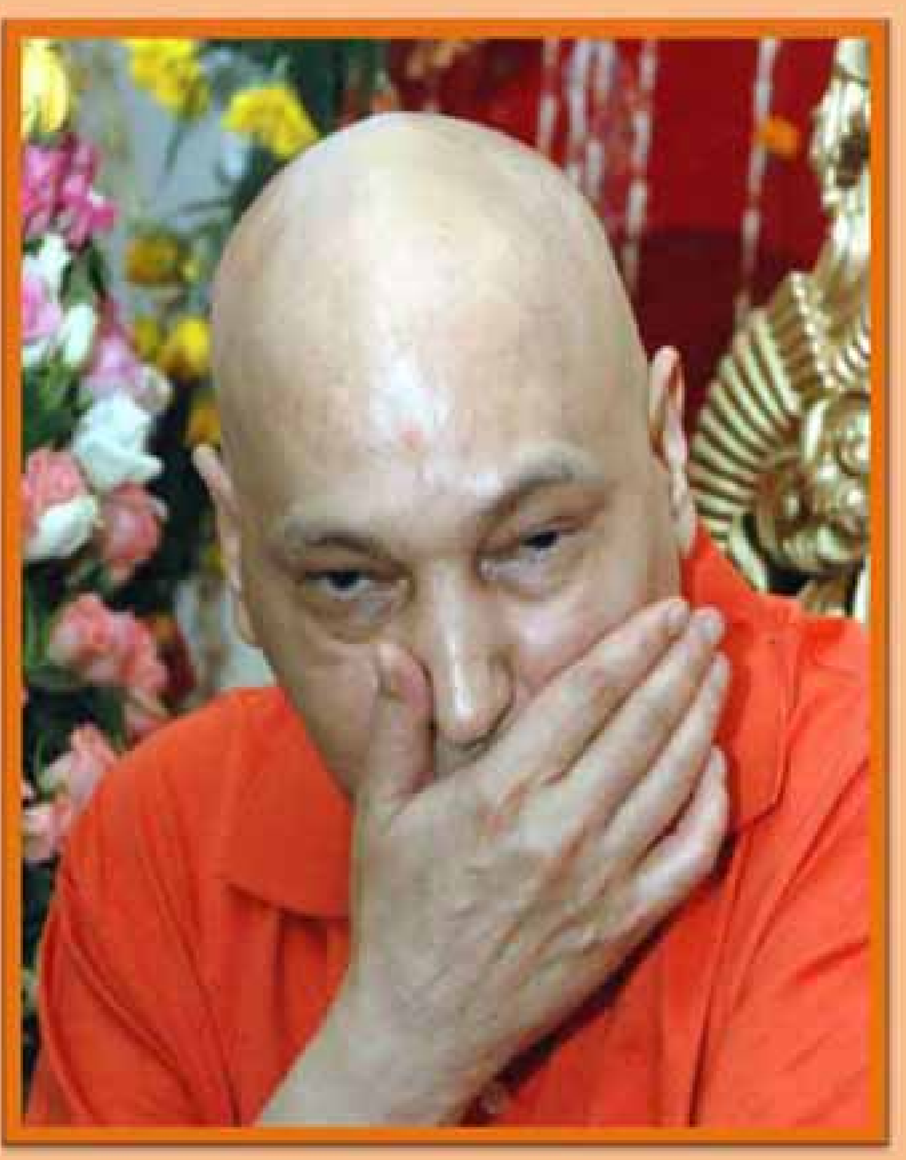

तीन साल बाद मेरे पति को दिल और किडनी की बीमारी हो गई। हम उन्हें मुंबई ले गए। जहाँ उन्हें पन्द्रह दिनों के लिए आई सी यू में रखा गया। मुश्किल के उन दिनों में मैंथों हाथों में गुरुजी की तस्वीर लेकर मैं लगातार प्रार्थना करती रही। मेरी चिन्ता बढ़ती जा रही थी। मैंने अपनी बेटी को दिल्ली में गुरुजी के पास जाकर मेरी समस्या की जानकारी देने को कहा। गुरुजी ने कहा कि आंटी मुझसे जुड़ी हुई है, अर्थात् उन्हें सब पता था। उन्हें कुछ बताने की जरूरत नहीं थी।

गुरुजी की कृपा से मेरे पति की तबीयत में सुधार आने पर हम दिल्ली वापस आ गए। मैं तुरंत गुरुजी के दर्शन को गई। तब उन्होंने मुझे अपने पास बुलाने के कारण की ओर इशारा किया। उन्होंने मेरे पति को नया जीवन प्रदान किया था। हम सभी जानते हैं कि जीवन और मृत्यु सृष्टिकर्ता के हाथ में है और अगर गुरुजी व्यक्ति को जीवन प्रदान करते हैं तो पता चल जाता है कि ईश्वर कौन है।

पान के पत्ते से दर्द का इलाज

गिर जाने की वजह से मेरे पाँव का ऑपरेशन किया गया। लेकिन ऑपरेशन के बाद मेरे पाँव में लगातार तेज दर्द रहने लगा। चिकित्सा से कोई फायदा नहीं हो रहा था।
मैंने अपनी समस्या गुरुजी के सामने रखी। उन्होंने मुझे अभिमंत्रित पान के पत्तों को दर्द वाले स्थान पर रखने को कहा। ऐसा करने के बाद दर्द और भी बढ़ गया। मैं रोती हुई गुरुजी के पास गई। उन्होंने कहा कि वे सारे दर्द को ले रहे हैं और कुछ दिनों बाद दर्द कम होने लगा और मैंने कोई दवा नहीं ली। तीन साल बाद दर्द पुनः वापस होने लगा। गुरुजी उस समय जालंधर में थे और मुझे पता नहीं चल रहा था कि मैं क्या करूँ। मेरी बहन मुझे डॉक्टर के पास ले जाने लगी। मैंने मन ही मन गुरुजी से डॉक्टर के क्लिनीक में मेरे साथ रहने की प्रार्थना की।

बहुत घबराहट के साथ मैं डॉक्टर के पास गई। मैंने उसे बताया कि तीन सालों से इस समस्या के लिए मैंने कोई दवाई नहीं ली है। उसने पूछा कि मेरा इलाज कौन कर रहा था। मैंने उसे गुरुजी के बारे में सब कुछ बता दिया। डॉक्टर ने

अपने बैग में से तस्वीर निकालकर मुझसे पूछा कि क्या ये वही व्यक्ति है। मेरी प्रार्थना का उत्तर मिल गया, वो गुरुजी ही थे। डॉक्टर ने मुझे भरोसा दिलाया कि जब गुरुजी मेरे डॉक्टर हैं तब उसके लिए कुछ भी करने को नहीं बचा है। मैं घर वापस आ गई और मेरा दर्द कम होन लगा। कोई भी सोच सकता है कि क्या ये संभव है लेकिन ये गुरुजी की महान शक्ति का छोटा सा उदाहरण है। गुरुजी के दरबार में विज्ञान हार जाता है। गुरुजी आपके दुखें को सपने में भी हर सकते हैं।

मेरे एक घुटने में दर्द शुरू हो गया। डॉक्टर ने मुझे एक्स–रे करवाने और पीड़ानाशके दवाइयाँ लेने को कहा उस रात गुरुजी मेरे स्वप्न में आकर पूछने लगे कि मैं किस बीमारी से पीड़ित हूँ। मैंने उन्हें अपने घुटने के बारे में बताया और उन्होंने अपना हाथ उस पर रख दिया। अगली सुबह दर्द गायब हो गया था।

GURUJI KA ASHRAM

गुरुजी अपने भक्तों के साथ अंतरंगता से जुड़ते हैं जिससे वे उसके मन और हृदय के भावों को पढ़ सकते हैं एक संगत की शाम जब गुरुजी तस्वीरें बाँट रहे थे, उन्होंने एक मुझे भी दी। जैसे ही मैंने ले लिया, उन्होंने मुझे बुलाकर छः और तस्वीरें दीं। उन्होंने मुझे तुरन्त बुलाकर एक फोटो ले ली और और मेरे बगल में बैठी एक और स्त्री को दे दी।

आस्था की डोर

अगर आप गुरुजी के साथ आत्मीय संबंध चाहते हैं तो आपको आस्था के बीच बोने पड़ेंगे। यह बीज ही विश्वास की कली को जन्म देगी।

तब आस्था की डोर से स्वयं का समर्पण गुरुजी के दैवीय स्पर्श कारण बनेगा और सद्गुरू के तेज से असंभव भी संभव हो जाएगा।

भगवान गणेश की आरती में चार आशीर्वादों का वर्णन है "अंधे को आँखें मिल जाती है। कोढ़ी को सुन्दर रूप मिल जाता है। बाँझ को बच्चे का आशीर्वाद मिलता है। गरीब अमीर हो जाते हैं" गुरुजी के दरबार में ये आशीर्वाद भक्तों को मिलते देखा है। कैंसर का इलाज हो गया, बाँझ स्त्रियों को बच्चे हुए और उनके दरबार से कोई भी खाली हाथ नहीं जाता।

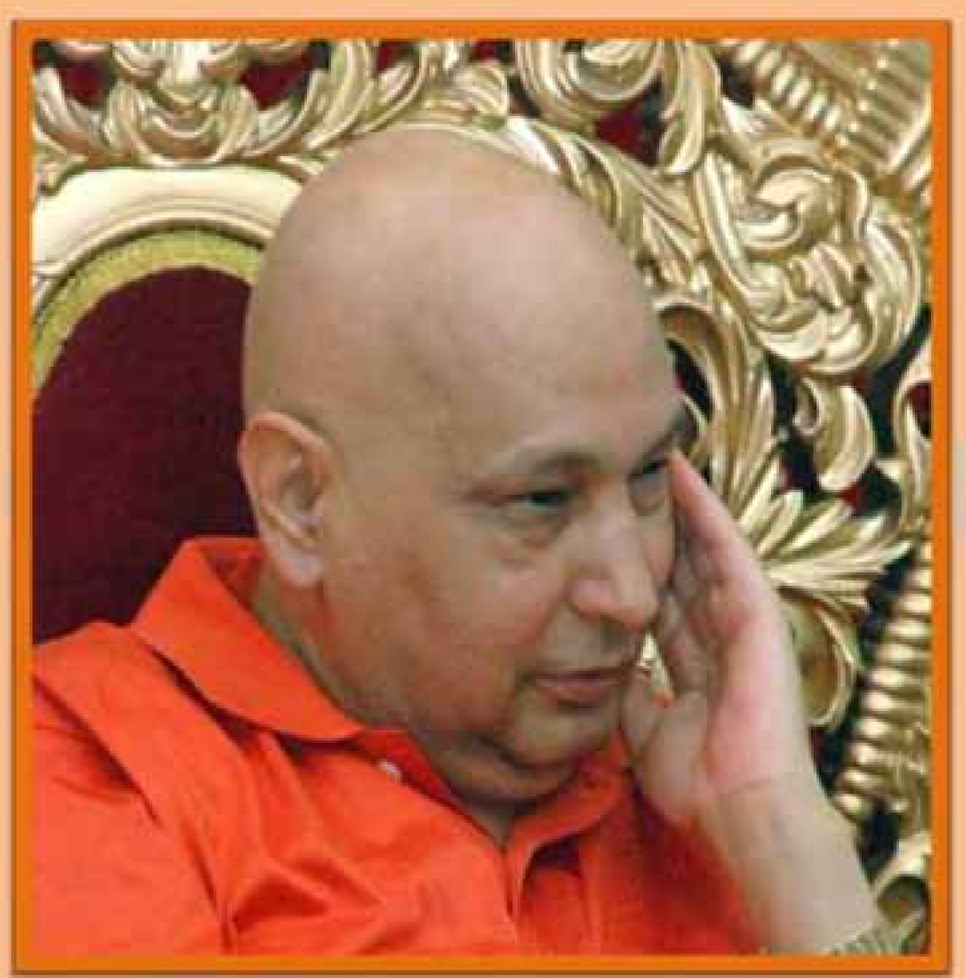

बस आपको अपनी श्रद्धा पर सदा विश्वास रखना है।

गुरुजी भगवान शिव के अवतार हैं जो हम पर कृपा करने के लिए ही पृथ्वी पर अवतरित हुए हैं। गुरुजी ने अपने भक्तों को आगाह किया है कि उन्होंने कोई दुकान नहीं खोल रखी कि कोई आकर, उनके चरण छू कर अपना काम

निकलवा लेगा। अगर आपको उनकी कृपा चाहिए तो उसका सुपात्र भी बनना होगा।

गुरुजी कभी–कभी दुखी अनुभव करने की बात करते हैं। वे दुखी होते हैं कि लोग उनसे भौतिक वस्तुओं की मांग करते हैं, कोई भी उनसे सच्चा आशीर्वाद नहीं मांगता जैसे–ईश्वर का स्नेह, भक्ति, गुरु पर अटल विश्वास संपूर्ण समर्पण। मैं आपसे हाथ जोड़कर प्रार्थना करती हूँ कि अगर आपको गुरुजी से कुछ भी चाहिए तो उनके चरणों कमलों की धूल लीजिए, उनके दर्शनों की याचना कीजिए और हमेशा उनका स्मरण कीजिए।

प्रेम का गुलाब

GURU KA ASHRAM

कभी–कभी अपनी वाणी में परम स्नेह के साक्षी वे मुझे मीरा बुलाते हैं। मेरा विश्वास है कि प्रथम दर्शन में ही लोग उनसे प्रेम करने लगते हैं। उनके दर्शन का प्रभाव मुझ पर इतना हुआ कि मैं दरबार में ही रोने लगी। एक बार मेरी बेटी ने मेरी इस आदत पर मुझे झिड़कते हुए कहा कि बाकी लोगों को लगता होगा कि मैं कितनी दुखी हूँ। मैंने उससे कहा कि गुरुजी के दर्शन से आँसू अपने आप निकल जाते हैं हृदय स्नेह से भर जाता है। मेरी बेटी इन सब पर ध्यान नहीं देते हुए कहा कि मुझे संयम में रहकर आँसू नहीं बहाना है।
एक मिनट बाद मैंने देखा कि मेरी बेटी भी रो रही है। मैंने जब उससे कारण पूछा तो उसे कुछ पता नहीं चला। मैंने उससे कहा कि गुरुजी ने उसे भी अपना स्नेह अनुभव करा दिया।

वेलेंटाइन डे के दिन मैंने पूजा घर में दीया जलाया। मैंने गुरुजी से कहा कि उनसे मिलने के बाद मैंने और किसी से इतना स्नेह नहीं किया है मैंने उनसे कहा कि आप मेरे वेलेंटाइन हो और आज के दिन तोहफों का आदान–प्रदान किया जाता है लेकिन मैंने कहा कि कुछ भी मेरा अपना नहीं है जो मैं दे सकूँ क्योंकि सब कुछ तो आपका ही है। तो क्या वे मेरे स्नेह के आँसू स्वीकार करेंगे ? लेकिन मैंने गुरुजी से कहा कि मैं उनसे तोहफे की उम्मीद करती हूँ जल्दी ही मैं अपने कामों में व्यस्त हो गई। उस रात, गुरुजी मेरे सपने में आए। उन्होंने अपने गले की गुलाबी माला निकालकर मेरे गले में डाल दी। यह एक संपूर्ण तोहफा था। उनके पास आकर ही आप उन्हें अनुभव कर पायेंगे।

गुरुजी का साथ

कुछ समय पहले, गुरुजी के मेरठ आने पर हमें उनके साथ जाने का सौभाग्य मिला। उस रात गुरुजी को दिल्ली लौटना था। वे कार में कुछ भक्तों के साथ बैठे। मैं यह सोचने लगी कि क्या मुझे कभी उनके बगल में साथ बैठने का सौभाग्य मिलेगा। उनके बगल में बैठे सभी भाग्यशाली थे।

ये घटना मैं भूल गई। एक बार दिल्ली की एक शादी में अपनी दो बेटियों के साथ शामिल हुई। गुरुजी ने आकर मुझसे लंगर में एम्पायर एस्टेट चलने को कहा, मैंने खुश होकर कहा कि मैं अपनी बेटियों के साथा वहाँ पहुँच जाऊँगी। इस पर उन्होंने कहा कि मैं उनके साथ्ज्ञ उनकी गाड़ी में चलूँ। मैं बता नहीं सकती कि मैं कितनी खुश हुई।

गुरुजी का प्यार और स्नेह असीमित है।उनका स्नेट रूपी अमृत हम पर आशीर्वाद बरसाता रहता है। ये सारी घटनाएँ उनके व्यक्तित्व रूपी सागर में बूंद के समान है। मैं गुरुजी से प्रार्थना करती हूँ कि वो हमेशा मुझे अपने श्री चरणों में स्थान दें और मैं अपनी आखिरी सांस तक उनका स्मरण करती रहूँ।

गुरुजी पर विश्वास करने से हम बेहतर हो सकते हैं और वो जो करेंगे उसमें हमारी भलाई है वो हमारे बारे में सब कुछ जानते हैं वो दयानिधान और कृपालु हैं तो हम क्यों चिन्ता करें ? चिन्ता उसे करनी चाहिए जिसके मन में विश्वास और श्रद्धा नहीं है और जिसका मन विषयों में भटक्ता रहता है।

मैंने गुरुजी के दरबार में अमृत बरसते देखा हैं। उनके स्नेह की सुगंध आपको सरोबार रख्ती है। इन शब्दों के साथ मैं गुरुजी को प्रणाम कर लिखना समाप्त करती हूँ।

– सत्संग : मिसेज माल्ही या मीरा, उनके चरणों की धूल

बड़े मंदिर में एक औरत स्वस्थ हुई

मैं एक अज्ञात बीमारी से त्रस्त थी। डॉक्टरों की जाँच में कुछ नहीं निकल रहा था और बिना इलाज के मुझे अस्पताल से छुट्टी दे दी गई। हमारा परिवार महाराज जी का अनुयायी रहा है जो अलौकिक शक्तियों के स्वामी थे। मुझे उनके पास ले जाया गया। महाराज जी ने कहा कि बुरी शक्तियों के प्रभाव से मैं डर गई हूँ और मुझे कोई बीमारी नहीं है और उन्होंने अपनी तरफ से पूरी कोशिश की लेकिन मुझे ठीक नहीं कर पाए। उन्होंने परिवार वालों से कहा कि वो मुझे स्वस्थ नहीं कर सकते, केवल ठाकुरजी (भगवान) ही मुझे स्वस्थ कर सकते हैं।

मैं गुरुजी के एक भक्त के दूर के रिश्ते में आती थी। उस परिवार के सत्संग में हम दिल्ली आए और बड़े मंदिर गए। मैं मंदिर में प्रवेश करने वाली ही थी कि मैं चिल्लाने लगी। मुझसे कहा गया कि मैं लगातार रो रही थी और जैसे ही मैंने मंदिर में प्रवेश किया मैंने रोना बंद कर दिया। मैं शांत होकर तीन घंटे तक सोती रहीं। मेरे परिवार को पता था कि मैं काफी सालों बार ऐसी नींद सो रही थी।

शाम को हम गुरुजी के दर्शन को गए और चाय प्रसाद और लंगर लिया। उसके बाद से मुझे कोई परेशानी नहीं हुई क्योंकि मुझे ठाकुरजी के दर्शन हुए थे। सिद्ध पुरुषों की भी अपनी सीमाएं हैं वे किसी को जीवन प्रदान मृत्यु को रोक नहीं सकते। किन्तु गुरुजी तो महापुरुष है वे भगवान शिव के प्रतिरूप हैं वे स्वयं भगवान हैं।

– सत्संग : मंजू गुप्ता, भक्त

एक रोगहरणी तरंग मेरी बाँहों में प्रवाहित हुई

मैंने अपने भाई हरमिन्दर सिंह से गुरुजी का गुणगान सुना था। सन् 2003 में जब मैं जयपुर में नियुक्त था, तब मैं अपने भाई के साथ गुरुजी के संगत में गया। मैंने ऐसे कई अनुभव सुने थे जिसमें गुरुजी ने असंभव को संभव कर दिया था।

इसी आशा से मैंने गुरुजी से मेरा दाहिना हाथ ठीक करने की प्रार्थना की जो एक हादसे में टूट चुका था और सर्दियों में खासकर लिखते समय बहुत दर्द करता था। मुझे उनका आशीर्वाद मिला और मुझे तांबे का गिलास लाने को कहा मैं उस गिलास को लेकर गुरुजी के सामने बैठा था जब मुझे एक तरंग मेरे हाथों में दौड़ती हुई अनुभव हुई और मुझे हाथों में शक्ति का अनुभव हुआ। मैं अपने हाथ को बिना दर्द महसूस किए घूमा पा रहा था।

मैं बहुत यात्रा के कारण हादसों का शिकार होता रहता था लेकिन गुरुजी से मिलने के बाद सुरक्षित महसूस करने लगा। एक बार रात में अजमेर से जयपुर आते हुए मैं पीछे की सीट पर आराम कर रहा था। अचानक किसीने मुझे जगाया मैंने ड्राइवर को चिल्लाकर चेतावनी दी कि एक ट्रक सड़क पर लगा हुआ है। ड्राइवर ने ब्रेक लगाया और हम हादसे से बच गए। मुझे अनुभव हुआ कि गुरुजी ने ये शब्द मेरे मन में डाले थे। मुझे हमेशा लगा कि गुरुजी ने मुझे आशीर्वाद देकर खुशी और संतुष्टि दी है। मैं जालंधर में गुरुजी के मंदिर हर रोज जा सकता हूँ – यह मेरा सौभाग्य है।

– सत्संग : मनमोहन जे. एस. कुकरेजा, जालंधर

अमेरिका से घर लौटे दंपत्ति के लिए, गुरुजी ही मात्र अवलंब हैं।

जौहर परिवार न्यूयार्क से भारत पाँच वर्ष पहले लौटा। उनका वापस आना बिना संघर्ष के नहीं हुआ – घर लौटना अपेक्षित आनंददायक नहीं रहा। और मीरा जौहर अक्सर उन दिनों के बारे में सोचती जब कोई उन्हें राह दिखाने वाला नहीं था। ये स्थिति अगस्त 2006 में बदल गई। कुछ समय से उनके पड़ोसी भाटिया परिवार, जो उनकी ही तरह जमीन के व्यापार में संलग्न थे – उन्हें एक व्यक्ति गुरुजी से मिलने पर जोर डाल रहा था। अनिल जौहर इस प्रस्ताव पर कुछ निर्णय नहीं ले पा रहे थे।

फिर जौहर दंपत्ति ने एक शाम इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। मीरा जौहार ने अपने पति से कहा कि भाटिया परिवार के सुझाव के अनुसार उन्हें पूरी श्रद्धा के साथ वहाँ चलना चाहिए। मीरा मधुमेह की रोगी थी, यह बात उनके पड़ोसियों को नहीं पता थी। उन्होंने उसे गुरुजी के यहाँ चाय प्रसाद और लंगर लेने का सुझाव दिया था।

इस प्रकार चिन्ता के साथ जौहर दंपत्ति एम्पायर एस्टेट गुरुजी के दरबार पहुँचे। मीरा ने चाय ली और फिर लंगर में चपाती और दाल के अलावे लड्डू भी लिया।

उस पवित्र भोजन के बाद उसके पेट में दर्द होने लगा। उसने अगले घंटे तक उसे बर्दाश्त किया। जब जौहर दंपत्ति के जाने का समय आया, तो गुरुजी ने उनसे बात की और कहा, "आया करो, ऐश करो।" एम्पायर एस्टेट के बाहर भाटिया ने उन्हें कहा कि आप भाग्यशाली हैं कि गुरुजी ने आपसे पहली बार में ही बात की। श्रीमती जौहर प्रभावित नहीं थीं। वो सोच रही थीं कि उनका दर्द कब कम होगा। रात को वो सो नहीं पाई और सोचती रहीं। कि वे लोग एक 'विशिष्ट' स्थान गए थे। सुबह उन्होंने तुरन्त अपना शुगर लेवल जांचा जो सौ पर था। वो जानती थी कि अगर उन्होंने पर रोटी खाई होती तो ऐसा नहीं होता।

तीन–चार बार एम्पायर एस्टेट जाने पर मीरा ने अपनी जांच की, तो हर बार स्तर नीचे ही आता था। यहाँ तक कि उसका 'ट्राइग्लीसेराइट लेवल' जो सात सौ पर रहता था, भी एक सौ बीस के सामान्य स्तर पर आ गया। आखिरकार उसने अपनी और गुरुजी की परीक्षा लेनी बंद की। उसने मान लिया कि गुरुजी की कृपा से उसका शुगर लेवल कम हो पाया है। उसे अपना रक्त शुद्ध और पवित्र होता अनुभव हो रहा था और इस अनुभव को देखा नहीं जा सकता था। सामान्यतः उसके खून की जाँच मुश्किल से हो पाती थी, कभी नस मिलने में दिक्कत होती थी और कभी निकला खून हमेशा गाढ़ा होता था। गुरुजी के दर्शन के बाद सुई से पहली ही बार में नस में चली जाती थी और खून निकल आता था।

भाटिया परिवार जौहर दंपत्ति की बीमारी के विषय में नहीं जानता था। अनिल जौहर को 'साइनस' की भयंकर समस्या थी। बीमारी समाप्त हो गई। वो अपनी पत्नी की बीमारी को लेकर इतने परेशान थे कि उन्होंने इस बदलाव की ओर ध्यान ही नहीं दिया।

पंक्चर टायर से 'सफारी' की यात्रा

जनवरी, 2007 में जौहर परिवार और अन्य कुछ परिवारों के साथ जिम कार्बेट नेशनल पार्क घूमने गए। वे सब दो जीपों में सवार जंगल के अंदर इस उम्मीद पर गए कि कोई जंगली जानवर उन्हें दिख जाए। लेकिन उन्हें निराशा मिल रही थी। बच्चे कह रहे थे कि इससे ज्यादा जानवर उन्होंने गुड़गाँव शहर में देखा है।

वे अपने आवास लौट आए। जब सुरक्षाकर्मी ने बताया कि किसी जानवर का न दिखना उनके लिए भाग्यशाली ही रहा। एक बड़ी कील ने उनकी गाड़ी के पिछले चक्के को पंक्चर कर दिया था। उन्होंने यह नहीं देखा था फिर भी पंक्चर चक्के ने उनके तीन घंटे की इस वीरान इलाके में बाधा नहीं डाली। गुरुजी ने जौहर परिवार को एक अप्रिय घटना से बचा लिया था।

मीरा के नाम प्रेम पत्र

जौहर दंपत्ति कुछ समय से गुरुजी के पास जा रहे थे जब मीरा ने ध्यान दिया कि गुरुजी उसे हमेशा श्रीमती जौहर कहकर बुलाते हैं जबकि अन्य स्त्रियों को वे आंटी कहते हैं। एक शाम दर्शन हॉल के बाहर उसने अपने पति से कहा कि

उसे लगता है कि गुरुजी उसे अपना प्रिय नहीं मानते। कुछ मिनटों बाद ही जाते समय गुरुजी ने एक लिफाफा मीरा को देते हुए कहा "मीरा आंटी, प्रेम पत्र।" सर्वज्ञ गुरु ने अपने भक्त के विचार को जान लिया था। उन्होंने शाम की सभा के प्रेमसहित न्योते को 'प्रेम पत्र' का नाम दिया। उन्होंने मीरा की शंका को दूर कर दिया था।

गुरुजी के साथ संबंध में शब्दों की जरूरत नहीं होती। मीरा को लगा कि हमेशा गुरुजी के साथ रहना जरूरी नहीं है क्योंकि वे हर जगह हैं वे एकमात्र दाता हैं जिसकी खुद की कोई इच्छा नहीं है। वे असीमित हैं क्योंकि वे ईश्वर हैं वे केवल स्नेह और भक्ति चाहते हैं। उनका आशीर्वाद सबके लिए है।

जौहर दंपत्ति के यहाँ पवित्र सत्संग

गुरुजी की सर्वशक्तिमत्ता का मान तब होता है जब जौहर परिवार को सत्संग का आयोजन करने का दायित्व दिया जाता है। मीरा के शब्दों में, "हमने इस बड़े समारोह का आयोजन घर के 'बेसमैंट' में करने का निर्णय लिया।

मैंने अपने पति से कहा कि अगर संगत गुरुजी की उपस्थिति को अनुभव करेगी तो कितना अच्छा होगा। गुरुजी ने मेरी यह इच्छा सुनी और पूरी की।"

सत्संग पाँच बजे शाम से सात बजे तक था। हालाँकि कुछ लोग सवा चार बजे ही आ गए। संगत के आगमन के साथ ही हमने गुरुजी के सुगंध को पूरे घर में महसूस किया। हम आनंदित हो गए। लेकिन यह सिर्फ शुरुआत थी। गुरुजी ने हमारे लिए सुन्दर और स्मरणीय शाम की योजना बनाई थी।

गुरुजी की तस्वीर सभागार में रखी गई। जैसे हम उनके दर्शन को चारों ओर एकत्रित हुए कि एक त्रिशूल उनके माथे पर प्रकट हुआ। त्रिशूल का आकार तीन

कोणों वाला था और उससे प्रकाश निकल रहा था। हम अचंभित हो गए। भगवान ने अपनी पवित्र उपस्थिति से हमारे घर को कृतार्थ किया था।

जल्दी ही संगत में गुरुजी की आरती की गई सबने सत्संग में स्नेहपूरित हृदय से भाग लिया। अभिमंत्रित लंगर के आयोजन के बाद संगत समाप्त होने लगी। देर शाम को जब कुछ ही लोग बचे थे, तब हम एक और चमत्कार के साक्षी बने। एक सुन्दर शिवलिंग गुरुजी की एक और तस्वीर में जो घर के निचले तल्ले में रखा गया था, प्रकट थे एक और स्मरणीय और विशिष्ठ घटना की हमारे लिए''

''हे भगवान ! हे गुरुजी ! सदा हमें आशीर्वाद दीजिए और जीवन में सही पथ पर चलने की प्रेरणा दीजिए।''

– सत्संग : मीरा और अनिल जौहर

GURUJI KA ASHRAM

एक दशक के बाद संतान का सुख मिला

मेरी छोटी बहन गीता की शादी सन् 1995 में हुई थी और गुरुजी की कृपा से उसे सन् 2006 में पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। हम गुरुजी के दर्शन को पहली बार सन् 2001 में गए थे और उन्होंने मेरे बेटे शांतनु को मिर्गी की बीमारी से स्वस्थ कर दिया था। उसके बाद हमने गुरुजी के सामने गीता को बच्चे का आशीर्वाद देने की प्रार्थना की थी। गीता कनाडा में रहती थी और अपना इलाज भारत और

कनाडा दोनों जगह पिछले पाँच सालों से करवा रही थी। गुरुजी ने मुझे कहा कि उसे सोमवार का व्रत शुरु करना चाहिए और किसी एक फल को खाना छोड़ देना चाहिए। मैंने गीता को गुरुजी का संदेश दिया और उसने अमरूद खाना छोड़ दिया, जो उसे पसंद नहीं था।

उसके व्रत शुरु करने के कुछ महीनों के अंदर ही, उसने गर्भधारण किया परिवार बच्चे के जन्म को लेकर बहुत उत्साहित था लेकिन उसने एक समारोह में अमरूद खा लिया यह गुरुजी की माया थी। गीता ने मुझे इसके बारे में फोन पर बताया कुछ हफ्ते के भीतर ही उसका गर्भपात हो गया और उसने अपने बच्चे को खो दिया। मैंने गुरुजी से कहा तो उन्होंने गीता को शिवरात्रि में दिल्ली

आने को कहा जो एक सप्ताह के अंदर ही आने वाला था। गुरुजी के आशीर्वाद से वो दिल्ली आ गई। गुरुजी ने उसे आशीर्वाद दिया और कनाडा लौट जाने को कहा।

वो वापस लौटकर अपने व्रत दुबारा करने लगी। एक साल बीत गया और 2005 की एक शाम जब हम बड़े मंदिर में थे, गुरुजी ने मुझसे गीता की तस्वीर मांगी। चूंकि उस समय मेरे पास तस्वीर नहीं थी, उन्होंने मुझे तस्वीर लाने को कहा।

इस बातचीत के एक महीने बाद गीता ने मुझे बताया कि उसने दुबारा गर्भधारण किया है और उसने 22 मई 2005 को एक स्वस्थ लड़के को जन्म दिया। चिकित्सा विज्ञान की उम्मीद छोड़ देने के बाद ऐसा गुरुजी के आशीर्वाद से ही संभव हो पाया। यह जीवन मरण पर उनके अधिकार का प्रमाण है।

GURUJI KA ASHRAM

– सत्संग : मीनू शर्मा : एक भक्त

मीरा गुरुजी के दर्शन करते ही उनकी हो गई

जब श्रीमती मीरा गुरुजी से मिलीं तो उन्हें 'स्पाइनल कॉर्ड' की भयंकर समस्या थी, जिससे उनका दाहिना पैर और पसलियाँ कमजोर होने लगी थी। उनमें बहुत तेज दर्द रहता था। उसने अपनी पीठ को सहारा देने के लिए बेल्ट बांधना शुरु कर दिया था लेकिन वह पन्द्रह मिनट से ज्यादा लगातार नहीं बैठ पाती थी।

गुरुजी से मिलने के पहले कुछ दिन मीरा कुछ तकिया ले जाती थी ताकि वे सत्संग में बैठ सके। गुरुजी ने यह देख उसे तकिया लाने को मना किया। उसने फिर ऐसा करने की कोशिश की तो उसे डपट लगाई गई। फिर वह जमीन पर बैठी रही।

गुरुजी से मीरा 3 अप्रैल, 1995 को ग्रेटर कैलाश, नई दिल्ली में मिली। गुरुजी ने उससे पूछा कि वो क्या ठीक करवाना चाहेगी। समस्या से अवगत होते ही उन्होंने तुरन्त कहा, "ऑपरेशन करना पड़ेगा।" मीरा डर गई। गुरुजी उसे एक कमरे में लग जाकर प्रभावित अंगों पर एक चम्मच रखा और उसकी गर्दन को

तेजी के साथ दायें–बायें मोड़ दिया। मीरा को तज दर्द हुआ। जैसे ही वो दर्द से मुक्त हुई, गुरुजी ने कहा कि वे पाँव का इलाज जालंधर में करेंगे।

गुरुजी के इलाज के बाद, मीरा का 'स्पाइनल कॉर्ड' का दर्द गायब हो गया। लेकिन अभी भी उसे जोड़ों में दर्द था। उसके हाथ की उंगलियाँ फूल जाती थीं और जोड़ों का आकार बड़े गाँठ की तरह हो जाता था। एक दिन मीरा ने सद्गुरु को अपनी समस्या बताई। गुरुजी ने उससे बात करते हुए उसके हाथों को रगड़ना शुरु किया। मीरा ने बातचीत में इस ओर ध्यान नहीं दिया। वो बताती रही कि उसके हाथ उसे कितना परेशान करते हैं। आखिर में, गुरुजी ने उसे टोककर अपने हाथों की तरफ देखने को कहा। उसके हाथ पतले हो गए थे और जोड़ों में दर्द भी नहीं हो रहा था–और ये सब बिना उसके ध्यान दिए हो गया।

गुरुजी ने एक बार मीरा से कहा था कि वो उसे मरने नहीं देंगे कि उन्होंने उसे दस साल की और जिन्दगी दी है। वे उसे हर बीमारी से बचाते रहे। उनकी बात कई बार सत्य साबित हुई।

पत्थर से भरे गाँल ब्लाडर को हटाया

मीरा के पेट में बहुत तेज दर्द हुआ। डॉक्टरी जांच से पता चला कि उसका 'गॉल ब्लाडर' पत्थरों से भरा हुआ है। बड़े वाले पत्थर आधे इंच से ज्यादा मोटे थे। डॉक्टरों ने उसका इलाज शुरु तो किया लेकिन कहा कि सर्जरी ही आखिरी उपाय है।

गुरुजी जालंधर में थे। उन्होंने मीरा को सुझाव दिया कि उनके दिल्ली से आने के बाद ही मीरा ऑपरेशन करवाए। उसने गुरुजी से कहा कि उसे दर्द बर्दाश्त नहीं हो रहा है। गुरुजी ने अपना हाथ दर्द वाले स्थान रखा और दर्द गायब हो

गया। मीरा ने गुरुजी का दिल्ली से लौटने का इंतजार किया और फिर ऑपरेशन करवाया। उसके गॉल ब्लाडर को सफलतापूर्वक हटाया गया।

बहुत सी शारीरिक समस्याओं ने मीरा को परेशान किया। उसका 'शुगर–लेवल' निरंतर बदलता रहता कभी ऊपर और कभी नीचे। जिसके कारण उसकी बाई आँख से दृष्टिहीनता आने लगी। मीरा ने सर गंगाराम अस्पताल में आँख की 'एंजियोग्राफी' करवाई। आँखों में छिद्र नजर आए। डॉक्टरों ने एक हफ्ते के अंदर ऑपरेशन कराने की सलाह दी।

मीरा बिना गुरुजी के स्वीकृति के कोई कदम नहीं उठाना चाहती थी। उसने डॉक्टरों से कहा कि वो अपने पति से पूछकर सर्जरी की तिथि निश्चित करेगी। डॉक्टर कि वो अपने पति से पूछकर सर्जरी की तिथि निश्चित करेगी। डॉक्टर ने कहा कि पति की सहमति से ज्यादा आँखें महत्वपूर्ण हैं लेकिन दृढ़निश्चयी मीरा गुरुजी के पास गई। सद्गुरु ने आने चरणों में पड़ी मालाओं में से एक उठाकर उसे दे दी। जब आँखों की जाँच की गई तो डॉक्टर हतप्रभ रह

गए क्योंकि वहाँ आँखों में कुछ भी नहीं था, वे ठीक हो चुकी थी। अब सर्जरी का प्रश्न ही नहीं उठता था।।"

एक्स–रे में कैंसर चिह्न भी अदृश्य हुए

गुरुजी की कृष्ण मीरा के पति को भी प्राप्त हुई। उसके मुँह के अंदर सफेद धब्बे हो गए थे। डॉक्टरों को कैंसर का संदेह था लेकिन निश्चित तौर पर कहने के लिए बायोहसी के रिपोर्ट का इंतजार था। इस बीच दंपत्ति सफदरजंग अस्पताल गए जहाँ कामोवेश यही बात बताई गई। मीरा अपनी समस्या लेकर गुरुजी के पास गई तो उन्होंने कहा, "मौज कर"। मीरा यह सुनकर चकित रह गई लेकिन गुरुजी के शब्दों में ही आशीर्वाद छुपा रहता है। बायोप्सी में सफेद धब्बे नहीं दिखाई दिए। इसके पहले रात के दो बजे किए गए एक्स–रे में धब्बे दिखाई दिए थे। डॉक्टर विस्मित थे, धब्बे रातों रात गायब हो गए थे। मीरा के आनंद की कोई सीमा नहीं थी आस्था से भरी हुई मीरा का मानना है कि गुरुजी उसके सब कुछ तुरन्त करते हैं।

चेतनता की वापसी

मीरा के पति, मि. कपूर, जो थोक कपड़ों के व्यापरी हैं, को पंजाब कुछ भुगतान लेने के लिए जाना पड़ा। उन्होंने अपने आने–जाने की टिकट शताब्दी गाड़ी में कार्यवाही। लेकिन जब वो रुपये लेकर जालंधर स्टेशन पहुँचे तो वहाँ काफी कुहासा था। उन्होंने घर फोन कर बताया कि वे रात के साढ़े दस बजे तक पहुँचेंगे।

अगला फोन मीरा को रात में एक बजे कश्मीरी गेट पुलिस स्टेशन से आया। पुलिसवाले ने कहा कि उनके पति बस के अंदर होशी की हालत में मिले हैं, मीरा ने अपने देवर, जो उसके साथ थे, को फोन करने वाले की पहचान करने

को कहा। पुलिस वाले ने कहा कि मि. कपूर बात करने की स्थिति में नहीं हैं और वे उन्हें हिन्दू राव अस्पताल ले जा रहे हैं।

व्यथित परिवार अस्पताल में मिल रहे देखभाल से संतुष्ट नहीं था। वे उन्हें प्राइवेट अस्पताल में ले जाने का निर्णय लेते हैं।

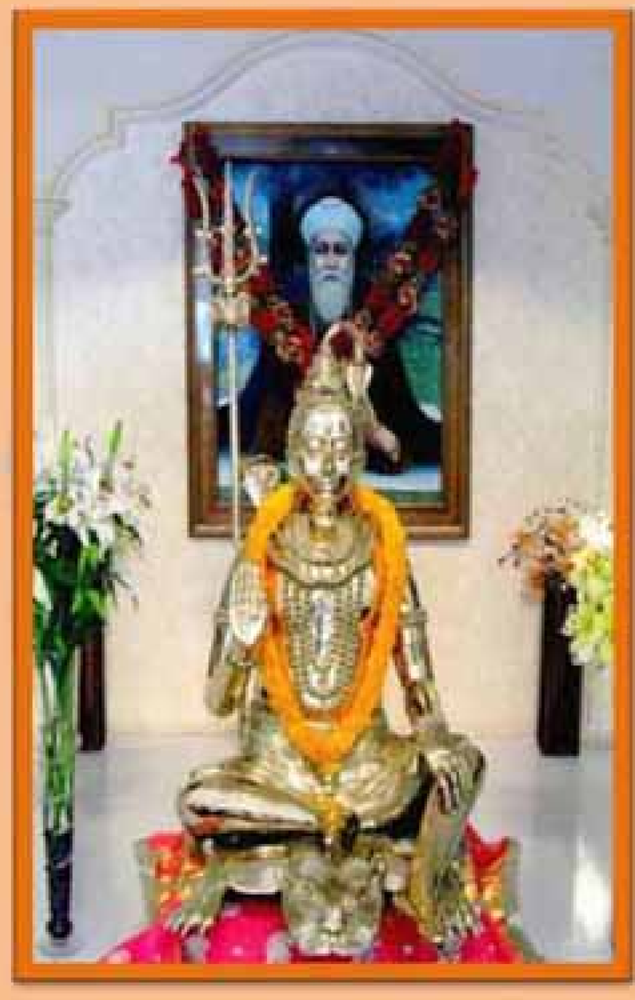

मीरा के पति को अभी भी होश नहीं आया था। मीरा ने गुरुजी को बताया तो उन्होंने कहा कि उसके पति को कुछ नहीं हुआ है और उसे चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। सद्गुरु के भरोसे के बाद उसके पति ने कुछ बोलने की कोशिश की। डॉक्टरों ने उन्हें हिलाकर जगाने का प्रयत्न किया। जब वे पूरी तरह होश में आ गए, तो डॉक्टरों ने मीरा को अपने पति के पास तीन महीने रहने को कहा क्योंकि उन्हें अस्थायी बेहोशी हो सकती थी। मीरा जानती थी कि ये संभव नहीं है क्योंकि उसे अपनी दुकान भी चलानी थी लेकिन गुरुजी ने उसे कहा कि उसकी कोई जरूरत नहीं होगी और उसके पति बिल्कुल ठीक है और ऐसा ही हुआ, उसके पति को कभी अस्थायी बेहोशी नहीं हुई।

बस में मि. कपूर, ने किसी सहयात्री के साथ मित्रता की और उसने उन्हें कुछ बिस्किट खाने को दिए इसके उन्हें कुछ याद नहीं था। परिवार काफी रुपये चले

जाने के कारण बहुत दु:खी था लेकिन गुरुजी ने कहा कि चिन्ता की जरूरत नहीं है और उन्हें और भी मिलेगा।

गुरुजी के दर्शन की तीर्थयात्रा में चमत्कार

कपूर, मीरा और उसकी सास गुरुजी के दर्शन के लिए चंडीगढ़ जा रहे थे। वे रात में वहाँ पहुँचे और गुरुजी ने उन्हें उसी रात में ही लौटने का निर्देश दिया। वे दिल्ली के लिए करीब दो बजे रात में निकले। मन में आतंकवादियों को लेकर संदेह था। उनकी चिंता बढ़ गई क्योंकि चंडीगढ़ अंबाला सड़क को बंद कर दिया गया था और उन्हें पंचकुला की ओर से जाना पड़ा। उस भयंकर अंधेरी रात में कोई भी दिखाई नहीं दे रहा था।

मीरा गुरुजी से राह बताने की प्रार्थना कर रही थी। उसकी सास यह सोच रही थी कि गुरुजी कैसे यहाँ आकर उनकी सहायता पायेंगे। उसी समय दो व्यक्ति खेतों में से निकले। वे मोटर साइकिल पर थे और उनकी लम्बी दाढ़ियाँ थीं। मीरा ने अपने पति से गाड़ी रोकने को कहा जिससे वो हाईवे का रास्त पूछ सके। उन्होंने कहा कि हाईवे तेरह कि.मी. दूर है। श्री कपूर ने यह कहकर मीरा ने यह कहकर विरोध किया कि यहाँ कोई बोर्ड पर भी दूरी नहीं लिखी है, हाईवे तेरह कि.मी. दूर कैसे होगा ? उसने फिर अपना प्रश्न दुहराया। एक व्यक्ति मीरा के निकट आकर गहरी आवाज में कहा कि हाइवे तेरह कि.मी. ही दूर है। मीरा और उसकी सास, जो उन्हें आतंकवादी समझ रही थी, दोनों डर गई।

वे लोग दो सौ मीटर ही आए होंगे कि एक सूचना वह पर लिखा था, तेरह कि. मी. और ठीक तेरह कि.मी. प्रिंस होटल के सामने सड़क आई और वे राजमार्ग पर आ गए। कौन खेतों से निकलकर अंधेरी रात में उन्हें हाईवे की दूरी बताने आया था ?

गुरुजी चाट खाने गए

गुरुजी की सहायता करने का तरीका रहस्यमयी होता हे। उन तरीकों पर अपना दिमाग लगाना, उनके तरीकों या शब्दों को समझना असंभव है। यह घटना उनकी बाहरी क्रियाओं का संबंध भक्तों के कर्म से जुड़ी हुई बताती है – कम से कम उन्होंने हमें तो यही समझने दिया है। किसे पता है कि वो वास्तव में क्या करते हैं।

गुरुजी ने मीरा और श्रीमती सबरवाल को अपने आवास गुड़गाँव से बीस कि.मी. दूर बड़े मंदिर जाने को कहा। वे रोज ऐसा ही कर रहीं थी। एक शाम जब वे मंदिर जा रहीं थीं तो गुरुजी की कांटेसा कार को ब्रिस्टल होटल के सामने पाया। वे उनके पास गई। गुरुजी उस समय बातचीत करने के मिजाज में थे। दोनों ने इसका फायदा उठाया और उनसे दो घंटे तक बात की। तभी गुरुजी ने चाट खाने की इच्छा जताई और संगत को मनंसर के प्रसिद्ध हल्दीराम में जाया गया।

गुरुजी ने हल्दीराम के प्रांगण में आराम किया। वे लौट गए। संगत में लोगों ने रूमाल निकालकर पंखा किया। एक चुन्नी को तकिया बनाया गया। एक डॉक्टर गुरुजी को लेटा हुआ देख सहायता देने के उद्देश्य से आया। जब उसने देखा कि सब कुछ ठीक है तभी वह वापस गया। इस बीच चाट लाया गया। जैसे ही

वो खत्म हुआ, गुरुजी ने मीरा को बुलाया। उसे अच्छी तरह याद था कि गुरुजी ने कैसे उसके परिवारवालों के बारे में प्रश्न पूछा था। उसके बेटी–दामाद कहाँ हैं ? वे कब वापस आ रहे हैं ? जल्दी ही ये सैर सपाटा खत्म हुआ और सभी घर वापस खुशी–खुशी गए। एक महीने के बाद हल्दीराम के दौरे का असली कारण समझ में आया।

मीरा की बेटी और दामाद की नई गाड़ी का दुर्घटनाग्रस्त हो गई थी। एक ट्रक ने पीछे से धक्का देकर गाड़ी को क्षतिग्रस्त कर दिया था। मीरा की बेटी ने अपनी माँ को फोन पर दुर्घटना के बारे में जानकारी दी और गुरुजी को भी देने को कहा। मीरा देर रात एम्पायर एस्टेट गई जहाँ गुरुजी सभागार के अंदर खड़े थे मानो उसी का इंतजार कर रहे थे। मीरा ने उन्हें बताया कि एक हादसा हुआ है। गुरुजी ने पूछा कहाँ पर दुर्घटना हुई है – ग्रेटर कैलाश के चौराहे पर। मीरा ने कहा कि उसके दामाद को एम्स लेकर जा रहे हैं जब गुरुजी ने उसे याद दिलाया कि वे वसंत कुंज के 'स्पाइनल कॉर्ड इंज्यूरी सेंटर जा रहे हैं – वही उसकी बेटी ने भी उसे बताया था। मीरा ने धीरे–धीरे यह बात अनुभव की कि गुरुजी ही उसे हादसे का हर ब्योरा दे रहे थे।

सर्वशक्तिमान गुरुजी अपने भक्तों के बच्चों को हानि नहीं पहुँचने देते। यूँ तो उसके दामाद का चेहरा फूल गया था, लेकिन उसे कोई दर्द या अंदरूनी चोट नहीं थी।

मीरा को बताया गया कि दुर्घटना के समय, गुरुजी अपने कमरे में अंदर टहल रहे थे। मीरा ने कहा कि गुरुजी ने उसके दामाद के दर्द को अपने ऊपर ले लिया। और उससे कहा, "मैं तुम्हारे साथ हूँ, डरो मत," मीरा के अनुसार गुरुजी ने आने वाली दुर्घटना को पहले ही देख लिया था और इसलिए उन्होंने एक निश्चित आपदा से हमें बचा लिया।

अनोखा व्यक्ति कपड़ों की दुकान पर आया

गुरुजी ने मीरा ने दुकान पर आकर उसे उलझन में डाल दिया। वे उसकी समस्याओं को समाप्त करने या उन्हें कुछ देने आए थे, लेकिन अपने वास्तविक रूप में नहीं आए थे। उन्होंने उनके रुपए लेकर बुरे कर्म अपने साथ ले गए और उन्हें उन्नति का आशीर्वाद दिया। गुरुजी को पहचान नहीं पाए, इसका मीरा को हमेशा मलाल रहा।

कपूर परिवार थोक व्यापार करते थे और उनकी दुकान करोलबाग में थी। एक सुबह एक अपरिचित व्यक्ति दुकान के अंदर आया। उसने अपना परिचय कार्ड दिखाया और कहा कि उसे कुछ खुल्ले पैसे चाहिए। मीरा जो उस समय दुकान में थी ने कहा कि वे थोक व्यापारी हैं और उनके पास खुल्ले नहीं होते। हालाँकि कपूर ने उसकी मदद करनी चाही और अपने कर्मचारी को छः हजार चार सौ रुपये का चेक कैश करने उस अपरिचित के साथ बगल के बैंक में भेज दिया। वो व्यक्ति बैंक के अंदर गया और कर्मचारी बाहर इंतजार कर रहा था। वो इंतजार ही करता रहा, जब बैंक के सुरक्षाकर्मी ने कहा कि उसने किसी को अंदर जाते नहीं देखा है। कर्मचारी दुकान पर वापस आ गया। जब उसने घटना का वर्णन किया

तो मीरा खुद को महामूर्ख मान रही थी कि उनके जैसे अनुभवी व्यापारी को ठग लिया गया। जब उसने गुरुजी से यह बात की तो उन्होंने कहा कि वो व्यक्ति उनकी परेशानियों को ले गया। उन्होंने यह भी माना कि वे उनके पैसे ले गए।

दूसरी बार, एक लंबा आदमी, जो दुकान की छत को छू रहा था, दुकान के अंदर आया। उसने कमर पर एक बेल्ट बांध रखी थी। उसे घुमक्कड़ समझते हुए मीरा ने उसे चले जाने को कहा। उसके कर्मचारी ने कहा कि वो 'भोलेनाथ की तरह लग रहा है और मीरा ने उसे दो रुपये दिए और फिर उसे चले जाने को कहा। वो चला गया। उस अजनवी का आना–जाना पहरेदार द्वारा नहीं देखा गया।

शाम को जब मीरा गुरुजी के दर्शन को गई तो उसे शर्म महसूस हुई। सद्‌गुरु ने उसे कहा कि उसने उन्हें सिर्फ दो रुपए दिए, जब वो उसके दुकान पर आए थे। यह गुरुजी की ही आज्ञा ली कि मीरा दुकान पर बैठे। यूँ तो वह इसकी आदी नहीं थी फिर भी उसने गुरुजी की आज्ञा का पालन किया। बाद में, गुरुजी जालंधर चले गए। मीरा उन्हें स्मरण कर उनकी तस्वीर के सामने रोती रहती थी। वो शिवपुराण का पाठ और माला का जाप 'ओम नमः शिवाय' शिवजी सदा सहाय और ऊँ नमः शिवाय गुरुजी सदा सहाय करती थी। जब भी दुकान के अंदर उन्हें गुरुजी की सुगंध का आभास होता था, वे घर से कपड़े बदलकर जालंधर चले जाते हैं।

ऐसे ही एक जालंधर के दौरे पर गुरुजी ने उससे इतना स्मरण और रोने को नहीं कहा। उन्होंने उसे और भी शिवजी सहाय मंत्र के जाप को करने को कहा।

मीरा के लगातार स्मरण करने के कारण गुरुजी भी उसके दुकान पर आते रहे। एक बार तपस्वी के वेश में एक व्यक्ति उसकी दुकान पर आया। उसने कहा कि वो उसे एक माला देना चाहता है। जब मीरा ने अपना हाथ बढ़ाया तो उसने

मीरा को झुकने को कहा और माला उसके गले में डाल दी। उसने हमेशा माला अपने साथ रखने का सुझाव दिया।

बाद में, जब मीरा के पोते का जन्म हुआ तो गुरुजी के वेश बदलकर उसके घर गए। इस बार नवजात को कड़ा देना था। उन्होंने ऐसा ही कड़ा मीरा को भी दिया। जब मीरा ने दुकान पर जाना शुरु किया तो उसने गुरुजी की तस्वीर वहाँ रखी। लेकिन गुरुजी ने ऐसा करने से रोक दिया तो उसने तस्वीर वहाँ से हटाकर घर पर लगा ली। पाँच महीने के बाद ही उन्होंने अपनी तस्वीर दुकान में लगाने की इजाजत दी। मीरा के अनुसार, उनके दुकान ने लाभ कमाना शुरु कर दिया। गुरुजी ने कपूर को अपना वादा निभाने में भी मदद की। एक दिन कपूने ने एक व्यक्ति को उसके तीन लाख रुपए उसी दिन लौटाने का वादा किया। मीरा ने बताया कि उस समय दुकान में तीन लाख का छठा हिस्सा भी कैश में नहीं था। लेकिन उसके पति ने कहा कि उसे दो भुगतान मिलने वाले हैं जिससे उसे पूरे पैसे मिल जायेंगे।

कपूर पैसे लेने गए तो एक व्यक्ति ने एक सप्ताह बाद पैसे देने की बात कही तो दूसरे ने एक दिन बाद। पैसे के बिना कपूर ने करोलबाग गुरुद्वारे के सामने गुरुजी से प्रार्थना की कि अगर वह अपना वादा नहीं निभा पाता है तो यहाँ उसका नहीं गुरुजी का निरादार होगा। समस्या गुरुजी के सामने रखकर वो दुकान वापस लौट आए।

कुछ समय बाद, एक–दूसरे दुकानदार ने उनके पास एक ग्राहक को भेजा। वो व्यक्ति जालंधर से था और उसे कुछ सामान चाहिए था। वो सारे सामान कपूर के दुकान पर ही मिलते थे और ग्राहक ने बिना कच्चे माल की जाँच किए ही खुशी से भुगतान कर दिया। इससे कपूर के तीन लाख का इंतजाम हो गया।

उस शाम, जब कपूर दंपत्ति संगत के लिए गए तो गुरुजी ने मीरा को बुलाकर पूछा, "क्या बात है ?" मीरा को गुरुजी के कहे शब्द याद हैं, "तुम्हारे पति ने मुझे फुटपाथ पर याद किया था।"

गुलाब की माला से दुकान अदाह्य हो गया

एक बार मीरा अपने रिश्तेदान के साथ गुरुजी के आश्रम गई। गुरुजी ने उसके रिश्तेदार को अपने चढ़ाए हुए फूलों में से एक गुलाब की माला उठाने को कहा।

उन्होंने उस माला को पानी से शुद्ध कर उस पवित्र जल को दुकान में छींटने को कहा।

लेकिन अगला दिन सोमवार होने के कारण उसे दुकान खोलकर जल छींटना अच्छा नहीं लगा। मीरा ने उससे कहा कि गुरुजी के निर्देश का पालन करना ज्यादा सही है न कि अपना दिमाग और तर्क लगाना।

एक महीने बाद करोलबाग के बाजार में आग लग गई। सभी दुकानें जल गई। मीरा ने कहा कि नीचे की दुकान भी झुलस गई, आग इतनी थी कि पंखे भी गल गए। लेकिन भक्तों की दुकान सुरक्षित थी। आग उनकी दुकान के नजदीक से हवा की दिशा बदल जाने से विपरीत दिशा में चली गई। अभिमंत्रित गुलाब की माला ने उनके दुकान को बचा लिया।

कपूर ने गुरुजी के सुझाव पर अपना व्यापार बदल लिया

कपूर परिवार व्यापार अच्छा नहीं चल रहा था। कपूर के पास अपना भविष्य बदलने की योजना थी। वो चीन से कुछ सामग्री आयात करना चाहते थे जिससे उनका खर्च कम हो पाए। गुरुजी से स्वीकृति मांगी गई। गुरुजी ने उसे सही समय का इंतजार करने को कहा।

तीन महीने बाद, गुरुजी ने मीरा को इलायची और मिसरी का प्रसाद दिया। उन्होंने उसे दुकान के अंदर खाने को कहा। साथ ही चीन में व्यापार करने वाले व्यक्ति का नाम बताने के बाद नये व्यापार शुरु करने की स्वीकृति भी दी। गुरुजी ने कहा था कि वो अच्छा आदमी है। करोड़ों रुपये का व्यापार बिना एक–दूसरे से मिले पिछले सालों से कर रहे हैं और उन्हें कभी घाटा भी नहीं हुआ।

GURUJI KA ASHRAM

दूसरी बार, दिल्ली के व्यस्त इलाकों में एक चाँदनी चौक में रुपये से भरा बैग दूसरी कार पर रखकर कपूर अपनी गाड़ी में जाने का प्रयत्न कर रहे थे। वे घर आ गए।

उन्होंने देखा कि वो बैग नहीं लाए वे व्यथित हो गए क्योंकि उसमें बहुत रुपये थे। वो तुरन्त वापस गए जबकि उन्हें पता था कि बैग गायब हो चुका है। लेकिन बैग वहीं कार पर रखा देखकर वे चकित रह गए। जब शाम को वे गुरुजी से मिले तो गुरुजी ने पूछा "क्या तुम्हें बैग मिला ?"

गुरुजी कृपा की पहुँच

सिर्फ मीरा को ही गुरुजी का आशीर्वाद प्राप्त नहीं हुआ। उसके परिवार को भी उनकी कृपा प्राप्त हुई। बगल की दुकान के कर्मचारी, चिकित्सा विभाग के अध्यक्ष सब गुरुजी की कृपा से कृतार्थ हुए।

कपूर दंपत्ति बगल की दुकान में गए और सत्संग की चर्चा करने लगे। गुरुजी कहानियों, चमत्कारों ने दुकान के एक कर्मचारी को इतना प्रभावित किया कि उसने गुरुजी के दर्शन का निश्चय किया। गुरुजी तब जालंधर में थे। उसने कपूर दंपत्ति से निर्देश लिया और दुकान के समय के बाद गुरुजी से मिलने चला गया। वहाँ पहुँचने पर गुरुजी उससे जानना चाहते थे कि उसे किसने भेजा है ? नाम जानने के बाद गुरुजी ने उसे गले लगाया (कारण उन्हें ही पता थे) फिर उसे दिल्ली वापस भेज दिया।

उस व्यक्ति का घरेलू जीवन समस्याग्रस्त था क्योंकि उसके भाई आपस में लड़ते रहते थे। जब वो घर वापस आया तो उसने अपनी पत्नी से कहा कि उसे लगा कि उसकी सारी परेशानी दूर हो गई है और ऐसा ही हुआ। संपत्ति के कारण लड़ रहे भाइयों ने वैसा ही किया जैसा उसने सुझाया। पारिवारिक गहनों को भाइयों में बाँट दिया गया। दुकान के कर्मचारी को मोतियों की माला मिली। उसके साथ मिले पुर्जे में लिखा था कि सबसे उपयुक्त व्यक्ति को यह दिया जाए। कर्मचारी के मन में गुरुजी आए। वो जालंघर गया और संगत को बैठा यह विचार करता रहा कि माला गुरुजी को देना चाहिए या नहीं। वो चकित रह गया जब गुरुजी

उसके सामने आकर पूछा कि उसका मन दुविधा में क्यों है ? गुरुजी ने उसे माला देने को कहा।

हर कोई मीरा के जोड़ों के दर्द से मुक्ति को देख प्रभावित था। उसका इलाज करने वाली डॉक्टर ने भी उसके स्वास्थ्य लाभ को देखा था। वो डाक्टर खुद जोड़ों के दर्द से परेशान थी। मीरा ने उसे गुरुजी के पास जाने का सुझाव दिया। डॉक्टर को भी गुरुजी का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। डॉक्टर ने उसे फोन कर बताया कि उसने वार्ड का चक्कर बिना किसी दर्द के अनुभव के लगाया। उसे खुद भी अपने 'राउंड' लगाने पर विश्वास नहीं हो पा रहा था।

मीरा के पूरे परिवार पर गुरुजी की कृपा रही। उसकी भाभी को सर्दी–जुकाम के साथ–साथ तेज सरदर्द भी रहता था। उसके कानों से पानी निकलता रहता था। उसकी श्रवण शक्ति भी कमजोर होने लगी थी। दोनों गुरुजी के पास साथ–साथ गए और उसके बाद सर्दी और माइग्रेन गायब हो गए और श्रवण–शक्ति में भी सुधार आया। लेकिन उसी समय भाभी के बेटे अंकुर के कम दिखाई देने लगा। उसी उम्र सिर्फ चार साल की थी। गुरुजी ने उसे अपना आशीर्वाद दिया। उन्होंने उसकी आँखों में शहद डालने को कहा। उसकी माँ शहद डालने को तैयार नहीं हो रही थी क्योंकि इससे आँखों में दर्द होगा। लेकिन जब उसने आँखों में शहद डाला तो अंकुर आँखों में बिल्कुल दर्द नहीं हुआ। गुरुजी ने आँखों की जाँच करवाने को कहा अंकुर की दृष्टि में अवश्य ही बहुत सुधार हुआ था।

जो ईश्वर के दर्शन दिलाता है

मीरा का भाई सेना की नौकरी से अवकाश प्राप्त कर चुका था। वह श्री रामकृष्ण परमहंस का भक्त था। वो संतो के पास इस उम्मीद से जाता था कि वे उसे भगवान के दर्शन करवायेंगे।

मीरा ने उसे सद्गुरु के बारे में बताया। वो संगत में इच्छापूर्वक आए। गुरुजी ने तुरन्त उन्हें 'मामा' बुलाया पूछा कि उनकी क्या इच्छा है। आध्यात्मिकता के आकांक्षी ने कहा कि उसे गुरुजी का आशीर्वाद चाहिए। गुरुजी ने फिर पूछा कि उसे क्या चाहिए। तब उन्होंने अपनी ईश्वर को देखने की इच्छा के बारे में बताया। गुरुजी ने सिर्फ ठीक है कहा। तीन दिनों बाद मीरा के भाई के जीवन भर की इच्छा पूरी हुई। उसने ईश्वर को देखा। सिर्फ भक्त की प्रार्थना पर गुरुजी ने उसे सर्वशक्तिमान के दर्शन करा दिए। तब वो कौन हैं ?

इसका उत्तर मीरा के पिता ने स्वयं दिया। मीरा के पिता अक्सर कहा करते थे कि गुरुजी कोई सामान्य सत या गुरु नहीं है जो कुछ सिद्धियों को नियंत्रण में कर अपने भक्तों को उनका चमत्कार दिखाकर उन्हें अपने वश में करता है। गुरुजी दिव्य ज्योति के एक रूप हैं।

कपूर को भी गुरुजी के दिव्य दर्शन हुए। उनकी पढ़ाई भगवान शिव की नगरी, बनारस में हुई थी। उन्होंने सपने में देखा कि वो बनारस के विश्वेश्वरा मंदिर में हैं और मंदिर का द्वारा खुलते ही गुरुजी सामने थे। उसी दृष्टि जब पैरों पर गई तो उसने वहाँ ब्रह्मा, विष्णु और महेश की त्रिमूर्ति को देखा। कपूर ने जब इस स्वप्न की बात गुरुजी को बताई तो उन्होंने कहा कि भक्त को दिव्य दर्शन हो गए।

घरेलू मामलों की जानकारी भी उन्हें रहती थी

मीरा हमेशा से करोल बाग के घर में संयुक्त परिवार में रहती आई थी। लेकिन गुरुजी के बार–बार कहने पर वे पच्चीस मार्च, 2003 को गुड़गाँव चले गए। मीरा नए घर में पूजा–पाठ करवाने का सोच रही थी लेकिन गुरुजी ने उसे सिर्फ उनकी तस्वीर लेकर घर में प्रवेश करने को कहा। तब से ही कपूर–दंपत्ति के घर में उनकी उपस्थिति हमेशा महसूस की जाने लगी। ऐसा पहले तब लगा जब मीरा ने मन ही मन अपने अकेलेपन की बात कहीं। यूँ उसकी नौकरानी ने बताया था कि उसके पड़ोसी बातचीत करना चाहते हैं। लेकिन मीरा ने पहल नहीं की। लेकिन पड़ोसियों ने ही पहले आकर बातचीत शुरु की। उनके वार्तालाप का मुख्य केन्द्र गुरुजी ही रहते थे। मीरा के संगत में आने पर उन्होंने पूछा कि क्या उसने सहेली बनाई ? मीरा चकित रह गई थी कि गुरुजी को उसके घर में होने वाली घटनाओं की जानकारी थी। और सिर्फ ड्राइंगरूम' ही गुरुजी की सर्वज्ञ आँखों से नहीं दिखता था।

एक बार, मीरा और उसके पति ने सुबह सुबह किसी मामूली बात को लेकर झगड़ा हो गया। शाम को गुरुजी ने कपूर दंपत्ति को फोन किया। उन्होंने कपूर से सुबह मीरा से झगड़े का कारण पूछा। इसके पहले कि कपूर कोई जवाब देते, उन्होंने मीरा से भी यही कहा। वैसे तो मतांतर मामूली था लेकिन गुरुजी ने उसे पकड़ लिया था, जो यह साबित करता था कि घर के मामले में उनकी कितनी गहरी जानकारी थी।

मीरा ने हमेशा उनकी उपस्थिति को अनुभव किया था मानो गुरुजी उसे नए घर में निश्चिन्तता का बोध करा रहे थे। एक बार सोते हुए किसी उसके कंधे को जोर से हिलाया। जब उसने घूमकर देखा तो वहाँ कोई नहीं था। दूसरी बार, पूजा करते हुए किसी ने उसका पीछे से स्पर्श किया। उसे लगा कि ये उसकी कल्पना थी लेकिन पूजा घर के पर्दे को हिलता देख उसने मन ही मन गुरुजी

से पूछा कि क्या वो वहाँ आए थे। संगत के दौरान उन्होंने कहा कि वो ही आए थे।

घर में साँप

मीरा हर बार गुरुजी के आगमन से आनंद मग्न हो जाती थी, लेकिन घर बाथरूम में साँपों को देखकर वो डर गई। यह बात अविश्वसनीय थी क्योंकि कपूर का घर आधुनिक, शहरी इलाके में था। तीनों बाथरूम में टाइल्स लगे हुए है और किसी ने भी इस इलाके में कभी साँप को नहीं देखा था। हर दिन, मीरा जब भी नहाने जाती थी तो टब में चार छोटे साँप वहाँ थे। वो बहुत डर जाती थी। वो बाथरूम जाने से पहले गुरुजी की प्रार्थना करती थी लेकिन साँप आ ही जाते थे। वो उन्हें किसी तरह बाहर निकाल देती थी। मीरा ने अपने पति से उस टब को हटाने को कहा और वहाँ बात अटक गई थी। उसने जब गुरुजी को यह बात बताई तो उन्होंने कहा कि वह भाग्यशाली है। उसने कहा कि वह भयभीत है। गुरुजी ने उससे पूछा कि वह क्या चाहती है। मीरा ने कहा कि वह टब को वहाँ से हटाना और सांपों का नहीं आना चाहती है।

गुरुजी की आज्ञा से उसने टब को वहाँ से हटवा दिया। जो लोग उसे हटाने आए थे वे यह सुनकर कि बाथरूम के अंदर सांप है, हँसने लगे मीरा टब को हटाते समय यह देखती रही थी कि सांप आए या नहीं। लेकिन साँप गायब हो

चुके थे। इस घटना के कारणों का संतुष्टिपूर्ण वर्णन आज तक किसी ने नहीं किया। कैसे आधुनिक घर में साँप आ सकता था ? क्यों मीरा ही उन्हें देख पाती थी ? उनका प्रकट होना क्या बताता था ? वे कहाँ चले गए ? इन प्रश्नों के उत्तर सिर्फ भगवान शिव के पास हैं।

– सत्संग : मीरा कपूर, गृहणी

GURUJI KA ASHRAM

गुरुजी महाराज महान हैं

जून, 2004 में गुरुजी की कृपा से हम संगत में शामिल हो पाए यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है। तब से हमारे जीवन में आनंद और आश्वस्ति का भाव आ गया। गुरुजी के मंदिर के शांत वातावरण में, आप में सकारात्मक ऊर्जा आ जाती है। उनकी कृपा से हमने बहुत कुछ पाया जिससे हम आनंदपूर्वक, स्वच्छ जीवन जी पा रहे हैं। अब हमें दुख और तकलीफ का कुछ पता नहीं है। विषम परिस्थितियाँ जीवन में खुशी लाती हैं यह सोचकर कि हमारे गुरुजी ने हमें अपने कर्मों का फल दिया है। उनकी कृपा से ऐसी परिस्थितियाँ ज्यादा कष्टकारी नहीं होती थीं।

गुरुजी की संगत में सभी एक बड़े परिवार का हिस्सा हो जाते हैं जहाँ अहं का स्थान सौम्यता ले लेती है। हमें संगत में गुरुजी के विषय में बात कर सुनकर संतुष्टि की प्राप्ति होती है। यह एक ज्ञानदायक अनुभव है जो संगत जैसे बड़े परिवार के सौजन्य से प्राप्त होता है।

इस सत्संगों में गुरुजी से बात करने की कोई जरूरत नहीं होती। हृदय में बोले गए अरदास से ही महापुरुष का आशीर्वाद प्राप्त हो जाता है। गुरुजी के कुछ भी नहीं मांगना चाहिए क्योंकि वो आपकी इच्छा तो पूरी करेंगे लेकिन आपको संतुष्टि नहीं मिल पाएगी। वास्तविक संतुष्टि और खुशी तभी मिलेगी जब हमारे प्रिय गुरुजी स्वयं ही हमें अपना आशीर्वाद दे। यह जानते हुए भी हम विपत्ति आने पर कृपा मांगने को विवश हो जाते हैं। (हम मनुष्य ही हैं) और जैसा कि मैंने पहले कहा वो दयालु हैं और अपने आशीर्वाद से हमें कृतार्थ करते हैं। मेरी पत्नी, बेटा और मैंनं एक साथ संगत में जाना शुरु किया। मेरी पत्नी और बेटे ने तुरन्त उन पर विश्वास कर लिया, लेकिन मेरे मन में शंकाएँ थीं।

सर्शत भक्ति

संगत में जाने के दूसरे या तीसरे दिन मैंने मन ही मन गुरुजी को चुनौती दी, "मैं आपको अपना गुरु तब मानूँगा जब आप मेरे तीन साल से चंडीगढ़ के एक व्यापरी के पास फंसे तीन लाख रुपए दिलवा देंगे" लेकिन कुछ दिन और संगत में आने के बाद मुझे लगा कि मुझे रुपए जैसे तुच्छ वस्तु के लिए गुरुजी के सम्मुख शर्त नहीं रखनी चाहिए थी। मैंने बार–बार गुरुजी से माफी मांगते हुए प्रार्थना की कि मुझे रुपए वापस पाने में उनकी सहायता नहीं चाहिए। एक सप्ताह बाद, जब मैं किसी काम से बैंगलोर गया हुआ था तो मुझे चंडीगढ़ वाले व्यापारी का फोन आया। वो मुझे तीन लाख रुपए और हर्जाने के तौर पर तीस हजार रुपए देने को तैयार था। गुरुजी महाराज महान हैं।

गुरुजी की उपस्थिति

शुरु में जब भी हम गुरुजी के मंदिर में प्रवेश करते तो मेरी पत्नी और बेटे को खुश्बू का झौंका महसूस होता था। मुझे ऐसा कभी नहीं हुआ। मुझे लगा कि मैं सच्चा भक्त नहीं हूँ। सत्संग में जाना शुरु करने के एक महीने बाद मैं बिस्तर

पर लेटा था और मेरी पत्नी सो चुकी थी। मैं दीवार पर लगी गुरुजी की तस्वीर को देख मन में शर्मिंदा महसूस कर रहा था कि मैंने गुरुजी पर हमेशा संदेह किया है। मैं उनकी तस्वीर को लगातार देखता हुआ उनसे मांफी मांग रहा था। मैंने उनसे उनका सच्चा भक्त होने का वादा किया। मैंने इतनी सच्चाई के साथ जीवन में कभी प्रार्थना नहीं की थी। अचानक मेरे तकिए से मुझे तीव्र सुगंध की अनुभूति हुई, जो मेरी पत्नी ने बताया कि वैसी ही सुगंध है जैसी मंदिर में थी।

मेरे विशाल हृदय गुरुजी ने मेरी प्रार्थना सुनी और स्वीकार भी कर ली और मैं उनका सच्चा भक्त बन गया। मेरे गुरुजी महान है।

मेरे अनुपस्थित बेटे के लिए बहू

मेरा बेटा समर, मर्चेंट नेवी में काम करता था और जहाज पर गया हुआ था। गुरुजी मेरी पत्नी बब्बू से उसका हालचाल पूछा करते थे। एक शाम हम गुरुजी के मंदिर में देर रात तक रुके थे। गुरुजी वहाँ नहीं थे। करीब एक बजे रात में लौटने पर गुरुजी ने संगत में लड्डू बांटना शुरु कर दिया। उन्होंने सबको एक लड्डू दिया लेकिन मेरी पत्नी को दो लड्डू दिए। मेरी पत्नी ने मुझे बताया कि गुरुजी ने ये अतिरिक्त लड्डू हमारे बेटे के लिए दिए हैं।

तभी कर्नल जोशी जो गुरुजी के सेवकों में हैं ने मुझे अपना फोन यह कहते हुए दिया कि मेरे बेटे का फोन है। हमने समर से पूछा कि इस समय हम घर के

फोन पर नहीं वह इस पर फोन क्यों कर रहा है ? उसने कहा, "मुझे नहीं पता। मुझे अचानक आपसे बात करने की इच्छा हुई और मुझे लगा कि आप गुरुजी के मंदिर में होंगे।" गुरुजी महान हैं।

मेरी पत्नी स्वस्थ हो गई

मेरी पत्नी गुरुजी की रोग हरणी शक्ति से तीन बार स्वस्थ हुई है। उसे सन् 1989 से 'मैनीयर्स' नामक बीमारी (अंदरूनी कान में द्रव्य के कारण असंतुलन) थी। उसे बेहोशी के दौरे और 'माइग्रेन' जैसा सिरदर्द होता था। भारत और अमेरिका के डॉक्टर भी उसे स्वस्थ नहीं कर पाए। सन् 1992 में मिले होम्योपैथी दवाई से दर्द कम हो जाया करता था। सत्संग शुरु करने के एक महीने बाद, उसने गुरुजी की शांतिपूर्वक प्रार्थना की "मैं कभी भी होम्योपैथी दवा लूँगी। मेरी समस्या ओर मेरा स्वास्थ्य अब आपके हाथों में है।" दवा छोड़ते ही बब्बू को बेहोशी के दौरे और सिरदर्द फिर से होने लगे और इस बार और भी तीव्रता से। लेकिन बब्बू ने दवा लेने से इंकार कर दिया। पंद्रह दिनों तक चलने के बाद दर्द कभी नहीं हुआ। हमारे गुरुजी महान हैं।

अप्रैल, 2005 में बब्बू को अचानक आँखों में काले धब्बे होने लगे थे। डॉक्टर ने बताया कि रेटीना का इलाज तुरन्त शुरु करना होगा नहीं तो वह अंधी हो सकती थी। लेकिन 'स्टिबरॉयड' के इस्तेमाल से उसी टी. वी. की बीमारी बढ़ सकती थी। इसलिए उसे साथ में टी. बी. की दवाई भी लेनी थी। यह सुन वह डर गई थी। हमें गुरुजी से सहायता लेने में हिचक हो रही थी तो संगत की एक स्त्री, जो काफी समय से गुरुजी की भक्त थी, ने आगे बढ़कर गुरुजी को सारी बातें बताई। लेकिन उस दिन बब्बू को संगत से जाते समय गुरुजी ने कुछ नहीं कहा। बब्बू ने गुरुजी से कहा कि वह स्टिरॉयड नहीं लेना चाहती। गुरुजी ने मुस्कुराकर उसे फिरोजपुर के घर में पड़े शुद्ध शहद लाने को कहा। अगले

दिन बब्बू शहद ले आई। गुरुजी ने उसे अभिमंत्रित किया और उसे हर रोज अपनी आँखों में डालने को कहा।

कुछ दिनों बाद हम डॉक्टर के पास चंडीगढ़ गए। उसने गोली और ड्राप दोनों दिए। उसने हमें आँखों में शहद डालने से मना किया कि ये ड्रॉप के प्रभाव को कम कर देगा। हमने डॉक्टर के निर्देश का पालन किया लेकिन शहद भी डालते रहे। दो सप्ताह के बाद आँखें बिल्कुल ठीक हो गई और टी वी की जाँच भी नकारात्मक निकली। डॉक्टर ने हमें बताया कि यही समस्या लेकर एक लड़की भी आई थी लेकिन वो स्वस्थ नहीं हो पाई। डॉक्टर ने कहा कि बब्बू के साथ ये चमत्कार हुआ है। उसकी दवा ने नहीं बल्कि भगवान ने बब्बू को ठीक किया है। उसने बब्बू से पूछा कि क्या वो भगवान में विश्वास करती है ? क्या इसमें कोई शक है ? गुरुजी महान हैं।

पिछले नौ सालों से बब्बू के चेहरे पर मस्सा हो गया था। चर्मरोग विशेषज्ञ, दवाइयाँ किसी से भी इस समस्याा का निदान नहीं हो पाया। आखिरकार, बब्बू का इलाज गुरुजी के ही एक भक्त, कर्नल डी. आर. चौहान ने मार्च 2006 में किया। एक सप्ताह के अंदर ही मस्से गायब हो गए। गुरुजी महान हैं।

गुरुजी ने दुर्घटना से बचाया

दिसंबर, 2006 में चंडीगढ़ में 80 कि.मी/घंटे से आती एक एम्बेसेडर ने हमारी जेन गाड़ी के बगल से धक्का दिया जिससे हमारी कार के दरवाजे, मडगार्ड, विंडस्क्रीन, खिड़कियाँ सभी नष्ट हो गए। लेकिन हम चार लोगों को एक खरोंच तक नहीं आई। मुझे कार को बनाने में खर्च भी नहीं करना पड़ा क्योंकि एम्बेसेडर के मालिक ने हर्जाना दियां ऐसा सिर्फ गुरुजी के आशीर्वाद से ही संभव है। हमारे गुरुजी महान हैं।

हम गुरुजी के आभारी हैं कि उन्होंने हमें अपना आशीर्वाद दिया। अक्सर गुरुजी कहते हैं कि दुनिया में आने वाले समय में कई विपत्तियों आने वाली हैं। कोई भी किसी भी चिन्ता, सहायता नहीं करेगा, चाहे वह कितना करीबी क्यों न हो। केवल एक बड़े परिवार की तरह संगत का महत्व होगा। उनके आशीर्वाद से हम इस संगत के सदस्य हैं, यह हमारा सौभाग्य है। ओम् नमः शिवाय, गुरुजी सदा सहाय !

GURUJI KA ASHRAM

– सत्संग : मेजर जनरल और श्रीमती एम.पी.एस. संधू

गुरुजी ने शराब की आदत छुड़वा दी

मैं अपने बचपन में अपने परिवार के साथ जालंधर में नाना–नानी के यहाँ जाया करता था। वे गुरुजी के दर्शन को जाते थे। इसी तरह, मैंने एक बार अपने परिवार के साथ उनके दर्शन किए।

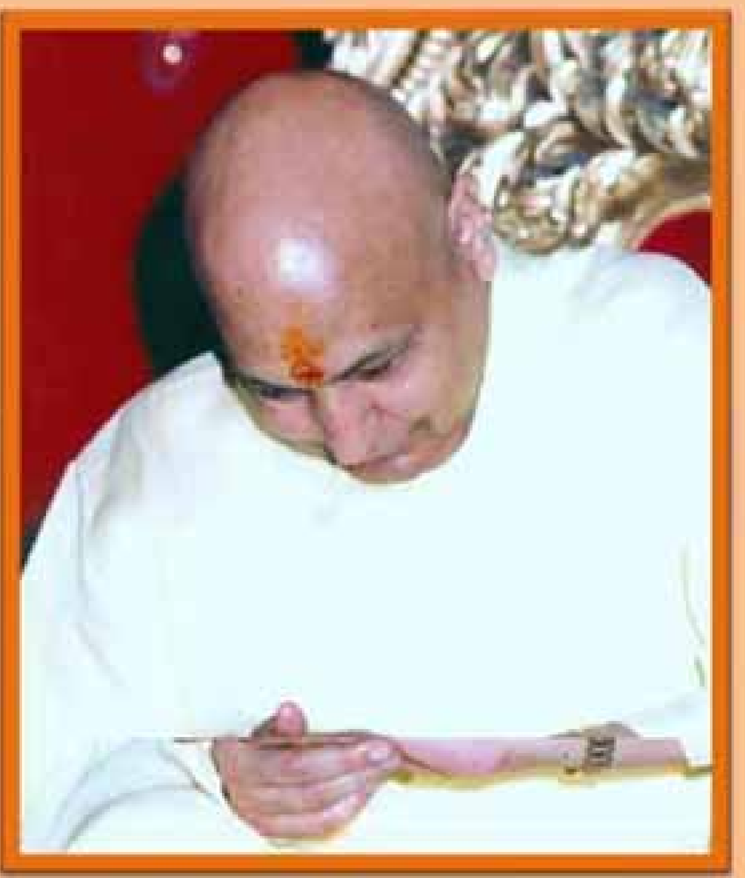

जब हम उनके मंदिर में प्रवेश करते थे, तो हमें इत्र की खुशबू चारों ओर महसूस होती थी मानों किसी ने कमरे में इत्र छिड़क दिया हो। हम बैठकर कई लोगों को आकर उनसे आशीर्वाद लेते देखते थे। फिर गुरुजी अपनी माला से गिलास पीने को देते थे। उस पानी में एक विशिष्ट सुगंध थी। बच्चे होने के बावजूद हम बेचैन न होकर एक स्थान पर बैठे रहते थे और समय कैसे बीत जाता था पता ही नहीं चलता था।

मेरे पिताजी ईश्वर के अतिरिक्त और किसी पर विश्वास नहीं करते थे। उन्हें हमारा गुरुजी के दर्शन को जाना पसंद नहीं था। हमने जाना बंद कर दिया। आठ साल तक हमने गुरुजी के दर्शन नहीं किए थे। लेकिन मेरी मामी और बहनें

गुरुजी के यहाँ बराबर जाती थीं। गुरुजी उनसे हमारे बारे में पूछते थे। फिर, गुरुजी जालंधर से दिल्ली आ गए।

सन् 2003 में मैं भी एम.बी.ए. करने दिल्ली आ गया। अकेले रहने के कारण मैंने शराब पीना शुरु कर दिया और मुझे इसमें मजा आने लगा था। अपने माता–पिता के कहने पर मैंने 'लीवर' टेस्ट करवाया था। जिसमें सामान्य व्यक्ति के चालीस इंटरनेशनल यूनिट प्रति ली आई यू एल होना चाहिए जबकि मेरा था 347 यूनिट। बात साफ थी। कि अगर मैंने पीना नहीं छोड़ा तो मुझे खतरनाक 'लीवर सीरोसिस' हो सकता था।

मेरी माँ मेरे साथ रह रही थी क्योंकि हम वसंत कुंज से द्वारका जाना चाहते थे। मेरी माँ मेरे स्वास्थ्य के लिए चिन्तित थी। गुरुजी सर्वव्यापी हैं। उन्हें सब कुछ पता रहता है। एक बार मेरी मां गुरुजी के मंदिर गई उस दिन उन्होंने मेरी माँ से कहा कि उसका बेटा व्यथित है और मुझे आने को कहा। मैंने ऐसा ही किया। मेरे पिताजी ये सब नहीं जानते थे। मैं शाम को अपने काम के बाद सीधा गुरुजी के आश्रम पहुँच जाता था। वहाँ चाय और लंगर के बाद ही घर लौटता था। वहाँ पर ऐसे लोग थे जिन्हें गुरुजी ने समस्याओं, कैंसर, हृदय रोग आर्थिक परेशानी, से छुटकारा दिलाया था और वे प्रसन्न थे। गुरुजी ने मेरी माँ को दस दिनों तक लगातार आने को कहा और अभिमंत्रित ताँबे को गिलास दिया। मैंने उससे पानी पिया। मैं गुरुजी की संगत में सिर्फ एक इच्छा से बैठता था – उनका आशीर्वाद।

एक दिन गुरुजी ने मेरी माँ से कहा कि चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है। उन्होंने मुझे फिर से जाँच करवाने को कहा। जांच में एल्कोहल लेवल सामान्य स्तर चालीस आई यू एल पर आया जो कि एक आश्चर्य था। मुझे उनका चमत्कार समझ में नहीं आ रहा था। मैं गुरुजी के पास उनकी कृपा के लिए

धन्यवाद देने गया था। गुरुजी ने सिर्फ जानना चाहा कि मैंने जांच करवाया या नहीं। जब मैंने हाँ में उत्तर दिया तो उन्होंने कहा, "ठीक है ना, जा ऐश कर।" मैंने और मेरी माँ ने धन्यवाद देते हुए उनके चरण स्पर्श कर लिए थे।

मेरी नानी को हृदय रोग से बचाया

उसी रात मेरी माँ और नानी ने दस साल पहले हुए चमत्कार की कहानी सुनाई। मेरी नानी को तीन बार दिल का दौरा पड़ा था और डॉक्टरों ने उनके ठीक होने की उम्मीद छोड़ दी थी, इसलिए उनका इलाज भी बंद कर दिया था। मेरी माँ अपने भाई के साथ आधी रात को गुरुजी से सहायता मांगने गई थी। गुरुजी ने उन्हें पान के पत्ते लाकर नानी के बगल के कमरे में जाकर प्रार्थना करने को कहा। पान के पत्तों को मेरी नानी के सीने पर रख दिया गया था। दस दस मिनट बाद, मेरी नानी ने पेशाब किया, जो अच्छी निशानी थीं जिसके बाद डॉक्टों ने उन्हें बाईपास के लिए लुधियाना भेज दिया गुरुजी की कृपा के बिना मेरी नानी आज जीवित नहीं हो पातीं।

कभी–कभी ऐसी चीजें हो जाती हैं जिनकी व्याख्या संभव नहीं होती। आप केवल उन्हें स्वीकार सकते हैं। मेरे स्वस्थ होने के बाद गुरुजी में मेरी आस्था दुगुनी हो गई और मैं उनके आशीर्वाद की कामना अपने और अपने परिवार के लिए करता हूँ।

– सत्संग : मुनीत जारयर, सेल्स एंड मार्केटिंग मैनेजर

मुझे गुलाब की खुशबू का आभास हुआ

मैं गुरुजी से एक पारिवारिक मित्र के द्वारा सन् 2006 में मिली। पहली बार मंदिर जाते हुए मेरे मन में कोई अपेक्षा नहीं थी। मंदिर के एक बड़े सभागार में कई सारे लोग बैठे हैं और गुरुजी अपने सिंहासन पर विराजमान थे, मैं भी उनके चरण छूकर चारों तरफ देखते हुए बैठ गई। जब भी मैं गुरुजी की ओर देखती थी तो मुझे लगता कि वो मेरी ही ओर देख रहे हैं। मैं आखें बंदकर भजन सुनने लगी। एक या दो बार मैंने अपनी आँखें खोलने की कोशिश की लेकिन ऐसा कर नहीं पाई। अचानक मुझे गुलाब की सुगंध का आभास हुआ। यह कोई इत्र धूपबत्ती की सुगंध नहीं थी बल्कि ये ताजे गुलाबों की खुशबू थी। अचानक मैं अपनी आँखें खोल गुलाबों

को ढूँढ़ने लगी लेकिन वहाँ कृत्रिम फूल रखे हुए थे। मैंने गुरुजी की ओर देखा तो उन्होंने कहा, ''बताओ कि तुमने क्या अनुभव किया ?'' लेकिन मैं वर्णन नहीं कर पाई।

मुझे गुरुजी के पास ले जाया गया क्योंकि डॉक्टरों के मेरे दिमाग में 'ट्यूमर' दिखा था। अगर ये ट्यूमर ऐसे ही बढ़ता जाता तो मैं अपनी आँखों की रोशनी खो सकती थी। मुझे एक दिन में तीन ब्रोमोक्रोपटिन खाने पड़ते थे। जिससे मेरी

हालत खराब हो जाती थी। कार्यरत महिला होने के कारण इससे मेरे काम पर भी असर पड़ता था।

मैं गुरुजी के शरण में जाकर चुपचाप उनसे प्रार्थना करती थी कि इन झंझटों से बचने के लिए मैं सर्जरी करवा कर हटवा लूँ। गुरुजी ने मेरी इच्छा पूरी कर दी। दवाइयाँ लेने के बाद भी ट्यूमर बढ़ता रहा और अक्तूबर, 2004 में मेरा ऑपरेशन किया गया। सर्जरी के पहले मैं गुरुजी का आशीर्वाद लेने गई थी। उन्होंने मुझे ऑपरेशन की तिथि, डॉक्टर और अस्पताल का नाम बताते हुए आशीर्वाद दिया और कहा, "जाओ, मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है तुम्हें कुछ नहीं होगा।" कठिन सर्जरी होने के बाद भी मैंने स्वास्थ्य लाभ जल्दी किया जो रेडिएशन दो महीने बाद होने वाली थी, तीन हफ्तों में शुरु हो गई। कोई विश्वास नहीं कर पा रहा था।

अस्पताल से लौटते ही मैं गुरुजी का धन्यवाद करने गई तो वे बोले "नये जीवन पर बधाई" मुझे पता था कि मुझे नया जीवनदान मिला है। रेडिएशन के दौरान भी मुझे कुछ नहीं हुआ। मैं लोगों को व्हील चेयर पर आते देखती थी लेकिन मैं दोपहर तक काम करके रेडिएशन के लिए जाती थी और देर शाम तक शैक्षिक, कर्म करती थी यह गुरुजी की कृपा से ही संभव था। जब मैं रेडिएशन के लिए अपोलो अस्ताल जाती थी तो मेरे संसर्ग में आने वाले लोगों की भी गुरुजी ने सहायता की। एक नौ साल के बच्चे का विषैला ट्यूमर कीमोकेरेपी से भी ठीक नहीं हो रहा था और दवाइयाँ उल्टा प्रभाव डाल रही थी। उसकी गरीबी के कारण उसका इलाज लगातार नहीं हो रहा था। उसके पिता, जिन्होंने नौकरी से छुट्टी ली थी। काफी चिन्तित थे। जितना लम्बा इलाज, उतनी ही छुट्टी और उतने ही कम पैसों से उन्हें बच्चे का इलाज करवाना था।

मैं हमेशा अपने साथ गुरुजी की तस्वीर या लॉकेट रखती थी। मैंने उसकी माँ से कहा कि लॉकेट को रोज लड़के आँखों से स्पर्श कराया जाए। मुझे पता था कि गुरुजी जरूर मदद करेंगे। एक सप्ताह के बाद उनसे मिलने पर मैंने देखा कि लड़के के स्वास्थ्य में सुधार हुआ है। उसकी माँ ने मेरी बात मानकर वैसा ही किया था। डॉक्टर भी ये परिवर्तन देखकर चकित थे।

जब मेरा बेटा ढ़ाई साल का था तो हमने उसके मल के खून देखा। उसकी 'कोलोनोग्राफी' कराई गई जिसमें 45 मिनट से एक घंटा लगता है। जब हम बाहर इंतजार कर रहे थे तो मैं लगातार गुरुजी से प्रार्थना कर रही थी ''गुरुजी, मेरे बेटे (जय) के साथ रहिए।'' कोलोनोग्राफी में तीन घंटे लग गए। डॉक्टर ने हमें बुलाकार कहा कि नमूने में रैश पाए जाने के कारण उसे बायोप्सी के लिए भेजा जाएगा।

मैं उन चार दिनों में गुरुजी के दर्शन को जाकर जय को आशीर्वाद देने के लिए प्रार्थना करती रहती थी। गुरुजी ने उसे आशीर्वाद दिया। जाँच सिर्फ संक्रमण था जिसका इलाज एक हफ्ते की दवाई से ही हो गया।

गुरुजी हमेशा मेरे लिए मेरी हर इच्छापूर्ति चाहे वह स्वास्थ्य से संबंधित हो या भौतिक वस्तुएँ, उपस्थित रहे हैं। जब आप गुरुजी के पास जाते हैं तो वो जानते हैं कि हमें क्या चाहिए। आपको कहने की जरूरत नहीं होती।

मैं उनके मेरे लिए किए चमत्कार का वर्णन लगातार करती सकती हूँ लेकिन जैसा वो कहते हैं ''शॉर्ट में सुनायें।'' गुरुजी हमारे लिए हमेशा उपस्थित रहने के लिए धन्यवाद।

— सत्संग : नंदिता चंदेर : एक भक्त

गुरुजी ने तीन यमदूतों से बचाया

नरेश खंडेलवाल की पत्नी बहुत बुरी तरह बीमार पड़ गईं थी। उन्हें डेंगु बुखार था और उनकी किडनियाँ संक्रमित हो गईं थीं। गुड़गाँव के डॉक्टर ने उसका इलाज करने से मना कर दिया क्योंकि 'प्लेटलेट' की संख्या नौ हजार से भी कम हो गई थी। मंगलवार के दिन नस कट जाने से खून का बहाव बंद नहीं हो रहा था, उसे नोएडा के मैक्स अस्पताल ले जाया गया।

भाई गुरुजी का भक्त था। उसने एक और भक्त को फोन कर पता किया कि वे गुरुजी के पास मंगलवार के दिन आपनी समस्या लेकर आ सकते हैं ? उस भक्त ने कहा कि चिन्ता करने की जरूरत नहीं है, गुरुजी भगवान हैं और वो अपने शरण में आने को वाले तकलीफ में नही आने देंगे।

इस बीच मैंक्स अस्पताल के डॉक्टरों ने भी उम्मीद छोड़ दी। गुरुवार के दिन नरेश गुरुजी के दर्शन को गया। गुरुजी के चरण स्पर्श करते ही उसने बताया

कि उसकी पत्नी को डेंगू है। गुरुजी ने उत्तर दिया "डेंगू... डेंगे क्या होता है ? जाओ, उसे कुछ नहीं होगा।"

नरेश के अस्पताल जाते ही उसकी पत्नी की प्लेट्लेट्स की संख्या हर जाँच के साथ बढ़ने लगी : बारह हजार से तीस हजार, पचास हजार, एक लाख, डेढ़ लाख। गुरुजी के आशीर्वाद से उसकी पत्नी पर इलाज का प्रभाव हो रहा था।

अस्पताल में एक रात सोते हुए वो अचानक चीखती है। सबसे उससे पूछा कि क्या बात है। उसने बताया कि उसने एक बुरा सपना देखा। उसने देखा कि तीन छोटे, काले आदमी उसे खींच कर ले जा रहे थे। उसके आस–पास के लोग उसकी बचाने की प्रार्थना के बावजूद भी बचा नहीं पा रहे थे। तब उसने गुरुजी का ध्यान कर मदद करने की प्रार्थना की। गुरुजी के आते ही यमदूत चले गए और वह बच गई। उसने यह सपना दो बार देखा और उसे महसूस हो गया कि गुरुजी ने ही उसे नया जीवन, दिया है। एक सप्ताह के अंदर ही उसे अस्पताल से छुट्टी मिल गई। आज वह एक माँ, पत्नी, बेटी की जिम्मेदारियों को भली–भांति निभा रही है। गुरुजी ने यमदूतों को उससे दूर भगा दिया। भगवान के अतिरिक्त यह और कौन कर सकता है ?

– सत्संग : नरेश खंडेलवाल

जन्म–मरण के नियंता

गुरुजी द्वारा भक्त के व्यक्तिगत भाग्य में हस्तक्षेप, जब वे अनदेखे जोखिमों से भक्त की रक्षा करते हैं – को समझना बहुत ही मुश्किल है। उनकी दैवीय शक्ति, जिससे वे भक्तों के बुरे कर्म का नाश करते हैं, उनकी सर्वशक्तिमत्ता का मान कराती है और सद्‌गुरू की जन्म–मृत्यु पर अधिकार का बोध कराती है।

गुरुजी की शक्ति ने बुरी आत्मा को भगा दिया

अहमदाबाद के जनरल इलेक्ट्रिक अधिकारी नरेन्द्र को एक समस्या परेशान कर रही थी। उसकी पत्नी पर शक्तिशाली स्त्री प्रेतात्मा का साया था। नरेन्द्र की माँ नये साल के समारोह में गुरुजी से मिलीं और उनकी तस्वीर को घर ले आयीं थीं।

नरेन्द्र के परिवार ने पंचकुला में गुरुजी से मिलने की असफल कोशिश की। उन्हें गुरुजी से मिलने का मौका चंडीगढ़ में शिवरात्रि के अवसर पर मिला। नरेन्द्र ने बहुत सत्संग सुने थे और उसने गुरुजी को ये कहते सुना था कि जो भी श्रद्धा

के साथ उनके पास आता है वे उनके घर अवश्य जाते हैं। अगली सुबह साढ़े चार बजे, नरेन्द्र ने कमरे का दरवाजा खुला देखा और गुरुजी की परछाई अंदर आ रही थी।

गुरुजी ने अपने आगमन की निशानी भी छोड़ी थी। घर की सफाई के वक्त दंपत्ति ने सोने–जैसे तार धूप में चपकते दिखे। ये तार बीस दिनों तक घर में मिलते रहे। ये तार गुरुजी के वस्त्र में प्रयोग किए जाते थे।

नरेन्द्र ने चंडीगढ़ जाकर गुरुजी से मिलने का निर्णय लिया। उसने गुरुजी से अपनी पत्नी की समस्या बताई लेकिन गुरुजी ने इतना ही कहा, "तुम्हें आशीर्वाद मिल गया है।" नरेन्द्र निराश हो गया था कि गुरुजी ने उससे और कुछ क्यों नहीं कहा। उसे तब तक गुरुजी के शब्दों के चमत्कार पता नहीं नहीं चले थे, वे जो भी कहते थे वो सत्य होता था, उनके सामान्य कथन भी व्यक्ति को समस्या से मुक्त करवा देता है।

GURUJI KA ASHRAM

नरेन्द्र गुरुजी के जन्मस्थान डुगरी गए। निशानी के तौर पर वो गुरुजी के घर, जहाँ उन्होंने अवतार लिया था, की ईट ले आया। ईट को साफ करने के बाद, उसने ईट अपने घर पूजा घर में रख लिया। रात को नरेन्द्र ने अजीब सपना देखा। उसने देखा कि वो स्त्री प्रेतात्मा, जिसने उसकी पत्नी के शरीर पर अधिकार कर लिया था, नरेन्द्र के मुँह से कह रही थी कि उसे कभी भी वश में नहीं किया सकता था, लेकिन नरेन्द्र के घर में रखी उस पवित्र ईट के कारण नरेन्द्र के परिवार को इस समस्या से मुक्ति मिल जाती है।

अगले दिन नरेन्द्र को सपने की पूरी बात अच्छी तरह याद नहीं रह पाई थी। लेकिन गुरुजी ने उसकी शंका का समाधान कर दिया। दो–तीन दिनों बाद नरेन्द्र गुरुजी के दर्शन को गया तो उन्होंने कहा, "तुम्हें ईट के द्वारा कैसे आशीर्वाद मिला ?" गुरुजी ने अपने अगले कथनों में सच्चे गुरु की पहचान

बताई, "आपको गुरुजी को सब कुछ बताने की जरूरत नहीं होती।" उन्होंने कहा "गुरु को कभी भी उस स्तर पर नहीं लाना चाहिए। गुरु स्वयं ही आपकी समस्याओं को जानकर उनका समाधान करेंगे।" हर बार गुरुजी की ये बातें सच साबित हुई हैं।

गुरुजी ने नरेन्द्र की बेटी को मोक्ष प्रदान किया

जनवरी 1998 में नरेन्द्र अपने भतीजे की पहली लोहड़ी के समारोह के लिए कुछ उपले लेने डुगरी गया। वहाँ नरेन्द्र ने 'माता जी,' गुरुजी की माँ से सिर्फ पाँच उपले अपनी गाड़ी में लिए।

तीन दिन बाद, माताजी दिल्ली आई तो गुरुजी ने पूछा कि क्या डुगरी में उनसे कोई मिलने आया था। माताजी को नरेन्द्र का नाम पता नहीं था इसलिए उन्होंने कहा कि चश्मा पहने एक व्यक्ति कार में आकर कुछ उपले ले गया। गुरुजी ने पूछा कि क्या वो भट्टे के उपले ले गया तो माताजी ने ना में उत्तर दिया। गुरुजी ने दो बार कहा, "क्या ऐसा होगा या नहीं होगा ? जब एंसा होगा मुझे कुछ करना पड़ेगा।"

जल्दी ही, नरेन्द्र की पत्नी ने गर्भधारण किया। जब उसका गर्भ आठ महीने का हुआ तो नरेन्द्र ने गुरुजी से उनका वस्त्र बच्चे को लपेटने के लिए माँगा। लेकिन गुरुजी ने अस्वीकार कर दिया। बच्चो का जन्म सिजेरियन द्वारा हुआ। उसे पहले ही दिन फेफड़े में संक्रमण हो गया। नरेन्द्र ने गुरुजी को समस्या बताई तो उन्होंने कहा कि सब ठीक हो जाएगा। लेकिन तीन दिन बाद बच्ची की मृत्यु हो गई।

नरेन्द्र की पत्नी के स्टिच में पस भर गया था जिससे पेट में सैक बन गया था। वो बहुत दुःखी थी। उसने गुरुजी की तस्वीर के सामने अपनी शिकायत दर्ज की। एक तो उसने अपनी बच्ची को खो दिया था, दूसरी उसकी अपनी हालत खराब थी वो रोते–रोते विक्षिप्त सी हो रही थी। देर रात गुरुजी ने उसे सपने में दर्शन दिए। उन्होंने उसे इक्कीस दिनों के बाद आरती करने को कहा। उन्होंने उपचार भी बताया कि यह कष्ट उसके शरीर में प्रसव के बयालीस दिन तक रहने के बाद जाएगा। दुःखी माँ ने ऐसा ही किया। उसने आरती की। जल्द ही उसके स्टिच के पास छेद हुआ जिससे पस निकल गया। लेकिन नरेन्द्र के दुःख का अभी भी शमन नहीं हुआ था। पूजा के कमरे में दीया जलते हुए वो रोने लगा।

उस रात गुरुजी उस व्यक्ति के पिता के सपने में आए। वे नरेन्द्र को उस मैदान में ले गए जहाँ उसने अपनी बेटी को दफनाया था और उसे उस जगह को खोदने को कहा। फिर उसने नरेन्द्र को नवजात को जो अचानक बड़ी हो गई थी, उनके हाथ में रखने को कहा और अपने दूसरे हाथ से उस पर पानी के छींटे मारे। तुरन्त ही वो रोने लगी।

फिर उन्होंने नरेन्द्र से दो बार पूछा, "क्या तुम्हें यह बेटी चाहिए ?" चकित नरेन्द्र कोई जवाब नहीं दे पाया। गुरुजी ने बताया कि अगर नरेन्द्र ने माताजी के कहने

पर बोरा भर के उपले लिए होते, तो ये घटनाएँ उसके साथ नहीं होती। तब इस बच्ची ने जन्म नहीं लिया होता। गुरुजी ने बताया कि बेटी का जीवन माता–पिता में से एक की निश्चित मृत्यु का कारण बनता।

उस सत्य जैसे स्वप्न ने नरेन्द्र ने अपनी बेटी को लेने से मना कर दिया। गुरुजी ने उसकी बेटी को मोक्ष प्रदान कर दिया। नरेन्द्र ने अपनी बेटी से किरण निकलते देखा जो गुरुजी के चरण कमलों में समाहित हो गई। गुरुजी ने कहा कि उसे मोक्ष का ऐसा रूप प्राप्त हुआ है जो हजारों सालों की तपस्या के बाद भी मिलना मुश्किल है। गुरुजी की कृपा से एक मानव–आत्मा को पवित्र मोक्ष की प्राप्ति हो गई।

और उसके पुत्र को जीवन दान दिया

अक्षय एक असाधारण बच्चा था। उसके तीन वर्ष की उम्र तक उसके शरीर और यहाँ तक कि मूत्र से भी गुरुजी के शरीर की खुशबू आती थी। एक दिन नरेन्द्र ने उसकी जन्म कुंडली एक ज्योतिषी को दिखाई। उस ज्योतिषी ने भविष्यवाणी की कि नरेन्द्र के बेटे की उम्र सिर्फ आठ साल की है। दिसंबर, 2001 में गुरुजी जालंधर में थे। नरेन्द्र ने गुरुजी को समस्या से अवगत कराया। गुरुजी ने सिर्फ इतना कहा कि ज्योतिषी लोगों को गलत राह पर ले जाते हैं।

कुछ दिनों बाद एक भक्त ने जालंधर में एक कार्यक्रम आयोजित किया था। गुरुजी ने नरेन्द्र को उसमें शामिल होने को कहा लेकिन नरेन्द्र ने कहा कि चंडीगढ़ में मीटिंग के कारण ऐसा करना मुश्किल होगा। गुरुजी के बार–बार कहने पर उसने कहा कि वो मीटिंग के बाद दस बजे तक पहुँचेगा।

वहाँ पहुँचने पर गुरुजी उस समय प्रसाद बाँट रहे थे। उन्होंने नरेन्द्र को भी प्रसाद दिया। नरेन्द्र लंगर लेने के बाद गुरुजी ने उसे दुबारा प्रसाद देते हुए

कहा कि उन्होंने उसके बेटे को जीवनदान दे दिया है। गुरुजी ने उससे कहा, "केवल भगवान ही ऐसा कर सकते हैं और भगवान तुम्हारे सामने है।"

जब अक्षय के स्कूल जाने का समय आया तो माता–पिता ने तीन स्कूलों में आवेदन किया। उनमें से दो स्कूलों ने भारी चंदे की माँग की, इसलिए उन स्कूलों को छोड़ दिया गया। गुरुजी ने अक्षय को स्वप्न में निर्देश देकर कहा कि वो अपनी ड्रेस में उनकी तस्वीर को ले जाए तो उसे दाखिला मिल जाएगा। तीसरे स्कूल में साक्षात्कार के दिन, अक्षय अपने साथ गुरुजी की तस्वीर को ले गया। उसके माता–पिता इसके लिए तैयार नहीं थे। पाँच हजार आवेदकों में केवल ढ़ाई सौ चयन होना था। लेकिन अक्षय की आस्था ने उसे दाखिले की सूची में पाँचवा स्थान दिलाया और दाखिले के लिए कोई अतिरिक्त पैसे भी नहीं लगे।

नरेन्द्र को मृत्यु से बचाया

जनवरी 1998 से तीन साधु नरेन्द्र के घर आए। उनमें से एक साधु ने नरेन्द्र की माँ से कहा कि उनका सबसे बड़े बच्चे की मौत हो जाएगी। इस पर माँ ने नरेन्द्र की पत्नी को बाहर बुलाया। इस साधु ने उससे कहा कि उनकी किसी

महापुरुष पर भक्ति और उनकी कृपा से ही उसके उसके पति जाना बची हुई है।

उस घुमक्कड़ ज्योतिषी ने यह भविष्यवाणी की कि नरेन्द्र की मौत 30 जनवरी तक हो जाएगी। उसने यह कहा कि अगर परिवार उन्हें कुछ नए कपड़े देंगे तो यह आपदा रुक सकती है। नरेन्द्र की पत्नी ने चिंतित होकर नरेन्द्र को गुरुजी के दिव्य संरक्षण में दिल्ली भेज दिया क्योंकि तीस तारीख नजदीक थी। नरेन्द्र 30 जनवरी को गुरुजी के साथ था।

उसी रात नरेन्द्र की पत्नी ने एक स्वप्न देखा। जिसमें गुरुजी और माँ काली एक साथ थे। और गुरुजी देवी से दंपत्ति को आशीर्वाद देने कह रहे थे। देवी माँ के हाथ में चाँदी की छड़ी थी। देवी ने दोनों को हाथ बढ़ाने को कहा। नरेन्द्र के ऐसा करने पर उन्होंने उसके हाथ पर छड़ी से मारा लेकिन नरेन्द्र की पत्नी ने डर कर ऐसा करने से मना कर दिया। गुरुजी ने कहा कि छड़ी की मार से नरेन्द्र के बुरे कर्म कट रहे हैं।

उन्होंने नरेन्द्र की पत्नी से कहा कि वो सपना नहीं सच्चाई की गवाह है। इसी क्षण उसकी पत्नी जाग जाती है। उसने देखा कि पूजा घर में रखी तस्वीर का रंग बदल गया था। जहाँ गुरुजी के वस्त्रों का रंग तस्वीर का रंग बदल गया था। जहाँ गुरुजी के वस्त्रों का रंग तस्वीर में लाल था, वो अब काला देवी काली का रंग हो चुका था। पाँच मिनट में रंग वापस वैसे ही हो गए।

मृत्यु के चिन्हों को मिटा दिया

नरेन्द्र के घर के प्रवेश द्वार पर दो हाथों के निशान हो गए थे। नरेन्द्र की पत्नी को कुछ संदेह हुआ और उसने अपनी सास को नैना देवी मंदिर भेज दिया।

उनके जाने के बाद उसने सीमेंट की दीवार से उन निशानों को हटाने का प्रयास किया। उसने अपने हाथों से निशान को रगड़कर हटाने का प्रयत्न किया।

रात तक उसके हाथ सूज गए और उनमें तेज दर्द हो गया। अगले चार दिनों में बायें अंग में लकवा मार गया। डॉक्टरों ने इलाज शुरु किया नरेन्द्र जालंधर में था। पता चलने पर वह घर जाने के लिए बेचैन था।

लेकिन उसकी पत्नी ने उसे फोन कर कहा कि चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है। हमेशा की तरह गुरुजी ने हर चीज का ध्यान रखा है। उसने गुरुजी की तस्वीर के सामने अपनी शिकायत रखी। उसने कहा कि जो उनके भक्त हैं उन्हें तकलीफ परेशान नहीं करती फिर उसे इतनी तकलीफ क्यों हो रही है ? उसके इतना कहते ही सर्वज्ञ गुरुजी उसके सामने प्रकट हो गए और उसके बिछावन पर बैठ गए। उन्होंने उसे बताया कि वे निशान उसकी सास की मृत्यु के प्रतीक थे और उन्होंने उसे हाथ के लकवे में परिवर्तित कर दिया।

गुरुजी ने अपने भक्त के हाथ को रगड़ते हुए उसे चलाने को कहा। जब उससे नहीं हुआ तो उन्होंने फिर से हाथ को रगड़ा और दुबारा से हाथ चलाने को कहा। तुरन्त ही वे अपने हाथों को घुमा पा रही थी। लकवा गायब हो चुका था। गुरुजी ने उसे सुझाव दिया कि वो उनकी तस्वीर पर पानी डालकर उस पवित्र पानी को दीवार के उन निशानों पर डाल दे। जैसे ही शुद्ध जल की बूँदें जैसे ही निशानों पर पड़ी, उनका रंग भूरे से लाल हो गया था। गुरुजी ने कहा, "तुम्हें आशीर्वाद मिल गया।"

नैनीताल बुलाकर पढ़ाई के लिए प्रेरित किया

जून, 2002 में गुरुजी और संगत नैनीताल जाने की योजना बना रहे थे। नरेन्द्र की पत्नी सोच रही थी कि क्या गुरुजी उसके परिवार को साथ आने कहेंगे।

नरेन्द्र ने अपनी पत्नी से कहा कि न तो वह संगत का पुराना सदस्य है और न अमीर है इसलिए हो सकता है कि उन्हें न बुलाया जाए।

उसे जल्द ही पता चला गया कि उसका ऐसा सोचना कितना गलत था। गुरुजी की संगत में सभी समान हैं। वे ही एक दाता है, उनके सामने सभी भिखारी हैं।

दो–तीन दिनों के अंदर गुरुजी ने नरेन्द्र को किसी जरूरी काम से दिल्ली बुलाया। दिल्ली पहुँचकर लंगर के बाद गुरुजी ने उसे नैनीताल आने को कहा। नरेन्द्र ने वापस लौटकर अपनी पत्नी से कहा कि गुरुजी ने बस औपचारिकतावश उन्हें न्योता दिया है, उन्हें उनके नाम याद नहीं रहेगे। लेकिन जाने के तीन दिन पहले गुरुजी ने उन्हें फोन कर फिर बुलाया और साथ में गर्म कपड़े भी लाने को कहा। गुरुजी ने नरेन्द्र की शंकाओं का जवाब दे दिया था। नरेन्द्र कहते हैं कि गुरुजी हमारे जीवन के बारे में सब कुछ जानते हैं हमारे कर्म और हमारी सोच कुछ भी उनसे छिपा नहीं है।

नैनीताल में, गुरुजी ने नरेन्द्र को पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा लेने को कहा। नरेन्द्र ने कहा कि एक दशक के अंतराल के बाद पुनः पढ़ाई शुरु करना काफी मुश्किल

है। लेकिन गुरुजी के कहने पर उसने डिप्लोमा में दाखिला ले लिया लेकिन वह उत्तीर्ण होने को लेकर सशंकित था। परीक्षा के दौरान उसने गुरुजी से ही परीक्षा देने की प्रार्थना की। उसने गुरुजी की कृपा से दो साल में डिप्लोमा की परीक्षा उत्तीर्ण की। वो जल्दी से यह समाचार गुरुजी को देना चाहता था लेकिन गुरुजी कहते हैं कि वो उन्हें यह समाचार क्यों बताना चाहता है क्योंकि वे ही परीक्षा देकर उत्तीण हुए हैं। गुरुजी के आशीर्वाद सक नरेन्द्र ने एम.बी.ए. की पढ़ाई शुरु कर दी थी।

गुरुजी ने सबको आशीर्वाद दिया

गुरुजी आपको अपनी अपनी शरण में आपके वास्तविक रूप में लेते हैं आपके पूर्व कर्म सद्गुरु के लिए महत्व नहीं रखते हैं। उनमें आस्था के लिए किसी धार्मिक उदगार की आवश्यकता नहीं होती बल्कि आत्म–परीक्षा अधिक उपयुक्त है। सद्गुरू सच्चरित्र पापी, अच्छा–बुरा, अमीर–गरीब में कोई फर्क नहीं करते। उनका संरक्षण आपको, आपके परिवार, मित्रों और रिश्तेदारों को भी मिलता है। लेकिन सदगुरु के सच्चे भक्त बनने के लिए आपको अपने अहंकार का त्याग कर आत्मसमर्पण करना होगा। तभी गुरुजी भक्त के जीवन में आए तूफानों से उसकी रक्षा कर पायेंगे।

नरेन्द्र का भाई भी भगवान शिव का परम भक्त था और नरेन्द्र के साथ पहले भी अमरनाथ गुफा की तीर्थयात्रा पर जा चुका था। जून, 2005 में वो एक बार और वहाँ गया। वहाँ भू–स्खलन के कारण उनकी बस जमीन के किरारे जहाँ गहरी खाइयां थीं, फँस गई थी। सुनील ने गुरुजी का स्मरण कर उनकी तस्वीर पर जल चढ़ाया तो वह पवित्र जल भू–स्खलन की दिशा की ओर बिखर गया और पत्थर गिरने बंद हो गए। इस प्रकार सभी को जीवनदान मिला।

बाद में जब सुनील गुरुजी के दर्शन को नई दिल्ली आया तो गुरुजी ने कहा, "अपना नया अनुभव बताओ संगत को ? क्या मुझे तुम्हारी जान बचाने के लिए सबकी जान नहीं बचानी पड़ी ?"

ऐसा पहली बार नहीं हुआ था जब गुरुजी ने सुनील के भाग्य को बदल दिया था। सन् 2000 में सुनील का 'ऐपोन्डिक्स का ऑपरेशन हुआ लेकिन उसके बाद उसे पेशाब नहीं हो रहा था जो कि एक गंभीर समस्या थी। उसे पेट में बहुत तेज दर्द भी हो रहा था जो कि एक गंभीर समस्या थी। डॉक्टरों ने कहा कि तनाव के कारण ऐसा हो रहा है और उसे वेलियम की गोली दी। लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ।

जब सुनील गुरुजी के दर्शन को चंडीगढ़ गया तो उसे 17 कप चाय पीने के को कहा गया। सुनील इतना तरल पदार्थ पीने से मना कर रहा था लेकिन गुरुजी ने उसे, यह कहते हुए कि वह पीते ही ठीक हो जाएगा, अपने सामने पीने को कहा। बाहर जाते ही सुनील को पेशाब हुआ। उस दिन से उसे यह परेशानी कभी नहीं हुई। गुरुजी की अभिमंत्रित चाय ने वह कर दिखाया जो डॉक्टरों की दवाई में भी नहीं कर पाई।

सन् 1997 में एक रिश्तेदार को बेटी मधु बीमार पड़ गई। उसे स्नायु संबंधी परेशानी थी। वो गुरुजी की भक्त थी और उसने इलाज करवाने से पहले गुरुजी के दर्शन की इच्छा जाहिर की। उसे चंडीगढ़ दर्शन के लिए लाया गया और सभागार के बाहर खिड़की के पास बिठाया गया, जिससे वो दर्शन कर सके। मधु ने रोते हुए प्रसाद के लिए प्रार्थना की। उसकी आस्था की परीक्षा लेते हुए गुरुजी ने उसे अंत में प्रसाद दिया। उन्होंने उसके माता–पिता को उसे पटियाला के राजिन्दर अस्पताल में भर्ती करवाने को कहा।

दो हफ्तों में ही मधु की हालत में सुधार हुआ। अस्पताल से आते ही वो गुरुजी के दर्शन को गई। एक बोतल अभी भी उसके शरीर के साथ लगा हुआ था जिसे गुरुजी ने हटा दिया। डॉक्टर उसकी सेहत में तुरन्त आए सुधार को देखकर चकित थे। गुरुजी की दिव्य रोगहरणी शक्ति ने एक बार फिर अपना चमत्कार दिखाया था।

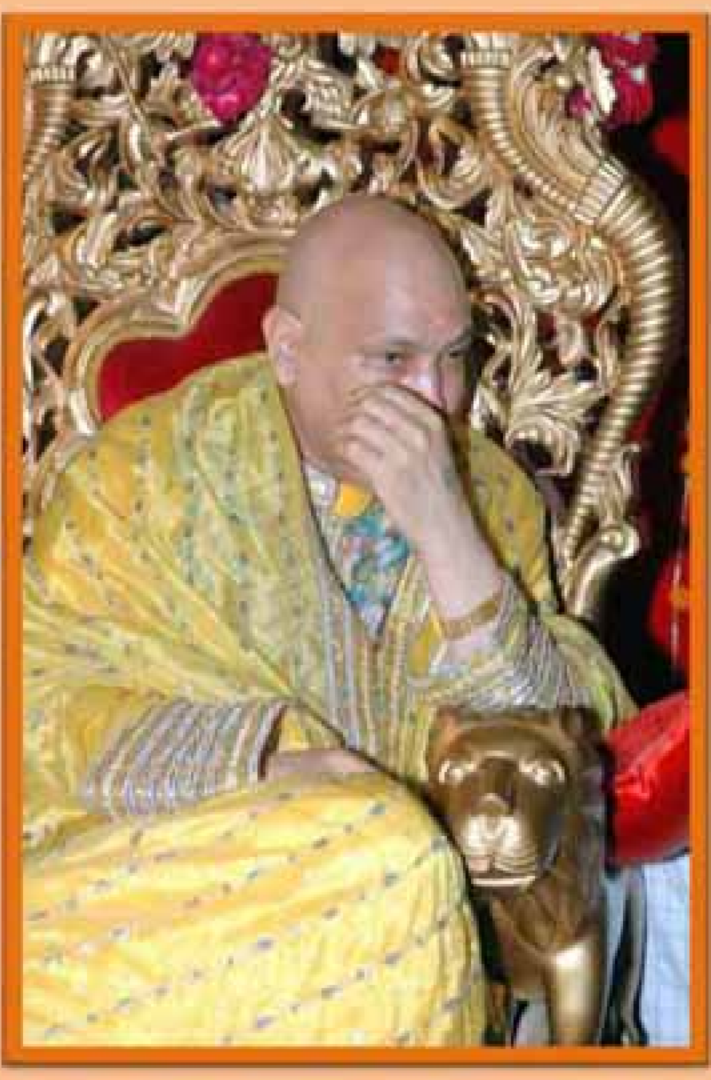

एक और बार नरेन्द्र के रिश्तेदार पर गुरुजी की कृपा दृष्टि हुई। गुरुजी का लंगर चंडीगढ़ में रहने पर वह मलेरकोटला से आता था। कुछ विश्वासी परिवारों को ये जिम्मेदारी दी गई थी। नरेन्द्र की मामी ने गुरुजी के लिए कुछ चपातियाँ भेजने की इच्छा प्रकट की।

इच्छा प्रकट करने के दूसरे ही दिन एक अपंगभिखारी उनके द्वार पर आया। उसने भोजन माँगा। लेकिन मामी ने मना कर दिया। तब भिखारी ने कहा, ''रात को तो लंगर के लिए कहकर रही थी, अभी चाय भी नहीं दे सकती हो,'' मामी ने संकेत की ओर ध्यान न देकर उस अजनबी को एक कप चाय और दो लड्डू दिया।

इस भिखारी ने उन्हें कुछ भी मांगने को कहा लेकिन मामी ने यह मना कर दिया कि गुरुजी ने उन्हें सब कुछ दिया है। भिखारी ने तुरन्त कहा, "कल्याण होगा"

मामी भिखारी को शांतिपूर्वक खाता छोड़कर भीतर चली गईं। वापस आने पर उन्होंने देखा कि भिखारी गिलास छोड़कर चला गया है। साधारणतः भिखारी घरों में लोगों की पैसे के लिए तंग करते हैं लेकिन उसका अचानक गायब होना मामी को बोध दिलाता है कि वो भिखारी और कोई नहीं गुरुजी ही थे।

नास्तिकों को भी उनका आशीर्वाद प्राप्त हुआ

जनवरी 2004 में गुरुजी के पिताजी की तबीयत खराब होने पर उन्होंने नरेन्द्र को उनकी देखभाल करने को भेजा। उन्हें मलेरकोटला के सिविल अस्पताल में दिखाया गया। उनके डॉक्टर गुरविन्दर को गुरुजी के बारे में बताया गया लेकिन उसने कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई।

गुरुजी ने नरेन्द्र को डॉक्टर के साथ एक घंटे के लिए सत्संग करने को कहा। लेकिन डॉक्टर ने मना कर दिया। तब गुरुजी ने नरेन्द्र को डॉक्टर से मिलने का समय मांगने को कहा। नरेन्द्र के साथ बातचीत में डॉक्टर गुरविन्दर ने किसी अलौकिक शक्ति को मानने से इंकार कर दिया और कहा कि सब कुछ विज्ञान के द्वारा व्याख्यायित किया जा सकता है। फिर भी गुरुजी डॉक्टर को दिल्ली बुलाना चाहते थे। उसके मना करने के बाद भी दिल्ली में होने वाली अधिकारिक मीटिंग के कारण उसे दिल्ली आना पड़ा।

डॉक्टर संगत में लगातार दो दिन आया। फिर गुरुजी ने उसे वापस यह कहकर भेज दिया कि मलेरकोटला जाने में पाँच घंटे लगेंगे। वैसे यात्रा में सात–आठ घंटे लगते थे लेकिन गुरुजी द्वारा बताए गए समय में पहुँचने पर वह आश्चर्यचकित रह गया।

दिल्ली में गुरुजी ने नरेन्द्र को फोन करने को बोला। सर्वज्ञ सद्गुरू ने उसे डॉक्टर से उसकी बेटी का हाल पूछने को कहा। जब नरेन्द्र ने इसका कारण पूछा तो गुरुजी ने बताया कि डॉक्टर की बेटी को मानसिक बीमारी है। नरेन्द्र ने ऐसा ही किया। डॉक्टर ने भी उससे यही पूछा कि वो उसकी बेटी के लिए क्यों चिंतित है ? नरेन्द्र ने उसे बताया कि गुरुजी ने उसे ऐसा करने को कहा। तब डॉक्टर ने माना कि संगत से आने के बाद उसकी बेटी की बीमारी पचासी प्रतिशत तक ठीक हो गई है। उसकी बेटी तब भी ठीक हो रही थी जबकि उसने अलौकिक शक्तियों पर विश्वास करने से इंकार कर दिया था। अगले सप्ताह, डॉक्टर गुरुजी के दर्शन को आया। जल्दी ही उसकी बेटी पूरी तरह स्वस्थ हो गई थी।

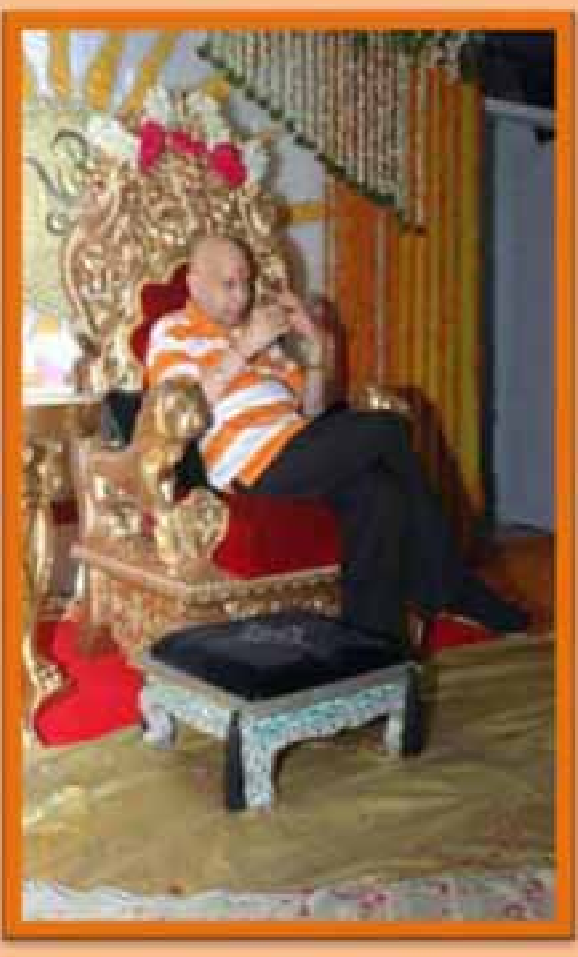

जब से नरेन्द्र गुरुजी के संपर्क में आया तो उसे इन आध्यात्मिक अनुभवों को देखने का सौभाग्य मिला। ये अनुभव उसे न केवल गुरुजी की पारलौकिक शक्तियों से परिचित करवाते हैं बल्कि उसकी भी आध्यात्मिक ज्ञान में वृद्धि कराते हैं। ये अनुभव ऐसे विलक्षण हैं कि जब कभी सद्गुरू चाहते हैं तो कई तरीकों से भक्त के लिए ऐसे ज्ञान प्रदान करते हैं।

अमरनाथ की गुफा में 'मैं शिव हूँ' की गूँज

नरेन्द्र बचपन से ही भगवान शिव का भक्त रहा है। उसे माला का जाप और अमरनाथ की यात्रा पर जाना पसंद रहा है। गुरुजी से मिलने के बाद वो अपने भाई सुनील के साथ उस पवित्र स्थान की यात्रा कर चुका है।

गुफा में प्रवेश करते समय पंक्ति में खड़ा नरेन्द्र विचारों में खो जाता है। गुरुजी के दिव्य दरबार का दृश्य उसकी आँखों के सामने से गुजरता है। आगंतुकों के लिए चाय का कप, भक्ति संगीत, लंगर और बाद में श्रद्धा और भक्ति का वर्णन सब उसे याद आ रहा था। देर शाम पुराने गाने या गज़ल या पंजाबी लोकगीत पृष्ठभूमि में बजाते हुए सद्गुरू को धन्यवाद देना गुरुजी के दरबार का पवित्र दृश्य उसे याद आ रहा था। इन दृश्यों के बारे में सोचते हुए उसने गुफा में मन ही मन पूछा, "गुरुजी आप कौन हैं ?"

उसके यह कहते ही शिवलिंग से प्रकाश की किरण निकलकर एक फीट ऊँची हो जाती हे। उसी प्रकाश में नरेन्द्र भगवान शिव के रूप को गुरुजी में परिवर्तित होते देखता हे और पुनः परिवर्तन होता है। नरेन्द्र के कानों में आवाज गूँजती है "मैं शिव हूँ मैं सर्वज्ञ हूँ" गुफा में अचानक गुरुजी के शरीर की खुशबू फैल गई। नरेन्द्र के छोटे भाई सुनील को भी खूश्बू का अहसास हुआ। उसी दिन, नरेन्द्र को लुधियाना वाले घर में उसकी पत्नी ने रात में गुरुजी का स्वप्न देखा। उसने गुरुजी को त्रिशूल हाथ में लिए नंदी बैल, भगवान शिव की सवारी, पर सवार देखा। गुरुजी के दर्शन के तीन महीने के अंदर ही उन्होंने अपने भक्त को अपना सच्चा रूप, भगवान शिव का दिखा दिया।

गुरुजी ने एक और अपना सच्चा रूप प्रकट किया था। नरेन्द्र और उसका परिवार समराला में शिवलिंग के दर्शन करने गया था। नरेन्द्र की पत्नी ने जिद की कि सोमवार के दिन दूध और अन्य चढ़ावा लेकर वो पुनः आयेंगे। नरेन्द्र

उसके लिए तैयार नहीं हुआ। उसने कहा कि गुरुजी ही उसके लिए भगवान शिव और शिवलिंग के रूप हैं।

उसी रात नरेन्द्र की पत्नी ने स्वप्न में देखा कि वो गुरुजी के सामने बैठी है। उसने एक चिठ्ठी गुरुजी को दी। वो तुरन्त अपने कमरे में गए और अपनी एक तस्वीर लेकर आए। वह एक सुन्दर तस्वीर थी लेकिन तुरन्त ही गायब हो गई। तस्वीर में ओम प्रकट हुआ और उस ओम में से शिवललिंग प्रकट हुआ। उसने गुरुजी से इस बारे में पूछा। उन्होंने उसे गुरुजी को शिवलिंग में विराजमान देखा। वो उलझन में पड़ गई। तब गुरुजी ने उससे कहा कि तुम्हें मेरे पास आने के बाद कहीं और जाने की जरूरत नहीं हैं "तुम्हें कहीं और जाने की जरूरत नहीं है क्योंकि मैं ही भगवान हूँ।"

तुम्हारी धड़कने बंद हो जायेगी

GURU KA ASHRAM

एक बार गुरुजी लेट कर पाठ कर रहे थे जबकि कुछ भक्त उनके चरण कमलों को दबा रहे थे। एक भक्त ने थक जाने पर नरेन्द्र को अपने स्थान पर बुलाया। नरेन्द्र खुशी से इसके लिए तैयार हो गया। उसके चरण छूते ही गुरुजी ने उसे अपना परिचय देने को कहा। नरेन्द्र ने अपना नाम बताया और उसे जोर से गुरुजी का पैर दबाने को कहा। कुछ समयबाद गुरुजी ने उससे पैर से की एड़ियों पर ध्यान केन्द्रित करने को कहा।

दस मिनट बाद नरेन्द्र को अपनी पूरी शक्ति उनकी एड़ियों को सहलाने और ध्यान लगाने को कहा गया। उसने ऐसा ही किया। सद्गुरु के अंगूठों से अमृत निकलना शुरू हो गया। पाँव के आसपास की जगह गीली हो गई। गुरुजी ने नरेन्द्र से कहा, "अब तुमने देखा कि गुरु कौन है ? मेरा संपूर्ण शरीर अमृत से भरा है।" इसी प्रकार जब नरेन्द्र ने गुरुजी से सद्गुरु के वास्तविक स्वभाव के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि वे चौदह हजार वाट के तार की तरह हैं और

भक्त जीरो वाट के बल्ब की तरह। "अगर तुम मेरा स्पर्श करोगे, तो तुम्हारा नाश हो जाएगा। मैं शिव हूँ, तुम्हारी हृदयगति रुक जाएगी.... समय के साथ मैं तुम्हें अपने दर्शन की शक्ति दूँगा।"

किरण–पुंज से माला टूट गई

गुरुजी व्यक्तिगत रूप से कोई धार्मिक अभ्यास करने का सुझाव कभी–कभी ही देते हैं यह गुरुजी का ही परामर्श है कि माला जपने से आध्यात्मिक व्यक्ति के अहं का नाश होता है। नरेन्द्र इस अभ्यास को बचपन से करता था।

एक सुबह वह अपने पूजा के कमरे में माला का जाप कर रहा था कि वे समाधि की स्थिति में चला गया। वो नई दिल्ली में बड़े मंदिर पहुँच गया और खुद को सभागार के अंदर कमल आसन में बैठा पाया और उसकी माला उसके सामने पड़ी हुई थी। गुरुजी अपने आसन में उसके बायें विराजमान थे। भगवान शिव की काँसे की मूर्ति ने मनुष्य रूप ले लिया था।

एक किरण पुंज शिवजी के हाथों से और दूसरे गुरुजी के हाथों से निकली और नरेन्द्र की माला पर पड़कर उसे बिखरा दिया। इसी समय नरेन्द्र की समाधि टूटती है। वह अपने लुधियाना वाले घर में ही होता है। जब वह अपनी माला उठाता है तो उसे टूटा हुआ पाता है। उस दिन से वह माला का जाप छोड़ देता है। अब वह गुरुजी के उस निर्देश पर चलता है कि पूजा–पाठ कभी–कभी किया जा सकता है। इसके लिए किसी माला की जरूरत नहीं होती और न ही ईश्वर को याद करने का कोई निश्चित समय है। उन्हें कभी भी खाते–पीते, चलते, भोजन बनाते, लेटते या ऑफिस में करते, स्मरण कर सकते हैं।

गुरुजी के अनुसार भक्त की समाधि की सच्ची परीक्षा उसकी ईश्वर के साथ अनुभवातीत पारलौकिक मिलन में है। अगर ऐसा मिलन हो जाता है तो भक्त तेज संगीत बजने के कारण हो रहे शोर के बाद भी समाधि में लीन हो जाता है।

बड़े मंदिर : जहाँ स्वयं गंगा आती हैं

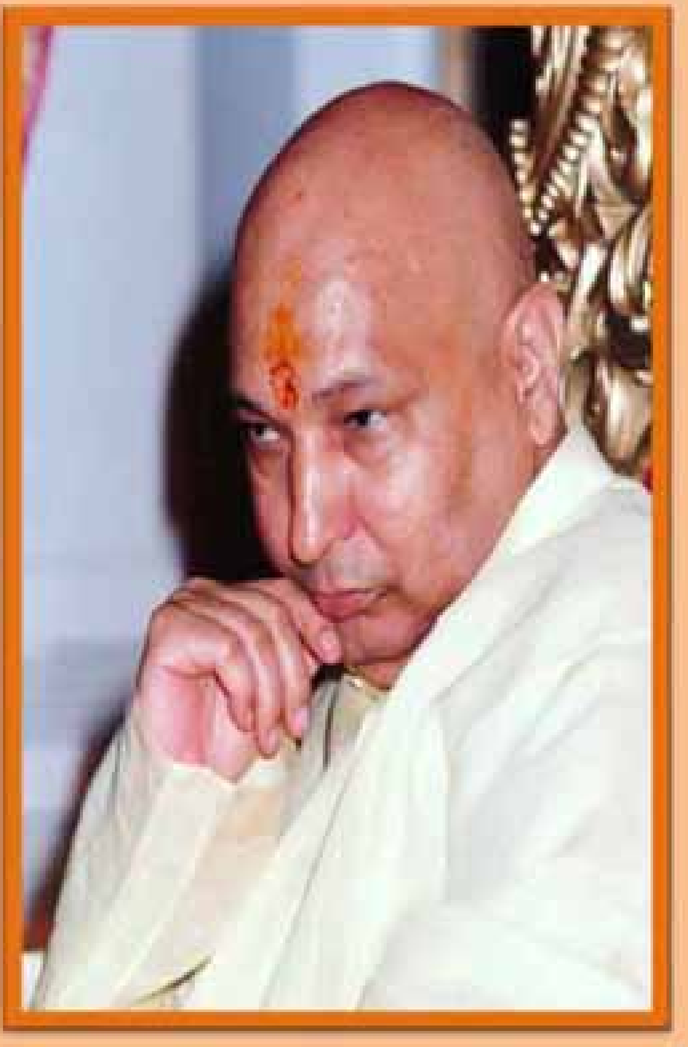

एक मौके पर गुरुजी ने नरेन्द्र और उसके परिवार को बड़े मंदिर (शिव मंदिर) में कुछ दिन रुकने को कहा। उस दौरान नरेन्द्र और एक दूसरा भक्त सभागार के अंदर रखे शिव की मूर्ति की पॉलिश कर रहे थे। नरेन्द्र ने भगवान के पैर से अमृत निकलते देखा। उसने उस भीगे स्थान को साफ कर दिया लेकिन भीगा दाग पुनः प्रकट हो गया। नरेन्द्र के साथ वाले भक्त ने कहा कि ऐसा संभव नहीं है उसने ठीक से साफ नहीं किया होगा। तभी वहाँ भी अमृत का दाग प्रकट हो जाता है।

नरेन्द्र सन् 1998 में पहली बार शिव मंदिर गया था। तब गुरुजी ने अन्य भक्तों के साथ उसे वह स्थान दिखाया था। उन लोगों ने देखा कि आधी शिवलिंग भीगा हुआ था। उन्हें लगा कि शायद बारिश की वजह से ऐसा हुआ हो गुरुजी ने कहा कि लिंग पर अमृत की वर्षा हो रही है।

उन्होंने यह भी घोषणा की कि गंगा आकर इस लिंग का स्थान दूध और जल से करेगी। यह लिंग भारत के बारह ज्योर्तिलिंगों में प्रमुख होगा और जिनकी इच्छा वहाँ पूरी नहीं होती, वह यहाँ पूरी हो जाएगी। गुरुजी के इस वक्तव्य के एक हफ्ते बाद एक भक्त, आर.पी. सिंगला को दिव्य स्वप्न के दर्शन हुए जिसमें उन्होंने गंगा को मंदिर में शिवलिंग का स्नान करते देखा।

उनमें राधा–कृष्ण की छवि भी दिखती है

नरेन्द्र का परिवार काफी समय से वृन्दावन और मथुरा की तीर्थयात्रा पर जाने की योजना बना रहा था लेकिन किसी न किसी कारणवश वो जा नहीं पा रहे थे। अप्रैल, 2006 में पूरा परिवार बैसाखी का त्योहार मनाने दिल्ली में बड़े मंदिर आया। गुरुजी ने नरेन्द्र की पत्नी को सपने में दर्शन देकर अपने चरण कमलों को दबाने को कहा।

GURUJI KA ASHRAM

जब वो ऐसा कर रही थी तो सद्गुरु के पाँव से भगवान–कृष्ण की एक मूर्ति प्रकट हुई। गुरुजी ने उसे मूर्ति को उनके पेट पर रखने को कहा और ऐसा करते ही मूर्ति अंदर समा गई।

गुरुजी तब अपने कमरे में गए और वो कमरा मंदिर में परिवर्तित हो गया। राधा–कृष्ण की एक तस्वीर कमरे के अंदर थी। वृंदावन में कृष्ण के दर्शन को इच्छुक भक्त ने गुरुजी से तस्वीर के बारे में जानना चाहा तो वे बोले, ''क्या तुमने दर्शन किया ? वृंदावन जाने की जरूरत नहीं है। यहाँ सब कुछ है।''

नरेन्द्र एक और घटना बताते हैं जहाँ गुरुजी ने अपना सच्चा परिचय दिया था। स्वप्न में गुरुजी उसे सभागार में ले जाते हैं जहाँ गुरुजी उसके कान तीन बार खींचते हैं और आँखों के भौहों के बीच अपनी अंगली से तीन बार स्पर्श करते हैं। गुरुजी कहते हैं ''कल्याण हो गया।''

कुछ दिनों बाद नरेन्द्र ने गुरुजी द्वारा दिए अपने लॉकेट में ओम और शेषनाग के चित्र प्रकट हुए देखे। ओम और शेषनाग अभी भी उसके लॉकेट पर दिखाई देते हैं। नरेन्द्र ने यह बात गुरुजी को बताई तो उन्होंने कहा, "केवल ईश्वर ही ये कर सकते हैं क्या कोई स्वयं को ईश्वर कह सकता है ? मैं भगवान हूँ।"

जो कि वो हैं उनका रूप चमत्कारिक और रहस्यात्मक है। नरेन्द्र को गुरुजी ने अपनी जूतियाँ आशीर्वाद के रूप में दी थीं। उसने देखा कि जूतियों की तीन साइज है। छः, सात और आठ और तीनों एक ही व्यक्ति द्वारा पहनी जाती थी। बदलते रूप के कारण वह व्यक्ति द्वारा पहनी जाती थी। बदलते रूप के कारण वह व्यक्ति हो सकता है, जिसने प्रकृति पर विजय पाई हो, जो गुरुजी के रूप में प्रकट होकर मानव–जाति को आशीर्वाद देने आया हो। वे हमेशा अपने भक्तों को स्नेह देकर उन्हें अपनी पवित्र आत्मा की खोज के लिए प्रेरित करते हैं।

GURUJI KA ASHRAM

– सत्संग : नरेन्द्र धांड : एक भक्त

गुरुजी ने जल से कैंसर की असाध्य बीमारी को ठीक कर दिया

गुरु मेरी पूजा, गुरु गोविन्द, गुरु मेरा परब्रह्म गुरु भगवंत...

फरवरी 2005 में मेरी पत्नी को गर्भाशय का कैंसर हो गया। कैंसर का आखिरी चरण था और कैंसर का फैलाव यकृत तक हो गया था। हम सारे विशेषज्ञ चिकित्सकों के पास गए। अंततः अनीता का ऑपरेशन बॉम्बे अस्पताल में किया गया। हर तीन हफ्तों के बाद उसे छः कीमोथेरेपी करवानी थी।

दैवीय कृपा से मेरे बहन और बहनोई जो गुरुजी के भक्त थे, हमसे मिलने आए। उन्होंने गुरुवार के दिन हम उनके दर्शन को गए।

हमारे सभागार में प्रवेश करते ही गुरुजी ने मेरी पत्नी को सिर्फ नाम से ही नहीं उपनाम से भी पुकारा, "अनीता.... लखनऊ वाली बबली आंटी" हम चकित रह गए और अनीता में विश्वास और जोश भर गया कि गुरुजी की कृपा से उसकी सारी समस्याओं का अंत हो

जाएगा। गुरुजी ने अनीता को तांबे का गिलास लाने को कहा जिसे उन्होंने अभिमंत्रित किया। अनीता उससे रोज सुबह पानी पीती थी। कैंसर का इलाज आसान नहीं है, कीमोथेरेपी और उससे होने वाली बीमारियों, बालों का झड़ना उल्टी आना और सुस्त रहना, का सामना बहुत मुश्किल था लेकिन अनीता ने छ' कीमो थेरेपी के दौरान अपना आत्म विश्वास कभी नहीं खोया उसने कभी कोई शिकायत नहीं की जबकि उसके परिवार वाले उसकी हालत देखकर दुखी होते थे। यह सब गुरुजी के आशीर्वाद से ही संभव था। गुरुजी अनीता से बात कर उसमें विश्वास उत्पन्न करवाते थे। गुरुजी उसे एक 'पैग व्हिस्की' पीने को कहते थे कि वो अब ठीक हो गई है। इन्हीं दर्शनों के दौरान उन्होंने कहा कि हमार बेटा प्रेम विवाह करेगा। उनकी भविष्यवाणी सच साबित हुई। हमारे बेटे ने एक लड़की को पसंद किया। और हमने उसे गुरुजी का आशीर्वाद दिलाया।

अनीता को कैंसर हुए तीन साल हो चुके थे लेकिन उसमें अब रोग का कोई भी लक्षण नहीं था, वो अपने जीवन का भरपूर आनंद उठा रही है। जिसे देखकर उसका परिवार, मित्र और यहाँ तक कि डॉक्टर भी खुश थे। गुरुजी ने उसे ये नई जिन्दगी दी।

गुरुजी का आगमन हमारे जीवन में बिल्कुल सही समय पर हुआ। अनीता को कैंसर निकलने के सात महीने बाद मेरी ह्रदय की तीन धमनियाँ बंद हो गई थी। 'एंजियोग्राफी' कराने के बाद मैं गुरुजी के पास गया तो उन्होंने मुझे तुरन्त ऑपरेशन करवाने से रोक दिया। उन्होंने मुझे थैलीयम की जाँच करवाने को कहा। उस जाँच का परिणाम भी पॉजीटिव आने पर मैं निराश हो गया और गुरुजी के पास गया। अब उन्होंने मुझे ऑपरेशन करवाने को कहा। मुझे लगा कि पहले ऑपरेशन करवाना मेरे लिए हितकारी नहीं था इसलिए गुरुजी उचित समय का इंतजार कर रहे थे। चूंकि मैं मधुमेह का रोगी था ऑपरेशन करना

खतरनाक था। अनीता लगातार गुरुजी के दर्शन को जाती रही। उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया और मेरा ऑपरेशन बिना परेशानी के सम्पन्न हो गया। उन्होंने मेरे वहाँ जाने पर मुझसे कहा, "मैंने तुम दोनों को नया जीवन दिया है।" और यह सच ही था। अनीता पूरी तरह स्वस्थ है, मेरा बेटा अपनी पसंद की लड़की से शादी कर खुश है और मैं अपने सामान्य जीवन में वापस आ चुका हूँ। गुरुजी और उनकी कृपा के अतिरिक्त यह सब कौन कर सकता है ? उनके आशीर्वाद आज हम आत्म विश्वास से भरा हुआ खुशहाल जीवन व्यतीत कर रहे हैं। हमें हमेशा उनके उपस्थिति का आभास होता है। हमारे लिए वो भगवान है। जो उनके पास सच्ची श्रद्धा और भक्ति के साथ जाता है उसे उनका दिव्य आशीर्वाद प्राप्त होता है।

– सत्संग : नरेन्द्र तनेजा : एक भक्त

GURUJI KA ASHRAM

उनके जन्मदिन पर हमें तोहफा मिला

आज भी ये लिखते हुए मेरी आँखों से आँसू थम नहीं रहे हैं। मेरा बेटा जानना चाहता है कि मुझे ऑफिस का काम खत्म करने में कितना समय लगेगा। उसे यह नहीं पता कि इस काम का ऑफिस से कोई सम्बंध नहीं है। मुऐ याद आ रहा है कि जब शांतनु सिर्फ साढ़े तीन साल का था तो उसे भयंकर दौरे पड़ते थे। डॉक्टरों ने कहा कि ऐसा 'नाइट टेरर' की वजह से हो रहा है और उन्हें कुछ सूझ नहीं रहा था।

दिसंबर 2001 और जनवरी 2002 के दौरान उसे दो दौरे आए। मनोचिकित्सकों ने कई जाँच किए और निष्कर्ष निकाला कि मेरे बेटे को एक किस्म की मिर्गी है। जल्द ही उसका इलाज शुरू हो गया, दवाइयों के बाद भी शांतनु हमेशा खोया और डरा रहता था।

फिर सात जुलाई, 2001 को गुरुजी के जन्मदिन के दिन हमें उनके पहले दर्शन हुए। हमें उनकी तस्वीर मिली। जब भी हमें लगता कि दौरा को अब नहीं रोका जा सकता हम शांतनु के नजदीक तस्वीर रख देते थे। और ऐसा करते ही वह शांत हो जाता था।

तब गुरुजी पंजाब चले गए थे। हम उनकी शारीरिक उपस्थिति न पाकर असहाय हो गए थे जनवरी के मध्य में हमने जालंधर जाने का निर्णय लिया। दर्शन के बाद उन्होंने हमें गुरु भाई के यहाँ होने वाले संगत में निमंत्रित किया। मंदिर के द्वार पर मेरी पत्नी ने उन्हें शांतनु की बीमारी के बारे में बताया। उन्होंने सिर्फ कहा, क्यों ? और सब ठीक हो जाएगा। फिर उन्होंने हमें संगत में शामिल होकर समारोह में जाने की ओर इशारा किया। हमें लगा कि उन्होंने हमारी बात ठीक तरह से नहीं सुनी। बाद में समारोह के बाद हमने उनके पास दुारा जाने का निर्णय लिया। मेरे बार–बार कहने पर मेरी पत्नी गुरुजी के पास गई। उसने अभी ज्यादा कुछ कहा भी नहीं था कि गुरुजी ने उसे चेतावनी दी कि अगर हमने अपनी समस्या दुबारा बताई तो उन्हें निकाल दिया जाएगा। हम डर गए थे लेकिन संगत के जाने से पहले गुरुजी ने घोषणा की कि दिल्ली की संगत रुक सकती है और अगली शाम दुबारा मंदिर आ सकती है। हमें लगा कि उन्होंने हमें माफ कर दिया है।

दिल्ली लौटने पर मैंने अपने छोटे भाई, मनोचिकित्सक जो शांतनु का इलाज कर रहा था, की सलाह के विपरीत उसकी दवाइयाँ बंद करवा दीं। हमने सब कुछ गुरुजी की इच्छा पर छोड़ दिया।

शांतनु तब तक चार साल का हो चुका था और गुरुजी की तस्वीर वाले कैलेंडर के सामने बैठकर प्रार्थना करता था, "मुझे ठीक कर दो।" गुरुजी ने उसकी निश्छल प्रार्थना सुन उसे स्वस्थ कर दिया। उनकी कृपा से शांतनु को कभी भी मिर्गी जैसे दौरे दुबारा नहीं पड़े और आज साढ़े आठ साल के बच्चे की तरह शरारती और स्वस्थ है। मेरी आँखों से फिर आँसू बहने लगे हैं।

– सत्संग : नवीन और मीनू शर्मा : भक्त

हमारे जीवन के हर क्षण को आशीर्वाद दिया

गुरुजी भगवान की ओर मेरी यात्रा सन् 1995 में शुरू हुई जब मैं स्वीडन में तेरह साल रहने के बाद लौटी थी। तब से गुरुजी का हर दर्शन एक आशीर्वाद और स्मरणीय क्षण रहा है। जब मैंने गुरुजी के पास जाना शुरू किया तो मैं जीवन

शांति और स्थिरता की इच्छुक थी। मैंने सुना था कि गुरुजी ने लोगों को कैंसर, हृदय रोगों और अन्य असाध्य बीमारियों से स्वस्थ किया था। गुरुजी के दर्शन के लिए जाने पर एक दिन मेरे जीवन में चमत्कार हुआ।

बचपन से ही मुझे एक्जीमा ने परेशान कर रखा था। हर बार बढ़ जाने पर डॉक्टर मुझे दवाइयाँ दे देते थे। मेरे हाथ बालू की तरह रूखे और खुरदरे हो चुके थे। एक बार जब मैं संगत में बैठी हुई था तो मैंने सोचा कि अगर गुरुजी मुझे अपने चरण कमलों को दबाने को कहेंगे तो मैं क्या करूँगी क्योंकि मेरे हाथ

रूखे हैं कुछ हफ्ते बाद मैंने महसूस किया कि अचानक ही मेरे हाथ और शरीर से दाग खत्म हो रहे हैं और मैं स्वस्थ हो गई।

तब एक दिन गुरुजी ने मेरे बड़े भाई जो सेना में जम्मू कश्मीर में नियुक्त थे, को मिलने के लिए बुलाया। मेरा भाई उससे पहले गुरुजी से कभी नहीं मिला था। मेरे भाई के दिल्ली आने पर उन्होंने उसे आशीर्वाद दिया। उसी महीने वो जम्मू कश्मीर लौट गया और आतंकवादी हमले में उसे गोली लगी। गोली उसकी बाँह में लगी थी और वह बच गया। गुरुजी के आशीर्वाद ने उसे बचाया।

एक बार गुरुजी ने मुझे अपनी तस्वीर देकर अपने कमरे में रखने को कहा। बचपन से ही मेरे कमरे में सिर्फ भगवान शिव की तस्वीर रही थी। आज जब भी मुझे कोई संदेह या समस्या होती है या खुशी के पल बांटना होता है तो मैं गुरुजी को तस्वीर के साथ बात करती हूँ और गुरुजी मुझे हमेशा उत्तर दिया है। जब मैं दिल्ली से बाहर रहती हूँ तो मैंने उन्हें सपने में देखा है।

आज मुझे गुरुजी में इतनी आस्था है कि अपने चारों ओर का वातावरण मुझे उनका स्मरण दिलाता है। गुरुजी ने मुझे और मेरे परिवार को आशीर्वाद दिया है। मेरे दो बेटे, जिन्हें गुरुजी ने आशीर्वाद देकर अमेरिका पढ़ाई के लिए भेजा, उनके भक्त या फैन (जैा गुरुजी कहते) हैं। हम सब जिनकी जीवन यात्रा उन्हें गुरुजी तक ले गई, उनके आशीर्वाद से अनुगृहीत है। हमें बस संपूर्ण आस्था के साथ उन पर विश्वास करना है। और उनकी कृपा हमारे साथ हर दिन हर क्षण होगी। गुरुजी सर्वशक्तिमान प्रभु है जिन्होंने मेरी हर इच्छा को उसके योग्य न होते हुए भी पूरी की है। उनकी हर कृपा हर आशीर्वाद के लिए बार–बार धन्यवाद।

– सत्संग : नीरा ओबेरॉय : एक भक्त

सर्वशक्तिशाली : दिव्य दाता

'गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरु देवो महेश्वराय।

गुरु साक्षात् परम ब्रह्मा तस्मै श्री गुरवै नमः ।।

हम अनेदेखे, अनजाने अलौकिक शक्तियों को अपने आस्था और विश्वास के आधार पर मानते आते हैं। वह सर्वोच्च शक्ति अलग–अलग युग में अलग–अलग रूपों में अवतार लेती आई है। और इस युग में वह महान शक्ति मनुष्य रूप में हमारे आदरणीय गुरुजी के रूप में प्रकट हुई है। विश्व के हर कोने के मनुष्य उनके जाने या न जाने बिना उनकी उदार मंगलकामना का ग्रहणशील भोक्ता रहा है। ऐसी असंख्य घटनाएं होंगी जहाँ हम सबने उनसे हर क्षण आशीर्वाद प्राप्त किया होगा लेकिन हर आशीर्वाद को एक निश्चित ग्रन्थाकार रूप देना असंभव है। लेकिन उनके आशीर्वाद से मैं कुछ घटनाओं को बताना चाहूँगी।

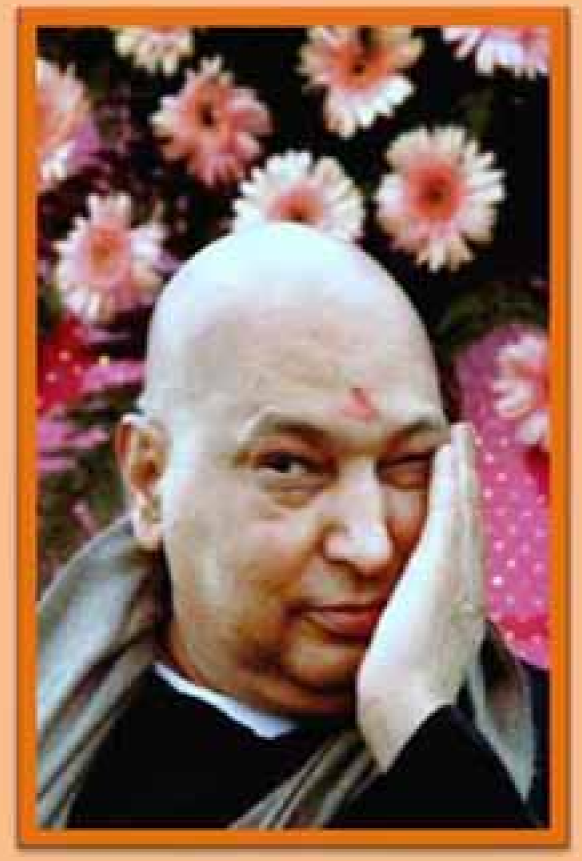

पहले हमारे मन में गुरुजी के मंदिर में जाने में संशय था क्योंकि हम संतों और जोगियों पर विश्वास नहीं करते थे।

लेकिन यह सत्य है कि आप उनकी इच्छा से ही उनकी दैवीय उपस्थिति में डूब सकते हैं। इस प्रकार हमें पहली बार गुरुजी के दर्शन को जाने का मौका नवंबर, 1995 में जालंधर में मिला। मेरे पति आठ साल से भयंकर त्वचा के रोग 'छाल रोग' से ग्रस्ति थे। हमने सभी संभव

इलाज करवा लिए थे। उनका शरीर सिर से पैर तक लाल धब्बों के साथ मोटे सफेद खुजलाहट वाले पपड़ी से भरा हुआ था। उनके सिर की खाल पत्थर की तरह कठोर हो चुकी थी। इसके अलावे। उन्हें मानसिक तनाव से भी गुजरना पड़ता था क्योंकि असल बात यह थी कि लोग उनके बगल में खड़े भी नहीं होना चाहते थे।

और कोई विकल्प न रहने के कारण न चाहते हुए भी हमें गुरुजी के पास जाना पड़ा। बाद में हमें पता चला कि हम कितने भाग्यशाली थे गुरुजी ने मेरी आँखों के सामने एक या दो बार नहीं बल्कि छः सात बार दिव्य प्रसाद जाने कहाँ से प्रकट किया। गुरुजी ने मेरे पति को एक जनवरी, 1996 को आशीर्वाद दिया उन्होंने हमें एक तांबे का गिलास लाने को कहा जिसे उन्होंने अभिमंत्रित किया। मेरे पति को रोज सुबह उससे पानी पीना था और बाकी बचे हुए से नहाना था। आश्चर्यजनक रूप से, वे कुछ ही दिनों में स्वस्थ हो गए।

GURUJI KA ASHRAM

हार्मोन समस्या से छुटकारा दिलाया

उसी समय मेरा 'हाइपोथाइराइड' का भी इजाज चल रहा था। मुझे एक दिन में 'एल्ट्रोक्सिन' को दो गोलियाँ लेनी पड़ती थीं। एक दिन मैं गुरुजी के श्री चरणों में बैठी थी कि अचानक उन्होंने कहा, "नीरू आंटी तेरा हारमोनल प्रॉब्लेम ठीक कर दिया।" मैं चकित रह गई क्योंकि मैंने कभी उनसे मेरी बीमारी के बारे में नहीं कहा था। मुझे तब पहली बार पता चला कि आपको उन्हें कुछ भी बताने की जरूरत नहीं है। वे सब जानते हैं। उसके बाद मैंने अवश्य ही दवा लेनी बंद कर दी। क्योंकि जाँच में अब कुछ नहीं आ रहा था।

जब मैं पंचकुला में थी तो मुझे 'गाइनीकोलॉजीकल' समस्या हो गई लेकिन दवाई लेने का कोई असर नहीं हो रहा था। मुझे दिनभर में दस–बारह बार जाना

पड़ता था और मैं रात को सो भी नहीं पाती थी। मेरी हालत बहुत खराब हो गई थी।

गुरुजी उस समय दिल्ली में थे। मेरे पति की दिल्ली में मीटिंग हो जाने के कारण मैंने उनके साथ जाने का निर्णय लिया जिससे शाम में गुरुजी के दर्शन हो सके। हमने अपनी बेटियां घर पर ही छोड़ दीं कि हम अगली सुबह जल्दी आ ही जायेंगे। लेकिन दर्शन के बाद गुरुजी ने हमें जाते समय चार दिन के लिए रुकने को कहा। हमने रोमांचित होकर हाँ कर दी। हमने चार दिनों में दिव्य वातावरण में चाय प्रसाद और लंगर का आनंद उठाया। चौथे दिल उन्होंने हमें जाने की आज्ञा दी।

घर पर मुझे अच्छी नींद आई। गुरुजी ने मुझे मेरी बीमारी से स्वस्थ कर दिया था। एक हफ्ते बाद हम पुनः उनके दर्शन को गए। पहली चीज उन्होंने गुझसे यह कहा, "नीरू आंटी, सू सू टीक हो गया ?" सभी हंसने लगे। जब मैंने उनके चरण छुए तो उन्होंने मुझसे कहा कि उन्होंने मेरे यूरीन ट्यूमर को ठीक कर दिया। पुनः उन्होंने बिना मेरे कुछ कहे ही मुझे स्वस्थ कर दिया।

जून में एक दिन, सिंगला अंकल ने गुरुजी की आज्ञा पर मुझे फोन किया। मुझे लगा कि शायद गुरुजी मुझसे सत्संग करवाना चाहते हैं। लेकिन उसकी जगह, गुरुजी ने मुझे एक विशेष दुकान से विशेष दवा लाने कोकहा वो हुकान आयात करती थी। गुरुजी के आशीर्वाद से हमें वो दवा बिना डॉक्टर के पुर्जे के ही मिल गई। गुरुजी ने दवा की एक गोली शाम को ली। पन्द्रह–बीस दिनों बाद उन्होंने हमें वहीं दवा वापस करने को दी कहा कि उनके लिए बहुत भारी है। हमने पूरी कोशिश की लेकिन व आयात की समस्या के कारण उसे लौटा नहीं पाए। वो दवा काफी महंगी थी और गुरुजी ने ज्यादा मात्रा में मंगाई थी।

अगस्त के अंत में, मेरी छोटी बेटी तान्या के चेहरे पर धब्बे हो गए थे। डॉक्टर ने कहा कि उसे छाल रोग हो गया है। यह सुनकर हम दुःखी हो गए और एक महीने तक यह सोचते रहे कि इस बारे में गुरुजी से बात करें या नहीं। हमने उन्हें अक्तूबर में बताया और उन्होंने हमें तांबे का गिलास लाने को कहा जिसे उन्होंने अभिमंत्रित किया। लेकिन अपेक्षा के विपरीत छाल रोग कम होने की बजाय पूरे शरीर में फैल गया। लेकिन शारीरिक, मानसिक रूप से अप्रभावित होने के बाद भी तान्या ने अपना आत्मविश्वास नहीं खोया। उसकी सोच हमेशा सकारात्मक रही। इस बीच गुरुजी कहीं गए हुए थे और उनसे संपर्क स्थापित नहीं हो पा रहा था। हमारे पड़ोसी व तान्या के स्कूल की प्रिंसिपल भी उसकी मदद को कुछ करना चाह रहे थे।

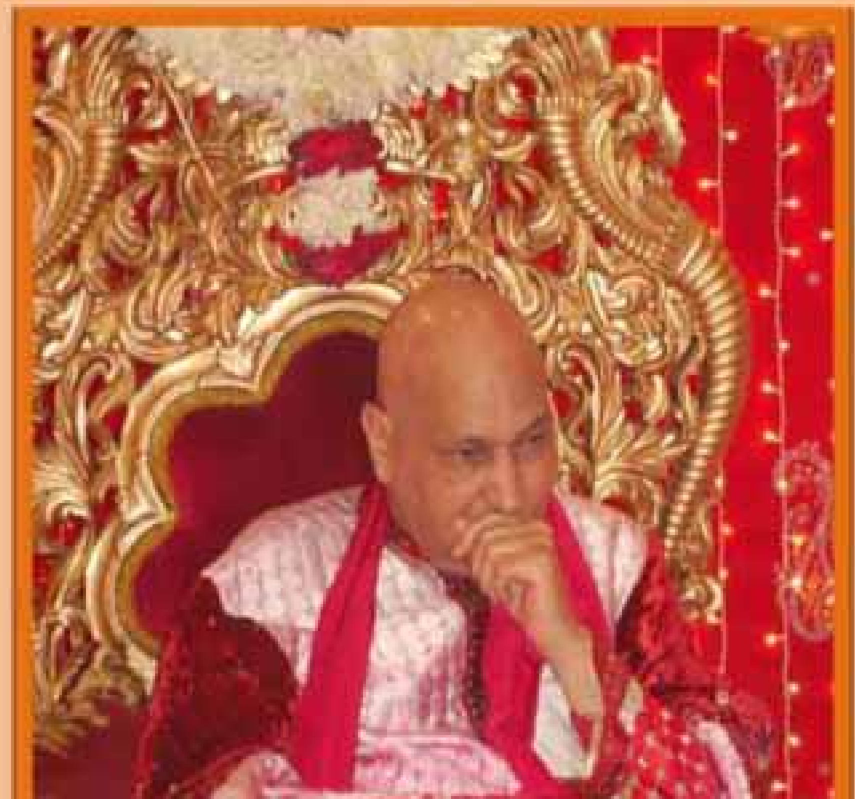

लेकिन हमारे कुछ कहने से पहले तान्या कहती, "केवल मेरे गुरुजी की उचित समय पर मुझे स्वस्थ करेंगे।" इस बीच उसकी हालत और खराब हो गई। वो अपने बालों में कंधी भी नहीं कर पाती थी। ऐसे समय में गुरुजी की कृपा और भी प्रकट हो रही थी जो तान्या जैसे बच्ची सकारात्मक सोच लिए हुए थी। गुरुजी जनवरी में वापस आए और उन्होंने सबसे पहले हमें तान्या को आयुर्वेदिक दवा देने को कहा। जिसे हम वापस नहीं

कर पाए थे। दवाई का पूरा चक्रचालीस दिन का था। तान्या के दवाई का चालीसवां दिन शिवरात्रि के दिन खत्म हो रहा था। गुरुजी ने हमें दवा देना रोकने को कहा। अगले ही दिन से तान्या की हालत सुधरने लगी और छुट्टियों पर नानी के यहाँ जाने तक वो पूरी तरह से ठीक हो चुकी थी। उसके चेहरे पर कभी–कभी छोटे दाग हो जाते हैं। जो उसके पूर्व जन्म के कर्मों के कारण है। गुरुजी ने मुझसे कहा था कि ऐसा प्रभाव मेरी बेटी पर जीवन भर रहेगा।

एक जिन्दगी बचाने के लिए नब्बे जिन्दगियाँ बचाई

सन् 2002 में मेरे पति बेलगाम में नियुक्त थे। उन्होंने मुझे शनिवार को फोन कर कहा कि वो घर आ रहे हैं। उन्होंने शनिवार को ही गोवा एक्सप्रेस ट्रेन पकड़ी जो सोमवार की सुबह यहाँ पहुँचती थी। उसी शनिवार को मैं और मेरी बेटियाँ गुरुजी के दर्शन को गए थे। उस दिन सत्संग में गुरुजी ने मुझे अपने निकट बैठाया और काफी सत्संग भी करवाया। लंगर में भी मैंने तीन गुना खाया क्योंकि उस दिन संयोगवश लाल मिर्च की चटनी (ऐसा लगता है लेकिन कुछ भी संयोगगिक या आकस्मिक नहीं होता) मुझे दाल और सब्जी की मात्रा से अधिक दी गई थी। चटनी समाप्त करने के लिए मैंने बहुत रोटियाँ और दाल खाई। जाने की आज्ञा देते समय गुरुजी ने कहा, "आंटी आज तेरा कल्याण कर दिया।" मैं प्रसन्न हो गई थी।

सुबह मेरी नींद पति के फोन आने पर खुली। उन्होंने सहसा कहा, "सब कुछ ठीक है। चिन्ता की कोई जरूरत नहीं है।" फिर उन्होंने कहा कि उनकी ट्रेन पटरी से उतर गई थी और फोन रख दिया। मैंने पिछली रात की घटनाओं और आशीर्वाद का संबंध जोड़ा जिसने हादसे को रोक दिया था। मैंने टी.वी. चलाया और खबर देखी। मैं तुरन्त बड़े मंदिर गई क्योंकि मैं बैचेन हो रही थी। सिंगला अंकल की बेटी आरती मुझे सबसे पहले किसी मेरी मानसिक स्थिति से अनजान

उसने मुझे बीती रात ज्यादा चटनी खाने पर मजाक किया। मैंने उसे ट्रेन के पटरी से उतरने की बात बताई। यह सुनकर उसने अपनी माँ को बुलाया। दोनों ने मुझे सांत्वना दी। हमारी आँखों से आँसू अनवरत् बहते जा रहे थे। हमने पूरा दिन दूसरों के साथ सत्संग करने में बिताया।

शाम को जब हम गुरुजी के पास गए, तो उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या मैं उन्हें ट्रेन की पटरी से उतरने वाली बात बताने आई हूँ। मैंने स्वीकृति में सिर हिलाया। उन्होंने कहा कि एक भक्त को बचाने के लि मैंने नब्बे लोगों को हादसे से बचा लिया। इस बात की पुष्टि जिसकी जरूरत नहीं थी, श्रीमती सबरवाल ने की जो गुरुजी के साथ शनिवार को थीं। उन्होंने बताया कि डेढ़ बजे रात में गुरुजी चुपचाप बैठे थे कि अचानक कहा कि उन्होंने नबे लोगों की जान बचाई। रात के डेढ़ बजे ही ट्रेन पटरी से उतरी थी। दिल्ली

में रहकर गुरुजी ने कई लोगों की जान पुणे में बचाई। ईश्वर के अतिरिक्त यह कौन कर सकता है ?

प्रार्थना की शक्ति

गुरुजी की प्रार्थना के लिए शब्दों की जरूरत नहीं होती। हृदय से निकली मौन प्रार्थना भी उन तक पहुँच जाती है। एक बार मैं शिव पुराण का पाठ कर रही थी जहाँ ये पंक्तियाँ आई जिसका अर्थ था कि ईश्वर आपको कभी स्पर्श नहीं करते, और अगर वो ऐसा करते हैं तो आपकी कई पीढ़ियों को आशीर्वाद मिल जाता है, मैंने सोचा कि गुरुजी हमें दूर से ही आशीर्वाद देते हैं। शाम को जब हम गुरुजी के आश्रम गए, तो गुरुजी हमें अपने कमरे में, बुला रहे थे। हम कालीन पर बैठ गए और गुरुजी ने हमसे बातचीत शुरू की। अचानक उन्होंने मुझे अपना कंधा दबाने को कहा। तब उन्होंने मेरा हाथ पकड़कर अपनी उंगलियों से मिला लीं और उन्हीं पंक्तियों को शुद्ध हिन्दी में दुहराया जिसे मैंने सुबह में पढ़ा था।

हमें अम्बाला से हरिद्वार जाना था। सुपरफास्ट ट्रेन जिसे हरिद्वार पहुँचने में दो–तीन घंटे लगते थे, अम्बाला से साढ़े दस बजे जाती थी। हमारे स्टेशन पहुँचने पर ही दस पैतीस बज चुके थे। मेरे पति बस से यात्रा करना चाहते थे। लेकिन मैंने यह कहकर विरोध किया कि यू.पी. की सड़के खराब हैं और हमें वहाँ पहुँचने में पाँ–छः घंटे लग जायेंगे। हमने दूसरे राहगीर से ट्रेन के बारे पूछा तो उसने कहा कि कभी न देरी से चलने वाली ये ट्रेन दस मिनट देरी से चल रही थी। मैंने मन ही मन गुरुजी से प्रार्थना की कि हम ट्रेन पकड़ पायें। मेरे पति ने मुझे दौड़कर पुल पार करने को कहा और वे टिकट लेने चले गए, जहाँ टिकट–खिड़की पर लम्बी कतार लगी हुई थी। मैंने दौड़कर ट्रेन के इंजन के पास पहुँच गई लेकिन कतार अभी खत्म नहीं हुई थी तभी गाड़ी चलने लगी। मूर्ख की तरह मैंने ट्रेन–चालक को बस की तरह रुकने का इशारा किया

आश्चर्यजनक रूप से ट्रेन सात से दस मिनट के लिए तब तक रुकी रही जब तक मेरे पति उसमें चढ़ नहीं गए थे।

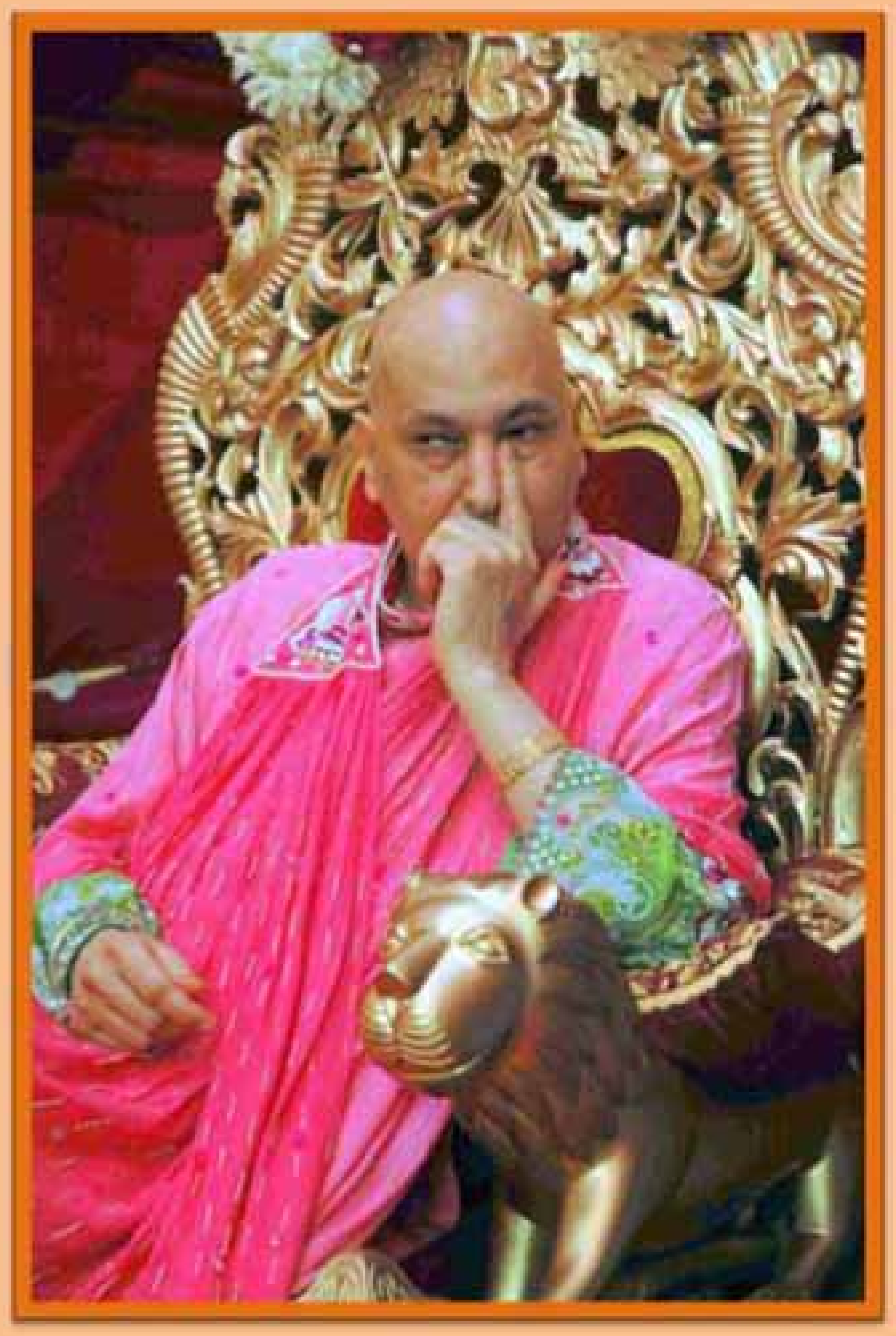

घर पर मुफ्त पिज़ा

14 अगस्त, 2005 को 'डोमिनोस' पिजा ने एक पिजा के साथ दूसरा मुफ्त के योजना की घोषणा की। मेरी छोटी बेटी यह सुनकर बहुत खुश हुई। लेकिन मैंने यह कहकर उसकी खुशी को कम कर दिया कि इस महीने काफी खर्चे हो चुके हैं इसलिए पिजा नहीं मंगाए जायेंगे। उसने हँसते हुए ही कहा, "गुरुजी यह ठीक नहीं है, आप तो जानते हैं कि मुझे पिजा कितना पसंद है।" शाम को गुरुजी के संगत के कुछ दोस्त रात्रि भोजन के लिए हमारे घर पर आए। मैंने उनके लिए भोजन पहले ही तैयार करवा लिया था। जब वे

आए तो उन्होंने बच्चों के लिए दो पिजा आर्डर किया। उन्हें मुफ्त वाली योजना का पता नही था। जब वे पिजा देने के लिए आया तो मुफ्त वाली पिजा के लिए पिजावाला वापस गया। इस बीच जब हमने पिजा को खोलकर देखा तो उसमें दोनों शाकाहारी की जगत एक मांसाहारी था। हमने कंपनी वालों को फोन किया तो उसने माफी मांगते हुए गलती सुधार लेने की बात कही। इस समय तक दूसरे मुफ्त वाले पिजा भी आए लेकिन इसमें भी वही गलती दुहराते गई। इस समय मेरे मित्र को गुस्सा आ गया और उसने मैनेजर को फोन किया। मैनेजर हमारे घर अपने सहकर्मियों के साथ माफी मांगने आया और पैसा लौटाने लगा। चूँकि हमने पैसे दे दिए थे इसलिए मुफ्त की पिजा का ऑफर हमारी इच्छा के मुताबिक था वैसे हम चार बड़े पिजा कभी भी मंगा नहीं सकते थे। पर चार पिजा हमारे घर आ गये हमने अगले कई महीनों तक मुफ्त के पिजा का मजा उठाया।

GURUJI KA ASHRAM

मेरे पति को कंपनी में नौकरी मिली

मेरे पति दवा की कंपनी में काम करते थे। उनकी हमेशा से नौकरी बिना ऑफिस बिना निश्चित समय के घूमने वाली रही है। तीन साल पहले, जब वे कर्नाटक में नियुक्त थे, हमन उनका अभाव महसूस कर रहे थे। एक बार मैं बड़े मंदिर के सभागार में बैठी आँखें बंद कर सोच रही थी कि कितना अच्छा होता कि मैं भी अपने पति के लिए नौकरी पर जाते समय लंच बनाकर देती। अचानक संगत की एक स्त्री मेरे पास आकर कहती है कि तुम्हारी इच्छा पूरी हो गई है। कुछ ही महीनों में, मेरे पति को त्यागपत्र देना पड़ा और बाद में गुरुजी कृपा से उन्हें कंपनी में नौकरी मिल गई। यह नौकरी नौ से पाँच बजे तक चलने वाली थी। मुझे उनके लिए लंच भी बनाना पड़ता था। जिसके लिए मैं कभी मना भी करती थी अब वो आराम से यात्रा करते थे। चौदह अप्रैल के दिन जब हम

गुरुजी के आश्रम में पहुँचे तो मेरे चप्पल के तल्ले अलग हो टूट गए। मैं कुछ नहीं कर सकती थी। मैंने सोचा कि लौटते समय मैं उन्हें उठाकर पाँव ही लौट जाऊँगी। जब मैं वापस आई तो मुझे अपनी टूटी चप्पलें नहीं मिली। जैसे मैं चप्पल ढूँढ़ने लगी तो उसी से मिलती–जुलती चप्पल मिली तो टूटी हुई नहीं थी। मैंने उन्हें उठाकर देखा और जाँ–पड़ताल के बाद ही मैं इस निष्कर्ष पर पहुँची कि ये चप्पल मेरी ही है। लेकिन ये बिल्कुल नई लग रही थी।

बेटी को लॉ स्कूल में दाखिला मिल गया

वैसे मेरी बड़ी मेघा बेटी ने चिकित्सा विज्ञान को अपना विषय नहीं बनाया था। गुरुजी ने उसके भविष्य के लिए उसे बारहवीं कक्षा में कला विषय को सही विषय बताया था। एक सत्संग के दौरान उन्होंने हमें उसे कानून की पढ़ाई करवाने का संकेत दिया था। उसने आवेदन पत्र– जमा किया और जब प्रवेश परीक्षा के लिए गई तो दूसरे विद्यार्थियों को विशिष्ट विधि शिक्षण संस्थानों से पढ़े हुए पाए। वो गुरुजी का नाम लेते हुए परीक्षा में बैठ गई। हजारों आवेदकों में से सिर्फ नौ सौ ही अगले चरण में जाने वाले थे जिसमें साक्षात्कार और परिचर्चा होनी थी। अंत में ढ़ाई सौ लोगों को चयन होना था जिसमें मेरी बेटी भी थी।

शाम को जब हमने गुरुजी को उसके दाखिले के बारे में बताया तो काफी प्रसन्न होते हुए उन्होंने कहा, "यह तो सिर्फ शुरुआत है, आगे देखते हुए उन्होंने कहा, "यह तो सिर्फ शुरुआत है, आगे देखते जाओ।" उनके आशीर्वाद से अवश्य ही वो बहुत अच्छा कर रही है।

गुरुजी के गुणगान करते रहनेपर भी हम उनके वास्तविक रूप को नहीं जान पाते हैं। चूंकि वे मनुष्य रूप में हैं, इसलिए हम उन्हें अलौकिक शक्तियों से लैस

किसी व्यक्ति की तरह ही मानते हैं लेकिन वो किसी अन्य की तरह नहीं है। वे भगवान शिव की तरह विलक्षण हैं। भगवान शिव गुरुजी ही हैं और गुरुजी शिवजी के रूप हैं वे आधारभूत तत्व हैं। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि यहाँ सबउ त्कृष्ट ही है। गुरुजी आपको अपने कर्मों के आधार पर जीवन के पथ पर ले जाते हैं और जब आपको लगता है कि दुनिया में कोई भी आपका नहीं है तो वो अपनी अनुपस्थिति का आभास गूढ़ तरीके से कराते हैं। इसके बाद भी अगर वो आपसे बात नहीं करते हैं फिर भी उनकी खुसबू से उनके होने का आभास होता है। मेरे अनुसार इस दुनिया में सबसे आसान तरीका है गुरुजी के समक्ष आत्मसमर्पण वैसे ऐसा करना बहुत ही मुश्किल है। बिना किसी किन्तु–परन्तु के उनके मार्गदर्शन पर चलना जीवन को सरल और सुन्दर बनाता है। हमें जीवन को आस्था और सकारात्मकता के साथ

उसी रूप में स्वीकार करना चाहिए और यही हमारे लिए सबसे बड़ा आशीर्वाद हो अंततः गुरुजी सब देखते हैं, सुनते हैं और बिना हमारी जानकारी के कार्य करते हैं क्योंकि वे सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक और सर्वज्ञ हैं। मेरी बेटी, मेघा, ने उनके व्यक्तित्व को इन शब्दों में प्रकट किया है –

क्यों हम बार–बार गिरकर उठते हैं ?
क्यों हम असहनीय पीड़ा में मुसकुराते हैं ?
क्यों हम अनवरत वर्षा में भीगना चाहते हैं ?
सबका कारण अमूल्य आशीर्वाद है,
सबका कारण गुरुजी का हमारे लिए अनुराग है
तुम हमारे जीवन की शक्ति हो
तुम मानव रूप में अलौकिक शक्ति हो,
हर शंका का तुम अंतिम समाधान हो,
तुम दयाप्रद अम्बुद की शाश्वत आह्लाद हो
हम नमन से, प्रणमन से आपका आदर करते हैं,
आप हमें आत्मसात् कर लो
और
हम आप में सदा के लिए विलीन हो जायें।

– सत्संग : श्रीमती नीरू भारद्वाज, एक भक्त

GURUJI KA ASHRAM

गुरुजी ने मेरे जीवन को पुनर्व्यवस्थि किया

मेरे जीवन में अंधरे छा गया था। सब कुछ धूमिल–सा था। जीवन में आये असंतुलन ने मुझे लाचार बना दिया था। मैं आत्मविश्वास खो चुकी थी। जीवन के लिए अभिरुचि व उत्साह, दोनों ही मेरे पास नहीं थे। मैं भूल गयी थी कि कैसे मैं अपने जीवन को पुनः उसी उमंग से शुरु कर पाऊँगी ? मेरे जीवन से मूल्यवान समय बीतता जा रहा था।

मैं एक भयानक दौर से गुज़री थी। एक भयंकर कार दुर्घटना ने मुझसे सब कुछ छीन लिया था। मैं दो महीनों तक अचेतन रही, मुझे अत्यधिक शक्तिशाली दिये जाते रहे कई तरह की दवाइयाँ, कई तरह के निरीक्षण, भयानक सुइयाँ, ग्लूकोज़–टपकन और फ़िज़ीयोथैरेपी के लम्ब–लम्बे दौर, यही मेरा जीवन रह गया था। मेरी 'कैरोटिड धमनियाँ ख़राब हो चुकी थीं, मुझमें रक्त की कमी हो गयी थी। पैरेलिसिस' का आक्रमण हो चुका था और शरीर में अतिशय कमज़ोरी भर गयी थी। चौदह साल पहले इन सबका सही–सही उपचार मिलना भी कठिन था। मैं

एक साल तक विद्यालय नहीं गयी। मेरे मित्र मेरे सामने ही रोते रहते थे। मैंने डरकर अपने–आप को दर्पण में देखना ही छोड़ दिया था।

जब मैं इन परिस्थितियों से जूझ रही थी, तभी सर्वशक्तिशाली ईश्वर का गुरुजी के रूप में मेरे जीवन में प्रवेश ने मेरे जीवन को बदल दिया। मैं फिर से आनन्द और प्रसन्नता का अनुभव कर सकती थी। मुझे स्वयं ईश्वर से प्रेम और करुणा मिली। वे मेरे सामने खड़े होकर, हाथ फैलाकर मुझे सांसारिक कष्टों से बचाकर अपनी शरण में ले लेते थे। गुरुजी ने तबसे मेरे हाथों को थामा हुआ है। मुझे उन्होंने शीघ्र ही अपने पैरों पर खड़ा कर दिया और सांसरिक दुःख–सुख के अनुभवों के योग्य बना दिया।

हमारे परिवार में मैंने और मेरी माँ ने सबसे पहले गुरुजी के दर्शन किये थे। उस एक भेंट ने हमारा जीवन बदल दिया। गुरुजी का आश्रम उन दिनों जालंधर में था। आश्रम में प्रवेश करते ही हमें लगा जैसे कि हम स्वर्ग में आ चुके हैं। गुरुजी के प्रथम दर्शनों के बाद लगा जैसे कि हम स्वयं ईश्वर से मिल चुके हैं। गुरुजी ने हमारे जीवन की सारी घटनाओं को, वर्तमान और भूत के छोटे से छोटे ब्यौरे को, हमारे सामने कह दिया। उन्होंने हमें अहसास दिलाया कि वे इस धरती पर हम सब को धन्य करने आये हैं। मैं और मेरी माँ उनके व्यक्तित्व से अचम्भित थीं।

हर दिन गुरुजी का आशीर्वाद हमें मिलता रहा। गुरुजी के निर्देशानुसार, मैंने दवाइयाँ लेना छोड़ दिया, चिकित्सकों के पास नहीं गयी और वे आपरेशन भी नही करवाये, जो मेरे लिए आवश्यक बताये गये थे। मैंने संपूर्णतः स्वयं को गुरुजी के चरणों में समर्पित कर दिया। मेरा स्वास्थ्य सामान्य हो गया, मेरी मानसिक पीड़ा समाप्त हो गयी।

चिकित्सकों के अनुसार, मुझे सामान्य होने में चार से पाँच साल लगने थे, पर पर गुरुजी के आशीर्वाद से मैं दो महीनों में ही ठीक होने लग गयी। गुरुजी के प्रथम दर्शनों के दो महीनों के बाद से मेरे सर पर बाल आने लगे, जबकि दुर्घटना के बाद मैं पूरी गंजी हो चुकी थी, मेरे शरीर से 'पैरेलिसिस' के लक्षण गायब हो गये, मेरी श्रवण शक्ति सामान्य हो गयी, मुझे हर चीज़ दो दिखायी देनी बन्द हो गयी, मेरे रक्त में होमोग्लोबिन का स्तर छः से बारह हो गया, मेरे शरीर से शक्तिहीनता समाप्त हो गयी। चिकित्सकों की सलाह को न मानते हुए मैंने खेल–कूद में हिस्सा लेना भी शुरु कर दिया। मेरी पढ़ाई–लिखाई भी सामान्य हो गयी। यह सब चमत्कार ही था, पूर्णतः दैवी चमत्कार जो गुरुजी के समक्ष आत्मसमर्पण के बाद आरम्भ हुआ।

गुरुजी ने मुझे जीवन में निश्चित राह दिखयी

मैं कष्टों के इस दौर से निकल चुकी थी। अब गुरुजी को मेरी शिक्षा और जीवन–वृत्ति की चिन्ता थी। दुर्घटना के बाद हुए शारीरिक व मानसिक कष्टों के बाद, अस्पतालों में जीवन के प्रति दृष्टिकोण बदल चुका था, मैं कुछ अपने ढंग से करना चाहती थी। मैं ऐसा पेशा चुनना चाहती था जिसके द्वारा मे लोगों के

कष्टों को कम कर सकूँ और मुझे उनसे सहानुभूति हो सके। पर, गुरुजी ने स्वयं मेरे भविष्य की योजना अब तक बना ली थी। जैसा वे सारे भक्तों के साथ करते हैं।

गुरुजी के आशीर्वाद से मुझे बंगलोर में 'फ़िज़ीयोथैरेपी कोर्स' में, बिना किसी यथोचित तैयारी के प्रवेश मिल गया। मैंने आसानी से वहाँ अपनी पढ़ाई पूरी की और मेरी 'इंटर्नशिप' के लिए दिल्ली में 'सर गंगाराम अस्पताल में नियुक्ति हो गयी। मैंने भारत के सर्वश्रेष्ठ अस्थि–विशेषज्ञ, जो एम्स के पूर्व निदेशक भी थे, के साथ काम किया।

मेरे भविष्य के लिए मार्ग–निर्धारण में गुरुजी ने सदा मेरा ध्यान रखा। इससे पहले कि मैं कुछ और करने की सोचती, गुरुजी ने मुझे 'फ़िज़ीयोथैरेपी' में 'मास्टर्स' करने की अनुमति दे दी। मैंने 'स्पोर्टस' एवं 'विकलांग–विज्ञान' में 'मास्टर्स' किया। मैंने गुरुजी के निर्देशों का पालन किया और सदा पाया कि मेरी दिशा बिल्कुल सही थी।

एक बार मेरे माता–पिता घर में नहीं थे और मैं बिल्कुल अकेली थी। मेरे नितम्ब पर एक घाव हो गया, जो इतना बढ़ गया कि मैं चलने–फिरने लायक भी नहीं रहीं। अकेली मैं दर्द सहने के अतिरिक्त कुछ नहीं कर सकती थी। मुझे बस विश्वास था कि गुरुजी मेरे साथ हैं। गुरुजी की संगत, मेरा निकटतम परिवार, मुझे मिलने नित्य आने लगी। मैंने गुरुजी का सत्संग किया और घाव ठीक होन लग गया। चिकित्सकों ने तो चीरे की सलाह दी थी, पर उन्होंने भी हैरानी थी कि घाव चमत्कारिक ढंग से ठीक हो रहा था।

गुरुजी के आशीर्वाद से मुझे जीवनसाथी मिला

यह ऐसा मुद्दा था, जिसके बारे में मैंने अभी तक सोचा नहीं था।

मुझे जीवन में बहुत कुछ करना था, यह सोचकर मेरा ध्यान ही इस तरफ़ नहीं गया। किन्तु, गुरुजी ने मेरे बारे में मुझे बिना बताये सब कुछ सोच रखा था। इसलिए, 23 साल की उम्र में उन्होंने मुझे एक महीने में ही शादी करने का निर्देश दिया। यह बहुत कम समय था क्योंकि मैंने अभी तक इस बारे में कुछ सोचा भी नहीं था और यह जीवन में एक महत्वपूर्ण निर्णय भी था।

ख़ैर आश्चर्यजनक ढंग से, गुरुजी के आशीर्वादों के कारण सब कुछ ठीक होने लगा। मेरे परिवार ने एक लड़के को पसंद किया। जिसे गुरुजी की कृपा से मैं शादी के बीस दिन पहले ही जान पायी थी। शादियों की तैयारियों में दो–तीन महीने तो लगते ही हैं, पर मेरी शादी की तैयारियाँ इन बीस दिनों मे ही आराम से पूरी कर ली गयीं। गुरुजी की कृपा से शादी बहुत शान–शौकत से सम्पन्न हुई और इसके एक–एक कार्यक्रम पर गुरुजी के आशीर्वाद की स्पष्ट छाप थी। हर कोई खान–पान, माहौल और प्रबंधन से प्रसन्न था। जैसे ही हमारी शादी हुई, गुरुजी ने एक संगत–सदस्य के द्वारा संवाद भिजवाया कि मैं और मेरे पति जीवनभर साथ रहने के लिए संसार में आये हैं। जब गुरुजी ने आशीर्वाद दे ही दिया तो किसी बात की चिन्ता मुझे नहीं थी।

दिल्ली में विवाह–स्थल की उपलब्धता एक समस्या है, कम–से–कम एक महीने पहले इसका आरक्षण कराना पड़ता है। हमारे पास तो समय कम था, पर विवाह–स्थल की दिक्कत नहीं आयी। जो विवाह–स्थान था और वह था, दिल्ली का 'अशोका होटल'।

12 वर्ष पहले यानि 11 साल की उम्र में मैंने इस बात पर ध्यान भी नहीं दिया था। पर सामान्य वार्तालाप के दौरान कही गयी इस बात गुरुजी की सर्वाता और भक्तो के भविष्य के लिए उनकी पक्की योजना का संपूर्ण परिचायक है।

बाद में भी मैंने महसूस किया कि सामान्य स्थिति में भी सरलता से कहे गये उनके शब्दों में एक भविष्यवाणी रहती है, जिसे गंभीरता से सुनना–समझाना चाहिए।

मेरा जीवन गुरुजी से शुरु होता है और गुरुजी पर ही समाप्त होता है। मैं सदा ऐसा ही परिवार चाहती थी जो मेरी इस बात में विश्वास करे, गुरुजी ने इसे भी संभव बनायां मेरी सास, मेरी ननद, मेरे पति, सभी गुरुजी में विश्वास करते हैं।

मेरा इस परिवार में विश्वास की समानता के कारण घुल–मिल जाना सरल हो गया।

गुरुजी सदा मेरे परिवार पर अपनी कृपा–दृष्टि बनाये रखते हैं। मेरे पति हो या उनका पेशा या पारिवारिक शांति, मेरी ननद का जीवन हो या मेरे ससुराल वाले, सब पर गुरुजी की दया अनवरत है। दूतावास गये बिना वीज़ा की उपलब्धता हो, या ज़मीन के ख़रीद–फरोख्त का मामला हो, या मेरे पति के पेशे में उन्नति हो, गुरुजी सदा हमारे साथ रहे हैं, और रहेंगे।

गुरुजी की मेरे परिवार पर कृपा

मेरी दुर्घटना के बाद मेरे माता–पिता मानसिक रूप से और भावनात्मक रूप से टूट–से गये थे। उनकी बेटी दर्द के भीषण सागर से गुज़री थी, उन्होंने देखा था। मेरी माँ का तो जीवन रुक–सा गया था। मैं और मेरी हालत ही उनका जीवन थे। सदा प्रसन्न रहने वाली मेरी माँ अन्दर से हार चुकी थी। मेरे गुरुजी ने मेरे माता–पिता को दुःख के इस अथाह सागर से उबारा, उनमें ऊर्जा का संचार किया और उनके जीवन में अपने आशीर्वाद से फिर से एक गति प्रदान की।

मेरी माँ के जीवन की विपरीत परिस्थितियाँ शीघ्र ही ठीक होने लग गयीं। मेरे पिता, जो सेना में एक अफसर थे, कभी पंजाब या कभी श्रीनगर में नियुक्त किये जाते थे। देश की सुरक्षा और रक्षा के लिए लड़ते समय हमेशा उनके जीवन में ख़तरा बना रहता था। मेरी माँ सदा उनके लिए परेशान रहती थी, पर गुरुजी उन्हें दिलासा देते कि सब ठीक रहेगा। चाहे दर्शन देकर या स्वप्न के द्वारा या अपनी दैविक आभा के द्वारा, वे मेरी माँ के साथ सदा रहकर उन्हें आश्वस्त करते थे और मेरे पिता के साथ उनके रक्षक के रूप में रहकर उन्हें हर ख़तरे से बचाते रहते थे।

मेरे छोटे भाई की तीव्र इच्छा थी कि वह सेना में भर्ती हो। गुरुजी ने उसकी इस इच्छा का अनुमोदन किया और उसके सपने को सच किया। शारीरिक परीक्षण के दौरान मेरे भाई को दो बार चयनित नहीं किया गया। चिकित्सकों ने उसे वर्णान्ध बताया, जो कभी ठीक नहीं हो सकता। पर गुरुजी ने हमें भरोसा दिलाया कि वह अन्ततः चुन लिया जायेगा और ऐसा ही हुआ। आख़िरी परीक्षण तक उसकी वर्णान्धता ठीक हो चुकी थी।

चमत्कार और केवल चमत्कार

हम सब गुरुजी से मिलने बीकानेर से दिल्ली आये थे। हमें नौ बजे रात की ट्रेन से वापस जाना था, जिससे हम अगले दिन सुबह आठ बजे तक बीकानेर पहुँच जाते। पर हम गुरुजी के आदेश के बिना जा नहीं सकते थे। हम उनके सामने बैठे हुए थे, हम यह समझ रहे थे कि गुरुजी को पता है कि हमें कब जाना है समय बीतता जा रहा था। गुरुजी ने अंततः हमसे ग्यारह बजे वाली ट्रेन से जाने के लिए कहा, जो बीकानेर सुबह दस बजे पहुँती थी। हमने समय की बचत के लिए सरकारी गाड़ी बीकानेर से कुछ पहले के स्टेशन पर मंगवाई और सुबह आठ बजे हम बीकानेर में प्रवेश कर चुके थे। हम समय की बचत से प्रसन्न थे। प्रस्तुतः हमने सुबह आठ बजे पहुँचने

वाली ट्रेन को नौ बजे बीकानेर पहुँचते देखा। कोहरे के कारण ट्रेन से देर पहुँची थी। अब हम समझे कि गुरुजी ने हमें पिछली रात क्यों देर तक अपने साथ बैठाये रखा।

गुरुजी ने मेरे पिता का हमेशा ध्यान रखा है और रखेंगे। हमेशा आवश्कता पड़ने पर वे पिताजी के साथ होते हैं। हर व्यक्ति के पेशे में उतार–चढ़ाव होते हैं और प्रायः योग्य व्यक्ति पीछे रह जाते हैं। मेरे पिता सेना में ही, इसलिए उनके साथ भी नियुक्तियों और परिवार को व्यवस्थित करने के मसले सदा बने रहे।

मेरी दुर्घटना के बाद जब मेरे पिता गुरुजी से प्रथम बार मिलने गये, गुरुजी ने उनके दिमाग में चल रही समस्याओं को उन्हीं के सामने रख दिया। गुरुजी ने मुझे बताया कि पिताजी ने दुर्घटना रोकने की जी–जान से कोशिश की थी। यह बात मेरे पिता के मस्तिष्क में सबसे अधिक कोलाहल करती थी। गुरुजी यह सब जानते थे क्योंकि वे तो उस समय भी हमारे साथ थे, जब हम उनसे मिले भी नहीं थे।

मेरे पिताजी की पीठ के निचले हिस्से में काफ़ी सालों से बहुत दर्द था, उन्हें नीचे बैठने में और बैठकर उठने में काफ़ी दिक्कत होती थी। हम तो गुरुजी के पास इससे भी भयंकर समस्याओं को लेकर गये थे, किसी ने भी पिता जी की पीठ के दर्द के बारे में उनसे चर्चा भी नहीं की। किन्तु, ईश्वर सर्वज्ञानी है। एक दिन गुरुजी ने मेरे पिता को बुलाया और कहा, "आओ चाचा। मैं तुम्हें तुम्हारी स्पॉण्डिलाइटिस से मुक्ति दिला दूँ।"

उन्होंने स्टील के एक चम्मच से मेरे पिता की रीढ़ की हड्डी के दोनों तरफ स्पर्श किया और कहा, "तुम्हारी पीठ का दर्द ठीक हो चुका है।"

मेरे पिता को पीठ में फिर कोई तक़लीफ़ नहीं हुई।

जब 1994–95 में पिताजी कर्नल थे, गुरुजी ने अनुरागपूर्वक उनसे कहा, ''मैंने आपको जनरल बना दिया है।'' सेना में कर्नल की पदोन्नति के लिए दो महत्वपूर्ण कोर्स होते हैं – 'हाइअर कमाण्ड' या 'लांग डिफेन्स मैनेजमेण्ट कोर्स' (LDMC)। मेरे पिता अच्छे अफ़सर होने के बावजूद दोनों में से किसी कोर्स के लिए नहीं चुने गये। इसके बाद उन्हें लेह में एक पैदल सेना का 'डिप्टी कमाण्डर' बना दिया।

उनकी सेना को आतंकवाद से निपटने के लिए कश्मीर भेज दिया गया। गुरुजी की कृपा से उनका कार्यकाल वहाँ इतना प्रभावशाली रहा कि मेजर जनरल में उनकी पदोन्नति का आधार बना। उन्हें 'नैशनल डिफेन्स कॉलेज' के लिए भी नामांकित किया गया और वे एकमात्र ऐसे ब्रिगेडियर थे जिन्होंने (LDMC कोर्स नहीं किया था।

मेरे पिताजी जालंधर में नियुक्त थे और उनके रेजीमेंट को नसीराबाद जाने का आदेश मिला। गुरुजी ने स्पष्ट कहा, ''परिवार छः महीनों तक कहीं न जाये।'' साधारण मानवों की तरह हमने उनकी इस बात पर ध्यान नहीं दिया और अपना दिमाग लगाकर नसीराबाद के विद्यालयों में दाख़िला लेने चले गये और तब हमें पता चला कि वहाँ विद्यालय निराशाजनक हैं। हम वहाँ से लौट

आये। कुछ ही दिनों के बाद, पंजाब में अप्रत्याशित ढंग से भीषण बारिश हुई। मेरे पिताजी के रेजीमेंट को छः महीनों तक वहीं रोक लिया गया। यह सब चमत्कार ही तो था।

चमत्कार चलता रहा

एक रात हम गुरुजी से मिलकर अपनी नयी 'इंडिका' कार में अपने घर जा रहे थे और एकाएक गियर ख़राब हो जाने की वजह से गाड़ी रुक गयी। हमें गाड़ी की तकनीकी जानकारी तो थी नहीं, गाड़ी तीसरे गियर में फंसी थी, हमारा घर वहाँ से 13 कि.मी. दूर था, हमने गुरुजी को मन–ही–मन याद किया और मेरे पिताजी ने तीसरे गियर में ही गाड़ी चलाना शुरु कर दिया, जिसमें कम से कम 40 किलोमीटर प्रति घंटे की चाल को निरंतर बनाये रखना था। हमरे लाल बत्तियों और विशाखनों से भरी 13 मि.मी. की उस दूरी को 40 मिलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से कम किये बिना तय किया, हमारी कार कहीं नहीं रुकी। घर पहुँचने से थोड़ा पहले, हमारी गाड़ी के सामने सडक पर गायों का एक झुण्ड बैठा हुआ था, पिताजी ने सोचा कि अब तो गाड़ी रोकनी ही पड़ेगी, पर गुरुजी की अनुकम्पा से गायें एकाएक उठीं, रास्ते से तुरन्त हट गयीं और हमारे निकल जाने के बाद फिर वहीं बैठ गयीं।

मेरी माँ उगते सूरज की धरती पर पहुँची

निःसदेह, मेरी माँ के लिए जीवन में सबसे अच्छा दिन वह दिन था, जिस दिन उन्हें गुरुजी के दर्शन प्राप्त हुए। उनके लिए नित्य स्मरणीय दिन है यह। हमारी कार–दुर्घटना के बाद हमारे शुभचिन्तक, जो गुरुजी के पास जाते रहते थे, हमें भी उनके पास चलने के लिए कहने लगे। किन्तु, मेरी माँ उतनी धार्मिक स्त्री नहीं थी, इसलिए वे जाने से मना करती रहीं।

एक दिन उनकी एक मित्र, जो गुरुजी की भक्त थी, सुबह–सुबह गुरुजी के दर्शनों के लिए जा रही थी। मेरी माँ को बहुत कौतूहल हुआ, ''क्या इसके पास और कोई काम नहीं है ? यह कैसे सुबह–सुबह इतना कष्ट लेकर किसी बाबा से मिलने जाती है ?'' पर चूंकि यह मित्र भी माँ को गुरुजी के पास चलने के लिए कहती रहती थी, मेरी माँ ने आज उसके साथ चलने का निर्णय लिया। मेरी माँ को उनकी मित्र ने दो बातें बतायी थीं – गुरुजी में विश्वास और उनका सर्वज्ञानी होना। इन दो बातों को ध्यान में रखकर मेरी माँ ने अपने मित्र के साथ उगते सूरज के स्थान में प्रवेश किया। जब उन्होंने गुरुजी को पहली बार देखा, उन्हे आभास हो गया कि यह मनोहारी व्यक्तित्व किसी साधारण मनुष्य की नहीं हो सकता है। महीनों की अनवरत पीड़ा के बाद उन्होंने राहत की एक सांस ली। मेरी माँ को बुलावा आया था, उन्होंने वहाँ गुरुजी के सामने अपने दुःखों की गठरी सहज ही खोल दी। उस अद्भुत दिन के बाद मेरी माँ सदा गुरुजी की छत्र–छाया में विद्यमान है।

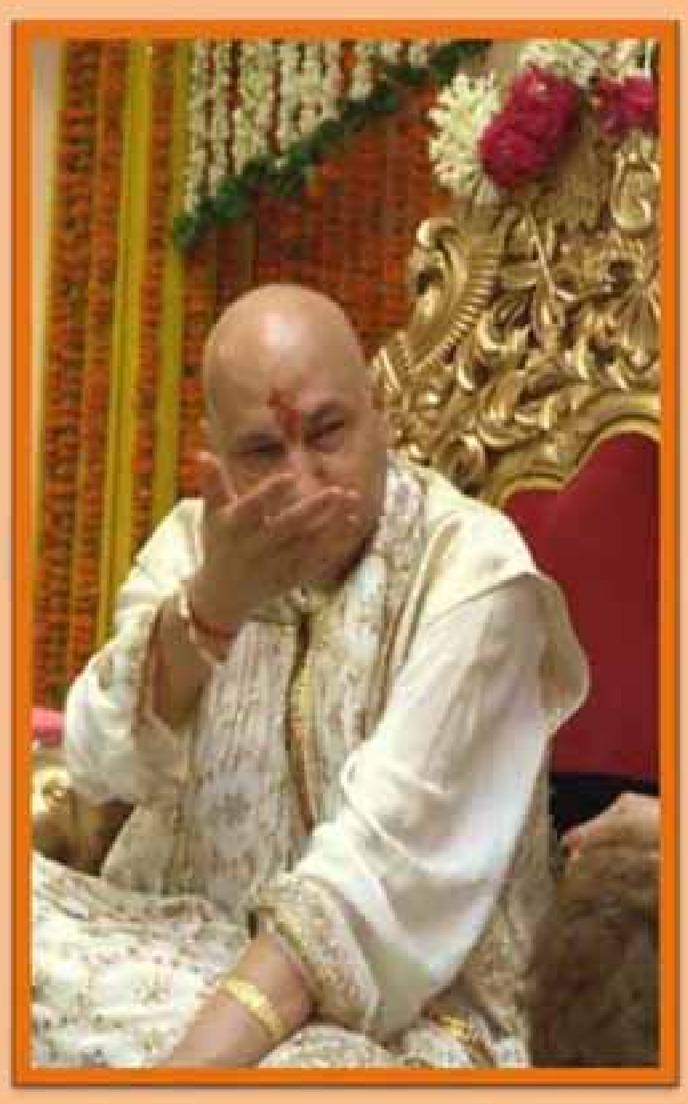

एक अस्तित्वहीन ट्रेन पर मेरे पिता के अनुभव

हम जालंधर आकर गुरुजी के दर्शन करते थे और रविवार की रात को लौट जाते थे ताकि सोमवार की सुबह काम पर जा सकें। उन दिनों पंजाब में रात में बस–सेवा अनुपलब्ध होती थी, इसलिए लौटने के लिए हम सामान्यतः रात के ढ़ाई बजे की ट्रेन पकड़ते थे।

एक बार हम गुरुजी के आश्रम में थे और मेरे पिताजी को अपने कार्यालय में अगले दिन सुबह 8.30 बजे पहुँचना था। गुरुजी ने हमें देर तक रोके रखा और रात के तीन बजे जाने का निर्देश दिया और कहा कि हम जालंधर कैण्टोनमेंट स्टेशन से ट्रेन लें। वहाँ अगली ट्रेन सुबह 4.15 बजे पर थी, जिसने जाने पर मेरे पिता कार्यालय समय पर नहीं पहुँच सकते थे। पर हमने गुरुजी की आज्ञा मानी और कैंटोनमेंट स्टेशन रात के 3.15 बजे पहुँच गये। मेरे पिता पूछताछ–खिड़की की और भागे जो अप्रत्याशित रूप से खुली हुई थी। उन्होंने कर्मचारी से पूछा कि अम्बाला को लिए कोई गाड़ी सुबह 4.15 बजे से पहले है या नहीं, उसने उन्हें हैरान करते हुए बताया कि एक विशेष ट्रेन स्टेशन के बाहर सिग्नल के लिए प्रतीक्षा कर रही है और वही शायद अम्बाला जायेगी। हम सब तुरन्त प्लेटफार्म पर चले गये और वह ट्रेन भी आ गयी। यह ट्रेन बिल्कुल रिक्त थी। हम सब एक कम्पार्टमेंट में अकेले यात्री थे और शायद पूरी ट्रेन में भी। कम्पार्टमैंट में अकेले होना भी थोड़े डर की बात थी, ख़ैर, हमने उसके दोनों दरवाजे अच्छी तरह अंदर से बन्द कर लिये। जब ट्रेन चली, हमारी चिन्ता और बढ़ गयी क्योंकि इस ट्रेन का कुछ भी सामान्य सा नहीं लग रहा था। इसकी चाल भी अजीब–सी थी, जालंधर से अम्बाला तक ऐसा लग रहा था, मानों ट्रेन ट्रैक पर चलने के बजाय हवा में तैर रही हो। हम करीब दो घंटों में अंबाला पहुँच गये। यह हैरानी की बात थी कि वह इस ट्रेन के बारे में कुछ भी नहीं जानता था।

अचम्भा हुआ, हमने ईश्वर का धन्यवाद किया और अपने घर के लिए चल पड़े । हम जैसे ही स्टेशन से बस लेने के लिए बाहर निकले, बस तुरन्त सामने ही मिल गयी । हम अगले चालीस मिनटों में चंडीगढ़ में थे। हम कुछ भी जान पाते, उससे पहले ही बस–चालक ने मुख्य बस–पड़ाव पर नहीं जाने का निर्णय ले लिया था और यात्रियों को एक गोल चक्कर पर उतारा, किसी ने कोई भी एतराज़ नहीं किया। इस मार्ग–परिवर्तन के कारण हम अपने घर के बहुत पास पहुँच सकते थे। जब मेरे पिता जी ने चालक से अनुरोध किया तो वह हमें चंडी मंदिर के दरवाजे के पास उतारने के लिए तैयार हो गया और हम वहाँ 15 मिनटों में पहुँच गये और बस से उतर गये। अन्ततः, जब पिताजी ने अपने कार्यालय के परिवहन विभाग में गाड़ी के लिए फोन लगाया, उन्हें आशा थी कि वे जल्दी ही चालक को

भेज देंगे क्योंकि पिता जी के पास समय की कमी थी। पर पिताजी तब चकित रह गये जब चालक ने स्वयं उनका फोन उठाया।

इस तरह, सब कुछ समय पर होता चला गया और पिताजी भाग्य से अपने कार्यालय समय से पहले ही पहुँच गये। हमने गुरुजी का श्रद्धा के साथ धन्यवाद किया। अगले सप्ताह, जब हम फिर जालंधर गये, गुरुजी ने सबसे पहले हमसे पूछा, "तुम लोगों को भूत की ट्रेन कैसी लगी ?" तब पिताजी को और हमें अहसास हुआ कि गुरुजी के दैविक चमत्कारों के कारण ही पिताजी उस दिन इतने कम समय में अपने कार्यालय पहुँच पाये। गुरुजी महान हैं।

मेरा और मेरे परिवार का गुरुजी से संसर्ग इन्हीं कुछ शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है या यों कहें कि इस संबंध को शब्दों में व्यक्त ही नहीं किया जा सकता है। ईश्वर हमारे समक्ष है गुरुजी के रूप में। उन्हें हमारा विश्वास व आत्मसमर्पण चाहिए। जितनी जल्दी हम उन्हें पहचान लें, जान लें, हमारे लिए उतना ही अच्छा है। वे चमत्कार ही चमत्कार हैं, उनका हर कार्य एक चमत्कार है। हर व्यक्ति को उनका प्रेम लेना चाहिए, वे एक के लिए नहीं, सबके लिए हैं।

GURUJI KA ASHRAM

– निक्की मल्होत्रा, एक भक्त, का सत्संग

गुरुजी का दैविक स्वरूप आच्छादित है

अगर कोई गुरुजी के बाहरी सांसारिक रूप से परे देख सके, उनके आंतरिक दिव्य व्यक्तित्व के दर्शन कर सके, तभी वह पूरी तरह उनकी कृपा की छत्र–छाया अपने ऊपर पा सकता है। मेरे लिए गुरुजी के इस आच्छादित स्वरूप को पहचान पाना ही सबसे बड़ी बात है।

महत्वाकांक्षाओं और लालसाओं की दीवार हमें उनकी वास्तविक भक्ति से दूर रखती है, उनके वास्तविक स्वरूप से दूर रखती है। गुरुजी सबकी इच्छाओं में से आवश्यक और सही इच्छाओं को ही पूरी करते हैं, पर मनोरथों को पूरा करने वाले इस व्यक्तित्व से परे जो उनको दैविक स्वरूप है, वह ज्ञातव्य है, ध्यातव्य है। अगर मनोरथों और सांसरिक सुख–दुःखों से जब कोई आगे बढ़ सकता है, तब ही उसे असल फल मिलता है, असल निधि प्राप्त होती है। यह आसान नहीं है, वे भक्तों की परीक्षा लेते हैं और उनके ही शब्दों में, वे भक्तों को नींबू की तरह निचोड़ते हैं और वृक्ष की तरह हिलाते हैं।

मैं अपने पूर्व जन्म के अच्छे कर्मों व संस्कारों के कारण शायद उन भाग्यशाली लोगों में से एक हूँ, जिसको उनके दिव्यत्व ने, उनसे संपर्क में आने का अवसर दिया। गुरुजी को वर्णित करना असंभव है, अगर भगवान गणेश उनका वर्णन नहीं कर पाये, तो मैं तो कुछ हूँ ही नहीं। हम लोगों ने गुरुजी के दर्शनों के लिए बिना किसी प्रत्याशा, आशा या कष्टों के ही जाना आरंभ किया और यह उनका दिव्य आकर्षण था, जिससे आबद्ध होकर हम उनके पास बार–बार जाते रहे।

मिथ्याभिमान यहाँ त्याग दीजिए

मैं सेवकों के लिए मंदिर में सुबह का नाश्ता ले जाया करता था। गुरुजी उस समय अमूमन पाठ में व्यस्त होते थे। मेरे माता–पिता शुक्रवार को उपवास रखा करते थे। खट्टा खाद्य खाना, यहाँ तक कि उसे छूना भी उस दिन वर्जित था।

उस दिन शुक्रवार था और मेरी माँ ने स्पष्ट रूप से ऐसे किसी खाद्य को खाने से मना किया था। मैं जैसे ही मंदिर पहुँचा, उन्होंने सुदामा, एक भक्त को मेरे लिए शीतल पेय लाने के लिए कहा। मैं गुरुजी का यह प्रसाद पाकर बहुत प्रसन्न और संतुष्ट था, वस्तुतः मैंने अपने भाग्य का गुरुजी के दर्शन और इतने अप्रत्याशित प्रसाद के लिए धन्यवाद भी किया। किन्तु मुझे घर में डॉटा गया, मैं परेशान हुआ, पर दिमाग़ से मैंने इस बात को बाहर निकाल दिया।

उस शाम हम फिर मंदिर गये। गुरुजी प्रफुल्ल थे। हम सत्संग के लिए बैठे और उन्हें सुनने लगे। उन्होंने उपवास रखने की परंपरा को निरर्थक बताया। उन्होंने अपने स्वभावनुसार, प्रत्यक्ष रूप में कुछ नहीं कहा, पर परोक्ष रूप से सब कुछ कह दिया, "तुम भगवान के आवास में हो, वही करो जो वे कहते हैं और उन क्रिया–कलापों का त्याग करो जो भगवान तक पहुँचाने का दावा करते हैं।"

एक लड्डू, दो क्रिकेट–बालों के बराबर

गुरुजी कुछ लोगों को 'सच–खण्ड; प्रसाद देते हैं, जो उनकी अपनी दैविक शक्ति के उपहार होते हैं और जिन्हें 'चमत्कार' कहा जाता है। मैं काफ़ी भाग्यशाली रहा हूँ, मुझे इन चमत्कारों का अच्छा अनुभव रहा है, चाहे घटना डॉलर में स्वर्णाभूषण के मिलने की हो, या गर्म हलवे की या चॉकलेट और वनीला बर्फ़ी की या मोतीचूर और बेसन के लड्डुओं की या हिमाचली टोपी की।

एक बार जालंधर में, गुरुजी एक भक्त के घर रात के खाने के लिए गये हुए थे। लंगर लगाया गया और हर बार की तरह संगत ने गुरुजी के पहले खाया। गुरुजी के साथ अधिक समय की निकटता के लिए मैंने जल्दी–जल्दी खाना खाया और उनके पास बैठ गया, बाक़ी लोग खा ही रहे थे। वे सीधा बैठे हुए थे, उनकी कलाई घुटने पर थी और मुठ्ठी बंद थी। मुझे लगा कि वे प्रसाद देंगे, इसलिए मैं उन्हीं को ध्यान से देख रहा था। पर कुछ भी ईश्वरीय इच्छा के बिना नहीं होता और शायद यही वे मुझे बताना चाहते थे। संगत जब लंगर के फिर एकत्र हुई, बातचीत शुरु हुई। मेरा ध्यान गुरुजी की मुठ्टी पर ही था। जैसे ही उन्होंने मुठ्ठी खोली, एक लड्डू, जो दो क्रिकेट–बॉलों के बराबर के आकार का था, उनकी मुठ्ठी खुली, एक लड्डू न केवल एकाएक उनके हाथ में आ गया था, पर उनकी मुठ्ठी खुलने पर उसका आकार भी बढ़ गया था।

मेरे पिताजी एक फौजी थे, उनकी नियुक्ति जालंधर से बाहर हो गयी। घर में सामान बांधा जा रहा था। लकड़ी के बक्से, संदूक, बोरियाँ घर में फैली हुई थीं। इनको अंकित भी करना था। शाम को गुरुजी हमारे घर आये। जैसे ही उन्होंने प्रवेश किया घर की बिजली चली गयी और उन्होंने तुरन्त कहा, "इमरजेन्सी लाईट बॉक्स नं. 13 में।" अब गुरुजी की बातें, चाल–ढ़ाल या व्यवहार ऐसा है कि वे हमें आभास दिलाते हैं कि वे हममें से ही एक हैं। कुछ समय के बाद उनकी क्रिया या बातों का मर्म पता लग पाता है और इसीलिए उनकी इस बात

पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। उस समय तो बक्सों को अंकित भी नहीं किया गया था। तकरीबन एक हफ्ते के बाद जब सामान को पूरी तरह व्यवस्थित कर लिया गया और बक्सों को रंग से संख्यांकित किया जा रहा था, तभी मेरा ध्यान एक बक्से की ओर गया, जिस पर संख्या 13 अंकित था और उसमें इमरजेंसी लाईट रखी हुई थी। गुरुजी ने उस समय जो बात कही थी, उसका अर्थ अब जाकर पता चला। गुरुजी हमारा भूत, वर्तमान व भविष्य, तीनों जानते हैं। उनके समक्ष कुछ छिपाना नहीं चाहिए, कोई मिथ्याभिमान नहीं करना चाहिए।

स्वयं सर्वशक्तिशाली ईश्वर

मेरी माँ को तेज़ बुखार था। मैंने और मेरे पिताजी ने लगातार दिनभर उन पर बर्फ की पोटली लगायी थी। पर कुछ असर नहीं हुआ। दवाइयों का भी कोई असर नहीं हो रहा था। एकाएक हमें गुरुजी ने ख़बर भिजवाई वे हमारे घर संगत के साथ आ रहे हैं। वे केवल दो भक्तों के साथ आये। उस कमरे में गये, जहाँ माँ लेटी हुई थी और कहा, "आओ, कुछ नहीं हुआ है।" वे मेरी माँ को हाथ पकड़कर बैठक वाले कमरे में ले आये। मैं गुरुजी के चरणों को दबा रहा था। पाँच मिनटों में, माँ के शरीर का

तापमान सामान्य हो गया। पर गुरुजी के शरीर का तापमान बढ़ गया था। वे हमारी बीमारियों को आत्मसात कर लेते हैं। हमारे कर्म हमारे सुख–दुःख का निर्धारण करते हैं। और कोई, जो मेरे दुःखों को अपना लेता है, वह स्वयं भगवान के अलावे और कोई नहीं हो सकता।

– नितिन जोशी का सत्संग

GURUJI KA ASHRAM

मैं इसे स्वर्ग से वापस ले आया

मेरी पत्नी कई सालों से 'रियुमेटोइड अर्थराइटिस' और जोड़ों के दर्द से जूझती आ रही थी। उसने एम्स में 6 साल इलाज करवाया था और उसके बाद होमियोपैथी का उपचार भी किया था। पर कोई फ़ायदा नहीं हुआ। जोड़ों के दर्द के कारण उसे चलने में तकलीफ होती थी। बैठने में और उठने में उसे सहारे ही आवश्यकता होती थी।

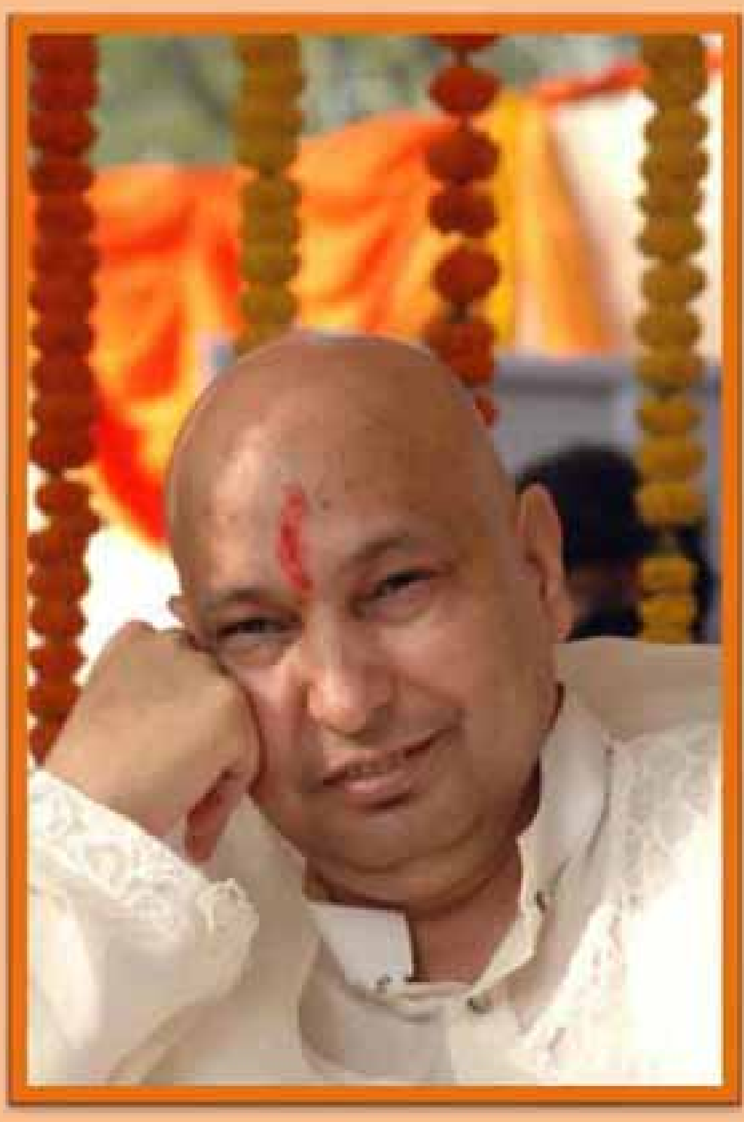

एक दिन सन् 1998 ई. में हमारी बेटी ने हमें गुरुजी के बारे में बताया और तांबे के एक गिलास के साथ उनके पास आशीर्वाद लेने के लिए कहा। अगले दिन हमने पहली बार गुरुजी के दर्शन किये। गुरुजी ने दयापूर्वक गिलास को अभिमंत्रित कर दिया। गुरुजी ने मेरी पत्नी को ताम्र–पात्र में रात में पानी भरकर रखने के लिए कहा और अगली सुबह उसका आधा पानी पीने व आधा पानी शरीर पर डालने के लिए कहा। कुछ दिनों में उसकी दशा में सुधार आने लगा। गुरुजी की कृपा से

उसके जोड़ों में दर्द और ऐंठन कम होने लगा अेर वह स्वयं चलने लगी, बैठने लगी एवं बैठकर उठने लगी।

अप्रैल, 2005 में गुरुजी ने फिर से मेरी पत्नी की जान बचायी। सीताराम भारतिय अस्पताल में सामान्य जाँच–पड़ताल के दौरान उसका रक्तचाप असामान्य रूप से बहुत अधिक पाया गया। उसे कुछ घंटों के लिए निरीक्षण में रखा गया और नित्य रूप से दवाइयाँ लेने के लिए कहा गया। दो सप्ताहों के बाद, वह तीव्र 'ब्रांकाइटिस' की शिकार हो गयी। खास की समस्या के कारण उसे 'नेब्यूलाइज़र' का प्रयोग करने के लिए कहा गया।

एक दिन दोपहर में, एकाएक उसकी तबियत ख़राब हो गयी। उसकी साँसें बेतहाशा फूलने लगी थीं। जब तक 'नेब्यूलाइज़र' लगाया जाता, वह अचेत हो चुकी थी। वह कुछ मिनटों में होश में तो आयी। पर असाधरण रूप से बेचैन थी। उसने कहा भी, "आज मैं बिल्कुल ठीक नहीं हूँ।" फिर वह शांत हो गयी और सो गयी। देर रात में, हमारी बेटी ने फोन कर बताया कि गुरुजी ने उसे कहा था कि उसकी माँ बहुत बीमार है और उसे अगली सुबह आशलोक अस्पताल में भर्ती कराना चाहिए। अगली सुबह, हमने ऐसा ही किया। मेरी पत्नी को उसी अस्पताल में भर्ती कराया गया और गुरुजी की कृपा से सब कुछ ठीक हो गया। मेरी पत्नी के स्वास्थ्य में तेज़ी से सुधार आया और उसे दो ही हफ्तों के बाद अस्पताल में छुट्टी मिल गयी।

पूरी तरह ठीक हो जाने के बाद वह गुरुजी के आशीर्वाद और दर्शनों के लिए गयी। श्रीमती मेहता एक भक्त ने उसके स्वास्थ्य के बारे में पूछा। गुरुजी ने तुरन्त श्रीमती मेहता से कहा, "मैं इसे स्वर्ग से वापस लाया हूँ।" हम समझ गये कि गुरुजी ईश्वर के अवतार हैं। गुरुजी ने हमारे सारे परिवार पर अपनी कृपा बनाये रखी है। हमारा बेटा और हमारी बेटी, दोनों उनके परम भक्त हैं और

उसकी अनुकम्पा से अपना जीवन प्रसन्नता से बीता रहे है। हमारा सारा परिवार गुरुजी के आशीर्वादों का ऋणी है।

– एन. आई. सपरा, एक भक्त का सत्संग

GURUJI KA ASHRAM

भक्त का कभी बुरा नहीं हो सकता

हम अपने को अतिभाग्यशाली मानते हैं कि हम गुरुजी की शरण में हैं। हमारे एक भाई की बेटी की शादी, जो नवम्बर, 2005 में मेरठ केण्टोनमेण्ट में थी, के दौरान संयोग से हम उनके संपर्क में आये हम और हमारी बहन, पिंकी, उस

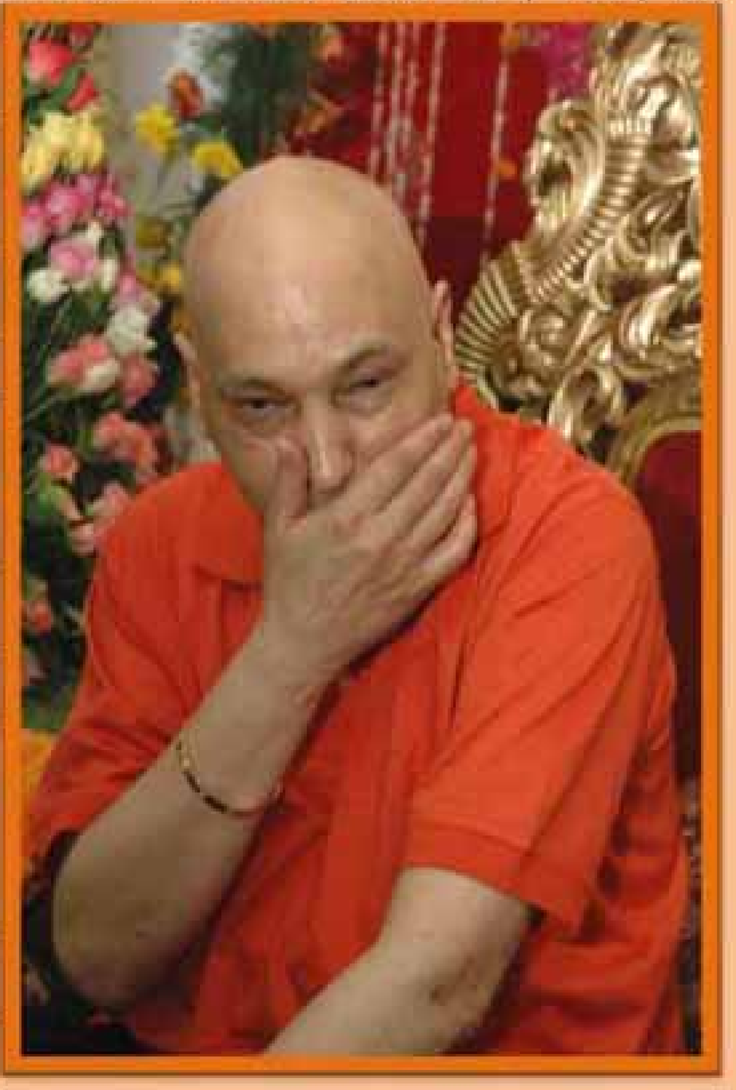

शादी में जाने का सोच भी नहीं रहे थे, पर संयोग ऐसा बना कि दोनों के परिवार मेरठ पहुँच गये। वहाँ पिंकी ने हमें गुरुजी के सत्संग में जाने के लिए कहा और उनके कुछ चमत्कारों का भी वर्णन किया।

शुक्रवार के दिन, जब हम लौट रहे थे, हम 'एम्पायर इस्टेट' के पास से गुज़रे पर गुरुजी के दर्शनों के लिए बाद में आयेंगे, ऐसा सोचते हुए आगे बढ़ गये। अभी हम कुछ ही दूर गये थे कि हमारी गाड़ी एकाएक ख़राब होकर रुक गयी । हम हैरान हो गये और अब गुरुजी से मिलने का निश्चय किया। जैसे ही हमने मिलने का निश्चय किया यही सोचकर गाड़ी में बैठे, गाड़ी चल पड़ी और हम सायंकाल 7 बजे गुरुजी के आवास पर पहुँच गये। हमें कहा गया कि 8 बजे यानि एक घंटे के बाद उनका स्थान खुलेगा। एक घंटा रुकने के बजाय, हमने किसी और दिन

आने का निश्चय किया। तभी पिंकी आ गयी और उसने सत्संग में उपस्थित होने का आग्रह किया। हम गुरुजी के सत्संग में उपस्थित हुए और इसके बाद से हम लगातार इसमें उपस्थित होते रहे हैं। गुरुजी से मिलने के पहले हम जीवन में अस्त–व्यस्त थे, पर अब उनकी कृपा से हम शांत हैं, आश्वस्त हैं, संतुष्ट हैं।

गुरुजी की कृपा से मेरी बेटी पढ़ने विदेश गयी

हमारी बेटी, रक्षता को अमेरिका में एक एम.बी.एस. कोर्स में 15 जनवरी, 2006 तक दाखिला लेना था। उसके दस्तावेजों से संबंधित कुछ ऐसी समस्या उभर आयी जिसमें उसे अदालत से सत्यापन लेना था और अदालत छुट्टियों के कारण बंद थी। पर गुरुजी की कृपा से एक विशेष अदालत ने उसके दस्तावेजों को सत्यापित कर दिया। वह अमेरिका जा सकी और 18 जनवरी, 2006 को उसने वहाँ के विश्वविद्यालय में अपनी उपस्थिति दी। तीन दिनों की देर के बावजूद गुरुजी की महिमा से विश्वविद्यालय में उसे प्रवेश मिल गया। गुरुजी की कृपा–दृष्टि ने हर जगह उसका रास्ता आसान कर दिया। यहाँ तक की दिल्ली हवाई अड्डे पर, रक्षिता के सामान को परिसीमन से ऊपर बताया गया और कुछ सामान को हटाने के लिए कहा गया या फिर 180 डॉलर उनका अतिरिक्त शुल्क देने के लिए कहा गया। हम उधेड़बुन में थे। तभी रक्षिता ने महसूस किया कि गुरुजी फिर से सामान को तुलवाना चाहते हैं और अगली जाँच में सामान का भार निश्चित भार से कम ही पाया गया।

यही नहीं, अमेरिकी विश्वविद्यालय में तीन महीने पढ़ाई करने के बाद, रक्षिता ने हमें खबर दी कि विश्वविद्यालय उसे दूसरे सिमेस्टर की पढ़ाई की अनुमति नहीं दे रहा है और शायद उसे भारत वापस आना पड़े।

हमने उसे गुरुजी से प्रार्थना करने के लिए कहा और कुछ ही दिनों के बाद, उसने हमें बताया कि विश्वविद्यालय ने उसे दूसरे सिमेस्टर की अनुमति दे दी है। गुरुजी की महिमा अपरंपार है।

हमारा बेटा भी गुरुजी में विश्वास करने लगा

हमारा बेटा, सुधांशु गुरुजी में आस्था नहीं रखता था। उसे हम गुरुजी के पास तीन बार ज़बरदस्ती ले गये। हर बा रवह सत्संग में उपस्थित हुए बिना ही लौटा। आज गुरुजी के आशीर्वादों से वह आस्थावान है। जब भी छात्रावास से लौटता है, गुरुजी के दर्शन करना चाहता है। जिस घटना ने उसका हृदय परिवर्तन किया, वह ध्यातव्य है।

सुधांशु और उसके तीन दोस्तों ने कालका में एक दोस्त के घर जाने के लिए टैक्सी ली थी। अभी वे कुछ ही दूर गये थे कि उनकी टैक्सी लकडियों से भरी एक ट्रक से सीधे टकरा गयी। टैक्सी बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गयी और ट्रक के आगे के पहिए निकल गये और ट्रक सड़क पर बिल्कुल बैठ सा गया। किन्तु, चमत्कारिक ढंग से टैक्सी के पाँचों सवार सुरक्षित थे। उन्हें हल्की–फुल्की चोट लगी, बस सुधांशु का जीवन बचाने के लिए गुरुजी ने चार और लोगों का जीवन बचा दिया था।

सर्वव्यापी गुरुजी

गुरुजी अपने भक्तों की छोटी–छोटी समस्याओं का भी ध्यान रखते हैं। बार सन् 2005 की सर्दियों में एक बार उन्होंने हमें हर सुबह यमुना पुल किसी समस्या के निवारण के लिए जाने के लिए कहा था। एक बार हमारी गाड़ी जो ढ़लान पर खड़ी थी, खराब हो गयी। हमने उसे धक्का देकर चलाने की कोशिश की और गुरुजी को हम ही मन याद किया। अचानक कहीं से दो सरदार आये और गड़ी को धक्का देकर हमारी मदद की और अदृश्य हो गये।

गुरुजी ने हमें सपनों में भी अपने आशीर्वादों से धन्य किया है। एक सुबह, मेरे पति ने सपना देखा कि गुरुजी ने उन्हें मिठाइयों का प्रसाद दिया है। और जब वास्तविकता में मेरे पति, अनिल ने अपनी हथेलियाँ खोली, उनमें कुछ रुपये थे।

गुरुजी सर्वज्ञ हैं, सर्वशक्तिशाली हैं, सर्वव्यापी हैं। उन्होंने हमारे परिवारों के बारे में सब कुछ बता दिया, उन्होंने हमारे जीवन में घटी एक–एक घटना को हमारे सामने रख दिया था। उन्होंने ए आई आई एम एस में हुए मेरे पति के एक बड़े आपरेशन के बारे में बताया जिससे उनकी जान बची थी। कई बार तो जिन्हें चिकित्सकों के द्वारा स्वस्थ नहीं किया जा सका है, गुरुजी ने उनकी जान बचायी है। उन्होंने कैंसर और न जाने कितनी भयंकर बीमारियों से भक्तों को निजात दिलवायी है। वस्तुतः जब चिकित्सक हार जाते हैं गुरुजी भक्तों का उपचार कर देते हैं।

जो भी गुरुजी के आशीर्वाद पाने के लिए आये, उसे अपना अहंकार त्याद देना चाहिए, वह धैर्य शुद्ध हृदय और पूर्ण विश्वास के साथ आए और उनके दर्शनों और सत्संग से अपना भला कर ले। गुरुजी की प्राथमिकता मानव जाति के दुःख–दर्द की कम करना है। वे बिना भेद–भाव किये सबका भला करते हैं। वे सर्वव्यापी हैं तथा हमारा भूत, वर्तमान और भविष्य सब जानते हैं। वे स्वयं मोक्ष

के और परमानंद के प्रतिरूप हैं और हम सब उनके साहचर्य में आनन्द की प्राप्ति करते हैं। इन सर्वव्यापी दिव्य व्यक्ति के आशीर्वादों से ही हम सांसरिक और आत्मिक सुख पाते हैं। हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें गुरुजी के दर्शन हुए और वे निरंतर हमारे कष्टों को कम करते हैं और हमें हर तरह की बुराइयों से बचाते हैं। शायद इसीलिए कहा जाता है, "जिस भक्त को उन्होंने मित्र बना लिया, वह मिट नहीं नहीं सकता।–– "ऊँ नमः शिवाय, गुरुजी सदा सहाय।"

– गुड़गाँव के निवासी, नूतन व अनिल बेरी का सत्संग

GURUJI KA ASHRAM

जो भी आस्था के साथ आता है, आशीर्वाद लेकर जाता है

सन् 1999 ई. में जब मेरे पति कर्नल देविन्दर सिंह दिल्ली में नियुक्त थे, पंचकुला में रह रहे हमारे एक मित्र ने हमें गुरुजी के बारे में बताया। हम उनके बारे में सुनकर अपने आप को रोक नहीं पाये और जल्दी ही उनके आशीर्वादों के लिए एम्पायर स्टेट पहुँच गये।

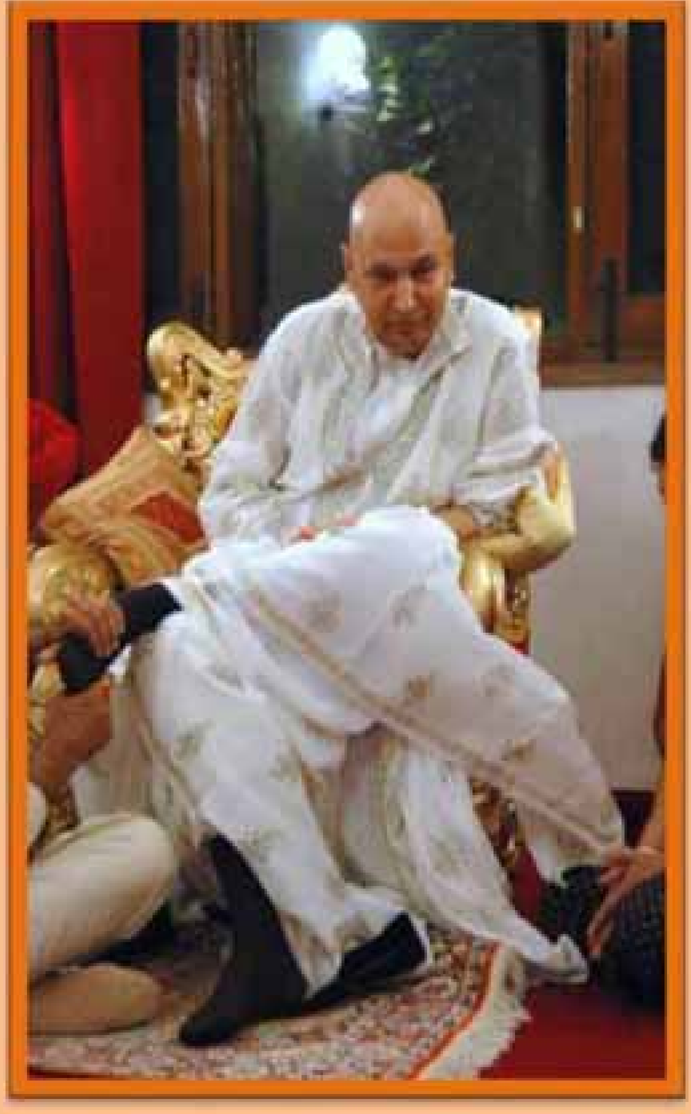

उस समय हम बहुत सारी परेशानियों का एक साथ सामना कर रहे थे। मेरे पति का दो बार गुर्दे का प्रतिरोपण हो चुका था, वे कमजोर हो चुके थे। उनके लिए नौकरी में रह पाना भी कठिन हो रहा था। हमारी सारी बचत दूसरे प्रतिरोपण के बाद, जो एक नागरिक अस्पताल में हुआ था, लगभग ख़त्म हो चुकी थी और हम वित्तीय तौर पर कठिनाइयों का सामना कर रहे थे मेरे पति की ढ़ाई लाख रुपये की चिकित्सकीय प्रतिपूर्ति माँग को भी ठुकरा दिया गया था। हम बिल्कुल लाचार हो चुके थे।

पर, पहले ही दिन जब हम गुरुजी से मिले गुरुजी ने हम पर अपना अनुराग जताया। उस दिव्य प्रेम को पाकर हमें लगा कि हमारे दुख समाप्त हो गये। गुरुजी ने हमें एक ताम्र–पात्र और चांदी का एक कंगन अपने साथ लाने के लिए कहा। अगली बार, जब हम उनके दर्शनों के लिए गये, उन्होंने इन वस्तुओं को अभिमंत्रित कर दिया। हमारी समस्याएं सुलझने लग गयी। हमने एक व्यक्ति में, गुरुजी में ईश्वर को पा लिया था।

मेरे पति का स्वास्थ्य सुधरने लग गया और उन्होंने फिर से कार्यालय जाना शुरु कर किया। इसके बाद, अधिकारियों ने ढ़ाई लाख की हमारी प्रतिपूर्ति की माँग को मंजूरी दे दी। इसकी सूचना मिलते ही अगले दिन जब हम गुरुजी के दरबार में गये, उन्होंने कहा, ''तुम्हें पैसे मिल गये हैं।''

बीमारी के दौरान मेरे पति को काफ़ी स्टेरॉयड्स दिये गये थे, इससे एक बुरा प्रभाव यह हुआ कि नितम्ब जोड़ पर एक तंत्रिका अवरुद्ध हो गयी। चिकित्सकों ने शीघ्र ऑपरेशन के लिए कहा। हम गुरुजी के आशीर्वाद के लिए उनके पास गये। उन्होंने हमें ऑपरेशन करवाने से रोका और कहा कि मेरे पति बिल्कुल ठीक हो जायेंगे। धीरे–धीरे मेरे पति ठीक होने लगे और आज तक किसी ऑपरेशन की आवश्यकता नहीं पड़ी है।

मेरा यह मानना है कि गुरुजी से कुछ भी मांगने की आवश्यकता नहीं है, वे स्वयं ही सबकी इच्छा जान लेते हैं और जो कुछ भी, अच्छा या बुरा, होता है, उनको इसका ज्ञान रहता है।

मैं एक बेटे और एक बेटी की माँ थी। मुझे एक और पुत्ररत्न की इच्छा हुई। मैंने गुरुजी के दरबार में एक और पुत्र की कामना की। सर्वज्ञानी गुरुजी स्वयं जान गये और जब मैं उनसे घर जाने की आज्ञा लेने के लिए उनके पास गयी, गुरुजी ने पंजाबी में कहा, ''ला झोली कर।'' उन्होंने मुझे अपने समक्ष दुपट्टा फैलाने के

लिए कहा जिससे वे मुझे आशीर्वाद दे सकें। मैंने वैसा ही किया और में अधिक कुछ नहीं जान पायी कि मुझे उन्होंने क्या आशीर्वाद दिया था।

इस घटना के 6 महीनों के बाद मुझे पता चला कि मैं गर्भवर्ती थी। मैं काफी दिनों तक यह बात जान नहीं पायी थी। पर गुरुजी ने मुझे उसी दिन पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद दे दिया था। चिकित्सक भी चकित थे।

एक बार, कुछ असामाजिक लोगों ने नेताओं के साथ मिलकर हमारे घर पर कब्जा जमा लिया था। हम बुरी तरह परेशान थे हमने गुरुजी से इस बात की चर्चा की और उन्होंने कहा, "चिन्ता मत करों वे सब अपने आप भाग जायेंगे।" उनके इस आशीर्वाद के बाद सही में स्थितियाँ बदल गयीं और जल्दी ही हमारा घर हमारे अधिकार में आ गया।

गुरुजी स्वयं भगवान हैं। हमारी प्रसन्नता, हमारा अस्तित्व, सब उन्हीं के कारण है। हम अपने प्रति उनके अनुराग के लिए असीमित आभार प्रकट करते हैं। जो भी उनके पास विश्वास व आस्था के साथ आता है, आशीर्वाद पाकर धन्य हो जाता ळें

परमिन्दर कौर, एक भक्त का सत्संग

क्या तुम्हें एक और पुत्र चाहिए

मुझे आज भी वह दिन याद है, जब सन् 1998 ई के जून महीने के अंतिम सप्ताह में मुझे गुरुजी के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जब से हमें उनके बारे में मेरे पति के मामा ने बताया था, हमारे उनसे मिलने के लिए काफी प्रतीक्षा करनी पड़ी थी। पर हम क्या करते, मेरे पति की नियुक्ति श्रीनगर में थी। जब उनका कार्यकाल वहाँ 1998 में समाप्त हुआ, तब हमें गुरुजी से मिलने के अवसर मिला।

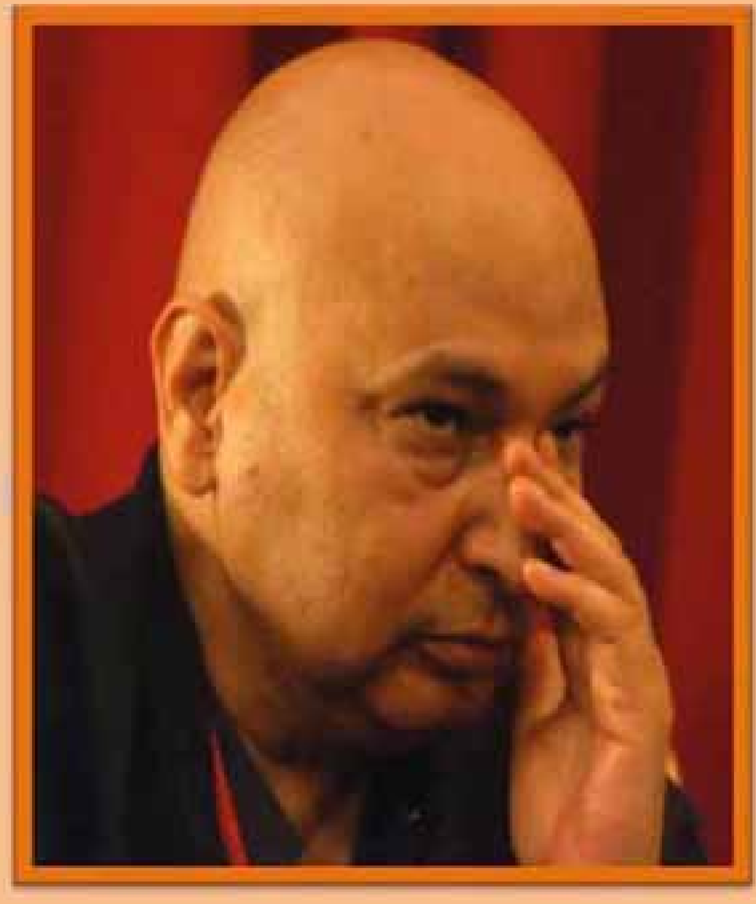

मेरे पति के मामा का गुरुजी से साहचर्य अत्यंत सुखमय रहा था। जबवे गुरुजी से मिले थे, तब तक हृदय रोग विशेषज्ञों ने उन्हें 'बाईपास सर्जरी' करा लेने की सलाह दे दी थी। गुरुजी ने उन्हें अपनी समस्याओं के बारे में बताने के लिए कहा। वे गुरुजी के चरण दबाते रहे और हृदय रोग वाली बात बताते रहे। जब उनकी बात समाप्त हुई, गुरुजी ने उन्हें कहा कि उन्हें सर्जरी कराने की आवश्यकता नहीं है। उनका बाईपास हो गया है। इसके बाद चिकित्सकों ने काफ़ी निरीक्षण किये और हर बार यही पाया कि मामा जी का हृदय आपरेशन के बाद जितना सुधरता, उससे कहीं अधिक स्वस्थ हो गया और अप्रत्याशित रूप से सुचारू रूप से कार्य कर रहा है।

जहाँ तक हमारी बात है, हम सात सालों से निसंतान थे। हम दुखी थे। और हमने लगभग आशा भी छोड़ दी थी। पर गुरुजी के आर्शीवों के चमत्कारों को सुनकर हम पुनः आशान्वित हो गये, यदि गुरुजी की इच्छा हुई तो हमारी मनोकामना अवश्य पूरी होगी।

हम एक शाम 'एम्पायर स्टेट' पहुँचे तथा गुरुजी के दर्शन किये। हमने लंगर भी खाया। गुरुजी ने हमें परिचय देने के लिए कहा और फिर 7 जुलाई से अपने जन्मदिवस के समारोहों में हिस्सा लेने के लिए एम्पायर स्टेट के ही पास रेंच, एक फॉर्म हाऊस पर आने के लिए आमंत्रण दिया। मैं आयी और वहाँ लोगों की तादाद देखकर आश्चर्यचकित रह गयी। हर किसी के पास गुरुजी की दया और करुणा की अपनी कहानी थी और हर कोई उनकी कृपा से अनुगृहीत था। गुरुजी की दया के पात्र बनने की लालसा में हम भी उनके पास नियमित रूप से जाने लगे। हम उन्हें अपनी समस्या बताना चाहते थे, पर संगत ने हमें रोक दिया और गुरुजी के स्वयं पूछने तक प्रतीक्षा करने के लिए कहा।

एक दिन, गुरुजी ने मुझसे समस्या पूछी और मैंने उन्हें बताया कि हम निसंतान हैं। उन्होंने मुझसे कहा कि मुझे संतान होगी और फिर हमें संगत में आने के लिए निश्चित दिन बताये। मैं गुरुजी की बातों से बहुत प्रसन्न हुई, पर तब भी शंकाएं विद्यमान थीं, क्या गुरुजी हमारी सारी समस्या जानते हैं ? क्या वे सारे उपचार जानते हैं, जो हमने किए हैं और जिनका कोई असर नहीं हुआ है ? क्या गुरुजी जानते हैं कि चिकित्सकों ने हमें बताया है कि मेरी गर्भ नलिकाएं दोषयुक्त हैं और मेरे पति की वीर्य–संख्या कम है ? क्या वे जानते हैं कि चिकित्सकों ने 'इन वितरो फर्टिलाइज़ेशन' आई वी एफ की सलाह दी है और उससे भी उम्मीदें कम हैं ? इन सब शंकाओं के साथ भी हम उनसे उनके द्वारा निश्चित दिनों पर मिलने जाते रहे।

खैर, तब तक दूसरे हालात सुधरने लगे, मेरी नौकरी स्थायी हो गयी और मेरे पति के नियोक्ता ने उन्हें एम बी ए करने की अनुमति दे दी। पर संतान पक्ष पर कोई शुभ बात नहीं हो रही थी। चिकित्सकों ने 'इण्टरा यूटेराइन इनसेमिनेशन' या 'आई यू आई' के व्यर्थ हो जाने के बाद हमें फिर से 'आई वी एफ' की सलाह दी थी और वस्तुतः हमें कोई आश्वासन नहीं दिया था।

मई 2000 की बात है। मेरे पति को एम. बी. एस के लिए चयनित कर लिया गया था और वे एक साल तक परिवार से दूर रहने वाले थे। इसका अर्थ यह था कि कोई उपचार भी नही ंलिया जा सकेगा। हमने चिकित्सकों के कहने पर एक बार फिर आई यू आई करवाया, पर वह भी व्यर्थ हो गया। हम गुरुजी के मिलने गये और उन्हें पति के एम बी ए में चयन की बात बतायी और उन्होंने मुस्कुराकर कहा, "फिर तो कल्याण हो गया।" मैं सोच में पड़ गयी, कैसा कल्याण ! मेरे पति एक साल के लिए दूर रहेंगे, कोई उपचार संभव नहीं होगा और हम पता नहीं कब तक निसंतान रहेंगे। पर गुरुजी वह सब देख लेते थे व जान लेते थे जो हम कभी सोच भी नहीं सकते थे।

चमत्कार हुआ। कुछ ही दिनों के बाद मेरा गर्भ–परीक्षण हुआ और पाया गया कि मैं गर्भवती थी। यह हमारी सोच के बाहर था।

हम गुरुजी की तस्वीर चूमने लगे, हमारी आँखों से अनवरत आँसू बह रहे थे, ये आँसू कृतज्ञता के थे, उस दिव्य व्यक्तित्व के लिए जिसने हमारा भाग्य बदल दिया था। हम उसी शाम गुरुजी के पास उन्हें यह समाचार देने के लिए गये। गुरुजी मुस्कुराये और चुप रहने का इशारा किया।"मैं जानता हूँ," उन्होंने कहा। मैंने सोचा कि केवल गुरुजी ही सब कुछ जानते थे।

मैं अपने पति की अनुपस्थिति में ही एक पुत्र की माँ बनी, सब कुछ सामान्य था। मैं अपने बच्चे को गुरुजी का आशीर्वाद दिलाने ले जाना चाहती थी, जिनकी कृपा से मैंने उसको पाया था। पर, बच्चे को 40 दिनों तक बाहर न ले जाने की परंपरा के कारण ऐसा हो नहीं पाया। अन्ततः 40 दिनों के बाद हम बच्चे को गुरुजी के पास ले गये। गुरुजी ने मुस्कुराकर पूछा, '' क्या तुम एक और पुत्र चाहती हो ?'' मैंने कोई उत्तर नहीं दिया। इसके बाद हर बार, जब हम उनसे मिलने गये, गुरुजी ने मुझसे यही पूछा। मैंने इस सवाल को गंभीरता से नहीं लिया। मैं सोचती थी कि फिर से इतनी चिकित्सकीय प्रक्रियाएं और इतने छोटे बच्चे का पालन–पोषण, दूसरे बच्चे की बात तो असंभव सी है। एक दिन, फिर गुरुजी ने वही सवाल किया और मैंने कहा, ''जैसी आपकी इच्छा।'' एक सप्ताह के भीतर ही मुझे पता चला कि मैं फिर से गर्भवती थी, इस बार बिना किसी उपचार बिना किसी चिकित्सकीय प्रयोग, बिना किसी किसी दवा के और उन्हीं दोषमुक्त गर्भ नलियों के साथ। मैंने एक और पुत्र को जन्म दिया। यह सब चमत्कार ही तो था।

मेरे दोनों पुत्र बड़े हो रहे हैं, नटखट हैं। उन्हें यह भी नहीं पता कि गुरुजी ने उन्हें यह संसार दिया है। चिकित्सकों की दृष्टि से हम पहले माता–पिता नहीं बन सकते थे ऐसा वैज्ञानिक परीक्षण कहते हैं पर किसी के आशीर्वाद ने सब कुछ बदल दिया। गुरुजी मानव जाति के दुःखों को दूर करने ही आये हैं। वे भक्तों के भाग्य बदल देते हैं, सदा उन्हें आशा देकर जीवन के प्रति उत्साहित रखते हैं। गुरुजी का असीम धन्यवाद, जिन्होंने हमें अपनी संगत में जगह दी और हमारे जीवन को पूर्णतः परिवर्तित कर दिया, ऐसा कोई नहीं कर सकता था।

– हिन्दू कॉलेज, दिल्ली की व्याख्याती, पूनम सेठी का सत्संग

GURUJI KA ASHRAM

परिवार के दुःखों को दूर किया

मेरी पत्नी के चचेरे भाई के, जो पंजाब में कपूरथला ज़िले के गाँव, सिद्धवन दोना में रहता था, दोनों पुत्रियों के बाद दो जुड़वा पुत्र हुए। पर दोनों बच्चे चार–पाँच दिनों में ही चल बसे। परिवार सन्तप्त था, उसकी पत्नी तो दुःख के सागर में डूब गयी। और परिवार का कोई भी सदस्य अपने काम में, व्यापार में मन नहीं लगा पा रहा था।

एक दिन मेरी उससे बात हुई और मैंने उसको गुरुजी से मिलने का सुझाव दिया। सत्संगों को सुनने के बाद उसे गुरुजी के दर्शनों की इच्छा हुई। दर्शनों के बाद उसके अन्दर फिर से एक उत्साह जागा, गुरुजी के दरबार से बाहर वह आँसुओं में आया और बोल पड़ा कि "उसने ईश्वर से भेंट कर ली थी।" फिर वह वापस अपने गाँव चला गया।

GURUJI KA ASHRAM

आज, बिना गुरुजी से इसकी माँग किये, वह एक स्वस्थ, सुन्दर पुत्र का फिर से पिता है। जब वह अगली बार गुरुजी से मिलने आया, गुरुजी ने उसे जाने के लिए कहा क्योंकि उसकी इच्छा की पूर्ति तो हो चुकी थी। ऐसी है कृपा गुरुजी की। उन्होंने न केवल एक व्यक्ति को एक पुत्र का आशीर्वाद दिया, बल्कि सारे परिवार को दुःखों से उबार लिया। कृपा की कोई सीमा नहीं है। एक 'शब्द' के अनुसार, दया की बारिश हर किसी पर होती है, पर जो विनम्र हैं, वही इसको संभाल सकते हैं, अपना सकते हैं, जैसे निम्न घाटियाँ तो पानी जमा कर पाती हैं, जबकि ऊँची चोटियों से सारा पानी बह जाता है।

– प्रदीप सूद, एक भक्त का सत्संग

गुरुजी की वाणी सुनते ही मन का विषाद गायब हो गया

संगत में जैसा कई लोगों के साथ हुआ होगा, मैं भी गुरुजी की शरण में तब आया, जब मैं मुसीबत में था और सारे उपाय निरर्थक हो चुके थे। मैं अत्यंत गहरे मनोविषाद से गुज़र रहा था, जो दवाओं के बावजूद प्रतिदिन और बिगड़ता जा रहा था। अब जब मैं मुड़कर देखता हूँ, तो विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि मुझे गुरुजी के पास बुलाया गया था। एक रात में ऐसी

ख़तरनाक बीमारी के चमत्कारिक उपचार की व्यवस्था तो की ही नहीं जा सकती है।

मेरा मानोवैज्ञानिक विषाद बहुत गहरा हो चुका था। मैं रोता रहता था, मेरे मन में आत्महत्या के विचार आने लगे थे। मैं तब भी मन को मजबूत कर काम पर

जाता और बाहरी तौर पर सामान्य रहने का प्रयास करता। मैं काम के बाद एक मंदिर जाने की प्रतीक्षा करता, वहाँ बैठता व शांति तलाशने का प्रयत्न करता। यह दिनचर्या चलती रही, पर मेरी तबियत और बिगड़ती गयी। एकाएक पारिवारिक मित्र ने मेरी माँ से गुरुजी के बारे में चर्चा की थी। मैंने तुरन्त माँ से संपर्क किया और गुरुजी का पता पूछा।

सन् 2000 ई. में मैं गुरुजी की शरण में आया। मुझे अपना पहला दिन भी याद है, जब मैं मन्दिर पहले पहुँचने वालों में से पहली बार था जब मैंने किसी मन्दिर किसी मंदिर में प्रवेश करते समय शांति का अनुभव किया। मुझे याद है कि मैं वहाँ बैठा रहा और लोगों के गंभीर रोगों और परेशानियों से मुक्ति की कहानियाँ सुनता रहा। मैंने मन ही मन सोचा, "मैं तो तब ही विश्वास करूँगा, जब मैं स्वस्थ हो जाऊँगा।"

GURUJI KA ASHRAM

पहले दिन के बाद मैं गुरुजी के मंदिर में नित्य जाने लग गया। मैं मन्दिर में जब तक रहता था, अतीव शांति का अनुभव करता था और जैसे ही बाहर निकलता था, फिर से वही अवसाद मन पर छा जाता था। चौथे या पाँचवे दिन, जब मैं गुरुजी के चरण–स्पर्श कर जाने की आज्ञा लेने गया, वे बोल पड़े, "तुम्हारी पत्नी सिटीबैंक में काम करती है।" उस समय तक संगत में मैंने किसी को भी अपने बारे में नहीं बताया था, पर उस क्षण मुझे अपने अंदर कुछ उठता हुआ प्रतीत हुआ। मैं शीघ्र ही सामान्य हो गया। मैंने तुरन्त पत्नी को फ़ोन पर बताया कि गुरुजी ने क्या कहा था। मैंने उससे यह भी कहा कि मैं जानता हूँ कि मैं अब ठीक हूँ। उस दिन के बाद से अब तक मुझे कभी भी मनोविषाद नहीं हुआ है।

बाद में, मुझे याद है कि गुरुजी से मैं मन ही मन बात करता था और मैंने एक बच्चे का आशीर्वाद देने के लिए उनसे प्रार्थना भी की। ठीक एक महीने के बाद मेरी पत्नी को पता चला कि गर्भवती है। उस दिन शाम में जब मैं गुरुजी से मिलने गया, उन्होंने कहा, "तुम्हारी पत्नी वह गर्भवती है, तेरा कल्याण हुआ, बेटा होगा।" बाद में हमें एक स्वस्थ बेटा हुआ। गुरुजी के आशीर्वाद से फिर 2004 से हमें दूसरा बेटा हुआ। आज हम जहाँ भी होते हैं, हमें पता है गुरुजी हमें मार्ग दिखााने के लिए और आवश्यकता में साथ देने के लिए अपने आशीर्वाद के साथ हैं।

– माइक्रोसॉफ्ट में अधिकारी, पृथ्वीराज सिंह का सत्संग

GURUJI KA ASHRAM

आशीर्वाद से गुर्दों का आकार बढ़ा

श्रीमती प्रोमिला मेहता को सन् 1995 ई. से ही उच्च रक्तचाप की बीमारी थी। जुलाई, 2000 में उनकी 'हिस्टरेक्टोमी' की गयी जिसमें आपरेशन से गर्भाशय को हटाया जाता है। चिकित्सकों ने ऑपरेशन तो कर दिया, पर उनके उच्च रक्तचाप को ध्यान में नहीं रखा। ऑपरेशन के बाद, उनका रक्तचाप 180/120 हो गया और दो सप्ताहों तक इसी स्तर पर बना रहा। वह दिल्ली ही के एक अस्पताल में जीवन के लिए जूझ रही थी। उसके गुर्दे हमेशा के लिए खराब हो गये थे उसमें क्रिकेनाइन का स्तर 1.8 से ऊपर चला गया, जो एक स्वस्थ इंसान की ऊपरी सीमा हैं। जिस अस्पताल में वह ठीक होने गयी थी, वहीं वह बीमारियों से आक्रान्त हो गयी। गुर्दे खराब होने के बाद उसने बंगलोर में उपचार कराया, नयी दिल्ली में ए आई एम्स में और नोएडा के कैलाश अस्पताल में भी उपचार कराया। उसने आयुर्वेदिक एवं होमियोपैथिक दवाओं का एवं एक्युपंक्चर थैरेपी का भी सहारा लिया। चिकित्सकों ने कहा गुर्दे का प्रतिरोपण की एकमात्र हल है।

बीमारियों से लगभग पाँच साल लड़ने के बाद उसे एक मित्र के द्वारा गुरुजी का पता चला। 1 अप्रैल, 2005 में उसने गुरुजी के बारे में जाना, पर दरबार में 21 जुलाई, 2005 को ही पहुँच पाई। उस दिन 'गुरु पूर्णिमा' थी। शायद उसी दिन गुरुजी ने उससे मिलना चाहा होगा क्योंकि सब कुछ उन्हीं की इच्छा पर निर्भर करता है।

गुरुजी ने प्रोमिला को ताम्र पात्र लाने के लिए कहा जिसे उन्होंने अभिमंत्रित कर दिया। उसने हर सुबह उससे पानी पिया। वह जुलाई, 2005 से दिसंबर, 2005

तक हर गुरुवार से रविवार, चारों संगत–दिन, गुरुजी के दर्शनों के लिए जाती रही। जैसे ही उस ताम्र–पात्र से उसने पवित्र जल पीना और नहाना शुरु किया, उसे महसूस हुआ कि उसकी त्वचा, विशेषतः गर्दन के आस–पास में सुधार आने लगा था। एक दिन, वह गुरुजी के पास बैठी हुई थी। उसने उनसे कहा कि उसके शरीर में रक्त न के बराबर है और वह बिल्कुल कमज़ोर महसूस करती है। गुरुजी उसकी बात सुनकर केवल मुस्कुराये।

13 दिसंबर की बात हैं वह एकाएक सुबह 5 बजे जग गयी। उसे अपनी नाक चिपचिपी लगी। उसने बिना देखे उसे पोंछ लिया। उसे फिर लगा कि नाक बह रहा है। उसने अब बत्ती जलाई और देखा कि उसकी नाक से निरंतर खून बह रहा था। उसने अपने बेटे को जगाया और दोनों कैलाश अस्पताल, नोएडा पहुँचे। चिकित्सकों ने रक्त–प्रवाह रोकने का प्रयास किया, पर असफल रहे और प्रोमिला को वहाँ भर्ती होना पड़ा।
प्रोमिला के पति बंगलोर में थे। उसने उन्हें सुबह 6.30 बजे यह सब बताया और तुरन्त दिल्ली आने के लिए कहा। उसे लगातर चार दिन तीन–तीन बार 'डाइलिसिस' पर रखा गया। तीन बोतल खून व 'प्लाज़्मा' की दो इकाइयां इसके शरीर में दी गयीं। उसकी त्वचा जो पीली पड़ गयी थी, लाल होने लगी, शरीर में रक्त भी था, जैसा उसने गुरुजी से कुछ दिन पहले मांगा था। प्रोमिला कहती है कि यदि कोई गुरुजी से कुछ मांगता है और यह उसकी भलाई के लिए है, तो आपकी वह मांग अवश्य पूरी होगी।

बहरहाल, उसने एक सप्ताह में अस्पताल छोड़ दिया और वह गुरुजी से मिलने गयी। उन्होंने उससे कहा कि उसके दोनों गुर्दे अब बिल्कुल ठीक हैं और उसे नया जीवनदान मिला है।

वह निरंतर गुरुजी की सेवा में आती रही, लंगर खाती रही, जो गुरुजी की कृपा का एक मुख्य हिस्सा है। लंगर में सुस्वाद भोजन, जैसे, सब्ज़ियाँ, चटनियाँ, अचार, मिठाइयाँ आदि होते हैं। चिकित्सक इनमें से अधिकतर खाद्यों से दूर रहने के लिए कहते हैं, पर प्रोमिला के अनुसार, ये सब आसानी से पाच्य हैं और वह भी इन्हें खाती रही।

फरवरी 2006 में वह पुनः बीमार हुई और कैलाश अस्पताल में उसे तीन बार डाइलिसिस पर रहना पड़ा। उसने फिर एम्स में नेफ्रोलॉजी के प्रमुख से सलाह ली। उन्होंने उसे अल्ट्रासाऊण्ड कराने की सलाह दी और कहा कि अगर रिपोर्ट अगस्त, 2003 के जैसा होगा, तब तो सामान्य उपचार होगा, पर अगर गुर्दे और छोटे हो गये होंगे, तब गुर्दा–प्रतिरोपण आवश्यक हो जायेगा। अल्ट्रासाऊण्ड हुआ और पाया गया कि गुर्दे बहुत छोटे हो चुके थे। वह गुरुजी की शरण में आयी और उनसे प्रार्थना की। जबकि वह जान चुकी थी कि प्रतिरोपण ही अंतिम उपाय है। गुरुजी ने उसे आशीर्वाद दिया।

अगले सोमवार, प्रोमिला ने फिर अल्ट्रासाऊण्ड करवाया। गुर्दों का आकार बढ़ चुका था, वे फिर से अगस्त, 2003 में जैसे थे, वैसे हो चुके थे। किसी प्रतिरोपण की आवश्यकता नहीं हुई। वह जब अस्पताल में थी, उसने गुरुजी की तस्वीर और रोगियों को भी दी। उसके साथ–साथ वे सब भी शीघ्र स्वस्थ हो गये।

जब प्रोमिला ठीक हो गयी, गुरुजी ने उसे सप्ताह में केवल एक बार आने के लिए कहा। गुरुजी के पास प्रतिदिन आना अच्छा लगता है, पर वे नये–नये लोगों को भी अपने आशीर्वादों से धन्य करना चाहते थे। प्रोमिला के लिए उनसे सप्ताह में एक बार मिलना भी अतिसंतोषप्रद था। एक लंगर पूरे सप्ताह के लिए उसमें उत्साह वह उमंगभर देता। गुरुजी से एक भेंट ही मन व शरीर प्रफुल्ल करने के लिए बहुत है।

– श्रीमती प्रेमिला मेहता, एक भक्त, का सत्संग

GURUJI KA ASHRAM

वे हर पग पर हमारी रक्षा करते हैं

मेरे माता–पिता गुरुजी के दर्शनों के लिए एम्पायर इस्टेट जून, 2001 से जाने लगे थे तथा हमें तत्क्षण ही अपने–अपने जीवन में सकारात्मक प्रभाव का अनुभव होने लगा था। मैं जर्मनी में अपनी नियुक्ति से अप्रसन्न–सा था। किन्तु, गुरुजी की कृपा से मेरी नियुक्ति सात महीनों में हो गई। और मेरा मन नौकरी में लग गया। इस दौरान, मेरी बहन का शादी–शुदा जीवन कठिनाइयों से गुज़र रहा था। हम लोगों ने ज्योतिषियों से सलाह ली और उन्होंने उसके वैवाहिक जीवन में समस्याएं ही देखीं पर गुरुजी के आशीर्वादों से उसके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आया।

मैंने भी सन् 2000 ई. से बहुत मुश्किलें देखी थीं, पर उनके आशीर्वाद से मैं उन सब को झेल पाया। एक बार यूरोप में मेरा थैला खो गया, जिसमें पासपोर्ट, क्रेडिट कार्ड एवं चाबियां थीं। मैंने गुरुजी को याद किया और तत्क्षण मुझे हवाई कम्पनी के अधिकारियों से सूचना मिली कि मेरा वह थैला मिल गया है। और उसमें हर सामान सुरक्षित है।

2006 में मैं पाकिस्तान जाकर वहाँ के सारे गुरुद्वारों में पूजा करना चाहता था। तीन महीनों के विलम्ब के बाद, जब मैंने आशा छोड़ दी थी, गुरुजी के आशीर्वाद

से मुझे वीजा मिल गया। उनके आशीर्वाद से मैं गुरुद्वारा पंजा साहिब भी जा सका, जो रावलपिंडी जिले में है, जबकि मुझे वीजा लाहौर तक का ही मिला था।

पिछले दो सालों में, मैं सिंगापुर में था और कार्य से संबद्ध कई मुद्दे मेरी परेशानी का कारण बने। मेरा अपने सहयोगियों के साथ रिश्ता भी ठीक नहीं रहा। पर इन सब से गुरुजी ने मुझे उबार लिया। गुरुजी की कृपा से मुझे एशिया में सबसे अच्छे विश्वविद्यालयों में से एक में एम बी ए के लिए दाखिला मिल गया।

एक दिन मेरा पैर एक तेज आती बस के नीचे आने से बच गया। मैं बाल–बाल बचा। पर घर पर मैंने देखा कि गुरुजी की तस्वीर का फ्रेम चकनाचूर हो चुका था, किन्तु तस्वीर सुरक्षित थी। मैं समझ गया कि उन्होंने स्वयं मेरी जान बचायी थी।

मेरे पिता के शरीर में ट्यूमर पाया गया, जो घातक था। उनकी 'कीमोथैरेपी' और सर्जरी करानी पड़ी, पर उनको उपचार से लाभ हुआ और वे जल्दी ठीक भी होने लगे। गुरुजी ने उन्हें नया जीवन दिया।

जीवन के हर पल में गुरुजी हमारे संरक्षक रहे हैं। अगर मैं उनके अनन्त चमत्कारों का वर्णन करने लगूँगा, तो शब्द कम पड़ जायेंगे। न केवल मेरे माता–पिता या मेरी बहन पर उनकी कृपा रही, बल्कि मेरे चचेरे भाई को भी उन्होंने आशीर्वाद दिया, जिसके साथ दो साल पहले चंडीगढ़ में दुर्घटना हो गयी थी। गुरुजी हमारी हर इच्छा जान लेते हैं और उसकी सही समय पर पूर्ति कर

देते हैं। वे निरंतर हमारे साथ, हमारे लिए हैं। मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर का धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने हमें गुरुजी की छत्र–छाया में लाकर उनकी असीम कृपा का पात्र बनाया।

– सिमेन्स में मैनेजमैंट कंसंटेंट, पुनीत सिंह का सत्संग

GURUJI KA ASHRAM

कई बार मेरा हृदय प्रेम से सराबोर हो जाता है

गुरुजी से मिलना मेरे जीवन का सबसे अनमोल पल रहा है। मुझे पहली बार उनके दर्शनों का सौभाग्य मिला मार्च, 2005 में, जब मैं बहुत बीमार थी। मेरे पाँवों में इतनी सूजन आ गयी थी कि मेरी बेटियाँ उन्हें बिछावन से उठाती थीं और वापस रखती थीं। फर्श पर बैठना तो दूर, मैं चल पाने में भी अक्षम थी। अस्पतालों के कई चक्कर लग चुके थे। मुझे गुरुजी के पास मेरी एक छियानवे वर्षीया रिश्तेदार और उनके पुत्र एवं पुत्रवधू ले गये।

जब मैं पहली बार गुरुजी से मिलने गयी, मुझे चलने में दिक्कत थी, साँस लेने में दिक्कत थी, किन्तु जब मैं लंगर के बाद वापस घर गयी, मैं वर्षों के बाद आराम से सो सकी। उन दिनों मैं जैसे बीमारियों का घर बन चुकी थी, मेरे रक्त में 'शूगर–स्तर' अधिक था, रक्तचाप अधिक था, कॉलेस्ट्रोल स्तर अधिक था, मुझे थाइरॉयड एवं गुर्दे की बीमारी थी। मुझे सोते समय ऑक्सीजन की कमी के कारण सांस लेने में परेशानी होती थी। मैं बिल्कुल शक्तिविहीन हो चुकी थी

और मेरे शरीर में सूजन होने के कारण विछावन पर लेटने के अलावे मैं कुछ नही कर सकती थी।

गुरुजी ने मुझे जीवन दिया, नया उत्साह, नयी उमंग दी। बीमारियों से निजात दिलवायी। मैंने न केवल शारीरिक रोगों से मुक्ति पायी, बल्कि मुझे मानसिक राहत, मानकिस संतुष्टि भी मिली।

गुरुजी से दूसरी या तीसरी भेंट के दौरान उन्होंने हमें लंगर के बाद बैठने के लिए कहा। उनका संगत के प्रति अनुराग अतीव होता है और मैं भी वहाँ बैठकर परमानंद का अनुभव कर रही थी और सब कुछ भूल चुकी थी। उनके समक्ष सारी समस्याएं लुप्त हो जाती हैं और वे अपने भक्तों का जीवन इतना सरल व समस्यामुक्त बना देते हैं कि उनमें जिजीविषा जाग उठती है और वे सदा गुरुजी की कृपा में ही रहना चाहते हैं।

गुरुजी मेरे लिए सब कुछ हैं। मैं अपने जीवन में उनसे बड़ा न किसी को मानती हूँ और न मानना चाहती हूँ। वे एक दिव्य शक्ति हैं जो इस लोक पर हमारा उद्धार करने ही आये हैं। उनके पास पहुँच जाना ही अपने आप में एक चमत्कार है। हमें उनकी आवश्यकता है, पर हम उन्हें केवल अपना अशर्त प्रेम व विश्वास दे सकते हैं। हमारा उनके संसर्ग में होना ही दर्शाता है कि पिछले जन्मों में हम उनका एक हिस्सा थे और अब भी हम उनका ही एक हिस्सा हैं। हमे संगत को एक परिवार के रूप में समझना चाहिए।

मुझे गुरुजी का संपर्क कुछ ही समय से मिला है, पर मुझे अहसास है कि हर बार जब भी मेरा जीवन खतरे में आया, उन्होंने मुझे बचा लिया।

सन् 1994 ई. में, मेरी पति का विवाहेतर संबंध हो गया, मेरी तो दुनिया ही बिखर गयी। फिर भी मैंने यह सोचकर अपने आप को संभाल लिया कि एक दिन सब ठीक हो जायेगा। मैं एक हिन्दू थी, मैंने प्रेम–विवाह किया और एक मुस्लिम से विवाह कर मैंने धर्म–परिवर्तन कर इस्लाम धर्म अपना लिया। सन् 2006 में मेरे पति ने अपनी प्रेमिका से शादी कर ली, फिर भी मैं मानसिक तौर पर शांत बनी रही। शायद गुरुजी ने ही मुझे वह आत्म–बल दिया, जिसके सहारे मैं सब कुछ झेल गयी। मैं उस समय कुछ भी कर सकती थी, पर मैंने अपने आप को संभाले रखा।

सन् 1998 में मेरी सात–आठ घंटों की सर्जरी हुई थी, इसके बाद मेरी सांसें टूटे रही थीं, पर गुरुजी ने मुझे बचा लिया।

हाल में, होली के आस–पास, मेरे पाँव में फफोले हो गये और धीरे–धीरे उनमें विगलन भी शुरु हो गया। घावों से दुर्गन्ध आने लगी। चिकित्सकों ने निरीक्षण किया और कहा कि पैर की बड़ी अंगुली को काटना पड़ेगा। उस दिन वृहस्पतिवार था। और शुक्रवार को मैं गुरुजी से मिलती थी। उनकी आज्ञा के बिना मैंने चिकित्सकों को आपरेशन नहीं करने दिया। गुरुजी से मैं शुक्रवार को मिलने गयी और उन्होंने कहा कि घाव ठीक हो जायेगा और मुझे एक छोटा चीरा लगवाने के लिए कहा। लगभग एक महीने में मेरा घाव बिल्कुल ठीक हो गया। मुझे अभी भी तलाश है किसी व्यक्ति की, जिसके शरीर में विगलन इस तरह से ठीक हुआ हो।

कई बार मुझे बहुत अफ़सोस होता है कि मैंने अपने शरीर का यथोचित ध्यान नहीं रखा है। अगर मैं जानती कि एक दिन मैं ऐसे दिव्य व्यक्तित्व के समक्ष

होऊँगी, मैं अवश्य अपना ध्यान रखती और गुरुजी को अपनी बीमारियों से परेशान नहीं करती क्योंकि भक्तों की सारी पीड़ा वे अपने ऊपर ले लेते हैं। मैं उन्हें भक्तों की पीड़ा लेते देख बहुत लाचार महसूस करती हूँ।

मैं अभी भी नहीं जानती कि मैंने उनके प्रति पूरा समर्पण किया है या नहीं। क्या मेरा उन पर अटूट विश्वास है और क्या मैं उनसे अर्शत प्रेम करती हूँ ? मुझे बस इतना पता है कि जब से मैं उनसे मिली हूँ, मैं उनके निकट रहना चाहती हूँ। गुरुजी के प्रति हमारी आस्था यूँ ही बढ़ती रहे। कैसी भी परिस्थिति हो, मैं उनके पास निर्बाध पहुँच सकूँ। मेरी तो बस यही प्रार्थना है कि वे मेरी नियति ऐसी कर दें कि मैं सदैव उनकी उपस्थिति महसूस कर सकूँ। जितना मैं उनसे मिलती हूँ, उतना और मिलने की इच्छा होती

है, इस प्यास को बुझाने के लिए एक जीवन कम है। हमारी इस अनवरत आत्मिक प्यास का भी हल उन्हीं के पास है।

मैं हमेशा अपनी बेटियों को लेकर, जो अभी बहुत छोटी हैं, बहुत चिंतित रहती थी कि मेरे बाद उनका क्या होगा। पर, मेरी यह चिन्ता भी दूर हो गयी है, मुझसे अधिक मेरी बेटियाँ गुरुजी के सानिध्य में आश्वस्त रहती हैं। और जो प्यार उनके पिता उन्हें नहीं दे पाये, वो उन्हें गुरुजी से मिलता है और गुरुजी के दिव्य दर्शन ही मेरे लिए मोक्ष हैं। यह मेरे लिए मेरी यात्रा की शुरुआत है जहाँ मार्ग अज्ञात है, पर रोमांचक है और गन्तव्य दिव्यत्व तक पहुँचना है।

कई बार गुरुजी मेरी और देखते और कहते, "तुम्हारे अल्लाह तुम्हें राहत नहीं दे सके" और मैं उनकी और अवाक होकर देखती, कुछ भी कह पाना कठिन होता। और मैं सर भी नहीं हिला पाती। आज मैं जान गयी हूँ कि यह बात स्वयं अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं बोल सकता था। शनैः शनैः मैंने जान लिया है कि गुरुजी ही वह असीम शक्ति हैं, जिसके हम सब एक अंशमात्र हैं। अलग–अलग समय में, अलग–अलग रूप में वे इस मर्त्यलोक पर मानवजाति के त्राण के लिए आते रहे हैं और उसे कष्टों से उबारते रहे हैं। कोई उन्हें कुछ भी कह ले, अल्लाह, राम या गुरु नानक। काश ! मैं उस मानसिक अवस्था में पहुँच पाती, जहाँ केवल उनका अस्तित्व हो। काश ! मैं उनके चरण कमलों से स्थायी रूप से जुड़ पाती।

हमें जो भी आवश्यकता है, उसकी उन्होंने पूर्ति की है। उनका व्यक्तित्व इतना विशाल है और हमारा इतना छोटा कि हम उनके लिए कुछ नहीं कर सकते। हम केवल उनका गुणगान कर सकते हैं और जीवनभर उनको धन्यवाद दे सकते हैं।

वे सदा हमारी गलतियों को क्षमा करते हैं। हम मानव हैं और हमसे गलतियाँ तो होंगी ही। अतः गुरुजी सदा हमें लोभ–लिप्सा से बचाएँ और हमारा उनके प्रति अनुराग व समर्पण हमारी अंतिम सांसों तक बढ़ता रहे। हम उनकी छत्र छाया पाने वाले भाग्यशाली लोग हैं। हम सब अपने आपको उनके सानिध्य में मानसिक तौर पर आश्वस्त और पूर्ण पाते हैं और हृदय में अशांति व व्यग्रता के अनुभव का तो सवाल ही नहीं है।

मैं स्वयं में इतनी शांत हूँ, शायद यह स्थिति परमशांति की हैं कई बार, हृदय में कृतज्ञता का अनुभव इतना अधिक होने लगता है कि बिना किसी कारण आँसू निकलने लगते हैं। यह कमाल का अनुभव है, जब किसी के प्रति केवल प्रेम का अनुभव करने से, अकारण आँसू निकल पड़े।

गुरुजी के केवल दो दर्शनों के बाद ही मेरी इच्छा उनके ही साथ रहने के लिए बलवती हो गयी थी। मेरे पति अनिच्छा जताते, हमारा झगड़ा होता और अंततः मैं गुरुजी आने के लिए बहाना बनाया है और मैं सोचती कि उन्हें कैसे सब ज्ञात हो जाता है। मुझे लगता कि मैं शायद अस्त–व्यस्त सी दिखती थी। पर अब मैं जानती हूँ कि वे

स्वयं सर्वशक्तिमान ईश्वर हैं, उनसे कुछ छिपा तो है ही नहीं, वे तो सर्वज्ञानी हैं। हम तो एक धागे पर पुतलियाँ हैं और हम उनके इशारे पर नाचते हैं। हमारा उनके बिना कोई अस्तित्व नहीं है।

गुरुजी के दिव्य व्यक्तित्व को शब्दों में समेटना शायद असंभव सा है। सारे सागरों का पानी स्याही में परिवर्तित हो जाये और सारी धरती कागज़ बन जाये तब भी यह कार्य असंभव ही है। मैं अपने गुरु जी का गुणगान अनन्तकाल तक करते रहना चाहूँगी और उनसे यह करने के लिए आशीर्वाद भी चाहूँगी। मेरे पास शब्द शायद कम पड़ जायें, पर उनके प्रति प्रेम, आस्था और विश्वास की कमी नहं। मैं अपनी पाँचों ज्ञानेन्द्रियों को उनके चरणों में समर्पित करना चाहूँगी और प्रार्थना करूँगी कि वे मेरी इस भेंट को स्वीकार करें।

– पूर्णिमा अली, एक भक्त, जिनकी मृत्यु गुरुजी की महासमाधि के कुछ ही दिनों के बाद हो गयी

GURUJI KA ASHRAM

पहली भेंट में ही सारी इच्छाएँ पूर्ण होती हैं

मैंने सबसे पहले गुरुजी के बारे में कर्नल डी एस चटर्जी से सन् 2001 ई. में सुना, जिसने मुझे उनकी तस्वीर दिखायी और चमत्कारों के बारे में बताया।

मैं उन दिनों खराब दौर से गुज़र रहा था। नये शहर में नयी नौकरी थी। पदभार ग्रहण करने के लिए महीने के अन्दर ही मेरा स्थानातरण यू. के. में हो जाना चाहिए था, पर नौ महीने से हो चुके थे और स्थानान्तरण की बात भी नहीं चल रही थी, और तो और दिल्ली जैसे महंगे शहर में बसने के लिए मुझे अत्यधिक खर्च करना पड़ा था। मेरी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी और एकाएक मेरी पत्नी का गर्भपात भी हो गया था। उसके शरीर में इसके बाद कुछ जटिलताएं आ गयी थीं तथा स्त्री रोग विशेषज्ञों ने अपने आप हालत न सुधरने पर सर्जरी ही एक उपाय बताया था।

हम लोग जुलाई, 2001 में गुरुजी के दर्शनों के लिए एम्पायर इस्टेट गये। लेकिन गुरुजी जालंधर चले गये हैं, यह सुनकर हम बहुत निराश हुए। उसी महीने में अगली बार, हमें गुरुजी के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उन्होंने हमसे थोड़ी देर बात की और हमें लंगर तक रुकने के लिए कहा। उन दिनों में कुछ ही लोगों को लंगर के लिए रोका जाता था।

उस दिन जब हम घर आये, हमें एक अप्रत्याशित आनन्द का अनुभव हुआ। और हम बहुत दिनों के बाद आराम से सो पाये। उसके बाद, हमारे जीवन में सब कुछ धीरे–धीरे ठीक होने लगा। मेरी पत्नी की शारीरिक बीमारियाँ स्वयं समाप्त

हो गयी। कुछ ही महीनों में मुझे पहली बार विदेश में कार्यभार मिला, जिसमें मुझे अपार सफलता मिली, जिसके कारण उसके थोड़े ही दिनों के बाद विदेश में मेरी नियुक्ति लंबे समय के लिए कर दी गयी, जो अभी भी जारी है। कुछ ही सालों के बाद, उनका हमें सबसे बड़ा आशीर्वाद मिला, एक पुत्र के रूप में।

रक्तचाप

मेरी पत्नी को बहुत सालों से उच्च रक्तचाप की बीमारी थी। उसे निरंतर दवाइयाँ लेनी होती थीं क्योंकि अति रक्तचाप से और बीमारियाँ हो सकती थीं, खासकर बच्चे को जन्म के समय तरह–तरह की जटिलताएँ आ सकती थीं। वैसे, सदा दवाइयों पर निर्भर रहना भी बहुत अच्छी बात नहीं थी, पर वह जैसे हो दवाइयाँ बंद करती, उसका रक्तचाप अतिशय बढ़ने लग जाता।

एक दिन, सन् 2003 की शुरुआत में एम्पायर स्टेट में संगत में मैं और मेरी पत्नी प्रसाद लेने के लिए पंक्ति में खड़े थे। गुरुजी ने हमें एक ही रंग के कपड़ों में देखकर (मैं और मेरी पत्नी ने एक ही रंग के कपड़े पहन रखे थे) हमसे कुछ परिहास किया। फिर उन्होंने मुझसे पूछा कि कैसे मैं चंडीगढ़ की इस लड़की से शादी कर पाया। इन सारी बातों ने

हमारी मानसिक परेशानियों को वैसे ही कम कर दिया और हमें प्रफुल्लता भी हुई। यह प्रफुल्लता मेरी पत्नी से रक्तचाप पर भी असर कर गयी। अगले दिन, जीवन में पहली बार उसका 'डाइस्टॉलिक' रक्तचाप 80 के अंक पर था और बिना दवाइयों के। उसके बाद उसे रक्तचाप की समस्या कभी नहीं हुई, हाँ, गर्भावस्था के उत्तरार्द्ध में कुछ समस्या अवश्य हुई, पर इससे न तो गर्भ–विकास पर कोई असर पड़ा और न ही प्रसव अपने निश्चित काल से पहले हुआ। उसे गर्भावस्था के उत्तरार्द्ध में व प्रसूति के बाद कुछ दिनों तक रक्तचाप के नियंत्रण के लिए दवाइयाँ भी लेनी पड़ी, पर फिर सब कुछ ठीक हो गया।

विदेशों में कार्यभार

सितंबर, 2000 में दिल्ली में सिमेन्स कंपनी से मेरे जुड़ने का एक बड़ा कारण था, 'यू.के.' में लम्बे समय के लिए नियुक्ति का आकर्षण। पर ऐसा हुआ नहीं, वैसे गुरुजी के आशीर्वाद से मैं एक दो बार थोड़े–थोड़े समय के लिए 'यू.के.' अवश्य गया। सन् 2002 तक विदेशों में दीर्घकाल की नियुक्ति को मेर सपना लगभग टूट चुका था क्योंकि संयुक्त राज्य अमेरीका में 9–11 आक्रमणों के बाद सूचना प्रौद्योगिकी के अंतरराष्ट्रीय बाजार में मंदी आ चुकी थी। फिर भी, मैं गुरुजी से, संगत में भी और घर में थी, प्रार्थनाएं करता रहा और अप्रैल, 2003 में मुझे 'यू.के.' में कार्यभार मिला। यह कार्यभार केवल 6 महीनों के लिए था, पर यह उस समय मुझे मिला था, जब दुनियाभर की कंपनियों में कर्मचारियों की संख्या कम की जा रही थी।

जिन दिनों में अपने कार्य–अनुमति–पत्र की प्रतीक्षा कर रहा था और विदेश जाने की तैयारियों में लगा था, मुझे गुरुजी के एक भक्त की शादी के

स्वागत–समारोह में आने का आमंत्रण मिला। जिस लिफ़ाफे में आमंत्रण–कार्ड था, उस पर स्वयं गुरुजी के द्वारा 'इंगलैंड' लिखा हुआ था।

जब हम विदेश जाने के पहले गुरुजी की आज्ञा लेने गए, मेरी पत्नी हमारी अनुपस्थिति में अपने पिता व अपनी बहन, जो 'डाऊन सिंड्रोम' की रोगी थी, की कुशलता के लिए गुरुजी से आशीर्वाद लेने के लिए उनसे कहने वाली ही थी कि गुरुजी बोल पड़े, "मेरे से बड़ा माँ–बाप कौन है ?" हमें ऐसा लगा कि हमें उनकी कुशलता के लिए सबसे बड़ा आश्वासन मिल चुका है।

इंग्लैंड में ब्लैकपूल (मैनचेस्टर के पास) पहुँने के बाद मुझे कहा गया कि मेरा कार्यभार 6 महीनों के बदले 4 महीनों में भी ख़त्म हो सकता है। पर गुरुजी के आशीर्वाद से मेरा कार्यभार पूरा समय तो रहा ही, साथ ही मेरा अनुबंध किसी दूसरे प्रोजेक्ट के लिए उसी जगह पर बढ़ा दिया गया। यह अनुबंध 10 महीनों का था। इसके बाद, अगस्त, 2004 में जब मैं भारत लौटने के तैयार था, मुझेक 'यू.के.' में ही बरमिंघम के पास टेलफोर्ड में दूसरे कार्यभार के लिए नियुक्त कर दिया गया, जो

एक साल के लिए था। इस अनुबंध के बीच में ही मुझे नौटिंघम भेज दिया गया, जहाँ प्रोजेक्ट की समाप्ति के समय मुझे पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। अब जब हम सितंबर, 2005 में भारत वापस आने की तैयारी कर रहे थे, मुझे लंदन में 'बी बी सी' के साथ एक अनुबंध के लिए स्थानान्तरिक कर दिया गया। शुरुआत में तो नियुक्ति तीन महीनों के लिए थी, पर अब तो दो साल हो चुके हैं और मैं अभी इसी कार्यभार के साथ लंदन में ही हूँ।

नौटिंघम में स्थानातरण

मैं इंग्लैंउ के श्रॉपशायर के एक छोटे शहर, टेलफोर्ड में नियुक्त था, जब मेरी पत्नी गर्भवती हुई। जगह रहने के लिए ठीक थी, पर गर्भावस्था के दौरान की चिकित्सकीय सुविधाओं के लिहाज़ से बिल्कुल अच्छी नहीं थी। स्थानीय अस्पताल का प्रासविक विभाग प्रसाविकाओं की देख–रेख में था और वहाँ कोई सलाहकारी इकाई भी नहीं थी। अधिक पेचीदगी होने पर गर्भवतियों के 'श्रेयुस्बेरी' के बड़े अस्पताल में जाने के लिए कहा जाता था, जो लगभग 16 मील दूर था और टैक्सी से वहाँ पहुँचने में आधे घंटे से भी अधिक लगता था। इससे अलावा टैक्सी से जाना–आना काफ़ी ख़र्चीला भी था।

मेरी पत्नी को उच्च रक्तचाप की बीमारी थी जिसका मतलब यह लगभग निश्चित था कि मेरी पत्नी को 'श्रेयुस्बेरी' के अस्पताल में जाना ही पड़ेगा। हम उसी प्रसूति–पीड़ा के समय या किसी भी आपातकाल में इतनी दूरी की यात्रा को सोचकर बहुत डरे हुए थे, वैसे वहाँ राष्ट्रीय स्वास्थ्य सेवाओं के द्वारा प्रदत्त एम्बुलेंस सेवा सराहनीय थी। वहाँ प्रसव के लिए पत्नियों की भर्ती अस्पताल में हो जाने के बाद पतियों को अस्पताल में रात में रुकने की अनुमति नहीं थी, जबकि मैं पत्नी के अस्पताल में भर्ती होने के बाद रात में अस्पताल से निकटतम

दूरी पर ही रहना चाहता था, पर घर वापस चले जाने के बाद ऐसा हो नहीं सकता था।

एक रात मेरी पत्नी ने स्वप्न में देखा कि वह गुरुजी के चरणों में बैठी हुई है और गुरुजी ने उसे आश्वासन दिया है कि सब कुछ ठीक हो जायेगा। सदा की तरह हमने सब कुछ गुरुजी के भरोसे छोड़ दिया। कुछ ही दिनों में हमें सूचना मिली कि टेलफोर्ड की इकाई बंद हो रही है और सारे कर्मचारियों को नौटिंघम स्थानातरित किया जा रहा है, जहाँ बेहतर नागरिक सुविधाएं उपलब्ध थीं। अंततः मेरे बच्चे का जन्म नौटिंघम के 'क्विन्स मेडिकल अस्पताल' में हुआ, जिसे इंग्लैंड में प्रासविकी के लिए सबसे अचछे अस्पतालों में से एक माना जाता था।

नौटिंघम में घर

यूँ हमारा स्थानान्तरण सुविधाओं की दृष्टि से सही था, पर हमारा कार्यभार बहुत बढ़ा दिया गया था और हमें नौंटिंघम पहले जाकर वहाँ घर खोजने की भी अनुमति नहीं दी गयी । हम जिनके लिए काम करते थे, उन्हें हमारे लिए घर

ढूँढ़ने के लिए कहा गया। मैंने प्रबंधक को अपनी पत्नी के गर्भवती होने की बात बतायी और मुझे अपनी पसन्द का घर लेने की अनुमति देने के लिए कहा। पर मुझे यह अनुमति नहीं दी गयी। कुछ घरों का विकल्प मुझे दिया गया, पर मुझे कोई भी पसन्द नहीं आया। इन सब प्रक्रियाओं के शुरु होने के पहले मैंने एक बार वैसे ही इंटरनेट पर घर खोजा था और पहले ही प्रयास में एक घर मिला, जो क्विन्स मेडिकल अस्पताल के पास था, जहाँ मेरी पत्नी को प्रसव काल के लिए भर्ती होना था। मुझे घर पसंद आया, यूँ मुझे इलाके का थोड़ा भी अंदाजा नहीं था, वैसे तस्वीरों में तो सब कुछ ठीक–ठाक ही लग रहा था।

किन्तु अब, अधिकारियों के द्वारा दिये गये विकल्पों को छोड़कर हमने इसी घर को किराये पर लेने का मन बना लिया और अधिकारियों को उसका मूल्यांकन करने के लिए भी नहीं कहा। वैसे यह निर्णय हमारे प्रोजेक्ट प्रबंधक के लिए रुचिकर नहीं था क्योंकि मैं उसके उच्चाधिकारियों के निर्णय को ठुकरा रहा था। किन्तु हमने गुरुजी में विश्वास कर, उन्हें याद कर अपनी अंर्तध्वनि पर ही फैसला लिया।

वह घर इंग्लैंड में हमारे लिए सबसे अच्छा घर साबित हुआ। घर सुसज्जित व उपस्कारित था। क्विन्स मेडिकल अस्पताल से दस मिनट पैदल की दूरी था। दस स्थानान्तरित लोगों में से बाकी सबको निवास में समस्याएँ आयं, जिनका घर अधिकारियों के द्वारा निश्चित किया गया था।

भ्रूण की हृदय–गति

हम एक बार क्विन्स मेडिकल अस्पताल गर्भ की सामान्य जांच कराने गये और वहाँ भ्रूण की हृदय गति की जांच हुई सामान्यतः 200 के आस–पास आ रहा था और तब एकाएक उसमें कंपन बढ़ गया और पाठ्यांक लगभग 220 तक चला गया और उस स्तर पर बना रहा। 200 के अंक तक तो प्रसाविका दिलासा दे

रही थी कि 200 अधिक है, पर यह एक असामान्य हृदय गति भ्रूण के लिए नहीं है, पर 220 पहुँचने पर वह भी चिकित्सकों से सलाह लेने भागी। मैं बहुत डर गया और गुरुजी को यादकर मैंने उनकी तस्वीर मेरी पत्नी के पेट के उभार पर रख दी और मन ही मन में महामृत्युंजय जाप किया। कुछ ही सेकेंडों में, भ्रूण की हृदय गति सामान्य हो गयी व वहाँ स्थिर हो गयी और जब तक प्रसाविका चिकित्सकों के साथ वापस लौटी, सब कुछ ठीक हो चुका था।

बच्चे का जन्म और बाद की जटिलताएँ

नौटिंघम में सन् 2005 ई. में, गुरुजी की कृपा से हमें एक पुत्र हुआ। इंग्लैंड के क्वीन्स मेडिकल अस्पताल में उसका जन्म हुआ। मेरी पत्नी को प्रसूति के समय काफ़ी पीड़ा हुई एक बार दवाइयों के बावजूद उसका 'डाइस्टॉलिक रक्तचाप' 132 के अंक तक चला गया और वह दर्द से विक्षिप्त सी हो गयी थी। चिकित्सक उसकी यह पीड़ा देखकर आपातकालीन सिज़ेरियन ऑपरेशन की सोचने लगे। पर गुरुजी से प्रार्थना करते ही उसकी हालत सुधरने लगी और बच्चे का सामान्य जन्म हुआ।

स्वस्थ बच्चे के जन्म की प्रसन्नता जल्दी ही धूमिल पड़ गयी, जब शुरुआती रक्त जाँच में कुछ संक्रमण पाया गया और बच्चा जन्म के बाद कुछ दिनों तक मूत्र त्याग भी नहीं कर पा रहा था। उन्होंने दो दिन के बच्चों पर लम्बर पंक्चर कई बार किया, किन्तु मेरुदंडीय द्रव नहीं पाये। फिर उन्होंने कई सारी एंटीबायोटिक दवाएं दीं, यह सोचकर कि कोई न कोई तो संक्रमण को ठीक कर ही देगी। इसके अलावे, चिकित्सक बच्चे के जन्म के बाद लगभग चार दिनों तक उसके मूत्र त्याग न करने से और अधिक चितिंत थे जबकि उसे निर्जलन से बचाने के लिए उन्होंने हर तरह के उपाय किया था। कुछ चिकित्सकों ने उसके गुर्दों के खराब होने का संदेह किया क्योंकि गुर्दों के निरीक्षण के बाद नतीजे सामान्य नहीं थे, जबकि दूसरे चिकित्सकों ने निर्जलन को संक्रमण का कारण मानने से इंकार कर दिया क्योंकि उसे अतिरिक्त द्रवाहार दिया जा रहा था।

इन सब के अतिरिक्त मेरी पत्नी को मूत्र में तीक्ष्ण संक्रमण हो गया और उसके शरीर का तापमान 105 अंश हो गया। दोनों, माँ एवं बच्चे को संकटकालीन चिकित्सा कक्ष में स्थानातरित कर दिया गया। मैं परदेश में था, न कोई परिवार, न कोई रिश्तेदार, मेरे सहयोगी भी प्रोजेक्ट की समाप्ति के बाद वापस लौट गये थे। मैंने गुरुजी की तस्वीर से बच्चे के शरीर का स्पर्श किया और उसके विछावन पर भी कई बार रखा, उनका आशीर्वाद ही हमारे लिए इन विषम परिस्थितियों में एक सहारा था और हमने मन ही मन उनसे सर्वाधिक भावप्रवण प्रार्थना की।

शनैः शनैः सब कुछ ठीक होने लगा। बच्चे ने पहली बार मूत्र–त्याग किया, उसका संक्रतण भी सदा के लिए अदृश्य हो गया। चिकित्सक अब यह सोच रहे थे कि बच्चे के रक्त में पाया जाने वाला संक्रतण शायद उसकी माँ का था। मेरी

पत्नी सघन एंटीबायोटिक दवाओं के उपचार के बाद ठीक हो गयी और दोनों को शिशु जन्म के लगभग दो सप्ताह के बाद अस्पताल से छुट्टी भी मिल गयी।

लंदन में स्थानांतरण

नौटिंघम में हमारा कार्यकाल सफलता के साथ समाप्त हो चुका था, मेरे सारे सहकर्मी भी वापस जा चुके थे, पर हमें रुकना पड़ा क्योंकि मेरी पत्नी की गर्भावस्था का नौवाँ महीना था और प्रसूति कभी भी हो सकती थी। बच्चे के जन्म

के बाद भी हमने एक महीना वहीं रुकने का निर्णय लिया। यूँ हमें वापस भारत जाने से पहले कम से कम तीन–चार महीने रुकने की सलाह दी गयी क्योंकि हवाई जहाज की आवाज़ नवजात शिशु के कान के पर्दों को सदा के लिए क्षतिग्रस्त कर सकती थी। भारत में मेरी कंपनी के अधिकारियों ने इंगलैंड में अधिकारियों से बात कर मेरे लिए इंग्लैंड में ही किसी अनुबंध की व्यवस्था करने का वादा अवश्य किया, पर मेरी योग्यता के अनुसार सुविधाजनक जगह में नियुक्ति कठिन प्रतीत हो रही थी। हमने गुरुजी से गुहार लगायी और शिशु के जन्म के एक सप्ताह के अंतराल में ही इंग्लैंड में कंपनी के वाणिज्य प्रबंधक के द्वारा पन्द्रह दिनों मं लंदन में बी बी सी साईट पर अपना कार्यभार संभालने का अवसर दिया गया। अपने तीन सप्ताह के बच्चे और उसकी शारीरिक समस्याओं और पत्नी के अधिक दर्द में होने के बावजूद, गुरुजी की कृ

पा से मैं इन दोनों के साथ अपने नये अनुबंध के लिए लंदन पहुँच गया। नौटिंघम से लंदन पहुँचने में लगभग तीन घंटे लगते हैं, पर हमें यातायात की कुछ समस्याओं के कारण 6 घंटे लगे। मेरी पत्नी को यात्रा में अत्यधिक दिक्कतें आयीं। पर, गुरुजी की असीम अनुकम्पा से वह लंदन में शीघ्र ठीक हो गयी। हम आज भी लंदन में ही हैं।

– सिमेन्स एक्सिक्यूटिव, बी बी सी लंदन, पुष्पल दास और उनकी पत्नी, सुदेशना दास का सत्संग

GURUJI KA ASHRAM

मिर्चों का उपचार

हम गुरुजी से तब मिलने गये, जब हमने उनके वारे में अपने एक मित्र से सुना। गुरुजी हमें आशीर्वाद दिया और सप्ताह में दो बार आने के लिए कहा। मैं उन दिनों बवासीर और रक्त में शर्करा की मात्रा से परेशान था। संगत में हमें लंगर परोसा जाता था। पर खाने में मिर्चें अत्यधिक होती थीं। मैं वहाँ खाने में डरता था क्योंकि मिर्चें मेरे बवासीर की समस्या को और बढ़ा सकती थीं। किन्तु, यह भोजन गुरुजी का आशीर्वाद था और मैं यह सोचकर इसे खा लेता था। हैरानी की बात है कि मैं गुरुजी के दरबार में आता रहा, मिर्चों वाला लंगर खाता रहा और मेरा बवासीर ठीक होने लगा, जो बीमारी पिछले 10 सालों में दवाओं से ठीक नहीं हुई थी, एक दिन ठीक हो गयी। आजकल तो मैं घर पर भी भोजन के साथ मिर्च, अलग से लेकर, खा लेता हूँ।

जहाँ तक रक्त में शर्करे की बात है, उपवास के बाद उनका स्तर 124 मि.ग्रा. /लीटर और खाने के बाद 175 मि.ग्रा./लीटर था। आदर्श स्थिति में उनका स्तर 100/140 मि.ग्रा./लीटर से अधिक नहीं होना चाहिए। और तो और, जब भी मैं गुरुजी के दरबार में होता, कम से कम आधा किलो मिठाई उनके प्रसाद के रूप में खा लेता था। सामान्यतया, मेरे रक्त में शर्करे की मात्रा बढ़नी चाहिए

थी, पर यह घटकर 91/141 मि.ग्रा./ली. के स्तर पर आ गयी। बस्तुतः, आजकल मुझे कभी–कभी चीनी या मीठा खाद्य खाना पड़ता है, जिससे मेरे रक्त में शर्करे का स्तर बिल्कुल कम न हो जाये। मैंने रात में मधुमेह की दवाइयाँ लेनी भी बंद कर दी हैं और सुबह उनकी मात्रा घटा दी है। ऐसी महिमा है गुरुजी की।

मुझे एक और शारीरिक समस्या थी, मूत्र–द्वार के अवरुद्ध होने की। गुरुजी के दर्शनों के पहले, सर गंगाराम अस्पताल, दिल्ली में चिकित्सकों की सलाह पर मेरा एक छोटा ऑपरेशन हो चुका था। किन्तु, इसके दो महीनों के बाद ही मेरा मूत्रमार्ग पुनः अवरुद्ध हो गया था। चिकित्सकों ने फिर ऑपरेशन की सलाह दी। ऑपरेशन किया गया, पर चार–पाँच महीनों के बाद मैं फिर से मूत्र त्याग कर पाने में असमर्थ हो गया। मैंने अपनी समस्या गुरुजी के एक भक्त से बतायी और उसने यह समस्या गुरुजी से कहने के लिए कही। गुरुजी ने एक उपाय बताया और उसके बाद मैं बिल्कुल ठीक हो गया। अब, कभी–कभी यह समस्या होती भी है, तो गुरुजी के आशीर्वाद से बिल्कुल ठीक हो जाती है।

हम दिल्ली के राजौरी गार्डन में मुख्य बाजार के इलाके में किराये पर रहते थे। सन् 1999 में, मकान मालिक ने उस घर को एक बिल्डर को बेच दिया, जो वहाँ शो–रूम बनाना चाहता था। मकान मालिक ने हमें घर खाली करने के लिए कहा, पर इतनी जल्दी दूसरे घर ढूँढ़ पाना और व्यवस्थित हो जाना संभव नहीं था।

एक दिन, चलते समय मैंने गुरुजी से समस्या के बारे में कहा। उन्होंने मुझे सुना, देखा, पर कहा कुछ नहीं। मैंने फिर से कहा, उन्होंने फिर जवाब नहीं दिया। मैंने सोचा कि गुरुजी कुछ जवाब नहीं दे रहे, मुझे प्रार्थना करनी चाहिए और उन पर सब कुछ छोड़ देना चाहिए। किन्तु, गुरुजी के मौन का रहस्य अगले दिन पता

चला। हम संगत में उपस्थित होने आ रहे थे, पर धौलाकुआ में हम गाड़ियों की भीड़ में फंस गये, एकाएक कार के ब्रेक खराब हो गये। मिस्त्री आया और उसने ब्रेक तुरंत ठीक कर दिया। कार के ब्रेक वहाँ खराब हुए थे, जहाँ कार लगभग रुकी हुई थी, अन्यथा कुछ भी हो सकता था। अब मैं समझ गया कि जब मैं गुरुजी से घर की समस्या के बारे में कह रहा था, वे एक दुर्घटना होने से रोक रहे थे। मैं एक छोटी समस्या के हल के बारे में उनसे पूछ रहा था और वे हमें

एक निश्चित मृत्यु से बचा रहे थे। यूँ भी, उनके आशीर्वादों के बल पर हमारे घर की समस्या भी हल हो गयी, एक महीने में मैंने एक नया घर खरीद लिया था।

हर किसी को आशीर्वाद मिलता है

गुरुजी का प्रत्येक भक्त निरंतर उनके आशीर्वादों की छाया में रहता है। जिनके पास उनकी तस्वीरें हैं, या जो मन ही मन उनसे प्रार्थनाएँ करते हैं, या उनके बारे में किसी से सुनते हैं, वे सब भी उनकी कृपा पाकर धन्य हो जाते हैं।

ऐसी ही कुछ कहानी मेरे रिश्तेदार गुरचरण सिंह मान और उसके परिवार के साथ हुई है। वे नाभा में रहते थे। हम गुरुजी के सानिध्य का अपना अनुभव उन्हें बताते रहते थे। एक बार गुरचरण दिल्ली उनके दर्शनों के लिए आया। गुरुजी ने उसे आशीर्वाद दिया और प्रसन्न रहने के लिए कहा। उसकी बधू ने उससे गुरुजी की तस्वीर माँगी और उसने उसे उनकी तस्वीर दे। कुछ ही दिनों के बाद उसे स्वप्न में गुरुजी के दर्शन हुए। वह उन दिनों गर्भवती थी और उनके आशीर्वाद से उसे एक पुत्र प्राप्त हुआ। वह लड़का बहुत बुद्धिमान है और अपनी उम्र से अधिक मेधावी है। उन लोगों ने जब गुरुजी से उसका नामकरण करने के लिए कहा, तो उन्होंने उसका नाम गुरमजजीत सिंह रख दिया।

एक बार कोई परिवार यदि उनकी शरण में आ जाता है, तो वह परिवार सदा उनकी छत्र–छाया में बना रहता है। जब गुरचरण को गुर्दों में बहुत दर्द हुआ, उसने गुरुजी से प्रार्थना की और वह तुरन्त ठीक हो गया। एक बार, उसे मूत्र मार्ग में भयंकर दर्द हो रहा था, वहाँ उसे पथरी की समस्या थी, दर्द–निवारक दवाओं के बावजूद दर्द कम नहीं हो पा रहा था। उसने मुझे गुरुजी से अपनी बीमारी कहने के लिए कही। मैंने उनसे गुहार लगायी, उन्होंने बस सिर हिलाया। कुछ ही दिनों में गुरचरण क`मूत्रमार्ग में बनी पथरी और दर्द, दोनों गायब हो गये।

गुरचरण का एक निजी विद्यालय है और सन् 2005 में सरकार ने अनधिकृत निजी विद्यालयों को बंद करने के आदेश दे दिये। उसने मुझे गुरुजी से प्रार्थना करने के लिए कहा। हमने बड़े मंदिर में प्रार्थना की और गुरचरण से विद्यालय की मान्यता प्राप्त करने की अर्ज़ी देने के लिए कहा और श्रद्धेय गुरुजी की तस्वीर के समक्ष नित्य प्रार्थना करने के लिए भी कहा। उसने ऐसा ही किया और

गुरुजी के प्रताप से उसके विद्यालय को सबसे पहले मान्यता दी गयी। उसके विद्यालय में छात्र–छात्राओं की संख्या भी बढ़ी।

गुरुजी सदा भक्तों को अपने आशीर्वादों से सम्पन्न करते रहते हैं। केवल श्रद्धा व आस्था होनी चाहिए, फिर तो किसी को उन्हें अपनी समस्याएँ बताने की आवश्यकता भी नहीं है। जो हमें चाहिए, वे उसे बना लेते हैं। जो ठीक नहीं है, उसमें वे सुधार, कर देते हैं। जो हानिकर है, उसका विनाश कर देते हैं। अतः गुरुजी 'निर्माता' भी हैं 'सु   धारक' भी हैं और 'विनाशक' भी हैं।

हम सौभाग्यशाली हैं, जिन्हें उनके दर्शन–लाभ हुए, जिन्हें उनसे बात करने का सुअवसर मिला।

– राजेन्द्र सिंह कैंथ, भक्त एवं चीफ साउन्ड इंजीनियर, का सत्संग

GURUJI KA ASHRAM

गुरुजी ने भक्त को हत्या के आरोप से बचाया

राजिन्दर पी एस रंधावा जालंधर के नवोदित राजनीतिज्ञों में से एक था। उसके जीवन में एकाएक एक मोड़ आया। रंधावा उन दिनों जिला युवा कांग्रेस का अध्यक्ष था और सत्तारुढ़ अकाली दल के साथ एक समझौते के सिलसिले में पुलिस थाने जा रहा था। उसे राज्य की ओर से सुरक्षा के लिए एक एक बन्दूकधारी भी मिला हुआ था, उसका बंदूकधारी रक्षक अकाली दल के नेता और उसके बीच आ गया। नेता ने अपना हथियार निकालने की कोशिश की और हाथापाई में बंदूकधारी की बंदूक चल गयी और गोली अकाली नेता को लग गयी, वह मर गया। हत्या का आरोप–धारा 302 रंधावा पर लगाया गया।

उसके घरवालों ने साधु–संतों से मदद ली पर कोई फायदा नहीं हुआ। तब उसकी पत्नी गुरु जी के दरबार में पहुँची। गुरुजी ने उससे कहा कि उन दोनों ने प्रेम विवाह किया था और प्रेम की वही ताकत उसके पति को वापस लायेगी। उन्होंने दोनों विपक्षी दलों के बीच इस मामले में एक समझौते की भविष्यवाणी की। गुरुजी फिर दिल्ली चले गये और रंधावा तब जेल में ही था। वह निरंतर जेल की कोठरी में भी गुरुजी की तस्वीर अपने से चिपकाकर रखता था। जल्दी ही, उसे पन्द्रह दिनों के लिए अंतरिम जमानत मिल गयी। वह तुरन्त गुरुजी की शरण में गया और रोने लगा। गुरुजी ने उससे कहा कि वह एक दिन विधान सभा का सदस्य और फिर मंत्री बनेगा। पर वह तो उस समय केवल जेल से छूटने की सोच रहा था। गुरुजी से आज्ञा लेकर उसने ज़मानत 6 महीने बढ़ाने की अर्ज़ी दी, जो मंजूर हो गयी। इन्हीं महीनों में, जैसा, गुरुजी ने कहा था, मारे गये अकाली नेता के परिवार वालों से एक समझौता हो गया। रंधावा ने सबको बताया कि असल में यह दुर्घटना कैसे घटी और वास्तव में वह निर्दोष था।

जहाँ तक मुकदमे की पेचीदगियों की बात है, साक्ष्य रंधवा के पक्ष में था। पर न्यायाशीर बार–बार तारीख़ बढ़ाये जा रहा था। खैर, आखिरी सुनवाई के एक दिन पहले गुरुजी जालंधर आये। अब रंधावा कहता है कि गुरुजी उसे आशीर्वाद देने जालंधर आये थे। उसकी पत्नी उनसे मिलने गयी और उन्होंने कहा कि न्यायाधीश अगले दिन अंतिम निर्णय दे देगा। वैसा ही हुआ, जैसा गुरुजी ने कहा था। रंधावा को हर तरह से आरोप से मुक्त कर दिया गया, न्यायाधीश का यह अंतिम निर्णय था। अदालत से निर्दोष घोषित होने के बाद रंधावा सीधे गुरुजी के पास गया और चरणों में बैठ गया। वह राजनीति छोड़ देना चाहता था, पर गुरुजी ने उसे ऐसा करने से रोका और कहा कि यही उसका कर्तव्य है।

पालतू जानवरों को भी आशीर्वाद

गुरुजी दयानिधि हैं। गुरुजी करुणा की साकार मूर्ति हैं। उनके लिए कोई प्राणी बड़ा या छोटा नहीं है। प्रकृति के मूक इशारे को भी वे समझ लेते हैं। रंधावा के पालतू कुत्तों तक भी उनका स्नेह पहुँच गया। रंधावा कुत्तों से प्यार करता था, किन्तु जो भी कुत्ता वह घर लाता, वह किसी न किसी कारण से खत्म हो जाता था।

एक बा रवह 'रॉटवेलर' नस्ल का कुत्ता घर ले आया। पर वह कुत्ता भी बीमार हो गया वह उसे जानवरों के चिकित्सक के पास ले गया और कुत्ते को ड्रिप लगाया गया, पर उसने उल्टियां करनी शुरु कर दी। उसका अंतिम समय समझकर रंधावा कुत्ते को घर वापस ला रहा था। एकाएक उसके मन में कुछ आया और वह कुत्ते के साथ गुरुजी के मंदिर की और चल पड़ा। तभी, उसे गुरुजी ने उससे पूछा कि क्या वह गुरुजी से कुत्तें का भी ध्यान रखने की उम्मीद रखता था। रंधावा ने कहा कि वह उनसे मिलने आया था। गुरुजी ने अपना आशीर्वाद

दिया और कुत्ते की हालत में सुधार हो गया। रंधावा का वह कुत्ता लगभग 6–7 साल और जीवित रहा।

यह है गुरुलजी का प्रताप, जो इंसानों तक ही सीमित नहीं है।

– राजिन्दर पाल रंधवा का सत्संग, जैसा बताया गया

GURUJI KA ASHRAM

सरकारी अफ़सर को न्याय मिला

विपत्ति में जब एक इंसान समुद्री तूफानमें फंसे एक पतवार रहित नाव की तरह डगमगाने लगता है तो गुरुजी का आशीर्वाद ही है, जो उसे बचा सकता है और कुछ नहीं। वैसे तो उन्हें मैं काफी दिनों से जानता हूँ, किन्तु सन् 2000 ई. से मैं उनके दर्शनों के लिए नियमित तौर पर जाता रहा हूँ। इस दौरान मैंनें गुरुजी के कई चमत्कारों को देखा–सुना है और जो लोग उनके आशीर्वादों से लाभान्वित हुए हैं, उनके अनुभवों को भी सुना है। गुरुजी के असंख्य चमत्कारों की विविधता को देख–सुनकर यह सर्वविदित हो जाता है कि वे सर्वशक्तिशाली हैं, सर्वव्यापी हैं और सर्वज्ञानी हैं।

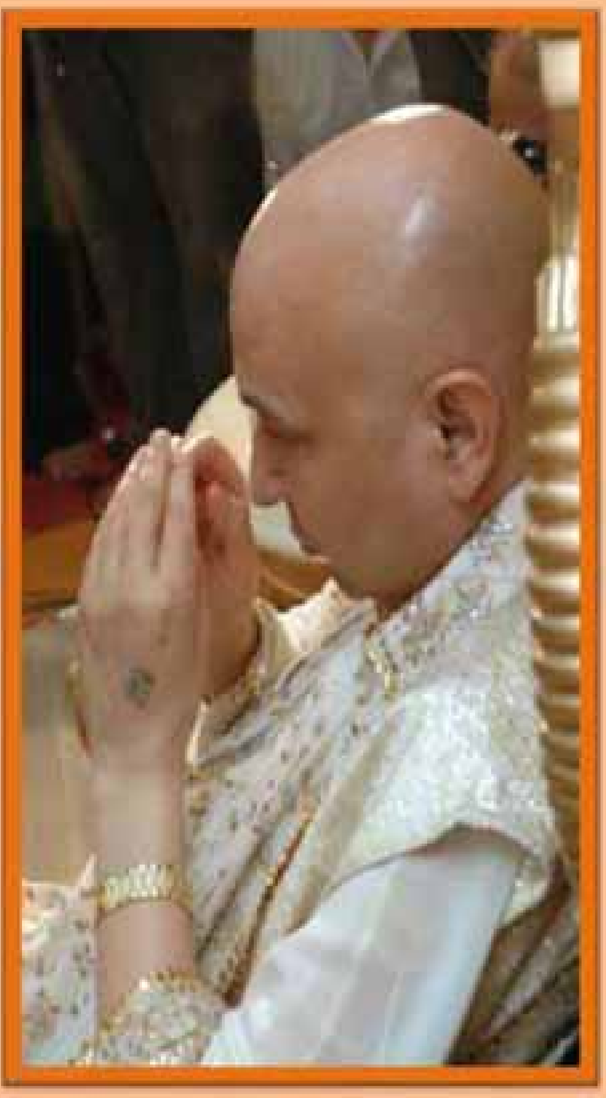

गुरुजी दैविक शक्तियों के अनंत स्रोत हैं और अपनी कृपा के जल से सदा हमारी प्यास बुझाने के लिए तैयार रहते हैं।

मैंने लोगों को हैरान होते हुए देखा है, जब गुरुजी उन्हें या उनके जीवन साथियों को नाम लेकर बुलाते हैं जबकि उनका परिचय उनसे कोई नहीं कराता। यह हमारे साथ भी हुआ, जब मेरी पत्नी को उन्होंने पहली ही भेंट में नाम लेकर

बुलाया,"आओ ! प्रेमा अंटी, आओ।" जब मेरा एक वरिष्ठ सहकर्मी गुरुजी के दर्शनों के लिए आया, उन्होंने उसकी पत्नी को भी नमा लेकर बुलाया। उन्होंने उसकी पत्नी की बीमारी के बारे में भी बता दिया। वह चकित हो गयी। वह इसलिए भी चकित थी कि रात में सपने में उसने जिस संत को देखा था, वह बिल्कुल गुरुजी से मेल खाता था। एक बार मेरा एक रिश्तेदार व उसकी पत्नी उनसे पहली बार मिलने गये, गुरुजी ने उनकी और देखा और मुस्कुराकर पूछा, "प्रेम विवाह ?" दोनों थोड़ा सकुचा गये, पर दोनोंने हामी भरी। यह सब गुरुजी की सर्वज्ञता ही तो है।

गुरुजी शारीरिक बीमारियों व पीड़ा से भक्तों को छुटकारा दिला देते हैं। उन्होंने कई लोगों को घातक बीमारियों, कैंसर, सोरिएसिस आदि से छुटकारा दिलवाया है। वस्तुत:, कई लोगों को उन्होंने नया जीवनदान दिया है। जिन औरतों को बच्चें नहीं हो रहे थे, उन्हें उन्होंने बच्चों का आशीर्वाद दिया है। परीक्षा में उत्तीर्ण होना हो, या रोजगार की बात हो, गुरुजी ने सदा भक्तों को सफलता दिलवायी है।

एक दिन, न्यूयॉर्क में रहने वाला मेरा एक मित्र गुरुजी के दर्शनों के लिए आया। मेरा छोटा पुत्र शशि पास ही बैठा हुआ था और गुरुजी ने अनायास कहा कि एक दिन शशि भी न्यूयार्क जायेगा। उस समय शशि दिल्ली में एक जापानी बैंक के साथ जुड़ा हुआ था और विदेश जाने की उसकी कोई योजना नहीं थी। पर बाद में वहाँ कुछ अनुभव के बाद उसे अमेरिका में एम. एम बी. ए करने की इच्छा हुई। उसने आवश्यक परीक्षाएं दीं और गुरुजी से सफलता की प्रार्थना की। गुरुजी ने उसे सफलता का आशीर्वाद दिया। परिणाम आने लगे, राषि सब में सफल हो रहा था। किन्तु न्यूयार्क के संस्थान के परिणाम अभी नहीं आये थे। कुछ ही दिनों में वहाँ के नतीजे भी आये और शशि को न्यूयार्क में दाखिला मिल

गया। शशि न्यूयार्क गया, एम बी ए में उच्च प्राप्तांक प्राप्त कर न्यूयार्क में ही जे. पी. मोरगन चेस बैंक में नौकरी करने लगा। गुरुजी के द्वारा अनायास कहे गये शब्द सार्थक हो गये थे।

जहाँ तक मेरी बात है, गुरुजी ने मेरे साथ हुए अन्याय अपने आशीर्वादों से निरस्त कर दिया, प्रभावहीन कर दिया। किसी कारणवश मेरी जन्मतिथि सरकारी प्रपत्रों में सही नहीं लिखी हुई थी। मेरे प्रयासों के बावजूद मैं इसे ठीक नहीं करा सका। फलतः इससे मेरी नौकरी अवधि भी कम हो गयी और मुझे यथोचित पदोन्नति भी नहीं मिली। पर, गुरुजी के आशीर्वाद से, मेरे सेवा–निवृत्त होने से काफ़ी पहले, मैं एक राष्ट्रीय आयोग का सदस्य नियुक्त किया गया। मेरी नियुक्ति शुरु में पाँच वर्षों के लिए थी, पर बाद में बढ़कर 65 वर्ष की आयु तक हो गयी, जिससे मैं आयोग का अध्यक्ष बन पाया। सरकारी महकमों में मेरी कोई जान–पहचान नहीं थी, यह सब गुरुजी की असीम कृपा से ही हो पाया।

गुरुजी के व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, उनकी शारीरिक सुगन्ध। गुलाब की खुशबू से मिलती–जुलती है यह सुगन्ध। पूरे शरीर में है यह सुगन्ध। उनके शरीर के किसी हिस्से का स्पर्श कोई कुछ पलों के लिए करे, उसके हाथों में यह सुगन्ध होगी। इस सुगन्ध को कहीं भी और कभी भी महसूस किया जा सकता है। जब मैं उनके दरबार में आने लगा था, एक बार मैंने अपने घर के अहाते में उनकी इस सुगंध को महसूस किया। यह सुगन्ध उनकी सर्वव्यापकता दर्शाती है। एक बार मेरे एक रिश्तेदार ने गुरुजी की सुगन्ध को दीवार पर लगी उनकी तस्वीर से निकलते महसूस किया।

गुरुजी ने मुझे अपनी एक जोड़ी जूतियाँ दी थीं। हमने उन जूतियों को आदर के साथ एक छोटे काठ के मंदिर में रखा है। हम उनका यथोचित ध्यान रखते हैं व नित्य उनके प्रति अपनी श्रद्धा अर्पित करते हैं। वस्तुतः गुरुजी की अनुपस्थिति में

हम उन्हें गुरुजी की तरह ही समझते हैं। हैरानी की बात है कि आशीर्वाद का यह उपहार हमें चार वर्ष पहले दिया गया था, पर गुरुजी में विश्वास व आस्था है, तो उसे उनकी सुगन्ध हर जगह महसूस होगी।

एक बार, मेरा बड़ा लड़का, संजय ऑक्सफोर्ड एक साल के कोर्स के लिए गया था। उसे कॉलिज परिसर में एक जगह गुरुजी की खूशबू महसूस होती थी। मेरे छोटे बेटे, शशि को उनकी सुगन्ध का अहसास न्यूयार्क में होता था।

हमारा परिवार गुरुजी की छत्र–छाया पाकर अत्यंत प्रसन्न व सौभाग्यशाली है। उनकी कृपा से, चाहे हम कहें या नहीं, सदा हमारे साथ शुभ होता रहता है। हम आजीवन उनके कृतज्ञ बने रहेंगे।

– आर. एल. सुधीर, सेवा–निवृत्त भारतीय प्रशासनिक अधिकारी, का सत्संग

GURUJI KA ASHRAM

गुरु चरणों में आशीर्वाद

मध्ययुगीन संत कबीर ने गुरु के चरणों की महत्ता प्रतिपादित करते हुए कहा था कि गुरु के सानिध्य की प्रसन्नता का परिमाणन नहीं किया जा सकता, इस प्रसन्नता के समान विश्व में कुछ भी नहीं है। मैंने भी अपने जीवन में ऐसा ही अनुभव किया है। गुरुजी के आशीर्वादों ने मेरे सारे जीवन को बदल दिया है, जीवन के प्रति मेरे दृष्टिकोण को दिया है; मेरे जीवन को नयी दिशा मिल गयी है, नया उद्देश्य मिल गया ळें

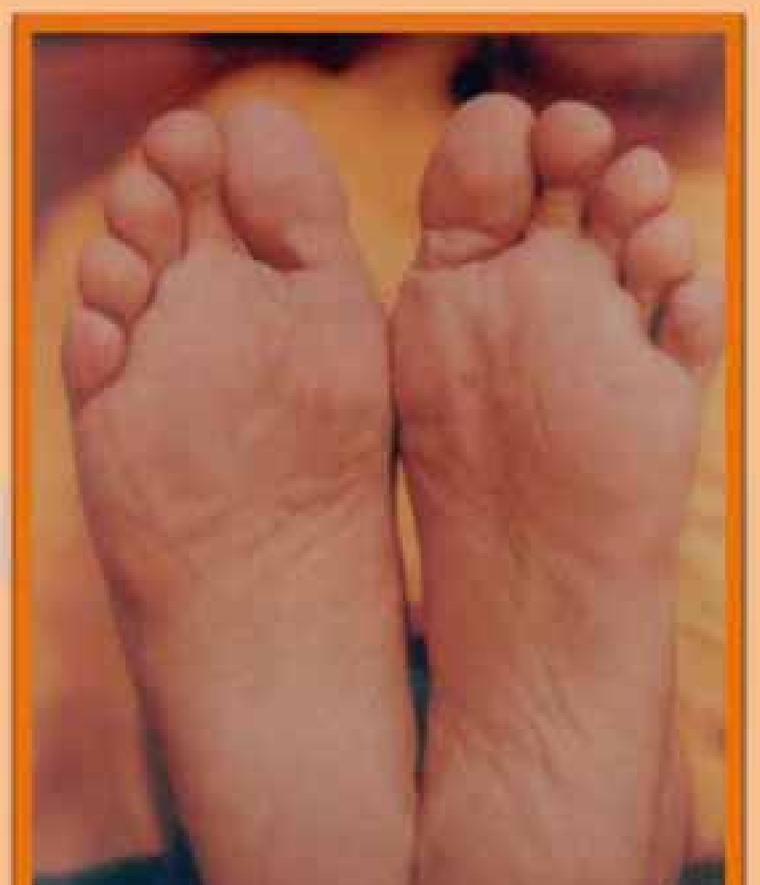

सर्वज्ञता

अगस्त, 1998 में एक दिन मेरे मित्र, विंग कमाण्डर चोपड़ा ने मुझे गुरुजी के पास चलने के लिए कहा। मैं संतों में विश्वास नही करता था, अतः मैंनं मना कर दिया। पर, उसके बहुत कहने पर मैं तैयार हो गया, यह सोचकर कि मेरे साथ चलने से मेरा मित्र खुश हो जायेगा। हम लोग नोएडा के सायंकाल 6 बजे चले और गुरुजी के दरबार में 45 मिनटों में पहुँच गये। मैं वहाँ पहली बार गया था और चौपड़ा के अलावे किसी को नहीं जानता

था। हम लोग वहाँ 15–20 लोग थे। गुरुजी आये, हम सबने झुककर उनका अभिवादन किया। सामान्यतः धार्मिक समारोहों में ईश्वर के प्रति आदर से या धार्मिक संगठन के क्रिया–कलापों के लिए आये हुए लोग आर्थिक दान देते हैं। पर यहाँ चोपड़ा ने मुझे ऐसा कुछ भी करने से मना कर दिया था। गुरुजी को केवल फूल या मिठाइयाँ भेंट में दी जा सकती थी। फूलों का प्रयोग सत्संग कक्ष को सजाने में कर लिया जाता था और मिठाइयाँ संगत में प्रसाद के रूप में गुरुजी द्वारा बाँट दी जाती थीं।

चोपड़ा ने जब मेरा परिचय गुरुजी से करवा दिया था तो गुरुजी ने मेरी तरफ़ मुड़कर सीधा पूछा, "अगली बार चंडीगढ़ कब जा रहे हो ?" मैं चकित रह गया क्योंकि चोपड़ा को भी यह बात पता नहीं थी और गुरुजी जान गये। खैर, मैंने आश्चर्य छिपाकर जवाब दे दिया। वे मुझसे जानना चाहते थे कि मैं चंडीगढ़ में कहाँ ठहरता था ? मैंने उन्हें बताया कि मैं अपने एक मित्र, जो भारतीय पुलिस सेवा में था, पी पी सिंह के घर ठहरता था। गुरुजी ने बताया कि पी. पी. सिंह उनका परम भक्त है और उसे यह बताने के लिए कहा कि मैं गुरुजी से मिला था और वह दिल्ली आकर उनसे मिले। गुरुजी एवं उनकी महिमा के प्रति मेरा कौतूहल जागा।

बहरहाल, थोड़ी देर के बाद हमें चाय दी गयी, चाय प्रसाद के रूप में। कक्ष में मन को शांति देने वाले 'शब्दों' की ध्वनि गूंज रही थी प्रसाद की तौर पर फिर कुछ देर बाद गुरु मिठाइयाँ बांटने लगे और मिठाइयों की मात्रा ने मुझे हैरान किया।

गुरुजी केवल अपने दाहिने हाथ से मिठाई उठाते और बांटते, पर वहाँ सब लोगों को दोनों हाथों से भी उस मिठाई को पकड़ने में दिक्कत आ रही थी। गुरुजी के हाथ संगत में बैठे सभी लोगों के हाथों से छोटे थे, बड़े हाथों वालों को भी

गुरुजी के द्वारा एक हाथ से दी जा रही मिठाई को दोनों हाथों से पकड़ने में दिक्कत हो रही थी। गुरुजी ने दो या तीन बार सबको प्रसाद दिया। हर एक को कम से कम आधा किलोग्राम मिठाई मिली होगी। फिर, गुरुजी के कहने पर लंगर परोसने का क्रम शुरु हुआ। उस समय तो लग रहा था कि अब कुछ नही खाया जायेगा, पर जब तक लंगर परोसा गया, मुझे फिर से भूख लग गयी थी। गुरुजी के दरबार में बार–बार जाने के बाद मुझे यह ज्ञात हो पाया कि ये सारे अनुभव केवल एक बारी के नहीं थे, वरन् गुरुजी के दरबार में ये अनुभव आम थे।

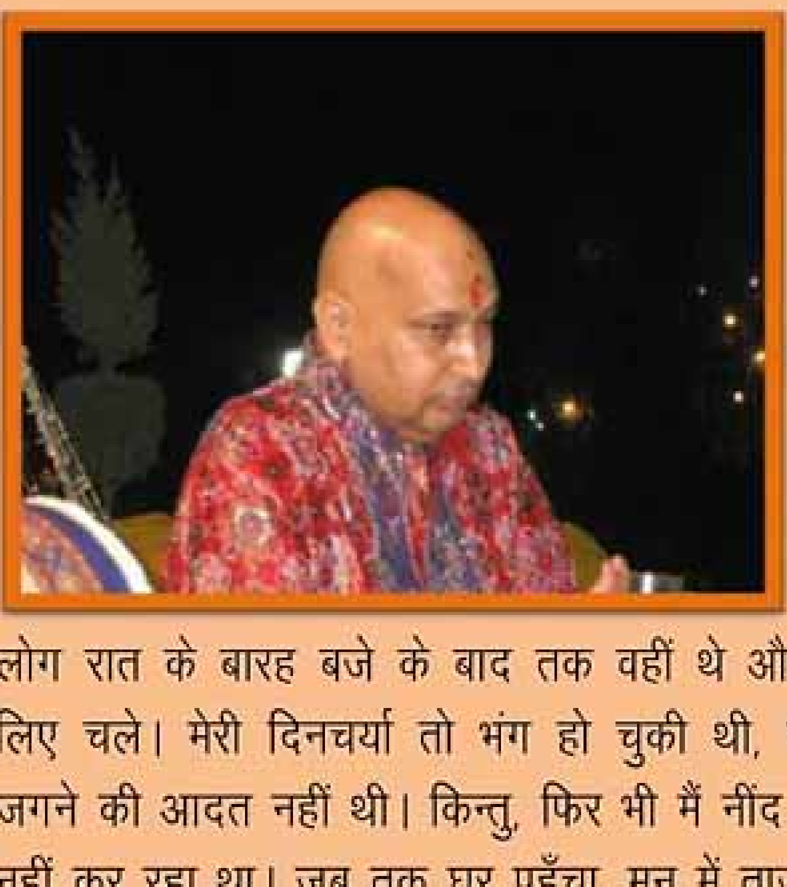

बहरहाल, पिछले चार–पाँच सालों से मैंने एक दिनचर्या बना रखी थी। में 9.30 बजे रात तक सो जाता था और सुबह जल्दी उठ जाता था। किन्तु गुरुजी संगत को तब जाने देते थे, जब वे उचित समझते थे। उस दिन हम लोग रात के बारह बजे के बाद तक वहीं थे और रात के एक बजे नोएडा के लिए चले। मेरी दिनचर्या तो भंग हो चुकी थी, मेरे शरीर को इतनी रात तक जगने की आदत नहीं थी। किन्तु, फिर भी मैं नींद का या थका–थका सा अनुभव नहीं कर रहा था। जब तक घर पहुँचा, मन में ताज़गी बनी हुई थी।

घर पहुँचते ही मैंने पी. पी. सिंह को फोन किया, वह बहुत खुश हुआ जब मैंने उसे बताया कि मैं गुरुजी से मिला था। गुरुजी के चंडीगढ़ से जाने के बाद उसका भी गुरुजी से संपर्क टूट गया था, अतः वह भी गुरुजी का हाल–चाल

जानकर प्रसन्न हुआ। फिर मैंनें अपनी पत्नी को भे गुरुजी से पहली भंट के बारे में विस्तार से बताया।

अगली शाम, चोपड़ा ने फिर फोन कर मुझसे गुरुजी के दरबार में चलने के बारे में पूछा, मैं सहर्ष तैयार हो गया। गुरुजी की शरण में 'शब्द' हुए, प्रसाद बटा, लंगर परोसा गया। फिर एकाएक गुरुजी ने मुझे 'गुप्ता' कहकर पुकारा। मैंने घर आकर परिवार वालों को बताया कि गुरुजी ने मुझे 'गुप्ता' कहकर पुकारा था। मेरे बच्चों ने समझा कि गुरुजी मेरा नाम भूल गये थे। किन्तु, मैंने कॉलिज के दिनों का अपना एक रक्त दान कार्ड निकाला और उन्हें दिखाया। पहली बार मेरे बच्चों ने जाना कि कॉलिज में मैं 'गुप्ता' उपनाम की प्रयोग करता था और व्यापार में आने के बाद मैंने 'सिंगला' का प्रयोग शुरु कर दिया था। गुरुजी ने फिर सिद्ध कर दिया था कि उनसे कुछ छिपा नहीं है। मेरी पत्नी और बच्चों ने उनके पास अगली बार चलने का आग्रह किया और हम सारे गये।

GURUJI KA ASHRAM

चंडीगढ़ की यात्रा व वापसी में उनकी सुगंध का साथ

गुरुजी से मिलने के कुछ ही दिनों के बाद उन्होंने मुझे पत्नी के साथ चंडीगढ़ जाकर पी. पी. सिंह और परिवार से मिलने का आदेश दिया। गुरुजी की कृपा ने यात्रा को यादगार बना दिया।

गुरुजी के शरीर से एक प्राकृतिक, दिव्य सुगंध निसृत होती है, जो चंडीगढ़ तक सारी यात्रा में हमारे साथ थी। वहाँ हम सिंह परिवार के साथ केवल गुरुजी के बारे में चर्चा करते रहे। जब हम वापस आने के उद्यत हुए, गुरुजी की सुंगध से भरपूर हवा का एक तेज़ झोंका हमें स्पर्श करते हुए गुज़रा, जबकि गुरुजी स्वयं 250 कि.मी. दूर दिल्ली में थे।

गुरुजी के स्वरूप को समझ पाना हमारे मस्तिष्क की सीमा से परे है, उनकी कृपा से ही उन्हें कुछ हद तक समझा जा सकता है। उनकी कृपा से जहाँ तक मैं समझ पाया हूँ, गुरुजी की शारीरिक सुंगध उनकी उपस्थिति का एक निश्चित द्योतक हैं। कोई भी, कहीं भी, कभी भी, गुरुजी की मदद के लिए उन्हें पुकारता है, गुरुजी तुरन्त उसकी पुकार का जवाब देते हैं, उसकी मदद करते हैं। बस, यह पुकार सच्चे हृदय से की जानी चाहिए। कुछ भाग्यशाली संगत–सदस्यों के सपनों में गुरुजी आते हैं। जब तक गुरुजी स्वयं न चाहें, उनको सपनों में नहीं देखा जा सकता। वस्तुतः गुरुजी का सपनों में आनाकोई सामान्य घटना नहीं है और उनकी वास्तविक उपस्थिति के तुल्य है।

गुरुजी एक बार मेरी आटा मिल का उद्घाटन करने राजस्थान के नीमरना में आये। उनके साथ कुछ संगत–सदस्य भी थे, जिनमें एक, मदन था, जो गुड़गाँव में व्यापारी था और वहाँ अपने परिवार के साथ गया था। जैसे ही उसकी बेटी ने फैक्ट्री देखी, वह चीख पड़ी, उसने कहा कि गुरुजी ने उसे महीनों पहले सपने में सब कुछ दिखा दिया था, यह कार्यक्रम भी।

एक छोटी सेवा ने मेरे दुखों को हर लिया

किसी भी भक्त के लिए अपने गुरु की सेवा करना अतीव आनन्द का अवसर होता है। पर, गुरुजी की सेवा करना तो परमानंद की प्राप्ति है। एक बार, गुरुजी ने मुझे अपने पांवों की मालिश करने का अवसर दिया। उनके पाँवों को दबाने से मुझे जिस आनन्द की अनुभूति हुई, वह अवर्णनीय है। आधा घंटा उनके पाँवों को दबाने से मेरे हाथों में उनकी शारीरिक सुगंध आ गयी थी। हाथों को बार–बार धोने के बाद भी सुगन्ध 24 घंटों से अधिक देर तक रहीं। साथ ही, कुछ और चमत्कार भी हुआ। मेरे दोनों पैरों का निचला हिस्सा काफ़ी अकड़ा हुआ रहता था। मैं अपने पुत्र को प्रतिदिन पैरों के निचले हिस्से पर खड़ा करता था, उसके शरीर के भार से मुझे कुछ आराम मिलता था। कुछ ही दिनों में मुझे अहसास हुआ कि सात–आठ वर्षों की मेरी यह परेशानी उस दिन खत्म हो गयी थी, जिस दिन मैंने गुरुजी के पैरों की मालिश की थी, शायद पैरों के निचले हिस्से की। उसके बाद मेरे पैरों में कभी अकड़न नहीं हुई। इसलिए मैं कह सकता हूँ कि जब कभी गुरुजी किसी को सेवा का अवसर देते हैं, तो भक्त को आनन्द की प्राप्ति के अतिरिक्त उसका कहीं न कहीं किसी न किसी रूप में फायदा भी होता है।

गाड़ियों के साथ भी चमत्कार

हमारी मारुती 800 कार एक लीटर पेट्रोल में 12.12.5 कि.मी. चलती थी। हर पेट्रोल पंप पर मैं ध्यानपूर्वक उसकी औसत मापता था। शुरुआती दिनों में मैंने सर्विस सेंटर वालों को औसत बढ़ाने के लिए भी कहा था। उन्होंने मुझसे कहा था कि गाड़ी के केवल शहर में चलायी जा रही है, अतः औसत बढ़ाना कठिन सा है। पर जब हम गुरुजी के पास नित्य आने लगे, मैंनें पाया कि गाड़ी की औसत बढ़कर अपने आप 19 कि.मी./प्रतिलीटर हो गयी थी। शुरु में तो मुझे

विश्वास नहीं हुआ और मैंने किसी को नहीं बताया। पर बाद में, अलग–अलग पंप से पेट्रोल भराने के बाद भी अलग–अलग बार जाँच करने के बाद भी गाड़ी की बढ़ी हुई औसत ही आ रही थी। जब मैं आगे गुरुजी से मिलने गया, उन्होंने मुझसे कहा, "सिंगला ! क्या हुआ ?19 के अंक के एकदम चकित हो गये हो ?

अब तुम्हें अहसास हुआ है कि संतों की कृपा–दुष्टि केवल मानवों पर ही नहीं वरन कार जैसी वस्तुओं पर भी चमत्कार करती है।

एक बार मैं कार चला रहा था, मैंने पैट्रोल संकेतक की और देखा, पेट्रोल न के बराबर था, मैंने गाड़ी पेट्रोल पंप की और मोड़ दी। जब मैं पंप पर प्रतीक्षा कर रहा था, एकाएक मैंने देखा कि संकेतक आधा टैंक भरे होने का संकेत दे रहा है। मैं पेट्रोल बिना लिए चल पड़ा। दो दिनों बाद, अपेक्षित दूर चल चुकने के बाद संकेतक फिर गाड़ी में नगण्य पेट्रोल का संकेत दे रहा था मैंने गाड़ी पंप की और मोड़ी ही थी कि संकेतक फिर बढ़कर आधा टैंक भरे होने का संकेत दे रहा

था। इस तरह लगभग दो सप्ताहों तक पेट्रोल पंप की तरफ मुड़ने पर ही हमारी गाड़ी में पेट्रोल भर जाता था।

एक बार पंजाब जाना था हमने अंदाजा लगाया था कि गाड़ी में इतना पेट्रोल है कि हम गंतव्य तक पहुँच जायेंगे, पर आश्चर्य की बात है कि हम पंजाब से लौटकर दिल्ली भी आ गये हैं हमें गाड़ी में अतिरिक्त पेट्रोल नहीं लेना पड़ा। बल्कि कुछ पेट्रोल शेष ही था।

न केवल ईधन क्षमता, बल्कि आवश्कयकता होने पर हमारी गाड़ी के अंदर की जगह भी गुरुजी के आशीर्वाद से बढ़ती हुई प्रतीत होती थी। गुरुजी ने एक बार हमें जहाँ से लंगर बनता था, वहाँ से उनके दरबार में लाने का कार्य सौंपा। गुरुजी की कृपा से लंगर से भरे हुए सारे बर्तन गाड़ी में समा गये और हम चल पड़े। किन्तु, हर दिन संगत के बढ़ने से लंगर की मात्रा भी उसी अनुपात में बढ़ी और उसी अनुपात में कार में जगह भी बढ़ जाती थी।

एक बाद दैनिक संगत के बाद हमारी गाड़ी में लंगर वाले सारे खाली ड्रम रखे गये । हम वापस नोएडा जाने वाले थे। तभी गुरुजी ने मंदिर के सारे परदों को, लगभग 35–40 थे, उतारने के लिए कहा और उनकी 'ड्राईक्लिनींग' करवाने के आदेश दिये। ये सारे परदे लगभग 15 फीट लंबे थे। चूंकि गाड़ी में नोएडा में लंगर वाले ड्रम थे, चार लोग भी जाने वाले थे और फिर ड्राक्लीनिंग के लिए ये परदे सबका सामना कठिन बात थी, पर सबको हैरान करते हुए ये परदे आराम से कार में रख दिये गये और उन ड्रमों के साथ हमस ब लोग भी समा गये। रास्ता आराम से कटा। यह बस गुरुजी की महिमा थी।

मधुमेह–ग्रसित पिता के लिए मीठे आशीर्वाद

मेरे पिता को 1980 के दशक से मधुमेह रहा है। दिन में दो बार इन्सूलिन उन्हें लेना पड़ता था। वे जब गुरुजी से मिलने आये, गुरुजी के द्वारा उन्हें भी प्रसाद के रूप में बर्फी दी गयी। सामान्यतः लोग संगत कक्ष से बाहर आकर प्रसाद खाते हैं और फिर वहाँ जाकर बैठ जाते हैं। मेरे पिता भी कक्ष से बाहर आये और हमसे पूछने लगे कि वे बर्फी के उन 5–6 टुकड़ों का क्या करें। मैंने उन्हें सारी बर्फ़ी खा लेने के लिए कहा क्योंकि गुरु जी के निर्देशानुसार प्रसाद दवा है, यदि तुरन्त खा लिया जाये, घर ले जाने पर या कहीं और इसका प्रभाव कम हो जाता है। पिताजी ने कहा कि बर्फ़ी तो उनके लिए जहर है। पर मैंने उन्हें कहा कि यह गुरुजी का आशीर्वाद है और इससे कोई हानि नहीं हो सकती। मैंने उनसे सारी बर्फ़ी खा लेने का अनुरोध किया। मेरे आग्रह करने पर उन्होंने सारी बर्फी खा ली और अन्दर संगत–कक्ष में चले गये।

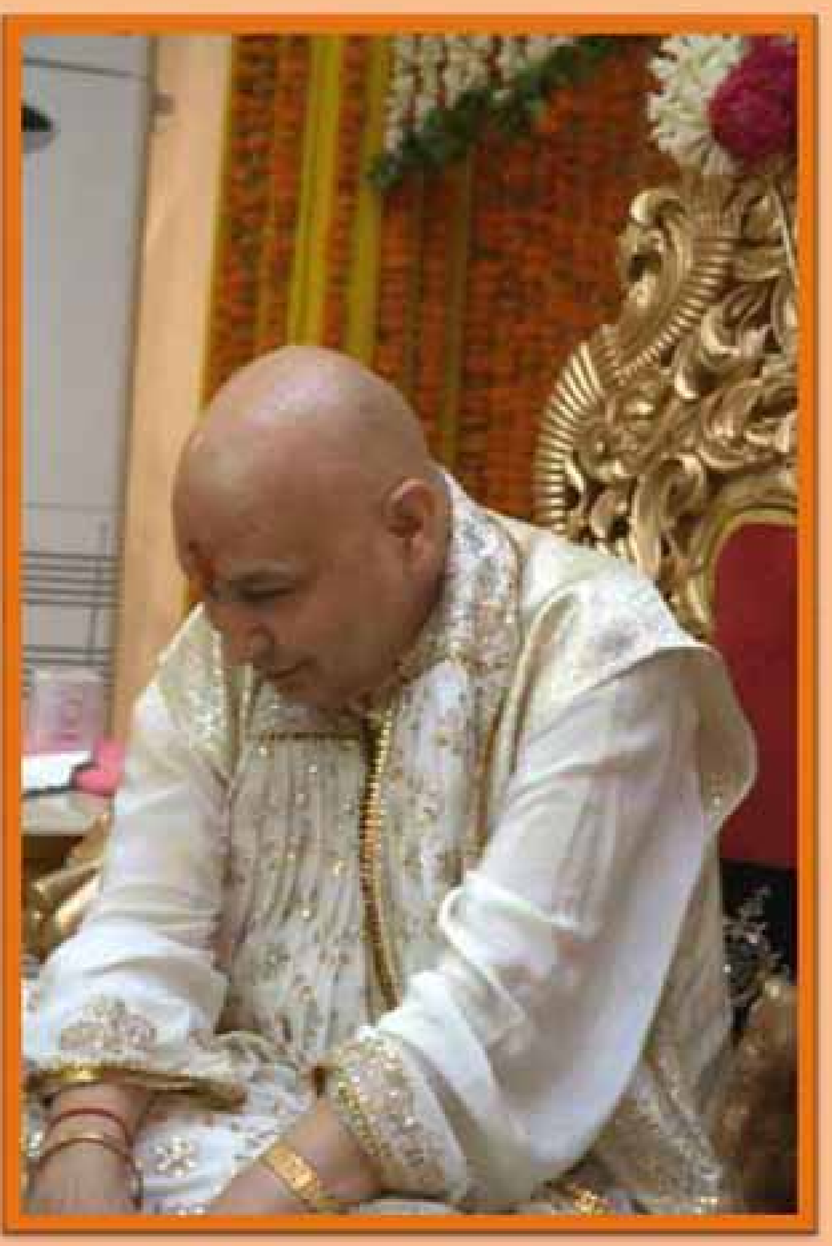

गुरुजी ने उन्हें फिर बुलाकर और बर्फ़ी दे दी। इस बार तो पिता जी बिल्कुल उसे खाने के पक्ष में नहीं थे। ख़ैर मेरे आग्रह करने पर वे मान गये, बर्फी खा ली व अन्दर चले गये। किन्तु, गुरुजी ने उन्हें फिर बुलाया और तीसरी बार भी खाने के लिए बर्फ़ी दी। इस बार भी पिता जी ने मिठाई खा ली और अब तक वे कम से कम आधा किलो बर्फी खा चुके थे और उन्हें अपने रक्त में शर्कर की मात्रा तेजी से बढ़ने की आशंका हो चुकी थी। उन्होंने पिछले चार घंटों में उतनी मिठाई खा ली थी, जितनी उन्होंने पिछले 15 सालों में कुल मिलाकर नहीं खायी थी। वे चिंतित हो चुके थे।

बहरहाल, हम सब घर वापस चले गये। अगले दिन, सुबह 5.30 बजे उनका फोन आया कि वे हैरान थे कि इतनी मिठाई खाने के बाद भी उनके रक्त में शर्करे का स्तर बढ़ने के बजाय पहले से घट गया था। यह घटना इस बात का द्योतक है कि गुरुजी के हाथों से दिया गया कुछ भी अपना अस्तित्व खोकर प्रसाद बन जाता है।

आपरेशनों के दौरान गुरुजी का आशीर्वाद

मेरे पिताजी को न केवल मधुमेह है, बल्कि उनको हृदय रोग भी है। उनको एक बार रात में सीने में दर्द का अनुभव हुआ। उन्होंने अधिक न सोचते हुए गर्म बोतलों और मालिश का सहारा लेते हुए रात किसी तरह बिता दी। किन्तु दर्द बढ़ता जा रहा था। और अन्ततः उन्होंने मुझे अगली सुबह बुलाया और बताया। हम उन्हें नोएडा के पास अपोलो अस्पताल लेकर भागे। शुरुआती जांच से पता चला कि पिछली रात उन्हें भीषण हृदयाघात हुआ था। चिकित्सक अस्पताल देर से आने की लापरवाही से चकित थे। निरीक्षणों के बाद चिकित्सकों ने 'बाईपास सर्जरी' की सलाह दी। मेरे पिताजी के मधुमेह रोगी होने के कारण स्थिति जटिल थी। सामान्यतया, मधुमेह के रोगी को सामान्य रोगी से दुगुना से अधिक

समय ठीक होने में लगता है। कोई और विकल्प नहीं होने के कारण, परिवार से अनुमति लेकर चिकित्सों ने सर्जरी शुरु कर दी। इतने कम समय में ऑपरेशन के लिए सब कुछ तैयार कर लेना चुनौती भरा कार्य था।

किन्तु, गुरुजी की कृपा से अस्पताल के कर्मचारियों ने हमारा भरपूर साथ दिया। सर्जन ने अस्पताल में रक्त की कमी होने पर स्वयं अपना रक्त दिया। एक जटिल सर्जरी थी, पर वहाँ के हृदय शल्य–विभाग के अध्यक्ष के निरीक्षण में संपन्न हुई, जो भारत में महीने में केवल 10–12 दिन ही उपलब्ध रहते हैं और ज्यादातर वक्त बाहर बिताने के कारण उनसे समय मिलना कठिन होता है परन्तु भाग्य से पिताजी के आपरेशन के लिए वे बिना किसी पूर्व सूचना के भीतर कुछ घंटों में ही आ गये।

मेरे पिताजी के लिए सर्जरी का अनुभव भी पीड़ादायी नहीं रहा। जब वे बाद में सचेतन हुए, तब उन्होंने ऑपरेशन के पहले की जांचों के नतीजों के बारे में पूछा क्योंकि उन्हें ज्ञात ही नहीं हुआ कि उनका ऑपरेशन हो चुका था। उस दिन जो कुछ भी होता गया, वह

चमत्कारिक ही था, उसकी व्याख्या नहीं की जा सकती और वस्तुतः इस सरलता से सब कुछ का हो जाना गुरु जी की दिव्य कृपा का ही प्रतिफल था। इतना ही नहीं, ऑपरेशन के बाद मेरे पिताजी जिस सरलता व गति से ठीक होते चले गये, वह भी चिकित्सकों के लिए आश्चर्य था। वस्तुतः उन्होंने कहा कि जिसको मधुमेह नहीं है, उससे भी अधिक तीव्रता से वे ठीक हुए थे, चिकित्सा की दृष्टि से इसकी व्याख्या करना तो असंभव था।

गुरुजी की महीमा की कोई सीमा नहीं। मेरे भाई, अशोक सिंगला को एक दशक से भी अधिक से हृदय–रोग था। उसे तीसरी बार सर्जरी कराने के लिए कहा गया। मेरे कहने पर वह गुरुजी से मिलने गया। चंडीगढ़ का रहने वाला अशोक सर्जरी के लिए लगभग एक सप्ताह पहले से दिल्ली में था, अतः अस्पताल में भर्ती होने से पहले तीन–चार बार गुरुजी के दर्शनों के लिए जा पाया। गुरुजी की शरण में बिताये वे कुछ घंटे ही उसके ऑपरेशन की सुचारुता और उसके तीव्र स्वास्थ्य लाभ के लिए काफ़ी थे। सर्जरी आराम से हो गयी और अशोक का स्वास्थ्य लाभ भी इस बार पिछली दो बारों की तुलना में तीव्रतर था।

वर्णन नहीं किया जा सकता, केवल अनुभूत हो सकता है

मैं पुनः कहूँगा कि गुरुजी के स्वरूप का ज्ञान हमारे लिए संभव नहीं है। उसी तरह उनके साथ हमारे अनुभवों को शब्दों में समेट पाना भी संभव नहीं है क्योंकि उनके आशीर्वाद का वर्णन करने वाले शब्द हैं ही नहीं। जब से मैं गुरुजी के संपर्क में आया हूँ, मैं एक ही बात दोहराता हूँ, "गुरुजी से मिलने के बाद जो हम अनुभव करते हैं और जो हम पाते हैं, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता, न उसकी व्याख्या की जा सकती है।"

गुरुजी विभिन्न तरहों से अपना असली स्वरूप छिपाते हैं। हम लोगों में से अधिकतर उनके सतही स्वरूप से ही जुड़ पाते हैं और एक पूरा संसार हमसे

अछूता रह जाता है। गुरुजी अपने भक्त को कुछ भी और सब कुछ दे सकते हैं। वस्तुतः, ईश्वर जो देने में हिचकिचा जाये, गुरुजी वह भी दे सकते हैं। जीवन में जैसा करते हैं, वैसा ही पाते हैं। किन्तु, गुरुजी किसी को उसकी योग्यता के अनुसार देने के अतिरिक्त इच्छानुसार भी दे सकते हैं। बस, वह इच्छा उसके लिए लाभकारी होनी चाहिए। भक्तों की दृष्टि तो सीमित है और वे केवल वर्तमान देख पाते हैं, पर गुंरुजी तो भूत, वर्तमान और भविष्य, तीनों कालों में देख सकते हैं।

कोई अपने जीवन की नैया गुरुजी के हाथों में सौंप दे, उसका किनारे तक सुरक्षित पहुँचाना निश्चित है। यह जानना आवश्यकहै कि पूर्ण आत्मसमर्पण ही पूर्ण सुरक्षा देता है। मानव–स्वभाव के कारण हर कोई गुरुजी की शरण में हैं, उसे आशीर्वाद मिलना तो तय है। यदि वह मांगेगा, गुरुजी उसकी इच्छा पूर्ण करेंगे।, बस। पर यदि कोई स्वयं नहीं मांगता और सब कुछ गुरुजी पर छोड़ देता है, वह अपने इच्छित से अधिक पायेगा, जितना वह सोच भी नहीं सकता था, उससे भी अधिक वह पा लेगा। यह है गुरुजी के प्रतिपूर्ण आत्मसमर्पण का चमत्कार है।

चना ने हृदय रोग ठीक किया

गुरुजी के निर्देशों का शब्दशः पालन ही किसी उद्धार का मार्ग है यह भी सत्य है कि जब वे कुछ निर्दिष्ट करते हैं, साध्य के लिए उपयुक्त सारे संसाधन भी वे ही उपलब्ध करवाते हैं।

मेरे एक अंतरंग मित्र एस एस गोयल को तीव्र हृदयाघात हुआ। उन्हें अस्पताल ले जाया गया। जब मैं संगत के बाद उस रात को वापस नोएडा जाने लगा, मैंने गुरुजी से मित्र के बारे में चर्चा की। गुरुजी ने मुझे तुरन्त एक उपाय करने के लिए कहा, जिसके लिए सवा पाँच किलो चना चाहिए था। ख़ैर, हम वहाँ से रात

के एक बजे (सर्दियों में) चले। पर, गुरुजी ने उपाय तुरन्त करने के लिए कहा था, इसलिए मैं कोई दुकान ढूँढ़ने लगा, जहाँ से मैं चना खरीद सकता। वापस दस किलोमीटर जाने के बाद मुझे इतनी रात में भी एक दुकान खुली हुई मिली। मैंने दुकानदार को सवा पाँच किलो चना देने के लिए कहा। अपना स्टॉक देखने के बाद उसने बताया कि उसके पास केवल साढ़े चार किलो चना है। मात्रा तो इच्छित से कम थी, पर मैंने उसे दे देने के लिए कहा और चलते समय वैसे ही पूछ लिया कि इतनी रात में भी भी उसकी दुकान प्रतिदिन खुली रहती है या नहीं। उसने बताया कि सामान्यतः वह दुकान 10.30 बजे रात में बंद कर देता है, पर आज वह अपने पूरे स्टॉक का निरीक्षण कर रहा था, जो वह तीन–चार महीनों में एक बार करता है। वैसे तो इसे संयोग भी कहा जा सकता है, पर जब किसी के साथ बहुत बार संयोग होने लग जायें, तो मन में चमत्कार का ख़्याल आता है।

बहरहाल, हमें अभी भी कुछ और चने की आवश्यकता थी, इसलिए हम दुकान ढूँढ़ते रहे। कोई भी दुकान खुली नहीं थी। हम निराश मन से घर पहुँचे और

तुरन्त तलाश करने लगे कि घर में चना है अथवा नहीं। एक डब्बे में कुछ चना था, हमने घर में ही उसका वजन मापा, सब हैरान हो गये क्योंकि उस डब्बे में पौना किलो ही चना था, जितने की हमें आवश्यकता थी। मैंने चना मिलने के बाद वैसा ही किया, जैसा गुरुजी ने कहा था। गोयल की हालत अप्रत्याशित रूप से सुधरी और वह अगले 48 घंटों में ही अस्पताल से छूट गया।

कोई भी बात गुरुजी ने चाहे जितने भी अनायास ढंग से कही हो, उसका गहरा प्रभाव होता है। गुरुजी के मुँह से निकला प्रत्येक शब्द उनके भक्तों की बेहतरी के लिए ही होता है। उनका आडम्बर रहित व्यवहार हमें कोई संकेत भी नहीं देता कि हमारे साथ क्या हो सकता था। गुरुजी शायद ही कभी होने वाली घटनाओं के कार्य कारण संबंध स्पष्ट करते हैं। मुझे अभी भी उनके साथ पंजाब की यात्रा याद है, जहाँ वे एक अस्पताल का उद्‌घाटन करने गये थे। उद्‌घाटन के बाद, गुरुजी ने पंजाब में कुछ और दिन ठहरने का निश्चय किया। ऐसी परिस्थितियों में वे संगत के भी ठहरने का उत्तम प्रबंध करवाते हैं। मेरे ठहरने का प्रबंध नये अस्पताल के मालिक कर रहे थे हम चारों का विशेष ध्यान रख रहे थे। हमें अत्यंत आनंद आया, निरंतर हमें लजीज पंजाबी भोजन मिलता रहा। स्वागत सत्कार का यह एक यादगार अनुभव था। चार दिनों तक वहाँ आराम से रहने के बाद हम वापस दिल्ली आये। वापसी में गुरुजी ने कहा कि अस्पताल में हमारा रहना आने वाले खराब समय की प्रतिपूर्ति था, जिसमें हम चारों को अस्वस्थ होकर अस्पताल में चार महीनों तक रहना पड़ सकता था।

गुरुजी का संगत के प्रति अनुराग असीम है। कोई भी कहीं भी, कभी भी गुरुजी को याद कर ले, गुरुजी उसकी मदद के लिए उपलब्ध हो जाते हैं। पिछले कुछ सालों में ऐसे कई अवसर आये हैं, जब हमें उनकी सर्वव्यापकता का,

सर्वशक्तिमत्ता का ज्ञान हुआ है। हम केवल इतना ही कह सकते हैं, ''धन्यवाद, गुरुजी''।

एक बार सर्दियों की रात में, मैं संगत से वापस जा रहा था और कोहरा इतना गहरा हो गया कि हाथ को हाथ नहीं सूझ रहा था। सड़क के मोड़ तो बिल्कुल नहीं दिख रहे थे। सात–आठ किलोमीटर किसी तरह जाने के बाद मैंने गाड़ी रोक दी। मैंने मन ही मन गुरुजी को याद किया और तुरन्त एक कार मेरे पास से तेजी से गुजरी। मैंने उसके पीछे–पीछे चलने का निश्चय किया, मैं यह भी नहीं जानता था कि वह कार कहाँ जा रही है। मैं उस कार के पीछे चलता रहा। 40–45 मिनटों के बाद, कम कोहरे वाले इलाके में, मैंने देखा कि हम नोएडा पहुँच चुके थे। आगे चलने वाली कार मेरे घर से ठीक आधा किलोमीटर पहले मुड़कर कहीं और चली गयी।

इसी तरह, एक बार गर्मियों के दोपहर में, मेरी कार चलते–चलते एकाएक रुक गयी। मैं कुछ नहीं समझ पाया। मैंने गुरुजी को याद किया। पता नहीं कहाँ से एक व्यक्ति स्कूटर पर मेरे पास आया और मुझसे रुकने का कारण पूछा। वह एक कार–मिस्त्री था। और उसने 10–15 मिनटों में ही कार के रुकने का कारण ढूँढ़ निकाला और कहा कि दो पुर्जे बदलने होंगे। वह स्वयं उन्हें लाने चला गया और दस मिनटों में ही वापस आकर पुर्जे लगाकर उसने कार ठीक कर दी।

हर दिन हमारे साथ छोटी–बड़ी घटनाएं घटित होती हैं, जो गुरुजी का हम पर आशीर्वाद द्योतित करती हैं। समस्याएं हम पर आने से पहले ही रोक दी जाती हैं। मैं गुरुजी से एक विनम्र निवेदन करूँगा कि वे सदैव संगत–सदस्यों को अपनी शरण में रखें, उनकी भूलों व दोषों को क्षमा करें।

— आर. पी. सिंगला का सत्संग

वे मेरी प्रार्थनाओं को तुरन्त सुनते हैं

मैं निर्माता में, सर्वव्यापी में, एक अदृश्य शक्ति में विश्वास करती थी। मैं सोचती थी कि वह मुझे हमेशा देखती थी वह अदृश्य शक्ति मुझे सदा सुनती थी। एक दिन, मैंनं उससे अनुनय किया कि वह मुझे मानव रूप में मिले और ऐसा हुआ।

मुझे नितम्ब के नीचे पाँव में बहुत जोरों का दर्द रहता था। मैंने बहुत सारी दवाएँ ली, पर कोई फायदा नहीं। तब मुझे गुरुजी का पता चला, जो लोगों की बीमारियाँ दूर कर देते थे। मुझे विश्वास तो नहीं हुआ, पर दर्द से राहत मिलने की आशा में मैं उनके पास भी चली गयी।

मेरे सात साल के बेटे को टांसिलों में मवाद भर जाता था और उसे हर 15 दिन पर बुखार हो जाता था। कभी–कभी यह बुखार बहुत बढ़ जाता था और रात में तो चिकित्सक की अनुपलब्धता से समस्या और गहरी हो जाती थी। उसे एक छोड़कर बाकी एण्टीबायोटिक दवाओं से एलर्जी थी और एरीथ्रोमाइसिन दवा, जो सामान्यतः प्रभावी है, से भी उसके शरीर में प्रतिक्रिया हो जाती थी।

रात में मैं और मेरे पति उसे ठंडा संपीडन देते थे, जिससे बुखार उतर जाये। हर महीने की यह कहानी थी।

सन् 1996 की बात हैं। मैं जैसे ही गुरुजी को अपने बेटे की बीमारी के बारे में बताने लगी, उन्होंने बीच में ही टोककर पूछा, "पहले तुम अपनी बीमारी के बारे में बताओ, तुम्हें क्या बीमारी है ?" मैंने हिम्मत जुटाकर उनसे पांवों के दर्द के बारे में कहा और गुरुजी ने बड़े आराम से कहा, "अब यह दर्द नहीं होगा।" सच में मेरे पाँवों में फिर ऐसा दर्द कभी नहीं हुआ। फिर उन्होंने मेरे पुत्र के बारे में पूछा। मैंने विस्तार से कुछ नहीं बताया, केवल कहा कि उसे गल–शोथ है। उन्होंने उसे आशीर्वाद दिया और मुझे कहा कि उसे 'ऊँ' लिखी हुई एक माला पहनायी जाये और परिवार में चावल का वर्जन किया जाये। मैंने मन ही मन सोचा कि एक सात साल का बच्चा सोने की माला तो सम्भाल नहीं पायेगा, गुरुजी ने मेरे मन को पढ़कर तुरन्त कहा कि पीले धागे की माला उसे पहनायी जाये।

गुरुजी भविष्य द्रष्टा हैं। इच्छानुसार, वे विपत्तियों को मोड़ देते हैं। उन्होंने मेरे द्वारा बिना मांगे ही मुझे एक विद्यालय के स्वामित्व का आशीर्वाद पहली ही भेंट में दिया। युवावस्था में मैंने भारतीय प्रशासनिक सेवा से जुड़ने का सपना देखा था। पर मेरी शादी के कारण यह हो न सका। उन्होंने मुझसे पूछा, "तुम भारतीय प्रशासनिक अधिकारी बनना चाहते थे, क्यों नहीं प्रयास किया ?" मैंने उन्हें बताया कि इच्छित व्यक्ति से मेरी शादी मेरी प्राथमिकता बन चुकी थी। मैंनें महसूस किया कि वे जितना दर्शाते थे, उससे ज्यादा जानते थे। वे कोई मामूली इंसान नहीं थे।

गुरुजी के साथ ये सारे अनुभव दिल्ली में हुए। जल्दी ही वे जालंधर चले गये। मुझे पाँवों में कभी दर्द नहीं हुआ। मेरा पुत्र भी स्वस्थ रहने लगा। फिर मुझे

अहसास हुआ कि गुरुजी ही उस निर्माता के मानव रूप हो सकते हैं, जिसकी मुझे तलाश थी।

मैं गुरुजी का धन्यवाद करने जालंधर गयी। मेरी चार साल की बेटी को सर्दियों में साँस की तकलीफ हुई थी। मैं ब्रांकाइटिस या दमा की आशंका से घबरायी हुई थी। मैं गुरुजी के साथ बैठी हुई थी और मेरी बेटी वहीं फर्श पर गुरुजी के चरणों के पास सो गयी। मैं उनसे बच्ची की अस्वस्थता के बारे में शब्दों से कह नहीं पायी, हाँ, मन ही मन में अवश्य कह दिया। उन्होंने अपने एक पाँव को फैलाया और उसकी पीठ पर रख दिया। मैंने इसे उनका आशीर्वाद माना। मुझे प्रतीत हुआ कि अब मुझे बच्ची को दवा देने की आवश्यकता नहीं होगी। मेरी बेटी को उसके बाद कभी भी साँस लेने में परेशानी नहीं हुई है।

चमत्कार से प्रसाद का आ जाना

मुझे और भक्तों ने बताया था कि गुरुजी 'सच खण्ड' या दिव्य प्रसाद चमत्कार से अपने हाथों में ले आते हैं। मैं भी इसे प्राप्त करूँगी, यह मैं जानती भी नहीं थी। एक बार उन्होंने मुझे अपने पास बुलाया और हाथ बढ़ाकर बोले, ''लो।'' वे

मुझे एकाएक प्याली के आकर की मिस्री और उसमें एक और मीठा प्रसाद दे रहे थे।

गुरुजी से मिलने के पहले मेरे पिता को दो बार हृदयाघात हो चुका था। मैंने गुरुजी को यह बात बतायी और उन्होंने आराम से कह दिया, "चिन्ता मत करो।" मैं चकित थी, मेरे पिता को तीसरी बार हृदयाघात हुआ। हम उन्हें लेकर नजदीक के अस्पताल भागे, जहाँ चिकित्सकों ने उनके बचने की उम्मीद कम बतायी। मैंने अपने पति को घर जाकर गुरुजी का 'सच खण्ड' प्रसाद लाने के लिए कहा। मैं 'आई.सी.यू.' में गयी, तो पिताजी को अचेतनावस्था में देखा। थोड़ी देर के बाद मैंने थोड़ा प्रसाद उनकी जीभ के नीचे रख दिया, यह सोचकर कि वह मुंह में घुल जायेगा। आधे घंटे के बाद लिये गये 'ई.सी.जी.' में उतनी गंभीरता नहीं पायी गयी, जितनी आगमन के बाद हुई जांच में पायी गयी थी। यह बताया गया कि पिताजी को अपच हो गया था। जैसे ही मेरे पिताजी को अस्पताल से छुट्टी मिली, हम सीधे जालंधर गये। गुरुजी के दरबार में पहुँचते ही उन्होंने मुझे सारी कहानी वहाँ सबको सुनाने के लिए कही।

मुझे यह विश्वास है कि जब वे किसी को अपने आशीर्वादों की कहानी सुनाने के लिए कहते हैं, तो जिसको ये आशीर्वाद मूलतः मिले थे और जो यह कहानी सुनता है और अब जो यह कहानी पढ़ता है, वे सब उनकी कृपा से धन्य हो जाते हैं।

मेरे पिताजी को 'लिम्फ़ोमा' से लसीका के कैंसर से ग्रस्त बताया जा चुका था। मैं यह बात गुरुजी को बताने गयी, पर बता न सकी। मैंने सुन रखा था कि वे भक्तों की बीमारियाँ अपने शरीर पर ले लेते हैं। और उस दिन वे मुझे कुछ व्यग्र भी लगे। मैं कुछ न कह पायी और वापस चली आयी। एक सप्ताह के बाद उन्होंने मुझे बताया कि उन्होंने मेरे पिताजी का कैंसर ठीक कर दिया था। मैं

स्तब्ध रह गयी, यूँ मैं जानती थी कि गुरुजी भक्तों के मन की बात जान लेते हैं। पिताजी को सारी जाँचों में स्वस्थ पाया गया और चिकित्सक विस्मित रह गये।

एक ही दिन में माँ की आस्था गुरुजी में

मेरी माँ को मधुमेह था। वे एक स्थूलकाय महिला हैं, जिनके खान–पान में कोई नियम नहीं था और न ही वे समय पर दवाएँ लेती थीं। उनका रक्तचाप एक बार इतना बढ़ गया कि उन्हें शय्याग्रस्त होना पड़ा। मैंने गुरुजी को सारी बात बतायी और उन्होंने चिन्ता नहीं करने के लिए कहा और साथ में यह भी कहा, "मैं

तुम्हारी माँ को एक दिन में दिखाऊँगा कि मैं क्या हूँ ?" वर्षों बीत गये और मेरी माँ स्वस्थ बनी रही। उन्हें तीव्र मधुमेह की स्थिति में भी इन्सूलिन की सूइयाँ लेनी होती थी। एक दिन, गुरुजी ने मुझे बताया कि उन्होंने मेरी माँ को बचा लिया था। कुछ ही दिनों के बाद, मेरी माँ की जाँच करायी गयी और उनके शीर में छोटी आँत के टी.वी एवं 'कोलो–रेक्टल कैंसर' की आशंका जतायी गयी । हम सबकी तो दुनिया हिल गयी। मेरी माँ गुरुजी के दर्शनों के लिए आयी। उस समय गुरुजी के आदेशानुसार बीमारियों और समस्याओं की चर्चा नहीं की जा सकती थी। इसलिए, वे लंगर लेकर चुपचाप वहाँ से चली गयीं।

अगली सुबह, अस्पताल में उनकी सारी जाँचों में ऐसा कुछ भी नहीं आया, जिसकी आशंका थी। चिकित्सक विस्मित थे, पर प्रसन्न भी थे। उन्होंन अब माँ के बारे में मधुमेह संबंधित डायरिया बताया। अगले दिन, गुरुजी ने उनहें मधुमेह की जाँच कराने के लिए कहा। उन्होंने मुस्कुराकर मुझसे पूछा, ''यह कैसे हुआ ?'' मैं उनके इन शब्दों का अभिप्राय नहीं समझ पायी।

कुछ दिनों के बाद, मेरी माँ ने मुझे बताया कि न जाँचों में रक्त में शर्करे की मात्रा का स्तर 280–260 (जो वर्षों से रहा था) के बजाय 160–130 आया अै, जो सामान्य है । उसने मुझसे पूछा, ''यह कैसे हुआ ?'' अब मेरी समझ में आया कि गुरुजी यही शब्द बोलकर मुझे यह समझाना चाहते थे कि मेरी माँ की प्रतिक्रिया ऐसी ही होगी। फिलहाल, मेरी माँ तब भी संतुष्ट नहीं हुई और सोचा कि यह एकबारगी हो गया होगा, फिर से उन्होंने मधुमेह की जांच करायी। इस बार रक्त में शर्करे की माला का स्तर 113–99 था, और बेहतर। गुरुजी ने सच में उन्हें एक दिन में जता दिया था कि वे क्या हैं।

हम गुरुजी से पाँच साल दूर रहे

वर्षों पहले, रक्त में हीमोग्लोबिन की मात्रा कम हो रही थी। एक दिन, गुरुजी ने कहा कि अगर वे मेरी बीमारी मुझे बता देंगे, तो मेरी दुनिया हिल जायेगी। मैं उनसे इस बीमारी के बारे में पूछ नहीं पायी। मैंने उनसे प्रार्थना की कि वे मुझे बीमारी के बारे में बताये बिना ही इसे ठीक कर दें। उन्होंने मुझे और मेरे पति को उनसे पाँच सालों तक नहीं मिलने का निर्देश दिया, हम पाँच साल तक उनकी तस्वीर भी नहीं देख सकते थे और इस निर्देश के बारे में किसी को बताना भी नहीं था। पाँच साल बीत गये, जैसा उन्होंने चाहा था, वैसा ही हुआ। हम जीवन में ऊँचाइयाँ छूते चले गये, पर गुरुजी की कमी सदा महसूस हुई।

एक दिन, मैंने मन ही मन उनसे प्रार्थना की और कहा कि उनकी तस्वीर अपने आप हमारे पास पहुँच जाये क्योंकि मैं किसी को कुछ कहना नहीं चाहती थी। मेरे पति जो एकमात्र पत्रिका लेते थे, उसी में गुरुजी की तस्वीर छपी थी। मुझे बाद में बताया गया कि यह एक केवल संयोग नहीं था।

कुछ दिनों के बाद, मैंने तीव्र श्वासावरोध महसूस किया, मानों हर साँस मैं प्रयास से ले पा रही थी। मैं पति को और माता–पिता को फोन पर बड़ी कठिनाई से बता पायी कि मैं साँस नहीं ले पा रही थी। मेरा पुत्र ऑक्सीजन–सिलिण्डर के लिए अस्पताल भागा, मेरी पुत्री पड़ोसियों के पास मदद के लिए भागी। मेरे रिश्तेदार चिन्तित हो गये। अकेली मैं गुरुजी की उस तस्वीर के सामने अपनी बातें बोली तो मैं साँस लेने लग गयी। किन्तु मेरी टाँगे अवलेह की तरह प्रतीत हो रही थीं। गुरुजी ने एक बार मुझे कहा था कि यदि कोई उनकी तस्वीर से बोलता है तो वे वास्तव में सुनते हैं। ख़ैर मुझे अस्पताल ले जाया गया। 'आई सी यू' में मैंने सोचा कि अब मेरा अंत निकट है। ऐसे मौके पर केवल गुरुजी ही थे, जो मेरी जीवन रक्षा के लिए आये। मेरे पति, बच्चे माँ–बाप, रिश्तेदार, कोई भी मुझे जीवन नहीं दे सकता था। गुरुजी ही जीवन रक्षक हैं और उन्होंने मेरे जीवन की रक्षा की। वे ईश्वर के दूत हैं, बल्कि मेरे लिए तो अवतार ही हैं। अविश्वसनीय, पर सच, जब असंभव को आँखों के सामने वे संभव बना देते हैं।

जब मैं उनके सामने पाँच सालों के बाद खड़ी हुई, उन्होंने मेरी ओर देखा और सब कुछ जो मैं अस्पताल में सोच रही थी, शब्दशः बता दिया, "तब क्यों ? पति, बच्चे, माँ–बाप, रिश्तेदार मदद नहीं कर पाये, गुरुजी ने किया ! यह तुम्हारी दूसरी जिन्दगी है, आनन्द करो।" हैरानी की बात है कि पाँच साल हम नहीं मिले थे, तथापि उन्होंने सब कुछ बता दिया, जो मैं सोच रही थी।

मेरी 'हिस्टरेक्टोमी' के बाद मुझे 'ऑस्टियोपेनिया' हो गया था। मेरे नितम्ब जोड़ और फीमर हड्डियों में कई बार दर्द होता था। मैंने गुरुजी को कभी नहीं बताया। इस दौरान, मेरी हड्डियों में कैलशियम का स्तर घट गया था। गुरुजी ने एकाएक मुझे और मेरे पति को सिंगापुर घूमकर आने के लिए कहा, बच्चों को भी साथ ले जाना था। वे हमारी उड़ान का समय पूछते रहते। हमें उन्होंने सिंगापुर पहुँचकर उनके एक भक्त से मिलकर उसे उनकी ओर से आशीर्वाद देने के लिए कहा। जैसे ही मैंने सिंगापुर में उस भक्त को गुरुजी के द्वारा हमारे लिए की गयी सारी मदद की कहानी बतायी, मेरा दर्द गायब हो गया। दिल्ली पहुँचने पर गुरुजी ने कहा कि मेरे शरीर में कैलशियम और हीमोग्लोबिन का स्तर बिल्कुल ठीक है। उन्होंने मुझे शारीरिक वजन कम करने के लिए कहा, नहीं तो मुझे हृदय–रोग हो सकता था। मैंने अपना वनज कम किया और उनकी कृपा से मेरा हृदय भी ठीक है।

मेरी बेटी को पेट में तेज़ ऐंठन और मरोड़ होते थे। उसने गुरुजी से प्रार्थना की। उन्होंने उसका नाम बदल दिया और आज उसे पेट की कोई बीमारी नहीं है। मैंने किसी दूसरे भक्त से कहा कि गुरुजी ने मेरी बेटी का नाम बदल दिया था। उसने मुझे बताया कि उसका नाम भी गुरुजी के द्वारा बदला जा चुका है तथा उन्होंने कहा था कि जब तक वह अपना नाम नहीं बदलेगी, पेट में दर्द खत्म नहीं होगा। यह भी एक संयोग ही था।

ऐसा गुरु मैंने नहीं देखा है, जो बिना किसी शर्त के बिना किसी भेद–भाव के, सब पर अनुराग रखता है और उपदेशों के बिना ही मानवता के लिए व्यावहारिक कार्यों का संपादन करता है।

– श्रीमती सबीना, प्राचार्य एवं भक्त, का सत्संग

GURUJI KA ASHRAM

विश्वास ही गुरुजी तक पहुँचने का साधन

पहली बार तैरने वाले स्वयं डुबकी लगाने से पहले किसी दूसरे को सागर पार करते हुए देखना चाहते हैं। किन्तु, कौतूहल से भरे उन लोगों की भी समझ और विश्वास बढ़ाने में मदद की जाती है।

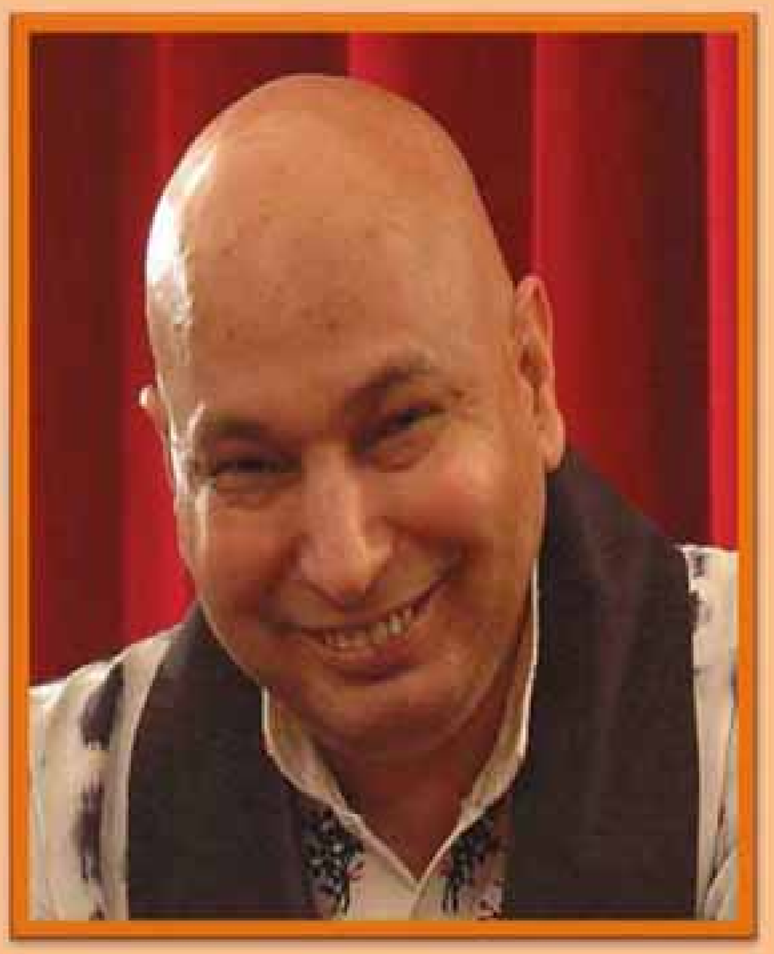

श्री सचिन पहवा, जो एक सत्संग सुन चुके थे, गुरुजी की महिमा मानने के लिए तैयार नहीं थे। उसने अपने ढंग से गुरुजी की दिव्यता को परखना चाहा। वह दिल्ली के एक इलाके, सैनिक फार्मस में एक बंगला बनाना चाहता था, जहाँ वर्षों से निर्माण कार्य बंद था और जहाँ प्रवेश द्वारों पर पुलिस का पहरा होता था। इसके अतिरिक्त उसके पास बंगला बनवाने के लिए यथोचित धन भी नहीं था। पर समस्याओं होने के बावजूद बंगला बना। ऋणी जो पहले ऋण लौटाना नहीं चाहते थे, घर पर आकर ऋण लौटाकर गये। सचिन अब गुरुजी की शरण में भक्ति से ओत–प्रोत था।

सचिन की मंगनी दो साल पहले हो चुकी थी। किन्तु शादी में देर हो रही थी, पारिवारिक समस्याएँ आर्थिक मसले आदि इसके कारण थे। वह गुरुजी की शरण में गया और उसने प्रार्थना की। दो महीनों में ही उसकी भव्य शादी हुई। सचिन की इच्छाएँ, बिना एक शब्द बोले, गुरुजी के द्वारा पूरी की गयी। यह है गुरुजी की असीम महिमा, गुरुजी का भक्तों के प्रति अनुराग।

– सचिन पाहवा, भक्त, का वर्णित सत्संग

GURUJI KA ASHRAM

गुरुजी के चरणों का ही भरोसा

केवल आपको चरण–कमल ही मेरा आश्रय हैं, स्वामी।

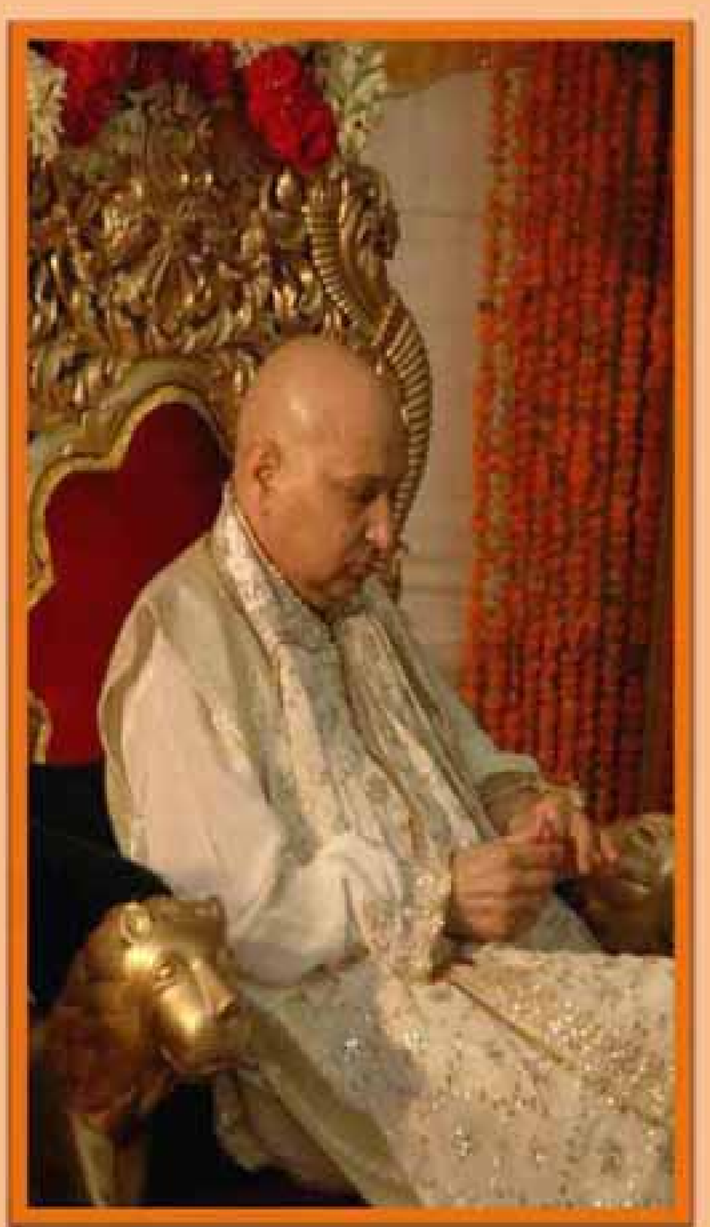

मुझे अपनी अच्छी नौकरी कुछ अजीब कारणों से छोड़नी पड़ी। मैं जानता था कि मेरे अनुभवों के कारण दूसरी नौकरी मिलने में मुझे कोई दिक्कत नहीं होगी। मैं अलग–अलग नौकरियों के लिए आवेदन देता रहा, पर कुछ नहीं हुआ। मुझे लगातार चार–छः महीनों तक कोई सफलता नहीं मिल पायी। मेरा ईश्वर पर से विश्वास उठता जा रहा था, आत्मविश्वास घटता जा रहा था, असंतोष बढ़ता जा रहा था और आर्थिक स्थिति भी बिगड़ती जा रही थी। सामाजिक अपमान भी हो रहा था। मैं अपनी पत्नी से आत्महत्या की बात भी कर बैठा।

इसी दौरान, मैं अपने एक मित्र की सलाह पर गुरुजी से मिलने गया। मैंने एक संत को बैठे हुए देखा, वे पास बैठे लोगों से बातें कर रहे थे, 'शबद' की वाणी से वातावरण गूँज रहा था, चाय व लंगर परोसे जा रहे थे। लंगर के बाद मैं

गुरुजी से आशीर्वाद लेकर घर चला गया। मैंने उनसे कुछ नहीं कहा, मेरे मित्र ने सलाह दी थी कि गुरुजी को कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है, वे सब कुछ जानते हैं।

घर लौटते समय मैंने सोचा कि मैं गुरुजी के पास परेशान गया था। और परेशान ही लौट रहा हूँ। यदि मैंनं उन्हें अपनी परेशानी नहीं बतायी, तो वे मेरी आवश्यकता नहीं जान पायेंगे और यदि मैं उनसे अपनी आवश्यकता नहीं बताता हूँ तो उनके पास जाने का कोई उद्देश्य नहीं है। मेरे मित्र ने पुनः जाने का आग्रह किया, पर मैंने यह कहकर मना कर दिया कि मैंने उन्हें अपनी समस्या बतायी नहीं है, अतः वे कुछ नहीं कर सकते। मेरे जैसा शिक्षित इंसान विश्वास नहीं कर सकता कि वे ईश्वर हैं और सब कुछ जानते हैं।

अगले ही दिन, मुझे अच्छे पद के लिए एक साक्षात्कार पत्र मिला। मैंने अपने मित्र को बताया, उसने इसे गुरुजी का आशीर्वाद बताया। मैं नहीं माना। 15 दिनों पहले इस नौकरी के लिए आवेदन दिया था, नहीं मानने का कारण यही था। साक्षात्कार अच्छा हुआ और मैं अचछे समाचार की प्रतीक्षा करने लगा। पर मुझे परिणाम नकारात्मक मिला। मैं बिल्कुल टूट–सा गया। मैंने नौकरी के लिए आवेदन भरना ही छोड़ दिया। दो महीने बीत गये। मेरी हालत बहुत बुरी थी। इस बार मेरे मित्र ने गुरुजी की शरण में जाने के लिए सलाह नहीं आदेश दिया। मैं उनके पास यह सोचकर गया कि जाने में में बुराई नहीं है और मेरे पास खोने के लिए कुछ नहीं है।

मैं संगत को गुरुजी से जाने की आज्ञा लेते हुए देख रहा था। मैं मन ही मन गुरुजी से प्रार्थना कर रहा था और सोच रहा था कि वे ही मेरी मदद कर सकते थे क्योंकि मैं बहुत प्रयास कर चुका था और थक चुका था। बार–बार 'शबद' के शब्द, जो मैंने शाम में वहाँ सुना था, मेरे मस्तिष्क में घूम रहे थे– "एक बस

भरोसा तेरे चरणों का।" केवल 10–12 लोग रह गये थे, जब गुरुजी उठे और मेरे पास आये और पूछा, "तुम यहाँ कैसे आये ?" मैं विचलित हो गया कि गुरुजी जान चुके थे कि मैं उनकी महिमा नहीं मानता, पर मैं कुछ नहीं बोल सका। मैं केवल धीरे से 'गुरुजी' बोल सका। जब उन्होंने पूछा कि मैं किसके साथ आया था, मैं बड़ी कठिनाई से जवाब दे पाया कि मैं अपनी पत्नी के साथ आया हूँ और उन्होंने उसे बुलाया गुरुजी ने उसका नाम पूछकर कहा, "मैंने तुम्हें आशीर्वाद दे दिया है।" मैं दो–तीन मिनटों तक फ़र्श पर से उठ नहीं पाया। उनके आशीर्वाद से मैंने फिर से नौकरियों के लिए आवेदन देना शुरु किया। अगले ही दिन मुझे एक कंपनी में साक्षात्कार के लिए बुलाया गया। कंपनी के

उपाध्यक्ष और प्रबंधक निदेशक से मिलकर ऐसा लगा जैसे वे मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। दस मिनटों में मुझे औपचारिक तौर पर नौकरी दे दी गयी। उसी शाम मैं गुरुजी के पास आया, मैं उनसे अनास्था के लिए क्षमा मांगना चाहता था। मैं उनका धन्यवाद करना चाहता था। जब वहाँ से चलने का समय हुआ, मैं पंक्ति में सबसे आगे चला गया। गुरुजी ने मेरी और देखा, मैंने उन्हें कहा कि "पिछले नौ महीनों से मुझे नौकरी नहीं मिल रही थी, पर आज उनके आशीर्वाद से मुझे नौकरी मिल गयी थी। गुरुजी ने कहा, "जाओ, आनन्द करो।" न केवल मुझे

काम में आनन्द आता है, बल्कि मेरे सारे कार्य में योग्यता से निपटा देता हूँ। सब मुझसे वहाँ प्रभावित हैं। मैं निश्चित तौर पर कह सकता हूँ कि यह सब गुरुजी स्वयं कर रहे हैं। मैं प्रायः लोगों से कहता हूँ कि पहले मैं जीवित था, पर अब मैंने जीना शुरु किया है।

जब मैं पहले दिन गुरुजी के पास गया था, मेरे घुटनों में तीक्ष्ण दर्द था। चिकित्सक ने बताया कि घुटनों की 'लिगामेंट' क्षत हो गयी है। मुझे आराम करने की सलाह दी गयी और घुटनों को हिलाने से रोका गया। दवाएँ दी गयीं। और बतायी गयी। जब मेरे मित्र ने गुरुजी से दोबारा मिलने के लिए कहा, मैंने उसे बताया कि जब मैं पहले दिन उनके दर्शनों के लिए गया, मेरी 'लिगामेंट' खराब हो गयी, मैं गया तो था नौकरी की प्रार्थना करने, पर तीक्ष्ण दर्द के साथ वापस आया हूँ। मेरा मित्र चुप रह गया। दो महीनों के बाद घुटनों में दर्द नगण्य था। मित्र की ही सलाह पर जब मैं पुनः गुरुजी से मिलने गया था पहले ही डॉक्टरों ने काफ़ी ख़र्चीला उपचार बताया था। मेरे पास पैसों की कमी थी और घुटनों के दर्द के साथ गुरुजीके पास जाना और कठिन हो गया। मैं चल भी नहीं पा रहा था। एक दिन मैंने गुरुजी से शक्ति की गुहार लगायी। मैं कार में बैठ पाया, उसे चलाया और एम्पायर इस्टेट पहुँच पाया। जब मैं वहाँ से चलने के लिए उद्यत हुआ, मैंने मन ही मन में गुरुजी से प्रार्थना की, "तुम्हीं ने दर्द दिया है, तुम्हीं दवा देना।" अगले ही पल दर्द जा चुका था। मेरे घुटनों की समस्या नहीं रही, यह निश्चित करने के लिए मैं चिकित्सक के पास गया। वह भी बीमारी से निजात देखकर चकित रह गया। गुरुजी को भक्तों की बीमारी दूर करने के लिए उनसे बात करने की आवश्यकता नहीं है। किसी को भी अहसास हो जाता है कि वे उसे निर्देश दे रहे हैं, अगर वह व्यक्ति उस निर्देश का पालन करता है, तो समस्या उसके पास आती ही नहीं।

मैंने धूम्रपान छोड़ा

मैं दिन में करीब 30–35 सिगरेट पीता था और इसलिए मुझे तीव्र अम्लीयता व वात की समस्या थी। मैं एक दिन सिगरेट पी रहा था कि मुझे अनुभव हुआ कि गुरुजी मुझे धूम्रपान त्यागने का आदेश दे रहे है। मैंनं उसी समय सिगरेट की आदत छोड़ दी। जब मुझे चिकित्सक ने बताया कि अगर मैं सिगरेट पीना नहीं छोड़ता, मुझे अल्सर हो जाता, जो कैंसर में परिवर्तित हो सकता था, तब मैं समझा गुरुजी की अनुकम्पा, लक्षण दिखायी देने से पहले ही बीमारी ठीक हो गयी और बीमारी से बचाव हो गया।

गुरुजी मेरे मित्र हैं, दार्शनिक हैं, मार्ग–निर्देशक हैं, चिकित्सक हैं, शिक्षक हैं और मैं उनकी उपस्थिति जीवन के हर पहलू में महसूस करता हूँ। वे भक्तों के लिए उसी रूप में आते हैं, जिस रूप में भक्त चाहते हैं। वे हर रूप में श्रद्धेय हैं, वे अपने आप में पूर्ण हैं, वे 'शिव' हैं। यह मानना कठिन है कि जो मानव चलता है। टहलता है, बात करता है, आम व्यक्तियों की तरह खाता है, वह स्वयं ईश्वर है। बचपन से हमें यही सिखाया गया है कि ईश्वर के चार–आठ हाथ होते हैं, कोई विशेष जानवर

उनका वाहन होता है, पर ये सब सांकेतिक प्रदर्शन हैं। अतः ये मानना मुश्किल हो जाता है कि हम उस युग में पैदा हुए हैं, जिसमें सव्यं भगवान् शिव पृथ्वी पर हमें धन्य करने आये हैं। पर, वास्तविकता यही है।

— संजीव कश्यप, एक भक्त, का सत्संग

GURUJI KA ASHRAM

हमारे युग के महापुरुष

मैंने गुरुजी के दर्शन दिसंबर, 1995 में किये थे, जब मैं अपने पुराने मित्र, उस समय के सेशन न्यायाधीश श्री बी. सी राजपूत, के बेटे की शादी के स्वागत–समाराहे में उपस्थित होने गया था। मैंनं व मेरे परिवार ने गुरुजी के दर्शन निरंतर जालंधर, पंचकुला, चंडीगढ़ और नयी दिल्ली में किये । हम लोगों ने सन् 2006 में उनके जन्मदिवस के अवसर पर उनके दर्शन दिल्ली में दो वर्षों के बाद किये । इन दो सालों में उनके दर्शन न करने का आदेश उन्हीं का था। उनके साथ, उनकी शरण में इतने सालों तक रहने के बाद हम यही कह सकते हैं कि गुरुजी हमारे युग के सच्चे महापुरुष हैं।

सुगन्ध के स्रोत

यह घटना सन् 1997 ई. की है। जब गुरुजी चंडीगढ़ में थे। मेरी पत्नी, वधू और मैं गुरुजी के दर्शनों के बाद जाने वाले थे, तभी हमें बुलाया गया और गुरुजी के कक्ष में ले जाया गया। गुरुजी ने कहा कि वे हमें आशीर्वाद देने वाले थे। उन्होंने हमें अपना ललाट सूंघने के लिए कहा। हमें एक तीक्ष्ण सुगन्ध आयी और ऐसी सुगंध हमने पहले

कभी भी महसूस नहीं की थी। ऐसा प्रतीत हुआ मानों गुरुजी के शरीर विभिन्न अंगों से शाश्वत सुंगध के कई स्रोत निकल रहे हों।

दवा रहित उपचार

उसी साल, मेरे दोनों टखनों में तीक्ष्ण दर्द शुरु हुआ। मैं दर्दनिवारक दवाएं लीं। मैं पंचकुला अपने पारिवारिक चिकित्सक के पास पहुँचा। जाँच के बाद पता चला कि मेरे रक्त में होमोग्लोबिन गणना 13–14 के सामान्य स्तर से घटकर 7.2 पहुँच गयी थी। मुझे टखनों में दर्द के बजाय इस समस्या का उपचार कराने की सलाह दी गयी। मैं बहुत घबरा गया। मैं चंडीगढ़ में सेक्टर 34 में सिटी अस्पताल गया, उसके बाद पी जी आई अस्पताल में भी उपचार करवाया। पर कुछ भी फ़ायदा नहीं होने के बाद नई दिल्ली के साऊथ एक्सटेंशन मं एक हीमोग्लोबिन विशेषज्ञ से मिला। उसने बहुत जांच–निरीक्षण किये और पाया कि मेरी 'ई एस आर' गणना 105 है, जो सामान्य से बहुत अधिक है। उसने आशंका जतायी कि मेरे निम्न होमोग्लोबिन स्तर का कारण कहीं न कहीं मेरी हड्डियों में है और कोई असामान्यता नहीं ढूँढ पाने के कारण वह मुझे अस्ति मज्जा का परीक्षण करवाने एक अस्पताल ले गया। हम तो अतिव्यग्र हो गये, जब हमें पता चला कि अस्थि मज्जा का परीक्षण रक्त कैंसर की आशंका पर होता है। शनिवार को 20 से अधिक अस्थि मज्जा के नमूने एकत्र किये गये। सोमवार की शाम को 20 से अधिक अस्थि–मज्जा के नमूने एकत्र किये गये। सोमवार की शाम में नतीजों का पता चलना था। अतिव्यथित होकर मैंने अपने बेटे से चंडीगढ़ में कहा कि वह गुरुजी से संपर्क करे और मेरे जीवन के लिए प्रार्थना करे। श्रद्धेय गुरुजी ने मुझे संवाद भिजवाया कि सारे परिणाम अच्छे होंगे सच में यह चमत्कार ही था, जब सोमवार की शाम में पता चला कि मेरे सारे परिणाम सामान्य थे। विशेषज्ञ ने कुल नौ विटामिनों की कमी बताकर मुझे 24 से भी अधिक कैप्सूल प्रतिदिन लेने

के लिए कहा। अगले ही दिन मैंने चंडीगढ़ में सत्संग में अपनी उपस्थिति दी और गुरुजी को विस्तार से सब कुछ बताया। गुरुजी ने मुझे कही गयी दवाओं को लेने से मना किया और प्रतिदिन अनार का रस पीने और सैर करने के लिए कहा। मैंने दिल्ली के उस विशेषज्ञ को बिना बताये गुरुजी के निर्देशों का पालन पूरे विश्वास से करना शुरु किया। एक महीने के बाद, जब मैं दिल्ली फिर जाँच करवाने गया, तो मेरी हालत में काफ़ी सुधार पाया गया। चिकित्सक ने अपनी

और से दवाओं की खुराक आधी कर दी। अगले महीने और अधिक सुधार होने से उसने मुझे दवाओं की न्यूनतम खुशक लेने के लिए कहा। जब आदरणीय गुरुजी को मेंनं हालत में सुधार बताया, उन्होंने मुझे अनार रस पीने से रोका और कहा कि मैं मदिरा पान भी कर सकता हूँ और अब मैं बिल्कुल ठीक हूँ। अब मैं उनके आशीर्वाद से बिल्कुल स्वस्थ और आनन्दमय जीवन बिता रहा हूँ। मुझे उनके आशीर्वाद से एक नया जीवन मिला है।

मुझे मुख्य अभियन्ता बनाया

मैं पंजाब सिंचाई विभाग से अधीक्षण अभियंता के रूप में सन् 1992 ई. में सेवा–निवृत्त हुआ। अपने कार्यकाल के दौरान मैं 1964–68 में फ़ाज़िल्का में अनुमंडल पदाधिकारी था। फ़ाज़िल्का पाकिस्तान के साथ लगी सीमा से केवल चार कि.मी. दूर था। सितंबर, 1965 में जब पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण किया था, फजिल्का में अफरा–तफरी थी। प्रशासक के रूप में औरतों व बच्चों को मुझे ही 'हल्हाउत' जो नज़दीक ही था, में स्थानांतरित करवाना था। काम मैंने सुचारु रूप से संपन्न किया।

मैंने रक्षा–विभाग के साथ भी मिलकर काम किया, जवानों के साथ बंकरों में भी रहा, शहर पर तो सीमा पार से गोलेबारी हो रही थी। यूं एक नागरिक अधिकारी होने के नाते ये मेरे कर्तव्य नहीं थे, पर फिर भी मैंने बखूबी निभाये। इन सेवाओं के लिए, नागरिक व रक्षा विभाग प्रशस्ति पत्र देता था और पंजाब सरकार द्रुत पदोन्नति किन्तु पंजाब सरकार ने मेरे लिए कुछ भी ऐसा नहीं किया और मैंने इस अन्याय के लिए अदालत का दरवाजा खटखटाया।

जब मैं गुरुजी से मिला, वे मुझे सदा मुख्य अभियन्ता कहकर बुलाते थे, जबकि मैंने उन्हें कह दिया था कि मैं अधीक्षण अभियन्ता के रूप में सेवा–निवृत्त हो चुका हूँ। पर वे कहते थे कि मैं जल्दी ही मुख्य अभियंता बनूँगा। कुछ ही दिनों में, अदालत ने मेरे पिछले मुकदमे का निर्णय दिया, मुझे सारे सेवा लाभ दिये गये और गुरुजी के शब्दों के अनुसार पंजाब सरकार ने सन् 2004 में एक अधिसूचना के जरिए मुझे मुख्य अभियंता के रूप में पदोन्नति दे दी।

एक बार गुरुजी की कृपा मेरे परिवार के सभी सदस्यों पर रही है। 2002–2003 की सर्दियों में एक बार मैं और मेरी पत्नी नई दिल्ली के एम्पायर इस्टेट में गुरुजी की संगत में थे। हम वहाँ से रात में दो बजे चले, जब बहुत ठंड थी। पर

मेरी पत्नी ने कहा कि उसे पिछले डेढ़ घंटों से काफ़ी पसीना आ रहा है और बायीं हथेली में काफ़ी दर्द भी हो रहा है। कुछ बड़ी गड़बड़ है और रात में इस समय कोई चिकित्सक तो मिलेगा नहीं, यह सोचकर मैं उसे लेकर गुरुजी के पास वापस भागा। उन्होंने समस्या सुनते ही मेरी पत्नी का हाथ अपने हाथ में लिया और कहा, "दर्द कहाँ है ? दर्द तो है ही नहीं जाओ। आनन्द करो।" उन्होंने यह कहा और दर्द गायब हो गया। अगले दिन जब हम फिर आये, उन्होंने उसके दर्द के बारे में पूछा। पर, दर्द का तो उनकी कृपा से नामोनिशान नहीं था।

वस्तुतः भौतिकवादी इस संसार में एक सच्चे महापुरुष का मिल पाना असंभव सा है। बाकी संतों से उस महापुरुष की भिन्नता कोई तभी जान सकता है, जब कोई स्वयं उसके दरबार में जाये, अपनी आँखों से उस दिव्य व्यक्तित्व का अवलोकन करे,जो सर्वशक्तिशाली उस परमेश्वर का सच्चा संवाद लोगों तक पहुँचा रहा है। यह महापुरुष धन तो दूर, किसी भी दिखाऊ, भोग–विलास की वस्तु से अपना नाता नहीं रखता। वह अपनी असीम शक्ति से सारी मानव जाति का दुख दर्द दूर करता है गुरुजी एक ब्रह्मज्ञानी हैं, जो इस मृत्युलोक में मानवों को सही मार्ग दिखाने आये हैं, वे मोक्ष का मार्ग उनके लिए प्रशस्त करने आये हैं।

हम बहुत सौभाग्यशाली हैं, हमने उनके बारे में सुना, हम उनसे मिले हमने उन्हें देखा, हमें उनमें अटूट विश्वास हे। वैसे वे मानव–रूप में इस धरती पर आये हैं, पर वे मानव हैं नहीं। वे गुरु नानक और भगवान शंकर के अवतार हैं।

– संतोख सिंह, सेवा निवृत्त मुख्य अभियंता, चंडीगढ़, का सत्संग

GURUJI KA ASHRAM

मन एवं दृष्टि, दोनों में सुधार

गुरुजी सर्वशक्तिशाली हैं वे स्वयं ईश्वर हैं उनसे मिलने के पहले मैं एक निराशावादी महिला थी, पर उनकी शरण में आने के बाद मैं आशावादी हो गयी हूँ। अब मैं सुरक्षित एवं आश्रित महसूस करती हूँ।

मेरे पति, एक प्रसिद्ध बीमा अधिकारी के पुत्र, बहुत प्रसन्न हुए, व चकित हुए जब वे गुरुजी के दर्शनों के लिए पहली बार गये। गुरुजी ने कहा किवे बीमा–क्षेत्र में प्रसिद्ध व्यक्ति खेरा के पुत्र है। हम गुरुजी के दर्शनों के लिए जाते रहे, मेरे पति की बहुत सारी व्यापार संबद्ध सतस्याएँ सुलझती चली गयीं।

दो साल पहले, मुझे भी गुरुजी के चमत्कार की सहानुभूति हुई। मुझे दृष्टि दोष हो गया, मैं अपनी आँखों के कोने से स्पष्ट नहीं देख पा रही थी। मैंने नेत्र–विशेषज्ञों से जाँच करवायी, मेरे रेटीना की जाँा हुई, और भी कई तरह की जाँचे हुई, किन्तु सारे नतीजे सामान्य थे। चिकित्सक बीमारी की पहचान नहीं कर पा रहे थे। अन्ततः गुरुजी के पास मैंने प्रार्थना की। गुरुजी ने एक

ताम्र–पात्र लाने के लिए कहा, और जब मैं उसे ले गयी, उन्होंने उसे अभिमंत्रित कर उससे प्रतिदिन पानी पीने के लिए कहा। जिस दिन से उस पात्र से मैं जल पीने लगी, मेरी दृष्टि ठीक होने लगी।

मेरा नया जन्म हुआ

एक बार एकाएक मुझे चेतनहीनता के दौर पड़ने लगे। मैं मेरुदण्ड विशेषज्ञ, तंत्रिका विशेषज्ञ, अस्थि रोग विशेषज्ञ सब के पास गयी, पर वे मुझे ठीक नहीं कर पाये। चार महीनों तक मैं अस्वस्थ रही और चिकित्सकों के चक्कर काटती रही। मैंने हर तरह की स्कैन करवायी, एम. आ. आई. करवायी। पर नतीजा कुछ नहीं हुआ। मुझे मानसिक अघात भी हो रहा था, साथ में मैं भैया–ग्रस्त हो गयी और कुछ करने लायक न रही।

मैं अन्ततः गुरुजी के पास गयी। मैंने उनसे कहा कि रात में मैं सौ नहीं पाती थी क्योंकि सारे शरीर में तीव्र कंपन होते रहते थे। उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया और लंगर धीरे–धीरे खाने के लिए कहा। उनकी कृपा से मैं जल्दी ही ठीक हो गयी। जब मैं ठीक होने के बाद उनके पास आयी, उन्होंने कहा कि उन्होंने मुझे नया जीवन दिया है। सच में, मेरा यह नया जीवन उनकी करुणा का ही फल था।

मेरे पति को भीषण पीठ दर्द था। वे काफी दिनों से दवाएं ले रहे थे। पर उनकी पीठ में दर्द हर दिन बढ़ता जा रहा था। हम कई अस्पताल गये, कई चिकित्सकों के पास गये, पर वे कुछ निश्चित नहीं कर पा रहे थे। दर्द इतना बढ़ गया कि मेरे पति लगभग दो महीनों तक ठीक से सो नहीं पाते थे। मैंने गुरुजी को बीमारी बतायी। अगी बार जब मैं गुरुजी के पास फिर गयी, उन्होंने मेरे पति की हालत पूछी। मैंने कहा कि वे अब भी ठीक नहीं हुए थे। गुरुजी ने मुझे कहा कि पति की सारी दवाएं बंद कर दी जायें और उन्हें रात में हल्दी वाला दूध दिया जाये। जैसे ही उन्होंने रात में हल्दी वाला दूध पिया, मेरे पति का पीठ दर्द

गायब हो गया। 31 जनवरी को जब हमें फिर गुरुजी के दर्शनों का अवसर मिला, उन्होंने कहा कि उनका आशीर्वाद सदा हमारे साथ है और अब मेरे पति को कोई समस्या नहीं होगी। उस दिन से मेरे पति ने कोई दर्द महसूस नहीं किया हे। जनवरी, 2006 में वे अमेरिका गये, मैं बहुत चिन्तित थी कि वे अकेले जा रहे थे, पर यात्रा में उन्हें कोई शारीरिक परेशानी नहीं हुई, गुरुजी का अदृश्य साथ जो था।

जब से मैं गुरुजी के संपर्क में आयी हूँ, मेरी जिन्दगी बदल गयी है। गुरुजी के हर पग पर दिशा निर्देश करते हैं। कोई मन से उन्हें कहीं भी याद करे, वह उन्हें वहीं पायेंगा। हम सब अति सौभाग्यशाली हैं कि गुरुजी हमारे साथ हैं।

– शालिनी खेरा, एक भक्त, का सत्संग

GURUJI KA ASHRAM

स्वपन में ऑपरेशन से पत्नी का हृदय रोग दूर हुआ

मुझे व मेरे परिवर का श्रद्धेय गुरुजी से मिलने का सौभाग्य 1997–98 में प्राप्त

हुआ। एक मित्र के कहने पर, जो गुरुजी का आशीर्वाद पाकर धन्य हो चुका था, हम उनके दर्शनों के लिए गए।

मेरी पत्नी, नीता बहल, उन दिनों हृदय रोग से त्रस्त थी। मै। उसे पहले अपने पारिवारिक चिकित्सक के पास ले गया था, जिसने निरीक्षणों के बाद कुछ जाँच जैसे, ई. सी जी और टी एम टी, करवाने के लिए कहा था। ई सी जी के

परिणाम संतोषप्रद नहीं थे। टी एम टी जाँच में अलग–अलग चाल से चल रहे एक प्लेटफार्म पर चलना था। वह इस पर एक मिनट भी नही चल पायी, उसका रक्तचाप अतिभय बढ़ गया। चिकित्सक ने यह जानने के बाद स्ट्रेस थैलियम जाँच करवाने के लिए कहा। मैंने दिल्ली में एक अस्पताल में जांच के लिए समय लिया। पर जांच से पहले हम गुरुजी से मिले और उन्हें पत्नी की स्वास्थ्य समस्याओं के बारे में बताया। उन्होंने सब कुछ सुनकर मेरी पत्नी का बाया हाथ पकड़ा और उसे कसकर हिलाया। मेरी पत्नी को लगा जैसे उसके हाथ का जोड़ उखड़ गया हो। फिर गुरुजी ने उसे पान के 17 पत्तों को सीने के बायें हिस्से पर लगातार तीन दिन लगाने के लिए कहा। वैसे हम जब वहाँ संगत में बैठे ही हुए थे, तभी जो असहनीय दर्द उसे होता था, कम होने लग गया था।

मेरी पत्नी ने गुरुजी के निर्देशानुसार पान के पत्ते लगाये। उसी रात उसने सपना देखा कि गुरुजी ने स्वयं उसके हृदय का ऑपरेशन किया है और वह ठीक हो गयी है। उसने सुबह मुझे स्वप्न के बारे में बताया। उसने कहा कि वह पसीने–पसीने हो गयी थी और ऑपरेशन के बाद जग गयी थी। जब हम उस दिन शाम में गुरुजी से मिले और उन्हें स्वप्न के बारे में बताया, उन्होंने हमें हैरान करते हुए कहा, "कल्याण हो गया।"

किन्तु अब तक हमने गुरुजी को थैलियम जांच के बारे में नहीं बताया था, जिसके लिए हमने एक अस्पताल में समय भी आरक्षित करवा लिया था। जब अस्पताल में जाँच हुई, शुरुआती ई सी जी संतोषप्रद पाया गया। टी एम टी जांच के बाद चिकित्सक हतप्रभ थे क्योंकि मेरी पत्नी तेजी से नौ मिनटों तक प्लेटफार्म पर चल चुकी थी, इस दौरान रक्त चाप भी उसका सामान्य रहा था। वस्तुतः चिकित्सकों ने कौतूहल से मुझसे पूछा कि इनको समस्या क्या है। हृदय

रोग एवं दर्द की बात बताने पर वे एक–दूसरे को हैरानी से देखने लगे। थैलियम जाँच भी हुई और हम घर वापस आ गये। तीन दिनों के बाद हमें परिणाम बताये गये, परिणाम कोई बीमारी इंगित नहीं कर रहे थे। उसी समय मुझे गुरुजी का फोन आया, मेरे बिना बताये उन्होंने ही मुझे बता दिया कि जांच में कुछ भी नहीं आया है और वे हमारी संतुश्टि पूछने लगे। हमें संकोच हो गया। उस दिन के बाद मेरी पत्नी से सामान्यतया जीवन–यापन कर रही है।

ऐसी बहुत सारी घटनाएँ हैं, जो निर्विवाद रूप से यह सिद्ध करती हैं कि गुरुजी सर्वशक्तिशाली ईश्वर के ही अवतार हैं और अलौकिक शक्तियों के स्वामी हैं। उनका अपने भक्तों के लिए असीम अनुराग और साहचर्य है, जिसके कारण भक्तगण सदा उनकी छत्र–छाया में मानसिक और शारीरिक पीड़ा से दूर रहते हैं।

हम स्वयं को अति सौभाग्यशाली समझते हैं कि हम उनकी शरण में हैं और हमारे दैनिक जीवन में सदा उनके आशीर्वादों का साथ हमारे लिए विद्यमान है।

– एस. के. बहल, चैयरमेन, कन्स्यूमर ग्रिवान्स रिड्रैसल फोरम, का सत्संग

मेरे चमत्कारी रक्षक

मैं गुरुजी का परम भक्त उस समय से रहा हूँ, जब मैं पहली बार उनसे सन् 1991 में चंडीगढ़ में 'आयकर अपील न्यायाधिकरण' के लिए कार्यालय में जहाँ मैं प्रीज़ाइडिंग अधिकारी था, एक सहयोगी के कमरे में मिला था। उसके बाद से

चाहे मैं संगत में आऊँ या न आऊँ, गुरुजी सदा मेरे हृदय में रहते हैं। उनक सानिध्य अपने आप में एक आशीर्वाद ही रहा है।

कुछ वर्षों पहले, गुरुजी के जन्मदिवस पर, मैंनं उन पर अंग्रेज़ी में एक कविता लिखी। यूँ मैं लिख सकता हूँ, पर अंग्रेजी में लिखना मेरे लिए कठिन था लेकिन

किसी अदृश्य शक्ति के आदेश व निर्देश पर मैं ऐसा कर पाया। उनके जन्मदिन के शुभ अवसर पर वह कविता हजारों भक्तों में बाँटी गयी।

जनवरी, 2006 में, मैं गंभीर रूप से बीमार हो गया। बहुत तेज़ बुखार था और मैं एकाएक अचेतन हो गया। मुझे स्ट्रेचर पर तुरन्त दिल्ली के इन्द्रप्रस्थ अपोलो अस्पताल के आई सी यू में ले जाया गया। चिकित्सकों ने बताया कि मेरा यकृत और मेरे गुर्दे खराब हो चुके थे। मेरे हृदय का आकार बढ़ गया था और आंतों में रक्त स्राव हो रहा था। मुझें तीव्र न्यूमोनिया हो गया था और मस्तिष्क भी बुरी तरह प्रभावित था। इन जांचों के आधार पर चिकित्सकों के अनुसार मेरा बच पाना कठिन था और मरे परिवार को भी यह बात बता दी गयी। फिर भी उन्होंने कहा कि अगर मैं अगले 48 घंटों तक बच गया, तो मेरे बचने की थोड़ी उम्मीद है।

GURUJI KA ASHRAM

चिकित्सक निरंतर मेरे उपचार में व्यस्त थे। एक दिन, सुबह चार बजे, जब मैं अर्द्ध चेतनावस्था में था और नर्स मेरे शरीर में कोई विशेष शिरा ढूंढ रही थी, मैंने एक चिकित्सक को किसी सेकहते हुए सुना, "मैंनं हर तरह का संभव प्रयास कर लिया है, पर कोई सुधार नहीं है।" मैं बिल्कुल निराश हो गया।

पर आई सी यू में भी मैं गुरुजी से मन ही मन संपर्क बनाने का प्रयास कर रहा था। उस दिन मैंने गुरुजी की उस तस्वीर पर ध्यान केन्द्रित किया, जिसमें उनके हाथ ठुड्डी के नीचे चषकाकार थे और आँखें बंद थी। दिव्यत्व और शांति की प्रतिमूर्ति। यह तस्वीर मेरे घर में थी। जैसे ही यह तस्वीर मेरे दिमाग में आयी, मैंने क्षण में ही शरीर और मन में आराम महसूस किया और मैं जैसे ठीक होने लगा। ख़ैर चिकित्सकों ने मुझे कुछ जीवन रक्षक अभ्यास कराने के बाद

अस्पताल से छुट्टी दे दी। मेरे शरीर का वज़न 25 किलो कम हो गया था। मै। बिल्कुल कृशकाय हो चुका था। कई महीनों तक मैं ठीक से चल या बोल नहीं सका। एक चिकित्सक ने जिसने मेरा उपचार किया था, एक दिन मुझसे पूछा, "तुम कैसे बच गये ?" तुमसे आधी उम्र का इंसान भी उन परिस्थितियों में मर जाता।"

वह चिकित्सक नहीं जानता था कि मुझे बचाने वाला, मेरा चमत्कारी रक्षक, इश्वर का दूत, स्वयं गुरुजी थे।

– एस. के चन्दर, एक भक्त का सत्संग

GURUJI KA ASHRAM

गुरुजी ने मेरा भाग्य फिर लिखा

अगर सारी धरती कागज़ बन जाये, सारे पेड़ मेरी लेखनी बन जायें, सातों समंदर का पानी उसकी स्याही बन जाये, फिर भी मेरे गुरु की महिमा लिखी नहीं जा सकती।

मैं

अपनी पूजा के फूल उस आध्यात्मिक गुरु के चरणों में अर्पित करता हूँ जिन्होंने ज्ञान के प्रकाश से अज्ञान के अंधकार को मेरी आँखों के सामने से हटाकर उजाला किया है।

मैं गुरुजी से 1995 में जालंधर में मिली। सरदार सुदर्शन सिंह सेखोन ने, जो संगरुर में रहत हैं मुझे गुरुजी ने भेजा। उनका कहना था कि गुरुजी ही पृथ्वी पर एकमा, गुरु हैं जो भाग्य भी बदल सकते हैं। मैं उस समय इस बात का मतलब नहीं समझ पायी।

जिस दिन मैं गुरुजी से मिली, उन्होंने मुझे गाड़ी में कैंटोनमैंट तक ले चलने के लिए कहा, जहाँ से उन्हें दिल्ली में किसी को फोन कर बड़े मंदिर के भवन निर्माण के बारे में पूछना था। लगभग रात हो चुकी थी और गुरुजी मुझे पीछे वाली सीट से ही गाड़ी चालान में निर्देश दे रहे थे। वे मुझे कभी इस लेन में चलान के लिए कहते कभी तुरन्त दूसरी में। मैं निर्देश का पालन तो कर रही रही थी, पर मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा था। तभी गुरुजी ने मुझे कहा कि एक काले रंग की कार उस कौने में आयेगी और मैं उसे रोकूँ। अभी उन्होंने अपनी बात पूरी की ही थी। कि एक काले रंग की कार अवतरित हो गयी। उनके दो और भक्त, कर्नल जोशी और जो सेवा निवृत्त हैं उनके पुत्र नितिन उस कार में थे। वे हमें अपने घर ले गये। रास्ते में नितिन ने मुझे कहा कि कुछ मिनटों पहले ही उन्हें गुरुजी की उपस्थिति का आभास हुआ था, जब गुलाब की एक तेज खुशबू उनके घर में फैली थी। उसी समय उन्होंने गुरुजी के दरबार में जाने का फैसला किया। सामान्यतः वे लोग दूसरे रास्ते से मंदिर जाते हैं, पर आज उन्होंने यह रास्ता चुना था। मैं तभी जान गयी कि यह घटना गुरुजी का परियच है, ये महापुरुष सर्वज्ञानी व सर्वव्यापी हैं।

लुधियाना के रास्ते में एक शहर लुप्त हो गया

एक बार में जालंधर में गुरुजी से ढ़ाई बजे रात में आज्ञा लेकर अपने पिता और दो बेटियों के साथ लुधियाना चल पड़ी। वही से लुधियानाके लिए रास्ता बिल्कुल सीधा है। सड़क पर कोई और गाड़ी थी नहीं, इसलिए मैं लगभग 90 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से गाड़ी चला रही थी। पर उस यात्रा के दौरान एक अजीब बात हुई। हमें फगवाड़ा शहर रास्ते में नहीं मिला, जो लुधियाना और जालंधर के बीच एक मुख्य शहर है। हम घर पहुँच गये, पर हमें कुछ समझ नहीं आया।

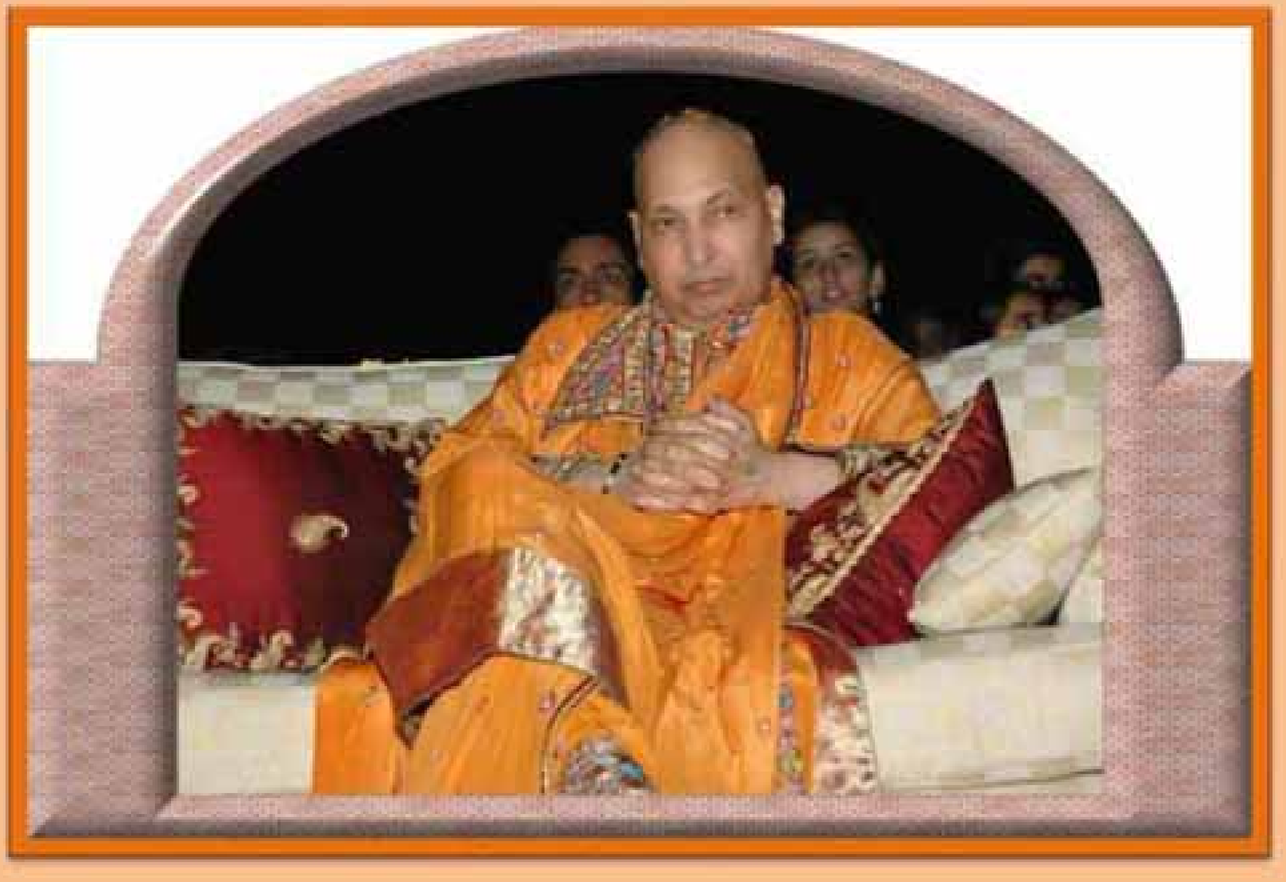

अगले दिन, जब मैं गुरुजी के पास जालंधर पहुँची, तब भेद खुला। गुरुजी ने मुझसे पूछा, " सुखी ! कल रात गाड़ी 90 किलोमीटर प्रति घंटा पर चल रही थी ? मैं चकित रह गयी। गुम्जी ने फिर कहा कि मुझपर काला जादू कर दिया गया था और कल रात उन्होंने सारे बुरे प्रभाव स्वयं पर ले लिये थे। गुरुजी ने सारी रात खूब उल्टियां की थी। अपने दखने पर उन्होंने एक काला धब्बा भी दिखाया,

जो कई महीनों तक बना रहा। तब मैं समझी भाग्य बदलने वाली बात। गुरुजी ने मुझे बताया कि मेरा बहुत बुरा समय चल रहा था। अगर यह काला जादू चल जाता, मैं 45 वर्ष की आयु से अधिक जीवित नहीं रह पाती। सच में, मेरा चेहरा उन दिनों काला पड़ गया था, काला जादू का दृश्य संकेत, गुरुजी से मिलने के बाद चेहरे पर स्वाभाविक रंग आने लगा। मेरा वनज भी 14 किलो कम हो गया था।

पर, आज मैं गुरुजी की दया से 50 साल से अधिक की हूँ और आनन्दमय जीवन व्यतीत कर रही हूँ।

सौ सालों के बाद मीठा पानी बाहर निकला

1995 से अब तक इन चौदह सालों में गुरुजी की करुणा व अनुकम्पा के कई दृष्टांतों का अनुभव मेरे पास है एक बार हमने चंडीगढ़ के पास डबकौरी गाँव में ज़मीन खरीदी थी। गुरुजी ने हमें वहाँ नलकूप लगाने के लिए और तरकारियों की खेती करने के लिए कहा। जमीन पानी के लिए खोदी गयी। बोर 420 फीट तक नीचे गया, पर पानी नदारद था। एक सर्वेक्षण किया गया और पाया गया कि इस स्थल खंड में पानी है ही नहीं, हम दिल्ली में गुरुजी के पास आये और उन्हें सर्वेक्षण के बारे में बताया। उन्होंने हमें एक खास जगह खुदाई करवाने के लिए कहा। वहाँ खुदाई हुई और पानी निकल आया और इतना पानी कि पाईपों में समा नहीं पा रहा था। आश्चर्यजनक ढंग से पानी मीठा भी था व अपने साथ नीचे से नीले कंकड भी ला रहा था। हम गुरुजी का धन्यवाद करने दिल्ली आये। गुरुजी ने हा, ''गुरु नानक ने पानी वहाँ से निकाला था, जहां वे बैठे हुए थे। मैंने तुम्हारी ज़मीन से पानी यहीं दिल्ली में बैठे–बैठे निकाल दिया और यह

पानी वहाँ सौ सालों के बाद निकला है।" सार डबकौरी गाँव स्तमिभत था। गुरुजी ने हमें पानी की बिक्री से मना किया और कहा कि ऐसा करने पर नलकूप सूख जायेगा।

गुरुजी ने असल दैवी रूप दिखाया

सेखोन साहब, जो स्वयं आध्यात्मिक रुझान के व्यक्ति हैं, एक बार अपने बड़े भाई के साथ गुरुजी से मिलने जालंधर आये। गुरुजी उन्हें अंदर के कमरे में ले गये। गुरुजी ने एक जगह हीरों का अम्बार लगा दिया और सेखोने साहब के बड़े भाई को इच्छित हीरा या हीरों का सेट उठा लेने के लिए कहा। उन्होंने गुरुजी को भौतिकवादिता से उन्हें दूर रखने की याचना की। फिर गुरुजी ने

सेखोने साहब की इच्छा पूछी। उन्होंने उनसे गुरु नानक देव जी के दर्शन की इच्छा जतायी। गुरुजी मस्कुराकर बाहर चले गये। लगभग डेढ़ महीने के बाद, एक बार सेखोने साहब पहली मंजिल के अपने कमरे में अंदर से दोनों दरवाजों को बंद कर, समाधि में लीन थे। गुरुजी एकाएक अवतरित हुए, उन्हें समाधि से जगाया और गुरु नानक देव जी के रूप में दर्शन दिये। लगभग 45 मिनटों तक सेखोन साहब ने गुरु नानक को बिछावन पर बैठे देखा। गुरुजी ने उनहें दसों सिक्ख गुरुओं के दर्शन दिये हैं, साथ ही उन्होंने मध्ययुगीन संतों, कबीर और मीरा, के भी दर्शन करवाये हैं सेखोने साहब का कहना है कि हमारे मंदिरों व गुरुद्वारों में पायी जाने वाली मूर्तियों से उन दर्शनों के दौरान उनके द्वारा देखे गये दिव्य आत्माओं के चेहरे साम्यता नहीं रखते।

गुरुजी जीवन और मृत्यु का नियंत्रण करते हैं, ईश्वरों के दर्शन करवाते हैं, स्वयं भी शिव के रूप में दर्शन देते हैं। वे स्वयं ही तो सर्वशक्तिशाली ईश्वर हैं उन्होंने मानव–रूप में जन्म लिया है हमारी दुष्क्रियाओं के कार्मिक परिणामों का नाश करने के लिए। कोई कैसे नहीं इस पुण्यात्मा का अनुयायी बनेगा। इस महापुरुष की मदद के बिना तो हमारा अपने मन–मस्तिष्क से, अपने हृदय से, हमारा अपने आप से भी मिलन नहीं हो सकता।

– श्रीमति सुखी, चंडीगढ़ की एक भक्त, का सत्संग

जय गुरुजी

समय के साथ मैंने ईश्वर पर विश्वास करना छोड़ दिया था। मुझे लगता था कि ईश्वर का कोई अस्तित्व नही है। मैंने मंदिर जाना, प्रार्थना करना छोड़ दिया था। मेरा जीवन बिखर–सा गया था। मुझे हमेशा लगता था कि ईश्वर ने मुझे जन्म ही क्यों दिया, शायद मुझे तकलीफ में देखकर खुश होने के लिए ? और अगर कहीं ईश्वर हैं भी तो वह अवश्य ही परपीड़क है।

फिर भी गुरुजी ने मुझे अपने शरण में लेकर दिव्य दर्शन और आशीर्वाद दिया। उन्होंने मुझे एक माँ की तरह पाला और इतना कुछ दिया कि मैं उन्हें धन्यवाद भी नहीं कर सकता हूँ। मुझे शायद कभी पता नहीं चल पाएगा कि उन्होंने मेरे लिए कितना किया है। जो मुझे दिखता है वो हिमशैल की चोटी भर है। बिना मेरे कहे, बिना उसके योग्य हुए उन्होंने मुझे यह महसूस नहीं होने दिया कि वो मुझे इतना कुछ दे रहे हैं।

कैंसर के चंगुल से उक्त कराया

हमें गुरुजी महाराज के दर्शन का सौभाग्य सबसे पहले सन् 1998 में मिला। में उस समय चौबीस साल का था और एक विषैले ट्यूमर 'न्यूरोब्लास्टोमा' का मेरा ऑपरेशन हुआ था। मेरा जीवन छिन्न–भिन्न हो चुका था। मेरी माँ के सहकर्मी, जो दंपत्ति डॉक्टर थे ने हमें गुरुजी की पारलौकिक शक्तियों के बारे में बताया। निर्देशानुसार हमने गुरुजी को मेरी स्थिति के बारे में बताया तो उनका जवाब था "कल्याण कर दिया।" हमें तब इन शब्दों की शक्ति का मान नहीं था। गुरुजी जब कुछ कहते हैं तो वह संपूर्ण सत्य होता है। हमें यह अनुवाद होने में काफी समय लगा कि मुझे हमेशा के लिए आशीर्वाद मिल चुका है। मुझे अभिमंत्रित लंगर और चाय दिया जा रहा था जो गुरुजी के मेरा इलाज करने का तरीका था। मेरे स्वास्थ्य में चमत्कारिक रूप से सुधार हो रहा था। मैं ऑपरेशन के छः महीने बाद बीमारी की स्थिति जानने सीटी स्केन करवाने गया। जाँच रिपोर्ट में ऑपरेशन के बाद नजर आए तीन संदेहास्पद धब्बे (गुर्दा, किडनी और पेट पर) अब गायब हो गए थे। गुरुजी की दैवीय रोगहरणी शक्ति ने मुझे कैंसर के चंगुल से छुड़ा लिया था।

गुरुजी की कृपा से मैं पूरी तरह स्वस्थ हो गया था। आज मुझे कैंसर से ग्रसित हुए एक दशक हो चुका है लेकिन कैंसर से ग्रसित हुए एक दशक हो चुका है लेकिन गुरुजी के आशीर्वाद ने मुझे इस बीमारी के चंगुल से पूरी तरह छुडा लिया था। मेरा इलाज चाय प्रसाद और लंगर के रूप में ही हुआ। डॉक्टर जो मेरे स्वास्थ्य लाभ को लेकर चिंतित थे आज मुझे यह भूल ने को कहते हैं कि मुझे कभी कैंसर था। उन्हें मुझे बताने की जरूरत नहीं मैं जानता हूँ कि गुरुजी की कृपा से मुझे नया जीवन मिला है।

आँखें खोलकर कगवाड़ा से दिल्ली पहुँच गए

फरवरी सन् 2002 में हमें गुरुजी से एक विवाह में शामिल होने का न्योता मिला। शादी दिल्ली से बहुत दूर फगवाड़े में होनी थी। मैं और मेरे माता–पिता शादी में गए थे। शादी के दि नही हम अपनी कार से सुबह चलकर शाम में विवाह–स्थल पहुँच गए। गुरुजी नवदंपत्ति और संगत को आशीर्वाद देने आए। समारोह के बाद, गुरुजी ने हमें और एक भक्त जे मल्होत्रा को उसी रात दिल्ली लौटने को

कहा। हमने ऐसा ही किया।

रात के साढ़े बारह बजे हम दिल्ली की ओर वापस चले। हमारी कार जे. मल्होत्रा की जिप्सी के पीछे थी। मैं कार चला रहा था। जल्दी ही मेरे माता–पिता सो गए। पन्द्रह मिनट के बाद मुझे भी नींद आने लगी थी। रात होने के कारण राजमार्ग पर यातायात कम होने के कारण हमारी गाड़ी सौ मि.मी./प्रति घंटे से

चल रही थी। मेरे आँखें नींद से और भी बोझिल होती जा रही थी। मैं पिताजी को नहीं उठा सकता थी क्योंकि दिन भर की यात्रा से वो थेक चुके थे लेकिन गुरुजी के आदेश का पालन करने के लिए यात्रा नहीं रोकी जाती थी।

तीन बार गाड़ी सड़क के हटने पर मेरी नींद खुली थी और हर बार आसानी से सड़क पर वापस आ जाती थी। लेकिन गाड़ी को रोककर मैंने चेहरे को ठंडे पानी से धोया। लेकिन इससे कोई फायदा नहीं हुआ। हम सारी गत गाड़ी देख पा रहा था। मेरी आखें जिप्सी की पीछे की लाइट का पीछा कर रही थीं। मुझे पता था कि अगर आगे की कार ने ब्रेक लगाया तो मैं समय पर ब्रेक नहीं लगा पाऊँगा जबकि मैंने गाड़ी से दूरी बनाकर रखी हुई थी। मुझे उस रात एक भी शहर के गुजरने या कोई और गाड़ी के गुजरने की याद नहीं है। दिल्ली शहर में सुबह प्रवेश करने के बाद, मैंने अपने पिता को गाड़ी चलाने को कहा क्योंकि मुझसे अब नहीं हो पा रहा था।

क्या मैं ही उस रात गाड़ी चला रहा था ? या कोई अदृश्य शक्ति मुझसे गाड़ी सही दिशा में इतनी दूरी तक चलवा रही थी। आज भी जब में इस घटना के बारे में लोगों को बताता हूँ तो वे घबरा जाते हैं। उस रात कुछ भी हो सकता था। लेकिन मैं जानता था कि गुरुजी हमारे साथ थे। हमारी रक्षा कर रहे थे। चाहे हम कहीं भी ाहो, चाहे हम किसी किन्तु–परंतु के उनके आदेश का पालन हम करते हैं तो उनके आशीर्वाद से सफल्ता मिलनी निश्चित हे। हमारे कुछ भी कार्य करने में उनका आशीर्वाद होना अति आवश्यक है। सिर्फ इतना ही कह सकते हैं शुक्रिया गुरुजी।

सर्वोत्तम मेल मिलाने वाला

मेरे कैंसर से स्वस्थ होते ही गुरुजी मेरे माता–पिता मेरे विवाह के लिए बराबर कहते थे "लड़के का विवाह करा दो।" लड़की की तलाश की गई लेकिन बात

नहीं बन रही थी। हमने गुरुजी से कहा तो उन्होंने उत्तर दिया, ''तुम्हें पंजाबी लड़की दिलवाऊँगा।'' चूँकि हम किसी पंजाबी परिवार को नहीं जानते थे, हमने अखबार में विज्ञापन देना चाहा लेकिन गुरुजी ने मना कर दिया ''चिनता न कर हो जाएगा।'' फिर हमने गुरुजी के कथन के अंदर की सच्चाई को नहीं समझा। मैं किसी समारोह में भी नहीं जाता था इसलिए समझ नहीं आ रहा था कि ये कैसे संभव हो पाएगा।

मैं ऑफिस की कैंटीन कभी–कभी ही जाता था लेकिन एक दिन मैं अपने सहकर्मियों के साथ वहाँ गया तो अचानक एक लड़की ने मुझसे मेरे मित्र दीपक के बारे में पूछा। मैंने उसे बताया कि दीपक ने कुछ समय पहले ऑफिस छोड़ दिया है। उस लड़की छवि ने अपने एम.सी.ए. का प्रशिक्षण छोड़ने से पहले मेरे मित्र दीपक के अंदर ही किया था। अब वह कर्मचारी के तौर पर एक साल बाद ऑफिस में नियुक्त हुई थी। जल्दी

ही सब कुछ सही दिशा में बढ़ने लगा। हमने गुरुजी से इस मेल के बारे में पूछा तो उन्होंने हमें अपना आशीर्वाद दिया। गुरुजी की तीन साल पहले की गई भविष्यवाणी के अनुसार यह लड़की पंजाबी परिवार से ही थी।

अशुभ ग्रहों को हाशिये पर कर दिया

हमारी शादी के तुरन्त बाद ही हमारी समस्याएँ शुरू हो गई। सब कुछ गलत हो रहा था। छोटी–छोटी बातों पर हमारे रोज झगड़े होते थे। किसी भी कारण से हमारे झगड़े शुरू हो जाते थे, या तो हमारे पास समय नहीं होता था ओर समय होने पर हम लड़ते ही रहते थे। समय के साथ–साथ झगड़ों की संख्या और तीव्रता दोनों बढ़ती जा रही थी। हम इतने तनाव में आ चुके थे कि गुरुजी के सामने अपने दिल की भड़ास निकालना चाहते थे कि अगर हमारे विवाह के बाद इतनी समस्याएँ होनी थीं तो उन्हें हमें इसकी आज्ञा नहीं देनी चाहिए थी। ऐसा करीब दो साल तक चलता रहा था।

ऐसे समय गुरुजी से आस्था और प्रार्थना करने की बजाय कुछ और मूर्खता कर दी। हम सलाह के लिए प्रसिद्ध ज्योतिषी के पास चले गए थे। हमने उन्हें अपनी परेशानी बताकर अपनी कुंडली दिखाई। कुंडली देखने के बाद पहली चीज उन्होंने कही आज तक जीवित रहने पर शुक्रगुजार होना चाहिए। आपकी कुंडली ऐसी है कि या तो आपमें से एक की मौत हो जानी चाहिए थी या आप दोनों ही दूसरी शादी कर चुके होते और इतना ही नहीं अंत में उन्होंने कहा कि छत्तीस गुणों (इनके आधार पर ही रिश्ते कायम होते हैं, जितने अधिक गुण मिलेंगे, उतनाही अच्छा रिश्ता होगा) में हमारे सिर्फ दस गुण मिलते हैं। जबकि दूसरे पंपत्तियों के तीस गुण मिलत हैं हमारी स्थिति सुनकर हम स्तब्ध रह गए।

गुरुजी ने हमारे लिए कुछ और योजना बना रखी थी। हमारी समस्याएँ, जिन्हें शायद हमें जीवनभर झेलना पड़ता। काफी कम समय के लिए ही थी। इस दौरान शादी का टिका रहना ही गुरुजी की कृपा से ही संभव हुआ था। सब कुछ सही दिशा में चलने लगा। सारी समस्याएँ रहस्यात्मक तरीके से गायब होती गईं। जबकि हमने समाधान के लिए कुछ भी नहीं किया था। गुरुजी के आशीर्वाद से हमारी भाग्य शायद दुबारा लिखा गया। दुख की अंधेरी रात खत्म हो गई थी।

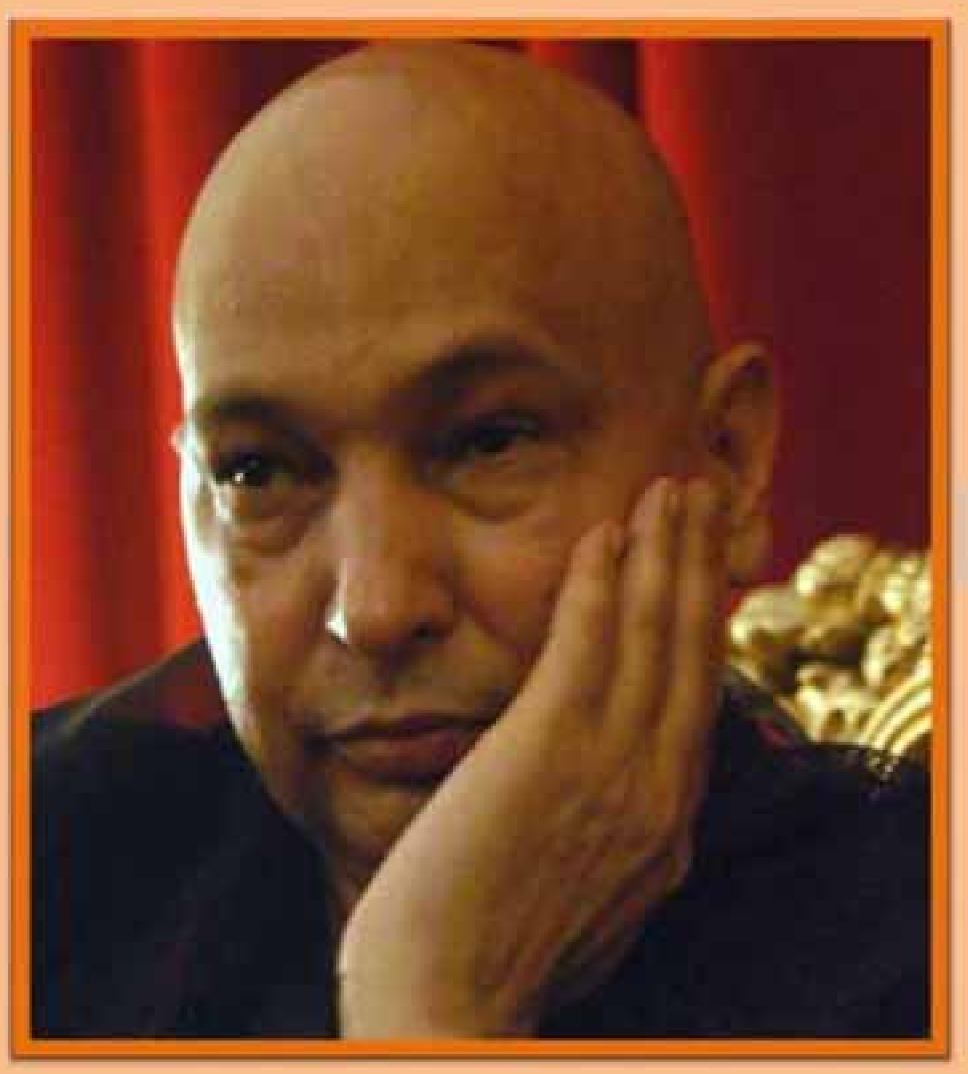

वैसे सबूत की जरूरत तो नहीं है लेकिन छवि के पिता (जो कुंडली देखते हैं) की भविष्यवाणी जो पहले सही हुआ करती थी, उसके लिए शादी के बाद गलत साबित हुई। उसके जीवन की घटनाओं और कुंडली में कोई संबंध नहीं था।

ऑफिस की समस्या से बच गया

एक बार मुझे ऑफिस में काफी परेशानी हो रही थी। इसका परिणाम यह हुआ कि हम तनाव में रहने लगे और अनिद्रा से परेशान रहने लगे। मैं ऑफिस से छुट्टी भी नहीं ले पा रहा था। ऐसा एक हफ्ते तक चलता रहा।

सेमवार की सुबह मेरे जागने पर लगा कि मेरा दाहिना पैर नब्बे डिग्री से ज्यादा खुल नहीं रहा था और मुझे उस पैर में कुछ भी महसूस नहीं हो रहा था। पहले तो लगा कि पैर अस्थायी तौर पर सुन्न हुआ है। लेकिन जब दिन भर पैर में कोई सुधार नहीं हुआ तब लगा कि कोई समस्या होने वाली है। इस बीच मुझे ऑफिस से छुट्टी लेनी पड़ी क्योंकि मैं ठीक से चल भी नहीं पा रहा था। मुझे अपना पैर उठा नहीं सकता था इसलिए मैं पाँव खींचकर चलता था। ऑफिस के हालात को देखते हुए छुट्टी मिलना मुश्किल लग रहा था लेकिन मुझे छुट्टी मिल गई।

अगले कुछ दिनों तक हम बीमारी के कारण का पता करने के लिए अस्पतालों के चक्कर लगाते रहे थे। ये जाँच अधिकतर स्नायु से संबंधित थे। जाँच का परिणाम सामान्य ही आया लेकिन समस्या तो अभी भी थी। इस दौरान मुझे लगा कि जरूरत पड़ने पर मैं गाड़ी चला सकता था और अपनी पत्नी को ऑफिस छोड़ सकता था। दाहिने पैर में तकलीफ होने के बाद भी मैं गाड़ी चला पा रहा था क्योंकि उसी से ब्रेक का इस्तेमाल होता है।

बीमारी को तीव्रता ने ही मुझे ऑफिस से छुट्टी दिलाई। तीन हफ्ते की छुट्टी के बाद मैं ऑफिस गया। मैं शारीरिक और मानसिक रूप से खुद को स्वस्थ महसूस कर रहा था। कहाँ से वह परेशानी आई और कहाँ चली गई किसी को कुछ पता नहीं था। समस्या का कभी पता नहीं चल पाया और न ही समाधान मिला। लेकिन इस समस्या ने मेरी असली समस्या (ऑफिस) से मुक्ति दिला दी, कैसे गुरुजी हमारी समस्याओं का उचित निदान करते हैं, ये उन्हीं को पता है।

एक शाम, मैं पत्नी को ऑफिस से लेने जा रहा था। देरी होने के कारण मैं सत्तर कि.मी. प्रति घंटे की रफ्तार से स्कूटर चला रहा था। अचानक एक चौराहे पर मेरे स्कूटर के चक्के के नीचे कुछ आ जाने के कारण मैं सिर के बल नीचे गिर गया। मेरा सारा भार सिर और दाहिने कंधे पर था और मैं सड़क पर फिसलता गया। मैं स्कूटर के साथ काफी दूर तक फिसलता चला गया था।

एक बार जब मैं उ ठपाया तो टैक्सी लेकर घर चला आया। पैर पर मामूली खरोंच के अलावे मेरे गर्दन की हड्डी टूट गई थी जो हफ्ते के अंदर ठीक हो गई थी।

गुरुजी की कृपा और संरक्षण पूरे प्रकरण में दिखाई दे रहा था। दुर्घटना एक व्यस्त चौराहे पर ऑफिस छूटने के समय हुई थी फिर भी एक भी गाड़ी वहाँ मौजूद नहीं थी। जिस तीव्रता से मेरा सिर जमीन पर टकराया उससे मेरे सिर पर भयंकर चोट लग सकती थी। इसके विपरीत, मेरे चेहरे पर एक खरोंच भी नहीं था। स्कूटर के साथ किसलते हुए कोई दूसरी गाड़ी मुझे कुचल सकती थी और गर्दन की हड्डी का एक हफ्ते में ठीक हो जाना किसी चमत्कार से कम नहीं था।

इस घटना के बाद हमें अपना घर बदलना था। मेरे माता–पिता बाहर थे और मैंने अपनी पत्नी के साथ सारा सामान स्थानांतरित किया, मेरे कंधे ने सारा भार आसानी से उठाया।

गुरुजी का संरक्षण सारी विषमताओं को पार करता है। हमारे जानकारी के बिना ही हमारी समस्याओं का समाधान हो जाता है। या तो समस्या की तीव्रता कम हो जाती है या उसका निर्मूल नाश कर दिया जाता है।

गुरुजी ने फिर से बचा लिया

एक दिन मैं और मेरी पत्नी गुड़गाँव से ऑफिस जा रहे थे। हमेशा की तरह देरी हो जाने के कारण मैं गाड़ी बहुत तेज चला रहा था। अचानक हमसे आगे चल रहा स्कूटर वाले ने किसी से बात करने के लिए बीच में ही स्कूटर रोक दी। उसे पता नहीं चला कि उसके पीछे दूसरी गाड़ी भी आ रही थी। मेरे ब्रेक लगाने के बाद भी कार ने स्कूटर को धक्का दे दिया।

वह आदमी स्कूटर से उछलकर हमारी कार के 'विंड स्क्रीन' पर गिर गया। उसे उठाकर एक तरफ किया गया और घास पर लिटा दिया गया। उसकी पीठ पर जबर्दस्त चोट लगने के कारण वह बैठ नहीं पा रहा था। माथे पर मामूली चोट के आवा और कहीं घाव नहीं था।

हम उसे गबल के अस्पताल ले गए जहाँ डॉक्टरों ने उसकी जाँच की। मैं गुरुजी से लगातार अपनी और उस व्यक्ति की सलामती की प्रार्थना कर रहा था। अगर उस आदमी को कोई भयंकर चोट लग जाती तो इसके भयंकर परिणाम मुझे ही भुगतने पड़ते। लेकिन जाँच के बाद डॉक्टरों ने बताया कि उस व्यक्ति कोई भयंकर चोट नहीं गगी। बस, पीठ पर धक्का और हादसे के सदमें से निकलने के लिए उसे थोड़े आराम की जरूरत थी। बाद में उसी दिन, उसे अस्पताल से छुट्टी दे दी गई थी। मैं अस्पताल से निकलते हुए एक बार फिर बचाने के लिए गुरुजी को धन्यवाद दे रहा था।

अब मेरी पत्नी छवि अपने अनुभवों का वर्णन करेगी।

मुझे अड़तालीस घंटों के अंदर नौकरी मिल गई

मार्च 2005 में मैं अपनी नौकरी से परेशान थी। मैं पिछले दो सालों से नौकरी बदलने की कोशिश कर रही थी। वहाँ पर बिना कारण के देर तक काम करवाना और काम करने का श्रेय नहीं मिलना आम बात हो चुकी थी। किसी गुरुवार के दिन कुंठा में मैंने ऑफिस छोड़ने का निर्णय लिया। मैंने अपनी नौकरी

के लिए बस गुरुजी से प्रार्थना की थी। अचानक शाम को मैंने इंटरनेट पर उपलब्ध नौकरियों के लिए आवेदन किया और सुमित के ऑफिस के लिए निकल गई। मैंने उस समय गुरुजी को उपस्थिति अपने पास महसूस की थी। रास्ते में मुऐ एक मित्र ने फोन पर बताया कि उनके नोएडा वाले ऑफिस में नौकरी की कई रिक्तियाँ हैं। मैंने कार में गुरुजी की तस्वीर की तरफ देखा और लगा मानों

वे मुस्कुरा रहे हों। मैंने अपना 'बायोडाटा' मित्र को भेज दिया और अगले ही दिन मुझे शनिवार को होने वाले साक्षात्कार के लिए बुलावा आया।

साक्षात्कार की तैयारी के लिए सिर्फ आधा बचा था और मुझे बहुत पढ़ाई करनी बाकी थी। इसलिए मैंने सुमित को टेस्ट लेने के लिए कहा। उसने मेरी परीक्षा एक घंटे से कम समय तक में ही लिया। उसने मुझसे एक हजार प्रश्नों के 'डाटाबेस' से दस–पंद्रह प्रश्न पूछे थे। इसके बाद मैंने उससे पूछा कि मैंने क्या मैं परीक्षा में उत्तीर्ण हुई तो उसने स्वीकृति में उत्तर दिया। मुझे लगा कि सुमित ने नहीं बल्कि गुरुजी ने कहा, "हाँ"।

साक्षात्कार मुझे दो चरणों में देना था। पहला चरण लिखित परीक्षा का था। उसमें उत्तीर्ण होने के बाद तकनीक साक्षात्कार होना था। पहले चरण की परीक्षा में मेरे लिए सुनिश्चित स्थान के 'डेस्कटॉप' पर भगवान शिव की तस्वीर थी। मैंने इसे गुरुजी के संदेश के रूप में लिया और मैंने इस चरण को आसानी से उत्तीर्ण कर लिया।

अगले चरण में मुझसे विषय से संबंधित प्रश्न पूछे गए थे। मुझसे वही प्रश्न पूछे गए जो सुमित ने एक रात पहले मुझसे पूछे थे–यह अविश्वसनीय बात थी। जबकि अन्य उम्मीदवारों का साक्षात्कार एक घंटे के करीब चल रहा था, मुझे पन्द्रह मिनटों में ही नौकरी दे दी गई थी, यहाँ सिर्फ मेरी तनख्वाह ही दुगुनी नही थी बल्कि ऑफिस का वातावरण बहुत अच्छा था।

साक्षात्कार के दौरान सुमित ऑफिस के बाहर मेरा इंतजार कर रहा था। वापस आने पर मेरे कुछ कहने से पहले से सुमित ने पूछा, "क्या तुम्हें नियुक्ति पत्र आज मिल गया या तुम्हें सोमवार को देंगे ?" मैंने उसे अंदर की सारी घटनाओं के बारे में बताया।

नास्तिकों के लिए ये घटनाएँ संयोग मात्र ही होंगी लेकिन सच्चाई यह है कि गुरुजी की कृपा से ही मुझे अड़तालीस घंटों के अंदर नौकरी मिल गई। मुझे न सिर्फ अच्छे वातावरण में काम करने को मौका मिला बल्कि मेरी पिछली नौकरी से यह हर लिहाज में अच्छी थी।

हमारे दो जुड़वा बच्चों का जन्म

शादी के दो साल बाद हमने परिवार शुरू की योजना बनाई। लेकिन जब हमें

सफलता नहीं मिली तो हमने डॉक्टरों के पास जाना शुरू किया। हमें पता चल गया कि कोई न कोई समस्या जरूर है। कई डॉक्टर, जाँच और आयुर्वेदिक थेरेपी के बाद के परिणाम ने हमें भौंचक्का कर दिया। जाँच के परिणाम में आया कि मेरे साथ कोई समस्या होने के कारण गर्भधारण की संभावना पच्चीस प्रतिशत ही थी। हमें यह बताया कि उच्च तकनीकी, आई वी एफ के द्वारा भी हमें होने के कारण हम यह तकनीक अपनाना भी नहीं चाहते थे। हमने बच्चा गोद लेने के बारे में भी सोचना शुरू कर दिया था।

लेकिन सब कुछ खत्म नहीं हुआ था। हमें गुरुजी द्वारा इलाज करवाने का संदेश मिला क्योंकि उन्होंने हमें इसके लिए आशीर्वाद दे दिया था। 2005 के नये साल की शाम गुरुजी ने मुझे प्रसाद देते हुए कहा, "मैंने तुम्हें दवाई दे दी।" और उसी दिन से हमने इलाज शुरू करवा दिया।

यह इलाज आसान नहीं था लेकिन ने मुझे पूरा करने में हर कदम पर हमारी मदद की थी। फिर वो शारीरिक कष्ट हो या आर्थिक समस्या उन्होंने हर समस्या से हमारा बचाव किया। 13 फारवरी मेरे जन्मदिन के दिन यह शुभ समाचार मिला था कि मैं माँ बनने वाली हूँ। गुरुजी की कृपा से ये मेरे जन्मदिन का तोहफा था। 26 फरवरी, 2006 शिवरात्रि के दिन मेरा 'हेमोरेज' हो गया। मैं सारा दिन भयंकर दर्द से तड़पती रही थी। सुमित ने गुरुजी की एक तस्वीर मेरे सिरहाने रख दी जिससे मुझे कुछ आराम हुआ और मैं एक घंटे के लिए सो पाई थी। शाम को मेरे रिश्तेदार हितेश ने बड़े मंदिर से फोन कर कहा कि मेरा नाम आरती करने वालों की सूची में है इसलिए हमें वहाँ समय पर पहुँच जाना चाहिए। यह सुनते ही हमारी आँखों से यह सोचकर आँसू बहने लगे कि गुरुजी अपने संगत के हर सदस्य का कितना ध्यान रखते हैं। डॉक्टर ने मुझे कहा था कि मैं उठकर बाथरूम भी न जाऊँ, केवल आराम करूँ और सारा दिन उठने की मेरे शरीर में शक्ति भी नहीं थी। लेकिन फोन आने के बाद जाने कहाँ से मेरे पास उठकर तैयार होने की शक्ति आ गई और मैं बड़े मंदिर आरती के समय पहुँच गई। यह किसी चमत्कार से कम नहीं था।

डॉक्टर ने मुझे कुछ दिनों के लिए पूर्ण आराम करने की सलाह ही थी, और उसके पास भी आने से मना किया था क्योंकि किसी भी तरह की गतिविधि खतरनाक हो सकती थी। कुछ दिनों के बाद हम डॉक्टर के पास जाँच करवाने गए तो वह जाँच के बाद डर गई। उसने कहा कि भयंकर 'हेमोरेहेज' के कारण

'प्लेसेंटा' अलग हो गए थे लेकिन जुड़वा बच्चों का विकास अच्छी तरह हो रहा था। यह भी गुरुजी का ही चमत्कार था।

इसके बाद मुझे और दवाइयाँ दी गई जिससे हमेशा उबकाई आती रहती थी मैं हमेशा दवाई लेते वक्त गुरुजी से प्रार्थना करती थी कि मुझे इन दवाइयों से बचा लें। जल्दी ही मुझे अधिक दवा लेने के कारण 'जोंडिस' हो गया। तब डॉक्टर ने मेरी दाव बंद कर दी। फिर से गुरुजी का सहायता के लिए धन्यवाद।

डॉक्टर ने प्रसव का दिन 22 अक्तूबर बताया था लेकिन मुझे गुरुजी द्वारा बताए दिन 21 सितंबर को जीवन का सबसे खूबसूरत तोहफा जुड़वाँ बच्चे मिला। अस्पताल से छुट्टी मिलते ही हम बच्चों को गुरुजी का आशीर्वाद दिलाने ले गए। उन्होंने उन्हें आशीर्वाद देते हुए अर्जुन और गौरी नाम दिया।

हम जानते हैं कि गुरुजी द्वारा किए गए असंख्य चमत्कारों, आशीर्वादों के लिए उन्हें धन्यवाद देना असंभव है। सारी घटनाओं को बताया भी नहीं जा सकता है। हम हृदय से गुरुजी के शुक्रगुजार हैं जिन्होंने हमेशा हमें संरक्षण प्रेरणा और आशीर्वाद दिया ळें

– सत्संग : छवि और सुमित जोधरा

गुरु बिन अज्ञान ही अज्ञान

सहस्त्र प्रभाकर और निशाकर का प्रकाश भी

गुरु के बिना अज्ञान के अंधेरे को नहीं मिटा सकता है।

गुरुजी के मिलने से पहले, मैं हठधर्मी और जिद्दी थी जो अपने ही रास्ते पर

चलना चाहती थी। लेकिन त्रासदियों ने मुझे शक्तिहीन दिया था। किसी ने मुझे मृत व्यक्ति के शरीर की राख मिली हुई कोई वस्तु खिला दी थी जिससे मेरा जीवन विषाक्त हो गया था। किसी ने मुझ पर काला जादू किया था। यह सन् 1987 की बात है और मैं तब से शय्याग्रस्त हूँ। मैं न कुछ पचा सकती थी न चल सकती थी और न ही बैठ सकती थी।

मैं संतों, तांत्रिकों, फकीरों, पंडितों सबके पास सहायता के लिए गई। उन्होंने मुझे कहा कि मेरी मृत्यु के लिए यह सब किया गया है और वे इसके निदान के लिए कुछ नहीं कर सकते। क्योंकि अगर कोई कुछ करने की कोशिश भी करेगा तो उसकी मृत्यु भी होने की संभावना है। मैं एक दशक तक इससे जूझती रही।

''गाते रहा करो''

तब स्वर्गीय हरपाल तिवाना की बेटी, लूना ने मुझे गुरुजी के पास जाने को कहा। उसने कहा कि अगर सच्ची श्रद्धा से उनके पास जाये तो वो सहायता कर सकते हैं। सन् 1996 में उसने मुझसे यह कहा। मैं उसके माता–पिता जो पटियाला से गुरुजी के दर्शन को पंचकुला आए थे, के साथ गुरुजी के आश्रम गयी।

जैसे ही हम आश्रम के बाहर अपनी गाड़ी खड़ी कर रहे थे, गुरुजी संगत सभागार से बाहर आए और हम सबने उनके चरण कमलों को प्रणाम किया। लूना ने जैसे ही मेरा परिचय करवाने की कोशिश की। उन्होंने मुझे मेरे नाम से बुलाया। उन्होंने कहा कि मुझ पर कई गलत चीजें की गई हैं मुझे लगा कि गुरुजी सर्वज्ञ हैं।

गुरुजी ने मुझे अपने सिंहासन से दाहिनी ओर बिठाया। वो मेरे मस्तक को यूं देख रहे थे मानों मेरे भूत, भविष्य और वर्तमान कर्मों के लेखा–जोखा को पढ़ रहे हों। मेरा शरीर भयानक और चेहरा सूजा हुआ था, सबकी आँखें मेरी ओर लगी हुई थीं। लेकिन इससे गुरुजी को कोई फर्क नहीं पड़ रहा था।

मैं उनके साथ करीब एक घंटे के लिए बैठी और इस दौरान मुझे चारों ओर दिव्य शक्ति की अनुभूति हो रही थी। दस सालों में पहली बार मैं शांति का अनुभव कर रही थी।

फिर उन्होंने मुझे लंगर में जाने को कहा। उसकी महत्ता से अनजान में लंगर खाते उस समूह से बचना चाहती थी। मैंने सोचा कि मैं कैसे मुफ्त का खाना खा सकती हूँ। गुरुजी ने मुझे दुबारा लंगर में जाने को कहा और तब मैंने ऐसा ही किया। फिर उन्होंने मुझे अपनी बायी ओर बिठाकर अपनी बायीं ओर बिठाकर अपना बाया हाथ को दबाने को कहा। आधे घंटे के बाद, उन्होंने मेरे अंगूठे को अपने अंगूठे से दबाया। उसी समय मेरी आधी बीमारी ठीक हो गई। जब मैं उनके चरणों में बैठी हुई थी तो उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, ''आते रहा करो।''

उस दिन मुझे उम्मीद की किरण दिखाई दी थी। लेकिन छः महीनों तक लूना के सास–ससुर के कारण मैं गुरुजी के दर्शन को जा नहीं पाई। मैंने उन्हें चंडीगढ़ के समीप जिराकपुर में चार कनाल जमीन बेची थी। जमीन के पंजीकरण के समय, मुझे लगा कि मुझे डेढ़ लाख रुपयों का धोखा दिया गया है। मैं गुरुजी के आदेश का पालन भी नहीं कर पाई थी। छः महीने बाद पंचकूला जाने पर पता

चला कि गुरुजी चंडीगढ़ चले गए हैं। उसी समय मैं चंडीगढ़ गई। जैसे ही उन्होंने मुझे देखा वे जोर से बोले कि मुझे डेढ़ लाख रुपयों का धोखा हुआ है। उनकी सर्वज्ञता फिर से प्रमाणित हो गई थी। उसके बाद, गुरुजी ने मेरा दो साल तक मौन इलाज किया। (काफी समय बाद, मैंने शिव पुराण में पढ़ा कि गुरु अपने शिष्य का दो सालों तक परीक्षा लेता है) लेकिन मैं वहाँ लगातार आती रही थी।

मेरे दीवार पर वे दो आँखें

अच्छा मिजाज रहने पर गुरुजी अपनी तस्वीरें भक्तों को वितरित किया करते थे लेकिन मुझे कभी दिया नहीं करते थे। इससे मुझे काफी तकलीफ होती थी। लेकिन जिद्दी और पाँच बहनों में सबसे छोटी होने के बाद भी मैं उनकी आज्ञा का पालन करती रही। मैं संगत के लिए रोज शाम सात बजे पहुँच जाती थी। दो सालों बाद, मैं संगत के लिए देर हो गई। उस दिन भक्तों ने मुझे बताया कि गुरुजी ने मेरे बारे में बार–बार पूछा कि मैं भाई हूँ या नहीं। मैं चकित रह गई थी।

गुरुजी घंटों विश्व के घटनाक्रमों पर बात किया करते थे। एक बार मैंने हाथ जोड़कर उनसे कुछ पूछने की आज्ञा मांगी। मैंने पूछा, "क्या मेरे भाग्य में आपके द्वारा दी हुई तस्वीर नहीं है ?" गुरुजी ने कहा, "तुम्हें किसी तस्वीर की जरूरत नहीं है, मैं तुम्हारे हृदय में रहता हूँ।" इस कथन से मुझे अनुभव हुआ कि वे भगवान हैं क्योंकि सिर्फ भगवान ही हमारे हृदय में वास करते हैं लेकिन उन्होंने मुझे अपनी एक छोटी तस्वीर देते हुए कहा कि ये उनका परिचय है। मैं उसे हमेशा अपने पास रखती हूँ। मैं उस तस्वीर को हमेशा अपने तकिए के नीचे रखती हूँ या अपने वस्त्रों पर लगाती हूँ। ऐसा करने से मैं खुद को बुरी शक्तियों से संरक्षित महसूस करती हूँ।

मैं गुरुजी की तस्वीर को अपने कमरे में लगा रखा है जिसको मैं रोज पूजा करती हूँ। समय के साथ उसकी तस्वीर में दो आँखें निकल आईं। वे आँखें बड़ी और सुन्दर थीं। मुझे उनसे कभी डर नहीं लगा। मैं उनसे पूछती थी कि वे किसकी आँखें हैं ब्रह्मा, विष्णु या शिव की । तो वे सिर्फ झिलमिला कर रह जाती थीं। वे आँखें प्रकाश भी विकीर्ण करने लगी थीं। उन दैवीय आँखों ने यह प्रमाणित कर दिया था कि भगवान शिव ने गुरुजी का रूप धारण किया है।

गुरुजी के दर्शन से पहले

गुरुजी के पास जाने से पहले मैं राधा–स्वामी सम्प्रदाय के मुखिया बाता चरण दास से मिली। मैं उने अपने अमेरिकी मित्र फेरेल ब्रैनर के द्वारा मिली। राधा स्वामी सम्प्रदाय के स्वामी ब्रैनर पर मनोविज्ञज्ञन पर शोध करने आए थे। वे बाबा चरणदास से मिलना चाहते थे। मैंने उनसे आग्रह किया कि वे पहले होशियारपुर चले जहाँ मैं उनसे भृगु संहिता (श्री भृगु द्वारा लिखित ग्रंथ, जिसमें सभी जन्मे और अजन्मे लोगों की भविष्यवाणी लिखी है) पर प्रश्न पूछ सकूँ। यह मेरा उनकी परीक्षा लेने का तरीका था। संहिता के अनुसार, जिस पर मेरा अटूट विश्वास था, यह हम दोनों के लिए शुभ दिन था। संहिता के अनुसार, मैं एक देवी हूँ जिसका जीवन लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करना है।

मैं बाबा चरणदास से मिली। वे लोगों को नाम दिया करते थे। उस समय मेरी माँ 'पार्किन्सन' रोग से ग्रसित थी। मैंने यह शर्त रखी कि मैं नाम तभी लूँगी अगर मेरी माँ स्वस्थ हो जाए। उनके स्वीकारने पर ही मैंने पहल की। लेकिन उसके बाद ही मेरी माँ गुजर गई। मैं निराश हो गई थी। मुझे बचपन से ही आने वाली घटनाओं का आभास हो जाता था। कभी–कभी मुझे 'आकाशवाणी' भी सुनाई देती थी। मैं भगवान से बाबा के बारे में पूछती थी कि क्या वे भगवान हैं।

मुझे उत्तर मिलता कि वे सही राह पर हैं। मैं सोचती रही कि हम सभी राह पर हैं और मैं उनकी अनुयायी नहीं रही।

आसमान को छूता एक वृक्ष

गुरुजी ने मिलने के बाद मैंने फिर आकाशवाणी से पूछा कि वे कौन है। इस बार उत्तर था वे स्वयं ईश्वर हैं। इस उद्घाटन के बाद मैंने बिना किसी संदेह के गुरुजी की पूजा की। वे हमेशा मुझे चमत्कार दिखाते रहे। उनकी छोटी तस्वीर से ही मैं ध्यान में चली जाती थी। तस्वीर की आँखें टिमटिमाने लगती थीं और मस्तक से प्रकाश निकलने लगता था।

जब मैं प्रार्थना करने के बाद संगत में आई तो गुरुजी अपने सिंहासन पर विराजमान थे। उनके चरणों से किरण निकली जो हरे कालीन के चारों ओर होते हुए मुझे स्पर्श कर वापस उनमें समा गई। मुझे अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया था। वे ही प्रारंभ मध्य और अंत थे और मेरी तलाश भी वहीं समाप्त होती थी। हम उन्हीं के पास से जीवन की शुरुआत करते हैं और वहीं समाप्त थी करते हैं। कलयुग में ईश्वर मनुष्य रूप में जन्म लेकर आत्माओं को मोक्ष प्रदान करते हैं। उन्होंने जन्म से लिया है।

मैं अब सोचती हूँ कि ईश्वर पर अपनी आस्था खो देने के कारण ही मुझे गुरुजी के पास निर्देशित किया गया कि मैं दुबारा अपनी आस्था और अपने जीवन लक्ष्य को पा सकूँ। और सद्गुरू ने मुझ पर अपनी दया दिखाई। मैंने मृत्यु को करीब से देखा था वे अी मुझे मौत के मुँह से वापस लाए।

पृथ्वी पर यही आपको मोक्ष मिल सकता है, स्वर्ग में आपको अपने अच्छे कर्मों का फल मिलता है। मोक्ष आपको गुरू के आशीर्वाद से मिलता है। जैसा गुरू ग्रंथ साहिब में लिखा है। जो सौ चांद उगे, सूरज चढ़े हजार, ऐते चरण हुडए, गुरू बिन घोर अंध्यारा।

मुझे कई मंत्र जापों के बारे में पता लगा था जिसमें एक था 'उमर संजीवनी मंत्र' जिसका जापा मुर्दे में भी जान डाल सकता था। यह भगवान शिव का मंत्र है, जो कहता है जो हमारी इच्छाओं को पूरी करता है। मंत्र का जाप करने के बाद मैंने इसका प्रभाव देखा था। सुबह साढत्रे तीन बजे मेरे घर पर गुरुजी ने मुझे दर्शन दिए और आसमान की ऊँचाइयों को छूता एक कल्प–वृक्ष दिखाया जिसके चारों ओर प्रकाश–वृत्त था।

जब से मुझ पर काला जादू किया गया था, मेरी त्वचा काली हो गई थी। गुरुजी के सान्निध्य में दो साल रहने के बाद, एक दिन लूना के पिता ने गुरुजी की ओर सामने चेहरा कर बिठाया। गुरुजी ने तुरन्त मेरे रंग के बारे में पूछा। मैंने कहा कि अगर भगवान ने मुझे बदसूरत बनया है तो मैं क्या कर सकती हूँ ? तब गुरुजी ने कहा कि अगर भगवान ने काला बनाया है तो वे मुझे गोरा बना देंगे। उन्होंने मुझे चाय प्रसाद लेने को कहा। धीरे–धीरे उनके आशीर्वाद से मेरे रंग में सुधार आने लगा।

एक दिन उन्होंने मुझे अपने निकट बैठाया। मैं उसी समय मैं इंग्लैंड से महेंगे गौरे होने की क्रीम लेकर लौटी थी। गुरुजी ने मुझे उन क्रीमों को लाकर उनके

पैर पर मलने लगी जैसा कि उन्होंने कहा था। जब मैं उनके पैर पर क्रीम लगा रही थी तो उन्होंने दूसरी स्त्री भक्त से कहा, "इसका दिल बहुत बड़ा है। ये अपनी सारी क्रीम ले आई।" जब मैंने उनके श्री चरणों की पूजा कर ली तो मुझे पता चला कि सालों से चले आ रहे पैरों का दर्द गायब हो चुका था।

एक बार मैं गुरुजी के आश्रम में से डेढत्र बजे रात में लौटी। मैं सीढ़ियाँ चढ़कर

अपने दूसरे तल वाले घर में जा रही थी कि मुझे गुरुजी की उपस्थिति उनके सुगंध द्वारा, का आभास हुआ। मैं निश्चित हो गई। लेकिन मैंने दरवाजे बंद ही किए थे। कि किसी को खाँसते हुए सुना। मैं बहुत ज्यादा डर गई। कौन हो सकता है ? क्या चोरी हुई है ? मैं पूरी रात सो नहीं पाई थी।

अगले दिन मैं गुरुजी के दरबार में प्रवेश कर रही थी कि वे उसी तरह खाँसे। मैं समझ गई कि पिछली रात घर वे ही घर पर ही आए थे।

यह जानते हुए कि गुरुजी अक्सर मेरे घर में खासकर सुबह के समय में आते रहते हैं। मेंने पर्दें बदलने का सोचा। पर्दें बदलते समय मैं गि गई। मुझे कमर

दर्द की पहले से ही शिकायत थी और अब मैं पर्दे बदलते वक्त दुबारा गिर गई। सपने में गुरुजी अपने दो भक्तों के साथ आए और उन्हें ए.सी. बंद करने को कहा। जब मेरी नींद खुली तो मैंने देखा कि ए.सी और पंखे दोनों बंद थे। गुरुजी अपने भक्तों का इतना ख्याल रखते हैं।

दूसरे दिन जब में संगत में शामिल होने के बाद लौट रही थी तो अचानक एक गाय मेरी गाड़ी के सामने आ गई। मैंने गुरुजी का नाम जोर से लिया और मैं बच गई। जब में घर पहुँची तो गुरुजी भक्तों से मुझे फोन करवाकर हाल–चाल पूछ रहे थे।

एक बार मैं सकेत्री के शिव मंदिर से देर रात लौट रही थी। कि एक पुलिया पर मेरी कार का दाहिना चक्का फंस गया। कुछ भी करने से वह निकल नहीं पा रहा था। मैं आधे घंटे तक वहाँ फंसी रही। तभी मैंने एक बस को अपनी कार की तरफ आते देखा। मैंनें गुरुजी का नाम लिया और कार गड्ढे से बाहर आ गई। मैं सुरक्षित गाड़ी चलाने लगी।

गुरुजी ने सिर्फ मेरा शारीरिक नहीं मानसिक स्थिति का भी ध्यान रख था मैं चंडीगढ़ के शारीरिक प्रशिक्षण महाविद्यालय में पढ़ाती थी। वहाँ के शिक्षक कला–संकाय के शिक्षकों से शिकायत रखते हैं एक दिन मैं उनके उत्पीड़न को झेल नहीं पाई और अपनी कार के अंदर रोने लगी थी। तुरंत ही, गुरुजी की सुगंध ने मुझे घेर लिया। मैं अपनी भावुकता से उबर पाई। भूतपूर्व नौकरशाह ने कई बार मेरी मदद की थी। लेकिन उनके सेवानिवृत्त होने के बाद, उनके मस्तिष्क की कोशिकाओं में विकार आ गया था। उन्हें हमेशा अपने घर के अंदर रखा जाता था। मेरे मददगार रहने के कारण मैंने उनकी पत्नी से उन्हें गुरुजी के पास ले जाने को कहा। गुरुजी ने उन्हें अभिमंत्रित ताँबे का गिलास दिया।

गुरुजी ने मनमोहन सिंह को रात में सोने को कहा। फिर उन्हें रात में कई दिनों बाद अच्छी नींद आई।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब का संदेश

एक दिन, गुरुजी ने सरदार की पत्नी को चवर खरीद कर अपने घर पर गुरुवार और शुक्रवार को रखने को कहा और फिर सेक्टर–44 के निहांग गुरूद्वारा में देने

को कहा। उसे उस दिन का गुरू ग्रंथ साहिब का संदेश लेना था। (पवित्र सिक्ख धर्मग्रंथ को खोलकर एक अध्याय पढ़ा जाता है जो उस दिन का गुरू का संदेश होता है)

उसने ऐसा नहीं किया लेकिन मैंने किया। किशोर लड़के ने पवित्र ग्रंथ खोलकर मुझे पवित्र संदेश दिया। जिसका अर्थ था, ईश्वर भूत, वर्तमान और भविष्य, तीनों

में संपूर्ण हैं। सूरज और चांद उसकी आज्ञा से ही चलते हैं और जिनकी जीवन निर्मल और शुद्ध है, वे ही उन्हें देख पाते हैं।

मैंने संदेश लिखा और संगत में लेकर आई। लेकिन मुझे इसे गुरुजी को दिखाने की हिम्मत नहीं हुई क्योंकि मुझे ऐसा करने को नहीं कहा गया था। सुबह साढ़े तीन बजे, गुरुजी ने मुझे दर्शन दिए जिसमें उनके हाथ में श्री गुरु ग्रंथ साहिब का वही पन्ना था। इस सपने का क्या अर्थ था ? वे ही इस पवित्र ग्रंथ के रचयिता है।

पुष्प माला की भेंट

गुरुजी ने मुझे अपना चंडीगढ़ वाला घर बेचने को कहा। मैंने घर बेच तो दिया लेकिन रहने के लिए दूसरा घर नहीं ढूँढ़ पाई। तब गुरुजी ने मुझे अपने भक्त खेरा–परिवार के यहाँ रहने को भेजा। श्री खेरा गुरुजी के शिक्षक थे। गुरुजी ने उन्हें त्वचा के कैंसर से मुक्त किया था और एक पुत्र का भी आशीर्वाद किया था।

मैं काफी बीमारी होने के कारण यात्रा नहीं कर सकती थी और गुरुजी दिल्ली चले गए थे। वे मेरे लिए प्रसाद भेजते थे। ये प्रसाद मेरे ऊपर किये गए काले जादू के असर को खत्म करता था। इस प्रसाद की शक्ति से मेरे शरीर में गया जहर रूपी राख उल्टी के द्वारा बाहर निकल गया।

लेकिन गुरुजी के सान्निध्य में नहीं रहना दुःखदायी था। जब खेरा परिवार दिल्ली चला जाता तो मैं गुरुजी की तस्वीर के सामने रोती थी। एक बार मैंने रोते हुए कहा, "जब कलियां मांगी कांटों का हार मिला।" जब अगली सुबह वे लोग दिल्ली से लौटे तो उनके पास मेरे लिए गुरुजी द्वारा दी हुई भेंट थी जो कि एक

फूलों की माला थी। गुरुजी हमारे अंतर्मन की बातें समझ लेते हैं। वे हमारे प्रेम का सम्मान करते हैं।

मेरे घर की तलाश

बाद में मैंने कॉलेज के छात्रावास में चली गई। मेरे पड़ोसी नवग्रहों की पूा करवा रहे थे। मैंने भी पंडित से पूजा करने को कहा। हालांकि, मैंने पूजा के प्रारंभ में गुरुजी की प्रार्थना भी हवन के द्वारा की थी। पंडित के जाने के बाद मैं थकान से बेहोश होने वाली थी। तभी मैंने लाल वस्त्रों में लिपटी आकृति को देखा। ये आकृति बिल्कुल गुरुजी की तस्वीर की तरह थी। इससे पहले कि मैं कोई अनुमान लगाती सर्वज्ञ सद्गुरू ने मुझे फोन कर कहा, "क्या तुम मेरी पूजा कर रही थी ?"

मेरा अपना कोई घर पंचकूला में नहीं था। गुरुजी ने एक स्वप्न में मुझे अपना घर दिखाया। सन् 1998 में मैंने गुलाबी दीवार वाले घर को देखा। लेकिन मैं उसे ढूँढ नहीं पा रही थी। कारण सामान्य था। ऐसे घर सन् 2001 तक नहीं बने थे। एच यू डी ए ने ऐसे घर 2003 में दिए हैं इसका मतलब था कि गुरुजी उस घर के बनने से पहले ही उसे जानते थें

तीनों लोकों के स्वामी

एक बार मैंने सपने में खुद को एक दिव्य झील के किनारे बैठा पाया। उसके रंग इतने सम्मोहक थे कि उनका वर्णन नहीं किया जा सकता। लेकिन उस दिव्य वातावरण में भी मैंने अपना पर्स पकड़ा हुआ था। जब मेरी नींद खुली तो मैं शर्मिन्दा हुई थी क्या मैं इतनी लालची थी ?

मैंने बैंक में पड़े सारे रुपए निकालकर गुरुजी के सामने रख दिये। लेकिन उन्होंने कहा कि ये कागज उनके लिए महत्वहीन हैं और इन्हें वापस ले लेने को

कहा। काफी रात हो जाने के कारण मैं पैसे को लेकर चिंतित थी। गुरुजी ने मुझे आश्वासन दिया कि वे हमेशा मेरे साथ है।

एक रात मैं फिर गुरुजी के तस्वीर के सामने विलाप कर रही थी। अचानक, एक हाथ उसमें से बाहर निकला। उस दिव्य हथेलियों पर मैं मनुष्यों की चीटीं समान चलते हुए–देख पा रही थी। गुरुजी अक्सर कहते थे कि संगत उन्हें चीटी के समान प्रतीत होती है। अब मुझे लगा कि उनका कथन पूर्णतया सत्य था। ईश्वर के अतिरिक्त कौन पृथ्वी के मनुष्यों को अपने हाथ पर चला सकता है। सच में, गुरुजी इस पृथ्वी की परम सत्ता है। तब मैंने देखा कि गुरुजी बह्मा, विष्णु, महेश के दर्शन कहीं भी दे सकते हैं। मैंने स्वप्न में अपने ही सात साल के निश्छल बचपन को देखा जिसमें मेरे दाहिने कान के पीछे के बालों में झाग था। जो चार सुनहरे पेंच में बदल गया। इनके खुलने से भगवान शिव की मूर्ति निकलती है। आकाशवाणी ने इसे त्रियेक परमेश्वर बताया और मैं जानती थी कि मेरे गुरु देवाधिदेव हैं।

एक बार में गुरुजी के साथ चंडीगढ़ में थी जब उन्होंने अपने एक भक्त नवराज को सो जाने के लिए डॉटा। फिर भी नवराज को अपनी आँखें खुली रखने में कष्ट हो रहा था। इसलिए गुरुजी उसे बार–बार डॉट रहे थे कि कहीं वो सो न जाए।

घर लौटकर मैंने सपने में देखा कि गुरुजी अपने सिंहासन पर विराजमान मृत व्यक्तियों की संगत में बैठे थे जहाँ मेरी माँ उनके समक्ष सफेद वस्त्रों में बैठी थी। यह दूसरी दुनिया के लोगों के साथ गुरुजी की संग थी। मैंने नवराज को भी संगत के लिए बाल्टी भर दूध लिए हुए देखा। इस स्वप्न का मैंने यही अर्थ लगाया कि अगर नवराज उस रात सो जाता तो उसी रात उसकी मृत्यु हो जाती।

गुरुजी की डांट का उद्देश्य छिपा हुआ था। एक बार जब मैं हिम्मत कर शिवरात्रि के मौके पर दिल्ली आई थी तो उन्होंने मुझे डॉटा था। गुस्से से चिल्लाते हुए उन्होंने मुझे जाने को कहा। मेंने न प्रसाद लिया और न लंगर। मैं वापस आ गई। मैं उनकी तस्वीर के सामने रोने लगी थी। मैंने उनसे कहा कि इतनी सख्त तो मैं अपने विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के साथ भी नहीं होती। लेकिन वे चिल्लाकर मेरे अहं को समाप्त करना चाहते थे।

गुरुजी की प्रशंसा का गुणगान

मैं एक कवियत्री हूँ और एक बार मैंने गुरुजी की प्रशंसा में बीस छंद लिखे थे। जब मैंने उन्हें दिया तो उन्होंने उसे जेब में रखते हुए कहा था कि तुम और भी लिखोगी। उसी क्षण से मैंने अपनी कल्पना के सहारे कई छंद उन पर लिख डाले थे।

तब मैंने एक उपन्यास 'जब प्रेम किया' लिखा जिसे मैंने गुरुजी को समर्पित किया। उपन्यास का शीर्षक गुरबानी की पंक्ति : 'जब प्रेम पायो' से प्रेरित था। कुछ ही समय में वो किताब पंजाबी विद्यार्थियों के एम. फिल पाठ्यक्रम में शामिल की गई।

– सत्संग, मित्र तिवाना, साहित्य अकादमी विजेतार (1950)

तस्वीर द्वारा इलाज

मेरे ससुर सेवानिवृत्त होने के बाद हरिद्वार में रहते थे। उन्हें मधुमेह की बीमारी थी और कभी भी उनका शुगर नियंत्रण में नहीं रहता था।सर्जरी के बाद भी उनके हृदय की बीमारी थी। उनका एक गुर्दा काम नहीं करता था।

एक दिन हमें फोन आया कि उन्हें हालत गंभीर में अस्पताल में भर्ती करवाया गया है। मेरी पत्नी रोने लगी थी। अगले फोन ने तो हमारी उम्मीदें ही खत्म कर दीं। उनकी हालत और भी बिगड़ गई थी। मंगलवार का दिन होने के कारण हम गुरुजी के पास भी नहीं जा सकते थे। हमारी आस्था हिल गई थी। मैंने दूसरे भक्त को फोन किया तो उसने मुझे आश्वस्त किया कि गुरूजी को स्थिति का

ज्ञान है। उसके कथन ने हमारी परेशानी को कुछ कम किया और हम रात में शांतिपूर्वक सो पाए।

गुरूवार को एम्पायर एस्टेट से तस्वीर लेने के बाद हम शुक्रवार को हरिद्वार पहुँचे। मेरी पत्नी ने अपने पिता के माथे पर गुरुजी की तस्वीर रखी है और उनकी सीने से लगे जेब में रख देती है। उसके पिता ने कभी गुरूजी के दर्शन भी नहीं किए थे।

तुरन्त ही हमने उनकी उपस्थिति को उनके सुगंध के द्वारा महसूस किया। यह वह क्षण था जब उनकी उपस्थिति उनके कितनी भी दूरी पर रहने के बाद भी, अनुभव होता था।

हम वापस आ गए थे और एक सप्ताह बाद डॉक्टर पक्षाघात होने का शक कर रहे थे। उन्होंने सीटी स्केन करवाने का निर्देश दिया लेकिन चमत्कारिक रूप से उसमें कुछ नहीं किया। डॉक्टर ने तब आश्चर्य से भर मेरे ससुर को एक हफ्ते के लिए अपने निरीक्षण में रखने को कहा और इस हफ्ते का हर क्षण महत्वपूर्ण था।

अगली सुबह मैं ऑफिस में था, जब मेरे मोबाइल की घंटी बजी। फोन मेरी पत्नी का था, मुझे लगा कि मेरे ससुर की मृत्यु हो गई है। मैंने कॉपते हाथों से फोन उठाया। मैं पत्नी की आवाज साफ–साफ सुन नहीं पा रहा था। उसे अपना वाक्य तीन बार दुहराना पड़ रहा था। हाँ, डॉक्टरें ने मेरे ससुर को अस्पताल से छुट्टी दे दी थी। वो रोते हुए गुरुजी को शुक्रिया कर रही थी। शाम को जब हम गुरुजी के दर्शन कर उन्हें नमन करने गए तो उन्होंने कहा कि मेरे ससुर अब पहल से कहीं बेहतर हैं।

जब मेरे ससुर गुरुजी के दर्शन के लिए आए तो उन्हें एक और उपहार मिला। मेरी सास, जिन्हें गठिया रोग की शिकायत थी, भी उनके साथ भाई थी। जब वे हरिद्वार वापस गई तो वो बिना किसी दर्द के अपनी नाती के लिए स्वेटर बुन पा रही थी।

उन्होंने तो गुरूजी को यह समस्या बताई भी नहीं थी लेकिन गुरुजी की कृपा से वे बिल्कुल स्वस्थ हो गई थीं।

– सत्संग : वीरेन्द्र और सुदेश बौरा

GURUJI KA ASHRAM

नानक चिन्ता मत कर

हे नानक ! चिन्ता मत कर

वो सागर की मछली का भी पेट भरता है

सन् 2003 को जब मैं गुड़गाँव के जलवायु टॉवर आया तो देखा कि उस इलाके में एक भी मंदिर नहीं है। भगवान की कृपा से मैंने पहल कर स्थानीय निवासियों के न्यास की मंदिर निर्माण के लिए बनाया। इस बीच हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण ने धार्मिक क्षेत्र के एक हजार स्क्वायर यार्ड देने की घोषणा की।

हमारे न्यास ने भी इसके लिए आवेदन किया था।

इलाके के योगा और प्राणायाम के सत्र में मेरी मुलाकात कमांडर आर. के शर्मा से हुई थी। उन्होंने मुझे गुरूजी महाराज के बारे में बताया कि कैसे उनके परिवार को गुरूजी का आशीर्वाद मिला था। कमांडर ने यह भी सुझाव दिया कि मंदिर के न्यासी गुरूजी के दर्शन को जायें तो उनके आशीर्वाद से मंदिर जरूर बनेगा।

इस प्रकार, कमांडर शर्मा के साथ मैं पहली बार 25 जुलाई, 2004 को बड़े मंदिर गया। शाम को मैंने और मेरी पत्नी प्रीति, मदन के यहाँ हुए सत्संग में शामिल हुए। गुरूजी की कृपा की कई कहानियाँ सुनाई गई। संगत गुरूजी की तस्वीर को पूरी श्रद्धा और स्नेह के साथ नमन कर रही थी। मगर मैं यह सोच रहा था कि क्या ये गुरूजी का सेल्स एंड मार्केटिंग विभाग है लेकिन मैंने अपने ये विचार अपने तक ही रखे।

चार दिन बाद 29 जुलाई को मंदिर न्यास के अधिकारी कमांडर शर्मा के साथ एम्पायर एस्टेट के मंदिर गए। मुझे वहाँ का वातावरण काफी पसंद आया था। हमने लंगर लिया और विदा होने से पहले गुरूजी महाराज के दर्शन कर उन्हें अपना उद्देश्य बताया। गुरूजी ने अपना आशीर्वाद दिया कि मंदिर जरूर बनेगा। कमांडर शर्मा यह सुनकर बहुत खुश हुए क्योंकि उन्हें पता था कि गुरूजी की कृपा से मंदिर न्यास कोएच. यू. डी. ए. से जमीन का आवंटन जरूर होगा।

जमीन के आवंटन के लिए काफी मुश्किल थी लेकिन गुरूजी के आशीर्वाद से हमारे न्यास–सनातन धर्म और समाज कल्याण ट्रस्ट को दिसंबर 2004 में जमीन मिल गई। गुरुजी की कृपा और सेक्टर 56 के निवासियों के प्रयत्न से मंदिर 14 फरवरी, 2006 को बन गया।

मुझे गुरुजी का आश्रम बहुत पसंद आया था, मैंने प्रीति से पूछा कि वो उस स्थान जाना चाहेगी। उसके हाँ कहने पर हम रविवार 1 अगस्त, 2004 को एम्पायर एस्टेट के मंदिर गए। हमारे लौटते समय एक भक्त ने हमें गुरुजी की तस्वीर दी।

मेरी पत्नी की सर्जरी से बचाया

वहाँ जाने के बाद प्रीति काफी खुश हुई थी। उसने कहा कि वो ऐसे स्थान की तलाश काफी समय से कर रही थी, जहाँ मानसिक शांति मिल सके। प्रीति पिछले कई सालों से बीमारियों से जूझ रही थी। उसे 'एंडोमेट्रिओसिस', 'ओवेरियन सिस्ट' और 'यूट्रस काइब्रोइड्स' जैसी बीमारियाँ थी। हम एक डॉक्टर से दूसरे डॉक्टर, होम्योपैथी, ऐलोपैथी सब करवाया लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। अगस्त 2003 में उसका ऑपरेशन कर गर्भाशय और अंडाशय निकाल दिया गया। दो–तीन महीनों के लिए ही उसे आराम रहा और फिर उसे दर्द होने लगा। डॉक्टर उसकी बीमारी के बारे में कुछ बता नहीं पा रहे थे। कोई इसे दर्द को कारण गैस को बताता था तो कोई किडनी में पत्थर को। कोई भी डॉक्टर किसी निष्कर्ष या समाधान नहीं बता पा रहा था।

गुरुजी के प्रथम दर्शन के तीन दिन बाद प्रीति को बहुत तेज दर्द हुआ। पीड़ानाशक दवाओं से कोई फायदा नहीं हुआ। सुबह से तबीयत कुछ ठीक हुई लेकिन रात में फिर हालत खराब हो गई थी। प्रीति सोचती थी कि घर में गुरुजी की तस्वीर होते हुए भी उसकी समस्या

का समाधान क्यों नहीं हो रहा था। एक दिन बाद 6 अगस्त को हम डॉक्टर के पास गए। उसने शाम तक सुनिश्चित कर बताया कि केवल एक ही अंडाशय को ऑपरेशन द्वारा निकाला गया था। और 'एंडोमेट्रोसिस' के कारण अंडाशय के चारों ओर 'सिस्ट' बन गया था और यह गुर्दे पर दवाब डाल रहा था जिससे गुर्दा अपने आकार से दुगुना सूज गया था। इस प्रकार, गुरुजी के दर्शन के पाँचवे दिन डॉक्टरों ने बीमारी को पहचान कर तुरन्त सर्जरी कराने का सुझाव दिया।

एक दिन बाद अस्पताल जाते समय हम पाँ मिनट के लिए गुरुजी का अर्शीवाद लेने के लिए रुके। गुरुजी ने प्रीति को आशीर्वाद देकर आश्वस्त किया कि सब ठीक हो जाएगा। अस्पताल जाते समय मैंने गुरुजी की तस्वीर अपने पास रख ली थी। सभी जाँच के बाद डॉक्टरों ने अपोलो अस्पताल में एक महत्वपूर्ण सर्जरी कराने का सुझाव दिया।

GURUJI KA ASHRAM

गुरुवार 12 अगस्त के दिन मैंने प्रीति से पूछा कि क्या उसकी तबीयत ठीक है। उसके हाँ कहने पर हम गुरूजी के आश्रम गए। बाहर–निकलने पर प्रीति ने मुझे बताया कि उसने गुरुजी से मन ही मन प्रार्थन की "मैंने पिछली बार भी सर्जरी के पीड़ादायक चरणों से गुजरी हूँ। अगले हफ्ते मेरी एक और सर्जरी होने वाली है। मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ कि मुझे इस सर्जरी से बचाकर दवाओं से ठीक कर दीजिए।" मैंने गुरूजी से उसे स्वस्थ करने की प्रार्थना की।

15 अगस्त को गुरुजी की संगत श्री भाटिया के घर होनी थी। प्रीति ने जाने से मना कर दिया और कहा कि वो गुरूजी पर विश्वास करती है लेकिन शायद वो भाग्यशाली नहीं है। जब सत्संग में सब गुरुजी द्वारा दिए आशीर्वाद का वर्णन करेंगे तो उसे बुरा लगेगा कि उसे आशीर्वाद नहीं मिला। इसलिए मैं संगत में अकेला ही गया था। मैंने सत्संग में प्रीति की बीमारी से मिलती–जुलती एक स़ी

की कहानी सुनी जिसे 'ओवेरियन सिस्ट' था लेकिन गुरुजी के आशीर्वाद से वह बिना सर्जरी के ही स्वस्थ हो गई थी। मुझे पता चल गया था कि इस सत्संग के द्वारा गुरुजी मुझे भविष्य की सूचना दे रहे थे।

चमत्कारों की श्रृंखला सी शुरू हो गई। डॉक्टरों ने प्रीति की तबीयत में हो रहे सुधार को देखकर चकित रह गए थे। डॉक्टरों को विश्वास नहीं हो रहा था कि प्रीति के शरीर में अब तीस प्रतिशत सिस्ट की बचा था और अब उसे किसी सर्जरी की जरूरत नहीं थी। बाकी बचे हुए सिस्ट को दवाई द्वारा ही हटाया जा सकता था। तब से प्रीति कम से कम दवाई पर स्वस्थ है और किसी की सर्जरी की जरूरत नहीं है। प्रीति ने जो प्रार्थना की थी, गुरूजी के आशीर्वाद से उसे वो ही मिला। वो बिना सर्जरी के दवाओं से ही स्वस्थ हो गई। गुरूजी के पास जाने के बाद आपको उन्हें कुछ भी कहने की जरूरत नहीं होती। वो सबके अंतर्मन की बात जानते हैं और उनके चरणों में समर्पित होने पर आपकी हर बात का ध्यान रखते हैं।

मेरी आर्थिक तंगी से छुटकारा दिलाया

गुरुजी के सान्निध्य में आने के बाद से हमारे जीवन में भारी परिवर्तन आया। मैं अपने जीवन के हर पहलू को लेकर चिन्तित था। सबसे पहले तो मेरे इसी स्वभाव में परिवर्तन आया। अब मैं जानता हूँ कि गुरुजी मेरी हर समस्या का ध्यान रखते हैं। और हमारे सामने आई परिस्थिति भी उनकी ही कृपा होती है। गुरुजी कभी–कभी ही अपने भक्तों से बात करते हैं, लेकिन सबकी मदद करते हैं। उन्होंने मुझसे आठ अक्तूबर को बात की, "जा तेरा कल्याण कर दिया।"

उसी दिन से मेरे जीवन में परिवर्तन आना शुरू हो गया। मेरे व्यावसायिक जीवन में भारी परिवर्तन आया। मैं व्यापार चला तो रहा था लेकिन उससे संतुष्ट नहीं था। किन्तु उम्र के इस दौर में व्यापार बदलना आसान नहीं था, न ही मेरी हिम्मत थी। गुरुजी ने मेरा हाथ थाम मुझे इस विषम परिस्थिति से बचाया।

मैंने 16 अगस्त, 2005 में अपना व्यापार बंद कर दिया। गुरुजी के अर्शीवाद से मैं आज ज्यादा कमाई कर रहा हूँ। मैं एक बड़े राष्ट्रीय प्रोजेक्ट में काम करने लगा। मुझे मेरी संतुष्टि मिल गई थी। इस परिवर्तन के दौरान गुरूजी की कृपा ने मेरा भरपूर साथ दिया। जैसे सबद में कहा गया है कि सागर में रहने वाले जीवों को भी ईश्वर भोजन प्रदान करता है, इसलिए चिन्ता की कोई जरूरत नहीं है।

मेरा घर भी उसी समय बन रहा था। फ्लैट के भुगतान के समय मेरी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। मैंने गुरूजी को कुछ भी बताया नहीं था। लेकिन उन्हें सब पता था। जब भी मुझे रुपयों की जरूरत होती थी किसी न किसी से मदद मिल जाती थी। जिन्होंने मेरी मदद की, उन्होंने कभी अपने रुपए नहीं मांगे।

एक साला बाद 16 मई, 2006 को मुझे फ्लैट की चाबी मिल गई और मैंने 19 मई शुक्रवार को चाभियों को गुरूजी के श्री चरणों में रख दिया। मैंने अपना फ्लैट केवल गुरुजी के आशीर्वाद से ही प्राप्त किया।

मेरे लिए गुरुजी भगवान हैं। मैं मंदिर रोज जाया करता था। मैं कई देवी–देवताओं की पूजा करता था। मार्च 2006 से, गुरुजी की कृपा से मुझे भगवान की छवि गुरुजी में ही दिखाई देती है। मुझे एक ही मंत्र आता है "ओऽम नमः शिवाय, गुरूजी सदा सहाय।" मैंने ईश्वर को अपने समक्ष पाया है और अब मुझे इसके लिए कहीं जाने की जरूरत नहीं है। ईश्वर की खोज मेरे लिए गुरुजी के चरण कमलों में समाप्त होती है।

सुरक्षाकर्मी को जीवनदान मिला

फरवरी, 2005 को मैं अपने कार्यालय जा रहा था जब मैंने एक बीस वर्षीय सुरक्षाकर्मी को सड़क पर पाया जिसे लोगों ने घेरा हुआ था। मैं अपनी कार से नीचे उतरकर उसे देखने गया।

मैंने उसका मुंह खोलने की कोशिश की तो उसने सांस लेनी शुरू की, लेकिन साथ ही साथ उसका खून निकल रहा था। वो कुछ ही देर में बेहोश होने वाला था। मैंने आँखें मूंदकर गुरूजी से उसकी सहायता करने की प्रार्थना की। कुछ ही क्षणों में वह घायल सुरक्षाकर्मी खड़ा हो गया, उसकी तबीयत ठीक हो गई थी। मैं अपने कार्यालय आ गया और गुरूजी को धन्यवाद दिया।

उनसे प्रार्थना करते ही वे उत्तर अवश्य देते हैं

जब मैंने गुरुजी के मंदिर में जाकर पूर्ण मानसिक शांति प्राप्त कर ली, तब मैंने सद्गुरू से अनुरोध किया कि वे मेरे पूरे परिवार को अपने चरण कमलों में स्थान दें। यह गुरुजी की ही कृपा है कि आज मेरे माता–पिता, मेरे दो भाइयों का परिवार, मेरी सास और मेरे रिश्तेदारों के परिवार गुरुजी के सान्निध्य में हैं। गुरुजी ने हम सबके मानसिक शांत अच्छा स्वास्थ्य और धन प्रदान किया है। गुरुजी के शरण में आने के बाद सब के स्वभाव में भारी परिवर्तन आया। परिवार के लोगों में आपसी समझ में सुधार आया।

भगवान शिव का नृत्य

मेरा सबसे छोटा भाई रमेश कुमार ने मई, 2005 में गुरुजी के प्रथम बार परिवार सहित दर्शन किए थे। लुधियाना वापस आने के बाद उसकी पत्नी सोनल बुरी तरह बीमार पड़ गई। उसे आन्त्रज्वर हो गया था और उसका बुखार चार–पाँच दिनों तक एक सौ चार पर रहा। पाँचवें दिन रात में उसके स्वप्न में गुरुजी आए और उससे पूछा, "विष्णु मेरा भतीजा कहाँ है ? मैं उसे आशीर्वाद देने आया हूँ।" सोनल ने उत्तर दिया कि विष्णु बाहर गया है और अपनी बीमारी के बारे में उन्हें बताया। गुरुजी ने उसे चिन्ता नहीं करने के लिए कहा और आशीर्वाद देने के लिए अपना हाथ उठाया। गुरुजी के शरीर से निकली कुछ किरणों उसके शरीर में प्रवेश कर गईं।

सपने में ही वह पसीने से नहा गई, जो कि टायफाइड (आंत्रज्वर) से ठीक होने का सूचक था। सुबह जागने पर उसने मुझे फोन पर अपना सपना बताया। उसी दिन से उसका बुखार नियंत्रण में आ गया और कुछ ही दिनों में वह पूरी तरह स्वस्थ हो गई थी। गुरुजी के एक दर्शन से ही मेरे छोटे भाई का परिवार उनकी संरक्षण की छाया में आ गया था। वे सब पर अपनी कृपा दृष्टि रखते हैं।

एक दिन रमेश रामायण का पाठ कर रहा था जहाँ एक स्थान पर गुरू महिमा का वर्णन आया। उसने गुरूजी के बारे में सोचा और ख्यालों में ही एम्पायर एस्टेट पहुँच गया। उसने गुरूजी को अपने कमरे से निकलते देखा। उसने गुरूजी को गले लगाया और देखा कि गुरूजी दो रूपों में बंट गए। एक रूप संगत में चला गया और दूसरा रूप भगवन शिव में परिवर्तित हो गया जो रमेश ने गुरूजी से पूछा कि क्या लोग उसे देख पा रहे हैं। गुरूजी ने उत्तरा दिया कि उसे नृत्य का आनंद उठाना चाहिए क्योंकि कोई भी उन्हें नहीं देख पा रहा हे।

फिर भगवान शिव संगत मं विराजमान गुरूजी के शरीर में समा गए रमेश ने लंगर लिया और वापस आ गया। उसने दिल्ली आने पर यह घटना मुझे बताई।

गुरूजी ने रमेश को आशीर्वाद दिया कि वह अपना घर नहीं बना पा रहा था। लेकिन गुरूजी की कृपा से वे अपने घर में 29 मई, 2006 में जा पाया।

मेरी भतीजी देवयानी प्रतिभाशाली होने के बाद भी कक्षा में द्वितीय स्थान प्राप्त करती थी। गुरूजी के दर्शन के बाद देवयानी ने न केवल कक्षा में प्रथम आई बल्कि साल 2006 के छठी कक्षा के चारों वर्गों में प्रथम स्थान पाई। गुरूजी ऐसे ही हमारा ध्यान रखते हैं मेरा भतीजा, विष्णु भी इसी प्रकार आठवीं कक्षा में उत्तीर्ण हुआ जबकि परिवार को इसकी आशा नहीं थी।

गुरुजी ही शिवजी हैं : वे ही दुर्गा हैं

मेरे बड़े भाई शिव कुमार पुष्करना ने पहला संत्संग मेरे घर पर अक्तूबर, 2004 को सुना था। वो इसमें शरीक होने शिष्टाचार के नाते ही आए थे। लेकिन 2005 के मध्य में उन्हें गुरूजी के शरण में जाने का सौभाग्य मिला। मानसिक शांति की प्राप्ति हुई। और तब से उनका स्वभाव शांत हो गया।

एक दिन उनकी पत्नी रेणु अपना दुर्गा स्तुति का पाठ पूरा नहीं कर पाई। इस बात से वह परेशान थीं। गुरूजी उनके सामने प्रकट होकर बोले कि इन सब चीजों को लेकर परेशान नहीं होना चाहिए। वे हर जगह हैं और केवल उनका स्मरण करना चाहिए। फिर गुरुजी ने एक स्त्री का रूप लिया, यह दिखाने के लिए कि वे ही देवी दुर्गा है और उनका आलिंगन कर अदृश्य हो गए।

भाभीजी को घुटने में तेज दर्द हुआ और डॉक्टरों ने जाँच के बाद लम्बा इलाज बताया। उन्होंने शिवरात्रि के दिन बड़े मंदिर में दर्शन किए गुरूजी की कृपा से उस दिन से उनके घुटने का दर्द ठीक हो गया।

15 मई, 2006 को हम शिव मंदिर गए। वहाँ के सभागार में भगवान शिव और गुरूजी के आसन मेरे बड़े भाई ने पहले भगवान शिव और उसके बाद गुरूजी के

आसान को नमन किया। उन्होंने देखा कि संगत पहले गुरूजी के आसान की और फिर शिवजी के आसन को नमन कर रही है। वे सोचते रहे कि पहले किसे नमन करूँ। हम डेढ़ घंटे तक मंदिर में रहे थे। हम सत्संग सुन रहे थे। लौटते समय जब मेरे भाई ने शिव की मूर्ति के सामने प्रणाम करते वक्त देखा कि वहाँ

भगवान शिव का चेहरा नहीं बल्कि गुरूजी का चेहरा है। उन्हें अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया। आप चाहे कहीं भी सिर झुकायें वे हर जगह विद्यमान हैं।

इस घटना से पहले श्रीमती सबरवाल संगत को बताती थी कि उन्होंने गुरूजी को भगवान शिव के रूप में देखा है। लेकिन कहीं न कहीं मन में थोड़ी शंका थी। मेरे बड़े भाई के अनुभव के बाद सभी शंकाएँ मिट गई। मैं अपने आपको गुरूजी शिव के रूप

के शरण में होने के कारण भाग्यशाली मानता हूँ।

मेरे मित्रों पर गुरुजी की कृपा

मैंने अपने अनुभवों को बाँटा जिनमें से कई गुरुजी की शरण में आए। इनमें से एक वी. के. गुप्ता को गुरूजी का आशीर्वाद प्राप्त हुआ, जब उनकी बेटी को अच्छा पति और समझदार ससुराल वाले मिले।

दूसरे मित्र वाईबी. गुप्ता का तबादला लुधियाना से गोरखपुर कर दिया गया थां वे अपने व्यवसायिक जीवन के बुरे दौर से गुजर रहे थे। गोरखपुर व्यवसायिक जीवन के बुरे दौर से गुजर रहे थे। गोरखपुर जाने से पहले वे गुरूजी के दर्शन को गए। उन्होंने यूँ तो गुरूजी से कुछ नहीं कहा लेकिन ग्यारह महीने के अंदर उनका तबादला गाजियाबाद कर दिया गया। पटपड़गंज में उनका अपना घर था। गुरूजी की कृपा से वे अपने घर आ गए थे।

इसी प्रकार, राजेश शर्मा की कंपनी उन्हें झूठे मामले में फँसा रही थी। वे गुरूजी की शरण में गए जहाँ उन्हें मानसिक शांति मिली। उनकी कंपनी ने उन्हें अंतर्राष्ट्रीय वकील ठीक करने को कहा। लेकिन उन्होंने मुझे कहा था कि जब उनके पास 'सार्वभौम' वकील गुरूजी हैं तो कोई उन्हें नुकसान नहीं पहुँचा सकता। गुरूजी की शरण में आने के बाद कंपनी सारे मामले को भूल गई और आज वह शांतिपूर्वक काम कर रहा है। जालंधर में रहकर वो रोज गुरूजी के मंदिर जाता है।

वैवाहिक समस्या का समाधान किया

मेरी सास और उनके परिवार ने गुरुजी के दर्शन पहली बार, जनवरी 2005 को किया। मेरे साले आशीष का वैवाहिक जीवन पिछले दस सालों से खराब चला रहा था ओर तलाक की स्थिति पहुँच चुकी थी। मेरी सास ने गुरूजी से दंपत्ति के बेहतर जीवन के लिए प्रार्थना की। एक हफ्ते के बाद, वैवाहिक समस्या समाप्त हो गई। गुरूजी की कृपा से आशीष और उसकी पत्नी आज बेहतर वैवाहिक जीवन का आनंद अपने इकलौते पुत्र के साथ ले रहे हैं।

– सत्संग : वी के पुष्करना : भक्त

उनके आशीर्वाद की छत्रछाया में

करीब बीस साल पहले मैं पायलट के तौर पर आगरा में नियुक्त था जब मैंने चिकित्सकीय जाँच करवाई। ई.सी.जी. जाँच में डाक्टरों ने कुछ गड़बड़ी पाई। मेरे रिश्तेदार नंदोई ब्रिगे दत्ता तब जालंधर में थे और वे अपने परिवार के साथ गुरूजी के दर्शन को जा रहे थे। मेरी बहन ने मुझे भी साथ चलने को कहा। दर्शन के बाद गुरूजी मुझे एक कमरे में ले गए और वहाँ एक चम्मच मेरे हृदय पर रखते हुए कहा, ''तेरा कल्याण हो गया।''

आगरा लौटने पर मैंने दुबारा जाँच करवाई। गुरूजी की कृपा से सब समान्य आया। मेरी पत्नी अगले दिन जालंधर जाने वाली थी और मैंने उसे गुरुजी के दर्शन को जाने के लिए कहा। लेकिन उसकी इच्छा नहीं थी जब वो गुरूजी से मिली तो उन्होंने कहा कि पिछली रात आगरा में उसने अपने पति को यहाँ आने से मना कर दिया था। यह सुनकर वह चकित रह गई थी। जाते समय गुरूजी ने घोषणा की कि जम्मू जाने के बाद वह यहाँ दुबारा आएगी। लेकिन मेरी पत्नी ने बताया कि वह जम्मू से सीधे आगरा जाएगी। लेकिन गुरूजी ने फिर कहा कि आगरा जाने से पहले वह जालंधर जरूर आएगी।

जब मेरी पत्नी जम्मू पहुँची तो उसे पता चलाकि उसकी माँ 'हर्पस' रोग से जूझ रही थी जिसका कोई इलाज नहीं था। उसने अपने माता–पिता को गुरूजी के बारे में बताया तो उसके पिता ने उसे अपनी माँ को लेकर जालंधर ले जाने को कहा। गुरूजी की भविष्यवाणी के अनुसार, अगले दिन मेरी पत्नी उनके शरण में थी। गुरूजी ने अपना आशीर्वाद मेरी सास को दिया और कुछ ही दिनों में वे स्वस्थ हो गई।

वायुसेना में पायलट होने के कारण मेरा तबादला कई शहरों में होने के कारण मुझे गुरूजी से मिलने का मौका बीस वर्षों तक नहीं मिला लेकिन हमारे हृदय में गुरूजी की आस्था सदैव विद्यमान रही।

अगस्त 2005 में डॉक्टरों ने बताया कि मेरी पत्नी के दोनों गुर्दे कभी भी खराब हो सकते हैं। यह सुनकर हमें कुछ भी सूझ नहीं रहा था। किसी ने हमें बताया कि गुरूजी नई दिल्ली में हैं। हमें पता था कि उनकी कृपा सब ठीक कर देगी। और बीस सालों के बाद पहली बार जाने के बाद भी उन्होंने मेरा नाम लेकर पुकारा। उन्होंने काह कि उन्हें मेरी पत्नी की स्थिति का पता है और हमें ताँबे का गिलास लाने को कहा। अगले दिन उन्होंने मेरी पत्नी को कहा। अगले दिन उन्होंने मेरी पत्नी के उन्हीं जादुई शब्दों के द्वारा आशीर्वाद दिया, ''तेरा कल्याण हो गया।''

उस दिन से मेरी पत्नी की तबीयत सुधरने लगी। उसका 'क्रियेटिनाइन लेबल' जो अगस्त 2007 में 7.2 था, दस महीने बाद 5.1 पर आया। हमें पता था कि यह गुरूजी का ही चमत्कार है। मेरा यह विश्वास है कि मेरे और मेरे परिवार के साथ उनका आशीर्वाद हमेशा रहता है।

– सत्संग : विंग कमांडर (सेवानिवृत्त) बी. लखनपाल

उपसंहार

हे परम पिता ! हे एक दाता !

हमारे हृदयों को आनन्द से भर दो,

आपके निरंतर दर्शनों की चमक से

हमारे कर्ण निरंतर आपकी ही वाणी सुनें,

हमारे पग आपके द्वारा निर्दिष्ट मार्ग पर ही बढ़ें,

हे एक दाता ! आप हम सबको

आस्था, प्रकाश, प्रेम, भक्ति प्रदान करें,

GURUJI KA ASHRAM

हम भक्त आदि से अनादि तक

आपके चरण–कमलों में ही शरण पायें।

हम आपकी स्मृति में सदा बने रहें,

हम आपके निर्देशों का पालन करते रहें,

हमारे हृदय आपके नाम से ही प्रज्वलित रहें,

हम सदा आपके चरणों में सर झुकाये रहें।

'संगत'ऐसे हृदयों का मिलन है, जो भक्ति में संयुक्त हैं, संगठित है। यह अलग–अलग व्यक्तियों का एक ऐसा संग्रह है, ऐसा समुदाय है, जिसकी भथ्कत एक के प्रति है,जिसका आदर्श एक है। यह एक ऐसा पौधा है, जिसकी कई शाखाएँ और पत्तियाँ हैं। एक अकेले पौधे के रूप में तो यह सुरक्षित है, पर

अनेक शाखाओं व पत्तों के रूप में इसे प्रत्येक प्राकृतिक आपदा से खतरा है। सारी संगत का यदि एक हृदय हो, भक्ति का साध्य यदि एक हो, तो ईश्वरत्व का दिव्यत्व स्वयं अपने अभ्यंतर में मिलता है, गुरूजी के रूप में एक इकाई के रूप में इसे हर तरह का प्रमाद त्यागकर भक्ति की ओर बढ़ना चाहिए।

संगत एक पात्र है, जिसमें गुरूजी अपने आशीर्वादों को उड़ेलते हैं। यह पात्र टूटना नहीं चाहिए। संगत प्रेम का स्रोत है, संगत शाश्वत् प्रेम के बंधन से बंधा हुआ एक परिवार है, यह गुरूजी का परिवार है, यदि यह कुछ और है, तो फिर संगत नहीं है। इसका सर्वोपरि उत्तरदायित्व इसके एकत्व को बनाये रखना है। इसका विच्देन, इसकी विभिन्नता गुरूजी को बहुत दुख पहुँचायेगी।

इस परिवार का उन्होंने पालन–पोषण किया है, खाना बनाया है, साथ में खाया है, हँसी, रूदन, प्रेम, सब कुछ। इस परिवार को अनवरत रूप से गुरूजी का आशीर्वाद मिलता आया है। पिता कभी भी पुत्रों में या पुत्रियों में भेदभाव नहीं करता और हमारे गुरूजी तो दैव पिता हैं। वे सदा हमें प्रेम करते हैं।

गुरूजी केवल वह नहीं थे, जिस रूप में हमने उन्हें देखा, वे भौतिक तत्वों से परे थे। जैसा सत्संगों में देखा जाता है, वर्णित होता है, वे स्थान काल और परिणाम की सीमा से परे थे, वे सांसारिकता से परे थे, वे कर्म–चक्रक से परे थे वे हर तरह के नियम से परे थे, इच्छाओं का उन पर कोई अधिकार नहीं था, इच्छाएँ उने वश में थीं। वे माया से परे थे एवं हैं। वे शिव हैं। कई युग आयेंगे और बीत जायेंगे, दुनिया रहे या न रहे वे सदैव रहेंगे।

गुरू तो सच में गुरू ही होता है। गुरू की व्याख्या भी नहीं की जा सकती, पर वस्तुतः वह मानव के रूप में भी मानव नहीं होता, देव–देवियों से भी ऊँचा स्थान है उसका। वह सर्वोच्च है। आज वह मानव–शरीर अपनाता है, फिर सारा ब्रह्मांड ही उसका शरीर बन जाता है। देखने पर तो वह आम वस्त्र पहने दिखता है, पर

वस्तुतः सारा आसमान ही उसका वस्त्र है। वह नाम तो किसी व्यक्ति का लेता है, पर वस्तुतः उसके अन्तःकरण में भक्ति की ज्योति जलाता है। गुरू सर्वव्यापी है, देश और काल से परे है।

उनकी संगत के समय को याद कीजिए। वे आगे आते थे, दिव्यत्व और सहानुभूति की प्रतिमूर्ति, जब तक कोई भक्त खड़े होकर उनके प्रति आदर प्रकट करता, तब तक तो वे अपने सिंहासन पर बैठ चुके होते थे। वे अपने एक पैर के ऊपर दूसरा पैर रखते थे जिससे उनका व्स्त्र पाँवों पर से थोड़ा हअ जाता था और भक्तगण उनके चरण–कमलों की झलक पा लेते थे। उन चरणों में वे अपना आश्रय ढूँढ़ते थे। उन चरणों में अपना ध्यान केन्द्रित करते थे।

इस बीच वातावरण 'शब्दों' से गूँजता रहता था। ये 'शबद' भक्तों को अपनी–अपनी पीड़ा से दूर ले जाते थे। प्रेम ही प्रेम होता था और वह भी बिना किसी अपेक्षा के। तब उनकी ऊर्जा से भरी चाय भक्तों में एक तवरित ऊर्जा का संचार करती थी। फिर एक सत्संग दोहराया जाता था या सुनाया जाता था। यह हर भक्त के जीवन से बहुत पास होता था। ऐसा प्रतीत होता था कि यह सत्संग प्रत्येक के लिए बोला जा रहा हो तथा प्रत्येक से बोला जा रहा है भक्तों की दैनिक, वैयक्तिक व स्वास्थ्य–समस्याओं के बारे में। केवल सत्संग का अनवरत ध्यानपूर्वक श्रवण ही भक्तों को निजात दिला देता था सारी पीड़ा से।

उनके साथ बीता हर पल चमत्कार था। भक्तों के हृदयों में आस्था के पौधे को विकसित करने में उनी सारी ऊर्जा लगी। चाय के असंख्य दौर, लंगर के असंख्या दौर इसीलिए तो चले थे। वे भक्तों की आत्माओं की संतुष्टि के लिए अपना प्रेम और ऊर्जा बॉट रहे थे। वे भक्तों की आत्माओं को शुद्ध करते थे ताकि भक्तजन प्रेम व विश्वास के धारक और वाहक बन जायें। वे संसार में फैली सबसे बड़ी बीमारी का उपचार कर रहे थे। और वह बीमारी है

सांसारिकता। जीवन की गाड़ी को उतार–चढ़ाव से भरे रास्तों से पार कराने में वे ही सर्वाधिक योग्य चालक थे और हैं, ब भी और भी। शायद हममें से कोई नहीं जान सका कि वे क्या थे,उनकी वास्तविकता क्या थी, वे ईश्वर के रूप में मानव थे या मानव के रूप में ईश्वर, यह तो अज्ञात ही रह गया। बस हम इतना जान पाये कि वे स्वयं 'प्रेम' थे और हमें इतना याद रखना है कि वे हमें भी प्रेम को ही अपनाते एवं फैलाते हुए देखना चाहते थे। हमारे उद्धार के लिए यह बहुत है।

GURUJI KA ASHRAM